मुख़्तसर सही बुख़ारी

भाग-1

मुसन्निफ :
इमाम अबुल अब्बास ज़ैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ अज़्ज़ुबैदी रह.

नजर सानी :
शैखुल हदीस हाफिज़ अब्दुल अज़ीज़ अलवी हफिज़हुल्लाह

हिन्दी अनुवाद :
ऐजाज़ खान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अत्तजरीदुस्सरीहु लिअहादीसिल जामिइस्सहीहि

मुख़्तसर सही बुख़ारी

(हिन्दी)

इमाम अबुल अब्बास ज़ैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ अज़्ज़ुबैदी रह.

उर्दू तर्जुमा और फ़ायदे

शैखुल हदीस अबू मुहम्मद हाफिज़ अब्दुस्सत्तार हम्माद हफिज़हुल्लाह

(फाज़िल मदीना यूनिवर्सिटी)

नज़र सानी

शैखुल हदीस हाफिज़ अब्दुल अज़ीज़ अलवी हफिज़हुल्लाह

हिन्दी तर्जुमा

ऐजाज़ खान

इस्लामिक बुक सर्विस

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ، مَنْ يَهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ. أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللّٰهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ، وَشَرَّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا، وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ﴾ - ﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا﴾ - ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا﴾

तर्जुमा : बिलाशुबा सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, हम उसकी तारीफ करते हैं, उससे मदद मांगते हैं जिसे अल्लाह राह दिखाये, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे अपने दर से धुतकार दे, उसके लिए कोई रहबर नहीं हो सकता और मैं गवाही देता हूँ कि मअबूदे बरहक सिर्फ अल्लाह तआला है, वोह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। हम्दो सलात के बाद यकीनन तमाम बातों से बेहतर बात अल्लाह तआला की किताब है और तमाम तरीक़ों से अच्छा तरीका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है और तमाम कामों से बदतरीन काम वोह है जो (अल्लाह के दीन में) अपनी तरफ़ से निकाले जायें। और हर बिदअत गुमराही है।" (मुस्लिम, हदीस नं. 867)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो। जैसा के उससे डरने का हक़ है और तुम्हें मौत न आये मगर, इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।"

(सूरा ए आले इमरान, पारा 4, आयत नं. 102)

"ऐ लोगो! अपने रब से डरो, जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और (फिर) उस जान से उसकी बीवी को बनाया और (फिर) उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें पैदा कीं और उन्हें (जमीन पर) फैलाया। अल्लाह से डरते रहो जिसके ज़रीए (जिसके नाम पर) तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और रिश्तों (को कता करने) से डरो (बचो)। बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।" (सूरा ए निसाअ पारा 4 आयत नं. 1)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और ऐसी बात कहो जो मोहकम (सीधी और सच्ची) हो। अल्लाह तुम्हारे आमाल की इस्लाह और तुम्हारे गुनाहों को मआफ़ फरमायेगा और जिस शख़्स ने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की तो उसने बड़ी कामयाबी हासिल की।" (सूरा अहज़ाब पारा 22, आयत नं. 70, 71)

मुक़द्दमतुल-किताब

हर किस्म की तारीफ अल्लाह तआला ही के लिए है, जो तमाम मख्लूकात को बेहतरीन अन्दाज और मुनासिब शक्ल व सूरत के साथ पैदा फ़रमाया है। वो ऐसा दाता, मेहरबान और रोज़ी देने वाला है कि किसी हक़दार के हक़ के बगैर भी मख्लूक़ को अपनी नेमतों से मालामाल किये हुए है और जब तक सुबह व शाम का यह सिलसिला जारी है, उस वक्त तक अल्लाह तआला की रहमत और सलामती उसके रसूल बरहक पर हो जो अच्छे अख़्लाक की तकमील के लिए भेजे गये थे, जिन्हें अल्लाह तआला ने तमाम मख्लूक़ात पर बरतरी और फजीलत अता फरमाई। इसी तरह उसकी आल व औलाद पर भी अल्लाह की रहमत हो जो अल्लाह की राह में बड़ी फय्याजी से खर्च करते हैं और उनके सहाबा-ए-किराम पर भी जो इताअत गुजार और वफादार हैं।

हम्दो सलात के बाद मालूम होना चाहिए कि इमामुल मुहद्दिसीन अबू अब्दुल्लाह, मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बुखारी रह. की अजीमुश्शान जामेअ सही इस्लामी किताबों में सबसे ज्यादा मोतबर और बेशुमार फायदों की हामिल है। लेकिन इसमें अहादीस तकरार के साथ मुख़्तलिफ़ अबवाब में अलग-अलग तौर पर बयान हुई हैं। अगर कोई शख़्स अपनी चाहत की हदीस ढूंढना चाहे तो बहुत इन्तहाई तलाश व जुस्तजू और सख़्त मेहनत के बाद ही उसे मालूम कर सकता है। बेशक इस किस्म के तकरार से इमाम बुखारी का मकसद यह था कि मुख़्तलिफ असानीद के साथ अहादीस बयान की जाये। ताकि इन्हें दर्जा शोहरत हासिल हो जाये। लेकिन इस मजमूअ-ए-अहादीस से हमारा मकसद नफ्से हदीस से जानकारी हासिल करना है। बाकी रही उनकी सेहत व सिकाहत तो उसके मुताल्लिक सब जानते हैं कि इस मजमूऐ की तमाम अहादीस सही और क़ाबिले ऐतबार हैं। इमाम नववी शरह मुस्लिम के मुक़द्दमे में लिखते हैं।

हजरत इमाम बुखारी रह. एक हदीस को मुख़्तलिफ़ सनदों के साथ अलग अलग अबवाब में ज़िक्र करते हैं। बाज औक़ात इस हदीस का ताल्लुक रखने वाले बाब से बहुत दूर का ताल्लुक होता है। चुनांचे अकसर औक़ात इसके मुताल्लिक यह ख्याल तक नहीं गुज़रता कि इसका यहां जिक्र करना मुनासिब होगा। इसलिए एक पढ़ने वाले के लिए इस मुतालब-ए-हदीस को तलाश करना और इसकी तमाम असानीद को मालूम करना बहुत मुश्किल हो जाता है। आपने मज़ीद फ़रमाया "मुताख़्ख़िरीन में से कुछ हुफ्फ़ाज़ (हाफिज़) इस गलतफ़हमी में

मुब्तला हो चुके हैं कि इन्होंने बुख़ारी में ऐसी अहादीस की मौजूदगी से इनकार कर दिया, जो अलग अलग अबवाब में दर्ज थी। लेकिन उनकी तरफ़ बसहूलत ज़ेहन की पहुंच न हो सकी। (शरह नववी, सफ़ह 15, जिल्द 1)

ऐसे हालात में मेरे अन्दर यह ख़्वाहिश पैदा हुई कि मैं अपनी किताब में मन्दरजा ज़ैल बातों का एहतमाम करूं।

1. जामेअ सही की तमाम अहादीस को उनकी सनदों और तकरार के बग़ैर जमा कर दिया जाये। ताकि मतलूबा हदीस किसी किस्म की दुश्वारी के बग़ैर तलाश की जा सके।
2. हर मुकर्रर हदीस को एक ही जगह बयान करूंगा। लेकिन अगर किसी दूसरी जगह इस रिवायत में कोई इज़ाफ़ा हुआ तो पूरी हदीस ज़िक्र करने के बजाय इज़ाफ़ा का हवाला दूंगा।
3. अगर पहली कोई हदीस मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र हुई हो और बाद में कहीं इसकी तफ़सील हो तो इज़ाफ़ी फ़ायदा के पेशे नज़र दूसरी तफ़सीली रिवायत को नक़ल करूंगा।
4. मक़तूअ और मुअल्लक़ रिवायात को नज़र अन्दाज़ करते हुए सिर्फ़ मरफ़ूअ और मुत्तसिल अहादीस को बयान करूंगा।
5. सहाबा-ए-किराम और उनके बाद आने वाले दूसरे लोगों के वाक़यात जिनका हदीस से कोई ताल्लुक नहीं और न ही उनमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र मुबारक है, जैसे हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि. और हज़रत उमर रज़ि. का सक़ीफ़ा बनी साइदा की तरफ जाना और वहां जाकर आपस में बातचीत करना, नीज़ हज़रत उमर रज़ि. की शहादत अपने बेटे को हज़रत आइशा रज़ि. अनहा से उनके घर में दफ़न होने के लिए इजाज़त लेने की वसीयत, आइन्दा मजलिस शूरा के मुताल्लिक़ उनके इरशादात, इसी तरह हज़रत उसमान रज़ि.. की बैअत, हज़रत ज़ुबैर रज़ि. की अपने बेटे को क़र्ज़ उतारने की वसीयत और इन जैसे दीगर वाक़यात को भी ज़िक्र नहीं करूंगा।
6. हर हदीस के शुरू में सिर्फ़ उसी सहाबी का नाम ज़िक्र करूंगा, जिसने इस हदीस को बयान किया है। ताकि पहली नज़र में ही उसके रावी का इल्म हो जाये।
7. रावी का नाम लेने में इन्हीं अल्फ़ाज़ का इल्तज़ाम करूंगा जैसा कि इमाम बुख़ारी रह. ने किया है। मसलन इमाम बुख़ारी कभी तो अन आइशा रज़ि.

अनहा और अन अबी अब्बास रज़ि॰ को भी अन अब्दुल्लाह बिन अब्बास कह देते हैं। कभी अन इब्ने उमर रज़ि.. और कभी कभी अन अब्दुल्लाह बिन उमर। नीज बाज औकात अन अनस रज़ि॰ और बाज मक़ामात पर अन अनस बिन मालिक रज़ि.. जिक्र करते हैं।

अलग़र्ज़ इन्हें इस मामले में उनकी पूरी मुताबक़त करूंगा। इसी तरह कभी सहाबी के हवाले से बयान करते हुए अनिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कभी क़ाला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते हैं।

फिर बाज औक़ात अनिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ाला कजा के अल्फ़ाज जिक्र करते हैं। बहरहाल मैंने अल्फ़ाज़ के ज़िक्र करने में इमाम बुख़ारी रह॰ का पूरा पूरा इत्तेबाअ किया है। अगर किसी जगह अल्फ़ाज़ का कोई इख़्तिलाफ़ नज़र आये तो उसे मुतअद्दिद नुस्ख़ों के इख़्तिलाफ़ पर महमूल किया जाये।

तहदीसे नेमत :

अल्लाह के फ़ज़लो करम से मुझे मुख़्तलिफ़ मशाइख़े-आज़म (उस्ताद) से कई एक मुत्तसिल असानीद हासिल हैं जो इमाम बुखारी तक पहुंचती है, उनमें से कुछ ये हैं:-

पहली सनद :

यमन के दारूल हुकूमत तअज में अल्लामा नफ़ीसुद्दीन अबी रबीअ सुलेमान बिन इब्राहीम अलवी से 823 हिजरी में मैंने सही बुख़ारी के कुछ अजजा (हिस्से) पढ़े और अक्सर का सिमा (सुन) करके उसकी इजाज़ते (सनद) हासिल की। उन्होंने अपने वालिद मोहतरम से इजाजते हदीस ली। फिर अपने उस्ताद शर्फुल मुहद्दिसीन मूसा बिन मूसा बिन अली दिमश्की से जो गजूली के नाम से मशहूर हैं, मुकम्मल तौर पर सही बुख़ारी का दरस लिया।

अल्लामा के वालिद को शैख अबू अब्बास अहमद बिन अबी तालिब हज्जारू से कौलन और उनके उस्ताद को सिमाअन इजाज़त हासिल है।

दूसरी सनद :

मुझे इमाम अबुल फतह मुहम्मद बिन इमाम ज़ैनुद्दीन अबू बक्र बिन हुसैन मदनी उस्मानी से बुख़ारी के पेशतर हिस्से की सिमाअन और वैसे तमाम किताब

की इजाज़ते रिवायत हासिल है।

इसी तरह शैख़ इमाम शमसुद्दीन अबू अज़हर मुहम्मद बिन मुहम्मद जज़री दिमश्की से और काजी अल्लामा हाफ़िज़ तक़ीउद्दीन मुहम्मद बिन अहमद फ़ारसी, जो मक्का मुकर्रमा में औहद-ए-कुज़ा पर फ़ाइज़ थे, उनसे भी मुझे बतौरे इजाज़त सनद हासिल है। इन तीनों शैख़ों को शैखुल मुहद्दिसीन अबू इसहाक़ इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन सिद्दीक़ दिमश्की अल मअरूफ़ ब इब्ने रसाम से और इन्हें हज़रत अबू अब्बास अल जज़री से इजाज़त हासिल है।

तीसरी सनद :

मैंने अपने शैख़ अबू फ़तह के बेटे शैख़ इमाम ज़ैनुद्दीन अबू बकर बिन हुसैन मदनी मराग़ी से भी आली सनद हासिल की है। नीज क़ाजीयुलकुजाअ मुजद्दिदुद्दीन मुहम्मद बिन याक़ूब शिराज़ी से भी इजाज़ते आम्मा ली।

इन दोनो शैख़ों को हज़रत अबू अब्बास मज़ार से इजाज़त हासिल है। शैख अबू अब्बास अल हज्जार को शैख़ हुसैन बिन मुबारक ज़ुबैदी से उन्हें शैख़ अबुल वक़्त, अब्दुल अव्वल बिन ईसा बिन शुऐब बिन अलहरवी से, उन्हें शैख़ अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद मुजफ़्फ़र दाऊदी से, उन्हें इमाम अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हमविया सरख़ी से और उन्हें शागिर्दे इमाम बुख़ारी शैख़ मुहम्मद बिन यूसुफ़ फरबरी से और उन्हें शैख़ कबीर इमाम मुहद्दिसीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बुख़ारी से सनदे इजाज़त हासिल है।

इनके अलावा भी मुतअद्दिद असानीद हैं, जो इमाम बुख़ारी तक पहुंचती है।

मैंने सिर्फ़ मशहूर और आली इसनाद के ज़िक्र पर इक्तफ़ा किया है। वरना इनके अलावा भी मुझे अलग अलग शैखों (उस्तादों) से इजाज़त हासिल है, जिनका ज़िक्र तिवालत का बाइस है।

मैंने इस किताब का नाम "अत्तजरीदुस्सरीह लिअहादीसिल जामिइस्सहीहि" तजवीज़ किया है। दुआ है कि अल्लाह तआला इसे लोगों के लिए नफ़ाबख़्श बनाये और इसके ज़रीये आमालो मक़ासिद की इस्लाह फ़रमाये। आमीन!

"व सल्लल्लाहु अला नबीय्यिना मुहम्मदिंव व आलिही व असहाबिही अजमईन"

तक़दीम

मुख़्तसर सही बुख़ारी नवीं सदी की एक मुहद्दिस जनाब इमाम जैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ जुबैदी रह॰ की लिखी हुई है। जिसका उन्होंने नाम *'अत्तजरीदुस्सरीहु लिअहादीसिल जामिइस्सहीहि'* रखा है, जिसमें उन्होंने सही बुख़ारी की मरफूअ मुत्तसिल अहादीस को चुना है। इमाम बुख़ारी रह॰ एक एक हदीस फहमी, मसाईल के इस्तंबात (मसाईल निकालने) की ख़ातिर कई बार दस-दस, बीस-बीस (और इससे कम और ज़्यादा) जगह ले आये हैं। लेकिन इमाम ज़ुबैदी ने मेहनत और कोशिश करके इस तकरार को ख़त्म किया है और हदीस को सिर्फ एक दफ़ा ऐसे बाब के तहत लिखा है जिसके साथ उसकी मुताबक़त बिलकुल वाज़ेह और नुमायां है। जिसकी ख़ातिर इन्होंने इमाम बुख़ारी की कुछ कुतुब और बेशुमार अबवाब भी ख़त्म कर दिये हैं।

मिसाल के तौर पर इमाम बुख़ारी रह॰ ने "किताबुलहीला", "किताबुलइकराही", "किताब अखबारिलआहादी" के नाम से किताब के आख़िर में उनवान क़ायम किये हैं। लेकिन इमाम ज़ुबैदी ने इन तीनों अहम कुतुब को हजफ कर दिया है। आखरी किताबुल तौहीद में 18 अबवाब में से इमाम ज़ुबैदी ने सिर्फ़ 7 बाब बयान किये हैं। "किताबुल इअतेसामे बिल किताबी व सुन्नती" में 28 अबवाब में से सिर्फ़ 7 अबवाब बयान किये हैं। इस तरह इमाम ज़ुबैदी की किताब सही बुख़ारी की सिर्फ़ मरफूअ मुत्तसिल रिवायात का इख़्तसार व इन्तेख़ाब है और सही अहादीस का एक मुख़्तसर मजमुआ है, जो इस मक़सद के लिए तैयार किया गया है कि इन्सान इनको बिला तकलीफ याद कर सके और इनकी सेहत के बारे में उसके दिल में किसी तरह का ख़दशा या खटका न रहे। हमारे फ़ाज़िल दोस्त और मोहतरम भाई हाफ़िज़ अब्दुस्सत्तार हम्माद हफ़िज़हुल्लाह जो साहिबे इल्म और अहले क़लम

हज़रात में एक ऊँचे मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं और बुनयादी तौर पर एक मुदर्रिस है और जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरा के फ़ारिग़ होने की बिना पर अरबी ज़ुबान और अरबी अदब में महारत रखते हैं। इन्होंने इसका बहुत मेहनत व कोशिश से आसान तर्जुमा किया है और बहुत ज़रूरी जगहों पर बहुत जामेअ और मुख़्तसर फ़ायदे लिखे हैं। वो एक मुदर्रिस होने की हैसियत से तर्जुमे की नज़ाकत को समझते हैं और साहिबे तहरीर होने की बिना पर उसको बेहतरीन अन्दाज़ में ढालते हैं और एक ख़तीब और वाईज की हैसियत से अवाम की ज़रूरत और जज़्बात से जानकार होने की बिना पर मुश्किल अलफ़ाज इस्तेमाल नहीं करते। मैंने तर्जुमा और फ़ायदे पर नज़रसानी की है। एक आम मुसन्निफ़ जो मुसन्निफ़ न हो और अरबी ज़ुबान की तराकीब और उसलूब से जानकार न हो, उसके तर्जुमे पर नज़रसानी करना और उसको ठीक करना कभी कभी तर्जुमा करने से भी मुश्किल काम होता है। लेकिन माहिर तर्जुमा करने वाले के तर्जुमे पर नज़रसानी मुश्किल काम नहीं होता। बल्कि यह तो हमवार बनी हुई ज़मीन पर बेल-बूटे उगाना होता है। इसलिए तर्जुमे की नोक पलक संवारना कोई मुश्किल काम न था। लेकिन इसके बावजूद इनके काम में कहीं कमी का रह जाना कोई बड़ी या काबिले गिरफ्त बात नहीं है। इसलिए कुछ जगहों पर नागुरेज सूरत में तर्जुमे को सही और ठीक करने की ख़ातिर कुछ लफ़्ज़ी तब्दीली की गई है और कुछ जगहों पर फ़ायदों में ज़रूरत के तहत इज़ाफा किया गया है और वहां निशानदेही भी कर दी गई है। लेकिन तर्जुमे की तसहीह में निशानदेही करना मुमकिन होता है और न मुनासिब। इसलिए इसकी निशानदेही नहीं की गई। बल्कि एक काबिले ऐतमाद साथी होने के नाते उनके इल्म में लाये बग़ैर यह इल्मी जसारत (बहादुरी) की गई है।

इस इल्मी और तहक़ीकी काम पर वो मुबारकबाद के हक़दार हैं और वो इदारा जो इस काम को इस्लाहे उम्मत और जज़्बे तब्लीग़ के

तहत मन्ज़रे आम पर (सबके सामने) लाया है, वो भी क़ाबिले सताईश है। हम यह उम्मीद रखते हैं कि उर्दू पढ़ने वालों के लिए दीन की समझ और इत्तबाअ-ए-सुन्नत के लिए यह तर्जुमा और फ़ायदे इन्शा अल्लाह बहुत ज़्यादा फ़ायदेमंद होंगे।

अब्दुल अज़ीज़ अलवी

फ़ैसलाबादी

22 जमादी अव्वल, 1420 हिजरी, बमुताबिक़ 16 सितम्बर, 1999

मुख़्तसर सही बुख़ारी लिखने वाले की मुख़्तसर सवानेह उमरी (हालात)

आपका पूरा नाम अबुल अब्बास ज़ैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ़ अश शरजी ज़ुबैदी है जो इमाम ज़ुबैदी के नाम से मशहूर हैं। आप यमन के शहर ज़ुबैद के पास शरजा के मुक़ाम पर जुमे की रात तारीख 12 रमज़ान 812 हिजरी मुताबिक़ 1410 ईस्वी को पैदा हुये। उस वक़्त के बड़े बड़े उलमा से फ़ायदा उठाया। फन्ने हदीस पर इन्हें ख़ास ग़लबा था। अपने वक़्त के बहुत बड़े मुहद्दिस और माहिरे अदब थे। यमनी रियासतों में काफ़ी सालों तक दरसे हदीस दिया। बिल आख़िर 893 हि॰ मुताबिक़ 1488 ई॰ को अपनी उम्र की 81 बहारें देखने के बाद शहर ज़ुबैद में इन्तिक़ाल फ़रमाया और वहीं दफ़न किये गये।

किताबु बदइल वह्यी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर

आग़ाज़े वह्य का बयान

बाब 1 : वह्य कैसे शुरू हुई?

١ - [باب: كَيْفَ كَانَ بَدْءُ ٱلْوَحْيِ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ]

1: उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है, बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमाते थे "(स़वाब के) तमाम काम नियतों पर टिके हैं और हर आदमी को उसकी नियत ही के मुताबिक फल मिलेगा। फिर जिस आदमी ने दुनिया कमाने या किसी औरत से शादी रचाने के लिए वतन छोड़ा तो उसकी हिजरत उसी काम के लिए है, जिसके लिए उसने हिजरत की होगी।

١ : عَنْ عُمَرَ بْنِ ٱلْخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّمَا ٱلأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ، وَإِنَّمَا لِكُلِّ ٱمْرِىءٍ مَا نَوَى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا، أَوْ إِلَى ٱمْرَأَةٍ يَنْكِحُهَا، فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ). [رواه البخاري: ١]

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस को शुरू किताब में इसलिए बयान किया है कि इस किताब के लिखने में सिर्फ अल्लाह तआला की रज़ा मक़सूद है। नीज़ वह्य के ज़रीये शरीअत के अहकाम बयान किये जाते हैं और शरई अहकाम की बुनियाद साफ नियत है। (औनुलबारी, 1/28) वाजेह रहे कि हर अच्छे काम के शुरू करने के लिए अच्छी नियत का होना जरूरी है। वरना ना सिर्फ

सवाब से महरूमी होगी, बल्कि अल्लाह के यहां सख्त सजा का भी डर है और जो आमाल खालिस दिल से मुताल्लिक हैं, मसलन डर व उम्मीद वगैरह, इनमें नियत की कोई जरूरत नहीं। नीज नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ नुजूले वह्य का सबब आपका इख्लासे नियत ही है।

---

٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّ الحَارِثَ بْنَ هِشَامٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ سَأَلَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ! كَيْفَ يَأْتِيكَ ٱلْوَحْيُ؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَحْيَانًا يَأْتِينِي مِثْلَ صَلْصَلَةِ ٱلْجَرَسِ، وَهُوَ أَشَدُّهُ عَلَيَّ، فَيُفْصِمُ عَنِّي وَقَدْ وَعَيْتُ عَنْهُ مَا قَالَ، وَأَحْيَانًا يَتَمَثَّلُ لِيَ ٱلْمَلَكُ رَجُلًا، فَيُكَلِّمُنِي فَأَعِي مَا يَقُولُ). قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: وَلَقَدْ رَأَيْتُهُ يَنْزِلُ عَلَيْهِ ٱلْوَحْيُ فِي ٱلْيَوْمِ ٱلشَّدِيدِ ٱلْبَرْدِ، فَيُفْصِمُ عَنْهُ وَإِنَّ جَبِينَهُ لَيَتَفَصَّدُ عَرَقًا. [رواه البخاري: ٢]

2 : आइशा रजि. से रिवायत है कि हारिस बिन हिशाम रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप पर वह्य कैसे आती है? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमायाः कभी तो वह्य आने की हालत घंटी की टन टन की तरह होती है और यह हालत मुझ पर बहुत भारी गुजरती है। फिर जब फरिश्ते का पैगाम मुझे याद हो जाता है तो यह बन्द हो जाती है और कभी फरिश्ता इन्सानी शक्ल में मेरे पास आकर मुझ से बात करता है और जो कुछ वह कहता है, मैं उसे महफूज (याद) कर लेता हूँ।" आइशा रजि. का बयान है कि मैंने सख्त सर्दी के दिनों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि जब वह्य आती तो उसके बन्द होने पर आपकी पेशानी से पसीना फूट पड़ता था।

फायदे : आपके पास वह्य किस हालत में आती है? इस सवाल में तीन

चीजें आती हैं 1. नफ़से वह्य की हालत, 2. वह्य को लाने वाले हजरत जिब्राईल की हालत, 3. खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हालत। जवाब में इन तीनों चीजों की वजाहत है। हदीस में वह्य की दो सूरतों को बयान किया गया है जो आम तौर पर आप को पेश आती थीं। इसके अलावा कभी ख्वाब की शक्ल में, कभी हजरत जिब्राईल के अपनी असली सूरत में आने से और कभी अल्लाह तआला के खुद बात करने से भी वह्य का सबूत मिलता है। (औनुलबारी, 1/38)

---

٣ : عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ ٱلْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ. أَوَّلُ مَا بُدِئَ بِهِ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مِنَ ٱلْوَحْيِ ٱلرُّؤْيَا ٱلصَّالِحَةُ فِي ٱلنَّوْمِ، فَكَانَ لَا يَرَى رُؤْيَا إِلَّا جَاءَتْ مِثْلَ فَلَقِ ٱلصُّبْحِ، ثُمَّ حُبِّبَ إِلَيْهِ ٱلْخَلَاءُ، فَكَانَ يَخْلُو بِغَارِ حِرَاءٍ، فَيَتَحَنَّثُ فِيهِ - وَهُوَ ٱلتَّعَبُّدُ - ٱللَّيَالِيَ ذَوَاتِ ٱلْعَدَدِ قَبْلَ أَنْ يَنْزِعَ إِلَى أَهْلِهِ، وَيَتَزَوَّدُ لِذَلِكَ، ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى خَدِيجَةَ فَيَتَزَوَّدُ لِمِثْلِهَا، حَتَّى جَاءَهُ ٱلْحَقُّ وَهُوَ فِي غَارِ حِرَاءٍ، فَجَاءَهُ ٱلْمَلَكُ فَقَالَ: ٱقْرَأْ، قَالَ: (مَا أَنَا بِقَارِئٍ). قَالَ: (فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي حَتَّى بَلَغَ مِنِّي ٱلْجَهْدَ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي) فَقَالَ: ٱقْرَأْ، قُلْتُ: (مَا أَنَا بِقَارِئٍ، فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي ٱلثَّانِيَةَ حَتَّى بَلَغَ مِنِّي ٱلْجَهْدَ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي) فَقَالَ: ٱقْرَأْ، فَقُلْتُ: (مَا أَنَا بِقَارِئٍ، فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي

3 : आइशा रजि. से ही रिवायत है, कि उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्य की शुरूआत सच्चे ख्वाबों की शक्ल में हुई, आप जो कुछ ख्वाब में देखते, वह सुबह की रोशनी की तरह नमूदार होता, फिर आप को तन्हाई पसन्द हो गई। चुनांचे आप गारे हिरा में तन्हाई इख्तियार फरमाते और कई कई रात घर तशरीफ लाये बगैर इबादत में लगे रहते। आप खाने पीने का सामान घर से ले जाकर वहां कुछ रोज गुजारते, फिर खदीजा रजि. के पास वापस आते और तकरीबन इतने ही दिनों के लिए फिर कुछ खाने पीने का

ٱلثَّالِثَةَ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي) فَقَالَ: ﴿ٱقْرَأْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلَّذِى خَلَقَ ۝ خَلَقَ ٱلْإِنسَٰنَ مِنْ عَلَقٍ ۝ ٱقْرَأْ وَرَبُّكَ ٱلْأَكْرَمُ﴾). فَرَجَعَ بِهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَرْجُفُ فُؤَادُهُ، فَدَخَلَ عَلَى خَدِيجَةَ بِنْتِ خُوَيْلِدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنها فَقَالَ: (زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي). فَزَمَّلُوهُ حَتَّى ذَهَبَ عَنْهُ ٱلرَّوْعُ، فَقَالَ لِخَدِيجَةَ وَأَخْبَرَهَا ٱلْخَبَرَ: (لَقَدْ خَشِيتُ عَلَى نَفْسِي). فَقَالَتْ خَدِيجَةُ: كَلَّا وَٱللهِ مَا يُخْزِيكَ ٱللهُ أَبَدًا، إِنَّكَ لَتَصِلُ ٱلرَّحِمَ، وَتَحْمِلُ ٱلْكَلَّ، وَتَكْسِبُ ٱلْمَعْدُومَ، وَتَقْرِي ٱلضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ ٱلْحَقِّ.

فَانطَلَقَتْ بِهِ خَدِيجَةُ حَتَّى أَتَتْ بِهِ وَرَقَةَ بْنَ نَوْفَلِ بْنِ أَسَدِ بْنِ عَبْدِ ٱلْعُزَّى، ٱبْنَ عَمِّ خَدِيجَةَ، وكَانَ ٱمْرَءًا تَنَصَّرَ فِي ٱلجاهِلِيَّةِ، وَكَانَ يَكْتُبُ ٱلْكِتَابَ ٱلْعِبْرَانِيَّ، فَيَكْتُبُ مِنَ الإِنْجِيلِ مَا شَاءَ ٱللهُ أَنْ يَكْتُبَ، وَكَانَ شَيْخًا كَبِيرًا قَدْ عَمِيَ، فَقَالَتْ خَدِيجَةُ: يَا ابْنَ عَمِّ، ٱسْمَعْ مِنِ ٱبْنِ أَخِيكَ. فَقَالَ لَهُ وَرَقَةُ: يَا ابْنَ أَخِي مَاذَا تَرَى؟ فَأَخْبَرَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ خَبَرَ مَا رَأَى، فَقَالَ لَهُ وَرَقَةُ: هٰذَا النَّامُوسُ ٱلَّذِي نَزَّلَ ٱللهُ عَلَى مُوسَى، يَا لَيْتَنِي فِيهَا جَذَعًا، لَيْتَنِي أَكُونُ حَيًّا إِذْ يُخْرِجُكَ قَوْمُكَ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَوَ مُخْرِجِيَّ هُمْ؟). قَالَ: نَعَمْ، لَمْ يَأْتِ رَجُلٌ

सामान ले जाते। एक रोज जबकि आप हिरा में थे। इतने में आपके पास हक आ गया और एक फरिश्ते ने आकर आपसे कहा : पढ़ो! आपने फरमाया, मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ, इस पर फरिश्ते ने मुझे पकड़कर खूब दबाया, यहां तक कि मेरी ताकते बर्दाश्त जवाब देने लगी, फिर उसने मुझे छोड़ दिया और कहा : पढ़ो! फिर मैंने कहा, मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उसने दोबारा मुझे पकड़कर दबोचा, यहां तक कि मेरी ताकत बर्दाश्त से बाहर हो गयी। फिर छोड़ कर कहा, पढ़ो! मैंने फिर कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ, उसने तीसरी बार मुझे पकड़कर दबाया, फिर छोड़कर कहा, पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया, और तुम्हारा रब तो निहायत करीम है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन आयतों को लेकर वापस आये और आप का दिल धड़क रहा था। चूनांचे आप (अपनी बीवी) खदीजा बिन्ते

قَطِّ بِمِثْلِ مَا جِئْتَ بِهِ إِلَّا عُودِيَ، وَإِنْ يُدْرِكْنِي يَوْمُكَ أَنْصُرْكَ نَصْرًا مُؤَزَّرًا. ثُمَّ لَمْ يَنْشَبْ وَرَقَةُ أَنْ تُوُفِّيَ، وَفَتَرَ الْوَحْيُ. [رواه البخاري: ٣]

खुवैलिद रजि. के पास तशरीफ लाये और फरमाया : ''मुझे चादर उढ़ा दो, मुझे चादर उढ़ा दो।'' उन्होंने आपको चादर उढ़ा दी, यहां तक कि डर की हालत खत्म हो गयी। फिर आपने खदीजा रजि. को किस्से की खबर देते हुये फरमायाः ''मुझे अपनी जान का डर है।'' खदीजा रजि. ने कहाः बिल्कुल नहीं, अल्लाह की कसम! अल्लाह तआला आपको कभी जलील नहीं करेगा। आप रिश्ते जोड़ते हैं, कमजोरों का बोझ उठाते हैं, फकीरों व मोहताजों को कमाकर देते हैं, मेहमानों की खातिरदारी करते हैं और हक के सिलसिले में पेश आने वाली तकलीफों में मदद करते हैं।

फिर खदीजा रजि., रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को साथ लेकर अपने चचाज़ाद भाई वरका बिन नौफल बिन असद बिन अब्दुल उज्जा के पास आयीं। वरका जिहालत के जमाने में ईसाइ हो गये थे और इबरानी जुबान भी लिखना जानते थे। चूनांचे इबरानी जुबान में जितना अल्लाह को मन्जूर होता, इंजील लिखते थे। वरका बहुत बूढ़े और अंधे हो चुके थे, उनसे खदीजा रजि. ने कहा, भाई जान! आप अपने भतीजे की बात सुने। वरका ने पूछाः भतीजे क्या देखते हो? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो कुछ देखा था, वह बयान कर दिया। इस पर वरका ने आपसे कहाः यह तो वही नामूस (वह्य लाने वाला फरिश्ता) है, जिसे अल्लाह ने मूसा अलैहि. पर नाजिल फरमाया था, काश मैं आपके नबी होने के जमाने में ताकतवर होता, काश मैं उस वक्त तक जिन्दा रहूं, जब आपकी कौम आपको निकाल देगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अच्छा

तो क्या वह लोग मुझे निकाल देंगे? वरका ने कहा : हां! जब भी कोई आदमी इस तरह का पैगाम लाया, जैसा आप लाये हैं तो उससे जरूर दुश्मनी की गई और अगर मुझे आप का जमाना नसीब हुआ तो मैं तुम्हारी भरपूर मदद करूंगा, उसके बाद वरक़ा जल्दी ही मर गये और वह्य रूक गई।

फायदे : वह्य रूक जाने के जमाने में सिर्फ कुरआन के नाजिल होने में देर हुई थी। हजरत जिब्राईल का आना जाना खत्म नहीं हुआ था और जब कभी आप पहाड़ पर अपने आपको गिरा देने के इरादे से चढ़ते तो आपको तसल्ली देने के लिए हजरत जिब्राईल अलैहि. तशरीफ लाते और आपको नबी बरहक होने का पैगाम सुनाते। (औनुलबारी, 1/52)

٤ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ ٱلأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: وَهُوَ يُحَدِّثُ عَنْ فَتْرَةِ ٱلْوَحْيِ، فَقَالَ فِي حَدِيثِهِ: (بَيْنَا أَنَا أَمْشِي إِذْ سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ ٱلسَّمَاءِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي، فَإِذَا ٱلْمَلَكُ ٱلَّذِي جَاءَنِي بِحِرَاءٍ جَالِسٌ عَلَى كُرْسِيٍّ بَيْنَ ٱلسَّمَاءِ وَٱلأَرْضِ، فَرُعِبْتُ مِنْهُ، فَرَجَعْتُ فَقُلْتُ: زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي، فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا ٱلْمُدَّثِّرُ ۝ قُمْ فَأَنْذِرْ ۝ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝ وَٱلرُّجْزَ فَٱهْجُرْ﴾. فَحَمِيَ ٱلْوَحْيُ وَتَتَابَعَ).
[رواه البخاري: ٤]

4 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रजि. से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबानी वह्य के रूक जाने का किस्सा सुना, आपने बयान फरमाया: एक रोज मैं रास्ते से गुजर रहा था कि अचानक मुझे आसमान से एक आवाज सुनायी दी, मैंने सर उठाया तो देखा कि वही फरिश्ता जो मेरे पास गारे हिरा में आया था, आसमान और जमीन के बीच एक कुर्सी पर बैठा हुआ है, मैं उसे देखकर बहुत डर गया, फिर लौटकर मैंने कहा, मुझे चादर उढ़ा दो, मुझे चादर उढ़ा दो (खदीजा ने मुझे चादर

उढ़ा दी)। उस वक्त अल्लाह तआला ने वह्यी नाजिल की : "ऐ **ओढ़ लपेटकर लेटने वाले, उठो और खबरदार करो और अपने रब की बड़ाई का ऐलान करो और अपने कपड़े पाक रखो और** गंदगी से दूर रहो। (सूरह अल मुद्दस्सिर)। फिर वह्य के उतरने में तेजी आ गई और वह्य लगातार उतरने लगी।

फायदे : (फ-हमेयल वह्य) का लुगवी मायना "वह्य गर्म हो गई" जब कोई चीज गर्म हो जाये तो कुछ देर के बाद ठण्डी हो जाती है। (तताबआ) का मतलब है कि वह्य लगातार शुरू हो गई, गर्म होने के बाद गौया ठण्डी नहीं हुई। (औनुलबारी, **1/54**)

---

5 : इब्ने अब्बास रजि. से इस फरमाने इलाही : "ऐ पैगम्बर! आप वह्य को जल्दी से याद करने के लिए अपनी जुबान को हरकत न दें" की तफसीर बयान करते हुये फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरआन उतरते वक्त (उसे याद करने के लिए) अपने होंटों को हिलाया करते थे और उससे आपको काफी तकलीफ होती थी। इब्ने अब्बास रजि. ने कहा, मैं होंट हिलाकर दिखाता हूँ, जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने होंट हिलाते थे। इस पर अल्लाह तआला ने फरमाया, ऐ नबी! इस वह्य को जल्दी जल्दी याद करने के लिए

٥ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما في قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿لَا تُحَرِّكْ بِهِۦ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِۦٓ﴾. قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُعَالِجُ مِنَ ٱلتَّنْزِيلِ شِدَّةً، وَكَانَ مِمَّا يُحَرِّكُ شَفَتَيْهِ - فَقَالَ ٱبْنُ عَبَّاسٍ: فَأَنَا أُحَرِّكُهُمَا كَمَا كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُحَرِّكُهُمَا - فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿لَا تُحَرِّكْ بِهِۦ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِۦٓ ۝ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُۥ وَقُرْءَانَهُۥ﴾. قَالَ: جَمْعُهُ لَكَ فِي صَدْرِكَ وَتَقْرَأَهُ: ﴿فَإِذَا قَرَأْنَٰهُ فَٱتَّبِعْ قُرْءَانَهُۥ﴾. قَالَ: فَاسْتَمِعْ لَهُ وَأَنْصِتْ ﴿ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُۥ﴾. ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا أَنْ تَقْرَأَهُ، فَكَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بَعْدَ ذَلِكَ إِذَا أَتَاهُ جِبْرِيلُ ٱسْتَمَعَ، فَإِذَا ٱنْطَلَقَ جِبْرِيلُ قَرَأَهُ ٱلنَّبِيُّ ﷺ كَمَا قَرَأَهُ. [رواه البخاري: ٥]

अपनी जुबान को हरकत न दो, इसको जमा करना और पढ़ा देना हमारी जिम्मेदारी है।" यानी आपके सीने में महफूज कर देना और पढ़ा देना हम पर है।" फिर अल्लाह के इस फरमान, "फिर जब हम पढ़ चुके तो हमारे पढ़ने की पैरवी करो।" की तफसीर करते हुये फरमाया: "खामोशी से कान लगाकर सुनता रह।" फिर अल्लाह का फरमान: "इसका बयान करना भी हमारा काम है" की तफसीर करते हुये फरमाया, फिर इसका मतलब समझा देना भी हमारी जिम्मेदारी है।

इन आयात के उतरने के बाद जब जिब्राईल अलैहि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर कुरआन सुनाते तो आप कान लगाकर सुनते रहते, जब वह चले जाते तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे उसी तरह पढ़ते, जिस तरह जिब्राईल अलैहि. ने पढ़ा था।

फायदे : इस हदीस में कुरआन शरीफ़ के बारे में तीन मराहिल (दर्जो) का बयान किया गया है। पहला दर्जा यह है कि आपके सीने मुबारक में महफूज तरीके से उतारना और दूसरा दर्जा यह है कि दिल मुबारक में जमाशुदा कुरआन को जुबान के जरीये पढ़ने की तौफिक देना, फिर आखरी दर्जा कुरआन की गैर वाजेह (मुश्किल मकामात) की तशरीह और तौजीह है जो सही हदीसों की शक्ल में मौजूद है। इन तमाम दर्जो की जिम्मेदारी खुद अल्लाह तआला ने उठायी है। (औनुलबारी, 1/58)

6 : इब्ने अब्बास रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब लोगों से ज्यादा सखी थे, खासकर रमजान में जब

٦ : وعَنه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَجْوَدَ ٱلنَّاسِ، وَكَانَ أَجْوَدَ مَا يَكُونُ فِي رَمَضَانَ حِينَ يَلْقَاهُ جِبْرِيلُ عليه السلام،

وَكَانَ يَلْقَاهُ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْ رَمَضَانَ فَيُدَارِسُهُ الْقُرْآنَ، فَلَرَسُولُ اللهِ ﷺ أَجْوَدُ بِالْخَيْرِ مِنَ الرِّيحِ الْمُرْسَلَةِ. [رواه البخاري: ٦]

जिब्राईल अलैहि. से आपकी मुलाकात होती तो बहुत खर्च करते और जिब्राईल अलैहि. रमजानुल मुबारक में हर रात आपसे मुलाकात करते और कुरआन मजीद का दौर फरमाते। अलगर्ज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सदका करने में आंधी से भी ज्यादा तेज रफ्तार होते।

फायदे : इस हदीस का इस बाब से लगाव (मुनासिबत) यह है कि जितना हिस्सा कुरआन का उतर चुका था, उतने हिस्से का हजरत जिब्राईल अलैहि. हर रमजान में आपसे दौर करते, आखरी साल आपने दो मर्तबा दौर फरमाया ताकि पूरे तौर पर कुरआन याद हो जाये। (औनुलबारी, 1/60)

---

٧ : وعَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ أَبَا سُفْيَانَ بْنَ حَرْبٍ، أَخْبَرَهُ: أَنَّ هِرَقْلَ أَرْسَلَ إِلَيْهِ فِي رَكْبٍ مِنْ قُرَيْشٍ، كَانُوا تُجَّارًا بِالشَّأْمِ، فِي الْمُدَّةِ الَّتِي كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَادَّ فِيهَا أَبَا سُفْيَانَ وَكُفَّارَ قُرَيْشٍ، فَأَتَوْهُ وَهُمْ بِإِيلِيَاءَ، فَدَعَاهُمْ وَحَوْلَهُ عُظَمَاءُ الرُّومِ، ثُمَّ دَعَاهُمْ فَدَعَا بِالتَّرْجُمَانِ، فَقَالَ: أَيُّكُمْ أَقْرَبُ نَسَبًا بِهٰذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ؟ فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: فَقُلْتُ أَنَا أَقْرَبُهُمْ، فَقَالَ: أَدْنُوهُ مِنِّي، وَقَرِّبُوا أَصْحَابَهُ فَاجْعَلُوهُمْ عِنْدَ ظَهْرِهِ، ثُمَّ قَالَ لِتَرْجُمَانِهِ: قُلْ لَهُمْ إِنِّي سَائِلٌ هٰذَا

7 : इब्ने अब्बास रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अबू सुफियान बिन हर्ब रजि. ने इनसे बयान किया कि रूम के बादशाह हिरक्ल ने अबू सुफियान को कुरैश की एक जमाअत समेत बुलवाया। यह जमाअत सुलह हुदैबिया के तहत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कुफ्फारे कुरैश के बीच तय शुदा वादे की मुद्दत में मुल्के शाम तिजारत की जरूरत के लिए गई हुई थी। यह लोग ईलिया (बैतुल मुकद्दस) में

عَنْ هٰذَا الرَّجُلِ، فَإِنْ كَذَبَنِي فَكَذِّبُوهُ. فَوَاللهِ لَوْلاَ الْحَيَاءُ مِنْ أَنْ يَأْثُرُوا عَلَيَّ كَذِبًا لَكَذَبْتُ عَنْهُ. ثُمَّ كَانَ أَوَّلَ مَا سَأَلَنِي عَنْهُ أَنْ قَالَ: كَيْفَ نَسَبُهُ فِيكُمْ؟ قُلْتُ: هُوَ فِينَا ذُو نَسَبٍ. قَالَ فَهَلْ قَالَ هٰذَا الْقَوْلَ مِنْكُمْ أَحَدٌ قَطُّ قَبْلَهُ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَهَلْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مِنْ مَلِكٍ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَأَشْرَافُ النَّاسِ اتَّبَعُوهُ أَمْ ضُعَفَاؤُهُمْ؟ فَقُلْتُ: ضُعَفَاؤُهُمْ. قَالَ: أَيَزِيدُونَ أَمْ يَنْقُصُونَ؟ قُلْتُ: بَلْ يَزِيدُونَ

قَالَ: فَهَلْ يَرْتَدُّ أَحَدٌ مِنْهُمْ سَخْطَةً لِدِينِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيهِ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَهَلْ كُنْتُمْ تَتَّهِمُونَهُ بِالْكَذِبِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ مَا قَالَ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَهَلْ يَغْدِرُ؟ قُلْتُ: لاَ، وَنَحْنُ مِنْهُ فِي مُدَّةٍ لاَ نَدْرِي مَا هُوَ فَاعِلٌ فِيهَا. قَالَ: وَلَمْ يُمْكِنِّي كَلِمَةٌ أُدْخِلُ فِيهَا شَيْئًا غَيْرُ هٰذِهِ الْكَلِمَةِ. قَالَ: فَهَلْ قَاتَلْتُمُوهُ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: فَكَيْفَ كَانَ قِتَالُكُمْ إِيَّاهُ؟ قُلْتُ: الْحَرْبُ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُ سِجَالٌ، يَنَالُ مِنَّا وَنَنَالُ مِنْهُ. قَالَ: فَمَاذَا يَأْمُرُكُمْ؟ قُلْتُ: يَقُولُ: اعْبُدُوا اللهَ وَحْدَهُ وَلاَ تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَاتْرُكُوا مَا كَانَ

उसके पास हाजिर हो गये। हिरक्ल ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया। उस वक्त उसके इर्द-गिर्द रूम के सरदार बैठे हुये थे। फिर उसने उनको और अपने तर्जुमान (मतलब बताने वाले) को बुलाकर कहा कि वह आदमी जो अपने आपको नबी समझता है, तुममें से कौन उसका करीबी रिश्तेदार है? अबू सुफियान ने कहा, मैं उसका सबसे ज्यादा करीबी रिश्तेदार हूँ, तब हिरक्ल ने कहा, इसे मेरे करीब कर दो और इसके साथियों को भी करीब करके इसके पास बिठाओ। उसके बाद हिरक्ल ने अपने तर्जुमान से कहा : इनसे कहो कि मैं इस आदमी से उस आदमी (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुताल्लिक सवालात करूंगा, अगर यह गलत बयानी करें तो तुम लोग इसको झुटला देना। अबू सुफियान रजि. कहते हैं कि अल्लाह की कसम! अगर झूट बोलने की बदनामी का डर नहीं होता तो मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में जरूर झूट

يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ، وَيَأْمُرُنَا بِالصَّلاَةِ وَالصِّدْقِ وَالْعَفَافِ وَالصِّلَةِ. فَقَالَ لِلتَّرْجُمَانِ: قُلْ لَهُ: إِنِّي سَأَلْتُكَ عَنْ نَسَبِهِ فَذَكَرْتَ أَنَّهُ فِيكُمْ ذُو نَسَبٍ، وَكَذٰلِكَ الرُّسُلُ تُبْعَثُ فِي نَسَبِ قَوْمِهَا. وَسَأَلْتُكَ هَلْ قَالَ أَحَدٌ مِنْكُمْ هٰذَا الْقَوْلَ قَبْلَهُ، فَذَكَرْتَ أَنْ لاَ، فَقُلْتُ لَوْ كَانَ أَحَدٌ قَالَ هٰذَا الْقَوْلَ قَبْلَهُ، لَقُلْتُ رَجُلٌ يَتَأَسَّى بِقَوْلٍ قِيلَ قَبْلَهُ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مِنْ مَلِكٍ، فَذَكَرْتَ أَنْ لاَ، قُلْتُ: لَوْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مِنْ مَلِكٍ، قُلْتُ رَجُلٌ يَطْلُبُ مُلْكَ أَبِيهِ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ كُنْتُمْ تَتَّهِمُونَهُ بِالْكَذِبِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ مَا قَالَ، فَذَكَرْتَ أَنْ لاَ، فَقَدْ أَعْرِفُ أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ لِيَذَرَ الْكَذِبَ عَلَى النَّاسِ وَيَكْذِبَ عَلَى اللهِ. وَسَأَلْتُكَ أَشْرَافُ النَّاسِ اتَّبَعُوهُ أَمْ ضُعَفَاؤُهُمْ، فَذَكَرْتَ أَنَّ ضُعَفَاءَهُمُ اتَّبَعُوهُ، وَهُمْ أَتْبَاعُ الرُّسُلِ. وَسَأَلْتُكَ أَيَزِيدُونَ أَمْ يَنْقُصُونَ، فَذَكَرْتَ أَنَّهُمْ يَزِيدُونَ، وَكَذٰلِكَ أَمْرُ الإِيمَانِ حَتَّى يَتِمَّ. وَسَأَلْتُكَ أَيَرْتَدُّ أَحَدٌ سَخْطَةً لِدِينِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيهِ، فَذَكَرْتَ أَنْ لاَ، وَكَذٰلِكَ الإِيمَانُ حِينَ تُخَالِطُ بَشَاشَتُهُ الْقُلُوبَ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ يَغْدِرُ، فَذَكَرْتَ أَنْ لاَ، وَكَذٰلِكَ الرُّسُلُ لاَ تَغْدِرُ. وَسَأَلْتُكَ بِمَا يَأْمُرُكُمْ، فَذَكَرْتَ أَنَّهُ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَعْبُدُوا اللهَ

बोलता।

अबू सुफियान रजि. कहते हैं कि इसके बाद पहला सवाल जो हिरक्ल ने मुझ से आपके बारे में किया, वह यह था कि तुम लोगों में उसका खानदान कैसा है? मैंने कहा, वह ऊँचे खानदान वाला है। फिर कहने लगा, अच्छा! तो क्या यह बात उससे पहले भी तुममें से किसी ने कही थी? मैंने कहा, नहीं, कहने लगा, अच्छा उसके खानदान में से कोई बादशाह गुजरा है? मैंने कहा, नहीं। कहने लगा : अच्छा! यह बताओ कि बड़े लोगों ने उसकी पैरवी की है, या गरीबों ने? मैंने कहा कमजोरों ने, कहने लगा: उसके मानने वाले (दिन-ब-दिन) बढ़ रहे हैं या कम हो रहे हैं? मैंने कहा, उनकी तादाद में बढ़ोतरी हो रही है। कहने लगा, उसके दीन में दाखिल होने के बाद कोई आदमी उसके दीन को नापसन्द करते हुए उसके दीन से फिर जाता है? मैंने कहा, नहीं! कहने लगा: उसने जो बात कही है, क्या उस (दावा-ए-नबूवत) से

وَحْدَه وَلاَ تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَيَنْهَاكُمْ عَنْ عِبَادَةِ ٱلأَوْثَانِ، وَيَأْمُرُكُمْ بِالصَّلاَةِ وَٱلصِّدْقِ وَٱلعَفَافِ، فَإِنْ كَانَ مَا تَقُولُ حَقًّا فَسَيَمْلِكُ مَوْضِعَ قَدَمَيَّ هَاتَيْنِ، وَقَدْ كُنْتُ أَعْلَمُ أَنَّهُ خَارِجٌ، لَمْ أَكُنْ أَظُنُّ أَنَّهُ مِنْكُمْ، فَلَوْ أَعْلَمُ أَنِّي أَخْلُصُ إِلَيْهِ، لَتَجَشَّمْتُ لِقَاءَهُ، وَلَوْ كُنْتُ عِنْدَهُ لَغَسَلْتُ عَنْ قَدَمِهِ. ثُمَّ دَعَا بِكِتَابِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ ٱلَّذِي بُعِثَ بِهِ دِحْيَةُ إِلَى عَظِيمِ بُصْرَى، فَدَفَعَهُ إِلَى هِرَقْلَ، فَقَرَأَهُ، فَإِذَا فِيهِ: (بِسْمِ ٱللهِ ٱلرَّحْمٰنِ ٱلرَّحِيمِ، مِنْ مُحَمَّدٍ عَبْدِ ٱللهِ وَرَسُولِهِ إِلَى هِرَقْلَ عَظِيمِ ٱلرُّومِ: سَلاَمٌ عَلَى مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلْهُدَى، أَمَّا بَعْدُ، فَإِنِّي أَدْعُوكَ بِدِعَايَةِ ٱلإِسْلاَمِ، أَسْلِمْ تَسْلَمْ، يُؤْتِكَ ٱللهُ أَجْرَكَ مَرَّتَيْنِ، فَإِنْ تَوَلَّيْتَ فَإِنَّ عَلَيْكَ إِثْمَ ٱلأَرِيسِيِّينَ، وَ ﴿يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ تَعَالَوْا۟ إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِۦ شَيْـًٔا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّن دُونِ ٱللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَقُولُوا۟ ٱشْهَدُوا۟ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ﴾). قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: فَلَمَّا قَالَ مَا قَالَ، وَفَرَغَ مِنْ قِرَاءَةِ ٱلْكِتَابِ، كَثُرَ عِنْدَهُ ٱلصَّخَبُ وَٱرْتَفَعَتِ ٱلأَصْوَاتُ وَأُخْرِجْنَا، فَقُلْتُ لأَصْحَابِي: لَقَدْ أَمِرَ أَمْرُ ٱبْنِ أَبِي كَبْشَةَ، إِنَّهُ يَخَافُهُ مَلِكُ بَنِي ٱلأَصْفَرِ. فَمَا زِلْتُ مُوقِنًا

पहले तुम लोग उसको झूटा कहा करते थे? मैंने कहा : नहीं, कहने लगा: क्या वह धोका देता है? मैंने कहा, नहीं! अलबत्ता हम लोग इस वक्त उसके साथ सुलह (राजीनामे) की एक मुद्दत गुजार रहे है, मालूम नहीं इसमें वह क्या करेगा? अबू सुफियान कहते हैं कि इस जुमले के सिवा मुझे और कहीं (अपनी तरफ से) बात दाखिल करने का मौका नहीं मिला। कहने लगा : क्या तुम लोगों ने उससे जंग लड़ी है? मैंने कहा : जी हाँ! उसने कहा, फिर तुम्हारी और उसकी जंग कैसी रही? मैंने कहा, जंग में हम दोनों के बीच बराबर की चोट है, कभी वह हमें नुकसान पहुंचा लेता है और कभी हम उसे नुकसान से दो-चार कर देते हैं। कहने लगा: वह तुम्हें किन बातों का हुक्म देता है? मैंने कहा, वह कहता है सिर्फ अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न करो, जिनकी तुम्हारे बाप दादा इबादत करते थे, उनको छोड़ दो और वह हमें नमाज,

أَنَّهُ سَيَظْهَرُ حَتَّى أَدْخَلَ ٱللهُ عَلَيَّ ٱلإِسْلاَمَ.

وَكَانَ ٱبْنُ ٱلنَّاطُورِ، صَاحِبُ إِيلِيَاءَ وَهِرَقْلَ، أُسْقِفَ عَلَى نَصَارَى ٱلشَّأْمِ، يُحَدِّثُ أَنَّ هِرَقْلَ حِينَ قَدِمَ إِيلِيَاءَ، أَصْبَحَ خَبِيثَ ٱلنَّفْسِ، فَقَالَ لَه بَعْضُ بَطَارِقَتِهِ: قَدِ ٱسْتَنْكَرْنَا هَيْئَتَكَ، قَالَ ٱبْنُ ٱلنَّاطُورِ: وَكَانَ هِرَقْلُ حَزَّاءً يَنْظُرُ فِي ٱلنُّجُومِ، فَقَالَ لَهُمْ حِينَ سَأَلُوهُ: إِنِّي رَأَيْتُ ٱللَّيْلَةَ حِينَ نَظَرْتُ فِي ٱلنُّجُومِ أَنَّ مَلِكَ ٱلْخِتَانِ قَدْ ظَهَرَ، فَمَنْ يَخْتَتِنُ مِنْ هٰذِهِ ٱلأُمَّةِ؟ قَالُوا: لَيْسَ يَخْتَتِنُ إِلَّا ٱلْيَهُودُ، فَلاَ يُهِمَّنَّكَ شَأْنُهُمْ، وَٱكْتُبْ إِلَى مَدَايِنِ مُلْكِكَ، فَيَقْتُلُوا مَنْ فِيهِمْ مِنَ ٱلْيَهُودِ. فَبَيْنَمَا هُمْ عَلَى أَمْرِهِمْ، أُتِيَ هِرَقْلُ بِرَجُلٍ أَرْسَلَ بِهِ مَلِكُ غَسَّانَ يُخْبِرُ عَنْ خَبَرِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَلَمَّا ٱسْتَخْبَرَهُ هِرَقْلُ قَالَ: ٱذْهَبُوا فَانْظُرُوا أَمُخْتَتِنٌ هُوَ أَمْ لاَ؟ فَنَظَرُوا إِلَيْهِ، فَحَدَّثُوهُ أَنَّهُ مُخْتَتِنٌ، وَسَأَلَهُ عَنِ ٱلْعَرَبِ، فَقَالَ: هُمْ يَخْتَتِنُونَ، فَقَالَ هِرَقْلُ: هٰذَا مُلْكُ هٰذِهِ ٱلأُمَّةِ قَدْ ظَهَرَ. ثُمَّ كَتَبَ هِرَقْلُ إِلَى صَاحِبٍ لَهُ بِرُومِيَةَ، وَكَانَ نَظِيرَهُ فِي ٱلْعِلْمِ، وَسَارَ هِرَقْلُ إِلَى حِمْصَ، فَلَمْ يَرِمْ حِمْصَ حَتَّى أَتَاهُ كِتَابٌ مِنْ صَاحِبِهِ يُوَافِقُ رَأْيَ هِرَقْلَ عَلَى خُرُوجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، وَأَنَّهُ نَبِيٌّ،

सच्चाई, परहेजगारी, पाकदामनी और करीबी लोगों के साथ अच्छा बर्ताव करने का हुक्म देता है।

''उसके बाद हिरक्ल ने अपने तर्जुमान से कहा, तुम उस आदमी (अबू सुफियान) से कहो कि मैंने तुमसे उस आदमी (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का खानदान पूछा तो तुमने बताया कि वह ऊंचे खानदान का है और रिवाज यही है कि पैगम्बर (हमेशा) अपनी कौम के ऊंचे खानदान में से भेजे जाते हैं और मैंने पूछा कि क्या यह बात उससे पहले भी तुम में से किसी ने कही थी? तुमने बतलाया कि नहीं, मैं कहता हूँ कि अगर यह बात उससे पहले किसी और ने कही होती तो मैं कहता कि वह आदमी एक ऐसी बात की नकल कर रहा है जो उससे पहले कही जा चुकी है और मैंने पूछा कि उसके बुजुर्गो में से कोई बादशाह गुजरा है? तुमने बतलाया कि नहीं, मैं कहता हूँ कि अगर उसके बुजुर्गो में कोई बादशाह गुजरा होता तो मैं कहता

فَأَذِنَ هِرَقْلُ لِعُظَمَاءِ ٱلرُّومِ فِي دَسْكَرَةٍ لَهُ بِحِمْصَ، ثُمَّ أَمَرَ بِأَبْوَابِهَا فَغُلِّقَتْ، ثُمَّ ٱطَّلَعَ فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ ٱلرُّومِ، هَلْ لَكُمْ فِي ٱلْفَلَاحِ وَٱلرُّشْدِ، وَأَنْ يَثْبُتَ مُلْكُكُمْ، فَتُبَايِعُوا هٰذَا ٱلنَّبِيَّ؟ فَحَاصُوا حَيْصَةَ حُمُرِ ٱلْوَحْشِ إِلَى ٱلْأَبْوَابِ، فَوَجَدُوهَا قَدْ غُلِّقَتْ، فَلَمَّا رَأَى هِرَقْلُ نَفْرَتَهُمْ، وَأَيِسَ مِنَ ٱلْإِيمَانِ، قَالَ: رُدُّوهُمْ عَلَيَّ، وَقَالَ: إِنِّي قُلْتُ مَقَالَتِي آنِفًا أَخْتَبِرُ بِهَا شِدَّتَكُمْ عَلَى دِينِكُمْ، فَقَدْ رَأَيْتُ، فَسَجَدُوا لَهُ وَرَضُوا عَنْهُ، فَكَانَ ذٰلِكَ آخِرَ شَأْنِ هِرَقْلَ. [رواه البخاري: ٧]

कि वह आदमी अपने बाप की बादशाहत का चाहने वाला है और मैंने यह पूछा कि जो बात उसने कही है, इस (दावा-ए-नबुव्वत) से पहले तुमने कभी उस पर झूट बोलने का इल्जाम लगाया था। तो तुमने बतलाया कि नहीं और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि ऐसा नहीं हो सकता कि वह आदमी लोगों पर तो झूट बांधने से बचे और अल्लाह पर झूट बोले। मैंने यह भी पूछा कि बड़े लोग उसकी पैरवी कर रहे हैं या कमजोर? तो तुमने बतलाया कि कमजोर लोगों ने उसकी पैरवी की है और हकीकत यह है कि इस किस्म के लोग ही पैगम्बरों के मानने वाले होते हैं। मैंने पूछा कि वह बढ़ रहे हैं या कम हो रहे हैं? तुमने बतलाया कि उनकी तादाद लगातार बढ़ रही है और दर हकीकत ईमान का यही हाल होता है, यहां तक कि वह पूरा हो जाता है। फिर मैंने पूछा कि क्या इस दीन में दाखिल होने के बाद कोई आदमी नफरत करते हुए उसके दीन से फिर जाता है? तो तुमने बतलाया कि नहीं और ईमान का यही हाल होता है कि उसकी मिठास जब दिल में समा जाती है तो फिर निकलती नहीं और मैंने पूछा कि क्या वह वादा खिलाफी भी करता है? तो तुमने बतलाया कि नहीं और रसूल ऐसे ही होते हैं, वह धोका नहीं करते। मैंने यह भी पूछा कि वह तुम्हें किन बातों का हुक्म देता है, तो तुमने बतलाया कि वह अल्लाह की इबादत करने और उसके साथ

किसी को शरीक ना ठहराने का हुक्म देता है, तुम्हें बुतपरस्ती से मना करता है और तुम्हें नमाज, सच्चाई और परहेजगारी व पाकदामनी इख्तियार करने के लिए कहता है, तो जो कुछ तुमने बतलाया है, अगर वह सही है तो वह आदमी बहुत जल्द इस जगह का मालिक हो जायेगा, जहां मेरे यह दोनों कदम हैं। मैं जानता था कि यह नबी आने वाला है, लेकिन मेरा यह ख्याल न था कि वह तुम में से होगा। अगर मुझे यकीन होता कि मैं उसके पास पहुंच सकूंगा तो उससे जरूर मुलाकात करता, अगर मैं उसके पास (मदीना में) होता तो जरूर उसके पांव धोता, उसके बाद हिरक्ल ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वह खत मंगवाया जो आपने दहिया कलबी रजि. के जरीये हाकिमे बुसरा के पास भेजा था और उसने वह खत हिरक्ल को पहुंचा दिया था, हिरक्ल ने इसे पढ़ा, इसमें यह लिखा था, शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम करने वाला है।

अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ से हिरक्ल अज़ीमे रूम के नाम।

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे, इसके बाद मैं तुझे कलमा-ए-इस्लाम ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' की दावत देता हूँ। मुसलमान हो जा तू महफूज रहेगा, अल्लाह तआला तुझे दोहरा सवाब देगा, फिर अगर तू यह बात न माने तो तेरी रिआया (जनता) का गुनाह भी तुझी पर होगा।

''ऐ अहले किताब! एक ऐसी बात की तरफ आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे बीच बराबर है। हम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत ना करें और उसके साथ किसी को शरीक ना करें और हममें से कोई अल्लाह के अलावा एक दूसरे को अपनी बिगड़ी

बनाने वाला न समझे। पस अगर यह लोग फिर जायें तो साफ कह दो कि गवाह रहो, हम तो फरमां बरदार हैं"

अबू सुफियान रजि. ने कहा, जब हिरक्ल जो कहना चाहता था कह चुका और खत पढ़कर फारिग हुआ तो वहां आवाजें बुलन्द हुई और बहुत शोर मचा और हम बाहर निकाल दिये गये। मैंने बाहर आकर अपने साथियों से कहाः अबू कबशा के बेटे (मुहम्मद स.अ.व.) का मामला बड़ा जोर पकड़ गया, इससे तो रोमियों का बादशाह भी डरता है, उस रोज के बाद मुझे बराबर यकीन रहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन जरूर ग़ालिब होगा, यहां तक कि अल्लाह तआला ने मेरे अन्दर इस्लाम पैदा कर दिया।

इब्ने नातूर जो बैतुल मुकद्दस के गवर्नर हिरक्ल का कारसाज और शाम के ईसाइयों का पादरी था, बयान करता है कि हिरक्ल जब बैतुलमुकद्दस आया तो एक रोज सुबह के वक्त गमी के साथ उठा और उसके कुछ साथी कहने लगे, हम देखते हैं कि आपकी हालत कुछ बुझी-बुझी है। इब्ने नातूर ने कहा कि हिरक्ल माहिरे नुजूमी और सितारो को पहचानने वाला था, जब लोगों ने उससे पूछा तो कहने लगा कि मैंने आज रात तारों पर एक निगाह डाली तो देखता हूँ कि खतना (मुसलमानी) करने वालों का बादशाह जाहिर हो चुका है (बताओ) इन दिनों कौन लोग खतना करते हैं? साथी कहने लगे, यहूदियों के सिवा कोई खतना नहीं करता। उनसे फिक्र मन्द होने की कोई जरूरत नहीं। आप अपने इलाके वालों को परवाना (खबर) भेज दें कि तमाम यहूदियों को मार डालो। इस ग़ुफ्तगू के दौरान ही हिरक्ल के सामने एक आदमी पेश किया गया, जिसे ग़स्सान के बादशाह ने भेजा था और वह रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हाल बयान करता

था, जब हिरक्ल ने इससे तमाम मालूमात हासिल कर ली तो कहने लगा कि इसे ले जाओ और देखो कि इसका खतना हुआ है या नहीं? लोगों ने इसे देखा और हिरक्ल को बताया कि इसका खतना हुआ है। हिरक्ल ने उससे पूछा कि अरब खतना करते हैं। उसने कहा, हाँ! वह खतना करते हैं? तब हिरक्ल ने कहा, यही आदमी (पैगम्बर) इस उम्मत का बादशाह है, जिसका जहूर हो चुका है। फिर हिरक्ल ने अपने इल्म में हमपल्ला एक दोस्त को रूमियों में खत लिखा और खुद हिम्स रवाना हो गया, अभी हिम्स नहीं पहुंचा था कि उसे अपने दोस्त का जवाब मिल गया, उसकी राय भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जाहिर होने में हिरक्ल की तरह थी कि आप नबी बरहक हैं, आखिर मुल्के हिम्स पहुंचकर उसने रूम के सरदारों को अपने महल आने की दावत दी। (जब वह आ गये) तो उसने हुक्म देकर दरवाजा बन्द करवा दिया, फिर बालकनी से उन्हें देखा और कहने लगा रूम के लोगों! अगर तुम अपनी कामयाबी भलाई और बादशाहत पर कायम रहना चाहते हो तो उस पैगम्बर की बैयत कर लो, यह (ऐलाने हक) सुनते ही वह लोग जंगली गधों की तरह दरवाजों की तरफ दौड़े, देखा तो वह बंद थे। अब जब हिरक्ल ने इनकी नफरत को देखा और इनके ईमान लाने से मायूस हुआ तो कहने लगा, इन सरदारों को मेरे पास लाओ। (जब वह आये) तो कहने लगा कि मैंने अभी जो बात तुमसे कही थी, वह सिर्फ आजमाने के लिए थी, कि देखूं तुम अपने दीन पर किस कद्र मजबूत हो? अब मैं वह देख चुका, फिर तमाम हाजरीन ने उसे सज्दा किया और उससे राजी हो गये। यह हिरक्ल (के ईमान लाने) के मुताल्लिक आखरी आखरी मालूमात हैं।

फायदे : हिरक्ल से बारे में यह हदीस गोया बरजखी हदीस है, क्योंकि इसका ताल्लुक वह्य के साथ भी बार्यी तौर पर है, हिरक्ल जो इसाई मजहब का मानने वाला था, उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का इकरार किया, जो वह्य का नतीजा है, और इस हदीस का किताबुलईमान से भी ताल्लुक है, क्योंकि ईमान की इम्तयाजी पहचान लगातार अमल और पैरवी है जो हिरक्ल में न थी, वाजेह तस्दीक और इकरार मौजूद है, लेकिन इसके मुताबिक अमल न करने से काफिर ही रहा। हाफिज इब्ने हजर ने लिखा है कि इमाम बुखारी ने इस किताब को हदीसे नियत से शुरू किया था, गोया आप यह बताना चाहते हैं कि अगर हिरक्ल की नियत दुरूस्त थी तो उसे कुछ फायदा पहुंचने की उम्मीद है, वरना उसके मुकद्दर में हलाकत (बर्बादी) और तबाही के सिवा कुछ नहीं। (औनुलबारी, 1/87)

नोट : इस हदीस में तीसरी चीज, जिस पर वह्य उतरी थी उसकी खूबियों और हालतों को भी बयान किया गया है। (अलवी)

किताबुल ईमानि
ईमान का बयान

ईमान के लिए तीन चीजों का होना जरूरी है। 1. दिल से सच्चा जानना, 2. जुबान से इकरार, 3. जिस्म के आजाओं (अंगों) से पैरवी और अमल का पाबन्द होना। यहूद को आपकी पहचान व तसदीक थी। नीज हिरक्ल और अबू तालिब ने तो इकरार भी किया था, लेकिन इसके बावुजूद मोमिन नहीं हैं। दिल से सच्चा जानना और जुबान से इकरार की पैरवी और अमल के बगैर कोई हैसियत नहीं। लिहाजा तसदीक में कोताही करने वाला मुनाफिक और इकरार में कोताही करने वाला काफिर जबकि अमली कोताही करने वाला फासिक है। अगर इन्कार की वजह से बद अमली का शिकार है तो उसके कुफ्र में कोई शक नहीं, ऐसे हालात में तसदीक व इकरार का कोई फायदा नहीं।

बाब 1 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान : ''इस्लाम की बुनियाद पांच चीजों पर है।''

١ - باب: قَوْلُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: بُنِيَ الإِسْلاَمُ عَلَى خَمْسٍ

8 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया : ''इस्लाम की बुनियाद पांच चीजों पर रखी गई

٨ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (بُنِيَ ٱلإِسْلاَمُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلَّا ٱللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ ٱللهِ، وَإِقَامِ ٱلصَّلاَةِ، وَإِيتَاءِ ٱلزَّكَاةِ،

وَالْحَجِّ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ). [رواه البخاري: ٨]

है। गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद हकीकी नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं, नमाज कायम करना, जकात अदा करना, हज्ज करना और रमजानुल मुबारक के रोजे रखना।"

फायदे : इमाम बुखारी के नजदीक इस्लाम और ईमान एक ही चीज है और यह बाब बांधकर साबित किया है कि शरीअत ने चन्द चीजों से ईमान को जोड़ा है और उसमें कमी और बेशी हो सकती है। इमाम बुखारी खुद फरमाते हैं कि मैं मुख्तलिफ शहरों में हजार से ज्यादा इल्म वालों से मिला हूँ, सब यही कहते थे कि ईमान कौल और अमल का नाम है और यह कम और ज्यादा होता रहता है।

٢ - باب: أُمُورِ الإِيمَانِ

बाब 2 : उमूरे ईमान (ईमान के बहुत से काम)

٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (الإِيمَانُ بِضْعٌ وَسِتُّونَ شُعْبَةً، وَٱلْحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِنَ الإِيمَانِ) [رواه البخاري: ٩].

9 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं, आपने फरमायाः ईमान के साठ से कुछ ज्यादा टहनियाँ हैं और शर्म भी ईमान की एक (अहम) टहनी है।"

फायदे : हदीस के आखिर में शर्म को खुसूसियत के साथ बयान किया गया है, क्योंकि इन्सानी अख्लाक में शर्म का बहुत बुलन्द मकाम है, यह वह आदत है जो इन्सान को बहुत से गुनाहों से रोकती है। शर्म सिर्फ लोगों से ही नहीं बल्कि सब से ज्यादा शर्म अल्लाह से होनी चाहिए। इस बिना पर सब से बड़ा बेहया वह बदबख्त इन्सान है जो गुनाह करते वक्त अल्लाह से नहीं शर्माता, यही

वजह है कि ईमान और शर्म के बीच बहुत गहरा रिश्ता है। (औनुलबारी, 1/94)

बाब 3 : मुसलमान वह है जिसकी जुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान बचे रहें।

٣ - باب: الْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ

10 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं, आपने फरमाया : कि मुसलमान वह है, जिसकी जुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफूज रहें और मुहाजिर वह है जो उन चीजों को छोड़ दे, जिनसे अल्लाह ने मना किया है।''

١٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (ٱلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ ٱلْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ، وَٱلْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ مَا نَهَى ٱللهُ عَنْهُ). [رواه البخاري: ١٠]

फायदे : इस हदीस में सिर्फ जुबान और हाथ से तकलीफ देने का ज़िक्र है, क्योंकि ज्यादातर इन्सानी तकलीफों का ताल्लुक इन्हीं दो से होता है, वरना मुसलमान की शान तो यह है कि दूसरे लोगो को उससे किसी किस्म की तकलीफ न पहुंचे, चूनांचे कुछ रिवायतों में यह ज्यादा भी है कि मोमिन वह है, जिससे दूसरे लोगो के खून महफूज रहें। वाजेह रहे कि इससे मुराद वह तकलीफ देना है जो बिला वजह हो, क्योंकि बशर्ते कुदरत मुजरिमों को सजा देना और शरपसन्द लोगों के फसाद (लड़ाई-झगड़े) को ताकत के जोर से रोकना तो मुसलमान का असली फर्ज है। (औनुलबारी, 1/96)

बाब 4 : कौनसा मुसलमान बेहतर है?

٤ - باب: أَيُّ ٱلإِسْلَامِ أَفْضَلُ؟

11 : अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है कि सहाबा किराम रजि.

١١ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَيُّ

ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कौनसा मुसलमान बेहतर है? आपने फरमाया, "जिसकी जुबान और ताकत से दूसरे मुसलमान महफूज रहें।"

الإسْلَامِ أفْضَلُ؟ قَالَ: (مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسانِهِ وَيَدِهِ). [رواه البخاري: ١١]

फायदे : "अय्युल इस्लाम" में हजफ है, दरअसल "अय्यु जविले इस्लाम" है। इसकी ताईद सही मुस्लिम की एक रिवायत से होती है, जिसके अलफाज "अय्युलमुस्लिमीना अफजल" बयान हुये हैं। तर्जुमा के वक्त हमने इसी रिवायत को सामने रखा है ताकि सवाल और जवाब में लगाव कायम रहे।

बाब 5 : खाना खिलाना इस्लाम की आदत है।

٥ - باب: إطْعَامُ الطَّعامِ مِنَ الإسْلَامِ

12 : अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि. से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, कि इस्लाम की कौनसी आदत अच्छी है? आपने फरमाया : "तुम (मोहताजों) को खाना खिलाओ और जानकार और अनजान हर एक (मुसलमान) को सलाम करो।"

١٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ: أَيُّ ٱلإسْلَامِ خَيْرٌ؟ قَالَ: (تُطْعِمُ ٱلطَّعَامَ، وَتَقْرَأُ السَّلَامَ عَلَى مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لَمْ تَعْرِفْ). [رواه البخاري: ١٢]

फायदे : इस हदीस के मुताबिक खाना खिलाने और सलाम करने को एक बेहतरीन अमल बताया गया है, जबकि दूसरी हदीसों में अल्लाह के जिक्र और जिहाद और मां-बाप की फरमां बरदारी को अफजल करार दिया है, इसमें कोई फर्क नहीं है। बल्कि यह फर्क सवाल करने वाले की हालत और जरूरत के लिहाज से है।

बाब 6 : ईमान की पहचान है कि अपने भाई के लिए वही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है।

٦ - باب: مِنَ الإِيمَانِ أَنْ يُحِبَّ لأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ

13 : अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : ''तुम में से कोई आदमी मोमिन नहीं हो सकता, जब तक अपने भाई के लिए वही न चाहे जो अपने लिए चाहता है।

١٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لاَ يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يُحِبَّ لأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ). [رواه البخاري: ١٣]

फायदे : आदत और अखलाक के बयान में इस आदत को बुनियादी करार दिया गया है। मुसलमानों को चाहिए कि वह मुसलमान भाईयों बल्कि तमाम इन्सानों का खैर-ख्वाह रहे। ऐसे इन्सान की दुनिया और आखिरत बड़े आराम और सुकून से गुजरती है।

बाब 7 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत ईमान का हिस्सा है।

٧ - باب: حُبُّ الرَّسُولِ ﷺ مِنَ الإِيمَانِ

14 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''मुझे कसम है उस अल्लाह की जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम में कोई आदमी मोमिन नहीं हो सकता, जब तक उसको मेरी मुहब्बत अपने बाप और औलाद से ज्यादा न हो जाये।''

١٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: (فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لاَ يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَالِدِهِ وَوَلَدِهِ). [رواه البخاري: ١٤]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तबई मुहब्बत के अलावा ईमानी मुहब्बत की भी जरूरत है, वरना तबई मुहब्बत तो

जनाब अबू तालिब को भी थी, लेकिन उसे मोमिन नहीं कहा गया। बाप और औलाद का खास तौर से जिक्र फरमाया, क्योंकि इन्सान इनसे बेहद मुहब्बत करता है, फिर बाप को पहले किया, क्योंकि बाप सब का होता है, जबकि तमाम के लिए औलाद का होना जरूरी नहीं। (औनुलबारी, 1/101)

15 : अनस रजि. ने भी इस हदीस को इस तरह बयान किया है, लेकिन इसके आखिर में बाप और औलाद के साथ तमाम लोगों (से ज्यादा मुहब्बत) का इजाफा किया है।

١٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ الحديث بعَيْنِهِ وَزَادَ في آخِرِه: (وَٱلنَّاسِ أَجْمَعِينَ). [رواه البخاري: ١٥]

फायदे : एक दूसरी रिवायत में है कि जब तक इन्सान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जाते गिरामी को अपनी जान से भी ज्यादा अजीज न समझे, उस वक्त तक ईमान पूरा नहीं हो सकता।

बाब 8 : ईमान की मिठास।

٨ - باب: حَلاَوَةُ ٱلإِيمَانِ

16 : अनस रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "ईमान की मिठास उसी को नसीब होगी जिसमें तीन बातें होगी, एक यह कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत उसको सबसे ज्यादा हो, दूसरी यह कि सिर्फ अल्लाह ही के लिए किसी से दोस्ती रखे, तीसरी यह कि दोबारा काफिर बनना उसे ऐसे ही नापसन्द हो, जैसे आग में झोंका जाना नापसन्द होता है।

١٦ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (ثَلاَثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ وَجَدَ حَلاَوَةَ ٱلإِيمَانِ: أَنْ يَكُونَ ٱللهُ وَرَسُولُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا، وَأَنْ يُحِبَّ ٱلْمَرْءَ لاَ يُحِبُّهُ إِلاَّ لِلهِ، وَأَنْ يَكْرَهَ أَنْ يَعُودَ فِي ٱلْكُفْرِ كَمَا يَكْرَهُ أَنْ يُقْذَفَ فِي ٱلنَّارِ). [رواه البخاري: ١٦]

फायदे : मालूम हुआ कि मारपीट और जिल्लत और रूसवाई को कुफ्र पर तरजीह देना बाइसे फजीलत है। (अलइकराह : **6941**)। अगरचे ईमान ऐसी चीज नहीं जिसे जुबान से चखा जा सके, फिर भी इसमें न देखी जाने वाली मिठास और लज्जत होती है। यह उस आदमी को महसूस होती है, जो हदीस में मजकूरा मकाम पर पहुंच जाये। बाज़ औकात तो यह मिठास इस हद तक महसूस होती है कि बन्दा मोमिन ईमान पर अपनी जान कुरबान करने के लिए भी तैयार हो जाता है। (औनुलबारी, **1/104**)। ऐसा इन्सान नेकी और इताअत के काम करने में लज़्ज़त और खुशी महसूस करता है।

बाब 9 : अन्सार से मुहब्बत ईमान की पहचान है।

٩ - بَاب: عَلاَمَةُ ٱلإِيمَانِ حُبُّ ٱلأَنْصَارِ

17 : अनस रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : "ईमान की निशानी अनसार से मुहब्बत रखना और निफाक की निशानी अनसार से कीना (जलन) रखना है।"

١٧ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (آيَةُ ٱلإِيمَانِ حُبُّ ٱلأَنْصَارِ، وَآيَةُ ٱلنِّفَاقِ بُغْضُ ٱلأَنْصَارِ). [رواه البخاري: ١٧]

फायदे : अन्सार, मदीना मुनव्वरा के वह लोग हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ठहराया और ऐसे वक्त में आपका साथ दिया, जबकि और कोई कौम आपकी मदद करने के लिए तैयार नहीं थी। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनका नाम अन्सार रखा। (औनुलबारी, **1/106**)। अन्सार से, आपके मददगार की हैसियत से मुहब्बत करना मुराद है, शख्सी तौर पर किसी से इख्तिलाफ और झगड़ा होना इस से अलग है।

١٨ : عَنْ عُبَادَةَ بْنِ ٱلصَّامِتِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ، وَحَوْلَهُ عِصَابَةٌ مِنْ أَصْحَابِهِ: (بَايِعُونِي عَلَى أَنْ لاَ تُشْرِكُوا بِٱللهِ شَيْئًا، وَلاَ تَسْرِقُوا، وَلاَ تَزْنُوا، وَلاَ تَقْتُلُوا أَوْلاَدَكُمْ، وَلاَ تَأْتُوا بِبُهْتَانٍ تَفْتَرُونَهُ بَيْنَ أَيْدِيكُم وَأَرْجُلِكُمْ، وَلاَ تَعْصُوا فِي مَعْرُوفٍ، فَمَنْ وَفَّى مِنْكُمْ فَأَجْرُهُ عَلَى ٱللهِ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذٰلِكَ شَيْئًا فَعُوقِبَ فِي ٱلدُّنْيَا فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذٰلِكَ شَيْئًا ثُمَّ سَتَرَهُ اللهُ فَهُوَ إِلَى ٱللهِ، إِنْ شَاءَ عَفَا عَنْهُ وَإِنْ شَاءَ عَاقَبَهُ). فَبَايَعْنَاهُ عَلَى ذٰلِكَ. [رواه البخاري: ١٨]

18 : उबादा बिन सामित रजि. का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आस पास सहाबा रजि. की एक जमाअत थी, तो आपने फरमाया: ''तुम सब मुझ से इस बात पर बैअत करो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ना ठहराओगे, चोरी नहीं करोगे, जिना नहीं करोगे, अपनी औलाद को कत्ल नहीं करोगे, अपने हाथ और पांव के सामने (जाने-अनजाने) किसी पर इल्जाम नहीं लगाओगे और अच्छे कामों में नाफरमानी नहीं करोगे, फिर जो कोई तुममें से यह वादा पूरा करेगा, उसका सवाब अल्लाह के जिम्मे है और जो कोई इन गुनाहों में से कुछ कर बैठे और उसे दुनिया में उसकी सजा मिल जाये तो उसका गुनाह उतर जायेगा और जो कोई इन गुनाहों में से किसी को कर बैठे, फिर अल्लाह ने दुनिया में उसके गुनाह को छुपाया तो वह अल्लाह के हवाले है, अगर चाहे तो (कयामत के दिन) उसे माफ करे या सजा दे।'' हमने इन सब शर्तो पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बैअत कर ली।

फायदे : इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि हुदूद (सजायें) गुनाहों का कफ्फारा है यानी हद्दे शरई कायम होने से गुनाह माफ हो जाता है। (अलहुदूद : **6801, 6784**)। मालूम हुआ कि दीने इस्लाम में बैअत (वादा) लेना एक मसनून अमल है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों से दीने इस्लाम पर कारबन्द

रहने, हिजरत करने, मैदाने जिहाद में साबित कदम रहने, बुरी चीजों को छोड़ने, सुन्नत पर अमल करने और बिदअत और खुराफात से दूर रहने की बैअत लेते थे। अलबत्ता बैअते तसव्वुफ (सुफियत की बैअत) की कोई असल नहीं। यह बहुत बाद की पैदावार है। (औनुलबारी, 1/112)

बाब 10 : फितनों से भागना दीनदारी है।

١٠ - باب: مِنَ ٱلدِّينِ ٱلْفِرَارُ مِنَ ٱلْفِتَنِ

19 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "वह जमाना करीब है, जब मुसलमान का बेहतरीन माल बकरियाँ होंगी, जिनको लेकर वह पहाड़ों की चोटियों और बारिश के मकामात की तरफ निकल जायेगा और फितनों से राहे फरार इख्तियार करके अपने दीन को बचा लेगा।"

١٩ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يُوشِكُ أَنْ يَكُونَ خَيْرُ مَالِ ٱلْمُسْلِمِ غَنَمٌ يَتْبَعُ بِهَا شَعَفَ ٱلْجِبَالِ وَمَوَاقِعَ ٱلْقَطْرِ، يَفِرُّ بِدِينِهِ مِنَ ٱلْفِتَنِ). [رواه البخاري: ١٩]

फायदे : फितना से मुराद हर वह चीज है, जिससे इन्सान गुमराह होकर अल्लाह के जिक्र और उसकी इबादत से गाफिल हो जाये। हमारे इस दौर में ऐसे फितनों का हुजूम है जो गुमराही और दीन से बेजारी का सबब बनते हैं। ऐसे हालात में तन्हाई इख्तियार करना जाइज है, हाँ अगर इन्सान में ऐसे दज्जाली फितनों का मुकाबला करने की इल्मी, अमली और अख्लाकी हिम्मत है तो मुआशरा में रहते हुये उनकी रोकथाम में लगे रहना अफजल है।

बाब 11 : फरमाने नबवी : "अल्लाह के मुतअल्लिक मैं तुममें सबसे ज्यादा

١١ - باب: قَوْلِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِٱللهِ

जानने वाला हूँ।''

20 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सहाबा-ए-किराम रजि. को हुक्म देते तो उन्हीं कामों का हुक्म देते, जिनको वह आसानी से कर सकते थे। उन्होंने मालूम किया, ऐ अल्लाह के रसूल! हमारा हाल आप जैसा नहीं है। अल्लाह ने तो आपकी अगली पिछली हर कोताही से दरगुजर फरमाया है, यह सुनकर आप इस कद्र नाराज हुये कि आपके चेहरा मुबारक पर गुस्से का असर जाहिर हुआ, फिर आपने फरमायाः ''मैं तुम सब से ज्यादा परहेजगार और अल्लाह को जानने वाला हूँ।''

٢٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْها قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ ٱللَّهِ ﷺ إِذَا أَمَرَهُمْ، أَمَرَهُمْ مِنَ ٱلأَعْمَالِ بِمَا يُطِيقُونَ، قَالُوا: إِنَّا لَسْنَا كَهَيْئَتِكَ يَا رَسُولَ ٱللَّهِ، إِنَّ ٱللَّهَ قَدْ غَفَرَ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ، فَيَغْضَبُ حَتَّى يُعْرَفَ ٱلْغَضَبُ فِي وَجْهِهِ، ثُمَّ يَقُولُ: (إِنَّ أَتْقَاكُمْ وَأَعْلَمَكُمْ بِٱللَّهِ أَنَا). [رواه البخاري: ٢٠]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसलिए नाराज हुये कि सहाबा-ए-किराम रजि. ने ''आसान कामों'' को बुलन्द मर्तबे और गुनाहों की बख्शिश के लिए नाकाफी ख्याल किया। उनके गुमान के मुताबिक बुलन्द दर्जे हासिल करने के लिए ऐसे कठिन अमल होने चाहिए, जिनकी अदायगी में तकलीफ उठानी पड़े। इस पर आपने खबरदार किया कि दीन में दखल अन्दाजी की जरूरत नहीं, बल्कि जो और जैसा हुक्म हो, उसी को काफी समझा जाये। (औनुलबारी, 1/115)

बाब 12 : ईमान वालों का आमाल के लिहाज से एक दूसरे से अफजल होना।

١٢ - باب: تَفَاضُل أَهْلِ ٱلإِيمَانِ فِي ٱلأَعْمَال

21 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जन्नत वाले जन्नत में और जहन्नम वाले जहन्नम में चले जायेंगे तो अल्लाह तआला फरमायेगा कि जिस आदमी के दिल में राई के दाने के बराबर ईमान हो, उसे जहन्नम से निकाल लाओ तो ऐसे लोगों को जहन्नम से निकाला जायेगा जो जल कर काले हो चुके होंगे। फिर उन्हें पानी या नहरे हयात में डाला जायेगा। (मालिक को शक है कि उस्ताद ने कौनसा लफ्ज बोला) वह सिरे से ऐसे उगेंगे जैसे दाना नहर के किनारे उगता है। क्या तू देखता नहीं, वह कैसे जर्द जर्द लिपटा हुआ निकलता है।

٢١ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يَدْخُلُ أَهلُ ٱلْجَنَّةِ ٱلجَنَّةَ وَأَهْلُ ٱلنَّارِ ٱلنَّارَ، ثُمَّ يَقُولُ ٱللهُ تَعَالَى: أَخْرِجُوا مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ. فَيُخْرَجُونَ مِنْهَا قَدِ ٱسْوَدُّوا، فَيُلْقَوْنَ فِي نَهْرِ ٱلحيَا، أَوِ ٱلْحَيَاةِ - شَكَّ مالِكٌ - فَيَنْبُتُونَ كَمَا تَنْبُتُ الحِبَّةُ فِي جَانِبِ ٱلسَّيْلِ، أَلَمْ تَرَ أَنَّهَا تَخْرُجُ صَفْرَاءَ مُلْتَوِيَةً).
[رواه البخاري: ٢٢]

फायदे : इमाम बुखारी ने वुहैब की रिवायत बयान करके उस शक को दूर कर दिया जो इमाम मालिक को हुआ यानी ''जिन्दगी की नहर'' (नहरे हयात) सही है।

---

22 : अबू सईद खुदरी रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''मैं एक बार सो रहा था, कि ख्वाब की हालत में लोगों को देखा, वह मेरे सामने लाये जाते हैं और वह कुर्ते पहने हुये हैं, कुछ के कुर्ते सीनों तक है

٢٢ : وعنهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ، رَأَيْتُ ٱلنَّاسَ يُعْرَضُونَ عَلَيَّ وَعَلَيْهِمْ قُمُصٌ، مِنْهَا مَا يَبْلُغُ ٱلثُّدِيَّ، وَمِنْهَا مَا دُونَ ذَلِكَ، وَعُرِضَ عَلَيَّ عُمَرُ بْنُ ٱلْخَطَّابِ، وَعَلَيْهِ قَمِيصٌ يَجُرُّهُ). قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَ ذَلِكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (ٱلدِّينَ). [رواه البخاري: ٢٣]

और कुछ लोगों के इससे भी कम और उमर बिन खत्ताब रजि. को मेरे सामने इस हालत में लाया गया कि वह जो कुर्ता पहने हुये हैं, उसे जमीन पर घसीट रहे हैं। सहाबा-ए-किराम रजि. ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप इस ख्वाब की क्या ताबिर करते हैं? आपने फरमाया, "दीन"

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि ख्वाब में अपना कुर्ता घसीटते हुये देखना उंचे दर्जे की दीनदारी की पहचान है, नीज यह भी साबित हुआ कि ईमान में कमी और ज्यादती मुमकिन है।
(औनुलबारी, 1/119)

बाब 13 : हया (शर्म) ईमान का हिस्सा है।

١٣ - باب: الحَيَاءُ مِنَ الإِيمَانِ

23 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक अन्सारी आदमी के पास से गुजरे, जबकि वह अपने भाई को समझा रहा था कि तू इतनी शर्म क्यों करता है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे फरमायाः "उसे अपने हाल पर छोड़ दो, क्योंकि शर्म तो ईमान का हिस्सा है।"

٢٣ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ مَرَّ عَلَى رَجُلٍ مِنَ ٱلأَنْصَارِ، وَهُوَ يَعِظُ أَخَاهُ فِي ٱلْحَيَاءِ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (دَعْهُ فَإِنَّ ٱلْحَيَاءَ مِنَ ٱلإِيمَانِ) [رواه البخاري: ٢٤]

बाब 14 : फरमाने इलाही ' "फिर अगर वह तौबा करें, नमाज पढ़ें और जकात दें तो उनका रास्ता छोड़ दो।" की तफसीर।

١٤ - باب: ﴿فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا ٱلزَّكَوٰةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ﴾

٢٤ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ ٱلنَّاسَ حَتَّى يَشْهَدُوا أَنْ لاَ إِلَهَ إِلَّا ٱللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ ٱللهِ، وَيُقِيمُوا ٱلصَّلاَةَ، وَيُؤْتُوا ٱلزَّكَاةَ، فَإِذَا فَعَلُوا ذَٰلِكَ عَصَمُوا مِنِّي دِمَاءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلَّا بِحَقِّ ٱلإِسْلاَمِ، وَحِسَابُهُمْ عَلَى ٱللهِ). [رواه البخاري: ٢٥]

24 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे हुक्म मिला है कि मैं लोगों से जंग जारी रखूं, यहां तक कि वह इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई माबूदे हकीकी नहीं और बेशक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल है। पूरे आदाब से नमाज अदा करें और जकात दें, जब वह यह करने लगें तो उन्होंने अपने जान और माल को मुझ से बचा लिया। सिवाये इस्लाम के हक के और उनका हिसाब अल्लाह के हवाले है।''

फायदे : काफिरों से जंग लड़ने का मकसद यह होता है कि वह इस्लाम कबूल करके सिर्फ अल्लाह की इबादत करें, अगरचे इस्लाम में टेक्स और मुनासिब शर्तों के साथ सुलह पर भी जंग खत्म हो जाती है मगर जंग बन्दी का यह तरीका इस्लामी जंग का असल मकसद नहीं, चूंकि इसके जरीये असल मकसद के लिए एक अमन से भरा हुआ रास्ता खुल जाता है, लिहाजा इस पर भी जंग रोक दी जाती है। (औनुलबारी, 1/123)

١٥ - باب: مَنْ قَالَ: إِنَّ ٱلإِيمَانَ هُوَ ٱلعَمَلُ

बाब 15 : उस आदमी की दलील जो कहता है : ''ईमान अमल ही का नाम है।''

٢٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ سُئِلَ: أَيُّ ٱلعَمَلِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: (إِيمَانٌ بِٱللهِ

25 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया, कौनसा

وَرَسُولِهِ). قِيلَ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: (الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللهِ). قِيلَ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: (حَجٌّ مَبْرُورٌ). [رواه البخاري: ٢٦]

अमल अच्छा है? आपने फरमाया: "अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना।" सवाल किया गया: "फिर कौनसा?" आपने फरमाया: "अल्लाह की राह में जिहाद करना।" पूछा गया : "फिर कौन सा?" आपने फरमाया: "वह हज जो कुबूल हो।"

फायदे : हज्जे मबरूर से मुराद वह हज है जो दिखावे और गुनाहों से पाक हो। इसकी पहचान यह है कि आदमी अपनी जिन्दगी पहले से बेहतर तरीके पर गुजारे।

١٦ - باب: إِذَا لَمْ يَكُنِ الإِسْلاَمُ عَلَى الْحَقِيقَةِ

बाब 16 : कभी इस्लाम से उसके हकीकी (शरई) माना मुराद नहीं होते।

٢٦ : عَنْ سَعْد بنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَعْطَى رَهْطًا وَسَعْدٌ جَالِسٌ، فَتَرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَجُلاً هُوَ أَعْجَبُهُمْ إِلَيَّ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، مَا لَكَ عَنْ فُلاَنٍ؟ فَوَاللهِ إِنِّي لأَرَاهُ مُؤْمِنًا، فَقَالَ: (أَوْ مُسْلِمًا). فَسَكَتُّ قَلِيلاً، ثُمَّ غَلَبَنِي مَا أَعْلَمُ مِنْهُ، فَعُدْتُ لِمَقَالَتِي فَقُلْتُ: مَا لَكَ عَنْ فُلاَنٍ؟. فَوَاللهِ إِنِّي لأَرَاهُ مُؤْمِنًا، فَقَالَ: (أَوْ مُسْلِمًا). فَسَكَتُّ قَلِيلاً ثُمَّ غَلَبَنِي مَا أَعْلَمُ مِنْهُ فَعُدْتُ لِمَقَالَتِي، وَعَادَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ قَالَ: (يَا سَعْدُ إِنِّي لأُعْطِي الرَّجُلَ، وَغَيْرُهُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْهُ، خَشْيَةَ أَنْ يَكُبَّهُ اللهُ فِي النَّارِ). [رواه البخاري: ٢٧]

26 : साअद बिन अबी वक्कास रजि. का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चन्द लोगों को कुछ माल दिया और साअद रजि. खुद बैठे हुये थे। आपने एक आदमी को छोड़ दिया, यानी उसे कुछ न दिया, हालांकि वह तमाम लोगों में से मुझे ज्यादा पसन्द था। मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फलां आदमी को छोड़ दिया, अल्लाह की कसम! मैं तो उसे मोमिन समझता हूँ। आपने फरमाया: "या मुसलमान"? मैं थोड़ी देर खामोश

रहा, फिर उसके बारे मैं जो जानता था, उसने मुझे बोलने पर मजबूर किया, मैंने दोबारा अर्ज किया कि आपने फलां आदमी को क्यों नजर अन्दाज कर दिया? अल्लाह की कसम! मैं तो इसे मोमिन ख्याल करता हूँ। आपने फरमायाः ''या मुसलमान''? फिर मैं थोड़ी देर चुप रहा, फिर उसके बारे में जो मैं जानता था, उसने मजबूर किया तो मैंने तीसरी बार वही अर्ज किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी वही फरमाया। उसके बाद आप कहने लगे ऐ साअद! मैं एक आदमी को कुछ देता हूँ हालांकि दूसरे आदमी को उससे बेहतर ख्याल करता हूँ, इस अन्देशा के पेशे नजर कि कहीं अल्लाह तआला उसे औंधे मुंह दोजख में धकेल दे।

फायदे : मालूम हुआ कि जिसके अन्दरूनी हालात का इल्म न हो, उसे मोमिन नहीं कहना चाहिए, क्योंकि अन्दर की बातों पर अल्लाह के अलावा और कोई नही जान सकता? अलबत्ता उसके जाहिरी हालात के पेशे नजर उसे मुसलमान कह सकते हैं।

(औनुलबारी, 1/127)

बाब 17 : शौहर की बात न मानना भी कुफ्र है, लेकिन कुफ्र, कुफ्र में फर्क होता है।

١٧ - باب: كُفْرَان ٱلْعَشِيرِ وَكُفْر دون كُفْرٍ

27: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''मैंने दोजख में ज्यादातर औरतों को देखा (क्योंकि) वह कुफ्र करती हैं। लोगों ने कहा : क्या वह अल्लाह

٢٧ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (أُرِيتُ ٱلنَّارَ فَإِذَا أَكْثَرُ أَهْلِهَا ٱلنِّسَاءُ، يَكْفُرْنَ): قِيلَ: أَيَكْفُرْنَ بِٱللهِ؟ قَالَ: (يَكْفُرْنَ ٱلْعَشِيرَ، وَيَكْفُرْنَ ٱلإِحْسَانَ، لَوْ أَحْسَنْتَ إِلَى إِحْدَاهُنَّ ٱلدَّهْرَ، ثُمَّ

का कुफ्र करती है? आपने फरमायाः "नहीं बल्कि वह अपने शौहर की नाफरमानी करती है और एहसान फरामोश हैं, वह यूँ कि अगर तू सारी उम्र औरत से अच्छा सलूक करे फिर वह (मामूली सी ना पसन्द) बात तुझ में देखे तो कहने लगती है कि मुझे तुझ से कभी आराम नहीं मिला।"

رَأَتْ مِنْكَ شَيْئًا، قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ مِنْكَ خَيْرًا قَطُّ). [رواه البخاري: ٢٩]

फायदे : इमाम बुखारी ने ईमान और उसके समरात बयान करने के बाद उसकी जिद यानी कुफ्र और उसकी किस्मों को बयान करना शुरू किया। कुफ्र की दो किस्में हैं। एक यह कि उसके करने से इन्सान इस्लाम के दायरे से निकल जाता है और दूसरा वह कुफ्र है जिसका करने वाला गुनाहगार तो जरूर होता है, लेकिन इस्लाम से नहीं निकलता। इस मजमून से दूसरी किस्म का कुफ्र मुराद है। यह भी मालूम हुआ कि गुनाहों के करने से ईमान में कमी आ जाती हैं

बाब 18 : गुनाह जाहिलियत के काम हैं और इसका करने वाला काफिर नहीं होता, अलबत्ता शिर्क करने वाला जरूर काफिर होता है।

١٨ - باب: المَعَاصِي مِنْ أَمْرِ الجَاهِلِيَّةِ وَلَا يُكَفَّرُ صَاحِبُهَا بِارْتِكَابِهَا إِلَّا بِالشِّرْكِ

28 : अबू जर गिफारी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक आदमी को गाली दी कि उसे मां की आर दिलाई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (यह सुनकर) फरमायाः "क्या तूने उसे उसकी मां से आर दिलाई है? अभी तक

٢٨ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَابَبْتُ رَجُلًا فَعَيَّرْتُهُ بِأُمِّهِ، فَقَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: (يَا أَبَا ذَرٍّ، أَعَيَّرْتَهُ بِأُمِّهِ؟ إِنَّكَ امْرُؤٌ فِيكَ جَاهِلِيَّةٌ، إِخْوَانُكُمْ خَوَلُكُمْ، جَعَلَهُمُ ٱللهُ تَحْتَ أَيْدِيكُمْ، فَمَنْ كَانَ أَخُوهُ تَحْتَ يَدِهِ، فَلْيُطْعِمْهُ مِمَّا يَأْكُلُ،

तुम में जाहिलियत का असर बाकी है, तुम्हारे गुलाम तुम्हारे भाई हैं, उन्हें अल्लाह ने तुम्हारे कब्जे में रखा है, पस जिस आदमी का भाई उसके कब्जे में हो, उसको चाहिए कि उसे वही खिलाये जो खुद खाता है और उसे वही लिबास (कपड़े) पहनाये जो वह खुद पहनता है और उनसे वह काम ना लो जो उन पर भारी गुजरे और अगर ऐसे काम की उन्हें तकलीफ दो तो खुद भी उनका हाथ बटावो।''

وَلْيُلْبِسْهُ مِمَّا يَلْبَسُ، وَلاَ تُكَلِّفُوهُمْ مَا يَغْلِبُهُمْ، فَإِنْ كَلَّفْتُمُوهُمْ فَأَعِينُوهُمْ). [رواه البخاري: ٣٠]

फायदे : दूसरी रिवायत में है कि हजरत अबू जर रजि. ने हजरत बिलाल रजि. को सिर्फ इतना कहा था कि ऐ काली-कलूटी औरत के बेटे! हमारे समाज में इस किस्म की बात गाली शुमार नहीं होती, बल्कि सिर्फ मजाक की एक किस्म है, लेकिन शरीअत ने उसे जाहिलियत के जमाने की यादगार से ताबीर किया है।

बाब 19 : और अगर ईमान वालों में से दो गिरोह आपस में झगड़ पड़ें तो उनके बीच समझौता कराओ।

١٩ - باب: ﴿وَإِن طَآئِفَتَانِ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ٱقْتَتَلُوا۟ فَأَصْلِحُوا۟ بَيْنَهُمَا﴾

29 : अबू बकरा रजि. का बयान है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, ''जब दो मुसलमान अपनी अपनी तलवारें लेकर आपस में झगड़ पड़ें तो मरने वाला और मारने वाला दोनों जहन्नमी हैं'' मैंने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल (स. अलैहि वसल्लम)!

٢٩ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِذَا ٱلْتَقَى ٱلْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا فَالْقَاتِلُ وَالْمَقْتُولُ فِي ٱلنَّارِ). فَقُلْتُ يَا رَسُولَ ٱللهِ هَذَا ٱلْقَاتِلُ، فَمَا بَالُ ٱلْمَقْتُولِ؟. قَالَ: (إِنَّهُ كَانَ حَرِيصًا عَلَى قَتْلِ صَاحِبِهِ). [رواه البخاري: ٣١]

मारने वाला (तो जरूर जहन्नमी है) लेकिन मरने वाला क्यों जहन्नमी होगा? आपने फरमाया : ''उसकी नियत भी दूसरे साथी को मारने की थी।''

फायदे : मालूम हुआ कि जब दिल का इरादा पुख्ता हो जाये तो उस पर भी पकड़ होगी, जबकि दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने उम्मत के दिली ख्यालात को माफ कर दिया है, जब तक उनके मुताबिक अमल न करें। इन दोनों बातों में फर्क नहीं, क्योंकि ऐसे ख्यालात पर पकड़ नहीं होगी, जो मजबूत न हों, यानी आयें और गुजर जायें। अलबत्ता पुख्ता इरादे पर जरूर पकड़ होगी, अगरचे उसके मुताबिक अमल न किया जाये।

(औनुलबारी, 1/132)

٢٠ - باب: ظُلْمٌ دُونَ ظُلْمٍ

बाब 20 : एक जुल्म दूसरे जुल्म से कमतर होता है।

٣٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوٓا إِيمَـٰنَهُم بِظُلْمٍ﴾ قَالَ أَصْحَابُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ: أَيُّنَا لَمْ يَظْلِمْ؟. فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ ٱلشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾. [رواه البخاري: ٣٢]

30 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हुये फरमाते हैं : जब यह आयत उतरी ''जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अपने ईमान को जुल्म के साथ आलूदा नहीं किया।'' तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सहाबा किराम रजि. ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! हम में से कौन ऐसा है, जिसने जुल्म नहीं किया? तब अल्लाह ने यह आयत उतारी ''यकीनन शिर्क बहुत बड़ा जुल्म है।''

फायदे : इस हदीस से मौजूदा जमाने के मुअतजिला का (एक फिरके

का नाम) रद्द होता है जो कुरआन समझने के लिए सिर्फ अरबी माअनो को काफी समझते हैं, अगर इनका यह दावा ठीक होता तो सहाबा-ए-किराम कुरआने मजीद के समझने में किसी किस्म की उलझन का शिकार न होते, लिहाजा कुरआन को समझने के लिए साहिबे कुरआन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात और अमलों को सामने रखना निहायत जरूरी है, यही वह बयान है, जिसकी हिफाजत का खुद अल्लाह तआला ने जिम्मा लिया है। (अलकयामा 19)

बाब 21 : मुनाफिक की निशानियां।

٢١ - باب: عَلَامَات ٱلْمُنَافِقِ

31 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''मुनाफिक की तीन निशानियां हैं, जब बात करे तो झूट बोले, जब वादा करे तो वादा खिलाफी करे और जब उसके पास अमानत रखी जाये तो खयानत करे।''

٣١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (آيَةُ ٱلْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ: إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا ٱؤْتُمِنَ خَانَ). [رواه البخاري: ٣٣]

32 : अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''चार बातें जिसमें होंगी वह तो खालिस (पक्का) मुनाफिक होगा और जिसमें इनमें से कोई एक भी होगी, उसमें निफाक की एक आदत होगी, यहां तक कि वह

٣٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (أَرْبَعٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ كَانَ مُنَافِقًا خَالِصًا، وَمَنْ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنْهُنَّ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنَ ٱلنِّفَاقِ حَتَّى يَدَعَهَا: إِذَا ٱؤْتُمِنَ خَانَ، وَإِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا عَاهَدَ غَدَرَ، وَإِذَا خَاصَمَ فَجَرَ). [رواه البخاري: ٣٤]

उसे छोड़ दे, जब उसके पास अमानत रखी जाये तो खयानत करे, जब बात करे तो झूट बोले, जब वादा करे तो दगाबाजी करे और जब झगड़े तो बेहूदा बकवास करे।

फायदे : निफाक की दो किस्में हैं, एक निफाक तो ईमान व अकीदे का होता है, जो कुफ्र की बदतरीन किस्म है, जिसकी निशानदही सिर्फ वह्य से मुमकिन है, दूसरा अमली निफाक है, जिसे सीरत और किरदार का निफाक भी कहते हैं। हदीस का मतलब यह है कि जिस आदमी में निफाक की निशानियों में से कोई एक निशानी है तो उसे समझना चाहिए कि मुझ में मुनाफिकाना आदत है और जिसमें यह तमाम निशानियाँ जमां हो, वह सीरत और किरदार में खालिस (पक्का) मुनाफिक है।

बाब 22 : शबे कद्र में इबादत करना ईमान का हिस्सा है।

٢٢ - باب: قِيامُ لَيلَةِ القَدْرِ مِنَ الإيمانِ

33 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जो आदमी ईमान का तकाजा समझकर सवाब की नियत से शबे कद्र का कयाम करेगा, उसके सारे पिछले गुनाह बख्श दिये जायेंगे।"

٣٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ يَقُمْ لَيْلَةَ ٱلْقَدْرِ، إِيمَانًا وَٱحْتِسَابًا، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ). [رواه البخاري: ٣٥]

बाब 23 : जिहाद ईमान का हिस्सा है।

٢٣ - باب: ٱلجِهادُ مِنَ ٱلإيمانِ

34 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि

٣٤ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (ٱنْتَدَبَ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ لِمَنْ خَرَجَ فِي سَبِيلِهِ، لاَ

يُخْرِجُهُ إِلَّا إِيمَانٌ بِي وَتَصْدِيقٌ بِرُسُلِي، أَنْ أُرْجِعَهُ بِمَا نَالَ مِنْ أَجْرٍ أَوْ غَنِيمَةٍ، أَوْ أُدْخِلَهُ ٱلْجَنَّةَ، وَلَوْلاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي مَا قَعَدْتُ خَلْفَ سَرِيَّةٍ، وَلَوَدِدْتُ أَنِّي أُقْتَلُ فِي سَبِيلِ ٱللهِ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ). [رواه البخاري: ٣٦]

आपने फरमाया : "अल्लाह तआला उस आदमी के लिए जिम्मेदारी लेता है जो उसकी राह में (जिहाद के लिए) निकले, उसे घर से सिर्फ इस बात ने निकाला कि वह मुझ (अल्लाह) पर ईमान रखता है और मेरे रसूलों को सच्चा जानता है तो मैं उसे उस सवाब या माले गनीमत के साथ वापिस करूंगा, जो उसने जिहाद में पाया है, या उसे (शहीद बनाकर) जन्नत में दाखिल करूंगा। (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया) अगर मैं अपनी उम्मत पर मुश्किल न समझता तो कभी भी छोटे से छोटे लश्कर के पीछे न बैठा रहता और मेरी यह तमन्ना है कि अल्लाह के रास्ते में मारा जाऊँ, फिर जिन्दा किया जाऊँ, फिर मारा जाऊँ फिर जिन्दा किया जाऊँ, फिर मारा जाऊँ। फिर जिन्दा किया जाऊँ।

٢٤ - باب: تَطَوُّعُ قِيَامِ رَمَضَانَ

बाब 24 : रमजान में तरावीह पढ़ना भी ईमान का हिस्सा है।

٣٥ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ قَامَ رَمَضَانَ، إِيمَانًا وَٱحْتِسَابًا، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ). [رواه البخاري: ٣٧]

35 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जो आदमी रमजान में ईमानदार होकर सवाब हासिल करने के लिए रात के वक्त नमाज पढ़ेगा तो उसके पिछले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे।"

फायदे : गुनाहों की माफी में बन्दों के हुकूक शामिल नहीं है, क्योंकि इस

बात पर उम्मत का इत्तेफाक है कि ऐसे हुकूक हकदारों की रजामन्दी से ही खत्म हो सकते हैं। कयामत के दिन हकदारों की बुराईयाँ लेकर और अपनी नेकियाँ देकर इनकी तलाफी मुमकिन है। (औनुलबारी 1/138) मगर यह कि अल्लाह उनको अपनी तरफ से सवाब देकर राजी कर दे।

बाब 25 : सवाब की नियत से रमजान के रोजे रखना ईमान का हिस्सा है।

٢٥ - باب: صَوْمُ رَمَضانَ احتسابًا مِنَ الإِيمانِ

36 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जो आदमी अपने ईमान के पेशे नजर सवाब हासिल करने के लिए रमजान के महीने के रोजे रखेगा, उसके तमाम पिछले गुनाह बख्श दिये जायेंगे।"

٣٦ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ صامَ رَمَضانَ، إِيمانًا وَٱحْتِسابًا، غُفِرَ لَهُ ما تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ). [رواه البخاري: ٣٨]

बाब 26 : दीन आसान है।

٢٦ - باب: ٱلدِّينُ يُسْرٌ

37 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "बेशक दीन इस्लाम बहुत आसान है और जो आदमी दीन में सख्ती करेगा तो दीन उस पर गालिब आ जायेगा, इसलिए बीच का रास्ता इख्तयार करो और करीब रहो और खुश हो जावो (कि तुम्हें ऐसा आसान दीन मिला है)। सुबह, दोपहर के

٣٧ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قالَ: (إِنَّ ٱلدِّينَ يُسْرٌ، وَلَنْ يُشادَّ ٱلدِّينَ أَحَدٌ إِلَّا غَلَبَهُ، فَسَدِّدُوا وَقارِبُوا، وَأَبْشِرُوا، وَٱسْتَعِينُوا بِٱلْغَدْوَةِ وَٱلرَّوْحَةِ وَشَيْءٍ مِنَ ٱلدُّلْجَةِ). [رواه البخاري: ٣٩]

बाद और कुछ रात में इबादत करने से मदद हासिल करो।"

फायदे : मतलब यह है कि एक मुसलमान को राहत और सुकून के वक्तों में निहायत दिलचस्पी से इबादत का फरीजा अदा करना चाहिए ताकि उसका अमल लगातार कायम रहे, क्योंकि थोड़ासा अमल डट कर और बराबर करना उस बड़े अमल से कहीं बढ़कर है, जो करके छोड़ दिया जाये। (औनुलबारी, **1/144**)

बाब 27 : नमाज भी ईमान का हिस्सा है।

٢٧ باب: ٱلصَّلاةُ مِن ٱلإِيمانِ

38 : बरा बिन आजिब रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब (हिजरत करके) मदीना तशरीफ लाये तो पहले अपने ददिहाल या ननिहाल जो अन्सार से थे, उनके यहां उतरे और (मदीना में) सौलह या सतरह महीने बैतुलमुकद्दस की तरफ मुंह करके नमाज पढ़ते रहे। फिर भी चाहते थे कि आप का किब्ला काअबा की तरफ हो जाये (चूनांचे हो गया) और पहली नमाज जो आपने (काअबा की तरफ) पढ़ी वह असर की नमाज थी और आप के साथ कुछ और लोग भी थे, उनमें से एक आदमी निकला और किसी मस्जिद वालों के पास

٣٨ : عَنِ ٱلْبَراءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ، كانَ أَوَّلَ ما قَدِمَ ٱلمَدِينَةَ نَزَلَ عَلَى أَجْدادِهِ - أَوْ قالَ: أَخْوالِهِ - مِنَ ٱلأَنْصارِ، وَأَنَّهُ صَلَّى قِبَلَ بَيْتِ ٱلمَقْدِسِ سِتَّةَ عَشَرَ شَهْرًا، أَوْ سَبْعَةَ عَشَرَ شَهْرًا، وَكانَ يُعْجِبُهُ أَنْ تَكُونَ قِبْلَتُهُ قِبَلَ ٱلبَيْتِ، وَأَنَّهُ صَلَّى أَوَّلَ صَلاةٍ صَلَّاها صَلاةَ ٱلعَصْرِ، وَصَلَّى مَعَهُ قَوْمٌ. فَخَرَجَ رَجُلٌ مِمَّنْ صَلَّى مَعَهُ، فَمَرَّ عَلَى أَهْلِ مَسْجِدٍ وَهُمْ راكِعُونَ، فَقالَ: أَشْهَدُ بِٱللهِ لَقَدْ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ قِبَلَ مَكَّةَ، فَدارُوا كَما هُمْ قِبَلَ ٱلبَيْتِ وَكانَتِ ٱليَهُودُ قَدْ أَعْجَبَهُمْ إِذْ كانَ يُصَلِّي قِبَلَ بَيْتِ ٱلمَقْدِسِ، وَأَهْلُ ٱلكِتابِ، فَلَمَّا وَلَّى وَجْهَهُ قِبَلَ ٱلبَيْتِ، أَنْكَرُوا ذٰلِكَ. [رواه البخاري: ٤٠]

से उसका गुजर हुआ, वह (बैतुलमुकद्दस की तरफ मुंह किये हुये) रकूअ की हालत में थे तो उसने कहा कि मैं अल्लाह को गवाह बनाकर कहता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मक्का की तरफ (मुंह करके) नमाज पढ़ी है (यह सुनते ही) वह लोग जिस हालत में थे, उसी हालत में काअबा की तरफ फिर गये और जब आप बैतुलमुकद्दस की तरफ (मुंह करके) नमाज पढ़ते थे तो यहूदी और नसरानी (इसाई) बहुत खुश होते थे, लेकिन जब आपने अपना मुंह काअबा की तरफ फेर लिया तो यह उन्हें बहुत ना-गवार (नापसन्द) गुजरा।

फायदे : इस हदीस में यह भी है कि किब्ला बदलने से पहले जो लोग मर चुके थे, उनके बारे में हमें मालूम नहीं था कि उन्हें नमाज का सवाब मिलेगा या नहीं? तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी, ''ऐसा नहीं है कि अल्लाह तआला तुम्हारा ईमान यानी तुम्हारी नमाजें बेकार कर दे।'' आयते करीमा में नमाज की ताबीर ईमान से की गई है। मालूम हुआ कि नमाज जो एक अमल है यह ईमान का हिस्सा है, और इसमें कमी और बेशी मुमकिन हो सकती है।

बाब 28 : आदमी के इस्लाम की खूबी।

٢٨ - باب: حُسْنِ إِسْلاَمِ ٱلْمَرْءِ

39 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे कि जब कोई बन्दा मुसलमान हो जाता है और इस्लाम पर अच्छी तरह अमल पैरा रहता है तो अल्लाह तआला उसके वह तमाम गुनाह माफ कर

٣٩ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِذَا أَسْلَمَ ٱلْعَبْدُ فَحَسُنَ إِسْلاَمُهُ، يُكَفِّرُ ٱللهُ عَنْهُ كُلَّ سَيِّئَةٍ كَانَ زَلَفَهَا، وَكَانَ بَعْدَ ذَلِكَ ٱلْقِصَاصُ: ٱلْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ، وَٱلسَّيِّئَةُ بِمِثْلِهَا إِلَّا أَنْ يَتَجَاوَزَ ٱللهُ عَنْهَا). [رواه البخاري: ٤١]

देता है, जो उसने (इस्लाम कबूल करने से पहले) किये थे और उसके बाद (फिर) मुआवजा (शुरू) होता है कि एक नेकी का बदला उसके दस गुने से सात सौ गुना तक और बुराई का बदला तो बुराई के बराबर ही दिया जाता है, मगर यह कि अल्लाह तआला उसे माफ फरमा दे।

फायदे : दार कुतनी की एक रिवायत में यह भी है कि अल्लाह तआला उसकी हर नेकी को शुमार करेगा जो उसने इस्लाम से पहले की थी। मालूम हुआ कि काफिर अगर मुसलमान हो जाता है तो कुफ्र के जमाने की नेकियों का भी उसे सवाब मिलेगा।

(औनुलबारी, 1/150)

बाब 29: अल्लाह तआला को वह अमल बहुत पसन्द है जो हमेशा किया जाये।

٢٩ - باب: أحَبُّ ٱلدِّينِ إلى الله أَدْوَمُهُ

40: आइशा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार उनके पास तशरीफ लाये, वहां एक औरत बैठी थी। आपने पूछा यह कौन है? आइशा रजि. ने कहा कि यह फलां औरत है और उसकी (बहुत ज्यादा) नमाज का हाल बयान करने लगीं। आपने फरमाया रूक जा! तुम अपने जिम्मे सिर्फ वही काम रखो जो (हमेशा) कर सकती हो। अल्लाह की कसम! अल्लाह तआला सवाब देने से नहीं थकता, तुम ही इबादत करने से थक जाओगे। और अल्लाह तआला को सबसे ज्यादा पसन्द फरमां बरदारी का

٤٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا وَعِنْدَهَا ٱمْرَأَةٌ، قَالَ: (مَنْ هَذِهِ). قَالَتْ: فُلاَنَةٌ، تَذْكُرُ مِنْ صَلاتِهَا، قَالَ: (مَهْ، عَلَيْكُمْ بِمَا تُطِيقُونَ، فَوَٱللَّهِ لاَ يَمَلُّ ٱللَّهُ حَتَّى تَمَلُّوا). وَكَانَ أَحَبَّ ٱلدِّينِ إِلَيْهِ مَا دَاوَمَ عَلَيْهِ صَاحِبُهُ.
[رواه البخاري: ٤٣]

वह काम है, जिसका करने वाला उस पर हमेशगी बरते।

फायदे : दरमियानी चाल के साथ नेक अमल पर हमेशगी बरतनी चाहिए, नीज यह भी मालूम हुआ कि इबादत करते वक्त बहुत सख्ती उठाना एक नापसन्दीदा काम है। (अत्तहज्जुद : 115)

٣٠ - باب: زِيَادَةُ ٱلإِيمَانِ وَنُقْصَانُهُ

٤١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يَخْرُجُ مِنَ ٱلنَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلَّا ٱللهُ، وَفِي قَلْبِهِ وَزْنُ شَعِيرَةٍ مِنْ خَيْرٍ، وَيَخْرُجُ مِنَ ٱلنَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ ٱللهُ، وَفِي قَلْبِهِ وَزْنُ بُرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ، وَيَخْرُجُ مِنَ ٱلنَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ ٱللهُ، وَفِي قَلْبِهِ وَزْنُ ذَرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ). [رواه البخاري: ٤٤]

बाब 30 : ईमान की कमी और ज्यादती।

41 : अनस रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमायाः ''जिसने ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' कहा और उसके दिल में एक जौ के बराबर नेकी यानी ईमान हुआ, वह दोजख से (जरूर) निकलेगा और जिसने ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' कहा और उसके दिल में गेहूं के दाने के बराबर भलाई (ईमान) हो, वह दोजख से जरूर निकलेगा और जिसने ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' कहा और उसके दिल में एक जर्रा बराबर ईमान हो, वह भी दोजख से जरूर निकलेगा।''

फायदे : सूरज की किरणों में सूई की नोक के बराबर बेशुमार जर्रात उड़ते नजर आते हैं। चार जर्रे एक राई के दाने के बराबर होते हैं। और सौ जर्रात एक जौ के दाने के बराबर होते हैं, हदीस का यह बयान ईमान की कमी और ज्यादती पर दलालत करता है और यह भी मालूम हुआ कि बाज बदअमल तौहीद वाले जहन्नम में दाखिल होंगे। नीज इस बात का भी पता चला कि बड़ा गुनाह का करने वाला काफिर नहीं होता और न ही वह हमेशा के लिए जहन्नम में रहेगा। (औनुलबारी, 1/155)

42 : उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है कि एक यहूदी ने उनसे कहा, ऐ मोमिनों के अमीर! तुम्हारी किताब (कुरआन) में एक ऐसी आयत है, जिसे तुम पढ़ते रहते हो, अगर वह आयत हम यहूदियों पर नाजिल होती तो हम उस दिन को ईद का दिन ठहराते। उमर ने कहा, वह कौनसी आयत है? यहूदी बोला यह आयत "आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूरा कर दिया और अपना एहसान भी तुम पर तमाम कर दिया और दीने इस्लाम को तुम्हारे लिए पसन्द किया" उमर ने कहा कि हम उस दिन और उस मकाम को जानते हैं, जिसमें यह आयत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाजिल हुई। यह आयत जुमा के दिन उतरी जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अरफात में खड़े थे।

٤٢ : عَنْ عُمَرَ بْنِ ٱلْخَطَّابِ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ -: أَنَّ رَجُلًا مِنَ ٱلْيَهُودِ قَالَ لَهُ: يَا أَمِيرَ ٱلْمُؤْمِنِينَ، آيَةٌ فِي كِتَابِكُمْ تَقْرَؤُونَهَا، لَوْ عَلَيْنَا مَعْشَرَ ٱلْيَهُودِ نَزَلَتْ، لَاتَّخَذْنَا ذَلِكَ ٱلْيَوْمَ عِيدًا. قَالَ: أَيُّ آيَةٍ هِيَ؟ قَالَ: ﴿ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَامَ دِينًا﴾. قَالَ عُمَرُ: قَدْ عَرَفْنَا ذَلِكَ ٱلْيَوْمَ، وَٱلْمَكَانَ ٱلَّذِي نَزَلَتْ فِيهِ عَلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ، وَهُوَ قَائِمٌ بِعَرَفَةَ يَوْمَ جُمُعَةٍ. [رواه البخاري: ٤٥]

फायदे : आयते करीमा से मालूम हुआ कि इसके नाजिल होने से पहले दीन (ईमान) पूरा नहीं था, बल्कि अधूरा था, लिहाजा इसमें कमी और ज्यादती हो सकती है, इमाम बुखारी रह. फरमाते हैं कि मैं कई शहरों में हजार से ज्यादा इल्म वालों से मिला हूँ। तमाम का यही मानना था कि ईमान कोल और अमल का नाम है और यह कम और ज्यादा होता रहता है। (फतहुलबारी 1/107)

बाब **31** : जकात देना इस्लाम से है।

٣١ - بَابٌ: ٱلزَّكَاةُ مِنَ ٱلْإِسْلَامِ

43 : तलहा बिन उबैदुल्लाह रजि. का बयान है कि नज्द वालों में से

٤٣ : عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ يَقُولُ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى

رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْ أَهْلِ نَجْدٍ، ثَائِرَ الرَّأْسِ، نَسْمَعُ دَوِيَّ صَوْتِهِ وَلاَ نَفْقَهُ مَا يَقُولُ، حَتَّى دَنَا، فَإِذَا هُوَ يَسْأَلُ عَنِ الإِسْلاَمِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (خَمْسُ صَلَوَاتٍ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ). فَقَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهَا؟ قَالَ: (لاَ، إِلَّا أَنْ تَطَوَّعَ). قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (وَصِيَامُ رَمَضَانَ). قَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهُ؟ قَالَ: (لاَ، إِلَّا أَنْ تَطَوَّعَ). قَالَ: وَذَكَرَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ الزَّكَاةَ، قَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهَا؟ قَالَ: (لاَ، إِلَّا أَنْ تَطَوَّعَ). قَالَ: فَأَدْبَرَ الرَّجُلُ وَهُوَ يَقُولُ: وَاللهِ لاَ أَزِيدُ عَلَى هَذَا وَلاَ أَنْقُصُ، قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (أَفْلَحَ إِنْ صَدَقَ).
[رواه البخاري: ٤٦]

एक आदमी बिखरे बालों वाला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया। हम उसकी आवाज की गुनगुनाहट सुन रहे थे, मगर यह ना समझते थे कि क्या कहता है, यहां तक कि वह करीब आ गया, तब मालूम हुआ कि वह इस्लाम के बारे में पूछ रहा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "दिन रात में पांच नमाजें हैं" उसने कहाः इनके अलावा (भी) मुझ पर कोई नमाज फर्ज है? आपने फरमायाः "नहीं मगर यह कि तू अपनी खुशी से पढ़े।" (फिर) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : "और रमजान के रोजे रखना" उसने अर्ज किया : और तो कोई रोजा मुझ पर फर्ज नहीं? आपने फरमायाः नहीं मगर यह कि तू अपनी खुशी से रखे। तलहा रजि. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे जकात का भी जिक्र किया, उसने कहाः मुझ पर इसके अलावा भी (निफ्ली सदका) फर्ज है? आपने फरमायाः "नहीं मगर यह कि तू अपनी खुशी से दे।" तलहा रजि. ने कहा कि फिर वह आदमी यह कहता हुआ पीठ फेरकर वापस चला गया कि अल्लाह की कसम! न मैं इससे ज्यादा करुंगा और न कम। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "अगर यह सच कह रहा है तो कामयाब हो गया।"

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि वित्र फर्ज नहीं है, बल्कि नमाज तहज्जुद का हिस्सा होने की वजह से नफ्ल है, क्योंकि इस हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर्फ पांच नमाजों को फर्ज फरमाया और बाकी को नफ्ल करार दिया है।

(फतहुलबारी, **1/107**)

बाब 32 : जनाजा के साथ चलना ईमान का हिस्सा है।

٣٢ - باب: اتّباع الجنائز من الإيمان

44 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "जो कोई ईमानदार होकर सवाब हासिल करने की नियत से किसी मुसलमान के जनाजे के साथ जाये और नमाज व दफन से फरागत होने तक उसके साथ रहे तो वह दो कीरात सवाब लेकर वापस आता है। हर कीरात उहुद पहाड़ के बराबर है। और जो आदमी जनाजा पढ़कर दफन से पहले लौट आये तो वह एक कीरात सवाब लेकर लोटता है।"

٤٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنِ اتَّبَعَ جَنَازَةَ مُسْلِمٍ، إِيمَانًا وَٱحْتِسَابًا، وَكَانَ مَعَهُ حَتَّى يُصَلِّي عَلَيْهَا وَيُفْرَغَ مِنْ دَفْنِهَا، فَإِنَّهُ يَرْجِعُ مِنَ ٱلأَجْرِ بِقِيرَاطَيْنِ، كُلُّ قِيرَاطٍ مِثْلُ أُحُدٍ، وَمَنْ صَلَّى عَلَيْهَا ثُمَّ رَجَعَ قَبْلَ أَنْ تُدْفَنَ، فَإِنَّهُ يَرْجِعُ بِقِيرَاطٍ). [رواه البخاري: ٤٧]

फायदे : आखिरत के लिहाज से एक कीरात उहुद पहाड़ के बराबर होगा, अलबत्ता दुनिया में एक कीरात बारह दिरहम के बराबर होता है। इस हदीस से जनाजे के साथ चलने, नमाज पढ़ने और दफन के बाद वापस आने की अहमीयत का पता चलता है।

(औनुलबारी, **1/163**)

बाब 33 : मोमिन को डरना चाहिए कि कहीं उसके आमाल बे-खबरी में बर्बाद न हो जाये।

٣٣ - باب: خَوْفُ الْمُؤْمِنِ مِنْ أَنْ يَحْبَطَ عَمَلُهُ وَهُوَ لاَ يَشْعُرُ

45 : अब्दुल्लाह बिन मसउद रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "मुसलमान को गाली देना फिस्क और उससे लड़ना कुफ्र है।"

٤٥ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوقٌ، وَقِتَالُهُ كُفْرٌ). [رواه البخاري: ٤٨]

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस से यह भी साबित किया है कि आपस में गाली देना और लान तान करना एक मुसलमान की शान के खिलाफ है। (अल अदब 6044)। नीज एक दूसरे की नाहक गर्दनें मारने से ईमान खतरे में पड़ सकता है। (अलफितन : 7076) नीज हदीस में जिक्र किये गये कुफ्र से हकीकी कुफ्र मुराद नहीं जो इन्सान को इस्लाम के दायरे से निकाल देता है, बल्कि लुगवी कुफ्र मुराद है। (औनुलबारी, 1/164)

46 : उबादा बिन सामित रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार कद्र की रात बताने के लिए अपने कमरे से निकले, इतने में दो मुसलमान आपस में झगड़ पड़े। आपने फरमाया : मैं तो इसलिए बाहर निकला था कि तुम्हें कद्र की रात बताऊँ, मगर फलां फलां आदमी झगड़ पड़े इसलिए वह (मेरे दिल से) उठा ली गयी और शायद

٤٦ : عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ خَرَجَ يُخْبِرُ بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ، فَتَلاحَى رَجُلانِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَقَالَ: (إِنِّي خَرَجْتُ لِأُخْبِرَكُمْ بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ، وَإِنَّهُ تَلاحَى فُلاَنٌ وَفُلاَنٌ، فَرُفِعَتْ، وَعَسَى أَنْ يَكُونَ خَيْرًا لَكُمْ، الْتَمِسُوهَا فِي السَّبْعِ وَالتِّسْعِ وَالْخَمْسِ). [رواه البخاري: ٤٩]

यही तुम्हारे हक में फायदेमन्द हो। अब तुम शबे कद्र को रमजान की सत्ताईसवीं, उन्तीसवीं और पच्चीसवीं रात में तलाश करो।

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि आपस में लड़ना झगड़ना संगीन जुर्म है क्योंकि इसकी नहूसत से शबे कद्र जैसी अजीम दौलत से हमें महरूम कर दिया गया। शबे कद्र को नहीं बल्कि उसकी ताईन को उठाया गया, इसमें यह हिकमत थी कि इसकी तलाश में लोग ज्यादा से ज्यादा इबादत करें। (औनुलबारी, 1/166)

बाब 34 : जिब्राईल अलैहि. का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ईमान, इस्लाम और एहसान के बारे में मालूम करना।

٣٤ - باب: سُؤال جِبْرِيلَ ٱلنَّبِيَّ ﷺ عَنِ ٱلإِيمَانِ وَٱلإِسْلاَمِ والإِحسان...

47 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों के सामने तशरीफ फरमा थे कि अचानक एक आदमी आपकी खिदमत में हाजिर हुआ और पूछने लगा कि ईमान क्या है? आपने फरमाया: ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर, उसके फरिश्तों पर और हश्र के दिन अल्लाह के सामने पेश होने पर, अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाओ और कयामत का यकीन करो। उसने फिर सवाल किया कि इस्लाम क्या है? आपने

٤٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَارِزًا يَوْمًا لِلنَّاسِ، فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: مَا ٱلإِيمَانُ؟ قَالَ: (الإِيمانُ أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ وَمَلائِكَتِهِ وَبِلِقَائِهِ وَرُسُلِهِ وَتُؤْمِنَ بِالبَعْثِ). قَالَ: مَا ٱلإِسْلاَمُ؟ قَالَ: (ٱلإِسْلاَمُ: أَنْ تَعْبُدَ ٱللهَ وَلاَ تُشْرِكَ بِهِ، وَتُقِيمَ ٱلصَّلاَةَ، وَتُؤَدِّيَ ٱلزَّكَاةَ ٱلمَفْرُوضَةَ، وَتَصُومَ رَمَضَانَ). قَالَ: مَا ٱلإِحْسَانُ؟ قَالَ: (أَنْ تَعْبُدَ ٱللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ). قَالَ: مَتَى ٱلسَّاعَةُ؟ قَالَ: (مَا ٱلمَسْؤُولُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ ٱلسَّائِلِ، وَسَأُخْبِرُكَ عَنْ أَشْرَاطِهَا: إِذَا وَلَدَتِ ٱلأَمَةُ رَبَّهَا، وَإِذَا تَطَاوَلَ

رُعَاةُ ٱلإِبِلِ ٱلْبُهْمِ فِي ٱلْبُنْيَانِ، فِي خَمْسٍ لاَ يَعْلَمُهُنَّ إِلاَّ ٱللهُ). ثُمَّ تَلاَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: ﴿إِنَّ ٱللهَ عِندَهُۥ عِلْمُ ٱلسَّاعَةِ﴾ ٱلآيَةَ، ثُمَّ أَدْبَرَ، فَقَالَ: (رُدُّوهُ). فَلَمْ يَرَوْا شَيْئًا، فَقَالَ: (هٰذَا جِبْرِيلُ، جَاءَ يُعَلِّمُ ٱلنَّاسَ دِينَهُمْ). [رواه البخاري: ٥٠]

फरमाया: ''इस्लाम यह है कि तुम महज अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो, नमाज को ठीक तौर पर अदा करो, फर्ज जकात अदा करो और रमजान के रोजे रखो, फिर उसने पूछा कि एहसान क्या है? आपने फरमाया: एहसान यह है कि तुम अल्लाह की इबादत इस तरह करो, गोया तुम उसे देख रहे हो, अगर तुम उसे नहीं देख रहे हो, वह तो तुम्हें देख रहा है। उसने कहा: कयामत कब आयेगी? आपने फरमाया: जिससे सवाल किया गया है, वह भी सवाल करने वाले से ज्यादा नहीं जानता, अलबत्ता मैं तुम्हें कयामत आने की कुछ निशानियाँ बता देता हूँ। जब नौकरानी अपने आका को जनेगी और जब ऊंटों के अनजान काले कलूटे चरवाहे आसमान छूती इमारते बनाने में एक दूसरे पर बाजी ले जायेंगे तो (कयामत करीब होगी)। दरअसल कयामत उन पांच बातों में से है, जिनको अल्लाह के अलावा और कोई नहीं जानता, फिर आपने यह आयत तिलावत फरमायी, ''बेशक अल्लाह ही को कयामत का इल्म है...'' (लुकमान 34)। उसके बाद वह आदमी वापस चला गया तो आपने फरमाया: ''उसे मेरे पास लावो, चूनांचे लोगों ने उसे तलाश किया, लेकिन उसका कोई सुराग न मिला। तो आपने फरमाया: ''यह जिब्राईल अलैहि. थे जो लोगो को उनका दीन सिखाने आये थे।''

फायदे : इस हदीस में इशारा है कि कयामत के करीब मामलात नालायक लोगों के हवाले हो जायेंगे। एक दूसरी हदीस में है कि जब नालायक और जलील लोग हुकूमत संभालें तो कयामत का

इंतजार करना, अफसोस! कि आज हम इस किस्म के हालात से दोचार हैं।

बाब 35 : अपने दीन की खातिर गुनाहों से अलग हो जाने वाले की फजीलत।

٣٥ - باب: فَضل مَنِ اسْتَبْرَأَ لِدِينِه

48 : नोमान बिन बशीर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे कि हलाल जाहिर है और हराम (भी) जाहिर है और इन दोनों के बीच कुछ शक और शुबा की चीजें हैं, जिन्हें ज्यादातर लोग नहीं जानते, पस जो आदमी इन शक और शुबा की चीजों से बच गया, उसने अपने दीन और अपनी इज्जत को बचा लिया और जो कोई इन शक और शुबा वाली चीजों में पड़ गया, उसकी मिसाल उस जानवर चराने वाले की सी है, जो बादशाह की चरागाह के आस पास (अपने जानवरों को) चराये, करीब है कि चरागाह के अन्दर उसका (जानवर) घुस जाये। आगाह रहो कि हर बादशाह की एक चरागाह होती है, खबरदार! अल्लाह की चरागाह उसकी जमीन में हराम की हुई चीजें हैं। सुन लो! बदन में एक टुकड़ा (गोश्त का) है, जब वह ठीक रहता है तो सारा बदन ठीक रहता है और जब वह बिगड़ जाता है तो सारा बदन

٤٨ : عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (الْحَلاَلُ بَيِّنٌ وَالْحَرَامُ بَيِّنٌ، وَبَيْنَهُمَا مُشَبَّهَاتٌ لاَ يَعْلَمُهَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ، فَمَنِ اتَّقَى الشُّبُهَاتِ اسْتَبْرَأَ لِدِينِهِ وَعِرْضِهِ، وَمَنْ وَقَعَ فِي الشُّبُهَاتِ: كَرَاعٍ يَرْعَى حَوْلَ الْحِمَى، يُوشِكُ أَنْ يُوَاقِعَهُ، أَلاَ وَإِنَّ لِكُلِّ مَلِكٍ حِمًى، أَلاَ وَإِنَّ حِمَى ٱللهِ فِي أَرْضِهِ مَحَارِمُهُ، أَلاَ وَإِنَّ فِي الْجَسَدِ مُضْغَةً: إِذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ، وَإِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهُ، أَلاَ وَهِيَ الْقَلْبُ).
[رواه البخاري: ٥٢]

खराब हो जाता है। आगाह रहो, वह टुकड़ा दिल है।

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस से यह भी साबित किया है कि शक और शुबा की चीजों से परहेज करना (बचना) तकवा की निशानी है (अलबुयू **2051**)। शक और शुबा से मुराद वह मुश्किल मामलात हैं कि उन पर यकीनी तौर पर कोई हुक्म न लगाया जा सकता हो, अगरचे इल्म वाले किसी हद तक उनसे बाखबर होते हैं फिर भी शकों से खाली नहीं होते। (औनुलबारी **1/174**)

बाब **36** : खुमुस (पांचवें हिस्से) का अदा करना ईमान का हिस्सा है।

٣٦ - باب: أداء الْخُمُس مِن الإيمان

49 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि अब्दुल कैस की जमात के लोग जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये तो आपने फरमाया कि यह कौन लोग हैं, या कौन से नुमाईन्दे हैं? उन्होंने कहा: हम खानदान रबीया के लोग हैं। आपने फरमाया, तुम आराम की जगह आये हो, न जलील होंगे न शर्मिन्दा! फिर उन लोगों ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम हुरमत वाले महिनों के अलावा दूसरे दिनों में आपके पास नहीं आ सकते, क्योंकि हमारे और आपके बीच मुजर के काफिरों का कबीला रहता है, लिहाजा आप खुलासा

٤٩ : عن ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: إِنَّ وَفْدَ عَبْدِ ٱلْقَيْسِ لَمَّا أَتَوا ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (مَنِ ٱلْقَوْمُ؟ أَوْ مَنِ ٱلْوَفْدُ)؟. قَالُوا: رَبِيعَةُ. قَالَ: (مَرْحَبًا بِالْقَوْمِ، أَوْ بِالْوَفْدِ، غَيْرَ خَزَايَا وَلاَ نَدَامَى). فَقَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّا لاَ نَسْتَطِيعُ أَنْ نَأْتِيكَ إِلاَّ فِي الشَّهْرِ ٱلْحَرَامِ، وَبَيْنَنَا وَبَيْنَكَ هٰذَا ٱلْحَيُّ مِنْ كُفَّارِ مُضَرَ، فَمُرْنَا بِأَمْرٍ فَصْلٍ، نُخْبِرْ بِهِ مَنْ وَرَاءَنَا، وَنَدْخُلْ بِهِ ٱلْجَنَّةَ. وَسَأَلُوهُ عَنِ ٱلأَشْرِبَةِ: فَأَمَرَهُمْ بِأَرْبَعٍ، وَنَهَاهُمْ عَنْ أَرْبَعٍ، أَمَرَهُمْ: بِالإِيمَانِ بِٱللهِ وَحْدَهُ، قَالَ: (أَتَدْرُونَ مَا ٱلإِيمَانُ بِٱللهِ وَحْدَهُ؟). قَالُوا: ٱللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: (شَهَادَةُ أَنْ لاَ إِلٰهَ إِلاَّ ٱللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ ٱللهِ، وَإِقَامُ ٱلصَّلاَةِ، وَإِيتَاءُ

الزَّكَاةِ، وَصِيَامُ رَمَضَانَ، وَأَنْ تُعْطُوا مِنَ الْمَغْنَمِ الْخُمُسَ). وَنَهَاهُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: (الْحَنْتَمِ وَالدُّبَّاءِ وَالنَّقِيرِ وَالْمُزَفَّتِ. وَرُبَّمَا قَالَ: (الْمُقَيَّرِ). وَقَالَ: (احْفَظُوهُنَّ وَأَخْبِرُوا بِهِنَّ مَنْ وَرَاءَكُمْ). [رواه البخاري: ٥٣]

के तौर पर हमें कोई ऐसी बात बता दें कि हम अपने पीछे वालों को उसकी खबर कर दें और हम सब इस (पर अमल करने) से जन्नत में दाखिल हो जायें। फिर उन्होंने आप से पीने वाली चीजों के मुताल्लिक भी पूछा तो आपने उन्हें चार बातों का हुक्म दिया और चार बातों से मना किया। आपने उन्हें एक अल्लाह पर ईमान लाने का हुक्म दिया, फिर आपने फरमाया कि तुम जानते हो, सिर्फ एक अल्लाह पर ईमान लाना क्या है? उन्होंने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ही खूब जानते हैं। आपने फरमायाः इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अलावा और कोई इबादत के लायक नहीं और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके रसूल हैं, नमाज ठीक तरीके से अदा करना, जकात देना, रमजान के रोजे रखना और गनीमत के माल से पांचवां हिस्सा अदा करना और शराब बनाने के चार बरतनों यानी बड़े मटकों, कद्दू से तैयार किये हुए प्यालों, लकड़ी से तराशे हुये लगन और डामर से रंगे हुये रोगनी बर्तनों से उन्हें मना किया। फिर आपने फरमाया : कि इन बातों को याद रखो और अपने पीछे वालों को इनसे खबरदार कर दो।

फायदे : हुरमत के महीनों से मुराद रजब ''जुलकअदा'' जिलहिज्जा और मुहर्रम हैं। काफिर इनकी बेहद इज्जत करते थे और इनमें किसी दूसरे पर हाथ चलाने (लड़ने) से बचते थे। इस हदीस से मालूम हुआ कि आने वाले मेहमानों को खुश आमदीद कहना इस्लामी अदब है, नीज एक मुसलमान के लिए जरूरी है कि वह ईमान और इल्म को अपने सीने में महफूज करके दूसरों तक पहुंचाये। (अल इल्म : 87)

बाब 37 : (सवाब के) तमाम काम नियत पर टिके होने का बयान

٣٧ - باب: مَا جَاءَ أَنَّ ٱلأَعْمَالَ بِالنِّيَّةِ

50 : उमर बिन खत्ताब रजि. से मरवी हदीस कि अमलों का दारोमदार नियत पर है। शुरू किताब में गुजर चुकी है, अलबत्ता इस मकाम पर ''हर इन्सान को वही मिलेगा, जो वह नियत करेगा।'' के बाद कुछ इजाफा है कि अगर कोई अपना मुल्क अल्लाह और उसके रसूल के लिए छोड़ेगा तो उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल की तरफ होगी, फिर उन्होंने बाकी हदीस को बयान किया, जो पहले गुजर चुकी है।

٥٠ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: حَدِيثُ إِنَّما الأعمَالُ بِالنِّيَاتِ، وَقَدْ تَقَدَّم في أَوَّلِ الكِتاب، وَزَادَ هُنَا بَعْدَ قَوْلِه: (وَإِنَّما لِكُلِّ امْرِىءٍ ما نَوىَ فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلى اللهِ وَرَسولِهِ فَهِجرتُهُ إِلى ٱللهِ وَرَسُولِهِ) وَسَرِدَ بَاقِيَ الحديثِ [رواه البخاري: ٥٤]

51 : अबू मसऊद रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते है कि आपने फरमायाः '' जब मर्द अपनी बीवी पर सवाब की नियत से खर्च करता है तो वो भी उसके हक में सदका होता है।''

٥١ : عَنْ أَبِي مَسْعودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِذَا أَنْفَقَ ٱلرَّجُلُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةً يَحْتَسِبُهَا فَهُوَ لَهُ صَدَقَةٌ). [رواه البخاري: ٥٥]

फायदे : मालूम हुआ कि अपने बीवी-बच्चों पर खुश दिली से खर्च करना भी सवाब का जरीया है। (अन्नफकात 5351) बशर्ते कि सवाब की नियत हो, इसके बगैर जिम्मेदारी तो अदा हो जायेगी, लेकिन सवाब नहीं मिलेगा। (औनुलबारी, 1/184)

बाब 38 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फरमान कि "दीन खैर ख्वाही का नाम है।"

٣٨ - باب: قَوْلِ ٱلنَّبِيِّ - ﷺ -: ٱلدِّينُ ٱلنَّصِيحَةُ

52 : जरीर बिन अब्दुल्लाह ब-ज-ली रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नमाज पढ़ने, जकात देने और हर मुसलमान से खैर ख्वाही करने (के इकरार) पर बैअत की।

٥٢ : عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ ٱلبَجَلِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَايَعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَلَى إِقَامِ ٱلصَّلاةِ، وَإِيتَاءِ ٱلزَّكَاةِ، وَٱلنُّصْحِ لِكُلِّ مُسْلِمٍ. [رواه البخاري: ٥٧]

फायदे : यह हदीस इस्लाम के तमाम दर्जो को शामिल है। इमाम बुखारी इस बाब को किताबुल ईमान के आखिर में लाकर इशारा कर रहे हैं कि मैंने किताब की जमा और तरतीब में लोगों की खैर ख्वाही की है, वह हदीसें बयान की हैं जो बिलकुल सही हैं ताकि अमल करने में आसानी रहे। नीज यह हदीस इतनी ठोस है कि मुहद्दसीन के नजदीक इस्लाम के चौथाई हिस्से पर शामिल है। (औनुलबारी,1/185)

---

53 : जरीर बिन अब्दुल्लाह रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और अर्ज किया कि मैं आपसे इस्लाम पर बैअत करना चाहता हूँ तो आपने मुझसे हर मुसलमान के साथ खैर ख्वाही करने का अहद (वादा) लिया, पस इसी पर मैंने आपसे बैअत कर ली।

٥٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنِّي أَتَيْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قُلْتُ: أُبَايِعُكَ عَلَى ٱلإِسْلَامِ، فَشَرَطَ عَلَيَّ: (وَٱلنُّصْحِ لِكُلِّ مُسْلِمٍ). فَبَايَعْتُهُ عَلَى هٰذَا. [رواه البخاري: ٥٨]

फायदे : काफिरों को भी नसीहत की जाये। उन्हें इस्लाम की दावत दी जाये और जब वह मशवरा लें तो उनकी सही रहनुमाई की जाये, अलबत्ता बैअत का सिलसिला सिर्फ इस्लाम वालों के लिए है। (औनुलबारी, 1/186)

किताबुल इल्म

इल्म का बयान

इमाम बुखारी किबातुल ईमान के बाद किताबुल इल्म लाये हैं, क्योंकि ईमान लाने के बाद दीन का इल्म सीखने की जिम्मेदारी लागू होती है।

बाब 1 : इल्म की फजीलत।

١ - باب: فَضْلُ ٱلعِلْمِ

54 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मजलिस में लोगों से कुछ बयान कर रहे थे कि एक देहाती आपके पास आया और कहने लगा, कयामत कब आयेगी? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (उसे कोई जवाब दिये बगैर) अपनी बातों में लगे रहे। (हाजरीन में से) कुछ लोग कहने लगे, आपने देहाती की बात को सुन तो लिया, लेकिन उसे पसन्द नहीं फरमाया और कुछ कहने लगे, ऐसा नहीं बल्कि आपने सुना ही नहीं। जब आप अपनी गुफ्तगू (बातचीत) खत्म कर चुके तो

٥٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي مَجْلِسٍ يُحَدِّثُ ٱلْقَوْمَ، جَاءَهُ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: مَتَى ٱلسَّاعَةُ؟.

فَمَضَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُحَدِّثُ، فَقَالَ بَعْضُ ٱلْقَوْمِ: سَمِعَ مَا قَالَ فَكَرِهَ مَا قَالَ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: بَلْ لَمْ يَسْمَعْ. حَتَّى إِذَا قَضَى حَدِيثَهُ قَالَ: (أَيْنَ - أُرَاهُ - ٱلسَّائِلُ عَنِ ٱلسَّاعَةِ). فَقَالَ: هَا أَنَا يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (فَإِذَا ضُيِّعَتِ ٱلأَمَانَةُ فَانْتَظِرِ ٱلسَّاعَةَ). فَقَالَ: كَيْفَ إِضَاعَتُهَا؟ قَالَ: (إِذَا وُسِّدَ ٱلأَمْرُ إِلَى غَيْرِ أَهْلِهِ فَانْتَظِرِ ٱلسَّاعَةَ). [رواه البخاري: ٥٩]

फरमाया: कयामत के बारे में पूछने वाला कहां है? देहाती ने कहा, हाँ ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं हाजिर हूँ। आपने फरमाया : जब अमानत जाया कर दी जाये तो कयामत का इन्तजार करो। उसने मालूम किया कि अमानत किस तरह जाया होगी? आपने फरमाया : जब (जिम्मेदारी के) काम नालायक लोगों के हवाले कर दिये जायें तो कयामत का इन्तजार करना।

फायदे : अम्र से मुराद दीनी मामलात हैं, जैसे खिलाफत, फैसला करना और फतवे देना वगैरह। इससे मालूम हुआ कि दीनी जरूरियात के लिए उलमा की तरफ जाना चाहिए और इल्म वालों की जिम्मेदारी है कि वह हक तलाश करने वालो को तसल्ली बख्श जवाब दें। (औनुलबारी, 1/188)

बाब 2 : इल्मी बातें जोर-जोर से कहना।

٢ - باب: مَنْ رَفَعَ صَوْتَهُ بِالْعِلْمِ

55 : अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया:'' एक सफर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम से पीछे रह गये थे, फिर आप हमें इस हालत में मिले कि हम से नमाज में देर हो गई थी और हम (जल्दी जल्दी) वुजू कर रहे थे, हम अपने पांव (खूब धोने के बजाये उन) पर मसह की तरह गीले हाथ फैरने लगे। यह देखकर आपने तेज आवाज से दो या तीन बार फरमाया: दोजख में जाने वाली एड़ियों के लिए बर्बादी।

٥٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: تَخَلَّفَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ عَنَّا فِي سَفْرَةٍ سَافَرْنَاهَا، فَأَدْرَكَنَا - وَقَدْ أَرْهَقَتْنَا ٱلصَّلاَةُ - وَنَحْنُ نَتَوَضَّأُ، فَجَعَلْنَا نَمْسَحُ عَلَى أَرْجُلِنَا، فَنَادَى بِأَعْلَى صَوْتِهِ: (وَيْلٌ لِلأَعْقَابِ مِنَ ٱلنَّارِ). مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا. [رواه البخاري: ٦٠]

फायदे : मालूम हुआ कि जरूरत के वक्त तेज आवाज से नसीहत करने में कोई हर्ज नहीं है। मुस्लिम की हदीस से मालूम होता है कि

समझाने के वक्त ऐसा अन्दाज नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है। (औनुलबारी 1/189)

बाब 3 : मालूमात आजमाने के लिए उस्ताद का शार्गिद के सामने कोई मसला पेश करना।

٣ - باب: طَرْحُ ٱلإِمَامِ ٱلمَسْأَلَةَ عَلَى أَصْحَابِهِ لِيَخْبَرَ مَا عِنْدَهُمْ مِنَ ٱلعِلْمِ

56 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "पेड़ों में एक पेड़ ऐसा है जिसके पत्ते नहीं झड़ते और वह मुसलमान की तरह है। मुझे बतलायें, वह कौन-सा पेड़ है? इस पर लोगों ने जंगली पेड़ों का खयाल किया। अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ने कहा, मेरे दिल में आया कि वह खजूर का पेड़ है, लेकिन (बुजुर्गों से) मुझे शर्म आयी, आखिर सहाबा किराम रजि. ने कहा, आप ही बता दीजिए, वह कौनसा पेड़ है? आपने फरमाया: "वह खुजूर का पेड़ है।"

٥٦ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ مِنَ ٱلشَّجَرِ شَجَرَةً لاَ يَسْقُطُ وَرَقُهَا، وَإِنَّهَا مَثَلُ ٱلمُسْلِمِ، فَحَدِّثُونِي مَا هِيَ؟). فَوَقَعَ ٱلنَّاسُ فِي شَجَرِ ٱلبَوَادِي، قَالَ عَبْدُ ٱللهِ: وَقَعَ فِي نَفْسِي أَنَّهَا ٱلنَّخْلَةُ، فَٱسْتَحْيَيْتُ، ثُمَّ قَالُوا: حَدِّثْنَا مَا هِيَ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (هِيَ ٱلنَّخْلَةُ).

[رواه البخاري: ٦١]

फवायद : मालूम हुआ कि दीन समझने और इल्म हासिल करने में शर्म नहीं करनी चाहिए, नीज यह भी मालूम हुआ कि बड़ों का अदब करते हुये उन्हें बात करने का पहले मौका दिया जाये।

(अलअदब 6144, 6122)

बाब 4 : शार्गिद का उस्ताद के सामने पढ़ना और पेश करना।

٤ - باب: القِرَاءَةُ والعَرْضُ على المُحَدِّث

57 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमायाः एक बार हम मस्जिद में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बैठे हुये थे कि इतने में एक ऊंट सवार आया और अपने ऊंट को उसने मस्जिद में बिठाकर बांध दिया, फिर पूछने लगा कि तुममें से मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कौन हैं? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस वक्त सहाबा किराम रजि. में तकिया लगाये बैठे थे। हमने कहाः यह सफेद रंग वाले तकिया लगाये हुये हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। तब वह आपसे कहने लगा ऐ अब्दुल मुत्तलिब के बेटे! इस पर आपने फरमायाः कहो! मैं तुझे जवाब देता हूँ। फिर उस आदमी ने आपसे कहा कि मैं आपसे कुछ मालूम करने वाला हूँ और उसमें सख्ती करुंगा। आप दिल में मुझ पर नाराज ना हों। फिर आपने फरमाया (कोई बात नहीं) जो चाहे पूछ! तब उसने कहाः मैं आपको आपके मालिक और आपसे पहले

٥٧ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ جُلُوسٌ مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ فِي ٱلْمَسْجِدِ، دَخَلَ رَجُلٌ عَلَى جَمَلٍ، فَأَنَاخَهُ فِي ٱلْمَسْجِدِ ثُمَّ عَقَلَهُ، ثُمَّ قَالَ: أَيُّكُمْ مُحَمَّدٌ؟ وَٱلنَّبِيُّ ﷺ مُتَّكِئٌ بَيْنَ ظَهْرَانَيْهِمْ، فَقُلْنَا: هٰذَا ٱلرَّجُلُ ٱلأَبْيَضُ ٱلْمُتَّكِئُ. فَقَالَ لَهُ ٱلرَّجُلُ: ٱبْنَ عَبْدِ ٱلْمُطَّلِبِ؟ فَقَالَ لَهُ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (قَدْ أَجَبْتُكَ). فَقَالَ: إِنِّي سَائِلُكَ فَمُشَدِّدٌ عَلَيْكَ فِي ٱلْمَسْأَلَةِ، فَلاَ تَجِدْ عَلَيَّ فِي نَفْسِكَ. قَالَ: (سَلْ عَمَّا بَدَا لَكَ). فَقَالَ: أَسْأَلُكَ بِرَبِّكَ وَرَبِّ مَنْ قَبْلَكَ، آللهُ أَرْسَلَكَ إِلَى ٱلنَّاسِ كُلِّهِمْ؟ فَقَالَ: (ٱللَّهُمَّ نَعَمْ). قَالَ: أَنْشُدُكَ بِٱللهِ، آللهُ أَمَرَكَ أَنْ تُصَلِّيَ ٱلصَّلَوَاتِ ٱلْخَمْسَ فِي ٱلْيَوْمِ وَٱللَّيْلَةِ؟ قَالَ: (ٱللَّهُمَّ نَعَمْ). قَالَ أَنْشُدُكَ بِٱللهِ، آللهُ أَمَرَكَ أَنْ تَصُومَ هٰذَا ٱلشَّهْرَ مِنَ ٱلسَّنَةِ؟ قَالَ: (ٱللَّهُمَّ نَعَمْ). قَالَ: أَنْشُدُكَ بِٱللهِ، آللهُ أَمَرَكَ أَنْ تَأْخُذَ هٰذِهِ ٱلصَّدَقَةَ مِنْ أَغْنِيَائِنَا فَتَقْسِمَهَا عَلَى فُقَرَائِنَا؟ فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (ٱللَّهُمَّ نَعَمْ). فَقَالَ ٱلرَّجُلُ: آمَنْتُ بِمَا جِئْتَ بِهِ، وَأَنَا رَسُولُ مَنْ وَرَائِي مِنْ قَوْمِي، وَأَنَا ضِمَامُ بْنُ ثَعْلَبَةَ، أَخُو بَنِي سَعْدِ بْنِ بَكْرٍ. [رواه البخاري: ٦٣]

वाले लोगों के मालिक की कसम देकर पूछता हूँ, क्या अल्लाह तआला ने आपको तमाम इन्सानों की तरफ नबी बनाकर भेजा है? आपने फरमायाः हाँ अल्लाह तआला गवाह है। फिर उसने कहाः आप को अल्लाह की कसम देता हूँ। क्या अल्लाह तआला ने आपको दिन रात में पांच नमाजें पढ़ने का हुक्म दिया है? आपने फरमाया : हाँ अल्लाह तआला गवाह है। फिर उसने कहा : मैं आपको अल्लाह की कसम देता हूँ क्या अल्लाह तआला ने साल भर में रमजान के रोजे रखने का हुक्म दिया है? आपने फरमायाः हाँ, अल्लाह गवाह है। फिर कहने लगा : मैं आपको अल्लाह की कसम देता हूँ क्या अल्लाह तआला ने आपको हुक्म दिया है कि आप हमारे मालदारों से सदका लेकर हमारे फकीरों पर तकसीम करें? आपने फरमाया, हाँ अल्लाह गवाह है। उसके बाद वह आदमी कहने लगाः मैं उस (शरीअत) पर ईमान लाता हूँ, जो आप लाये हैं। मैं अपनी कौम का नुमाईन्दा बनकर आपकी खिदमत में हाजिर हुआ हूँ, मेरा नाम जिमाम बिन सालबा है और मैं साद बिन अबी बकर नामी कबीले से ताल्लुक रखता हूँ।

फायदे : इस हदीस से खबरे वाहिद (एक आदमी के बयान) पर अमल करने का सबूत मिलता है। नीज अगर दादा की शोहरत ज्यादा हो तो उसकी तरफ निस्बत करने में कोई हर्ज नहीं।

(औनुलबारी 1/163)

---

58 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना खत एक आदमी के साथ भेजा और उससे फरमाया कि यह खत बहरैन के

٥٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ بَعَثَ بِكِتابِهِ رَجُلًا، وَأَمَرَهُ أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَى عَظِيمِ ٱلْبَحْرَيْنِ، فَدَفَعَهُ عَظِيمُ ٱلْبَحْرَيْنِ إِلَى كِسْرَى، فَلَمَّا قَرَأَهُ

مَزَّقَهُ، قَالَ: فَدَعَا عَلَيْهِمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يُمَزَّقُوا كُلَّ مُمَزَّقٍ. [رواه البخاري: ٦٤]

गर्वनर को पहुंचा दो, फिर बहरैन के हाकिम ने उसको किसरा तक पहुंचा दिया। किसरा ने उसे पढ़कर फाड़ दिया। रावी ने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन पर बद-दुआ की कि अल्लाह करे वह भी टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें।

फायदे : इस हदीस से मुनावला और इल्म वालों की बातों को लिख करके दूसरे मुल्कों में भेजने का सबूत मिलता है, नीज यह भी मालूम हुआ कि गैर मुस्लिम हुकूमत से जंग का ऐलान करने से पहले उसे दीने इस्लाम की दावत दी जाये। (औनुलबारी, 1/164)

---

٥٩ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَتَبَ النَّبِيُّ ﷺ كِتَابًا أَوْ أَرَادَ أَنْ يَكْتُبَ فَقِيلَ لَهُ: إِنَّهُمْ لاَ يَقْرَؤُونَ كِتَابًا إِلَّا مَخْتُومًا، فَاتَّخَذَ خَاتَمًا مِنْ فِضَّةٍ، نَقْشُهُ: مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى بَيَاضِهِ فِي يَدِهِ. [رواه البخاري: ٦٥]

59 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक खत लिखा या लिखने का इरादा फरमाया। जब आपसे कहा गया कि वह लोग बगैर मुहर लगा खत नहीं पढ़ते तो आपने चांदी की एक अंगूठी बनवाई जिस पर ''मुहम्मद रसूलुल्लाह'' के अलफाज नक्श थे। हजरत अनस रजि. का बयान है कि (इसकी खुबसूरती मेरी नजर में बस गयी) गोया अब भी आपके हाथ में उसकी सफेदी को देख रहा हूँ।

फायदे : मालूम हुआ कि चांदी की अंगूठी इस्तेमाल करना जाइज है। (औनुलबारी 1/166)

---

٦٠ : عَنْ أَبِي وَاقِدٍ اللَّيْثِيِّ رَضِيَ

60 : अबू वाकिद लैसी रजि. से रिवायत

है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में लोगों के साथ बैठे हुये थे, इतने में तीन आदमी आये। उनमें से दो तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आ गये और एक वापस चला गया। रावी कहता है कि वह दोनों कुछ देर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ठहरे रहे। उनमें से एक ने हलके में गुंजाईश देखी तो बैठ गया और दूसरा सबसे पीछे बैठ गया। तीसरा तो वापस जा ही चुका था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (तकरीर से) फारिग हुये तो फरमाया : ''क्या मैं तुम्हें उन तीनों आदमियों का हाल न बताऊँ? उनमें से एक ने अल्लाह की तरफ रूजू किया तो अल्लाह ने भी उसे जगह दे दी और दूसरा शरमाया तो अल्लाह ने उससे शर्म की और तीसरे ने पीठ फेरी तो अल्लाह ने भी उससे मुंह मोड़ लिया।''

اَللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اَللهِ ﷺ بَيْنَما هُوَ جالِسٌ فِي اَلْمَسْجِدِ وَاَلنَّاسُ مَعَهُ، إِذْ أَقْبَلَ ثَلاثَةُ نَفَرٍ، فَأَقْبَلَ اَثْنانِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَذَهَبَ واحِدٌ، قالَ: فَوَقَفا عَلَى رَسُولِ اَللهِ ﷺ، فَأَمَّا أَحَدُهُما: فَرَأَى فُرْجَةً فِي اَلْحَلْقَةِ فَجَلَسَ فِيها، وَأَمَّا اَلآخَرُ: فَجَلَسَ خَلْفَهُمْ، وَأَمَّا اَلثَّالِثُ: فَأَدْبَرَ ذاهِبًا، فَلَمَّا فَرَغَ رَسُولُ اَللهِ ﷺ قالَ: (أَلاَ أُخْبِرُكُمْ عَنِ اَلنَّفَرِ اَلثَّلاثَةِ؟ أَمَّا أَحَدُهُمْ فَأَوَى إِلَى اَللهِ فَآوَاهُ اَللهُ، وَأَمَّا اَلآخَرُ فَاسْتَحْيا فَاسْتَحْيا اَللهُ مِنْهُ، وَأَمَّا اَلآخَرُ [فَأَعْرَضَ] فَأَعْرَضَ اَللهُ عَنْهُ). [رواه البخاري: ٦٦]

फायदे : इस हदीस में अल्लाह के लिए शर्म का सबूत मिलता है। बाज इल्म वालों ने इसकी तावील की है कि इससे मुराद रहम करना और किसी को अजाब न देना है, लेकिन तहकीक करने वाले अस्लाफ ने इस अन्दाज को पसन्द नहीं किया, बल्कि उनके नजदीक अल्लाह की खूबियों को ज्यों का त्यों माना जाये।

बाब 5 : इरशादे नबवी: ''कभी कभी

٥ - باب: قَوْلُ اَلنَّبِيِّ ﷺ:

رُبَّ مُبَلَّغٍ أَوْعَى مِنْ سَامِعٍ

वह आदमी जिसे हदीस पहुंचाई जाये, सुनने वाले से ज्यादा याद रखने वाला होता हैं''

٦١ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: قَعَدَ عليه السَّلامُ عَلَى بَعِيرِهِ، وَأَمْسَكَ إِنْسَانٌ بِخِطَامِهِ - أَوْ بِزِمَامِهِ - ثُمَّ قَالَ: (أَيُّ يَوْمٍ هٰذَا؟). فَسَكَتْنَا حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ سِوَى ٱسْمِهِ، قَالَ: (أَلَيْسَ يَوْمَ ٱلنَّحْرِ؟). قُلْنَا: بَلَى، قَالَ: (فَأَيُّ شَهْرٍ هٰذَا؟). فَسَكَتْنَا حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ ٱسْمِهِ، فَقَالَ: (أَلَيْسَ بِذِي ٱلْحِجَّةِ؟). قُلْنَا: بَلَى، قَالَ: (فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ، وَأَعْرَاضَكُمْ، بَيْنَكُمْ حَرَامٌ، كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا، فِي شَهْرِكُمْ هٰذَا، فِي بَلَدِكُمْ هٰذَا، لِيُبَلِّغِ ٱلشَّاهِدُ ٱلْغَائِبَ، فَإِنَّ ٱلشَّاهِدَ عَسَى أَنْ يُبَلِّغَ مَنْ هُوَ أَوْعَى لَهُ مِنْهُ). [رواه البخاري: ٦٧]

61 : अबू बकरा रजि. से रिवायत है कि एक दफा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने ऊंट पर बैठे हुये थे और एक आदमी उसकी नकेल या मुहार थामे हुये था। आपने फरमाया यह कौन सा दिन है? लोग इस ख्याल से खामौश रहे कि शायद आप उसके असल नाम के अलावा कोई और नाम बतायेंगे। आपने फरमायाः क्या यह कुरबानी का दिन नहीं है? हमने अर्ज किया क्यों नहीं! फिर आपने फरमाया यह कौन सा महीना है? हम फिर इस ख्याल से चुप रहे कि शायद आप उसका कोई और नाम रखेंगे। आपने फरमाया, क्या यह जिलहिज्जा का महीना नहीं है? हमने कहा, क्यों नहीं! तब आपने फरमायाः ''तुम्हारे खून, तुम्हारे माल और तुम्हारी इज्जतें एक दूसरे पर इस तरह हराम हैं जिस तरह कि तुम्हारे यहां इस शहर और इस महीने में इस दिन की हुरमत है। चाहिए कि जो आदमी यहां हाजिर है, वह गायब को यह खबर पहुंचा दे, इसलिए कि शायद हाजिर ऐसे आदमी को खबर दे जो इस बात को उससे ज्यादा याद रखे।''

फायदे : तकरीर की महफिल में हाजिर रहने वाले को चाहिए कि वह

इल्म और दीन की बातें गैर मौजूद लोगों तक पहुंचाये। (अलइल्म 105)

बाब 6 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म और तकरीर के लिए खयाल रखना (रिआयत करना) ताकि लोग उकता न जायें।

٦ - باب: مَا كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يَتَخَوَّلُهُمْ بِالمَوْعِظَةِ وَالعِلْمِ كَيْ لاَ يَنْفِرُوا

62 : इब्ने मसऊद रजि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे परेशान होने (उकता जाने) के डर से हमें तकरीर व नसीहत करने के लिए वक्त और मौका महल का ख्याल रखते थे।

٦٢ : عَنِ ٱبْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يَتَخَوَّلُنَا بِالمَوْعِظَةِ فِي ٱلأَيَّامِ، كَرَاهِيَةَ ٱلسَّآمَةِ عَلَيْنَا. [رواه البخاري: ٦٨]

फायदे : मालूम हुआ कि तकरीर करने वालों को तकरीर और नसीहत के वक्त मौका और जगह का खयाल रखना चाहिए ताकि लोग उकता न जायें और न ही उनमें नफरत का जोश पैदा हो।

63 : अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "(दीन में) आसानी करो, सख्ती न करो और लोगों को खुशखबरी सुनाओ, उन्हें (डरा डराकर) नफरत करने वाला न बनाओ।

٦٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يَسِّرُوا وَلاَ تُعَسِّرُوا وَبَشِّرُوا وَلاَ تُنَفِّرُوا). [رواه البخاري: ٦٩]

फायदे : मालूम हुआ कि दीनी मामलात में बहुत ज्यादा सख्ती नहीं करनी चाहिए। (अलअदब : 6125)

बाब 7 : अल्लाह जिसके साथ भलाई चाहता है, उसे दीन की समझ अता फरमाता है।

٧ - باب: مَن يُرِدِ الله بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ [في ٱلدِّينِ]

64 : मुआविया रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है कि अल्लाह तआला जिसके साथ भलाई चाहता है, उसको दीन की समझ दे देता है और मैं तो सिर्फ बाटंने वाला हूँ और देने वाला तो अल्लाह ही है और (इस्लाम की) यह जमाअत हमेशा अल्लाह के हुक्म पर कायम रहेगी, जो इसका मुखालिफ होगा, इनको नुकसान नहीं पहुंचा सकेगा, यहां तक अल्लाह का हुक्म यानी कयामत आ जाये।

٦٤ : عَنْ مُعاوِيَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رسولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ يُرِدِ ٱللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي ٱلدِّينِ، وَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَٱللهُ يُعْطِي، وَلَنْ تَزَالَ هٰذِهِ ٱلأُمَّةُ قَائِمَةً عَلَى أَمْرِ ٱللهِ لاَ يَضُرُّهُمْ مَنْ خَالَفَهُمْ، حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ ٱللهِ). [رواه البخاري: ٧١]

फायदे : दीन में (समझदारी) का तकाजा यह है कि कुरआन व हदीस को शौक से पढ़ा जाये ताकि वह दीन के कामों में सही छान-बीन और असल और नकल के फर्क को समझने के काबिल हो जाये। (औनुलबारी, 1/206)

बाब 8 : इल्म में समझ-बूझ का बयान।

٨ - باب: ٱلْفَهْمُ فِي ٱلْعِلْمِ

65 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास (बैठे हुये) थे कि आपके पास खजूर का गूदा लाया गया। आपने फरमाया, पेड़ों

٦٥ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأُتِيَ بِجُمَّارٍ، فَقَالَ: (إِنَّ مِنَ ٱلشَّجَرِ شَجَرَةً) وذكر الحديث وَزَادَ فِي هَذِهِ الرِّوَايةِ: فَإِذَا أَنَا أَصْغَرُ ٱلْقَوْمِ، فَسَكَتُّ. [رواه البخاري: ٧٢]

में से एक पेड़ है...यह हदीस 56 पहले गुजर चुकी है। इस रिवायत में उन्होंने यह इजाफा बयान किया ''मैंने अपने आपको देखा कि मैं ही सबसे छोटा हूँ लिहाजा खामोश रहा।

बाब 9 : इल्म और हिकमत में रश्क (ख्वाहिश) करना।

٩ - [باب: الاغتباط في العلم والحكمة]

66 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है, रश्क जाइज नहीं मगर दो (आदमियों की) आदतों पर एक उस आदमी (की आदत) पर जिसको अल्लाह ने माल दिया हो, वह उसे हक के रास्ते में नेक कामों पर खर्च करे और दूसरे उस आदमी (की आदत) पर जिसे अल्लाह ने (कुरआन और हदीस का) इल्म दे रखा हो और वह उसके मुताबिक फैसला करता हो और लोगों को उसकी तालीम देता हो।

٦٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (لاَ حَسَدَ إِلَّا فِي ٱثْنَتَيْنِ: رَجُلٌ آتَاهُ ٱللهُ مَالًا فَسُلِّطَ عَلَى هَلَكَتِهِ فِي ٱلْحَقِّ، وَرَجُلٌ آتَاهُ ٱللهُ ٱلْحِكْمَةَ فَهُوَ يَقْضِي بِهَا وَيُعَلِّمُهَا). [رواه البخاري: ٧٣]

फायदे : रश्क यह है कि किसी में अच्छी खूबी देखकर इन्सान अपने लिए उसकी तमन्ना करे और अगर मकसूद यह हो कि उससे वह नेमत छिन जाये और मुझे हासिल हो जाये तो उसे हसद कहते हैं और यह बुराई के लायक है। (औनुलबारी 1/207)

बाब 10 : (हजरत इब्ने अब्बास के लिए) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ : ऐ अल्लाह! इसे कुरआन का इल्म दे।

١٠ - باب: قَوْلُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: اللَّهُمَّ عَلِّمْهُ ٱلْكِتَابَ

٦٧ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ضَمَّنِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَقَالَ: (ٱللَّهُمَّ عَلِّمْهُ ٱلْكِتَابَ). [رواه البخاري: ٧٥]

67 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मुझे एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सीने से लगाया और दुआ दी कि ऐ अल्लाह! इसे अपनी किताब का इल्म अता फरमां।

١١ - باب: مَتَى يَصِحُّ سَمَاعُ ٱلصَّغِيرِ

बाब 11 : लड़के का किस उम्र में हदीस सुनना ठीक है।

٦٨ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَقْبَلْتُ رَاكِبًا عَلَى حِمَارٍ أَتَانٍ، وَأَنَا يَوْمَئِذٍ قَدْ نَاهَزْتُ ٱلاحْتِلَامَ، وَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُصَلِّي بِمِنًى إِلَى غَيْرِ جِدَارٍ، فَمَرَرْتُ بَيْنَ يَدَيْ بَعْضِ ٱلصَّفِّ، وَأَرْسَلْتُ ٱلأَتَانَ تَرْتَعُ، فَدَخَلْتُ فِي ٱلصَّفِّ، فَلَمْ يُنْكِرْ ذَلِكَ عَلَيَّ. [رواه البخاري: ٧٦]

68 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं एक दिन गधे पर सवार होकर आया, ''उस वक्त मैं बालिग (जवान) होने के करीब था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिना में किसी दीवार को सामने किये बगैर नमाज पढ़ा रहे थे। मैं एक सफ के आगे से गुजरा और गधे को चरने के लिए छोड़ दिया और खुद सफ में शामिल हो गया, तो मुझ पर किसी ने एतराज नहीं किया।

٦٩ : عَنْ مَحْمُودِ بْنِ ٱلرَّبِيعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: عَقَلْتُ مِنَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ مَجَّةً مَجَّهَا فِي وَجْهِي، وَأَنَا ٱبْنُ

69 : महमूद बिन रबी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे (अब तक) नबी सल्लल्लाहु अलैहि

خَمْسِ سِنِينَ، مِنْ دَلْوٍ. [رواه البخاري: ٧٧]

वसल्लम की एक कुल्ली याद है जो आपने एक डोल से पानी लेकर मेरे चेहरे पर की थी, उस वक्त मैं पांच बरस का था।

फायदे : मालूम हुआ कि समझदार बच्चे भी इल्म की मजलिस में हाजिर हो सकते हैं और इल्म वाले उनसे खुशी भी जाहिर कर सकते हैं। (औनुलबारी, 1/214)

١٢ - باب: فَضْل مَنْ عَلِمَ وَعَلَّم

बाब 12 : इल्म पढ़ने और पढ़ाने वाले की फजीलत।

٧٠ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَثَلُ مَا بَعَثَنِي ٱللهُ بِهِ مِنَ ٱلْهُدَى وَٱلعِلْمِ، كَمَثَلِ ٱلْغَيْثِ ٱلْكَثِيرِ أَصَابَ أَرْضًا، فَكَانَ مِنْهَا نَقِيَّةٌ، قَبِلَتِ ٱلمَاءَ، فَأَنْبَتَتِ ٱلْكَلأَ وَٱلْعُشْبَ ٱلْكَثِيرَ، وَكَانَتْ مِنْهَا أَجَادِبُ، أَمْسَكَتِ ٱلمَاءَ، فَنَفَعَ ٱللهُ بِهَا ٱلنَّاسَ، فَشَرِبُوا وَسَقَوْا وَزَرَعُوا، وَأَصَابَ مِنْهَا طَائِفَةً أُخْرَى، إِنَّمَا هِيَ قِيعَانٌ لاَ تُمْسِكُ مَاءً وَلاَ تُنْبِتُ كَلأً، فَذَلِكَ مَثَلُ مَنْ فَقُهَ فِي دِينِ ٱللهِ، وَنَفَعَهُ مَا بَعَثَنِي ٱللهُ بِهِ فَعَلِمَ وَعَلَّمَ، وَمَثَلُ مَنْ لَمْ يَرْفَعْ بِذَلِكَ رَأْسًا، وَلَمْ يَقْبَلْ هُدَى ٱللهِ ٱلَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ). [رواه البخاري: ٧٩]

70 : अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि अल्लाह तआला ने जो हिदायत और इल्म मुझे देकर भेजा है, उसकी मिसाल तेज बारिश की सी है। जो जमीन पर बरसे, फिर साफ और उम्दा (अच्छी) जमीन तो पानी को जज्ब कर लेती (सोस लेती) है और बहुत सी घास और सब्जा उगाती है, जबकि सख्त जमीन पानी को रोकती है, फिर अल्लाह तआला उससे लोगों को फायदा पहुंचाता है। लोग खुद भी पीते हैं और जानवरों को भी पिलाते हैं और उसके जरीये खेती-बाड़ी भी करते हैं। और कुछ बारिश ऐसे हिस्से

पर बरसी जो साफ और चटीला मैदान था, वह ना तो पानी को रोकता है और ना ही सब्जा उगाता है, पस यही मिसाल उस आदमी की है, जिसने अल्लाह के दीन में समझ हासिल की और जो तालीमात देकर अल्लाह तआला ने मुझे भेजा है, उनसे उसे फायदा हुआ। यानी उसने उन्हें खुद सीखा और दूसरों को सिखाया और यही उस आदमी की मिसाल है जिसने सर तक ना उठाया और अल्लाह की हिदायत को जो मैं देकर भेजा गया हूँ, कुबूल न किया।

बाब 13 : दुनिया से इल्म उठ जाना और जिहालत का आम हो जाना।

١٣ - باب: رَفع العِلم وَظُهور الجَهل

71 : अनस रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : "यह कयामत की निशानियों में से है कि इल्म उठ जायेगा और जिहालत फैल जायेगी। शराब बहुत ज्यादा पी जायेगी और जिनाकारी (बलात्कार) आम हो जायेगी।"

٧١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ ٱلسَّاعَةِ: أَنْ يُرْفَعَ ٱلعِلْمُ وَيَثْبُتَ ٱلجَهْلُ، وَيُشْرَبَ ٱلخَمْرُ، وَيَظْهَرَ ٱلزِّنَا). [رواه البخاري: ٨٠]

72 : अनस रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया : "मैं तुम्हें एक हदीस सुनाता हूँ जो मेरे बाद तुम्हें कोई नहीं सुनायेगा। मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुये सुना है कि कयामत की निशानियों में से है कि इल्म

٧٢ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لأُحَدِّثَنَّكُمْ حَدِيثًا لا يُحَدِّثُكُمْ أَحَدٌ بَعْدِي، سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (مِنْ أَشْرَاطِ ٱلسَّاعَةِ أَنْ يَقِلَّ ٱلعِلْمُ، وَيَظْهَرَ ٱلجَهْلُ، وَيَظْهَرَ ٱلزِّنَا، وَتَكْثُرَ ٱلنِّسَاءُ، وَيَقِلَّ ٱلرِّجَالُ، حَتَّى يَكُونَ لِخَمْسِينَ ٱمْرَأَةً ٱلقَيِّمُ ٱلوَاحِدُ). [رواه البخاري: ٨١]

कम और जिहालत गालिब हो जायेगी, जिनाकारी आम हो जायेगी। औरतें ज्यादा और मर्द कम होंगे, यहां तक कि एक मर्द पचास औरतों का सरदार होगा।

फायदे : कयामत के करीब मर्दों के कम और औरतों के ज्यादा होने की वजह यह बयान की जाती है कि ऐसे हालात में लड़ाईयां बहुत होगी। एक हुकूमत दूसरी पर चढ़ाई करेगी, उन लड़ाईयों में मर्द मारे जायेंगे और औरतें ज्यादा बाकी रह जायेगी।

बाब 14 : इल्म की फरावानी का बयान।

١٤ – باب: فَضْلُ ٱلعِلْمِ

73 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे कि मैं एक बार सो रहा था, मेरे सामने दूध का प्याला लाया गया। मैंने उसे पी लिया, यहां तक कि सैराबी मेरे नाखूनों से जाहिर होने लगी, फिर मैंने अपना बचा हुआ दूध उमर बिन खत्ताब रजि. को दे दिया। सहाबा किराम रजि. ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल! आपने इसकी क्या ताबीर की? आपने फरमाया कि इसकी ताबीर ''इल्म'' है।

٧٣ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ، أُتِيتُ بِقَدَحِ لَبَنٍ، فَشَرِبْتُ حَتَّى إِنِّي لأَرَى ٱلرِّيَّ يَخْرُجُ فِي أَظْفَارِي، ثُمَّ أَعْطَيْتُ فَضْلِي عُمَرَ بْنَ ٱلْخَطَّابِ). قَالُوا: فَما أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (ٱلْعِلْمَ). [رواه البخاري: ٨٢]

फायदे : मालूम हुआ कि ख्वाब में दूध पीने की ताबीर इल्म का हासिल करना है, नीज अगर दूध की सैराबी को नाखूनों में देखे तो उससे इल्म की सैराबी और फरावानी (ज्यादती) मुराद ली जा सकती है। (ताबीररूया, 7007, 7006)

बाब 15 : सवारी वगैरह पर सवार रहकर फतवा देना।

١٥ - باب: ٱلْفُتْيَا وَهُوَ وَاقِفٌ عَلَى ٱلدَّابَّةِ وَغَيْرِهَا

74 : अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने आखरी हज के वक्त मिना में उन लोगों के लिए खड़े थे जो आपसे सवाल पूछ रहे थे। एक आदमी आया और कहने लगा, मुझे ख्याल नहीं रहा, मैंने कुरबानी से पहले अपना सर मुंडवा लिया है। आपने फरमाया: अब कुर्बानी कर लो, कोई हर्ज नहीं। फिर एक आदमी आया और अर्ज किया, इल्म न होने से मैंने कंकरियां मारने (रमी) से पहले कुरबानी कर ली। आपने फरमाया : अब रमी कर लो, कोई हर्ज नहीं। अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि. कहते हैं कि उस दिन आप से जिस बात के बारे में पूछा गया, जो किसी ने पहले कर ली या बाद में तो आपने फरमाया: अब कर लो कुछ हर्ज नहीं।

٧٤ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ العَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَقَفَ فِي حَجَّةِ ٱلْوَدَاعِ بِمِنى لِلنَّاسِ يَسْأَلُونَهُ، فَجَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: لَمْ أَشْعُرْ فَحَلَقْتُ قَبْلَ أَنْ أَذْبَحَ؟ فَقَالَ: (ٱذْبَحْ وَلاَ حَرَجَ). فَجَاءَ آخَرُ فَقَالَ: لَمْ أَشْعُرْ فَنَحَرْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِيَ؟ قَالَ: (ٱرْمِ وَلاَ حَرَجَ). فَمَا سُئِلَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ عَنْ شَيْءٍ قُدِّمَ وَلاَ أُخِّرَ إِلاَّ قَالَ: (ٱفْعَلْ وَلاَ حَرَجَ) [رواه البخاري: ٨٣]

बाब 16 : जिसने हाथ या सर के इशारा से सवाल का जबाब दिया।

١٦ - باب: مَنْ أَجَابَ ٱلْفُتْيَا بِإِشَارَةِ ٱلرَّأْسِ وَٱلْيَدِ

75 : अबू हुरैरा रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया: ''आने वाले जमाने में इल्म उठा लिया जायेगा, जिहालत और फितने गालिब होंगे

٧٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يُقْبَضُ ٱلعِلْمُ، وَيَظْهَرُ ٱلجَهْلُ وَٱلْفِتَنُ، وَيَكْثُرُ ٱلْهَرْجُ). قِيلَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَمَا ٱلْهَرْجُ؟ فَقَالَ هٰكَذَا بِيَدِهِ فَحَرَّفَهَا، كَأَنَّهُ يُرِيدُ ٱلْقَتْلَ. [رواه البخاري: ٨٥]

और हर्ज ज्यादा होगा।'' अर्ज किया गया : ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हर्ज क्या चीज है? आपने अपने हाथ मुबारक से इस तरह तिरछा इशारा करके फरमाया, जैसे कि आपकी मुराद कत्ल थी।

76 : असमा बिन्ते अबू बकर रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैं आइशा रजि. के पास आयी, वह नमाज पढ़ रही थी। मैंने कहा, लोगों का क्या हाल है, यानी वह परेशान क्यों हैं? उन्होंने आसमान की तरफ इशारा किया, यानी देखो सूरज ग्रहण लगा हुआ है, इतने में लोग सूरज ग्रहण की नमाज के लिए खड़े हुये तो आइशा रजि. ने कहा: सुब्हानअल्लाह! मैंने पूछा (यह ग्रहण) क्या कोई (अजाब या कयामत की) निशानी है? उन्होंने सर से इशारा किया कि हाँ, फिर मैं भी (नमाज के लिए) खड़ी हो गई, यहां तक कि मैं बेहोश होने लगी तो मैंने अपने सर पर पानी डालना शुरू कर दिया। (जब नमाज खत्म हो चुकी तो) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की

٧٦ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهما قَالَتْ: أَتَيْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا وَهِي تُصَلِّي فَقُلْتُ: مَا شَأْنُ ٱلنَّاسِ؟ فَأَشَارَتْ إِلَى ٱلسَّمَاءِ، فَإِذَا ٱلنَّاسُ قِيَامٌ، فَقَالَتْ: سُبْحَانَ ٱللهِ، قُلْتُ: آيَةٌ؟ فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا: أَيْ نَعَمْ، فَقُمْتُ حَتَّى تَجَلَّانِي ٱلْغَشْيُ، فَجَعَلْتُ أَصُبُّ عَلَى رَأْسِي ٱلْمَاءَ، فَحَمِدَ ٱللهَ عَزَّ وَجَلَّ ٱلنَّبِيُّ ﷺ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: (مَا مِنْ شَيْءٍ لَمْ أَكُنْ أُرِيتُهُ إِلَّا رَأَيْتُهُ فِي مَقَامِي هٰذَا، حَتَّى ٱلْجَنَّةَ وَٱلنَّارَ، فَأُوحِيَ إِلَيَّ: أَنَّكُمْ تُفْتَنُونَ فِي قُبُورِكُمْ - مِثْلَ أَوْ قَرِيبَ - لَا أَدْرِي أَيَّ ذٰلِكَ قَالَتْ أَسْمَاءُ - مِنْ فِتْنَةِ ٱلْمَسِيحِ ٱلدَّجَّالِ، يُقَالُ: مَا عِلْمُكَ بِهٰذَا ٱلرَّجُلِ؟ فَأَمَّا ٱلْمُؤْمِنُ أَوِ ٱلْمُوقِنُ - لَا أَدْرِي بِأَيِّهِمَا قَالَتْ أَسْمَاءُ - فَيَقُولُ: هُوَ مُحَمَّدٌ رَسُولُ ٱللهِ، جَاءَنَا بِٱلْبَيِّنَاتِ وَٱلْهُدَى، فَأَجَبْنَاهُ وَٱتَّبَعْنَاهُ، هُوَ مُحَمَّدٌ، ثَلَاثًا، فَيُقَالُ: نَمْ صَالِحًا، قَدْ عَلِمْنَا إِنْ كُنْتَ لَمُوقِنًا بِهِ. وَأَمَّا ٱلْمُنَافِقُ أَوِ

الْمُرْتَابُ - لاَ أَدْرِي أَيَّ ذٰلِكَ قَالَتْ أَسْمَاءُ - فَيَقُولُ: لاَ أَدْرِي، سَمِعْتُ النَّاسَ يَقُولُونَ شَيْئًا فَقُلْتُهُ). [رواه البخاري: ٨٦]

तारीफ बयान की और फरमायाः "जो चीजें अब तक मुझे ना दिखाई गई थी, उनको मैंने अपनी इस जगह से देख लिया है, यहां तक कि जन्नत और दोजख को भी, और मेरी तरफ यह वह्य भेजी गई कि कब्रों में तुम्हारी आजमाइश होगी, जैसे मसीहे दज्जाल या इसके करीब करीब फितने से आजमाये जाओगे (रावी कहता है, मुझे याद नहीं कि हजरत असमा ने कौनसा लफ्ज कहा था) और कहा जायेगा कि तुझे उस आदमी यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में क्या अकीदा है? ईमानदार या यकीन रखने वाला (रावी कहता है कि मुझे याद नहीं कि असमा ने कौनसा लफ्ज कहा था)। कहेगा कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं जो हमारे पास खुली निशानियां और हिदायत लेकर आये थे, हमने उनका कहा माना और उनकी पैरवी की, यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, तीन बार ऐसा ही कहेगा, चूनांचे उससे कहा जायेगा, तू मजे से सो जा, बेशक हमने जान लिया कि तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान रखता है और मुनाफिक या शक करने वाला (रावी कहता है, मुझे याद नहीं कि असमा ने कौनसा लफ्ज कहा था) कहेगा कि मैं कुछ नहीं जानता, हाँ लोगों को जो कहते सुना, मैं भी वही कहने लगा।"

फायदे : इस हदीस से कब्र के अजाब और उसमें फरिश्तों का सवाल करना साबित होता है, नीज जो इन्सान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर शक करता है, वह इस्लाम के दायरे से निकल जाता है और यह भी मालूम हुआ कि हल्की बेहोशी पड़ने से वुजू नहीं टूटता। (औनुलबारी, **1/228**)

बाब 17 : कोई मसअला पेश आने पर सफर करना और अपने घर वालों को तालीम देना।

١٧ - باب: الرِّحلَة في المَسألَة النَّازِلَة، وَتَعليم أهلِهِ

77 : उक्बा बिन हारिस रजि. से रिवायत है कि उन्होंने अबू इहाब बिन अजीज की बेटी से निकाह किया। फिर एक औरत आयी और कहने लगी कि मैंने उक्बा और उसकी बीवी को दूध पिलाया है। उक्बा ने कहा कि मुझे तो इल्म नहीं है कि तूने मुझे दूध पिलाया है और न पहले तुमने इसकी खबर दी, फिर उक्बा सवार होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मदीना मुनव्वरा आ गये और आपने मसअला पूछा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''(तू उस औरत से) कैसे (मिलेगा) जब कि ऐसी बात कही गई है, आखिर उक्बा रजि. ने उस औरत को छोड़ दिया और उसने किसी दूसरे आदमी से शादी कर ली।

٧٧ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الحارِثِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ تَزَوَّجَ ٱبْنَةً لأَبِي إِهَابِ بْنِ عَزِيزٍ، فَأَتَتْهُ ٱمْرَأَةٌ فَقالَتْ: إِنِّي أَرْضَعْتُ عُقْبَةَ وَالَّتِي تَزَوَّجَ بِها، فَقالَ لَها عُقْبَةُ: مَا أَعْلَمُ أَنَّكِ أَرْضَعْتِنِي، وَلاَ أَخْبَرْتِنِي فَرَكِبَ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ بِالمَدِينَةِ فَسَأَلَهُ، فَقالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (كَيْفَ وَقَدْ قِيلَ؟). فَفارَقَها عُقْبَةُ وَنَكَحَتْ زَوْجاً غَيْرَهُ. [رواه البخاري: ٨٨]

फायदे : इस हदीस से उन शकों की तफ्सीर होती है, जिनसे बचने को कहा गया है।

बाब 18 : इल्म हासिल करने के लिए बारी बांधना।

١٨ - باب: التَّناوُبُ في العِلْمِ

78 : उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं और मेरा एक अन्सारी पड़ोसी बनू

٧٨ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أَنَا وَجَارٌ لِي مِنَ الأَنْصارِ فِي بَنِي أُمَيَّةَ بْنِ زَيْدٍ، وَهِيَ

مِنْ عَوَالِي ٱلمَدِينَةِ، وَكُنَّا نَتَنَاوَبُ النُّزُولَ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، يَنْزِلُ يَوْمًا وَأَنْزِلُ يَوْمًا، فَإِذَا نَزَلْتُ جِئْتُهُ بِخَبَرِ ذَلِكَ ٱلْيَوْمِ مِنَ ٱلْوَحْيِ وَغَيْرِهِ، وَإِذَا نَزَلَ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ، فَنَزَلَ صَاحِبِي ٱلأَنْصَارِيُّ يَوْمَ نَوْبَتِهِ، فَضَرَبَ بَابِي ضَرْبًا شَدِيدًا، فَقَالَ: أَثَمَّ هُوَ؟ فَفَزِعْتُ فَخَرَجْتُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: حَدَثَ أَمْرٌ عَظِيمٌ. قَالَ: فَدَخَلْتُ عَلَى حَفْصَةَ فَإِذَا هِيَ تَبْكِي، فَقُلْتُ: أَطَلَّقَكُنَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ؟ قَالَتْ: لاَ أَدْرِي. ثُمَّ دَخَلْتُ عَلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَقُلْتُ وَأَنَا قَائِمٌ: أَطَلَّقْتَ نِسَاءَكَ؟ قَالَ: (لاَ). فَقُلْتُ: ٱللهُ أَكْبَرُ. [رواه البخاري: ٨٩]

उम्मया बिन जैद के गांव में रहा करते थे जो मदीने की बुलन्दी की तरफ था, और हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में बारी बारी आते थे। एक दिन वह आता और एक दिन मैं। जिस दिन मैं आता था, उस रोज की वह्य वगैरह का हाल मैं उसको बता देता था और जिस दिन वह आता, वह भी ऐसा ही करता था। एक दिन ऐसा हुआ कि मेरा अन्सारी दोस्त जब वापस आया तो उसने मेरे दरवाजे पर जोर से दस्तक दी और कहने लगा कि वह (उमर) यहां है? मैं घबराकर बाहर निकल आया तो वह बोला: आज एक बहुत बड़ा हादसा हुआ। (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बीवियों को तलाक दे दी है) उमर रजि. कहते हैं कि मैं हफ्सा रजि. के पास गया तो वह रो रही थीं। मैंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुम्हें तलाक दे दी है? वह बोलीं, मुझे इल्म नहीं है। फिर मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर हुआ और खड़े खड़े अर्ज किया कि क्या आपने अपनी बीवियों को तलाक दे दी है? आपने फरमाया, ''नहीं'' तो मैंने (मारे खुशी के) अल्लाहु अकबर कहा।

फायदे : मालूम हुआ कि अगर पड़ोसियों को तकलीफ ना हो तो छत पर बालाखाना बनाने में कोई हर्ज नहीं (अलमज़ालिम 2468)। नीज

बाप को चाहिए कि वह अपनी बेटी को शौहर की इताअत और फरमांबरदारी के बारे में नसीहत करता रहे। (अन्निकाह 5191)

बाब 19 : तकरीर या तालीम के वक्त किसी बुरी बात पर नाराजगी जाहिर करना।

١٩ - باب: ٱلْغَضَبُ فِي ٱلْمَوْعِظَةِ وَٱلتَّعْلِيمِ إِذَا رَأَى مَا يَكْرَهُ

79 : अबू मसऊद अन्सारी रजि. से रिवायत है उन्होंने फरमाया कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर होकर अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे लिए नमाज जमाअत से पढ़ना मुश्किल हो गया है, क्योंकि फलां आदमी नमाज बहुत लम्बी पढ़ाते हैं। अबू मसऊद अन्सारी रजि. कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नसीहत के वक्त उस दिन से ज्यादा कभी गुस्से में नहीं देखा। आपने फरमाया, लोगो! तुम दीन से नफरत दिलाने वाले हो। देखो जो कोई लोगों को नमाज पढ़ाये उसे चाहिए कि हल्की नमाज पढ़ाये, क्योंकि पीछे नमाज पढ़ने वालों में बीमार, कमजोर और जरूरतमन्द भी होते हैं।

٧٩ : عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ ٱلأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، لاَ أَكَادُ أُدْرِكُ ٱلصَّلاَةَ مِمَّا يُطَوِّلُ بِنَا فُلاَنٌ، فَمَا رَأَيْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ فِي مَوْعِظَةٍ أَشَدَّ غَضَبًا مِنْ يَوْمَئِذٍ، فَقَالَ: (أَيُّهَا ٱلنَّاسُ، إِنَّكُمْ مُنَفِّرُونَ، فَمَنْ صَلَّى بِٱلنَّاسِ فَلْيُخَفِّفْ، فَإِنَّ فِيهِمُ ٱلْمَرِيضَ وَٱلضَّعِيفَ وَذَا ٱلْحَاجَةِ). [رواه البخاري: ٩٠]

फायदे : मालूम हुआ कि मस्जिद के इमामों को अपने पीछे नमाज पढ़ने वालों का ख्याल रखना चाहिए, नीज गुस्सा की हालत में फैसला या फतवा देना, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुसूसियत है, दूसरों को इसकी इजाजत नही। (अलअहकाम, 7159)। मगर यह कि इन्सान पर गुस्से का असर न हो।

٨٠ : عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ سَأَلَهُ رَجُلٌ عَنِ ٱللُّقطَةِ، فَقَالَ ﷺ: (ٱعْرِفْ وِكَاءَهَا - أَوْ قَالَ: وِعَاءَهَا - وَعِفَاصَهَا، ثُمَّ عَرِّفْهَا سَنَةً، ثُمَّ ٱسْتَمْتِعْ بِهَا، فَإِنْ جَاءَ رَبُّهَا فَأَدِّهَا إِلَيْهِ). قَالَ: فَضَالَّةُ ٱلإِبِلِ؟ فَغَضِبَ حَتَّى ٱحْمَرَّتْ وَجْنَتَاهُ، أَوْ قَالَ ٱحْمَرَّ وَجْهُهُ، فَقَالَ: (مَا لَكَ وَلَهَا، مَعَهَا سِقَاؤُهَا وَحِذَاؤُهَا، تَرِدُ ٱلْمَاءَ وَتَرْعَى ٱلشَّجَرَ، فَذَرْهَا حَتَّى يَلْقَاهَا رَبُّهَا). قَالَ: فَضَالَّةُ ٱلْغَنَمِ؟ قَالَ: (لَكَ أَوْ لِأَخِيكَ أَوْ لِلذِّئْبِ). [رواه البخاري: ٩١]

80 : जैद बिन खालिद जुहनी रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से गिरी हुई चीज के बारे में पूछा गया तो आपने फरमाया: ''उसके बन्धन या बरतन और थैली की पहचान रख और एक साल तक (लोगों में) उसका ऐलान करता रह, फिर उससे फायदा उठा, इस दौरान अगर उसका मालिक आ जाये तो उसके हवाले कर दे।'' फिर उस आदमी ने पूछा कि गुमशुदा ऊंट का क्या हुक्म है? यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस कद्र गुस्सा हुये कि आपका चेहरा सुर्ख हो गया (रावी को शक है) और फरमाया कि तुझे ऊंट से क्या गर्ज है? उसकी मश्क और उसका मोजा उसके साथ है, जब पानी पर पहुंचेगा, पानी पी लेगा और पेड़ से चरेगा, उसे छोड़ दे, यहां तक कि उसका मालिक उसको पा ले। फिर उस आदमी ने कहा, अच्छा गुमशुदा बकरी? आपने फरमाया: ''वह तुम्हारी या तुम्हारे भाई (असल मालिक) या भेड़िये की है।''

फायदे : आजकल किसी आबादी में आवारा ऊंट मिले तो उसे पकड़ लेना चाहिए ताकि मुसलमान का माल महफूज रहे और किसी बुरे आदमी की भेंट न चढ़े। (औनुलबारी, 1/235)

٨١ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ

81 : अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत

عَنْهُ قَالَ: سُئِلَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ عَنْ أَشْيَاءَ كَرِهَهَا، فَلَمَّا أُكْثِرَ عَلَيْهِ غَضِبَ، ثُمَّ قَالَ: (سَلُونِي عَمَّا شِئْتُمْ؟). قَالَ رَجُلٌ: مَنْ أَبِي؟ قَالَ: (أَبُوكَ حُذَافَةُ). فَقَامَ آخَرُ فَقَالَ: مَنْ أَبِي يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ فَقَالَ: (أَبُوكَ سَالِمٌ مَوْلَى شَيْبَةَ). فَلَمَّا رَأَى عُمَرُ مَا فِي وَجْهِهِ قَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّا نَتُوبُ إِلَى ٱللهِ عَزَّ وَجَلَّ. [رواه البخاري: ٩٢]

है, उन्होंने फरमाया कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से चन्द ऐसी बातें पूछी गयीं जो आपके मिजाज के खिलाफ थीं। जब इस किस्म के सवालात की आपके सामने तकरार की गई तो आपको गुस्सा आ गया और फरमाया, अच्छा जो चाहो, मुझ से पूछो। उस पर एक आदमी ने अर्ज किया, मेरा बाप कौन है? आपने फरमाया, तेरा बाप हुजाफा है, फिर दूसरे आदमी ने खड़े होकर कहा, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरा बाप कौन है? आपने फरमाया, तेरा बाप सालिम है, जो शैबा का गुलाम है। फिर जब उमर रजि. ने आपके चेहरे पर गजब के निशान देखे तो कहने लगे ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम अल्लाह तआला की बारगाह में तौबा करते है।।

फायदे : मालूम हुआ कि ज्यादा सवालात के लिए तकलीफ उठाना नापसन्दीदा अमल है। (अल एतसाम 7291)

---

٢٠ - باب: مَنْ أَعَادَ ٱلحَدِيثَ ثَلاَثًا لِيُفْهَمَ عَنْهُ

बाब 20 : खूब समझाने के लिए एक बात को तीन बार दोहराना।

٨٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهُ كَانَ إِذَا تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ أَعَادَهَا ثَلاثًا، حَتَّى تُفْهَمَ عَنْهُ، وَإِذَا أَتَى عَلَى قَوْمٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ، سَلَّمَ ثَلاثًا. [رواه البخاري: ٩٤]

82 : अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब कोई अहम बात फरमाते तो उसे तीन बार दोहराते, यहां तक कि उसे अच्छी तरह समझ लिया

जाये और जब किसी कौम के पास तशरीफ ले जाते तो उन्हें तीन बार सलाम भी फरमाते थे।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खास वक्तों में तीन बार सलाम करने का अमल था, जैसे किसी के घर में आने की इजाजत तलब करते वक्त ऐसा होता था या एक बार सलाम, इजाजत के लिए, दूसरा जब उनके पास जाते और तीसरा जब उनके पास से वापस होते। आम हालात में तीन बार सलाम करना आपके अमल से साबित नहीं। (औनुलबारी, 1/238)

---

٢١ - باب: تَعْلِيمُ ٱلرَّجُلِ أَمَتَهُ وَأَهْلَهُ

बाब 21 : अपनी लौण्डी और घर वालों को तालीम देना।

٨٣ : عَنْ أَبِي مُوسى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ثَلاثَةٌ لَهُمْ أَجْرَانِ: رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَابِ، آمَنَ بِنَبِيِّهِ وَآمَنَ بِمُحَمَّدٍ ﷺ، وَٱلْعَبْدُ ٱلْمَمْلُوكُ إِذَا أَدَّى حَقَّ ٱللهِ وَحَقَّ مَوَالِيهِ، وَرَجُلٌ كَانَتْ عِنْدَهُ أَمَةٌ يَطَؤُهَا، فَأَدَّبَهَا فَأَحْسَنَ تَأْدِيبَهَا، وعلَّمَهَا فَأَحْسَنَ تَعْلِيمَهَا، ثُمَّ أَعْتَقَهَا فَتَزَوَّجَها، فَلَهُ أَجْرَانِ). [رواه البخاري: ٩٧]

83 : अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: तीन आदमी ऐसे हैं, जिनको दोगुना सवाब मिलेगा। एक वह आदमी जो अहले किताब में से अपने नबी पर और फिर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाये और दूसरा वह गुलाम जो अल्लाह और अपने मालिकों का हक अदा करता रहे और तीसरा वह जिसके पास उसकी लौण्डी हो, जिससे ताल्लुकात कायम करता हो, फिर उसे अच्छी तरह तालीम और अदब सिखा कर आजाद कर दे उसके बाद उससे निकाह कर ले तो उसको दोहरा सवाब मिलेगा।

٢٢ - باب: عِظَةُ الإِمَامِ ٱلنِّسَاءَ

बाब 22 : इमाम का औरतों को नसीहत करना।

84 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (ईद के दिन मर्दों की सफ से औरतों की तरफ) निकले और आपके साथ बिलाल रजि. थे। आपको ख्याल हुआ कि शायद औरतों तक मेरी आवाज नहीं पहुंची, इसलिए आपने उनको नसीहत फरमायी, और सदका व खैरात देने का हुक्म दिया तो कोई औरत अपनी बाली और अंगूठी डालने लगी और बिलाल रजि. (उन जेवरात को) अपने कपड़े में जमा करने लगे।

٨٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ خَرَجَ وَمَعَهُ بِلاَلٌ، فَظَنَّ أَنَّهُ لَمْ يُسْمِعِ النِّسَاءَ فَوَعَظَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ، فَجَعَلَتِ ٱلْمَرْأَةُ تُلْقِي ٱلْقُرْطَ وَٱلْخَاتَمَ، وَبِلاَلٌ يَأْخُذُ فِي طَرَفِ ثَوْبِهِ. [رواه البخاري: ٩٨]

फायदे : मालूम हुआ कि सदका व खैरात के लिए शौक दिलाना और सिफारिश करना बड़े सवाब का काम है। (अज्जकात : 1431), औरतों को अपनी अंगूठी, छल्ला, हार, गलूबन्द, और बालियां पहनना जाइज है। (अल्लिबास 5880 से 5883 तक)

बाब 23 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस हासिल करने के लिए हिर्स (मुकाबला) करना।

٢٣ - باب: ٱلحِرْصُ عَلَى ٱلْحَدِيثِ

85 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, फरमाते हैं कि मैंने अर्ज किया ऐ रसूलुल्लाह! कयामत के दिन आपकी सिफारिश से कौन ज्यादा हिस्सा पायेगा तो आपने फरमाया: अबू हुरैरा! मेरा ख्याल था कि तुमसे पहले कोई मुझ से यह बात

٨٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، مَنْ أَسْعَدُ ٱلنَّاسِ بِشَفَاعَتِكَ يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ؟ قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَقَدْ ظَنَنْتُ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ - أَنْ لاَ يَسْأَلَنِي عَنْ هَذَا ٱلْحَدِيثِ أَحَدٌ أَوَّلُ مِنْكَ، لِمَا رَأَيْتُ مِنْ حِرْصِكَ عَلَى ٱلْحَدِيثِ،

नहीं पूछेगा, क्योंकि मैं देखता हूँ कि तुझे हदीस का बहुत हिर्स है। कयामत के दिन मेरी शिफाअत से सबसे ज्यादा खुश किस्मत वह आदमी होगा, जिसने अपने दिल या साफ नियत से ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' कहा हो।

أَسْعَدُ ٱلنَّاسِ بِشَفَاعَتِي يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ، مَنْ قَالَ: لاَ إِلٰهَ إِلاَّ ٱللهُ، خَالِصًا مِنْ قَلْبِهِ، أَوْ نَفْسِهِ). [رواه البخاري: ٩٩]

फायदे : दिल से कलमा-ए-इख्लास कहने का मतलब यह है कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करें, क्योंकि जो आदमी शिर्क करता है, उसका सिर्फ जुबानी दावा है, दिल से उसका इकरार नहीं करता। (औनुलबारी, 1/242)

बाब 24 : इल्म किस तरह उठा लिया जायेगा?

٢٤ - باب: كَيْفَ يُقْبَضُ ٱلْعِلْمُ

86 : अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना कि अल्लाह तआला इल्मे दीन को ऐसे नहीं उठायेगा कि बन्दों के सीनों से निकाल ले, बल्कि अहले इल्म को मौत देकर इल्म को उठायेगा। जब कोई आलिम बाकी नहीं रहेगा तो लोग ज़ाहिलों को सरदार बना लेंगे और उनसे मसायल पूछें जायेंगे। तो वह बगैर इल्म के फतवे देकर खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।

٨٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ ٱلْعَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ ٱللهَ لاَ يَقْبِضُ ٱلْعِلْمَ ٱنْتِزَاعًا يَنْتَزِعُهُ مِنَ ٱلْعِبَادِ، وَلٰكِنْ يَقْبِضُ ٱلْعِلْمَ بِقَبْضِ ٱلْعُلَمَاءِ، حَتَّى إِذَا لَمْ يُبْقِ عَالِمًا، ٱتَّخَذَ ٱلنَّاسُ رُؤُسَاءَ جُهَّالاً، فَسُئِلُوا، فَأَفْتَوْا بِغَيْرِ عِلْمٍ، فَضَلُّوا وَأَضَلُّوا). [رواه البخاري: ١٠٠]

फायदे : इस से यह भी मालूम हुआ कि दीनी मामलात में फुजूल राय कायम करना और बिला वजह कयास करना मजम्मत के लायक है। (अलएतसाम 7307)

बाब 25 : क्या औरतों की तालीम के लिए अलग दिन मुकर्रर किया जा सकता है?

٢٥ - باب: هَلْ يُجْعَلُ لِلنِّسَاءِ يَوْماً فِي ٱلعِلْمِ

87 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि चन्द औरतों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया कि मर्द आप से फायदा उठाने में हमसे आगे बढ़ गये हैं। इसलिए आप अपनी तरफ से हमारे लिए कोई दिन मुकर्रर फरमां दें। आपने उनकी मुलाकात के लिए एक दिन का वादा कर लिया, चूनांचे उस दिन आपने नसीहत फरमायी और शरीअत के अहकाम बताये। आपने उन्हें जिन बातों की तलकीन फरमायी, उनमें एक यह भी थी कि तुममें से जो औरत अपने तीन बच्चे आगे भेज देगी तो वह उसके लिए दोजख की आग से पर्दा बन जायेंगे। एक औरत ने अर्ज किया अगर कोई दो भेजे तो? आपने फरमाया कि दो का भी यही हुक्म है और अबू हुरैरा रजि. की रिवायत में यह ज्यादा है कि वह तीन बच्चे जो गुनाह की उम्र यानी जवानी तक न पहुंचे हों।

٨٧ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - قَالَ: قَالَتِ ٱلنِّسَاءُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: غَلَبَنَا عَلَيْكَ ٱلرِّجَالُ، فَاجْعَلْ لَنَا يَوْمًا مِنْ نَفْسِكَ، فَوَعَدَهُنَّ يَوْمًا لَقِيَهُنَّ فِيهِ، فَوَعَظَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ، فَكَانَ فِيمَا قَالَ لَهُنَّ: (مَا مِنْكُنَّ ٱمْرَأَةٌ تُقَدِّمُ ثَلَاثَةً مِنْ وَلَدِهَا، إِلَّا كَانَ لَهَا حِجَابٌ مِنَ ٱلنَّارِ). فَقَالَتِ ٱمْرَأَةٌ: وَٱثْنَيْنِ؟ فَقَالَ: (وَٱثْنَيْنِ). [رواه البخاري: ١٠١]

وَفِي رِوَايَةٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: (لَمْ يَبْلُغُوا ٱلْحِنْثَ). [رواه البخاري: ١٠٢]

फायदे : मतलब यह है कि अगर किसी औरत के तीन बच्चे मर जायें

और वह सब्र से काम ले तो वह बच्चे कयामत के दिन जहन्नम से ओट बन जायेंगे। दूसरी रिवायत में है कि एक बच्चा बल्कि कच्चा बच्चा भी जहन्नम से रूकावट का सबब है।

बाब 26 : एक बात सुनने के बाद समझने के लिए दोबारा उसी को पूछना।

٢٦ - باب: مَنْ سَمِعَ شَيْئاً فَرَاجَعَ حَتَّى يَعْرِفَهُ

88 : आइशा रजि.से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "कयामत के दिन जिसका हिसाब हो, उसे अजाब दिया जायेगा। इस पर आइशा रजि. ने अर्ज किया कि अल्लाह तआला तो फरमाता है, उसका हिसाब आसानी से लिया जायेगा। आपने फरमाया (यह हिसाब नहीं है) बल्कि इससे मुराद आमाल की पेशी है, लेकिन जिससे हिसाब में जांच पड़ताल की गई वह जरूर तबाह हो जायेगा।

٨٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (مَنْ حُوسِبَ عُذِّبَ). قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ: أَوَ لَيْسَ يَقُولُ ٱللهُ تَعالَى: ﴿فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا﴾. فَقَالَ: (إِنَّمَا ذَلِكَ ٱلْعَرْضُ، وَلٰكِنْ: مَنْ نُوقِشَ ٱلْحِسَابَ يَهْلِكْ). [رواه البخاري: ١٠٣]

फायदे : मालूम हुआ कि अगर दीनी मसले में किसी को शक हो तो सवाल के जरीये उसका हल तलाश करना चाहिए।

बाब 27 : चाहिए कि मौजूद गैरहाजिर को इल्म पहुंचा दे।

٢٧ - باب: لِيُبَلِّغِ ٱلشَّاهِدُ ٱلْغَائِبَ

89 : अबू शुरैह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फतह मक्का के दिन एक ऐसी

٨٩ : عَنْ أَبِي شُرَيْحٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ ٱلْغَدَ مِنْ يَوْمِ ٱلْفَتْحِ، يَقُولُ قَوْلاً، سَمِعَتْهُ أُذُنَايَ وَوَعَاهُ قَلْبِي، وَأَبْصَرَتْهُ

बात महफूज की, जिसे मेरे कानों ने सुना, दिल ने उसे याद रखा और मेरी दोनों आंखों ने आपको देखा, जब आपने यह हदीस बयान फरमायी। आपने अल्लाह की बड़ाई बयान करने के बाद फरमाया कि मक्का (में लड़ाई और झगड़ा करना) अल्लाह ने हराम किया है, लोगों ने हराम नहीं किया, लिहाजा अगर कोई आदमी अल्लाह और आखिरत पर ईमान रखता हो तो उसके लिए जाइज नहीं कि मक्का में मार काट करे या वहां से कोई पेड़ काटे। अगर कोई आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किताल (लड़ाई करने) से झगड़े को जाइज करार दे तो उससे कह देना कि अल्लाह ने अपने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तो इजाजत दी थी, लेकिन तुम्हें नहीं दी, और मुझे भी दिन में कुछ वक्त के लिए इजाजत थी और आज इसकी इज्जत फिर वैसी ही हो गई, जैसे कल थी। जो आदमी यहां हाजिर है, उसे चाहिए कि गायब को यह खबर पहुंचा दे।

عَيْنَايَ حِينَ تَكَلَّمَ بِهِ: حَمِدَ ٱللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: (إِنَّ مَكَّةَ حَرَّمَهَا ٱللهُ، وَلَمْ يُحَرِّمْهَا ٱلنَّاسُ، فَلاَ يَحِلُّ لِامْرِئٍ يُؤْمِنُ بِٱللهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلآخِرِ أَنْ يَسْفِكَ فِيهَا دَمًا، وَلاَ يَعْضِدَ بِهَا شَجَرَةً، فَإِنْ أَحَدٌ تَرَخَّصَ لِقِتَالِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِيهَا، فَقُولُوا: إِنَّ ٱللهَ قَدْ أَذِنَ لِرَسُولِهِ وَلَمْ يَأْذَنْ لَكُمْ، وَإِنَّمَا أَذِنَ لِي سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ، ثُمَّ عَادَتْ حُرْمَتُهَا ٱلْيَوْمَ كَحُرْمَتِهَا بِٱلأَمْسِ، وَلْيُبَلِّغِ ٱلشَّاهِدُ ٱلْغَائِبَ). [رواه البخاري: ١٠٤]

बाब 28 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर झूट बोलने का गुनाह।

٢٨ - باب: إِثْمُ مَنْ كَذَبَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

90 : अली रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से

٩٠ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (لاَ تَكْذِبُوا عَلَيَّ، فَإِنَّهُ مَنْ كَذَبَ

عَلَيَّ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ). [رواه البخاري: ١٠٧]

सुना, आप फरमा रहे थे "(देखो) मुझ पर झूट न बांधना, क्योंकि जो आदमी मुझ पर झूट बांधेगा वह जरूर दोजख में जायेगा।"

फायदे : यह वादा हर तरह के झूट को शामिल है जो लोग तरगीब और तरहीब के बारे में बे-असल हदीसें बयान करते हैं, वह इसी दायरे में आते हैं।

---

٩١ : عَنْ سَلَمَةَ بنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ يَقُلْ عَلَيَّ مَا لَمْ أَقُلْ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ) [رواه البخاري: ١٠٩]

91 : सलमा बिन अकवा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना है कि जो आदमी मुझ पर वह बात लगाये जो मैंने नहीं कही तो वह अपना ठिकाना आग में बना ले।

٩٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (تَسَمَّوْا بِاسْمِي وَلَا تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي وَمَنْ رَآنِي فِي المَنَامِ فَقَدْ رَآنِي، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَا يَتَمَثَّلُ فِي صُورَتِي، وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ). [رواه البخاري: ١١٠]

92 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कि मेरे नाम (मुहम्मद और अहमद) पर नाम रखो, मगर मेरी कुन्नियत (अबुलकासिम) पर न रखो और यकीन करो, जिसने मुझे ख्वाब में देखा, उसने यकीनन मुझ को देखा है, क्योंकि शैतान मेरी सूरत में नहीं आ सकता और जो जानबूझ कर मुझ पर झूट बांधे वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

फायदे : ख्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखने की

खुशनसीबी ऐसी सूरत में बरकत का सबब है, जबकि ख्वाब में देखा हुआ हुलिया हदीस की किताबों में मौजूद आपके हुलिये मुबारक के मुताबिक हो। आपके हुलिये मुबारक के मुताल्लिक मुस्तनद किताब "अर्रसूलो क-अन्नका तराहो" बहुत फायदेमन्द है, जिसका उर्दू तर्जुमा आईन-ए-जमाले नबूवत" के नाम से मकतब दारूस्सलाम ने जारी किया है।

बाब 29 : इल्म की बातें लिखना।

٢٩ - باب: كِتَابَةُ الْعِلْم

93 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, बेशक नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने मक्का से कत्ल या फील (हाथी) को रोक दिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और ईमान वालों को इन (काफिरों) पर गालिब कर दिया, खबरदार मक्का मुझ से पहले किसी के लिए हलाल नहीं हुआ और ना मेरे बाद किसी के लिए हलाल होगा, खबरदार! यह मेरे लिए भी दिन में एक घड़ी के लिए हलाल हुआ था। खबरदार! यह इस वक्त भी हराम है। यहां के कांटे न काटे जायें, न यहां के पेड़ काटे जायें। ऐलान करने वाले के सिवा वहां की गिरी हुई चीज कोई ना उठाये और जिस का

٩٣ : وعَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ اللهَ حَبَسَ عَنْ مَكَّةَ الْقَتْلَ، أَوِ الْفِيلَ، وَسَلَّطَ عَلَيْهِمْ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَالْمُؤْمِنِينَ، أَلاَ وَإِنَّهَا لَمْ تَحِلَّ لِأَحَدٍ قَبْلِي، وَلَمْ تَحِلَّ لأَحَدٍ بَعْدِي، أَلاَ وَإِنَّهَا حَلَّتْ لِي سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ، أَلاَ وَإِنَّهَا سَاعَتِي هٰذِهِ حَرَامٌ، لاَ يُخْتَلَى شَوْكُهَا، وَلاَ يُعْضَدُ شَجَرُهَا، وَلاَ تُلْتَقَطُ سَاقِطَتُهَا إِلَّا لِمُنْشِدٍ، فَمَنْ قُتِلَ فَهُوَ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ: إِمَّا أَنْ يُعْقَلَ، وَإِمَّا أَنْ يُقَادَ أَهْلُ الْقَتِيلِ). فَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ فَقَالَ: اكْتُبْ لِي يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَالَ: (اكْتُبُوا لأَبِي فُلاَنٍ). فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ: إِلَّا الإِذْخِرَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَإِنَّا نَجْعَلُهُ فِي بُيُوتِنَا وَقُبُورِنَا؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِلاَّ الإِذْخِرَ إِلاَّ الإِذْخِرَ). [رواه البخاري: ١١٢]

कोई अजीज मारा जाये, उसको दो में से एक का इख्तयार है। दण्ड कबूल कर ले या बदला ले ले, इतने में एक यमनी आदमी आया और उसने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह बातें मुझे लिख दीजिए। आपने फरमाया, अच्छा अबू फुलां को लिख दो। कुरैश के एक आदमी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मगर इजखिर (खुशबूदार घास) के काटने की इजाजत दे दीजिये, इसलिए कि हम इसे अपने घरों और कब्रों में इस्तेमाल करते हैं। तो आपने फरमाया, हाँ मगर इजखिर मगर इजखिर, यानी काट सकते हो।

٩٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: لَمَّا ٱشْتَدَّ بِالنَّبِيِّ ﷺ وَجَعُهُ قَالَ: (ٱئْتُونِي بِكِتَابٍ أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لاَ تَضِلُّوا بَعْدَهُ). قَالَ عُمَرُ: إِنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ غَلَبَهُ ٱلْوَجَعُ، وَعِنْدَنَا كِتَابُ ٱللهِ حَسْبُنَا. فَاخْتَلَفُوا وَكَثُرَ ٱللَّغَطُ، قَالَ: (قُومُوا عَنِّي، وَلاَ يَنْبَغِي عِنْدِي ٱلتَّنَازُعُ). [رواه البخاري: ١١٤]

94 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत बीमार हो गये तो आपने फरमाया कि लिख । का सामान लाओ ताकि मैं तुम्हारे लिए एक तहरीर लिख दूं। जिसके बाद तुम गुमराह नहीं होगे। उमर रजि. ने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बीमारी का गल्बा है और हमारे पास अल्लाह की किताब मौजूद है, वह हमें काफी है, लोगों ने इख्तिलाफ शुरू कर दिया और शौर मच गया, तब आपने फरमायाः मेरे पास से उठ जाओ, मेरे यहां लड़ाई झगड़े का क्या काम है?

फायदे : हजरत उमर रजि. का मकसद आपके हुक्म की खिलाफवर्जी करना मकसूद न था, बल्कि आपने ऐसा मुहब्बत की खातिर फरमाया, वरना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसके बाद चार रोज तक जिन्दा रहे और दूसरे अहकाम नाफिज

फरमाते रहे, जबकि तहरीर के बारे में आपने खामोशी इख्तियार फरमायी। मालूम हुआ कि हजरत उमर रजि. की राय से आपको इत्तिफाक था (औनुलबारी, 1/257)। याद रहे कि लिखने का सामान लाने का यह हुक्म आपने हजरत अली रजि. को दिया था।

बाब 30 : रात को इल्म व नसीहत की बातें करना।

٣٠ - باب: ٱلْعِلْمُ وَٱلعِظَةُ بِاللَّيْلِ

95 : उम्मे सलमा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमै एक रात जागे तो फरमायाः सुब्हान अल्लाह! आज रात कितने फितने नाजिल किये गये, और कितने खजाने खोले गये। इन कमरों में सोने वालियों को जगावो क्योंकि दुनिया में बहुत सी कपड़े पहनने वालियां ऐसी हैं जो आखिरत में नंगी होंगी।

٩٥ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتِ: ٱسْتَيْقَظَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ ذَاتَ لَيْلَةٍ فَقَالَ: (سُبْحَانَ ٱللهِ، مَاذَا أُنْزِلَ ٱللَّيْلَةَ مِنَ ٱلْفِتَنِ، وَمَاذَا فُتِحَ مِنَ ٱلْخَزَائِنِ، أَيْقِظُوا صَوَاحِبَ ٱلْحُجَرِ، فَرُبَّ كَاسِيَةٍ فِي ٱلدُّنْيَا عَارِيَةٌ فِي ٱلآخِرَةِ). [رواه البخاري: ١١٥]

बाब 31 : रात को इल्म की बातें करना।

٣١ - باب: ٱلسَّمَرُ فِي ٱلْعِلْمِ

96 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी आखरी उम्र में हमें इशा की नमाज पढ़ाई, जब सलाम के बाद खड़े हो गये तो फरमाया, तुम इस रात की अहमियत को

٩٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: صَلَّى بِنَا ٱلنَّبِيُّ ﷺ ٱلعِشَاءَ فِي آخِرِ حَيَاتِهِ، فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ، فَقَالَ: (أَرَأَيْتَكُمْ لَيْلَتَكُمْ هٰذِهِ، فَإِنَّ رَأْسَ مِائَةِ سَنَةٍ مِنْهَا، لاَ يَبْقَى مِمَّنْ هُوَ عَلَى ظَهْرِ ٱلأَرْضِ أَحَدٌ). [رواه البخاري: ١١٦]

जानते हो, आज की रात से सौ बरस बाद कोई आदमी जो अब जमीन पर मौजूद है जिन्दा नहीं रहेगा।

फायदे : इस हदीस से यह भी मालूम होता है कि हजरत खिज़्र अलैहि. अब जिन्दा नहीं हैं, क्योंकि इस हदीस के मुताबिक सौ साल बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखने वाला कोई भी जिन्दा नहीं रहा, लेकिन नवाब सिद्दीक हसन रह. को इस से इत्तेफाक नहीं। (औनुलबारी, 1/261)

---

٩٧ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بِتُّ فِي بَيْتِ خَالَتِي مَيْمُونَةَ بِنْتِ ٱلحارِثِ، زَوْجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، وَكَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ عِنْدَهَا فِي لَيْلَتِهَا، فَصَلَّى ٱلنَّبِيُّ ﷺ ٱلعِشَاءَ، ثُمَّ جَاءَ إِلَى مَنْزِلِهِ، فَصَلَّى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ، ثُمَّ نَامَ، ثُمَّ قَامَ، ثُمَّ قَالَ: (نَامَ ٱلغُلَيِّمُ). أَوْ كَلِمَةً تُشْبِهُهَا، ثُمَّ قَامَ، فَقُمْتُ عَنْ يَسَارِهِ، فَجَعَلَنِي عَنْ يَمِينِهِ، فَصَلَّى خَمْسَ رَكَعَاتٍ، ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ نَامَ، حَتَّى سَمِعْتُ غَطِيطَهُ أَوْ خَطِيطَهُ، ثُمَّ خَرَجَ إِلَى الصَّلاةِ. [رواه البخاري: ١١٧]

97 : अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी मैमूना बिन्ते हारिस रजि. के यहां गुजारी। इस रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इन्हीं के पास थे। आपने इशा मस्जिद में अदा की, फिर अपने घर तशरीफ लाये और चार रकअतें पढ़ कर सो गये, फिर जागे और फरमाया, क्या बच्चा सो गया है? या कुछ ऐसा ही फरमाया और फिर नमाज पढ़ने लगे, मैं भी आपके बायीं तरफ खड़ा हो गया, आपने मुझे अपनी दायीं तरफ कर लिया और पांच रकाअतें पढ़ीं, उसके बाद दो रकाअत (सुन्नते फजर) अदा कीं, फिर सो गये, यहां तक कि मैंने आपके खर्राटे भरने की आवाज सुनी, फिर (सुबह की) नमाज के लिए बाहर तशरीफ ले गये।

फायदे : यह आपकी खासियत थी कि सोने से आपका वजू नहीं टूटता

था, क्योंकि हदीस में है कि रसूलुल्लाह की आंखें सोती हैं, दिल नहीं सोता। (औनुलबारी, 1/267)

बाब 32 : इल्म को याद रखना।

٣٢ - باب: حِفْظُ ٱلْعِلْمِ

98 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, लोग कहते हैं: अबू हुरैरा रजि. ने बहुत हदीसें बयान की हैं, हालांकि अगर किताबुल्लाह में दो आयतें न होतीं तो मैं भी हदीस बयान न करता, फिर उन्होंने उन आयतों की तिलावत की। "जो लोग छुपाते हैं, उन खुली हुई निशानियों और हिदायत की बातों को जो हमने नाजिल कीं।... अर्रहीम" तक बेशक हमारे मुहाजिर भाई बाजार में बेचने व खरीदने में मशगूल रहते थे और हमारे अन्सारी भाई माल और खेती-बाड़ी के काम में लगे रहते थे, लेकिन अबू हुरैरा रजि. तो अपना पेट भरने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मौजूद रहता था और ऐसे मौके पर हाजिर रहता, जहां लोग हाजिर न रहते और वह बातें याद कर लेता जो दूसरे लोग नहीं याद कर सकते थे।

٩٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ ٱلنَّاسَ يَقُولُونَ أَكْثَرَ أَبُو هُرَيْرَةَ، وَلَوْلاَ آيَتَانِ فِي كِتَابِ ٱللهِ مَا حَدَّثْتُ حَدِيثًا، ثُمَّ يَتْلُو: ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَآ أَنزَلْنَا مِنَ ٱلْبَيِّنَٰتِ وَٱلْهُدَىٰ﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿ٱلرَّحِيمُ﴾. إِنَّ إِخْوَانَنَا مِنَ ٱلْمُهَاجِرِينَ كَانَ يَشْغَلُهُمُ ٱلصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ، وَإِنَّ إِخْوَانَنَا مِنَ ٱلأَنْصَارِ كَانَ يَشْغَلُهُم ٱلْعَمَلُ فِي أَمْوَالِهِمْ، وَإِنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ كَانَ يَلْزَمُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لِشِبَعِ بَطْنِهِ، وَيَحْضُرُ مَا لاَ يَحْضُرُونَ، وَيَحْفَظُ مَا لاَ يَحْفَظُونَ.

[رواه البخاري: ١١٨]

99 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि उन्होंने फरमाया, मैंने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं

٩٩ : وعَنْهُ - رَضِيَ ٱللهُ عَنه - قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنِّي أَسْمَعُ مِنْكَ حَدِيثًا كَثِيرًا أَنْسَاهُ؟ قَالَ: (ٱبْسُطْ رِدَاءَكَ). فَبَسَطْتُهُ، قَالَ:

فَغَرَفَ بِيَدَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: (ضُمَّهُ). فَضَمَمْتُهُ، فَمَا نَسِيتُ شَيْئًا بَعْدَهُ. [رواه البخاري: ١١٩]

आपसे बहुत सी हदीसें सुनता हूँ, लेकिन भूल जाता हूँ। आपने फरमाया: अपनी चादर बिछाओ। चूनाँचे मैंने चादर बिछाई तो आपने अपने दोनों हाथों से चुल्लू सा बनाया और चादर में डाल दिया, फिर फरमाया कि इसे अपने ऊपर लपेट लो। मैंने उसे लपेट लिया, उसके बाद मैं कोई चीज न भूला।

फायदे : यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजजा (करिश्मा) था कि हजरत अबू हुरैरा रजि. से भूल को खत्म कर दिया गया, जो इन्सान को लाजिम है। (औनुलबारी 1/267)

١٠٠ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: حَفِظْتُ مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وِعَاءَيْنِ: فَأَمَّا أَحَدُهُمَا فَبَثَثْتُهُ، وَأَمَّا ٱلآخَرُ فَلَوْ بَثَثْتُهُ قُطِعَ هٰذَا ٱلْبُلْعُومُ. [رواه البخاري: ١٢٠]

100 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया : मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (इल्म के) दो जरफ याद किये, इनमें से एक तो मैंने जाहिर कर दिया और दूसरे को भी जाहिर कर दूं तो मेरा यह गला काट दिया जाये।

फायदे : दूसरे जरफ का ताल्लुक बुरे हाकिमों से था। चूनांचे कुछ रिवायतों में इस का बयान है।

٣٣ - باب: ٱلإِنْصَاتُ لِلعُلَمَاءِ

बाब 33 : इल्म वालों की बात सुनने के लिए चुप रहने का बयान।

١٠١ : عَنْ جَرِيرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهُ فِي حَجَّةِ ٱلْوَدَاعِ: (ٱسْتَنْصِتِ ٱلنَّاسَ) فَقَالَ: «لَا تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا، يَضْرِبُ

101 : जरीर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने आखरी हज के मौके पर उन से फरमाया:

लोगों को खामोश कराओ, उसके बाद आपने फरमाया, ऐ लोगो! मेरे बाद एक दूसरे की गर्दने मारकर काफिर न बन जाना।

بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ). [رواه البخاري: ١٢١]

फायदे : इससे मुराद कुफ्रे हकीकी नहीं, बल्कि काफिरों का सा काम मुराद है, वरना मुसलमान को कत्ल करने वाला काफिर नहीं होता, हां! अगर इस कत्ल को हलाल समझता है तो ऐसा इन्सान इस्लाम के दायरे से खारिज है।

बाब 34 : जब आलिम से पूछा जाये कि लोगों में कौन ज्यादा जानने वाला है तो उसे क्या कहना चाहिए?

٣٤ - باب: ما يُسْتَحَبُّ لِلعَالِمِ إذا سُئِلَ أيُّ النَّاسِ أعْلَمُ؟

102 : उबय्यि-बिन-क-अ-ब रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: मूसा अलैहि. एक दिन बनी इस्राईल को समझाने के लिए खड़े हुये तो उनसे पूछा गया कि लोगों में सबसे बड़ा आलिम कौन है? उन्होंने कहा: मैं हूँ, अल्लाह ने उन पर नाराजगी जताई, क्योंकि उन्होंने इल्म को अल्लाह के हवाले न किया, फिर अल्लाह ने उन पर वह्य भेजी कि मेरे बन्दों में एक बन्दा जहां दो दरिया मिलते हैं, ऐसा है जो तुझ से ज्यादा इल्म रखता है। मूसा

١٠٢ : عن أُبيِّ بنِ كَعْبٍ، عَنِ النبيِّ ﷺ: (قام مُوسى النَّبِيُّ خَطِيبًا في بني إسْرائيل فسُئِلَ: أيُّ النَّاسِ أعْلَمُ؟ فقال: أنا أعْلَمُ، فَعَتَبَ ٱللهُ عَلَيْهِ، إذْ لم يَرُدَّ ٱلعِلْمَ إلى اللهِ، فأوحى اللهُ إليه: إنَّ عَبْدًا مِنْ عِبَادِي بِمَجْمَعِ ٱلبَحْرَيْنِ، هُوَ أعْلَمُ مِنْكَ. قالَ: يا رَبِّ، وَكَيْفَ بِهِ؟ فَقِيلَ لَهُ: احْمِلْ حُوتًا في مِكْتَلٍ، فإذَا فَقَدْتَهُ فَهُوَ ثَمَّ، فانْطَلَقَ وَٱنْطَلَقَ بِفَتَاهُ يُوشَعَ ابنِ نُونٍ، وَحَمَلا حُوتًا في مِكْتَلٍ، حَتَّى كانا عِنْدَ ٱلصَّخْرَةِ وَضَعَا رُؤُوسَهُمَا وَنَامَا، فانْسَلَّ ٱلحُوتُ مِنَ ٱلمِكْتَلِ فاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي ٱلبَحْرِ سَرَبًا، وكانَ لِمُوسَى وَفَتَاهُ عَجَبًا، فانْطَلَقَا بَقِيَّةَ لَيْلَتِهِمَا وَيَوْمَهُمَا، فَلَمَّا أصْبَحَ قالَ مُوسَى لِفَتَاهُ: آتِنَا غَدَاءَنَا، لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا

नَصَبًا. وَلَمْ يَجِدْ مُوسَى مَسًّا مِنَ ٱلنَّصَبِ حَتَّى جَاوَزَ ٱلْمَكَانَ ٱلَّذِي أُمِرَ بِهِ، فَقَالَ لَهُ فَتَاهُ: أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى ٱلصَّخْرَةِ؟ فَإِنِّي نَسِيتُ ٱلْحُوتَ، قَالَ مُوسَى: ذَٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا، فَلَمَّا ٱنْتَهَيَا إِلَى ٱلصَّخْرَةِ، إِذَا رَجُلٌ مُسَجًّى بِثَوْبٍ، أَوْ قَالَ تَسَجَّى بِثَوْبِهِ، فَسَلَّمَ مُوسَى، فَقَالَ ٱلْخَضِرُ: وَأَنَّى بِأَرْضِكَ ٱلسَّلاَمُ؟ فَقَالَ: أَنَا مُوسَى، فَقَالَ: مُوسَى بَنِي إِسْرَائِيلَ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَى أَنْ تُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا؟ قَالَ: إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِي صَبْرًا، يَا مُوسَى، إِنِّي عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ ٱللهِ عَلَّمَنِيهِ لاَ تَعْلَمُهُ أَنْتَ، وَأَنْتَ عَلَى عِلْمٍ عَلَّمَكَهُ لاَ أَعْلَمُهُ. قَالَ: سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ ٱللهُ صَابِرًا، وَلاَ أَعْصِي لَكَ أَمْرًا. فَانْطَلَقَا يَمْشِيَانِ عَلَى سَاحِلِ ٱلْبَحْرِ، لَيْسَ لَهُمَا سَفِينَةٌ، فَمَرَّتْ بِهِمَا سَفِينَةٌ، فَكَلَّمُوهُمْ أَنْ يَحْمِلُوهُمَا، فَعُرِفَ ٱلْخَضِرُ، فَحَمَلُوهُمَا بِغَيْرِ نَوْلٍ، فَجَاءَ عُصْفُورٌ، فَوَقَعَ عَلَى حَرْفِ ٱلسَّفِينَةِ، فَنَقَرَ نَقْرَةً أَوْ نَقْرَتَيْنِ فِي ٱلْبَحْرِ، فَقَالَ ٱلْخَضِرُ: يَا مُوسَى مَا نَقَصَ عِلْمِي وَعِلْمُكَ مِنْ عِلْمِ ٱللهِ

अलैहि. ने कहा: ऐ अल्लाह! मेरी उनसे कैसे मुलाकात होगी? हुक्म हुआ कि एक मछली को थैले में रखो। जहां वह गुम हो जाये, वही उसका ठिकाना है। फिर मूसा अलैहि. रवाना हुये और उनका नौकर यूशा बिन नून भी साथ था। उन दोनों ने एक मछली को थैले में रख लिया। जब एक पत्थर के पास पहुंचे तो दोनों अपने सर उस पर रखकर सो गये, इस दौरान मछली थैले से निकल कर दरिया में चली गई, जिससे मूसा अलैहि. और उनके नौकर को अचम्भा हुआ। फिर दोनों बाकी रात और एक दिन चलते रहे, सुबह को मूसा अलैहि. ने अपने नौकर से कहा कि नाश्ता लाओ। हम तो इस सफर से थक गये हैं। मूसा अलैहि. जब तक उस जगह से आगे नहीं निकल गये, जिसका उन्हें हुक्म दिया गया था, उस वक्त तक उन्होंने कुछ थकावट महसूस न की। उस वक्त उनके नौकर ने कहा: क्या आपने देखा कि जब हम पत्थर के पास बैठे थे

إلاّ كَنَقْرَةِ هٰذَا ٱلْعُصْفُورِ فِي ٱلْبَحْرِ، فَعَمَدَ ٱلْخَضِرُ إِلَى لَوْحٍ مِنْ أَلْوَاحِ ٱلسَّفِينَةِ فَنَزَعَهُ، فَقَالَ مُوسَى: قَوْمٌ حَمَلُونَا بِغَيْرِ نَوْلٍ، عَمَدْتَ إِلَى سَفِينَتِهِمْ فَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا؟ قَالَ: أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا؟ قَالَ: لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا - فَكَانَتِ ٱلأُولَى مِنْ مُوسَى نِسْيَانًا - فَانْطَلَقَا. فَإِذَا غُلاَمٌ يَلْعَبُ مَعَ ٱلْغِلْمَانِ، فَأَخَذَ ٱلْخَضِرُ بِرَأْسِهِ مِنْ أَعْلاهُ فَاقْتَلَعَ رَأْسَهُ بِيَدِهِ، فَقَالَ مُوسَى: أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ؟ قَالَ: أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا؟ - قَالَ ٱبْنُ عُيَيْنَةَ: وَهٰذَا أَوْكَدُ - فَانْطَلَقَا، حَتَّى إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ ٱسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا، فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا، فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ، قَالَ ٱلْخَضِرُ بِيَدِهِ فَأَقَامَهُ، فَقَالَ مُوسَى: لَوْ شِئْتَ لاَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا، قَالَ: هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ). قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (يَرْحَمُ ٱللهُ مُوسَى، لَوَدِدْنَا لَوْ صَبَرَ حَتَّى يُقَصَّ عَلَيْنَا مِنْ أَمْرِهِمَا). [رواه البخاري: ١٢٢]

तो मछली (निकल भागी थी और मैं उसका जिक्र करना) भूल गया। मूसा अलैहि. ने कहा, हम तो इसी की तलाश में थे। आखिर वह दोनों खोज लगाते हुये अपने पैरों के निशानों पर वापिस लौटे। जब उस पत्थर के पास पहुंचे तो देखा कि एक आदमी कपड़ा लपेटे हुये या अपने कपड़ों में लिपटा हुआ है। मूसा अलैहि. ने उसे सलाम किया। खिज़्र अलैहिस्सलाम ने कहा कि तेरे मुल्क में सलाम कहां से आया? मूसा अलैहि. ने जवाब दिया कि (मैं यहां का रहने वाला नहीं हूँ बल्कि) मैं मूसा हूँ। खिज़्र अलैहि. ने कहा, क्या बनी इस्राईल के मूसा हो? उन्होंने कहा! हाँ! फिर मूसा अलैहि. ने कहा, क्या मैं इस उम्मीद पर तुम्हारे साथ हो जाऊँ कि जो कुछ हिदायत की तुम्हें तालीम दी गई है, वह मुझे भी सिखा दोगे। खिज़्र अलैहि. ने कहा: तुम मेरे साथ रह कर सब्र नहीं कर सकोगे। मूसा बात दरअसल यह है कि अल्लाह तआला ने एक (किस्म का) इल्म मुझे दिया है जो तुम्हारे पास नहीं है और आपको एक किस्म का इल्म दिया जो मेरे पास नहीं है। मूसा अलैहि. ने कहा:

इन्शा अल्लाह तुम मुझे सब्र करने वाला पाओगे और मैं किसी काम में आपकी नाफरमानी नहीं करूंगा। फिर वह दोनों समन्दर के किनारे चले। उनके पास कोई कश्ती ना थी। इतने में एक कश्ती गुजरी, उन्होंने कश्ती वाले से कहा कि हमें सवार कर लो। खिज़्र अलैहि. पहचान लिये गये। इसलिए कश्ती वाले ने बगैर किराया लिये बिठा लिया, इतने में एक चिड़िया आयी और कश्ती के किनारे बैठ गई, उसने समन्दर में एक दो चोंच मारीं। खिज़्र अलैहि. कहने लगे : ऐ मूसा! मेरे और तुम्हारे इल्म ने अल्लाह के इल्म से सिर्फ चिड़िया की चोंच की मिकदार हिस्सा लिया है। फिर खिज़्र अलैहि. ने कश्ती के तख्तों में से एक तख्ता उखाड़ डाला। मूसा अलैहि. कहने लगे, इन लोगों ने तो हमें बगैर किराये के सवार किया और आपने यह काम किया कि इनकी कश्ती में छेद कर डाला। ताकि कश्ती वालों को डूबा दो? खिज़्र अलैहि. ने फरमाया: क्या मैंने न कहा था कि तुम मेरे साथ रहकर सब्र नहीं कर सकोगे। मूसा अलैहि. ने जवाब दिया: मेरी भूल चूक पर पकड़ करके मेरे कामों में मुझ पर तंगी ना करो। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मूसा अलैहि. का पहला एतराज भूल की वजह से था। फिर दोनों (कश्ती से उतरकर) चले। एक लड़का मिला जो दूसरे लड़कों के साथ खेल रहा था। खिज़्र अलैहि. ने उसका सर पकड़कर अलग कर दिया। मूसा अलैहि. ने कहा: आपने एक मासूम जान को नाहक कत्ल कर दिया। खिज़्र अलैहि. ने कहा: मैंने आपसे नहीं कहा था कि आपसे मेरे साथ सब्र नहीं हो सकेगा। (इब्ने उऐना कहते हैं कि पहले जवाब के मुकाबिल इसमें ज्यादा ताकीद थी।) फिर दोनों चलते चलते एक गांव के पास पहुंचे। वहां के रहने वालों से उन्होंने खाना मांगा। गांव वालों ने उनकी मेहमानी करने से साफ इनकार कर दिया। इसी

दौरान दोनों ने एक दीवार देखी जो गिरने के करीब थी, खिज़्र अलैहि. ने उसे अपने हाथ से सहारा देकर सीधा कर दिया। मूसा अलैहि. ने कहा, अगर तुम चाहते तो इस पर मजदूरी ले लेते, खिज़्र अलैहि. बोले, बस यहां से हमारे तुम्हारे बीच जुदाई का वक्त आ पहुंचा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया, अल्लाह तआला मूसा अलैहि. पर रहम फरमाये। हम चाहते थे कि काश मूसा अलैहि. सब्र करते तो उनके मजीद हालात भी हमसे बयान किये जाते।

फायदे : हजरत खिज़्र अलैहि. हजरत मूसा अलैहि. से अफजल न थे, लेकिन आपका यह कहना कि मैं सब से ज्यादा इल्म रखता हूँ, अल्लाह तआला को पसन्द न आया। उन्हें चाहिए था कि इस बात को अल्लाह के हवाले कर देते। चूनांचे उनका मुकाबला ऐसे इन्सान से कराया गया जो उनसे दर्जे में कहीं कम था, ताकि फिर कभी इस किस्म का दावा ना करें।

बाब 35 : जो आलिम बैठा हो, उससे खड़े खड़े सवाल करना।

٣٥ - باب: مَنْ سأل وَهُوَ قائِمٌ عالِمًا جالِسًا

103 : अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में एक आदमी आया और पूछने लगा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह की राह में लड़ना किसे कहते हैं? क्योंकि हममें से कोई गुस्सा की वजह से लड़ता है और कोई इज्जत की खातिर जंग करता हैं आपने फरमायाः जो

١٠٣ : عنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: جاءَ رَجُلٌ إِلى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَقَال: يا رَسُولَ ٱللهِ، مَا الْقِتَالُ فِي سَبِيلِ ٱللهِ؟ فَإِنَّ أَحَدَنَا يُقَاتِلُ غَضَبًا، وَيُقَاتِلُ حَمِيَّةً، فَقَالَ: (مَنْ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلِمَةُ ٱللهِ هِيَ ٱلْعُلْيَا، فَهُوَ فِي سَبِيلِ ٱللهِ عزَّ وَجَلَّ). [رواه البخاري: ١٢٣]

आदमी इसलिए लड़े कि अल्लाह का बोल-बाला हो तो ऐसी लड़ाई अल्लाह की राह में है।

फायदे : मतलब यह है कि अगर शागिर्द खड़ा हो और उस्ताद बैठे बैठे उसको जवाब दे दे तो इसमें कोई बुराई नहीं, बशर्ते कि खुद पसन्दी और घमण्ड की बिना पर ऐसा न करें। इसी तरह खड़े खड़े सवाल करना भी ठीक है। और यहां सवाल खड़े खड़े किया गया था।

बाब 36 : अल्लाह के फरमान की तफसीर (खुलासा) : "तुम्हें थोड़ा सा ही इल्म दिया गया है।"

٣٦ - باب: قَوْلُ الله - تعالى -: ﴿وَمَا أُوتِيتُم مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا﴾

104 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीना के खण्डरों में चल रहा था और आप खुजूर की छड़ी के सहारे चल रहे थे। रास्ते में चन्द यहूदियों पर गुजर हुआ। उन्होंने आपस में कहा कि उनसे रूह के बारे में सवाल करो। उनमें से एक ने कहा कि हम ऐसा सवाल न करें कि जिसके जवाब में वह ऐसी बात कहें जो तुम्हे ना-गंवार गुजरे। बाज ने कहाः हम तो जरूर पूछेंगे। आखिर उनमें से एक आदमी खड़ा हुआ और कहने लगा, ऐ अबू कासिम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम!

١٠٤ : عَنِ ٱبْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا أَنَا أَمْشِي مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ فِي خَرِبِ ٱلْمَدِينَةِ، وَهُوَ يَتَوَكَّأُ عَلَى عَسِيبٍ مَعَهُ، فَمَرَّ بِنَفَرٍ مِنَ ٱلْيَهُودِ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: سَلُوهُ عَنِ ٱلرُّوحِ؟ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَا تَسْأَلُوهُ، لَا يَجِيءُ فِيهِ بِشَيْءٍ تَكْرَهُونَه، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَنَسْأَلَنَّهُ، فَقَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَالَ: يَا أَبَا ٱلْقَاسِمِ، مَا ٱلرُّوحُ؟ فَسَكَتَ، فَقُلْتُ: إِنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ، فَقُمْتُ، فَلَمَّا ٱنْجَلَى عَنْهُ، فَقَالَ: ﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا﴾. [رواه البخاري: ١٢٥]

रूह क्या चीज है? आप खामोश रहे, मैंने दिल में कहा कि आप पर वह्य आ रही है और खुद खड़ा हो गया, जब वह्य की हालत जाती रही तो आपने यह आयत तिलावत की ''ऐ पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह लोग आपसे रूह के मुताल्लिक पूछते हैं, कह दो कि रूह मेरे मालिक का हुक्म है। (और इसकी हकीकत यह नहीं जान सकते, क्योंकि) तुम्हें बहुत कम इल्म दिया गया है।

फायदे : इमाम आमश की किरअत में यह आयत गायब के सेगे से पढ़ी गई है जो शाज है। मुतावातिर किराअत खिताब के सेगे से है।

٣٧ - باب: مَنْ خصَّ بِالعِلْمِ قوماً دُونَ قَوم كَراهِيَةَ أَنْ لاَ يَفْهَمُوا

बाब 37 : नाफहमी के डर की वजह से एक कौम को छोड़कर दूसरों को तालीम देना।

١٠٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ، وَمُعَاذٌ رَدِيفُهُ عَلَى ٱلرَّحْلِ، قَالَ: (يَا مُعَاذُ). قَالَ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ وَسَعْدَيْكَ، قَالَ: (يَا مُعَاذُ). قَالَ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ وَسَعْدَيْكَ، ثَلاثًا، قَالَ: (مَا مِنْ أَحَدٍ يَشْهَدُ أَنْ لا إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ ٱللهِ، صِدْقًا مِنْ قَلْبِهِ، إِلاَّ حَرَّمَهُ ٱللهُ عَلَى ٱلنَّارِ). قَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَفَلاَ أُخْبِرُ بِهِ ٱلنَّاسَ فَيَسْتَبْشِرُونَ؟ قَالَ: (إِذًا يَتَّكِلُوا). وَأَخْبَرَ بِهَا مُعَاذٌ عِنْدَ مَوْتِهِ تَأَثُّمًا. [رواه البخاري: ١٢٨]

105 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार मुआज रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सवारी पर पीछे बैठे थे। आपने फरमाया: ऐ मुआज रजि.! उन्होंने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! खुशनसीबी के साथ हाजिर हूँ। फिर आपने फरमाया, ऐ मुआज रजि.! उन्होंने फिर अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं हाजिर हूँ। तीन बार ऐसा हुआ, फिर आपने फरमाया, जो कोई सच्चे दिल से यह गवाही दे कि अल्लाह के अलावा हकीकत में

कोई इबादत के लायक नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके रसूल हैं। तो अल्लाह उस पर दोजख की आग हराम कर देता है। मुआज रजि. ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या मैं लोगों में इस बात को मशहूर न करूं ताकि वह खुश हो जायें। आपने फरमाया, ऐसा करेगा तो उनको इसी पर भरोसा हो जायेगा। फिर मुआज रजि. ने (अपनी वफात के करीब) यह हदीस गुनाह के डर से लोगों से बयान कर दी।

फायदे : कुछ वक्तों में मस्लेहत के मुताबिक काम करना करीन-ए-कयास होता है। जैसे नमाज जूते समेत पढ़ना सुन्नत है, लेकिन अगर किसी जगह लोग जाहिल हों और ऐसा काम करने से झगड़े और फसाद का डर हो तो ऐसी सुन्नत पर अमल करने को आईन्दा के लिए टाल देने में कोई हर्ज नहीं। लेकिन हिकमत के तौर पर उन्हें उसकी फजीलत बताते रहना एक दावत देने वाले का अहम फर्ज है।

बाब 38 : इल्म पूछने में शर्म करना।

106 : उम्मे सलमा रजि. से रिवायत है कि उम्मे सुलैम रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आयीं और मालूम किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह तआला हक बात बयान करने से नहीं शरमाता, क्या औरत को एहतिलाम (वीर्य पतन) हो तो उसे नहाना

٣٨ - باب: ٱلْحَيَاءُ فِي ٱلْعِلْمِ

١٠٦ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ ٱللهَ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ ٱلْحَقِّ، فَهَلْ عَلَى ٱلْمَرْأَةِ مِنْ غُسْلٍ إِذَا ٱحْتَلَمَتْ؟ قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (إِذَا رَأَتِ ٱلْمَاءَ). فَغَطَّتْ أُمُّ سَلَمَةَ، يَعْنِي وَجْهَهَا، وَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَتَحْتَلِمُ ٱلْمَرْأَةُ؟ قَالَ: (نَعَمْ تَرِبَتْ يَمِينُكِ، فَبِمَ يُشْبِهُهَا وَلَدُهَا). [رواه البخاري: ١٣٠]

चाहिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हाँ! अपने कपड़े पर पानी देखे। उम्मे सलमा रजि. ने (शर्म से) अपना मुंह छिपा लिया और अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या औरत को भी एहतिलाम होता है? आपने फरमाया, हाँ, तेरा हाथ खाक आलूद हो, फिर बच्चे की सूरत माँ से क्यों मिलती?

फायदे : अगर किसी को कोई मसला पेश आ जाये तो उसे जानने वालों से मालूम करना चाहिए, शर्म और हया से काम न लिया जाये। (औनुलबारी, 1/285)

बाब 39 : शर्म की बिना पर दूसरों के जरीये मसला पूछना।

٣٩ - باب: مَنِ ٱسْتَحْيَا فَأَمَرَ غَيْرَهُ بِالسُّؤَالِ

107 : अली रजि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि मेरी मजी बहुत निकला करती थी, मैंने मिकदाद रजि. से कहा कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसका हुक्म पूछें। चूनांचे उन्होंने मालूम किया तो आपने फरमाया कि मजी के लिए वजू करना चाहिए।

١٠٧ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ رَجُلًا مَذَّاءً، فَأَمَرْتُ ٱلْمِقْدَادَ أَنْ يَسْأَلَ ٱلنَّبِيَّ ﷺ فَسَأَلَهُ، فَقَالَ: (فِيهِ ٱلْوُضُوءُ). [رواه البخاري: ١٣٢]

फायदे : दूसरी रिवायत में है कि हजरत अली रजि. खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह सवाल मालूम न कर सके, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी आपके निकाह में थी, इसलिए शर्म रोकती थी और ऐसी शर्म में कोई बुराई नहीं। कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि हजरत अली रजि. की मौजूदगी में यह सवाल पूछा गया। (औनुलबारी, 1/285)

बाब 40: मस्जिद में इल्म की बातें करना और फतवा देना।

٤٠ - باب: ذِكْرُ العِلْمِ وَالفُتْيَا فِي المَسْجِدِ

108 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि एक आदमी मस्जिद में खड़ा हुआ और कहने लगा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप हमें एहराम बांधने का किस जगह से हुक्म देते हैं? आपने फरमायाः मदीना वाले जुल-हुलैफा से, शाम के लोग जोहफा से, और नज्द वाले कर्न मनाजिल से, एहराम बांधे इब्ने उमर रजि. ने कहाः लोग कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया कि यमन वाले य-लम-लम से एहराम बांधे लेकिन मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह बात याद नहीं है।

١٠٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَجُلًا قَامَ فِي ٱلْمَسْجِدِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، مِنْ أَيْنَ تَأْمُرُنَا أَنْ نُهِلَّ؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يُهِلُّ أَهْلُ ٱلْمَدِينَةِ مِنْ ذِي ٱلْحُلَيْفَةِ، وَيُهِلُّ أَهْلُ ٱلشَّامِ مِنَ ٱلْجُحْفَةِ، وَيُهِلُّ أَهْلُ نَجْدٍ مِنْ قَرْنٍ).
قَالَ ٱبْنُ عُمَرَ: وَيَزْعُمُونَ أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (وَيُهِلُّ أَهْلُ ٱلْيَمَنِ مِنْ يَلَمْلَمَ). وَكَانَ ٱبْنُ عُمَرَ يَقُولُ: وَلَمْ أَفْقَهْ هٰذِهِ مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ١٣٣]

फायदे : मालूम हुआ कि मस्जिद में इल्मे दीन पढ़ना, पढ़ाना, फतवे देना, मुकदमात का फैसला करना और दीनी बहस करना जाइज है। अगरचे आवाज ऊंची ही क्यों न हो जाये, क्योंकि यह सब दीनी काम हैं जो मस्जिद में अन्जाम दिये जा सकते हैं।

बाब 41 : सवाल से ज्यादा जवाब देने का बयान।

٤١ - باب: مَنْ أَجَابَ ٱلسَّائِلَ بِأَكْثَرَ مِمَّا سَأَلَهُ

109 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु

١٠٩ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النبي ﷺ مَا يَلْبَسُ

ٱلْمُحْرِمُ؟ فَقَالَ: (لاَ يَلْبَسِ ٱلْقَمِيصَ، وَلاَ ٱلْعِمَامَةَ، وَلاَ ٱلسَّرَاوِيلَ، وَلاَ ٱلْبُرْنُسَ، وَلاَ ثَوْبًا مَسَّهُ ٱلْوَرْسُ أَوِ ٱلزَّعْفَرَانُ، فَإِنْ لَمْ يَجِدِ ٱلنَّعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسِ ٱلْخُفَّيْنِ، وَلْيَقْطَعْهُمَا حَتَّى يَكُونَا تَحْتَ ٱلْكَعْبَيْنِ). [رواه البخاري: ١٣٤]

अलैहि वसल्लम से एक आदमी ने पूछा कि जो आदमी एहराम बांधे, वह क्या पहने? आपने फरमाया, न कुर्ता, न पगड़ी, न पाजामा, न टोपी और न वह कपड़ा जिसमें वर्स या जाफरान लगी हो और अगर जूती न हो तो मोजे पहन ले और उन्हें ऊपर से काट ले ताकि टखने खुल जायें।

किताबुल वुजू

वुजू का बयान

बाब 1 : वुजू के बगैर नमाज कुबूल नहीं होती.

١ - باب: لاَ تُقبَلُ صَلاَةٌ بِغَيْرِ طُهُورٍ

110 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जिस आदमी का वुजू टूट जाये, उसकी नमाज कुबूल नहीं होती, जब तक वुजू न करे" एक हजरमी (हजरे मौत के रहने वाले एक आदमी) ने पूछा: "ऐ अबू हुरैरा! हदस (बे-वुजू होना) क्या है?" उन्होंने कहा: "फुसा या जुरात यानी वह हवा जो पाखाना की जगह से निकलती हो।"

١١٠ : عَنْ أبي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ تُقبَلُ صَلاَةُ مَنْ أَحْدَثَ حَتَّى يَتَوَضَّأَ). قَالَ رَجُلٌ مِنْ حَضْرَمَوْتَ: مَا ٱلْحَدَثُ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: فُسَاءٌ أَوْ ضُرَاطٌ. [رواه البخاري: ١٣٥]

फायदे : इस हदीस से उस बहाने का भी रद्द होता है जिसकी वजह से यह बात की गई है कि आखरी तशहहुद में हवा निकलने का खतरा हो तो सलाम फेरने के बजाये अगर जानबूझ कर हवा खारिज कर दी जाये तो नमाज सही है, यह बात इसलिए गलत है कि नमाज सलाम से ही पूरी होती है और जोर से हवा निकालना किसी सूरत में भी सलाम का बदल नहीं हो सकता, इस किस्म की बहाने बाजी इस्लाम में नाजाइज और हराम है। (हियल : 6953)

बाब 2 : वुजू की फजीलत।

٢ - باب: فَضْلُ ٱلْوُضُوءِ

111 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है कि मेरी उम्मत के लोग कयामत के दिन बुलाये जायेंगे, जबकि वुजू के निशानों की वजह से उनके चेहरे और हाथ पांव चमकते होंगे। अब जो कोई तुममें से चमक बढ़ाना चाहे तो उसे बढ़ा लेना चाहिए।

١١١ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رسولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ أُمَّتِي يُدْعَوْنَ يَوْمَ ٱلْقِيامَةِ غُرًّا مُحَجَّلِينَ مِنْ آثارِ ٱلْوُضُوءِ، فَمَنِ ٱسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يُطِيلَ غُرَّتَهُ فَلْيَفْعَلْ). [رواه البخاري: ١٣٦]

बाब 3 : शक से वुजू न करे यहां तक कि(हवा निकलने का) यकीन न हो जाये।

٣ - باب: لاَ يَتَوَضَّأُ مِنَ ٱلشَّكِّ حَتَّى يَسْتَيْقِنَ

112 : अब्दुल्लाह बिन यजीद अनसारी से रिवायत है, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक आदमी का हाल बयान किया, जिसको यह ख्याल हो जाता था कि नमाज में वो कोई चीज (हवा का निकलना) महसूस कर रहा है, आपने फरमायाः वो नमाज से उस वक्त तक न फिरे जब तक हवा निकलने की आवाज या बू न पाये।

١١٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ يَزِيدَ ٱلأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ شَكَا إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ: ٱلرَّجُلَ ٱلَّذِي يُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ يَجِدُ ٱلشَّيْءَ فِي ٱلصَّلاةِ؟ فَقَالَ: (لاَ يَنْفَتِلْ - أَوْ: لاَ يَنْصَرِفْ - حَتَّى يَسْمَعَ صَوْتًا أَوْ يَجِدَ رِيحًا). [رواه البخاري: ١٣٧]

फायदे : मकसद यह है कि नमाजी को जब तक अपने बेवुजू होने का

यकीन न हो जाये, नमाज को न छोड़े, इस हदीस से यह बात भी मालूम हुई कि कोई यकीनी मामला सिर्फ शक की वजह से मशकूक नहीं होता और किसी चीज को बिला वजह शक और शुबा की नजर से देखना जाइज नहीं। (अलबुयू : **2056**)

बाब **4** : हल्का वुजू करना।

٤ - باب: التَّخفِيفُ فِي الْوُضُوءِ

113 : इब्ने अब्बास रजि. का बयान है कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोये, यहां तक कि खर्राटे भरने लगे, फिर आपने (जागकर) नमाज पढ़ी और वुजू न किया, कभी रावी ने यूँ कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम करवट लेते, यहां तक कि सांस की आवाज आने लगी, फिर जागकर आपने नमाज पढ़ी।

١١٣ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُما : أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَامَ حَتَّى نَفَخَ، ثُمَّ صَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ وَرُبَّما قال: اضطَجَعَ حتَّى نَفَخَ ثُمَّ قام فَصلَّى. [رواه البخاري: ١٣٨]

फायदे : दूसरी हदीस में हजरत इब्ने अब्बास रजि. का बयान है कि आपने नींद से उठकर पानी से भरे हुये एक पुराने मश्कीजे से हल्का सा वुजू किया, यानी वुजू के हिस्सों पर ज्यादा पानी नहीं डाला, या अपने वुजू के हिस्सों (अंगों) को सिर्फ एक एक बार धोया। (अलअजान **859**)

बाब **5** : पूरा वुजू करना।

٥ - [باب: إِسْبَاغُ الوُضُوءِ]

114 : उसामा बिन जैद रजि. से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अरफात से लौटे, जब घाटी में पहुंचे तो उतर कर पेशाब किया,

١١٤ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قال: دَفَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ عَرَفَةَ، حَتَّى إِذَا كَانَ بِالشِّعْبِ نَزَلَ بِالشِّعْبِ فَبَالَ، ثُمَّ تَوَضَّأَ وَلَمْ يُسْبِغِ الْوُضُوءَ، فَقُلْتُ: الصَّلاةَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَالَ: (الصَّلاةُ

أَمَامَكَ). فَرَكِبَ، فَلَمَّا جَاءَ ٱلْمُزْدَلِفَةَ نَزَلَ فَتَوَضَّأَ، فَأَسْبَغَ ٱلْوُضُوءَ، ثُمَّ أُقِيمَتِ ٱلصَّلَاةُ، فَصَلَّى ٱلْمَغْرِبَ، ثُمَّ أَنَاخَ كُلُّ إِنْسَانٍ بَعِيرَهُ فِي مَنْزِلِهِ، ثُمَّ أُقِيمَتِ ٱلْعِشَاءُ فَصَلَّى، وَلَمْ يُصَلِّ بَيْنَهُمَا. [رواه البخاري: ١٣٩]

फिर वुजू फरमाया, लेकिन वुजू पूरा न किया, मैंने मालूम किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! नमाज का वक्त करीब है। आपने फरमायाः नमाज आगे चलकर पढ़ेंगे, फिर आप सवार हुये जब मुजदलफा आये तो उतरे और पूरा वुजू किया, फिर नमाज की तकबीर कही गयी, और जब आपने मगरिब की नमाज अदा की, उसके बाद हर आदमी ने अपना ऊंट अपने मकाम पर बैठाया, फिर इशा की तकबीर हुई और आपने नमाज पढ़ी, और दोनों के बीच निफ्ल वगैरह नहीं पढ़ी।

फायदे : पूरे वुजू से मुराद अपने वुजू के हिस्सों को खूब मलकर धोना है और इस हदीस से मालूम हुआ कि वुजू करते वक्त किसी दूसरे से मदद लेना जाइज है। (अलवुजू, **181**) और हज के दौरान मुजदलफा में मगरिब और इशा को जमा करके पढ़ना चाहिए। (अलहज्ज, **1672**)

बाब 6 : चुल्लू भरकर दोनों हाथों से मुंह धोना।

٦ - باب: غَسْلُ ٱلْوَجْهِ بِالْيَدَيْنِ مِنْ غَرْفَةٍ وَاحِدَةٍ

115 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने वुजू किया और अपना मुंह धोया, इस तरह कि पानी का एक चुल्लू लेकर उससे कुल्ली की और नाक में पानी डाला, फिर एक और चुल्लू पानी लिया, हाथ मिलाकर उससे मुंह धोया, फिर

١١٥ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ تَوَضَّأَ: فَغَسَلَ وَجْهَهُ، أَخَذَ غَرْفَةً مِنْ مَاءٍ، فَمَضْمَضَ بِهَا وَٱسْتَنْشَقَ، ثُمَّ أَخَذَ غَرْفَةً مِنْ مَاءٍ، فَجَعَلَ بِهَا هٰكَذَا، أَضَافَهَا إِلَى يَدِهِ ٱلْأُخْرَى، فَغَسَلَ بِهَا وَجْهَهُ، ثُمَّ أَخَذَ غَرْفَةً مِنْ مَاءٍ، فَغَسَلَ بِهَا يَدَهُ ٱلْيُمْنَى، ثُمَّ أَخَذَ غَرْفَةً مِنْ مَاءٍ

فغسل بها يده اليسرى، ثم مسح برأسه، ثم أخذ غرفة من ماء، فرش على رجله اليمنى حتى غسلها، ثم أخذ غرفة أخرى، فغسل بها يعني رجله اليسرى، ثم قال هكذا رأيت رسول الله ﷺ يتوضأ. [رواه البخاري: ١٤٠]

एक चुल्लू पानी से अपना दायां हाथ धोया, फिर एक और चुल्लू पानी लिया और उससे अपना बायां हाथा धोया, फिर अपने सर का मसह किया उसके बाद एक चुल्लू पानी अपने दायें पांव पर डाला और उसे धो लिया, फिर दूसरा चुल्लू पानी लेकर अपना बांया पांव धोया, उसके बाद कहने लगे कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसी तरह वुज़ू करते हुये देखा है।

फायदे : मतलब यह है कि वुज़ू के लिए दोनों हाथों से चुल्लू भरना जरूरी नहीं, नीज उन रिवायतों के जईफ होने की तरफ इशारा है, जिनमें है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ही हाथ से अपने चहरे को धोते थे। इससे यह भी मालूम हुआ कि एक चुल्लू लेकर आधे से कुल्ली की जाये और आधे से नाक साफ करे।

٧ - باب: ما يقول عند الخلاء

बाब 7 : बैतुलखला (लैटरीन) जाने की दुआ।

١١٦ : عن أنس رضي الله عنه قال: كان النبي ﷺ إذا دخل الخلاء قال: (اللهم إني أعوذ بك من الخبث والخبائث). [رواه البخاري: ١٤٢]

116 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बैतुलखला जाते तो फरमाते, ऐ अल्लाह मैं नापाक चीजों और नापाकियों से तेरी पनाह चाहता हूँ।"

फायदे : इस दुआ का दूसरा तर्जुमा यह है कि "ऐ अल्लाह!" मैं खबीस जिन्नातों और जिन्नातनियों से तेरी पनाह चाहता हूँ।" यह दुआ लैटरीन में दाखिल होने और अपना कपड़ा उठाने से पहले पढ़नी चाहिए।

बाब 8 : बैतुलखला के पास पानी रखना।

117 : इब्ने अब्बास रजि.से रिवायत है कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाखाना के लिए लैटरिंन में गये तो मैंने आपके लिए वुजू का पानी रख दिया। आपने (बाहर निकलकर) पूछा कि यह पानी किसने रखा है? आपको बता दिया गया तो आपने फरमाया, "ऐ अल्लाह इसे दीन की समझ अता फरमा।"

٨ - باب: وَضْعُ ٱلمَاءِ عِندَ ٱلخَلاءِ

١١٧ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ ٱلْخَلاءَ، قَالَ: فَوَضَعْتُ لَهُ وَضُوءًا، فَقَالَ: (مَنْ وَضَعَ هٰذَا؟). فَأُخْبِرَ، فَقَالَ: (ٱللَّهُمَّ فَقِّهْهُ فِي ٱلدِّينِ). [رواه البخاري: ١٤٣]

फायदे : हजरत इब्ने अब्बास रजि. ने यह खिदमत बजा लाकर अकलमन्दी का सबूत दिया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए वैसी ही दुआ फरमायी, और अल्लाह तआला ने उसे कुबूल भी फरमाया और हजरत इब्ने अब्बास हिबरूल उम्मा (उम्मत के आलिम) के लकब से मशहूर हो गये। (अलमनाकिब, 3756)

बाब 9 : पेशाब और पाखाना (लेटरिन) करते वक्त किब्ले की तरफ न बैठना।

٩ - باب: لا تُستقبلُ القِبلَةُ ببَوْلٍ ولا غائطٍ

118 : अबू अय्यूब अन्सारी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब कोई पेशाब और पाखाना के लिए जाये तो किब्ला की तरफ मूंह न करे, न पीठ, बल्कि पूर्व या पश्चिम की तरफ मुंह किया जाये।

١١٨ : عَنْ أَبِي أَيُّوبَ ٱلأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا أَتَى أَحَدُكُمُ ٱلْغَائِطَ فَلاَ يَسْتَقْبِلِ ٱلْقِبْلَةَ وَلاَ يُوَلِّهَا ظَهْرَهُ، شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا). [رواه البخاري: ١٤٤]

फायदे : पाखाना करते वक्त पूर्व या पश्चिम की तरफ मुंह करने का खिताब मदीना वालों से है, क्योंकि उनका किब्ला दक्षिण की तरफ था, हिन्द और पाक में रहने वालों के लिए किब्ला पश्चिम की तरफ है, लिहाजा हमारे लिए दक्षिण और उत्तर की तरफ मुंह करने का हुक्म है। (अस्सलात, 394)

बाब 10 : ईटों पर बैठकर पाखाना करना।

١٠ - باب: مَنْ تَبَرَّزَ عَلَى لَبِنَتَيْنِ

119 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कुछ लोग कहते हैं कि जब तुम पाखाना के लिए बैठो तो न किब्ला की तरफ मुंह करो, न बैतुल मुकद्दस की तरफ, हालांकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाखाना के लिए दो कच्ची ईटो पर बैतुल मुकद्दस की तरफ मुंह करके बैठे थे।

١١٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: إِنَّ نَاسًا يَقُولُونَ: إِذَا قَعَدْتَ عَلَى حَاجَتِكَ فَلاَ تَسْتَقْبِلِ ٱلْقِبْلَةَ وَلاَ بَيْتَ ٱلمَقْدِسِ. لَقَدِ ٱرْتَقَيْتُ يَوْمًا عَلَى ظَهْرِ بَيْتٍ لَنَا، فَرَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَلَى لَبِنَتَيْنِ مُسْتَقْبِلًا بَيْتَ ٱلْمَقْدِسِ لِحَاجَتِهِ. [رواه البخاري: ١٤٥]

फायदे : एक रिवायत में है कि आप किब्ला की तरफ पीठ किये हुये बैठे थे। इमाम बुखारी का मानना है कि बैतुलखला में पाखाना के वक्त किब्ला की तरफ मुंह या पीठ करने की इजाजत है, यह पाबन्दी आबादी से बाहर करने वालों के लिए है। (अलवुज़ू, 144)

बाब 11 : औरतों का पाखाना के लिए बाहर जाना।

١١ - باب: خُرُوجُ ٱلنِّسَاءِ إِلَى ٱلْبَرَازِ

120 : आइशा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियाँ रात को पाखाना के लिए मनासे की तरफ जाती थीं, जो एक खुली जगह थी। उमर रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में आकर कहा करते थे कि आप अपनी बीवियों को पर्दे का हुक्म दे दें, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा न करते थे। एक रात इशा के वक्त सौदा बिन्ते जमआ रजि. (पाखाना के लिए) बाहर निकली वो लम्बे कद वाली औरत थीं। उमर रजि. ने उन्हें पुकारा : आगाह रहो सौदा। हमने तुम्हें पहचान लिया है।'' इससे उमर की मर्जी यह थी कि पर्दे का हुक्म उतरे, आखिर अल्लाह तआला ने पर्दे की आयत नाजिल फरमा दी।

١٢٠ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ أَزْوَاجَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ كُنَّ يَخْرُجْنَ بِاللَّيْلِ إِذَا تَبَرَّزْنَ إِلَى ٱلْمَنَاصِعِ، وَهُوَ صَعِيدٌ أَفْيَحُ، فَكَانَ عُمَرُ يَقُولُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: ٱحْجُبْ نِسَاءَكَ، فَلَمْ يَكُنْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَفْعَلُ، فَخَرَجَتْ سَوْدَةُ بِنْتُ زَمْعَةَ، زَوْجُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، لَيْلَةً مِنَ ٱللَّيَالِي عِشَاءً، وَكَانَتِ ٱمْرَأَةً طَوِيلَةً، فَنَادَاهَا عُمَرُ: أَلَا قَدْ عَرَفْنَاكِ يَا سَوْدَةُ، حِرْصًا عَلَى أَنْ يَنْزِلَ ٱلْحِجَابُ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ ٱلْحِجَابَ. [رواه البخاري: ١٤٦]

फायदे : मालूम हुआ कि जरूरी कामों के लिए औरत का पर्दे के साथ घर से बाहर निकलना जाइज है। (अननिकाह, 5237)

बाब 12 : पानी से इस्तिंजा करना

١٢ - باب: ٱلاستنجاء بالماء

121 : अनस रजि. से रिवायत, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब पाखाना के लिए निकलते तो मैं और एक दूसरा लड़का अपने साथ पानी का एक बर्तन लेकर जाते (आप उससे इस्तिंजा करते)।

١٢١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رسولُ اللهِ ﷺ إِذَا خَرَجَ لِحَاجَتِهِ، أَجِيءُ أَنَا وَغُلَامٌ، مَعَنَا إِدَاوَةٌ مِنْ مَاءٍ. [رواه البخاري: ١٥٠]

फायदे : सिर्फ ढेले का इस्तेमाल भी जाइज है, उससे सिर्फ हकीकी गंदगी दूर हो जाती है। अलबत्ता पानी के इस्तेमाल से गंदगी और उसके निशानात भी खत्म हो जाते हैं।

बाब 13 : इस्तिंजा के लिए पानी के साथ बरछी ले जाना।

١٣ - باب: حَمْلُ ٱلعَنَزَةِ مَعَ ٱلماءِ في ٱلاستنجاءِ

122 : अनस रजि. ही की एक दूसरी रिवायत है कि पानी के बर्तन के साथ बरछी भी होती और आप पानी से इस्तिंजा फरमाते थे।

١٢٢ : وفي رواية: مِنْ مَاءٍ وَعَنَزَةٍ، يَسْتَنْجِي بِالمَاءِ. [رواه البخاري: ١٥٢]

फायदे : बरछी इसलिए साथ ले जाते ताकि सख्त जगह को नरम करके पेशाब के छिन्टों से बचा जा सके और जरूरत के वक्त आड़ के तौर पर भी इस्तेमाल किया जा सके, और उसे बतौर सुत्रे के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था। (अस्सलात **500**)

बाब 14 : दायें हाथ से इस्तिंजा करना मना है।

١٤ - باب: ٱلنَّهيِ عن ٱلاستنجاءِ باليمين

123 : कतादा रजि. से रिवायत है,

١٢٣ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ ٱللهُ

عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (إِذَا شَرِبَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَتَنَفَّسْ فِي الإِنَاءِ، وَإِذَا أَتَى الْخَلاَءَ فَلاَ يَمَسَّ ذَكَرَهُ بِيَمِينِهِ، وَلاَ يَتَمَسَّحْ بِيَمِينِهِ). [رواه البخاري: ١٥٣]

उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तुम में से कोई चीज पीये तो बर्तन में सांस न ले और जब बैतुलखला आये तो दायें हाथ से अपनी शर्मगाह (पेशाब की जगह) को न छुये और न उससे इस्तिंजा करे।

١٥ - باب: الاسْتِنْجَاءُ بِالحِجَارَةِ

बाब 15 : ढेलों से इस्तिंजा करना।

١٢٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اتَّبَعْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَخَرَجَ لِحَاجَتِهِ، فَكَانَ لاَ يَلْتَفِتُ، فَدَنَوْتُ مِنْهُ، فَقَالَ: (ابْغِنِي أَحْجَارًا أَسْتَنْفِضْ بِهَا -أَوْ نَحْوَهُ- وَلاَ تَأْتِنِي بِعَظْمٍ، وَلاَ رَوْثٍ). فَأَتَيْتُهُ بِأَحْجَارٍ بِطَرَفِ ثِيَابِي، فَوَضَعْتُهَا إِلَى جَنْبِهِ، وَأَعْرَضْتُ عَنْهُ، فَلَمَّا قَضَى أَتْبَعَهُ بِهِنَّ. [رواه البخاري: ١٥٥]

124 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाखाना के लिए बाहर गये तो मैं भी आपके पीछे हो लिया, आपकी आदत मुबारक थी कि चलते वक्त दायें बायें न देखते थे। जब मैं आपके करीब गया तो आपने फरमाया कि मुझे पत्थर तलाश कर दो, मैं उनसे इस्तिंजा करूंगा (या उसी जैसा कोई और लफ्ज फरमाया) लेकिन हड्डी और गोबर न लाना। चूनांचे मैं अपने कपड़े के किनारे में कई पत्थर लेकर आया और उन्हें आपके पास रख दिया और खुद एक तरफ हट गया। फिर जब आप पाखाने से फारिग हुये तो पत्थरों से इस्तिंजा फरमाया।

फायदे : हड्डी जिन्नों की खुराक है और गोबर उनके जानवरों का चारा है। इसलिए इन से इस्तिंजा करना मना है। (अलमनाकिब 3860)

बाब 16 : गोबर से इस्तिंजा न करना।

١٦ - باب: لا يستنجي بروث

125 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार पाखाना के लिए तशरीफ ले गये और मुझे तीन पत्थर लाने का हुक्म दिया। मुझे दो पत्थर तो मिल गये, लेकिन तलाश करने पर भी तीसरा पत्थर न मिल सका। मैंने गोबर का एक सूखा टुकड़ा उठा लिया और वो आपके पास लाया, आपने दोनों पत्थर ले लिये। गोबर को फैंक दिया और फरमाया, यह गन्दा है।

١٢٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى ٱلنَّبِيُّ ﷺ ٱلْغَائِطَ، فَأَمَرَنِي أَنْ آتِيَهُ بِثَلاَثَةِ أَحْجَارٍ، فَوَجَدْتُ حَجَرَيْنِ، فَالْتَمَسْتُ ٱلثَّالِثَ فَلَمْ أَجِدْهُ، فَأَخَذْتُ رَوْثَةً فَأَتَيْتُهُ بِهَا، فَأَخَذَ ٱلْحَجَرَيْنِ وَأَلْقَى ٱلرَّوْثَةَ، وَقَالَ: (هٰذَا رِكْسٌ). [رواه البخاري: ١٥٦]

फायदे : गोबर का टुकड़ा दरअसल गधे की लीद थी, जिसे आपने नापाक करार दिया, फिर आपने तीसरा पत्थर मंगवाया।
(फतहुलबारी 1/257)

बाब 17 : वुजू में अंगों को एक एक बार धोना।

١٧ - باب: ٱلْوُضُوءِ مَرَّةً مَرَّةً

126 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है। उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुजू में अंगों को एक एक बार धोया।

١٢٦ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: تَوَضَّأَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ مَرَّةً مَرَّةً. [رواه البخاري: ١٥٧]

फायदे : मालूम हुआ कि अंगो को एक एक बार धोने से भी फर्ज अदा हो जाता है।

बाब 18 : वुजू में अंगों को दो दो बार धोना

١٨ - باب: ٱلْوُضُوءُ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ

127 : अब्दुल्लाह बिन जैद अन्सारी रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुजू के अंगों को दो दो बार धोया।

١٢٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ زَيْدٍ ٱلأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ تَوَضَّأَ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ. [رواه البخاري: ١٥٨]

फायदे : यह अब्दुल्लाह बिन जैद बिन आसिम अन्सारी माजनी हैं, और अजान का ख्वाब देखने वाले अब्दुल्लाह बिन जैद बिन अब्दे रब्बेही हैं जो दूसरे सहाबी हैं।

बाब **19** : वुजू में अंगों को तीन तीन बार धोना।

١٩ - باب: ٱلْوُضُوءُ ثَلاَثاً ثَلاَثاً

128 : उस्मान बिन अफ्फान रजि. से रिवायत है कि उन्होंने एक बार पानी का बर्तन मंगवाया और अपने हाथों पर तीन बार पानी डालकर धोया, फिर दायें हाथ को बर्तन में डालकर पानी लिया, कुल्ली की, नाक में पानी डाला और उसे साफ किया। फिर अपने मुंह और दोनों हाथों को कुहनियों समेत तीन बार धोया, उसके बाद सर का मसह किया, फिर अपने पांव टखनें समेत तीन बार धोये, फिर कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जो भी मेरे इस वुजू की तरह वुजू करे और फिर दो रकअत अदा करे और इनके अदा करने के वक्त कोई खयाल दिल में न लाये तो उसके तमाम पिछले गुनाह बख्श दिये जायेंगे।

١٢٨ : عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ: دَعَا بِإِنَاءٍ فَأَفْرَغَ عَلَى يَدَيْهِ ثَلاَثَ مِرَارٍ فَغَسَلَهُمَا، ثُمَّ أَدْخَلَ يَمِينَهُ فِي ٱلإِنَاءِ فَمَضْمَضَ وَٱسْتَنْشَقَ واسْتَنْثَرَ، ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلاَثَ مِرَارٍ، وَيَدَيْهِ إِلَى ٱلمِرْفَقَيْنِ ثَلاَثاً، ثُمَّ مَسَحَ بِرَأْسِهِ، ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَيْهِ ثَلاَثَ مِرَارٍ إِلَى ٱلكَعْبَيْنِ، ثُمَّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ تَوَضَّأَ نَحْوَ وُضُوئِي هٰذَا، ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ لاَ يُحَدِّثُ فِيهِمَا نَفْسَهُ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ). [رواه البخاري: ١٥٩]

फायदे : बुखारी की एक रिवायत में है कि इस बख्शिश पर घमण्ड भी नहीं करना चाहिए कि अब दीगर अमलों की क्या जरूरत है? (अर्रकायक, 6433)

---

129 : उस्मान बिन अफ्फान रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं तुम्हें एक हदीस सुनाऊँ, अगर कुरआन में एक आयत न होती तो यह हदीस तुम्हें न सुनाता। मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना है, जो आदमी अच्छी तरह वुजू करे और नमाज पढ़े तो जितने गुनाह इस नमाज से दूसरी नमाज तक होंगे वो बख्श दिये जायेंगे और वो आयत यह है: ''बेशक वो लोग जो हमारी नाजिल की हुई आयातों को छुपाते हैं. ..... आखिर तक (बकरा 161)

١٢٩ : وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّ عُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَلاَ أُحَدِّثُكُمْ حَدِيثًا لَوْلاَ آيَةٌ فِي كِتَابِ اللهِ مَا حَدَّثْتُكُمُوهُ، سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لاَ يَتَوَضَّأُ رَجُلٌ فَيُحْسِنُ وُضُوءَهُ، وَيُصَلِّي الصَّلاَةَ، إِلاَّ غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الصَّلاَةِ حَتَّى يُصَلِّيَهَا). قَالَ عُرْوَةُ: وَالآيَةُ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ﴾ [رواه البخاري: ١٦٠]

बाब 20 : वुजू में नाक साफ करना।

٢٠ - باب: الاسْتِنْثَارُ فِي الْوُضُوءِ

130 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो कोई वुजू करे तो अपनी नाक साफ करे और पत्थर से इस्तिंजा करे तो ताक पत्थरों से करे।

١٣٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (مَنْ تَوَضَّأَ فَلْيَسْتَنْثِرْ، وَمَنِ اسْتَجْمَرَ فَلْيُوتِرْ). [رواه البخاري: ١٦١]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि नाक में पानी डालकर इसे साफ करना

वुजू के लिए सिर्फ सुन्नत ही नहीं बल्कि फर्ज है, क्योंकि यह आपका हुक्म है।

बाब 21 : इस्तिंजा में ताक ढ़ेले लेना।

٢١ - باب: ٱلاسْتِجْمَارُ وِتْراً

131 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुममें से कोई वुजू करे तो अपनी नाक में पानी डाले और उसे साफ करे और जो आदमी पत्थर से इस्तिंजा करे तो ताक पत्थरों से करे और तुममें से जब कोई सोकर उठे तो वुजू के पानी में अपने हाथ डालने से पहले उन्हें धो ले क्योंकि तुम में से किसी को खबर नहीं कि रात को उसका हाथ कहां फिरता रहा है।

١٣١ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فَلْيَجْعَلْ فِي أَنْفِهِ مَاءً ثُمَّ لِيَنْثِرْ، وَمَنِ ٱسْتَجْمَرَ فَلْيُوتِرْ، وَإِذَا ٱسْتَيْقَظَ أَحَدُكُمْ مِنْ نَوْمِهِ فَلْيَغْسِلْ يَدَهُ قَبْلَ أَنْ يُدْخِلَهَا فِي وَضُوئِهِ، فَإِنَّ أَحَدَكُمْ لاَ يَدْرِي أَيْنَ بَاتَتْ يَدُهُ). [رواه البخاري: ١٦٢]

फायदे : नाक झाड़ने से शैतान भाग जाता है, जो आदमी की नाक पर रात गुजारता है। (बद-उल-खल्क 3295)

बाब 22 : जूतों पर मसह करने के बजाये दोनों पांवों को धोना।

٢٢ - [باب: غَسْلُ الرِّجْلَيْنِ فِي النَّعْلَيْنِ ولا يُمْسَحُ عَلَى النَّعْلَيْنِ]

132 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि एक बार उन पर किसी ने ऐतराज करते हुये कहा कि मैं देखता हूँ आप हजरे अवसद (काला पत्थर) और रूक्ने यमानी के अलावा बैतुल्लाह के किसी कोने को हाथ नहीं लगाते और आप

١٣٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا - وَقَدْ قِيلَ لَه - : رَأَيْتُكَ لاَ تَمَسُّ مِنَ ٱلأَرْكَانِ إِلَّا ٱلْيَمَانِيَيْنِ، وَرَأَيْتُكَ تَلْبَسُ ٱلنِّعَالَ ٱلسِّبْتِيَّةَ، وَرَأَيْتُكَ تَصْبُغُ بِالصُّفْرَةِ، وَرَأَيْتُكَ إِذَا كُنْتَ بِمَكَّةَ أَهَلَّ ٱلنَّاسُ إِذَا رَأَوُا ٱلْهِلاَلَ وَلَمْ تُهِلَّ أَنْتَ حَتَّى

كَانَ يَوْمُ ٱلتَّرْوِيَةِ. قَالَ أَمَّا ٱلأَرْكَانُ: فَإِنِّي لَمْ أَرَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَمَسُّ إِلَّا ٱلْيَمَانِيَيْنِ، وَأَمَّا ٱلنِّعَالُ ٱلسِّبْتِيَّةُ: فَإِنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَلْبَسُ ٱلنَّعْلَ ٱلَّتِي لَيْسَ فِيهَا شَعَرٌ وَيَتَوَضَّأُ فِيهَا، فَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أَلْبَسَهَا، وَأَمَّا ٱلصُّفْرَةُ: فَإِنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَصْبُغُ بِهَا، فَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أَصْبُغَ بِهَا، وَأَمَّا ٱلإِهْلَالُ: فَإِنِّي لَمْ أَرَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يُهِلُّ حَتَّى تَنْبَعِثَ بِهِ رَاحِلَتُهُ. [رواه البخاري: ١٦٦]

सिब्ती जूते पहनते हो और पीला खिजाब इस्तेमाल करते हो, नीज मक्का में दूसरे लोग तो जुलहिज्जा का चांद देखते ही एहराम बांध लेते हैं। मगर आप आठवीं तारीख तक एहराम नहीं बांधते। इब्ने उमर रजि. ने जवाब दिया कि बैतुल्लाह के कोनों को छुने की बात तो यह है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दोनों यमानी (हजरे असवद, रूक्ने यमानी) के अलावा किसी दूसरे रूक्न को हाथ लगाते नहीं देखा और सब्ती जूतियों के बारे में यह है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वो जूतियाँ पहने देखा, जिन पर बाल न थे और आप उनमें वुजू फरमाते थे। लिहाजा मैं उन जूतों को पहनना पसन्द करता हूँ, रहा जर्द रंग का मामला तो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह खिजाब लगाते हुये देखा है। इसलिए मैं भी इस रंग को पसन्द करता हूँ और एहराम बांधने की बात यह है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस वक्त तक एहराम बांधते नहीं देखा, जब तक आपकी सवारी आपको लेकर न उठती, यानी आठवीं तारीख को।

फायदे : जूतों पर मसह करने की रिवायतें जईफ हैं। इसलिए पांव धोने चाहिए। दलील की बुनियाद यह है कि वुजू में असल अंगों का धोना है। नीज अगर मसह किया हो तो "य-त-वज्जओ फीहा" के बजाये "य-त-वज्जओ अलैहा" होना चाहिए था।

(फतहुलबारी, सफा 269, जिल्द 1)

बाब 23 : वुजू और गुस्ल में दायें तरफ से शुरू करना।

٢٣ - باب: التَّيَمُّنُ فِي الْوُضُوءِ وَالْغُسْلِ

133 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जूता पहनना, कंघी करना और सफाई करना अलगर्ज हर अच्छे काम की शुरूआत दायें जानिब से करना अच्छा मालूम होता था।

١٣٣ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْجِبُهُ التَّيَمُّنُ فِي تَنَعُّلِهِ وَتَرَجُّلِهِ، وَطُهُورِهِ، وَفِي شَأْنِهِ كُلِّهِ. [رواه البخاري: ١٦٨]

फायदे : पाखाना में दाखिल होना, मस्जिद से निकलना, नाक साफ करना और इस्तिंजा करना, इस हुक्म से अलग हैं।

बाब 24 : जब नमाज का वक्त आ जाये तो पानी तलाश करना।

٢٤ - باب: الْتِمَاسُ الْوَضُوءِ إِذَا حَانَتِ الصَّلَاةُ

134 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस हालत में देखा कि असर की नमाज का वक्त हो चुका था, लोगों ने वुजू के लिए पानी तलाश किया, मगर न मिला। आखिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक बर्तन में वुजू के लिए पानी लाया गया तो आपने अपना हाथ मुबारक उस बर्तन में रख दिया और लोगों को हुक्म दिया कि इससे वुजू करें। अनस रजि. कहते हैं कि मैंने देखा कि पानी आपकी उंगलियों के नीचे से फूट

١٣٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَحَانَتْ صَلَاةُ الْعَصْرِ، فَالْتَمَسَ النَّاسُ الْوَضُوءَ فَلَمْ يَجِدُوهُ، فَأُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِوَضُوءٍ، فَوَضَعَ فِي ذَلِكَ الْإِنَاءِ يَدَهُ، وَأَمَرَ النَّاسَ أَنْ يَتَوَضَّؤُوا مِنْهُ، قَالَ: فَرَأَيْتُ الْمَاءَ يَنْبُعُ مِنْ تَحْتِ أَصَابِعِهِ، حَتَّى تَوَضَّؤُوا مِنْ عِنْدِ آخِرِهِمْ. [رواه البخاري: ١٦٩]

रहा था, यहां तक कि सब लोगो ने वुजू कर लिया।

फायदे : वुजू करने वालों की तादाद तीन सौ के लगभग थी, इसमें आपका एक बहुत बड़ा करिश्मा (मौअजज़ा) था।
(अलमनाकिब, 3572)

बाब 25 : जिस पानी से आदमी के बाल धोयें जायें (उसका पाक होना)

٢٥ - باب: الْمَاءُ الَّذِي يُغْسَلُ بِهِ شَعَرُ الإِنْسَانِ

135 : अनस रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब (हज में) अपना सर मुण्डवाया तो सबसे पहले अबू तल्हा रजि. ने आपके बाल लिये थे।

١٣٥ : وَعَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمَّا حَلَقَ رَأْسَهُ، كَانَ أَبُو طَلْحَةَ أَوَّلَ مَنْ أَخَذَ مِنْ شَعَرِهِ. [رواه البخاري: ١٧١]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि आदमी के बाल पाक हैं और उन्हें धोने के लिए इस्तेमाल होने वाला पानी भी पाक रहता है।

बाब 26 : जब कुत्ता बर्तन में (मुंह डालकर) पी ले (तो उसे सात बार धोना)

٢٦ - باب: إِذَا شَرِبَ الكَلْبُ فِي إِنَاءِ أَحَدِكُمْ

136 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब कुत्ता तुम में से किसी के बर्तन में से पी ले तो चाहिए कि उस बर्तन को सात बार धोयें।

١٣٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا شَرِبَ الْكَلْبُ فِي إِنَاءِ أَحَدِكُمْ فَلْيَغْسِلْهُ سَبْعًا). [رواه البخاري: ١٧٢]

फायदे : नई खोज ने भी इस बात की तसदीक की है कि कुत्ते के थूक

में ऐसे जहरीले जरासीम (किटाणु) होते हैं, जिन्हें सिर्फ मिट्टी ही खत्म करती है। इसलिए आपने पानी के साथ मिट्टी से साफ करने का भी हुक्म दिया है।

---

137 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक जमाने में कुत्ते मस्जिद में आते जाते थे और सहाबा किराम वहां किसी जगह पर पानी नहीं छिड़कते थे।

١٣٧ : عَنْ عبد اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَتِ ٱلْكِلَابُ تَبُولُ، وَتُقْبِلُ وَتُدْبِرُ فِي ٱلْمَسْجِدِ، فِي زَمَانِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَلَمْ يَكُونُوا يَرُشُّونَ شَيْئًا مِنْ ذٰلِكَ [رواه البخاري: ١٧٤]

फायदे : यह इस्लाम की शुरूआती दौर का किस्सा है। उसके बाद मस्जिद की पाकी और इज्जत को बरकरार रखने के लिए दरवाजे लगा दिये गये। (फतहुलबारी, सफा 279, जिल्द 1)

बाब 27 : जो हदस मखरजैन (आगे या पीछे के रास्ते) से निकले उसका वुजू टूट जाना।

٢٧ - باب: مَنْ لَمْ يَرَ ٱلْوُضُوءَ إِلَّا مِنَ ٱلْمَخْرَجَيْنِ

138 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बन्दा बराबर नमाज में है, जब तक कि मस्जिद में नमाज का इन्तेजार करता रहे, यहां तक कि बेवुजू न हो जाये।

١٣٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (لَا يَزَالُ ٱلْعَبْدُ فِي صَلَاةٍ، مَا كَانَ فِي ٱلْمَسْجِدِ يَنْتَظِرُ ٱلصَّلَاةَ، مَا لَمْ يُحْدِثْ) [رواه البخاري: ١٧٦]

फायदे : इस हदीस के आखिर में है कि किसी अज्मी ने हजरत अबू हुरैरा रजि. से हदस होने के बारे में सवाल किया तो आपने

फरमाया, हल्के या जोर से हवा का खारिज होना हदस है, अगरचे इसके अलावा दीगर चीजों से भी वुजू टूट जाता है। लेकिन नमाजी को मस्जिद में बैठे आमतौर पर इस किस्म के हदस से वास्ता पड़ता है। हदीस में यह भी है कि मस्जिद में नमाज का इन्तेजार करने वाले के लिए फरिश्ते रहमत व बख्शिश की दुआ करते रहते हैं। (बद उल खल्क 3229)

---

١٣٩ : عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ سَأَلْتُ عُثْمانَ بْنَ عَفَّانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قُلْتُ: أَرَأَيْتَ إِذَا جَامَعَ فَلَمْ يُمْنِ؟ قَالَ عُثْمَانُ: يَتَوَضَّأُ كَمَا يَتَوَضَّأُ لِلصَّلاَةِ، وَيَغْسِلُ ذَكَرَهُ. قَالَ عُثْمَانُ: سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. فَسَأَلْتُ عَنْ ذٰلِكَ عَلِيًّا، وَٱلزُّبَيْرَ، وَطَلْحَةَ، وأُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ، فَأَمَرُونِي بِذٰلِكَ.
[رواه البخاري: ١٧٩]

139 : जैद बिन खालिद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने उसमान रजि. से पूछा, अगर कोई आदमी अपनी औरत से मिले लेकिन इन्जाल न हो (मनी ना निकले) तो उस पर गुस्ल है या नहीं?) उन्होंने जवाब दिया कि वह नमाज के वुजू की तरह वुजू करे और अपनी शर्मगाह को धो डाले, फिर उसमान रजि. ने फरमाया कि मैंने यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है। (जैद कहते हैं) चूनांचे मैंने यह सवाल अली, तलहा, जुबैर और उबय्यी बिन क-अ-ब रजि. से पूछा, उन्होंने भी मुझे यही जवाब दिया।

फायदे : इन्जाल न होने की सूरत में गुस्ल न करने का हुक्म खत्म हो चुका है, क्योंकि आखरी हुक्म यह है कि खाली औरत के पास जाने से ही गुस्ल वाजिब हो जाता है, चाहे मनी निकले या न निकले। चारों इमामों और ज्यादातर आलिमों का यही खयाल है, अलबत्ता इमाम बुखारी का रूजहान यह है कि ऐसी हालत में अहतयातन गुस्ल कर लिया जाये।

140 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अन्सारी आदमी को बुला भेजा, वो इस हालत में हाजिर हुआ कि उसके सर से पानी टपक रहा था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया, शायद हमने तुझे जल्दी में डाल दिया है। उसने कहा, "जी हाँ"। तब आपने फरमाया कि जब तू जल्दी में पड़ जाये या तेरी मनी रूक जाये (इन्जाल न हो) तो वुजू कर लिया कर (गुस्ल जरूरी नहीं)।

١٤٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ أَرْسَلَ إِلَى رَجُلٍ مِنَ ٱلأَنْصَارِ، فَجَاءَ وَرَأْسُهُ يَقْطُرُ، فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (لَعَلَّنَا أَعْجَلْنَاكَ). فَقَالَ: نَعَمْ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا أُعْجِلْتَ أَوْ قُحِطْتَ فَعَلَيْكَ ٱلْوُضُوءُ). [رواه البخاري: ١٨٠]

फायदे : ऐसी हालत में गुस्ल जरूरी न होने का हुक्म अब खत्म हो चुका है, जैसा कि हजरत आइशा रजि. और हजरत अबू हुरैरा रजि. से मरवी हदीसों में इसका खुलासा मौजूद है।

बाब 28 : दूसरे को वुजू कराना।

٢٨ - باب: ٱلرَّجُلُ يُوَضِّىءُ صَاحِبَهُ

141 : मुगीरा बिन शोबा रजि. से रिवायत है कि वह एक सफर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, आप पाखाना के लिए तशरीफ ले गये (जब वापस आये तो) मुगीरा रजि. आप (के अंगों) पर पानी डालने लगे और आप वुजू कर रहे थे। आपने अपना मुंह और दोनों हाथ धोये, सर और मोजों पर मसह फरमाया।

١٤١ : عَنِ ٱلْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي سَفَرٍ وَأَنَّهُ ذَهَبَ لِحَاجَةٍ لَهُ، وَأَنَّ مُغِيرَةَ جَعَلَ يَصُبُّ ٱلْمَاءَ عَلَيْهِ وَهُوَ يَتَوَضَّأُ، فَغَسَلَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ، وَمَسَحَ بِرَأْسِهِ، وَمَسَحَ عَلَى ٱلْخُفَّيْنِ. [رواه البخاري: ١٨٢]

बाब 29 : बगैर वुजू कुरआन पढ़ना।

142 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि वह एक रात अपनी खाला और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी मैमूना रजि. के घर में थे। उन्होंने कहा कि मैं तो बिस्तर की चौड़ाई में लैटा जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनकी बीवी उसकी लम्बाई में लैटे थे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आराम फरमाया, जब आधी रात हुई या उससे कुछ कम और ज्यादा तो आप उठ गये और बैठकर अपनी आंखें हाथ से मलने लगे फिर सूरा आले इमरान की आखरी दस आयतें पढ़ी, उसके बाद आप एक लटकी हुई एक पुरानी मश्कीजे की तरफ खड़े हुये, उसमें से अच्छी तरह वुजू किया, फिर खड़े होकर नमाज पढ़ने लगे। इब्ने अब्बास रजि. ने फरमाया, फिर मैं भी उठा और जैसे आपने किया था, मैंने भी किया, फिर आपके पहलू में खड़ा

٢٩ - باب: قِراءَةُ ٱلقُرآنِ بَعدَ ٱلحَدَثِ

١٤٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ بَاتَ لَيْلَةً عِنْدَ مَيْمُونَةَ زَوْجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، وَهِيَ خَالَتُهُ، فَاضْطَجَعْتُ فِي عَرْضِ ٱلوِسَادَةِ، وَٱضْطَجَعَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَأَهْلُهُ فِي طُولِهَا، فَنَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، حَتَّى إِذَا ٱنْتَصَفَ ٱللَّيْلُ، أَوْ قَبْلَهُ بِقَلِيلٍ أَوْ بَعْدَهُ بِقَلِيلٍ، ٱسْتَيْقَظَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، فَجَلَسَ يَمْسَحُ ٱلنَّوْمَ عَنْ وَجْهِهِ بِيَدِهِ، ثُمَّ قَرَأَ ٱلعَشْرَ ٱلآيَاتِ ٱلخَوَاتِمَ مِنْ سُورَةِ آلِ عِمْرَانَ، ثُمَّ قَامَ إِلَى شَنٍّ مُعَلَّقَةٍ، فَتَوَضَّأَ مِنْهَا فَأَحْسَنَ وُضُوءَهُ، ثُمَّ قَامَ يُصَلِّي. قَالَ: فَقُمْتُ فَصَنَعْتُ مِثْلَ مَا صَنَعَ، ثُمَّ ذَهَبْتُ فَقُمْتُ إِلَى جَنْبِهِ، فَوَضَعَ يَدَهُ ٱليُمْنَى عَلَى رَأْسِي، وَأَخَذَ بِأُذُنِي ٱليُمْنَى يَفْتِلُهَا، فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ أَوْتَرَ، ثُمَّ ٱضْطَجَعَ حَتَّى أَتَاهُ ٱلمُؤَذِّنُ، فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ، ثُمَّ خَرَجَ فَصَلَّى ٱلصُّبْحَ.

وَقَد تَقَدَّم هذا الحديث وفي كُلٍّ منهما مَا لَيسَ في الآخَرِ. [رواه البخاري: ١٨٣]

हुआ। आपने अपना दायां हाथ मेरे सर पर रखा और मेरा दायां कान पकड़कर उसे मरोड़ने लगे। उसके बाद आपने (तहज्जुद की) दो रकअतें पढ़ीं, फिर दो रकआतें, फिर दो रकअतें, फिर दो रकअतें, फिर दो रकअतें, फिर दो रकअतें (कुल बारह रकअतें) अदा की। फिर वित्र पढ़ा, उसके बाद लेट गये, यहां तक कि अजान देने वाला आपके पास आया, उस वक्त आप खड़े हुये और हल्की फुल्की दो रकअतें (फज्र की सुन्नतें) पढ़ीं फिर बाहर तशरीफ ले गये, और फज्र की नमाज पढ़ायी।

यह हदीस (97) में गुजर चुकी है, लेकिन हर एक तरीके का फायदा दूसरे तरीके से कुछ अलग है।

फायदे : इमाम बुखारी की दलील हजरत इब्ने अब्बास रजि. के अमल से है, क्योंकि आपने कुरआनी आयतें बे-वुजू तिलावत की थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए नींद वुजू तोड़ने वाली नहीं, मुमकिन है कि आप का वुजू करना किसी और वजह से हुआ। ऐसी हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल से भी दलील ले सकते हैं।

---

٣٠ - باب: مَسْحُ الرَّأْسِ كُلِّهِ

बाब 30 : पूरे सिर का मसह करना।

١٤٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا قَالَ لَهُ: أَتَسْتَطِيعُ أَنْ تُرِيَنِي كَيْفَ كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَتَوَضَّأُ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، فَدَعَا بِمَاءٍ، فَأَفْرَغَ عَلَى يَدِهِ فَغَسَلَ مَرَّتَيْنِ، ثُمَّ مَضْمَضَ وَٱسْتَنْشَقَ ثَلَاثًا، ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلَاثًا، ثُمَّ غَسَلَ يَدَيْهِ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ إِلَى ٱلْمِرْفَقَيْنِ، ثُمَّ مَسَحَ رَأْسَهُ بِيَدَيْهِ، فَأَقْبَلَ بِهِمَا وَأَدْبَرَ، بَدَأَ

143 : अब्दुल्लाह बिन जैद रजि. से रिवायत है कि उनसे एक आदमी ने पूछा, क्या मुझे दिखा सकते हो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कैसे वुजू करते थे? उन्होंने कहा, हाँ, फिर उन्होंने पानी मंगवाया और अपने हाथों पर पानी डाला, उन्हें दो बार धोया, फिर

بِمُقَدَّمِ رَأْسِهِ حَتَّى ذَهَبَ بِهِمَا إِلَى قَفَاهُ، ثُمَّ رَدَّهُمَا إِلَى الْمَكَانِ الَّذِي بَدأ مِنْهُ، ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَيهِ. [رواه البخاري: ١٨٥]

तीन बार कुल्ली की और नाक में पानी डाला, फिर अपने मुंह को तीन बार धोया, फिर दोनों हाथ कुहनियों तक दो दो बार धोये उसके बाद दोनों हाथों से सिर का मसह किया, यानी उनको आगे और पीछे ले गये (मसह) सिर के शुरू हिस्से से किया और दोनों हाथ गुद्दी तक ले गये, फिर दोनों को वहीं तक वापस लाये, जहां से शुरू किया था। उसके बाद अपने दोनों पांव धोये।

फायदे : मालूम हुआ कि एक ही चुल्लू से कुल्ली और नाक में पानी डाला जा सकता है। (अलवुजू, 191)। नीज सिर का मसह सिर्फ एक बार करना है और पूरे सिर का मसह किया जायेगा। (अल वुजू 192)

---

٣١ - باب: اسْتِعْمَالُ فَضْلِ وَضُوءِ النَّاسِ

बाब 31 : लोगों के वुजू से बाकी बचे पानी को इस्तेमाल करना।

١٤٤ : عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِالهَاجِرَةِ، فَأُتِيَ بِوَضُوءٍ فَتَوَضَّأَ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَأْخُذُونَ مِنْ فَضْلِ وَضُوئِهِ فَيَتَمَسَّحُونَ بِهِ، فَصَلَّى النَّبِيُّ ﷺ الظُّهْرَ رَكْعَتَيْنِ، وَالْعَصْرَ رَكْعَتَيْنِ، وَبَيْنَ يَدَيْهِ عَنَزَةٌ. [رواه البخاري: ١٨٧]

144 : अबू जुहैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोपहर के वक्त हमारे यहां तशरीफ लाये। वुजू का पानी आपके पास लाया गया। आपने वुजू फरमाया, फिर लोग आपके वुजू का बाकी बचा पानी लेने लगे और बदन पर मलने लगे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुहर और असर की दो दो रकअतें नमाज पढ़ी और (नमाज के दौरान) आपके सामने एक बरछी गाड़ दी गयी।

फायदे : इस हदीस में इस्तेमाल किये हुए पानी का हुक्म बयान किया गया है। कुछ लोग इसे दोबारा इस्तेमाल के काबिल नहीं समझते, कत-ए-नजर कि वह पानी जो वुजू के बाद बर्तन में बचा रहे या वह पानी जो वुजू करने वाले के अंगों से टपके। मालूम हुआ कि इस किस्म के पानी को दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है। नीज यह मक्का मुकर्रमा का वाक्या है। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि वहां भी इमाम और अकेले नमाज पढ़ने वाले को नमाज के लिए आगे सुतरा रखना जरूरी है। (अलसलात 501)

---

145 : साइब बिन यजीद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मेरी खाला मुझे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले गयीं और मालूम किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा भान्जा बीमार है तो आपने मेरे सर पर हाथ फैरा और मेरे लिए बरकत की दुआ फरमायी। फिर आपने वुजू फरमाया और मैंने आपके वुजू का बचा हुआ पानी पी लिया। फिर मैं आपकी पीठ के पीछे खड़ा हुआ और नबूवत की मोहर को देखा जो आपके दोनों कन्धों के बीच छपरकट की घुंडी की तरह थी।

١٤٥ : عَنِ ٱلسَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ذَهَبَتْ بِي خَالَتِي إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللَّهِ، إِنَّ ٱبْنَ أُخْتِي وَجِعٌ فَمَسَحَ رَأْسِي وَدَعَا لِي بِٱلْبَرَكَةِ، ثُمَّ تَوَضَّأَ، فَشَرِبْتُ مِنْ وَضُوئِهِ، فَقُمْتُ خَلْفَ ظَهْرِهِ، فَنَظَرْتُ إِلَى خَاتَمِ ٱلنُّبُوَّةِ بَيْنَ كَتِفَيْهِ، مِثْلَ زِرِّ ٱلْحَجَلَةِ.

[رواه البخاري: ١٩٠]

फायदे : मालूम हुआ कि बीमार बच्चे किसी बुजुर्ग के पास दुआ के लिए ले जाना तकवा के खिलाफ नहीं। नीज बच्चों से प्यार और उनके लिए खैर और बरकत की दुआ करना सुन्नत नबवी है। (अद्दअवात 6352)। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

दुआ का नतीजा था कि हजरत साइब चौरानवें साल की उम्र में भी तन्दुरूस्त व जवान थे। (मनाकिब 3540)

बाब 32 : मर्द का अपनी बीवी के साथ वुज़ू करना।

٣٢ - باب: وُضوء الرَّجُلِ مَعَ امْرَأَتِهِ

146 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में मर्द और औरत सब मिलकर (एक ही बर्तन से) वुज़ू किया करते थे।

١٤٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ ٱلرِّجَالُ وَٱلنِّسَاءُ يَتَوَضَّؤُونَ فِي زَمَانِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ جَمِيعًا. [رواه البخاري]

फायदे : मुमकिन है कि मर्द और औरतों का मिलकर वुज़ू करना पर्दा उतरने से पहले का हो या इससे वह मर्द और औरतें मुराद हों जो एक दूसरे के लिए हराम हो या इससे मुराद मियां-बीवी हो। इस हदीस का यह भी मतलब बयान किया जाता है कि मर्द एक जगह मिलकर वुज़ू करते और औरतें उनसे अलग एक जगह मिलकर वुज़ू करतीं। (फतहुलबारी, सफा 300, जिल्द 1)

बाब 33: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपने वुज़ू से बाकी बचा पानी बेहोश पर छिड़कना।

٣٣ - باب: صَبِّ ٱلنَّبِيِّ ﷺ وَضُوءَهُ عَلَى ٱلْمُغْمَى عَلَيْهِ

147: जाबिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे देखने के लिए तशरीफ लाये। मैं ऐसा सख्त बीमार था कि कोई बात न समझ सकता था। आपने वुज़ू फरमाया और वुज़ू से बचा

١٤٧ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: جَاءَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَعُودُنِي، وَأَنَا مَرِيضٌ لَا أَعْقِلُ، فَتَوَضَّأَ وَصَبَّ عَلَيَّ مِنْ وَضُوئِهِ، فَعَقَلْتُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ لِمَنِ ٱلْمِيرَاثُ؟ إِنَّمَا يَرِثُنِي كَلَالَةٌ، فَنَزَلَتْ آيَةُ ٱلْفَرَائِضِ. [رواه البخاري: ١٩٤]

हुआ पानी मुझ पर छिड़का तो मैं होश में आ गया, मैंने मालूम किया ऐ अल्लाह के रसूल! मेरा वारिस कौन है? मैं तो कलाला हूँ तब विरासत की आयत नाजिल हुई।

फायदे : कलाला उसको कहते हैं, जिसका न बाप दादा हो और न ही उसकी कोई औलाद हो, मालूम हुआ कि बीमार की तीमारदारी करना चाहिए, चाहे बड़ा हो या छोटा।

(अलमरजा **5651, 5664**)

बाब **34** : टब या लगन से गुस्ल और वुजू करना।

٣٤ - باب: ٱلْغُسْلِ وَٱلْوُضُوءِ فِي ٱلمِخْضَبِ

148 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार नमाज का वक्त हो गया, तो जिस आदमी का घर करीब था वह तो अपने घर (वुजू करने के लिए) चला गया, सिर्फ चन्द लोग रह गये, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक बर्तन लाया गया, जिसमें पानी था, वह इतना छोटा था कि आप अपनी हथेली उसमें न फैला सके, लेकिन फिर भी सब लोगों ने उससे वुजू कर लिया। अनस से पूछा गया कि तुम उस वक्त कितने लोग थे? उन्होंने कहा **80** से कुछ ज्यादा।

١٤٨ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: حَضَرَتِ ٱلصَّلاةُ، فَقَامَ مَنْ كَانَ قَرِيبَ ٱلدَّارِ إِلَى أَهْلِهِ، وَبَقِيَ قَوْمٌ، فَأُتِيَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِمِخْضَبٍ مِنْ حِجَارَةٍ فِيهِ مَاءٌ، فَصَغُرَ ٱلمِخْضَبُ أَنْ يَبْسُطَ فِيهِ كَفَّهُ، فَتَوَضَّأَ ٱلقَوْمُ كُلُّهُمْ، قُلْنَا: كَمْ كُنْتُمْ؟ قَالَ: ثَمَانِينَ وَزِيَادَةً. [رواه البخاري: ١٩٥]

149 : अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एकबार प्याला मंगवाया, जिसमें

١٤٩ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ دَعَا بِقَدَحٍ فِيهِ مَاءٌ، فَغَسَلَ يَدَيْهِ وَوَجْهَهُ فِيهِ، وَمَجَّ فِيهِ. [رواه البخاري: ١٩٦]

पानी था। आपने उससे हाथ मुंह धोया और कुल्ली फरमायी।

फायदे : अगरचे इस हदीस में वुजू का जिक्र नहीं फिर भी हाथ मुंह धोना वुजू के कामों में से हैं, मुमकिन हैं कि आपने पूरा वुजू किया हो, लेकिन रावी ने इसका जिक्र नहीं किया।

150: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बीमार हुये और तकलीफ बढ़ गयी तो आपने अपनी बीवियों से इजाजत चाही कि मेरे घर में आप की तीमारदारी की जाये। सब ने आपको इजाजत दे दी तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो आदमियों का सहारा लेकर निकले आपके दोनों कदम जमीन पर घिसटते जाते थे। हजरत अब्बास रजि. और एक दूसरे आदमी (हजरत अली रजि.) के साथ आप निकले थे। आइशा रजि. का बयान है, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर तशरीफ ले आये और आपकी बीमारी और ज्यादा हो गयी तो आपने फरमाया कि मेरे ऊपर ऐसी सात मश्कें बहाओ जिनके मुंह न खोले गये हों ताकि मैं लोगों को कुछ वसीयत करूं। फिर आपको मोमिनों की माँ हफसा रजि. के लगन (टब) में बिठा दिया गया, उसके बाद हम सब आपके ऊपर पानी बहाने लगे, यहां तक कि आप हमारी

١٥٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا ثَقُلَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ وَٱشْتَدَّ بِهِ وَجَعُهُ، ٱسْتَأْذَنَ أَزْوَاجَهُ فِي أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِي، فَأَذِنَّ لَهُ، فَخَرَجَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ رَجُلَيْنِ، تَخُطُّ رِجْلَاهُ فِي ٱلأَرْضِ، بَيْنَ عَبَّاسٍ وَرَجُلٍ آخَرَ. وَكَانَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا تُحَدِّثُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: بَعْدَمَا دَخَلَ بَيْتَهُ وَٱشْتَدَّ وَجَعُهُ: (هَرِيقُوا عَلَيَّ مِنْ سَبْعِ قِرَبٍ، لَمْ تُحْلَلْ أَوْكِيَتُهُنَّ، لَعَلِّي أَعْهَدُ إِلَى ٱلنَّاسِ). وَأُجْلِسَ فِي مِخْضَبٍ لِحَفْصَةَ، زَوْجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ طَفِقْنَا نَصُبُّ عَلَيْهِ تِلْكَ، حَتَّى طَفِقَ يُشِيرُ إِلَيْنَا: (أَنْ قَدْ فَعَلْتُنَّ). ثُمَّ خَرَجَ إِلَى ٱلنَّاسِ. [رواه البخاري: ١٩٨]

तरफ इशारा करने लगे, "बस-बस" तुम अपना काम पूरा कर चुकी हो। फिर आप लोगों के पास तशरीफ ले गये।

फायदे : बुख़ार की हालत में ठण्डे पानी से नहाना ख़ासकर जब सफरावी बुख़ार हो, इन्तहाई मुफीद है, जिसको नई खोज ने भी माना है।

---

151 : अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पानी का एक बर्तन मंगवाया तो आपके पास एक खुले मुंह वाला चौड़ा प्याला लाया गया। उसमें थोड़ा सा पानी था, आपने उसमें अपनी अंगुलियां रख दी। अनस रजि. ने फरमाया कि मैं पानी को देखने लगा, वह आपकी मुबारक उंगलियों से बड़े जोश से फूट रहा था। अनस रजि. का बयान है कि मैंने उन लोगों का अन्दाजा किया, जिन्होंने उससे वुज़ू किया था तो वह सत्तर या अस्सी के करीब थे।

١٥١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ دَعَا بِإِنَاءٍ مِنْ مَاءٍ، فَأُتِيَ بِقَدَحٍ رَحْرَاحٍ، فِيهِ شَيْءٌ مِنْ مَاءٍ، فَوَضَعَ أَصَابِعَهُ فِيهِ، قَالَ أَنَسٌ: فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ إِلَى ٱلْمَاءِ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ، قَالَ أَنَسٌ: فَحَزَرْتُ مَنْ تَوَضَّأَ مِنْهُ، مَا بَيْنَ ٱلسَّبْعِينَ إِلَى ٱلثَّمَانِينَ. [رواه البخاري: ٢٠٠]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस किस्म के करिश्मों का कई बार जहूर हुआ, वुज़ू करने वालों की तादाद कम या ज्यादा इसी बिना पर है।

बाब 35 : एक मुद से वुज़ू करना।

٣٥ - باب: ٱلْوُضُوءُ بِالْمُدِّ

152 : अनस रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब गुस्ल फरमाते तो एक साअ से लेकर पांच मुद

١٥٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يَغْسِلُ، أَوْ كَانَ يَغْتَسِلُ، بِالصَّاعِ إِلَى خَمْسَةِ أَمْدَادٍ، وَيَتَوَضَّأُ بِالْمُدِّ [رواه البخاري: ٢٠١]

तक पानी इस्तेमाल करते और एक मुद पानी से वुजू कर लेते।

फायदे : नई खोज के मुताबिक साअ का वजन **2** किलो **100** ग्राम है, वुजू और गुस्ल के लिए लोगों और हालात के पेशे नजर पानी की मिकदार में कमी और ज्यादती हो सकती है। फिर भी इस सिलसिले में फिजूल खर्ची करना जाइज नहीं।
(फतहुलबारी, सफा **305**, जिल्द **1**) नोटः अल्लामा करजावी ने इसका वजन **2** किलो **176** ग्राम और **2** लीटर **75** मिली. लिखा है।

बाब 36 : मोजों पर मसह करना।

٣٦ - باب: اَلْمَسْحُ عَلَى الْخُفَّيْنِ

153 : साद बिन अबी वक्कास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मोजों पर मसह किया, अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ने उमर रजि. से यह मसला पूछा तो उन्होंने कहा, हाँ आपने मोजों पर मसह किया है और कहा जब साद रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई हदीस तुझ से बयान करें तो किसी दूसरे से उसके बारे में मत पूछा करो।

١٥٣ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاص رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهُ مَسَحَ عَلَى ٱلْخُفَّيْنِ. وَأَنَّ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ عُمَرَ: سَأَلَ عُمَرَ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: نَعَمْ، إِذَا حَدَّثَكَ شَيْئًا سَعْدٌ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَلاَ تَسْأَلْ عَنْهُ غَيْرَهُ. [رواه البخاري: ٢٠٢]

154 : अम्र बिन उमय्या जुमरी रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मोजों पर मसह करते हुये देखा है।

١٥٤ : عَنْ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ ٱلضَّمْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ رَأَى ٱلنَّبِيَّ ﷺ يَمْسَحُ عَلَى ٱلْخُفَّيْنِ. [رواه البخاري: ٢٠٤]

155 : अम्र बिन उमय्या जुमरी रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया

١٥٥ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ يَمْسَحُ عَلَى عِمَامَتِهِ

वخُفَّيْهِ. [رواه البخاري: ٢٠٥]

कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी पगड़ी और दोनों मोजों पर मसह करते हुये देखा है।

फायदे : मोजों पर मसह के लिए शर्त यह है कि उन्हें पहले वुज़ू की हालत में पहना हो, लेकिन पगड़ी पर मसह के लिए कोई शर्त नहीं है। मसह की मुद्दत मुसाफिर के लिए तीन दिन और तीन रात और मुकीम के लिए एक दिन और एक रात है। नीज इस मुद्दत का आगाज वुज़ू टूटने के बाद होगा।

---

٣٧ - باب: إِذَا أَدْخَلَ رِجْلَيْهِ وَهُمَا طَاهِرَتَانِ

बाब 37 : मोजों को बावुज़ू पहनने का बयान।

١٥٦ : عَنِ ٱلْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَأَهْوَيْتُ لِأَنْزِعَ خُفَّيْهِ، فَقَالَ: (دَعْهُمَا، فَإِنِّي أَدْخَلْتُهُمَا طَاهِرَتَيْنِ). فَمَسَحَ عَلَيْهِمَا. [رواه البخاري: ٢٠٦]

156 : मुगीरा बिन शोअबा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैं एक सफर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था (आप वुज़ू कर रहे थे) मैं झुका ताकि आपके दोनों मोजों को उतार दूँ तो आपने फरमाया। इन्हें रहने दो, मैंने इनको बावुज़ू पहना था, फिर आपने उन पर मसह फरमाया।

٣٨ - باب: مَنْ لَمْ يَتَوَضَّأْ مِنْ لَحْمِ ٱلشَّاةِ وَٱلسَّوِيقِ

बाब 38 : बकरी के गोश्त और सत्तू खाने के बाद वुज़ू न करना।

١٥٧ : عَنْ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ رَأَى رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَحْتَزُّ مِنْ كَتِفِ شَاةٍ، فَدُعِيَ إِلَى

157 : उम्र बिन उमय्या जुमरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को

देखा कि आप बकरी के शाने का गोश्त काट कर खा रहे थे। इतने में आपको नमाज के लिए बुलाया गया, यानी अजान हो गयी तो आपने छुरी रख दी, फिर नमाज पढ़ाई और नया वुजू न किया।

ٱلصَّلَاةِ، فَأَلْقَى ٱلسِّكِّينَ، فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. [رواه البخاري: ٢٠٨]

फायदे : मालूम हुआ कि छुरी से गोश्त काटकर खाना सुन्नत है। (अलअतइमा **5408**) हदीस में अगरचे सत्तू का जिक्र नहीं चूंकि यह भी गोश्त की तरह आग पर पकाये जाते है। इसलिए दोनों का हुक्म एक ही है कि इनके इस्तेमाल से वुजू नहीं टूटता। (फतहुलबारी, सफा **311**, जिल्द **1**)

बाब **39** : सत्तू को खाने के बाद सिर्फ कुल्ली करना और वुजू न करना।

٣٩ - باب: مَنْ مَضْمَضَ مِنَ السَّوِيقِ وَلَمْ يَتَوَضَّأْ

158 : सुवैद बिन नोमान रजि. से रिवायत है कि वह फतहे खैबर के साल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ गये थे, जब मकाम सहबा पर पहुंचे जो खैबर के करीब था तो आपने नमाज असर पढ़ी, फिर खाने-पीने का सामान मंगवाया, तो सिर्फ सत्तू लाया गया। आपने उसे तैयार करने का हुक्म दिया। चूनाँचे वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हम सब ने खाया, उसके बाद आप नमाज मगरिब के लिए खड़े हुये। आपने सिर्फ कुल्ली फरमायी और हमने भी कुल्ली की। फिर आपने नमाज पढ़ाई और नया वुजू नहीं किया।

١٥٨ : عَنْ سُوَيْدِ بْنِ ٱلنُّعْمَانِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ عَامَ خَيْبَرَ، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالصَّهْبَاءِ، وَهِيَ أَدْنَى خَيْبَرَ، فَصَلَّى ٱلْعَصْرَ، ثُمَّ دَعَا بِالأَزْوَادِ، فَلَمْ يُؤْتَ إِلاَّ بِالسَّوِيقِ، فَأَمَرَ بِهِ فَثُرِّيَ، فَأَكَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَأَكَلْنَا، ثُمَّ قَامَ إِلَى ٱلْمَغْرِبِ، فَمَضْمَضَ وَمَضْمَضْنَا، ثُمَّ صَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. [رواه البخاري: ٢٠٩]

159 : मैमूना रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके यहां शाना (गोश्त) खाया फिर नमाज अदा की और नया वुजू नहीं फरमाया।

١٥٩ : عَنْ مَيْمُونَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ أَكَلَ عِنْدَهَا كَتِفًا، ثُمَّ صَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. [رواه البخاري: ٢١٠]

फायदे : इस हदीस में गोश्त खाने के बाद कुल्ली करने का जिक्र नहीं। मालूम हुआ कि कुल्ली करना बेहतर है, जरूरी नहीं।
(फतहुलबारी, सफा 313, जिल्द 1)

बाब 40 : दूध पीने के बाद कुल्ली करना।

٤٠ - باب: هَلْ يُمَضْمِضُ مِنَ ٱللَّبَنِ

160 : अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार दूध पिया तो कुल्ली की और कहा कि दूध में चिकनाई होती है।

١٦٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ شَرِبَ لَبَنًا، فَمَضْمَضَ وَقَالَ: (إِنَّ لَهُ دَسَمًا). [رواه البخاري: ٢١١]

फायदे : मालूम हुआ कि चिकनाई वाली चीज खाकर कुल्ली करना चाहिए। (अलवी)

बाब 41 : नींद से वुजू करना नीज एक या दो बार ऊंघने या झौंका लेने से वुजू जरूरी नहीं।

٤١ - باب: الوُضُوءُ مِنَ ٱلنَّوْمِ وَمَنْ لَمْ يَرَ مِنَ ٱلنَّعْسَةِ وَٱلنَّعْسَتَيْنِ أَوِ ٱلخَفْقَةِ وُضُوءًا

161 : आइशा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुममें

١٦١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا نَعَسَ أَحَدُكُمْ وَهُوَ يُصَلِّي فَلْيَرْقُدْ،

حَتَّى يَذْهَبَ عَنْهُ ٱلنَّوْمُ، فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا صَلَّى وَهُوَ نَاعِسٌ، لاَ يَدْرِي لَعَلَّهُ يَسْتَغْفِرُ فَيَسُبُّ نَفْسَهُ). [رواه البخاري: ٢١٢]

से कोई नमाज पढ़ रहा हो, उस दौरान अगर ऊंघ आ जाये तो वह सो जाये ताकि उसकी नींद पूरी हो जाये, क्योंकि ऊंघते हुये अगर कोई नमाज पढ़ेगा तो वह नहीं जानता कि अपने लिए माफी की दुआ कर रहा है, या खुद को बद-दुआ दे रहा है।

फायदे : नींद जाति तौर पर वुज़ू तोड़ने वाली नहीं, बल्कि बे-वुज़ू होने का जरीया जरूर है, बशर्ते कि इन्सान की अकल व शउर पर गालिब आ जाये।

١٦٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (إِذَا نَعَسَ أَحَدُكُمْ فِي ٱلصَّلاَةِ فَلْيَنَمْ، حَتَّى يَعْلَمَ مَا يَقْرَأُ). [رواه البخاري: ٢١٣]

162 : अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब कोई तुम में से नमाज के दौरान ऊंघने लगे तो उसे सो लेना चाहिए, ताकि नींद जाती रहे और जो पढ़ रहा है उसको समझने के काबिल हो जाये।

फायदे : ऊंघ यह है कि इन्सान अपने पास वाले की बात तो सुने, लेकिन समझ न सके, ऐसी हालत में नमाजी को चाहिए कि वह सलाम फेरे फिर सो जाये, चूंकि ऐसी हालत में अदा की हुई नमाज को दोहराने का आपने हुक्म नहीं दिया तो मालूम हुआ कि ऊंघने से वुज़ू नहीं टूटता।

बाब 42 : हवा निकले बगैर वुज़ू करने का बयान।

٤٢ - باب: ٱلْوُضُوءُ مِنْ غَيْرِ حَدَثٍ

163 : अनस रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर नमाज के लिए वुजू किया करते थे, फिर अनस रजि. ने फरमाया कि हमें तो एक ही वुजू काफी होता है, जब तक कि हवा न निकले।

١٦٣ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يَتَوَضَّأُ عِنْدَ كُلِّ صَلاَةٍ. قَالَ: وَكَانَ يُجْزِئُ أَحَدَنَا ٱلْوُضُوءُ مَا لَمْ يُحْدِثْ. [رواه البخاري: ٢١٤]

फायदे : हर नमाज के लिए ताजा वुजू करना बेहतर है, जरूरी नहीं। क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फतह मक्का के मौके पर पांचों नमाजें एक ही वुजू से पढ़ी थी। वुजू पर वुजू करना अच्छा अमल है। क्योंकि यह रोशनी पर रोशनी है।

बाब 43 : अपने पेशाब से बचाव न करना बड़ा गुनाह है।

٤٣ - باب: مِنَ ٱلْكَبائِرِ أنْ لاَ يَسْتَتِرَ مِن بَوْلِه

164 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना या मक्का के किसी बाग से गुजरे तो वहां दो आदमियों की आवाज सुनी, जिनको कब्र में अजाब हो रहा था, उस वक्त आपने फरमाया कि इन दोनों को अजाब हो रहा है, लेकिन यह किसी बड़ी बात पर नहीं दिया जा रहा, फिर फरमाया, हाँ (बड़ी ही है)। उनमें

١٦٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رضي ٱلله عنهما قَالَ: مَرَّ ٱلنَّبِي ﷺ بِحَائِطٍ مِنْ حِيطَانِ ٱلْمَدِينَةِ أَوْ مَكَّةَ، فَسَمِعَ صَوْتَ إِنْسَانَيْنِ يُعَذَّبَانِ فِي قُبُورِهِمَا فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (يُعَذَّبَانِ، وَما يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيرٍ). ثُمَّ قَالَ: (بَلَى، كَانَ أَحَدُهُمَا لاَ يَسْتَتِرُ مِنْ بَوْلِهِ، وَكَانَ ٱلآخَرُ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ). ثُمَّ دَعَا بِجَرِيدَةٍ رَطْبَةٍ، فَكَسَرَهَا كِسْرَتَيْنِ، فَوَضَعَ عَلَى كُلِّ قَبْرٍ مِنْهُمَا كِسْرَةً، فَقِيلَ لَهُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، لِمَ فَعَلْتَ هٰذَا؟ قَالَ: (لَعَلَّهُ أَنْ يُخَفَّفَ عَنْهُمَا مَا لَمْ يَيْبَسَا). [رواه البخاري: ٢١٦]

से एक तो अपने पेशाब से न बचता था और दूसरा चुगलखोरी करता था। फिर आपने खजूर की एक तर शाख मंगवाई, उसके दो टुकड़े करके हर कब्र पर एक टुकड़ा रख दिया, आपसे मालूम किया गया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने ऐसा क्यों किया? फरमाया : उम्मीद है कि जब तक यह नहीं सूखेगी, इन दोनों पर अजाब कम रहेगा।

फायदे : यह हदीस खुली दलील है कि अजाब जमीनी कब्र में होता है और जिन लोगों को यह कब्र नहीं मिले, उनके लिए वही कब्र है, जहां उनके जर्रात पड़े हैं। कुरआन व हदीस में इसके अलावा किसी बरजखी कब्र का वजूद साबित नहीं होता, जैसा कि बाज फितना फैलाने वाले लोगों का ख्याल है।

बाब 44 : पेशाब को धोना।

٤٤ - باب: مَا جَاءَ فِي غَسْلِ ٱلبَوْلِ

165: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब पाखाना के लिए बाहर तशरीफ ले जाते तो मैं आपके लिए पानी लाता था, जिससे आप इस्तंजा करते थे।

١٦٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ إِذَا تَبَرَّزَ لِحَاجَتِهِ، أَتَيْتُهُ بِمَاءٍ فَيَغْسِلُ بِهِ. [رواه البخاري: ٢١٧]

फायदे : पाखाना में पेशाब भी आ जाता है, इस तरह पेशाब का धोना साबित हुआ, हलाल जानवरों का पेशाब इस हुक्म से अलग है।

बाब 45 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम रजि. ने देहाती को कुछ नहीं कहा, यहां तक कि वह मस्जिद में पेशाब से फारीग हो गया।

٤٥ - باب: تَرْكُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ وَٱلنَّاسِ ٱلأَعْرَابِيَّ حَتَّى فَرَغَ مِنْ بَوْلِهِ فِي ٱلمَسْجِدِ

166: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक देहाती खड़ा होकर मस्जिद में पेशाब करने लगा तो लोगों ने उसे पकड़ना चाहा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: कि उसे छोड़ दो और उसके पेशाब पर पानी से भरा हुआ एक डोल बहा दो, क्योंकि तुम लोग आसानी के लिए पैदा किये गये हो, तुम्हें सख़्ती करने के लिए नहीं भेजा गया।

١٦٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَامَ أَعْرَابِيٌّ فَبَالَ فِي ٱلْمَسْجِدِ، فَتَنَاوَلَهُ ٱلنَّاسُ، فَقَالَ لَهُمُ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (دَعُوهُ وَهَرِيقُوا عَلَى بَوْلِهِ سَجْلًا مِنْ مَاءٍ، أَوْ ذَنُوبًا مِنْ مَاءٍ، فَإِنَّمَا بُعِثْتُمْ مُيَسِّرِينَ، وَلَمْ تُبْعَثُوا مُعَسِّرِينَ). [رواه البخاري: ٢٢٠]

फायदे : दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे अपनी हाजत से फारिग होने के बाद बुलाया और फरमाया कि मस्जिदें अल्लाह की याद और नमाज के लिए बनाई जाती है, इनमें पेशाब नहीं करना चाहिए। इस तरीके से उस पर बहुत असर हुआ और मुसलमान हो गया।

बाब 46 : बच्चों का पेशाब।

٤٦ - باب: بَوْلُ ٱلصِّبْيَانِ

147 : उम्मे कैस बिन्ते मेहसन रजि. से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास अपना छोटा बच्चा लेकर आयी जो अभी खाना नहीं खाता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे अपनी गोद में बिठा लिया तो उसने आपके कपड़े पर पेशाब कर दिया। आपने पानी मंगवाकर उस पर छिड़क दिया, लेकिन उसे धोया नहीं।

١٦٧ : عَنْ أُمِّ قَيْسٍ بِنْتِ مِحْصَنٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا أَتَتْ بِٱبْنٍ لَهَا صَغِيرٍ، لَمْ يَأْكُلِ ٱلطَّعَامَ، إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَأَجْلَسَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي حَجْرِهِ، فَبَالَ عَلَى ثَوْبِهِ، فَدَعَا بِمَاءٍ، فَنَضَحَهُ وَلَمْ يَغْسِلْهُ. [رواه البخاري: ٢٢٣]

फायदे : मालूम हुआ कि लड़के के पेशाब पर पानी छिड़क देना काफी

है, अलबत्ता लड़की के पेशाब को धोना जरूरी है।

बाब 47 : खड़े होकर पेशाब करना।

٤٧ - باب: ٱلْبَوْلُ قَائِمًا وَقَاعِدًا

148 : हुज़ैफा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक कौम के कूड़े-करकट के ढ़ेर पर तशरीफ लाये, वहां खड़े खड़े पेशाब किया। फिर पानी मंगवाया। मैं आपके पास पानी लाया और आपने वुज़ू फरमाया।

١٦٨ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى ٱلنَّبِيُّ ﷺ سُبَاطَةَ قَوْمٍ، فَبَالَ قَائِمًا، ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ، فَجِئْتُهُ بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ. [رواه البخاري: ٢٢٤]

फायदे : अगर पेशाब के छींटे बदन पर पड़ने का डर न हो तो खड़े होकर पेशाब करने में कोई हर्ज नहीं है, क्योंकि मनाअ की कोई हदीस नहीं है। (फतहुलबारी, सफा 330, जिल्द 1)
नोट : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आम तौर पर बैठ कर पेशाब करते थे। (अलवी)

बाब 48 : दीवार की ओट में और अपने साथी के नजदीक ही पेशाब करना।

٤٨ - باب: ٱلْبَوْلُ عِنْدَ صَاحِبِهِ وَالتَّسَتُّرُ بِالْحَائِطِ

169 : हुजैफा रजि. से ही दूसरी रिवायत में है, उन्होंने कहा (कि जब आप पेशाब करने लगे) तो मैं आपसे अलग हो गया और जब आपने मेरी तरफ इशारा किया तो मैं हाजिर होकर आपकी ऐड़ियों के करीब खड़ा हो गया, यहां तक कि आप पेशाब की हाजत से फारिग हो गये।

١٦٩ : وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ: فَانْتَبَذْتُ مِنْهُ، فَأَشَارَ إِلَيَّ فَجِئْتُهُ، فَقُمْتُ عِنْدَ عَقِبِهِ حَتَّى فَرَغَ. [رواه البخاري: ٢٢٥]

फायदे : जब इन्सान की ओट ली जा सकती है तो दीवार की ओट और ज्यादा बेहतर होगी। (अलवी)

बाब 49 : खून का धोना।

٤٩ - باب: غَسْلُ الدَّمِ

170 : असमा बिन्ते अबू बकर रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि एक औरत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आयी और मालूम किया कि बताइये, हममें से अगर किसी औरत को कपड़े में हैज आ जाये तो क्या करे? आपने फरमाया कि उसे खुरच डाले, फिर पानी डालकर रगड़े और साफ करके उसमें नमाज पढ़े।

١٧٠ : عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَتِ ٱمْرَأَةٌ إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: أَرَأَيْتَ إِحْدَانَا تَحِيضُ فِي ٱلثَّوْبِ، كَيْفَ تَصْنَعُ؟ قَالَ: (تَحُتُّهُ، ثُمَّ تَقْرُصُهُ بِالْمَاءِ، وَتَنْضَحُهُ، وَتُصَلِّي فِيهِ). [رواه البخاري: ٢٢٧]

फायदे : इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि गन्दगी दूर करने के लिए पानी को ही इस्तेमाल किया जाता है, दूसरी बहने वाली चीजें यानी सिरका वगैरह से धोना दुरूस्त नहीं।

171 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि फातमा बिन्ते अबी हुबैश रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आयीं और कहने लगीं कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं ऐसी औरत हूँ कि अक्सर मुस्तहाजा रहती हूँ और कई कई दिनों पाक नहीं होती, क्या नमाज छोड़ दूँ? आपने फरमाया, नमाज मत छोड़ो, यह एक रग का खून है जो हैज नहीं। फिर जब तेरे हैज का वक्त आ जाये तो नमाज छोड़ दो और जब वक्त गुजर जाये तो अपने बदन (और कपड़ों)

١٧١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَتْ فَاطِمَةُ ٱبْنَةُ أَبِي حُبَيْشٍ إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنِّي ٱمْرَأَةٌ أُسْتَحَاضُ فَلاَ أَطْهُرُ، أَفَأَدَعُ ٱلصَّلاَةَ؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ، إِنَّمَا ذٰلِكَ عِرْقٌ، وَلَيْسَ بِحَيْضٍ، فَإِذَا أَقْبَلَتْ حَيْضَتُكِ فَدَعِي ٱلصَّلاَةَ، وَإِذَا أَدْبَرَتْ فَاغْسِلِي عَنْكِ ٱلدَّمَ ثُمَّ صَلِّي).

وَقَالَ: (ثُمَّ تَوَضَّئِي لِكُلِّ صَلاَةٍ، حَتَّى يَجِيءَ ذٰلِكَ ٱلْوَقْتُ). [رواه البخاري: ٢٢٨]

से खून धोकर उसके बाद नमाज पढ़ो। अलबत्ता हर नमाज के लिए नया वुजू करती रहो, यहां तक कि फिर हैज का वक्त आ जाये।

फायदे : इस्तिहाजा एक बीमारी है, जिसमें औरत का खून जारी रहता है, बन्द नहीं होता, इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि जिसे हवा या पेशाब के कतरे आने की बीमारी हो, वह भी नमाज के लिए ताजा वुजू करके उसे अदा करता रहे।

बाब 50 : मनी का धोना और उसे खुरच डालना।

٥٠ - باب: غَسْلُ الْمَنِيِّ وَفَرْكُهُ

172 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के (कपड़े से) नापाकी के निशानों को धो डालती थी, फिर आप नमाज के लिए बाहर तशरीफ ले जाते, अगरचे आपके कपड़े में पानी के धब्बे बाकी रहते थे।

١٧٢ : وعنها رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أَغْسِلُ الْجَنَابَةَ مِنْ ثَوْبِ النَّبِيِّ ﷺ، فَيَخْرُجُ إِلَى الصَّلاَةِ، وَإِنَّ بُقَعَ الْمَاءِ فِي ثَوْبِهِ. [رواه البخاري: ٢٢٩]

फायदे : नापाकी के निशान अगर खुश्क हो चुके हों तो उन्हें खुरच देना ही काफी है, धोने की जरूरत नहीं।

बाब 51: ऊंट, बकरियों और दूसरे जानवरों के पेशाब नीज बकरियों के बाड़े का हुक्म।

٥١ - باب: أَبوالُ الإِبِلِ وَالدَّوَابِّ وَالْغَنَمِ وَمَرابِضِهَا

173: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने बयान किया कि उक्ल या उरैना के चन्द लोग मदीना मुनव्वरा आये, यहां का हवा पानी उनके मवाफिक

١٧٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ نَاسٌ مِنْ عُكْلٍ أَوْ عُرَيْنَةَ، فَاجْتَوَوُا الْمَدِينَةَ، فَأَمَرَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ بِلِقَاحٍ، وَأَنْ يَشْرَبُوا مِنْ أَبْوَالِهَا

وَأَلْبَانِهَا، فَانْطَلَقُوا، فَلَمَّا صَحُّوا، قَتَلُوا رَاعِي ٱلنَّبِيِّ ﷺ، وَٱسْتَاقُوا ٱلنَّعَمَ، فَجَاءَ ٱلْخَبَرُ فِي أَوَّلِ ٱلنَّهَارِ، فَبَعَثَ فِي آثَارِهِمْ، فَلَمَّا ٱرْتَفَعَ ٱلنَّهَارُ جِيءَ بِهِمْ، فَأَمَرَ فَقَطَعَ أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ، وَسُمِرَتْ أَعْيُنُهُمْ، وَأُلْقُوا فِي ٱلْحَرَّةِ، يَسْتَسْقُونَ فَلاَ يُسْقَوْنَ. [رواه البخاري: ٢٣٣]

न आया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि वह (जंगल में सदके की) ऊंटनियों के पास चले जायें और वहां उनका पेशाब और दूध पीयें। चूनांचे वह चले गये और जब तन्दुरूस्त हो गये तो उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चरवाहे को कत्ल कर डाला और जानवर हाँक कर ले गये। सुबह के वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब यह खबर पहुंची तो आपने उनकी तलाश में आदमी रवाना किये। सूरज बुलन्द होने तक सब को गिरफ्तार कर लिया गया। चूनांचे आपके हुक्म पर उनके हाथ पांव काटे गये, आंखो में गर्म सलाईयां फेरी गयीं और गर्म पथरीली जगह पर उन्हें डाल दिया गया, वह पानी मांगते लेकिन उन्हें पानी न दिया जाता।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि हलाल जानवरों का गोबर और पेशाब गन्दा नहीं है, तभी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें ऊंटनियों का पेशाब पीने का हुक्म दिया। और उन्होंने जो सलूक चरवाहे के साथ किया था, वही सलूक उनके साथ किया गया।

---

١٧٤ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي، قَبْلَ أَنْ يُبْنَى ٱلْمَسْجِدُ، فِي مَرَابِضِ ٱلْغَنَمِ. [رواه البخاري: ٢٣٤]

174 : अनस रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे नबवी से पहले बकरियों के बाड़ों में नमाज पढ़ लिया करते थे।

फायदे : जाहिर है कि बकरियाँ वहां पेशाब वगैरह करती हैं, इसके बावुजूद आपने वहां नमाज पढ़ी, मालूम हुआ कि उनका पेशाब वगैरह नापाक नहीं। अलबत्ता ऊंटों के बाड़ों में नमाज पढ़ाना मना है, क्योंकि उनके मस्ती में आने से नुकसान का डर है।

बाब 52 : घी और पानी में गन्दगी का पड़ जाना।

٥٢ - باب: مَا يَقَعُ مِنَ النَّجَاسَاتِ فِي السَّمْنِ وَالْمَاءِ

175 : मैमूना रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक चूहिया के बारे में पूछा गया जो घी में गिर गयी थी? आपने फरमाया कि उसे निकाल दो और उसके करीब जिस कद्र घी हो, उसे फैंक दो फिर अपने बाकी घी को इस्तेमाल कर लो।

١٧٥ : عَنْ مَيْمُونَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ سُئِلَ عَنْ فَأْرَةٍ سَقَطَتْ فِي سَمْنٍ، فَقَالَ: (أَلْقُوهَا وَمَا حَوْلَهَا فَاطْرَحُوهُ، وَكُلُوا سَمْنَكُمْ). [رواه البخاري: ٢٣٥]

फायदे : कुछ रिवायतों में ''जामिद'' के अल्फाज हैं, मालूम हुआ कि अगर पिघला हुआ हो तो इस्तेमाल के काबिल नहीं और न ही उसे बेचना जाइज है। शहद वगैरह का भी यही हुक्म है। चूंकि पानी बहने वाला होता है, इसलिए वह भी गन्दा होगा।

---

176 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह की राह में मुसलमान को जो जख्म लगता है, कयामत के दिन वह अपनी असल हालत में होगा, जैसे जख्म लगते वक्त था। खून बह

١٧٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (كُلُّ كَلْمٍ يُكْلَمُهُ ٱلْمُسْلِمُ فِي سَبِيلِ ٱللهِ، يَكُونُ يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ كَهَيْئَتِهَا، إِذْ طُعِنَتْ، تَفَجَّرُ دَمًا، ٱللَّوْنُ لَوْنُ ٱلدَّمِ، وَٱلْعَرْفُ عَرْفُ ٱلْمِسْكِ). [رواه البخاري: ٢٣٧]

रहा होगा, उसका रंग तो खून जैसा होगा, मगर खुश्बू कस्तूरी की तरह होगी।

फायदे : मुश्क हिरन की नाफ से निकलता है जो दरअसल खून है, मगर जब उसमें खूश्बू पैदा हो गयी तो उसका हुक्म खून का न रहा। इसी तरह पानी में गन्दगी गिरने से अगर उसका कोई गुण बदल जाये तो वो भी पाकी पर नहीं रहेगा, बल्कि नापाक हो जायेगा।

---

٥٣ - باب: ٱلْبَوْلُ فِي ٱلْمَاءِ ٱلدَّائِمِ

बाब 53 : रूके हुए पानी में पेशाब करना।

١٧٧ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (لا يَبُولَنَّ أَحَدُكُمْ فِي ٱلْمَاءِ ٱلدَّائِمِ ٱلَّذِي لا يَجْرِي، ثُمَّ يَغْتَسِلُ فِيهِ) [رواه البخاري: ٢٣٩]

177 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुममें से कोई ठहरे हुये पानी में पेशाब न करे, क्योंकि मुमकिन है कि उसमें फिर गुस्ल करने की जरूरत हो जाये।

फायदे : यह मनाअ अदब के तौर पर है, क्योंकि खड़े पानी में पेशाब करने के बाद अगर उससे नहाने की जरूरत पड़ी तो आदमी को उससे नफरत हो ाी।

---

٥٤ - باب: إِذَا أُلْقِيَ عَلَى ظَهْرِ ٱلْمُصَلِّي قَذَرٌ وجِيفَةٌ لَمْ تَفْسُدْ عَلَيْهِ صَلاتُهُ

बाब 54 : जब नमाजी की पीठ पर गंदगी या मरा हुआ जानवर डाल दिया जाये तो उसकी नमाज खराब नहीं होगी।

١٧٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ كَانَ

178 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु

يُصَلِّي عِنْدَ ٱلْبَيْتِ وَأَبُو جَهْلٍ وَأَصْحَابٌ لَهُ جُلُوسٌ إِذْ قَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: أَيُّكُمْ يَجِيءُ بِسَلَى جَزُورِ بَنِي فُلَانٍ، فَيَضَعُهُ عَلَى ظَهْرِ مُحَمَّدٍ إِذَا سَجَدَ؟ فَانْبَعَثَ أَشْقَى ٱلْقَوْمِ فَجَاءَ بِهِ، فَنَظَرَ حَتَّى إِذَا سَجَدَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ، وَضَعَهُ عَلَى ظَهْرِهِ بَيْنَ كَتِفَيْهِ، وَأَنَا أَنْظُرُ لَا أُغْنِي شَيْئًا، لَوْ كَانَ لِي مَنَعَةٌ، قَالَ: فَجَعَلُوا يَضْحَكُونَ وَيُحِيلُ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ، وَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ سَاجِدٌ لَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ، حَتَّى جَاءَتْهُ فَاطِمَةُ، فَطَرَحَتْ عَنْ ظَهْرِهِ، فَرَفَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ قَالَ: (ٱللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ). ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَشَقَّ عَلَيْهِمْ إِذْ دَعَا عَلَيْهِمْ، قَالَ: وَكَانُوا يَرَوْنَ أَنَّ ٱلدَّعْوَةَ فِي ذَٰلِكَ ٱلْبَلَدِ مُسْتَجَابَةٌ، ثُمَّ سَمَّى: (ٱللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِأَبِي جَهْلٍ، وَعَلَيْكَ بِعُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ، وَشَيْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ، وَٱلْوَلِيدِ بْنِ عُتْبَةَ، وَأُمَيَّةَ بْنِ خَلَفٍ، وَعُقْبَةَ بْنِ أَبِي مُعَيْطٍ). وَعَدَّ ٱلسَّابِعَ فَنَسِيَهُ الراوي. قَالَ: فَوَٱلَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَقَدْ رَأَيْتُ ٱلَّذِينَ عَدَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ صَرْعَى، فِي ٱلْقَلِيبِ قَلِيبِ بَدْرٍ. [رواه البخاري: ٢٤٠]

अलैहि वसल्लम एक बार काबा के पास नमाज पढ़ रहे थे, अबू ज़हल और उसके साथी वहां बैठे हुये थे, वह आपस में कहने लगे, तुममें से कौन जाता है कि फलाँ कबीला की ऊँटनी की बच्चेदानी ले आये, जिसे वह सज्दा की हालत में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पीठ पर रख दे? चूनांचे एक बदबख्त उठा और उसे उठा लाया, फिर देखता रहा जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे में गये तो उसने उसे आपके दोनों कन्धों के बीच पीठ पर रख दिया। मैं यह सब कुछ देख तो रहा था, लेकिन कुछ न कर सकता था। काश कि मुझे हिफाजत हासिल होती, फिर वह हंसते-हंसते एक दूसरे पर गिरने लगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे ही में पड़े रहे। अपना सर नहीं उठाया, यहां तक कि फातिमा रजि. आयीं और आप की पीठ से उसे उठाकर फेंक दिया। तब आपने अपना सर मुबारक उठाया और तीन बार यूँ बद-दुआ की: कि ऐ अल्लाह कुरैश से बदला ले, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यूँ बद-दुआ करना उन पर बड़ा

भारी गुजरा, क्योंकि वह जानते थे कि इस शहर में दुआ कुबूल होती है, फिर आपने नाम-ब-नाम फरमाया या अल्लाह! अबू जहल से बदला ले, उतबा बिन रबीया, शैबा बिन रबीया, वलीद बिन उतबा, उमय्या बिन खलफ और उकबा बिन अबू मुईत की हलाकत को अपने ऊपर लाजिम कर, सातवें आदमी का भी नाम लिया, लेकिन रावी उसको भूल गया, अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने फरमाया : कसम है उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है, मैंने उन लोगों को देखा जिनका नाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लिया था, बदर के कुऐं में मरे पड़े थे।

फायदे : इमाम बुखारी का यही मजहब है कि नमाज के दौरान गंदगी लगने से नमाज में खलल नहीं आता, अलबत्ता नमाज के शुरू में हर किस्म की पाकी का अहतमाम जरूरी है।

बाब 55 : कपड़े में थूकना और नाक वगैरह साफ करना।

٥٥ - باب: ٱلْبُصاقُ وَٱلْمُخَاطُ وَنَحوُهُ فِي ٱلثَّوبِ

179 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार (नमाज की हालत में) अपने कपड़े में थूका।

١٧٩ : عَنْ أَنَسٍ رضي ٱللهُ عنه قال: بَزَقَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فِي ثَوْبِهِ. [رواه البخاري: ٢٤١]

फायदे : अगर मूंह में कोई गन्दगी न हो तो आदमी का थूक पाक है, और इससे पानी नापाक नहीं होता, ऐसे पानी से वुजू किया जा सकता है।

बाब 56 : औरत का अपने बाप के चेहरे से खून धोना।

٥٦ - باب: غَسْلُ ٱلمَرأَةِ ٱلدَّمَ عَن وَجْهِ أَبِيها

180 : सहल बिन सअद रजि. से रिवायत है, लोगों ने उनसे सवाल किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के (उहद की लड़ाई के वक्त) जख्म पर कौनसी दवा इस्तेमाल की गई थी। उन्होंने फरमाया कि इसके बारे में मुझ से ज्यादा जानने वाला कोई आदमी नहीं रहा। अली रजि. ढ़ाल में पानी लाते और फातमा रजि. आपके चेहरे मुबारक से खून धोती थीं, फिर एक चटाई जलाई गयी और आपके जख्म में उसे भर दिया गया।

١٨٠ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ ٱلسَّاعِدِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَأَلَهُ ٱلنَّاسُ: بِأَيِّ شَيْءٍ دُووِيَ جُرْحُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ؟ فَقَالَ: مَا بَقِيَ أَحَدٌ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، كَانَ عَلِيٌّ يَجِيءُ بِتُرْسِهِ فِيهِ مَاءٌ، وَفَاطِمَةُ تَغْسِلُ عَنْ وَجْهِهِ ٱلدَّمَ، وأُخِذَ حَصِيرٌ فَأُحْرِقَ، فَحُشِيَ بِهِ جُرْحُهُ. [رواه البخاري: ٢٤٣]

फायदे : मालूम हुआ कि खून को रोकने के लिए चटाई की राख बेहतरीन दवा है। (अत्तीब 5722)। नीज दवा करना भरोसे के खिलाफ नहीं।

बाब 57 : मिस्वाक (दातून) करना।

٥٧ - باب: ٱلسِّوَاكُ

181 : अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ तो आपको मिस्वाक करते देखा, मिस्वाक आपके मुंह में थी, आप ओ ओ की आवाज निकला रहे थे, जैसे कि कै (उल्टी) कर रहे हों।

١٨١ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَيْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ، فَوَجَدْتُهُ يَسْتَنُّ بِسِوَاكٍ بِيَدِهِ، يَقُولُ أُعْ أُعْ، وَٱلسِّوَاكُ فِي فِيهِ، كَأَنَّهُ يَتَهَوَّعُ. [رواه البخاري: ٢٤٤]

फायदे : वुजू, नमाज, तिलावत, कुरआन, बेदारी, मुंह की खराबी में बल्कि हर वक्त मिस्वाक करना सुन्नत है, नजर की तेजी, मसूड़ों की मजबूती और किसी बात के याद रखने के लिए तो बहुत फायदेमन्द है, जिसको नई खोज ने भी माना है।

182 : हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब रात को उठते तो पहले अपने मुंह को मिस्वाक से साफ करते थे।

١٨٢ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ، إِذَا قَامَ مِنَ ٱللَّيْلِ، يَشُوصُ فَاهُ بِالسِّوَاكِ. [رواه البخاري: ٢٤٥]

बाब **58** : बड़े आदमी को पहले मिस्वाक देना।

٥٨ - باب: دَفْعُ ٱلسِّوَاكِ إِلَى ٱلأَكْبَرِ

183 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैंने ख्वाब में अपने आपको मिस्वाक करते देखा, मेरे पास दो आदमी आये, उनमें से एक उम्र में दूसरे से बड़ा था। मैंने उनमें से छोटे को मिस्वाक दे दी तो मुझ से कहा गया कि बड़े को दीजिए। तब मैंने वह मिस्वाक बड़े को दे दी।

١٨٣ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (أَرَانِي أَتَسَوَّكُ بِسِوَاكٍ، فَجَاءَنِي رَجُلاَنِ، أَحَدُهُمَا أَكْبَرُ مِنَ ٱلآخَرِ، فَنَاوَلْتُ ٱلسِّوَاكَ ٱلأَصْغَرَ مِنْهُمَا، فَقِيلَ لِي: كَبِّرْ، فَدَفَعْتُهُ إِلَى ٱلأَكْبَرِ مِنْهُمَا). [رواه البخاري: ٢٤٦]

फायदे : मालूम हुआ कि खाने, पीने और बातचीत करने में बड़ों को पहले मौका दिया जाना चाहिए, अगर तरतीब से बैठे हों तो दायीं तरफ से शुरू किया जाये, इससे यह भी मालूम हुआ कि दूसरे की मिस्वाक इस्तेमाल की जा सकती है, लेकिन इसे धोकर साफ कर लेना बेहतर है।

बाब **59** : बावुजू सोने की फजीलत।

٥٩ - باب: فَضْلُ مَنْ بَاتَ عَلَى ٱلوُضُوءِ

184 : बरा बिन आजिब रजि. से रिवायत

١٨٤ : عَنِ ٱلْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ

رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (إِذَا أَتَيْتَ مَضْجَعَكَ، فَتَوَضَّأْ وُضُوءَكَ لِلصَّلَاةِ، ثُمَّ ٱضْطَجِعْ عَلَى شِقِّكَ ٱلأَيْمَنِ، ثُمَّ قُلْ: ٱللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَى مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ، ٱللَّهُمَّ آمَنْتُ بِكِتَابِكَ ٱلَّذِي أَنْزَلْتَ، وَنَبِيِّكَ ٱلَّذِي أَرْسَلْتَ. فَإِنْ مُتَّ مِنْ لَيْلَتِكَ، فَأَنْتَ عَلَى ٱلْفِطْرَةِ، وَٱجْعَلْهُنَّ آخِرَ مَا تَتَكَلَّمُ بِهِ). قَالَ: فَرَدَّدْتُهَا عَلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَلَمَّا بَلَغْتُ: ٱللَّهُمَّ آمَنْتُ بِكِتَابِكَ ٱلَّذِي أَنْزَلْتَ، قُلْتُ: وَرَسُولِكَ، قَالَ: (لَا، وَنَبِيِّكَ ٱلَّذِي أَرْسَلْتَ). [رواه البخاري: ٢٤٧]

है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से फरमाया, जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो पहले नमाज की तरह वुजू करो और अपने दायें पहलू पर लेट कर यह दुआ पढ़ो। ऐ अल्लाह तेरे सवाब के शौक में और तेरे अजाब से डरते हुये मैंने अपने आपको तेरे हवाले कर दिया और तुझे ही ठिकाना देने वाला बना लिया। तुझ से भाग कर कहीं पनाह नहीं, मगर तेरे ही पास, ऐ अल्लाह! मैं इस किताब पर ईमान लाया, जो तू ने उतारी और तेरे इस नबी पर यकीन किया, जिसे तूने भेजा।

अब अगर तू इस रात मर जाये तो इस्लाम के तरीके पर मरेगा, नीज यह दुआ सब बातों से फारिग होकर पढ़, हजरत बरा रजि. कहते हैं कि मैंने यह कलेमात आपके सामने दोहराये, जब मैं उस जगह पहुंचा, ''आमनतु बे किताबेकल्लजी अंजलता'' उसके बाद मैंने व रसूलेका कह दिया। आपने फरमाया, नहीं बल्कि यूँ कहो ''व नबिय्ये कल्लजी अरसलता''

फायदे : मालूम हुआ कि मसनून दुआयें और मासूरा जिक्रों में जो अलफाज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मनकूल हैं, उनमें हेर-फेर नहीं करना चाहिए, हदीस में मजकूरा फजीलत

उस आदमी को मिलती है जो जागते हुये आखिर में वुजू करता और आखरी गुफ्तगू के तौर पर यह दुआ पढ़ता है, नीज दायीं तरफ लैटने से ज्यादा गफ्लत नहीं होती और शब खेजी के लिए आंख खुल जाती है, नीज इससे इमाम बुखारी का इशारा है कि यह हदीस किताबुल वुजू का खात्मा है।

किताबुल गुस्ल

गुस्ल (नहाने) का बयान

बाब 1 : गुस्ल से पहले वुजू करना।

١ - باب: ٱلْوُضُوءُ قَبْلَ ٱلْغُسْلِ

185 : आइशा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नापाकी का गुस्ल फरमाते तो पहले दोनों हाथ धोते, फिर नमाज के वुजू की तरह वुजू करते, उसके बाद अपनी उंगलियाँ पानी में डालकर बालों की जड़ों का खिलाल करते, फिर दोनों हाथों से तीन चुल्लू पानी लेकर अपने सर पर डालते, उसके बाद अपने तमाम जिस्म पर पानी बहाते।

١٨٥ : عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ ورضي عنها: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا ٱغْتَسَلَ مِنَ ٱلْجَنَابَةِ، بَدَأَ فَغَسَلَ يَدَيْهِ، ثُمَّ يَتَوَضَّأُ كَمَا يَتَوَضَّأُ لِلصَّلاَةِ، ثُمَّ يُدْخِلُ أَصَابِعَهُ فِي ٱلْمَاءِ، فَيُخَلِّلُ بِهَا أُصُولَ الشَّعْرِ، ثُمَّ يَصُبُّ عَلَى رَأْسِهِ ثَلاَثَ غُرَفٍ بِيَدَيْهِ، ثُمَّ يُفِيضُ ٱلْمَاءَ عَلَى جِلْدِهِ كُلِّهِ.

[رواه البخاري: ٢٤٨]

फायदे : गुस्ल में बदन पर पानी बहाने से फर्ज अदा हो जाता है, लेकिन सुन्नत तरीका यह है कि पहले वुजू किया जाये।

---

186 : मैमूना रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (गुस्ल के वक्त) पहले नमाज के वुजू की तरह वुजू किया, लेकिन

١٨٦ : عَنْ مَيْمُونَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا زَوْجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: تَوَضَّأَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وُضُوءَهُ لِلصَّلاَةِ، غَيْرَ رِجْلَيْهِ، وَغَسَلَ فَرْجَهُ وَمَا أَصَابَهُ مِنَ ٱلأَذَى، ثُمَّ أَفَاضَ عَلَيْهِ ٱلْمَاءَ، ثُمَّ

पांव नहीं धोये, अलबत्ता अपनी शर्मगाह और जिस्म पर लगने वाली गन्दगी को धोया, फिर अपने ऊपर पानी बहाया, उसके बाद गुस्ल की जगह से अलग होकर अपने दोनों पांव धोये। आपका नापाकी का गुस्ल यही था।

نَحّى رِجْلَيْهِ، فَغَسَلَهُمَا، هٰذِهِ غُسْلُهُ مِنَ ٱلْجَنَابَةِ. [رواه البخاري: ٢٤٩]

फायदे : गुस्ल के लिए जरूरी है कि पहले पर्दे का इन्तिजाम करे, फिर दोनों हाथ धोये जायें, उसके बाद दायें हाथ से पानी डालकर शर्मगाह को धोया जाये और उस पर लगी हुई गन्दगी को दूर किया जाये। फिर वुज़ू का अहतमाम हो, लेकिन पांव ना धोये जायें। फिर बालों की जड़ों तक पानी पहुंचाकर उन्हें अच्छी तरह तर किया जाये, फिर तमाम बदन पर पानी बहाया जाये। आख़िर में गुस्ल की जगह से अलग होकर पांव धोये जायें।

(अलगुस्ल 272, 281)

नोट : गुस्ल खाना साफ हो तो पांव वहां भी धोये जा सकते हैं।

बाब 2 : मर्द का अपनी बीवी के साथ गुस्ल करना।

٢ - بابٌ: غُسْلُ ٱلرَّجُلِ مَعَ ٱمْرَأَتِهِ

197 : आइशा रजि. से रिवायत है। उन्होनें फरमाया कि मैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (दोनों मिलकर) एक बर्तन से गुस्ल करते थे, वो बर्तन क्या था, एक बड़ा प्याला, जिसे फरक कहा जाता था।

١٨٧ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قَالَتْ: كُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَٱلنَّبِيُّ ﷺ مِنْ إِناءٍ وَاحِدٍ، مِنْ قَدَحٍ يُقَالُ لَهُ ٱلْفَرَقُ. [رواه البخاري: ٢٥٠]

बाब 3 : एक साअ या इसके करीब (पानी) से गुस्ल करना।

٣ - بابٌ: ٱلْغُسْلُ بِالصَّاعِ وَنَحْوِهِ

188 : आइशा रजि. से ही रिवायत है कि उनसे जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नापाकी के गुस्ल की हालत पूछी गयी तो उन्होंने एक सा के बराबर (पानी का) बर्तन मंगवाया, उससे गुस्ल किया और अपने सर पर पानी बहाया, गुस्ल के बीच हजरत आइशा रजि. और सवाल करने वाले के बीच पर्दा लगा था।

١٨٨ : وعنها رضي الله عنها أنّها سُئِلَتْ عَنْ غُسْلِ النَّبِيِّ ﷺ، فَدَعَتْ بِإِنَاءٍ نَحْوٍ مِنْ صَاعٍ، فَاغْتَسَلَتْ، وَأَفَاضَتْ عَلَى رَأْسِهَا، وَبَيْنَهَا وبين السائِلِ حِجَابٌ. [رواه البخاري: ٢٥١]

फायदे : अगर आदमी ज्यादा खर्च न करे तो एक साअ पानी से बखूबी गुस्ल हो सकता है। इस हदीस पर हदीस का इनकार करने वाले बहुत ऐतराज करते हैं कि इसमें लोगों के सामने गुस्ल करने का बयान है। लिहाजा हदीसों की सच्चाई बेकार है। हालांकि गुस्ल पस पर्दा किया गया है और जिनके सामने आपने गुस्ल किया, वो आपके मोहरिम थे। क्योंकि एक तो रजाई भांजा और दूसरा रजाई भाई था। (फतहुलबारी, सफा 365, जिल्द 1)

---

189 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है कि उनसे किसी आदमी ने गुस्ल के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि तुझे एक साअ पानी काफी है। एक दूसरा आदमी बोला, मुझे तो काफी नहीं है। जाबिर रजि. ने फरमाया कि यह मिकदार उस आदमी को काफी हो जाती थी, जिसके बाल भी तुझ से ज्यादा थे। और वो खुद भी तुझसे बेहतर था, यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। फिर जाबिर रजि. ने एक कपड़े में हमारी इमामत कराई।

١٨٩ : عن جابِرِ بنِ عبدِ الله رضي الله عنهما أنّه سألَهُ رَجُلٌ عن الغسل؟ فقَالَ: يَكْفِيكَ صَاعٌ. فَقَالَ رَجُلٌ: ما يَكْفِيني، فَقَالَ جابِرٌ: كَانَ يَكْفِي مَنْ هُوَ أَوْفَى مِنْكَ شَعَرًا وَخَيْرٌ مِنْكَ، ثُمَّ أَمَّهُمْ فِي ثَوْبٍ. [رواه البخاري: ٢٥٢]

फायदे : मालूम हुआ कि हदीस के खिलाफ झगड़ने वाले को सख्ती से समझाने में कोई हर्ज नहीं, जैसा कि हजरत जाबर रजि. ने हसन बिन मुहम्मद बिन हनफिया को समझाया।

(फतहुलबारी, सफा 366, जिल्द 1)

बाब 4 : सर पर तीन बार पानी बहाने का बयान।

٤ - باب: مَنْ أفاضَ عَلَى رَأْسِهِ ثلاثاً

190 : जुबैर बिन मुत्इम रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं तो अपने सर पर तीन बार पानी बहाता हूँ, यह कह कर आपने अपने दोनों हाथों से इशारा फरमाया।

١٩٠ : عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَمَّا أَنَا فَأُفِيضُ عَلَى رَأْسِي ثَلاَثًا). وَأَشَارَ بِيَدَيْهِ كِلْتَيْهِمَا. [رواه البخاري: ٢٥٤]

बाब 5 : नहाते वक्त हिलाब (दही वगैरह का इस्तेमाल) या खुश्बू से इब्तेदा करना।

٥ - باب: مَنْ بَدَأَ بِالحِلاَبِ أَوِ ٱلطِّيبِ عِنْدَ ٱلْغُسْلِ

191 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नापाकी का गुस्ल करने का इरादा फरमाते तो कोई चीज हिलाब जैसी मंगवाते और उसे अपने हाथ में लेकर पहले सर के दायें हिस्से से शुरू करते, फिर बायें तरफ (लगाते थे) उसके बाद अपने दोनों हाथों से तालू पर मालिश करते।

١٩١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ إِذَا ٱغْتَسَلَ مِنَ ٱلْجَنَابَةِ، دَعَا بِشَيْءٍ نَحْوَ ٱلْحِلاَبِ، فَأَخَذَ بِكَفِّهِ، فَبَدَأَ بِشِقِّ رَأْسِهِ ٱلأَيْمَنِ، ثُمَّ ٱلأَيْسَرِ، فَقَالَ بِهِمَا عَلَى وَسَطِ رَأْسِهِ. [رواه البخاري: ٢٥٨]

बाब 6 : हमबिस्तर होने के बाद दोबारा बीवी के पास जाना।

٦ - باب: إذا جامع ثم عاد

192 : आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुश्बू लगाया करती थी, बाद में आप अपनी सब बीवियों के पास दौरा फरमाते फिर दूसरे दिन एहराम बांधते, इसके बा-वुजूद आपके जिस्म मुबारक से खुशबू की महक निकल रही होती थी।

١٩٢ : وعنها رضي الله عنها قالت: كنت أطيب رسول الله ﷺ، فيطوف على نسائه، ثم يصبح محرما ينضخ طيبا. [رواه البخاري: ٢٦٧]

फायदे : मुस्लिम में है कि जब आदमी हम बिस्तर होने के बाद दोबारा बीवी के पास जाये तो वुजू कर ले, लेकिन वुजू करने का हुक्म वाजिब और फर्ज नहीं है। (फतहुलबारी, 377/1)

193: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों का रात दिन की एक घड़ी में दौरा कर लेते बावजूद यह कि आपकी ग्यारह बीवियाँ थी। एक दूसरी रिवायत में नौ औरतों का जिक्र है। अनस रजि. से पूछा गया, क्या आप में इस कद्र ताकत थी? उन्होंने जवाब दिया, हम तो कहा करते थे आपको तीस मर्दों की ताकत मिली है।

١٩٣ : عن أنس رضي الله عنه قال: كان النبي ﷺ يدور على نسائه في الساعة الواحدة، من الليل والنهار، وهن إحدى عشرة. وفي رواية: تسع نسوة. قيل لأنس: أو كان يطيقه؟ قال: كنا نتحدث أنه أعطي قوة ثلاثين. [رواه البخاري: ٢٦٨]

फायदे : ग्यारह से मुराद नौ बीवियाँ और दो आपकी कनीज हैं। एक का नाम मारिया और दूसरी का रेहाना था।

बाब 7 : खुशबू लगाकर नहाना।

٧ - باب: مَنْ تَطَيَّبَ واغتسلَ

194 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया: गोया मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मांग में खुशबू की चमक को देख रही हूँ, जब आप एहराम बांध रहे होते।

١٩٤ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى وَبِيصِ الطِّيبِ، فِي مَفْرِقِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ مُحْرِمٌ. [رواه البخاري: ٢٧١]

फायदे : बाब से लगाव इस तरह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एहराम का गुस्ल किया था। मालूम हुआ कि पहले खुशबू लगाई फिर गुस्ल फरमाया।

बाब 8 : नहाने के दौरान बालों में खिलाल करना।

٨ - باب: تَخْلِيلُ ٱلشَّعَرِ أثناء الغُسلِ

195 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नापाकी का गुस्ल फरमाते तो पहले अपने दोनों हाथ धोते और नमाज के वुजू जैसा वुजू फरमाते, फिर अपने दोनों हाथों से बालों का खिलाल करते, जब आप समझ लेते कि खाल तर हो चुकी है तो उस पर तीन बार पानी बहाते, फिर अपना बाकी जिस्म धोते।

١٩٥ : وعَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا ٱغْتَسَلَ مِنَ ٱلجَنَابَةِ، غَسَلَ يَدَيْهِ، وَتَوَضَّأَ وُضُوءَهُ لِلصَّلاَةِ، ثُمَّ ٱغْتَسَلَ، ثُمَّ يُخَلِّلُ بِيَدَيْهِ شَعَرَهُ، حَتَّى إِذَا ظَنَّ أَنَّهُ قَدْ أَرْوَى بَشَرَتَهُ، أَفَاضَ عَلَيْهِ ٱلمَاءَ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ غَسَلَ سَائِرَ جَسَدِهِ. [رواه البخاري: ٢٧٢]

बाब 9 : मस्जिद में आने के बाद नापाकी का इल्म हो तो फौरन निकल जायें और तय्यमुम ना करें।

٩ - باب: إذا ذكر في ٱلمسجد أنّه جُنُبٌ يخرُجُ كما هُو ولا يتيمَّمُ

١٩٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أُقِيمَتِ ٱلصَّلاَةُ وَعُدِّلَتِ ٱلصُّفُوفُ قِيَامًا، فَخَرَجَ إِلَيْنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، فَلَمَّا قَامَ فِي مُصَلَّاهُ، ذَكَرَ أَنَّهُ جُنُبٌ، فَقَالَ لَنَا: (مَكَانَكُمْ). ثُمَّ رَجَعَ فَاغْتَسَلَ، ثُمَّ خَرَجَ إِلَيْنَا وَرَأْسُهُ يَقْطُرُ، فَكَبَّرَ فَصَلَّيْنَا مَعَهُ. [رواه البخاري، ٢٧٥]

196: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार नमाज के लिए तकबीर कही गई, जब सफें बराबर हो गयीं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये, मुसल्ले पर खड़े होते ही आपको याद आया कि मैं नापाकी से हूँ। चूनांचे आपने हम से फरमाया, अपनी जगह पर रहो, फिर आप लौट गये और जल्दी से गुस्ल कर के वापिस तशरीफ लाये और आपके सर मुबारक से पानी टपक रहा था। आपने (नमाज) के लिए अल्लाहु अकबर कहा, और हम सब ने आपके साथ नमाज अदा की।

फायदे : इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अगर नापाकी के गुस्ल में देर हो जाये तो कोई हर्ज नहीं है। नीज यह भी मालूम हुआ कि अजान या तकबीर के बाद किसी सही बहाने की बिना पर मस्जिद से निकलने में कोई हर्ज नहीं। (अलअजान 639)

١٠ - باب: مَن ٱغْتَسَلَ عُرْيَانًا وَحْدَهُ فِي خَلْوَة

बाब 10 : तन्हाई में नंगे नहाना।

١٩٧ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ يَغْتَسِلُونَ عُرَاةً، يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ، وَكَانَ مُوسَى يَغْتَسِلُ وَحْدَهُ، فَقَالُوا: وَٱللهِ مَا يَمْنَعُ مُوسَى أَنْ يَغْتَسِلَ مَعَنَا إِلاَّ أَنَّهُ آدَرُ، فَذَهَبَ مَرَّةً يَغْتَسِلُ، فَوَضَعَ ثَوْبَهُ عَلَى حَجَرٍ،

197 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: बनी इस्राईल एक दूसरे के सामने नंगे नहाया करते थे। जबकि मूसा अलैहि. अकेले नहाते। बनी इस्राईल ने कहा, अल्लाह की

قَرَّ ٱلْحَجَرُ بِثَوْبِهِ، فَخَرَجَ مُوسَى فِي إِثْرِهِ، يَقُولُ: ثَوْبِي يَا حَجَرُ، ثَوبي يَا حَجَر، حَتَّى نَظَرَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ إِلَى مُوسَى، فَقَالُوا: وَٱللهِ مَا بِمُوسَى مِنْ بَأسٍ، وَأَخَذَ ثَوْبَهُ، فَطَفِقَ بِالْحَجَرِ ضَرْبًا). فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: وَٱللهِ إِنَّهُ لَنَدَبٌ بِالْحَجَرِ، سِتَّةٌ أَوْ سَبْعَةٌ، ضَرْبًا بِالْحَجَرِ. [رواه البخاري: ٢٧٨]

कसम! मूसा अलैहि. हमारे साथ इसलिए गुस्ल नहीं करते कि आप किसी बीमारी में मुब्तला हैं, इत्तिफाक से एक दिन मूसा अलैहि. ने नहाते वक्त अपना लिबास एक पत्थर पर रख दिया। हुआ यूँ कि वह पत्थर उनका कपड़ा ले भागा, मूसा अलैहि. उसके पीछे यह कहते हुये दौड़े, ऐ पत्थर! मेरे कपड़े दे दे, ऐ पत्थर! मेरे कपड़े दे दे, यहां तक कि बनी इस्राईल ने हजरत मूसा अलैहि. को देख लिया और कहने लगे, अल्लाह की कसम मूसा अलैहि. को कोई बीमारी नहीं, मूसा अलैहि. ने अपने कपड़े लिये और पत्थर को मारने लगे। हजरत अबू हुरैरा रजि. ने फरमाया, अल्लाह की कसम! मूसा अलैहि. की मार के छः या सात निशान उस पत्थर पर अब भी मौजूद हैं।

फायदे : बनी इस्राईल का खयाल था कि हजरत मूसा अलैहि. के खुसिये (गुप्तांग) बढ़े हुए हैं। इसलिए शर्म के मारे हमारे साथ नहीं नहाते, कहीं ऐब जाहिर न हो जाये। इस हदीस से मालूम हुआ कि किसी जरूरत के पेश नजर दूसरों के सामने सतर खोलना जाइज है। (फतहुलबारी, सफा **386**, जिल्द **1**)

---

١٩٨ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (بَيْنَا أَيُّوبُ يَغْتَسِلُ عُرْيَانًا، فَخَرَّ عَلَيْهِ جَرَادٌ مِنْ ذَهَبٍ، فَجَعَلَ أَيُّوبُ يَحْتَثِي فِي ثَوْبِهِ، فَنَادَاهُ

198 : अबू हुरैरा रजि. से ही यह दूसरी रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, एक बार अय्यूब अलैहि. नंगे नहा रहे

रَبُّهُ: يَا أَيُّوبُ، أَلَمْ أَكُنْ أَغْنَيْتُكَ عَمَّا تَرَى؟ قَالَ: بَلَى وَعِزَّتِكَ، وَلٰكِنْ لاَ غِنَى بِي عَنْ بَرَكَتِكَ). [رواه البخاري: ٢٧٩]

थे कि उन पर सोने की मकड़ियाँ बरसने लगीं। अय्यूब अलैहि. उन्हें अपने कपड़े में समेटने लगे। इस मौके पर अल्लाह तआला ने आवाज दी, ऐ अय्युब! जो तुम देख रहे हो क्या मैंने तुम्हें उनसे बे-नियाज नहीं किया। अय्युब अलैहि. ने कहा! मुझे तेरी इज्जत की कसम! क्यों नहीं, मगर मैं तेरे करम से बे-नियाज नहीं हो सकता हूँ।

फायदे : इस हदीस से अल्लाह तआला के बात करने की खूबी भी साबित होती है (अत्तोहीद : 7493)। नीज यह भी मालूम हुआ कि इस खूबी में आवाज भी है।

बाब 11 : लोगों के सामने नहाते वक्त पर्दा करना।

١١ - باب: التَّسَتُّرُ فِي الغُسْلِ عِنْدَ النَّاسِ

١٩٩ : عَنْ أُمِّ هَانِئٍ بِنْتِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ذَهَبْتُ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ عَامَ ٱلْفَتْحِ، فَوَجَدْتُهُ يَغْتَسِلُ وَفَاطِمَةُ تَسْتُرُهُ، فَقَالَ: (مَنْ هٰذِهِ؟). فَقُلْتُ: أَنَا أُمُّ هَانِئٍ. [رواه البخاري: ٢٨٠]

199 : उम्मे हानी बिन्ते अबू तालिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं फतहे मक्का के साल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गयी तो मैंने आपको गुस्ल करते हुये पाया और फातिमा रजि. आप पर पर्दा किये हुये थीं, आपने फरमाया यह कौन है? मैंने अर्ज किया जनाब मैं हूँ उम्मे हानी रजि.।

बाब 12: नापाक का पसीना और मुसलमान का नापाक ना होना।

١٢ - باب: عَرَقِ الجُنُبِ وَأَنَّ المُؤمِنَ لا يَنْجُس

٢٠٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ لَقِيَهُ فِي بَعْضِ

200 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

طُرُقِ ٱلْمَدِينَةِ وَهُوَ جُنُبٌ، قَالَ: فَانْخَنَسْتُ مِنْهُ، فَذَهَبْتُ فَاغْتَسَلْتُ ثُمَّ جِئْتُ، فَقَالَ: (أَيْنَ كُنْتَ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟). قَالَ: كُنْتُ جُنُبًا، فَكَرِهْتُ أَنْ أُجَالِسَكَ وَأَنَا عَلَى غَيْرِ طَهَارَةٍ، فَقَالَ: (سُبْحَانَ ٱللهِ، إِنَّ ٱلْمُؤْمِنَ لاَ يَنْجُسُ). [رواه البخاري: ٢٨٣]

वसल्लम उन्हें मदीना के किसी रास्ते में मिले और खुद अबू हुरैरा रजि. नापाकी से थे, वो कहते हैं कि मैं आपसे अलग हो गया, जब गुस्ल करके वापस आया तो आपने पूछा, अबू हुरैरा रजि.! तुम कहाँ चले गये थे, अबू हुरैरा रजि. ने अर्ज किया कि मुझे नहाने की जरूरत थी तो मैंने पाकी के बगैर आपके पास बैठना बुरा खयाल किया, आपने फरमाया, सुब्हान अल्लाह! मोमिन किसी हाल में नापाक नहीं होता।

फायदे : इस हदीस से पसीने के पाक होने का सुबूत मिलता है कि जब बदन पाक है तो जो बदन से निकले, उसे भी पाक होना चाहिए। याद रहे कि नापाक की गन्दगी हुक्मी है और काफिर की एतकादी। जब तक बदन पर कोई हकीकी गन्दगी न हो, नापाक नहीं होता।

---

١٣ باب: مَبِيتِ الْجُنُبِ إِذَا تَوَضَّأَ....

बाब 13 : जनाबत के बाद सिर्फ वुजू करके सोना।

٢٠١ : عَنْ عُمَرَ بْنِ ٱلْخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: سَأَلَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ: أَيَرْقُدُ أَحَدُنَا وَهُوَ جُنُبٌ؟ قَالَ: (نَعَمْ إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرْقُدْ وَهُوَ جُنُبٌ). [رواه البخاري: ٢٨٧]

201 : उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या हम में से कोई नापाकी की हालत में सो सकता है? आपने फरमाया, ''हाँ'' जब तुममें कोई नापाकी की हालत में हो तो वुजू कर ले और सो जाये।

फायदे : दूसरी हदीस में है कि वह पहले शर्मगाह से गन्दगी को धो ले

फिर नमाज के वुजू की तरह वुजू करे, लेकिन इस वुजू से नमाज नहीं पढ़ सकता, क्योंकि नापाकी की हालत में नहाये बगैर नमाज अदा करने की इजाजत नहीं।

---

١٤ - باب: إِذَا ٱلْتَقَى ٱلْخِتَانَانِ

बाब 14 : जब (बीवी और शौहर के) खितान (गुप्तांग) मिल जाये (तो गुस्ल जरूरी होना)

٢٠٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِذَا جَلَسَ بَيْنَ شُعَبِهَا ٱلأَرْبَعِ، ثُمَّ جَهَدَهَا، فَقَدْ وَجَبَ ٱلْغُسْلُ). [رواه البخاري: ٢٩١]

202 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब मर्द (अपनी) औरत के चारों हिस्सों के बीच बैठ गया, फिर उसके साथ कोशिश की यानी दुखूल किया तो यकीनन गुस्ल जरूरी हो गया।

फायदे : बाज हजरात ने यह बात इख्तियार की है कि सिर्फ दुखूल से गुस्ल वाजिब नहीं होता, जब तक मनी ना निकले। शायद उन्हें यह हदीस न पहुंची हो।

किताबुल हैज

हैज (माहवारी, M.C.) का बयान

बाब 1 : हैज वाली औरत को हज के दौरान क्या करना चाहिए।

١ - باب: الأمرُ بِالنُّفَساءِ إذا نفِسْنَ

203 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम सब मदीना से सिर्फ हज के इरादे से निकले और जब मकामे सरिफ पर पहुंचे तो मुझे हैज आ गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ लाये तो मैं रो रही थी, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, तुम्हारा क्या हाल है? क्या तुझे हैज आ गया है? मैंने अर्ज किया जी हाँ! आपने फरमाया कि यह मामला तो अल्लाह तआला ने हजरत आदम अलैहि. की बेटियों पर लिख दिया है। इसलिए हाजियों के सब काम करती रहो, अलबत्ता काबा का तवाफ ना करना। आइशा रजि. ने फरमाया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बीवियों की तरफ से एक गाय की कुरबानी दी।

٢٠٣ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَرَجْنَا لاَ نَرَى إِلَّا ٱلْحَجَّ، فَلَمَّا كُنْتُ بِسَرِف حِضْتُ، فَدَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَأَنَا أَبْكِي، قَالَ: (مَا لَكِ أَنُفِسْتِ؟). قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: (إِنَّ هٰذَا أَمْرٌ كَتَبَهُ ٱللهُ عَلَى بَنَاتِ آدَمَ، فَاقْضِي مَا يَقْضِي ٱلْحَاجُّ، غَيْرَ أَنْ لاَ تَطُوفِي بِالْبَيْتِ). قَالَتْ: وَضَحَّى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنْ نِسَائِهِ بِالْبَقَرِ. [رواه البخاري: ٢٩٤]

फायदे : मालूम हुआ कि हैज वाली औरत बैतुल्लाह के चक्कर के

अलावा दीगर हज के अरकान अदा करने की पाबन्द है।
(अल हज 1650)

बाब 2 : हैज वाली औरत का अपने शौहर के सर को धोना और उसमें कंघी करना।

٢ - باب: غسل الحائض رأس زوجها وترجيله

204 : आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं हैज की हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर मुबारक में कंघी किया करती थी।

٢٠٤ : وعنها رضي الله عنها قالت: كنت أرجل رأس رسول الله ﷺ وأنا حائض. [رواه البخاري: ٢٩٥]

फायदे : मालूम हुआ कि हैज वाली औरत घर का काम काज और शौहर की दूसरी तमाम खिदमते सरअंजाम दे सकती है।

205 : आइशा रजि. से ही एक दूसरी रिवायत में यूँ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ फरमा होते और अपना सर मुबारक उनके करीब कर देते और वह खुद हैज की हालत में अपने कमरे में रहते हुये उन्हें कंघी कर दिया करती थीं।

٢٠٥ : وفي رواية: وهو مجاور في المسجد، يدني لها رأسه، وهي في حجرتها، فترجله وهي حائض. [رواه البخاري: ٢٩٦]

बाब 3 : मर्द का अपनी हैज वाली बीवी की गोद में (तकिया लगाकर) कुरआन पढ़ना।

٣ - باب: قراءة الرجل في حجر امرأته وهي حائض

206 : आइशा रजि. से ही रिवायत है,

٢٠٦ : وعنها رضي الله عنها

उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी गोद में तकिया लगा लेते थे। जबकि मैं हैज से होती, फिर आप कुरआन मजीद तिलावत फरमाते थे।

قَالَتْ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يَتَّكِئُ فِي حِجْرِي وَأَنَا حَائِضٌ، ثُمَّ يَقْرَأُ ٱلْقُرْآنَ. [رواه البخاري: ٢٩٧]

फायदे : हैज वाली औरत और नापाक आदमी कुरआन मजीद को हाथ नहीं लगा सकता, अलबत्ता उसकी गोद में तकिया लगाकर कुरआन पढ़ना दूसरी बात है।

बाब 4 : हैज को निफास कहना।

٤ - باب: مَنْ سَمَّى النِّفاسَ حَيْضًا

207 : उम्मे सलमा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक ही चादर में लेटी हुई थी कि अचानक मुझे हैज आ गया, मैं आहिस्ता से सरक गयी और अपने हैज के कपड़े पहन लिये तो आपने फरमाया, क्या तुम्हें निफास आ गया है। मैंने अर्ज किया, जी हाँ! फिर आपने मुझे बुलाया और मैं उसी चादर में आपके साथ लेट गयी।

٢٠٧ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: بَيْنَا أَنَا مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، مُضْطَجِعَةٌ فِي خَمِيصَةٍ، إِذْ حِضْتُ، فَانْسَلَلْتُ، فَأَخَذْتُ ثِيَابَ حِيضَتِي، قَالَ: (أَنُفِسْتِ؟). قُلْتُ: نَعَمْ، فَدَعَانِي، فَاضْطَجَعْتُ مَعَهُ فِي ٱلْخَمِيلَةِ. [رواه البخاري: ٢٩٨]

बाब 5 : हैज वाली औरत के साथ लेटना।

٥ - باب: مُبَاشَرَةِ ٱلْحَائِضِ

208 : आइशा रजि. से रिवायत है, फरमाती हैं कि मैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोनों नापाकी की हालत में एक बर्तन

٢٠٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَٱلنَّبِيُّ ﷺ مِنْ إِنَاءٍ وَاحِدٍ، كِلَانَا جُنُبٌ، وَكَانَ يَأْمُرُنِي فَأَتَّزِرُ، فَيُبَاشِرُنِي وَأَنَا

حَائِضٌ، وَكَانَ يُخْرِجُ رَأْسَهُ إِلَيَّ وَهُوَ مُعْتَكِفٌ، فَأَغْسِلُهُ وَأَنَا حَائِضٌ. [رواه البخاري: ٢٩٩، ٣٠١]

से गुस्ल किया करते, इसी तरह मैं हैज से होती और आप हुक्म देते तो मैं इजार पहन लेती, फिर आप मेरे साथ लेट जाते। नीज आप एतकाफ की हालत में अपना सर मुबारक मेरी तरफ कर देते तो मैं उसको धो देती, जबकि मैं खुद हैज से होती।

٢٠٩ : وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهَا - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا - قَالَتْ: كَانَتْ إِحْدَانَا إِذَا كَانَتْ حَائِضًا، فَأَرَادَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَنْ يُبَاشِرَهَا، أَمَرَهَا أَنْ تَتَّزِرَ فِي فَوْرِ حَيْضَتِهَا، ثُمَّ يُبَاشِرُهَا. قَالَتْ: وَأَيُّكُمْ يَمْلِكُ إِرْبَهُ، كَمَا كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يَمْلِكُ إِرْبَهُ. [رواه البخاري: ٣٠٢]

209 : आइशा रजि. से दूसरी रिवायत में यूँ है, फरमाती हैं, हममें से जब किसी औरत को हैज आता और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उससे मिलना चाहते तो उसे हुक्म देते कि अपने हैज की ज्यादती के वक्त इजार पहन ले, फिर उसके साथ लेट जाते। उसके बाद आइशा रजि. ने फरमाया, तुम में से कौन है, जो अपनी ख्वाहिश पर इस कद्र काबू रखता हो, जिस कद्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ख्वाहिश पर काबू रखते थे।

फायदे : मालूम हुआ कि जिसका अपने जोश पर कंट्रोल न हो वह ऐसे मिलने से परहेज करे, कि कहीं हराम काम न हो जाये।

---

٦ - بَابٌ: تَرْكُ ٱلْحَائِضِ ٱلصَّوْمَ

बाब 6: हैज वाली औरत का रोजा छोड़ना।

٢١٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: خَرَجَ عَلَينا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي أَضْحَى، أَو

210 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

فِطْرٍ، إِلَى ٱلْمُصَلَّى، فَمَرَّ عَلَى ٱلنِّسَاءِ، فَقَالَ: (يَا مَعْشَرَ ٱلنِّسَاءِ تَصَدَّقْنَ فَإِنِّي أُرِيتُكُنَّ أَكْثَرَ أَهْلِ ٱلنَّارِ) فَقُلْنَ: وَبِمَ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (تُكْثِرْنَ ٱللَّعْنَ، وَتَكْفُرْنَ ٱلْعَشِيرَ، مَا رَأَيْتُ مِنْ نَاقِصَاتِ عَقْلٍ وَدِينٍ أَذْهَبَ لِلُبِّ ٱلرَّجُلِ ٱلْحَازِمِ مِنْ إِحْدَاكُنَّ) قُلْنَ: وَمَا نُقْصَانُ دِينِنَا وَعَقْلِنَا يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (أَلَيْسَ شَهَادَةُ ٱلْمَرْأَةِ مِثْلَ نِصْفِ شَهَادَةِ ٱلرَّجُلِ؟) قُلْنَ: بَلَى، قَالَ: (فَذٰلِكِ مِنْ نُقْصَانِ عَقْلِهَا، أَلَيْسَ إِذَا حَاضَتْ لَمْ تُصَلِّ وَلَمْ تَصُمْ؟) قُلْنَ: بَلَى، قَالَ: (فَذٰلِكِ مِنْ نُقْصَانِ دِينِهَا). [رواه البخاري: ٣٠٤]

वसल्लम ईदुल अजहा या ईदुल फित्र में निकले और ईदगाह में औरतों की जमाअत पर गुजरे तो आपने फरमाया, औरतों! खैरात करो, क्योंकि मैंने तुम्हें ज्यादातर दोजखी देखा है। वह बोली, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्यों? आपने फरमाया, तुम लानत बहुत करती हो और शौहर की नाशुक्री करती हो। मैंने तुमसे ज्यादा किसी को दीन और अक्ल में कमी रखने के बावजूद पुख्ता राये मर्द की अक्ल को पछाड़ने वाला नहीं पाया। उन्होंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हमारी अक्ल और दीन में क्या नुकसान है? आपने फरमाया: क्या औरत की गवाही शरीअत के मुताबिक मर्द की आधी गवाही के बराबर नहीं? उन्होंने कहा, बेशक है। आपने फरमाया, यही उसकी अक्ल का नुकसान है। फिर आपने फरमाया, क्या यह बात सही नहीं कि जब औरत को हैज आता है तो न नमाज पढ़ती है और ना रोजा रखती है। उन्होंने कहा, हाँ! यह तो है। आपने फरमाया, बस यही उसके दीन का नुकसान है।

٧ - باب: اعتِكَاف المستحاضة

बाब 7 : मुस्तहाजा का एतेकाफ में बैठना।

٢١١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ

211 : आइशा रजि. से रिवायत है कि

عَنْهَا: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ ٱعْتَكَفَ مَعَهُ بَعْضُ نِسَائِهِ، وَهِيَ مُسْتَحَاضَةٌ تَرَى ٱلدَّمَ، فَرُبَّمَا وَضَعَتِ ٱلطَّسْتَ تَحْتَهَا مِنَ ٱلدَّمِ. [رواه البخاري: ٣٠٩]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आपकी एक बीवी ने एतेकाफ किया। जबकि उसे इस्तिहाजा (खून) की बीमारी थी कि वह अकसर खून देखती रहती और आम तौर पर वह अपने नीचे खून की वजह से परात (तश्त) रख लिया करती थीं।

फायदे : जिस आदमी को हर वक्त हवा निकलने की बीमारी हो या जिसके जख्मों से खून बहता रहे, उसका भी यही हुक्म है।

٨ - باب: ٱلطِّيبُ لِلمرأةِ عِنْدَ غُسْلِها مِنَ ٱلمحيضِ

बाब 8 : हैज के नहाने से फरागत के बाद औरत का खुशबू लगाना।

٢١٢ : عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنَّا نُنْهَى أَنْ نُحِدَّ عَلَى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلاَثٍ، إلا عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا، وَلاَ نَكْتَحِلُ، وَلاَ نَتَطَيَّبُ، وَلاَ نَلْبَسُ ثَوْبًا مَصْبُوغًا إِلاَّ ثَوْبَ عَصْبٍ، وَقَدْ رُخِّصَ لَنَا عِنْدَ ٱلطُّهْرِ، إِذَا ٱغْتَسَلَتْ إِحْدَانَا مِنْ مَحِيضِهَا، فِي نُبْذَةٍ مِنْ كُسْتِ أَظْفَارٍ، وَكُنَّا نُنْهَى عَنِ ٱتِّبَاعِ ٱلْجَنَائِزِ. [رواه البخاري: ٣١٣]

212 : उम्मे अतिय्या रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमें किसी मरने वाले पर तीन दिन से ज्यादा गम करने की मनाही की जाती थी। मगर शौहर (के मरने) पर चार महीने दस दिन तक (गम का हुक्म था)। नीज यह भी हुक्म था कि इस दौरान न हम सूरमा लगायें, न खुशबू और न ही कोई रंगीन कपड़ा पहने। मगर जिस कपड़े का धागा बनावट से रंगा हुआ हो, अलबत्ता हैज से पाक होते वक्त यह इजाजत थी कि जब हैज का गुस्ल करे तो थोड़ी सी खुशबू इस्तेमाल कर ले। इसके अलावा जनाजों के साथ जाने की भी मनाही कर दी गयी थी।

फायदे : हमारे हिन्द और पाक में की ज्यादातर औरतें इस नबी के हुक्म

को नजर अन्दाज कर देती हैं। हैज से फरागत के बाद घिन्न और नफरत को दूर करने के लिए खुशबू को जरूर इस्तेमाल करना चाहिए।

बाब 9 : हैज के गुस्ल के वक्त बदन मलने का बयान।

٩ - باب: دَلْكِ ٱلْمَرْأَةِ نَفْسَهَا إِذَا تَطَهَّرَتْ مِنَ ٱلْمَحِيضِ

213 : आइशा रजि. से बयान है एक औरत ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने गुस्ले हैज के बारे में पूछा? आपने उस के सामने गुस्ल की कैफियत बयान की (और) फरमाया कि कस्तूरी लगा हुआ रूई का एक टुकड़ा लेकर उससे पाकी कर, वह कहने लगी, कैसे पाकी करूँ? आपने फरमाया, सुब्हान अल्लाह! पाकिजगी हासिल कर। आइशा रजि. फरमाती हैं कि मैंने उस औरत को अपनी तरफ खींचा और उसे समझाया कि खून की जगह यानी शर्मगाह पर लगा ले।

٢١٣ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ ٱمْرَأَةً سَأَلَتِ ٱلنَّبِيَّ ﷺ عَنْ غُسْلِهَا مِنَ ٱلْمَحِيضِ، فَأَمَرَهَا كَيْفَ تَغْتَسِلُ، قَالَ: (خُذِي فِرْصَةً مِنْ مِسْكٍ، فَتَطَهَّرِي بِهَا). قَالَتْ: كَيْفَ أَتَطَهَّرُ بِهَا؟ قَالَ: (تَطَهَّرِي بِهَا). قَالَتْ: كَيْفَ؟ قَالَ: (سُبْحَانَ ٱللهِ، تَطَهَّرِي). فَٱجْتَبَذْتُهَا إِلَيَّ، فَقُلْتُ: تَتَبَّعِي بِهَا أَثَرَ ٱلدَّمِ. [رواه البخاري: ٣١٤]

फायदे : सही मुस्लिम में है कि औरत को अपने सर पर पानी डालकर खूब मलना चाहिए, ताकि पानी बालों की जड़ों तक पहुंच जाये। फिर अपने तमाम बदन पर पानी बहाये।

बाब 10 : हैज के गुस्ल के वक्त बालों में कंघी करना।

١٠ - باب: ٱمْتِشَاطِ ٱلْمَرْأَةِ عِنْدَ غُسْلِهَا مِنَ ٱلْمَحِيضِ

214 : आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

٢١٤ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَهْلَلْتُ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي حَجَّةِ ٱلْوَدَاعِ، فَكُنْتُ مِمَّنْ تَمَتَّعَ

وَلَمْ يَسُقِ ٱلْهَدْيَ، فَزَعَمَتْ أَنَّهَا حَاضَتْ، وَلَمْ تَطْهُرْ حَتَّى دَخَلَتْ لَيْلَةُ عَرَفَةَ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، هٰذِهِ لَيْلَةُ عَرَفَةَ، وَإِنَّمَا كُنْتُ تَمَتَّعْتُ بِعُمْرَةٍ؟ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ٱنْقُضِي رَأْسَكِ، وَٱمْتَشِطِي، وَأَمْسِكِي عَنْ عُمْرَتِكِ). فَفَعَلْتُ، فَلَمَّا قَضَيْتُ ٱلْحَجَّ، أَمَرَ عَبْدَ ٱلرَّحْمٰنِ، لَيْلَةَ ٱلْحَصْبَةِ، فَأَعْمَرَنِي مِنَ ٱلتَّنْعِيمِ، مَكَانَ عُمْرَتِي ٱلَّتِي نَسَكْتُ. [رواه البخاري: ٣١٦]

वसल्लम के साथ आपके आखरी हज में एहराम बांधा तो मैं उन लोगों में शामिल थी, जिन्होंने तमत्तो के हज की नियत की थी। और अपने साथ कुरबानी नहीं लाये थे (इत्तेफाक से) मुझे हैज आ गया, और अरफा की रात तक पाक ना हुई। तब मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह तो अरफा की रात आ गयी और मैंने तो उमरे का एहराम बांधा था (अब क्या करूं?)। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम अपना सर खोलकर कंघी करो और अपने उमरे के आमाल को खत्म कर दो। चूनांचे मैंने ऐसा ही किया और जब मैं हज से फारिग हो गयी तो आपने महसब की रात (मेरे भाई) अब्दुर्रहमान रजि. को हुक्म दिया तो वह मेरे, उस उमरे के बदले जिसमें मैंने एहराम बांधा था, मुझे तनईम के मकाम से दूसरा उमरा करा लाये।

١١ - باب: نَقْضُ ٱلْمَرْأَةِ شَعَرَهَا عِنْدَ غُسْلِ ٱلْمَحِيضِ

बाब 11 : हैज के गुस्ल के वक्त औरत का अपने बाल खोलना।

٢١٥ : وعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَرَجْنَا مُوَافِينَ لِهِلَالِ ذِي ٱلْحِجَّةِ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُهِلَّ بِعُمْرَةٍ فَلْيُهْلِلْ، فَإِنِّي لَوْلَا أَنِّي أَهْدَيْتُ لَأَهْلَلْتُ بِعُمْرَةٍ). فَأَهَلَّ بَعْضُهُمْ بِعُمْرَةٍ وَأَهَلَّ بَعْضُهُمْ بِحَجٍّ، وَسَاقَتِ ٱلْحَدِيثَ، وَذَكَرَتْ

215 : आइशा रजि. से ही रिवायत है कि हम जुलहिज्जा के चांद के करीब हज को निकले तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो

حَيْضَتِهَا قالت: أَرْسَلَ مَعِي أَخِي عَبْدَ الرَّحْمٰنِ إِلَى التَّنْعِيمِ، فَأَهْلَلْتُ بِعُمْرَةٍ. وَلَمْ يَكُنْ فِي شَيْءٍ مِنْ ذَلِكَ، هَدْيٌ وَلاَ صَوْمٌ وَلاَ صَدَقَةٌ. [رواه البخاري: ٣١٧]

आदमी उमरे का एहराम बांधना चाहे, वह उमरे का एहराम बांध ले और अगर मैं खुद हदी (कुर्बानी का जानवर) न लाया होता तो उमरे का एहराम बांधता। इस पर कुछ लोगों ने उमरे का एहराम बांधा और कुछ ने हज का। उसके बाद आइशा रजि. ने पूरी हदीस बयान की और अपने हैज का भी जिक्र किया और फरमाया कि आपने मेरे साथ मेरे भाई अब्दुर्रहमान रजि. को तनईम के मकाम तक भेजा। वहां से मैंने उमरे का एहराम बांधा और इन सब बातों में न कुरबानी लाजिम हुई, न रोजा रखना पड़ा और न ही सदका देना पड़ा।

फायदे : इस हदीस में हैज के गुस्ल के वक्त अपने बाल खोलने का भी बयान है। जिसे इबारत में कमी की वजह से हजफ कर दिया गया है। क्योंकि इसका बयान ऊपर हो चुका है।

---

١٢ - باب: لا تَقْضِي الحَائِضُ الصَّلاةَ

बाब 12 : हैज वाली औरत का नमाज को कजा न करना।

٢١٦ : وعَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ ٱمْرَأَةً قَالَتْ: أَتَجْزِي إِحْدَانَا صَلاَتَهَا إِذَا طَهُرَتْ؟ فَقَالَتْ: أَحَرُورِيَّةٌ أَنْتِ؟ كُنَّا نَحِيضُ مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَلاَ يَأْمُرُنَا بِهِ، أَوْ قَالَتْ: فَلاَ نَفْعَلُهُ. [رواه البخاري: ٣٢١]

216 : आइशा रजि. से ही रिवायत है कि एक औरत ने उनसे पूछा कि क्या हमें पाकी के दिनों की नमाजें काफी हैं। हैज की नमाजों की कजा जरूरी नहीं? आइशा ने फरमाया : तू हरूरीया (खारजी) मालूम होती है, हमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में हैज आता तो आप हमें नमाज की कजा का हुक्म नहीं देते थे, या फरमाया कि हम कजा नहीं पढ़ती थी।

फायदे : इस मसले पर इत्तिफाक है। अलबत्ता चन्द ख्वारिज का मानना है कि हैज वाली औरत को फरागत के बाद छूटी हुई नमाजों की कजा देना चाहिए। शायद इसी लिए हजरत आइशा रजि. ने सवाल करने वाली को हरूरीया कहा है। क्योंकि यह एक ऐसे मकाम की तरफ निसबत है, जहां खारजी इकट्ठे हुये थे।

बाब 13: हैज के कपड़े पहनने के बावजूद हैज वाली औरत के साथ लेटना।

١٣ - باب: اَلنَّوْمُ مَعَ الحَائِضِ فِي ثِيَابِهَا

217 : उम्मे सलमा रजि. से हैज के बारे में हदीस नम्बर 207 पहले गुजर चुकी है, जिसमें है कि वह हैज की हालत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक चादर में लेटी होती थीं और उसमें यह भी बयान किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोजे की हालत में उनके साथ बोसो किनार (बोसा, चुम्मा लेते थे) करते थे।

٢١٧ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا حديثُ حَيْضِها وهي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ في الخَميلةِ، ثمَّ قالت في هذهِ الرواية: إنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ: كَانَ يُقَبِّلُهَا وَهُوَ صَائِمٌ. [ر: ٢٠٧] [رواه البخاري: ٣٢٢]

बाब 14 :हैजवाली औरत का दोनों ईदों में शामिल होना।

١٤ - باب: شُهُودُ ٱلحَائِضِ ٱلعِيدَيْنِ

218 : उम्मे अतिय्या रजि. से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है कि आजाद औरतें, पर्दा नशीन औरतें और हैज वाली औरतें (सब ईद के लिए) बाहर निकलें और मुसलमानों की अच्छी

٢١٨ : عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (تَخْرُجُ ٱلعَوَاتِقُ، وَذَوَاتُ ٱلخُدُورِ، أَوِ ٱلعَوَاتِقُ ذَوَاتُ ٱلخُدُورِ، وَٱلحُيَّضُ، وَلْيَشْهَدْنَ ٱلخَيْرَ، وَدَعْوَةَ ٱلمُؤْمِنِينَ، وَيَعْتَزِلُ ٱلحُيَّضُ ٱلمُصَلَّى). قِيلَ لَهَا:

मजलिसों और दुआ में शामिल हों। मगर हैज वाली औरतें नमाज की जगह से अलग रहें, किसी ने पूछा कि हैज वाली औरतें भी शरीक हों? तो उम्मे अतिय्या रजि. ने जवाब दिया कि क्या हैज वाली औरतें अरफात और फलां फलां मकामात पर नहीं हाजिर होतीं?

ٱلْحُيَّضُ؟ فَقَالَتْ: أَلَيْسَ يَشْهَدْنَ عَرَفَةَ، وَكَذَا وَكَذَا. [رواه البخاري: ٣٢٤]

बाब 15 : हैज के दिनो के अलावा खाकी और जर्द रंग देखना।

١٥ - باب: ٱلصُّفْرَةُ وَٱلْكُدْرَةُ فِي غَيْرِ أَيَّامِ ٱلْحَيْضِ

219 : उम्मे अतिय्या रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम मटियालापन और जर्दी को कुछ न समझते थे। यानी उसे हैज खयाल न करते थे।

٢١٩ : وعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنَّا لاَ نَعُدُّ ٱلْكُدْرَةَ وَٱلصُّفْرَةَ شَيْئًا. [رواه البخاري: ٣٢٦]

फायदे : अगर खास दिनों में इस रंग का खून निकले तो उसे हैज ही समझा जायेगा, अगर दूसरे दिनों में देखा जाये तो उसे हैज न खयाल किया जाये।

बाब 16 : इफाजा का चक्कर (तवाफ) लगाने के बाद हैज आना।

١٦ - باب: ٱلْمَرْأَةُ تَحِيضُ بَعْدَ ٱلإِفَاضَةِ

220 : आइशा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! (आपकी बीवी) सफिय्या को हैज आ गया है, आपने फरमाया, शायद वह हमें रोक

٢٢٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا زَوْجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ. أَنَّهَا قَالَتْ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ صَفِيَّةَ بِنْتَ حُيَيٍّ قَدْ حَاضَتْ؟ قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَعَلَّهَا تَحْبِسُنَا أَلَمْ تَكُنْ طَافَتْ مَعَكُنَّ؟). فَقَالُوا: بَلَى، قَالَ (فَاخْرُجِي). [رواه البخاري: ٣٢٨]

रखेगी? क्या उसने तुम्हारे साथ तवाफे इफाजा नहीं किया? उन्होंने कहा तवाफ तो कर चुकी है, आपने फरमाया, तो फिर चलो (क्योंकि तवाफे विदा हैज वाली औरत के लिए जरूरी नहीं)।

फायदे : तवाफे इफाजा जुलहिज्जा की दसवीं तारीख को किया जाता है, यह फर्ज और हज का रूक्न है, अलबत्ता तवाफे विदा जो काअबा से रूख्सत होते वक्त किया जाता है, वह हैज वाली औरत के लिए जरूरी नहीं है।

बाब 17 : निफास (जच्चा) वाली औरत का जनाजा पढ़ना और उसका तरीका।

١٧ - باب: الصَّلاةُ عَلَى النُّفَسَاءِ وَسُنَّتُهَا

221 : समुरा बिन जुन्दुब रजि. से रिवायत है कि एक औरत निफास के दौरान मर गयी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी जनाजे की नमाज़ अदा की और जनाजा पढ़ते वक्त उसकी कमर के सामने खड़े हुए।

٢٢١ : عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱمْرَأَةً مَاتَتْ فِي بَطْنٍ، فَصَلَّى عَلَيْهَا ٱلنَّبِيُّ ﷺ فَقَامَ وَسَطَهَا. [رواه البخاري: ٣٣٢]

बाब 18 : हैज वाली औरत का कपड़ा छू जाना।

١٨ - باب

222 : मैमूना रजि. से रिवायत है कि जब वह हैज से होती और नमाज न पढ़ती तो भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सज्दागाह के पास लेटी रहती। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी चादर पर नमाज पढ़ते, जब सज्दा करते तो

٢٢٢ : عَنْ مَيْمُونَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا زَوْجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهَا كَانَتْ تَكُونُ حَائِضًا لاَ تُصَلِّي، وَهِيَ مُفْتَرِشَةٌ بِحِذَاءِ مَسْجِدِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، وَهُوَ يُصَلِّي عَلَى خُمْرَتِهِ، إِذَا سَجَدَ أَصَابَهَا بَعْضُ ثَوْبِهِ. [رواه البخاري: ٣٣٣]

आपका कुछ कपड़ा उनसे छू जाता था।

फायदे : मालूम हुआ कि नमाज के बीच हैज वाली औरत से कपड़ा छू जाने या उसके बिस्तर की तरफ मुंह करके नमाज पढ़ने में कोई हर्ज नहीं। (अस्सलात 517)

किताबुत्तयम्मुम

तयम्मुम (पाक मिट्टी से मसह करने) का बयान

बाब 1 : तयम्मुम की आयात (फलम तजिदू माअन) का शाने नुजूल।

١ - [باب: ﴿فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً﴾]

223 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम एक सफर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ निकले, जब हम बैदा या जातुल जैश पहुंचे तो मेरा हार टूट कर गिर गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी तलाश के लिए कयाम फरमाया तो दूसरे लोग भी आपके साथ ठहर गये मगर वहां कहीं पानी न था। लोग अबू बकर सिद्दीक रज़ि. के पास आये और कहने लगे, आप नहीं देखते कि आइशा रज़ि. ने क्या किया? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सब लोगों को ठहरा लिया और यहां पानी भी नहीं मिलता और न

٢٢٣ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها، زَوْجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: خَرَجْنا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ في بَعْضِ أَسْفارِهِ، حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ، أَوْ بِذَاتِ ٱلْجَيْشِ، ٱنْقَطَعَ عِقْدٌ لِي، فَأَقَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَلَى ٱلْتِمَاسِهِ، وَأَقَامَ ٱلنَّاسُ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، فَأَتَى ٱلنَّاسُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ ٱلصِّدِّيقِ، فَقَالُوا: أَلاَ تَرَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ؟ أَقَامَتْ بِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَٱلنَّاسِ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ، فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ، وَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِي قَدْ نَامَ، فَقَالَ: حَبَسْتِ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ وَٱلنَّاسَ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُم مَاءٌ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ: فَعَاتَبَنِي أَبُو بَكْرٍ، وَقَالَ مَا شَاءَ ٱللهُ أَنْ يَقُولَ، وَجَعَلَ يَطْعُنُنِي

بِيَدِهِ فِي خَاصِرَتِي، فَلاَ يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلَّا مَكَانُ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى فَخِذِي، فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أَصْبَحَ عَلَى غَيْرِ مَاءٍ، فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ التَّيَمُّمِ فَتَيَمَّمُوا، فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ الْحُضَيْرِ: مَا هِيَ بِأَوَّلِ بَرَكَتِكُمْ يَا آلَ أَبِي بَكْرٍ، قَالَتْ: فَبَعَثْنَا الْبَعِيرَ الَّذِي كُنْتُ عَلَيْهِ، فَأَصَبْنَا الْعِقْدَ تَحْتَهُ. [رواه البخاري: ٣٣٤]

ही इनके पास पानी है। यह सुनकर अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि. आये। उस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी रान पर सर रखे आराम कर रहे थे। सिद्दीके अकबर रज़ि. कहने लगे, तुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सब लोगों को यहां ठहरा लिया, हालांकि उनके पास पानी नहीं है और न ही इस जगह हासिल होता है। आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि. मुझ पर नाराज हुए और जो अल्लाह को मन्जूर था (बुरा-भला) कहा। नीज मेरी कोख में हाथ से कचोका लगाने लगे। लेकिन मैंने हरकत इसलिए न की कि मेरी रान पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सर मुबारक था। सुबह के वक्त जब इस बगैर पानी की जगह पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जागे तो अल्लाह तआला ने तयम्मुम की आयातें नाज़िल फरमायी। चुनांचे लोगों ने तयम्मुम कर लिया। उस वक्त उसैद बिन हुज़ैर रज़ि. बोले, ऐ आले अबू बकर! यह कोई तुम्हारी पहली बरकत नहीं है, आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि जिस ऊंट पर मैं सवार थी, हमनें उसे उठाया तो उसके नीचे से हार मिल गया।

फायदे : मालूम हुआ कि बाप अपनी बेटी की शादी के बाद भी उसे किसी बात पर डांट डपट कर सकता है। चूनांचे इस हदीस में है कि बाज सहाबा किराम रज़ि. ने वुजू और तयम्मुम के बगैर नमाज पढ़ ली, मालूम हुआ कि अगर वुजू के लिए पानी और तयम्मुम के लिए मिट्टी न मिले तो यूँ ही नमाज़ पढ़ ली जाये।

(अत्तयम्मुम 336)

٢٢٤ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (أُعْطِيتُ خَمْسًا، لَمْ يُعْطَهُنَّ أَحَدٌ قَبْلِي: نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ مَسِيرَةَ شَهْرٍ، وَجُعِلَتْ لِيَ ٱلأَرْضُ مَسْجِدًا وَطَهُورًا، فَأَيُّمَا رَجُلٍ مِنْ أُمَّتِي أَدْرَكَتْهُ ٱلصَّلاَةُ فَلْيُصَلِّ، وَأُحِلَّتْ لِيَ ٱلْمَغَانِمُ وَلَمْ تَحِلَّ لأَحَدٍ قَبْلِي، وَأُعْطِيتُ ٱلشَّفَاعَةَ، وَكَانَ ٱلنَّبِيُّ يُبْعَثُ إِلَى قَوْمِهِ خَاصَّةً، وَبُعِثْتُ إِلَى ٱلنَّاسِ عَامَّةً). [رواه البخاري: ٣٣٥]

224 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुझे पांच चीजें ऐसी दी गई, जो मुझ से पहले किसी पैगम्बर को नहीं दी गयीं। एक यह कि मुझे एक महीना के सफर पर डर के जरीये मदद दी गई है। दूसरी यह कि तमाम जमीन मेरे लिए मस्जिद और पाक करने वाली बना दी गई। अब मेरी उम्मत में जिस आदमी पर नमाज़ का वक्त आ जाये, चाहिए कि नमाज़ पढ़ ले (अगरचे वहां मस्जिद और पानी न हो)। तीसरी यह कि मेरे लिए जंग में मिला हुआ माल हलाल कर दिया गया है, हालांकि पहले किसी के लिए हलाल न था। चौथी यह कि मुझे शिफाअत की इजाज़त दी गई। पांचवी यह कि पहले नबी खास अपनी ही कौम की तरफ भेजे जाते थे, मगर मैं तमाम लोगों की तरफ भेजा गया हूँ।

٢ - باب: ٱلتَّيَمُّمِ فِي ٱلحَضَرِ إِذَا لَم يَجِدِ ٱلمَاءَ وَخَافَ فَوتَ ٱلصَّلاَةِ

बाब 2 पानी न मिले और नमाज़ के क़ज़ा होने का डर हो तो हज़र में तयम्मुम करना।

٢٢٥ : عَنْ أَبِي جُهَيْمٍ بْنِ ٱلْحَارِثِ الأَنْصَارِيِّ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: أَقْبَلَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ مِنْ نَحْوِ

225 : अबू जुहैम बिन हारिस अन्सारी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार जमल

بِئْرِ جَمَلٍ، فَلَقِيَهُ رَجُلٌ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ، فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ ٱلنَّبِيُّ ﷺ السَّلَامَ، حَتَّى أَقْبَلَ عَلَى ٱلْجِدَارِ، فَمَسَحَ بِوَجْهِهِ وَيَدَيْهِ، ثُمَّ رَدَّ عَلَيْهِ ٱلسَّلَامَ. [رواه البخاري: ٣٣٧]

के कुए की तरफ से आ रहे थे कि रास्ते में एक आदमी मिला, उसने आपको सलाम किया, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका जवाब न दिया। यहां तक कि आप एक दीवार के पास आये और उससे अपने मुंह और हाथों का मसह किया, यानी तयम्मुम फरमाया। फिर उसके सलाम का जवाब दिया।

फायदे :जब सलाम का जवाब देने के लिए तयम्मुम जायज है तो हज़र में नमाज़ के लिए और ज्यादा जाइज होगा,जबकि पानी मौजूद न हो और नमाज़ का वक्त खत्म हो रहा हो।

बाब 3 : तयम्मुम करने वाले का हाथों पर फूंक मारना।

٣ - باب: ٱلْمُتَيَمِّمُ هَلْ يَنْفُخُ فِيهِمَا

٢٢٦ : عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ أَنَّهُ قَالَ لِعُمَرَ بْنِ ٱلْخَطَّابِ: أَمَا تَذْكُرُ أَنَّا كُنَّا فِي سَفَرٍ أَنَا وَأَنْتَ، فَأَمَّا أَنْتَ فَلَمْ تُصَلِّ، وَأَمَّا أَنَا فَتَمَعَّكْتُ فَصَلَّيْتُ، فَذَكَرْتُ ذٰلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّمَا كَانَ يَكْفِيكَ هٰكَذَا). فَضَرَبَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ بِكَفَّيْهِ الأَرْضَ، وَنَفَخَ فِيهِمَا، ثُمَّ مَسَحَ بِهِمَا وَجْهَهُ وَكَفَّيْهِ. [رواه البخاري: ٣٣٨]

226 : अम्मार बिन यासिर रज़ि. से रिवायत है। उन्होंने एक बार उमर बिन खत्ताब रज़ि. से कहा, आपको याद है कि मैं और आप दोनों सफर में थे और नापाक हो गये थे। आपने तो नमाज़ नहीं पढ़ी थी और मैंने मिट्टी में लोट-पोट होकर नमाज़ पढ़ ली थी। फिर मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह बयान किया तो आपने फरमाया कि तेरे लिए इतना ही काफी था। फिर आपने अपने दोनों हाथ जमीन पर मारे और उनमें फूंक मारी। फिर उससे मुंह और दोनों हाथों का मसह किया।

फायदे : इस हदीस में तयम्मुम का तरीका भी बयान हुआ है। नापाकी दूर करने की नियत से पाक मिट्टी से हाथों और मुंह का मसह करना चाहिए। नीज तयम्मुम के लिए सिर्फ एक बार मिट्टी पर हाथ मारना काफी है। (अत्तयम्मुम 347) यह भी मालूम हुआ कि अगर पानी के इस्तमाल से बीमारी का डर हो या पीने के लिए पानी न बचा हो तो भी तयम्मुम किया जा सकता है। (अत्तयम्मुम 346, 345)

बाब 4 : पाक मिट्टी मुसलमान का वुजू है और उसे पानी के बदले काफी है।

٤ - باب: اَلصَّعِيدُ اَلطَّيِّبُ وَضُوءُ اَلْمُسْلِمِ يَكْفِيهِ عن اَلمَاء

227 : इमरान बिन हुसैन खुजाई रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफर में थे और रातभर चलते रहे। जब आखिर रात हुई तो हम कुछ देर के लिए सो गये और मुसाफिर के नजदीक इस वक्त से ज्यादा कोई नींद मीठी नहीं होती। ऐसे सोये कि सूरज की गर्मी से ही जागे। सबसे पहले जिसकी आंख खुली, वह फलां आदमी था। फिर फलां आदमी और फिर फलां आदमी। फिर चौथे उमर बिन खत्ताब रज़ि. जागे और (हमारा कायदा यह था

٢٢٧ : عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ اَلْخُزَاعِيِّ رَضِيَ اَللهُ عَنْهُما قَالَ: كُنَّا فِي سَفَرٍ مَعَ اَلنَّبِيِّ ﷺ وَإِنَّا أَسْرَيْنَا، حَتَّى كُنَّا فِي آخِرِ اَللَّيْلِ، وَقَعْنَا وَقْعَةً، وَلا وَقْعَةَ أَحْلَى عِنْدَ اَلْمُسَافِرِ مِنْهَا، فَمَا أَيْقَظَنَا إِلاَّ حَرُّ اَلشَّمْسِ، وَكَانَ أَوَّلَ مَنِ اَسْتَيْقَظَ فُلاَنٌ ثُمَّ فُلاَنٌ ثُمَّ فُلاَنٌ ثُمَّ عُمَرُ بْنُ اَلْخَطَّابِ اَلرَّابِعُ، وَكَانَ اَلنَّبِيُّ ﷺ إِذَا نَامَ لَمْ نُوقِظْهُ حَتَّى يَكُونَ هُوَ يَسْتَيْقِظُ، لأَنَّا لاَ نَدْرِي مَا يَحْدُثُ لَهُ فِي نَوْمِهِ، فَلَمَّا اَسْتَيْقَظَ عُمَرُ وَرَأَى مَا أَصَابَ اَلنَّاسَ، وَكَانَ رَجُلًا جَلِيدًا، فَكَبَّرَ وَرَفَعَ صَوْتَهُ بِالتَّكْبِيرِ، فَمَا زَالَ يُكَبِّرُ وَيَرْفَعُ صَوْتَهُ بِالتَّكْبِيرِ، حَتَّى اَسْتَيْقَظَ لِصَوْتِهِ اَلنَّبِيُّ ﷺ، فَلَمَّا اَسْتَيْقَظَ

शَكَوْا إِلَيْهِ ٱلَّذِي أَصَابَهُمْ، قَالَ: (لاَ ضَيْرَ أَوْ لاَ يَضِيرُ، ٱرْتَحِلُوا). فَارْتَحَلُوا فَسَارَ غَيْرَ بَعِيدٍ، ثُمَّ نَزَلَ فَدَعَا بِالْوَضُوءِ فَتَوَضَّأَ، وَنُودِيَ بِالصَّلاَةِ فَصَلَّى بِالنَّاسِ، فَلَمَّا ٱنْفَتَلَ مِنْ صَلاَتِهِ، إِذَا هُوَ بِرَجُلٍ مُعْتَزِلٍ لَمْ يُصَلِّ مَعَ ٱلْقَوْمِ، قَالَ: (مَا مَنَعَكَ يَا فُلاَنُ أَنْ تُصَلِّيَ مَعَ ٱلْقَوْمِ؟). قَالَ: أَصَابَتْنِي جَنَابَةٌ وَلاَ مَاءَ، قَالَ: (عَلَيْكَ بِالصَّعِيدِ، فَإِنَّهُ يَكْفِيكَ). ثُمَّ سَارَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ، فَاشْتَكَى إِلَيْهِ ٱلنَّاسُ مِنَ ٱلْعَطَشِ، فَنَزَلَ فَدَعَا فُلاَنًا وَدَعَا عَلِيًّا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، فَقَالَ ﷺ: (ٱذْهَبَا فَابْتَغِيَا ٱلْمَاءَ). فَانْطَلَقَا، فَلَقِيَا ٱمْرَأَةً بَيْنَ مَزَادَتَيْنِ، أَوْ سَطِيحَتَيْنِ مِنْ مَاءٍ عَلَى بَعِيرٍ لَهَا، فَقَالاَ لَهَا: أَيْنَ ٱلْمَاءُ؟ قَالَتْ: عَهْدِي بِالْمَاءِ أَمْسِ هٰذِهِ ٱلسَّاعَةَ، وَنَفَرُنَا خُلُوفٌ، قَالاَ لَهَا: ٱنْطَلِقِي إِذًا. قَالَتْ: إِلَى أَيْنَ؟ قَالاَ: إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، قَالَتْ: ٱلَّذِي يُقَالُ لَهُ ٱلصَّابِئُ؟ قَالاَ: هُوَ ٱلَّذِي تَعْنِينَ، فَانْطَلِقِي، فَجَاءَا بِهَا إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ وَحَدَّثَاهُ ٱلْحَدِيثَ، قَالَ: فَاسْتَنْزَلُوهَا عَنْ بَعِيرِهَا، وَدَعَا ٱلنَّبِيُّ ﷺ بِإِنَاءٍ فَفَرَّغَ فِيهِ مِنْ أَفْوَاهِ ٱلْمَزَادَتَيْنِ، أَوِ ٱلسَّطِيحَتَيْنِ، وَأَوْكَأَ أَفْوَاهَهُمَا، وَأَطْلَقَ ٱلْعَزَالِيَ، وَنُودِيَ فِي ٱلنَّاسِ: ٱسْقُوا وَٱسْتَقُوا، فَسَقَى مَنْ سَقَى، وَٱسْتَقَى مَنْ شَاءَ، وَكَانَ آخِرَ ذَاكَ أَنْ أَعْطَى ٱلَّذِي أَصَابَتْهُ ٱلْجَنَابَةُ إِنَاءً مِنْ مَاءٍ، قَالَ: (ٱذْهَبْ

कि) जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आराम करते तो कोई आपको नहीं जगाता था। यहां तक कि आप खुद जाग जाते, क्योंकि हम नहीं जानते थे कि आपको ख्वाब में क्या पेश आ रहा है? जब हज़रत उमर रजि. ने जागकर वह हालत देखी जो लोगों पर छायी हुई थी और वह दिलेर आदमी थे। उन्होंने जोर से तकबीर कहना शुरू की। और वह बराबर अल्लाहु अकबर बुलन्द आवाज से कहते रहे। यहां तक कि उनकी आवाज से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जाग गये। जब आप जाग उठे तो लोगों ने आपसे इस मुसीबत की शिकायत की जो उन पर पड़ी थी। आपने फरमाया, कुछ हर्ज नहीं या उससे कुछ नुकसान न होगा। चलो अब कूच करो। फिर लोग रवाना हुये। थोड़े से सफर के बाद आप उतरे, वुजू के लिए पानी मंगवाया और वुजू किया। नमाज़ के लिए अजान दी गयी, उसके बाद आपने लोगों को नमाज़ पढ़ाई। जब आप नमाज़ से फारिग

हुये तो अचानक एक आदमी को तन्हाई में बैठे देखा, जिसने हम लोगों के साथ नमाज़ न पढ़ी थी। आपने फरमाया, ऐ फलां आदमी! तुझे लोगों के साथ नमाज़ पढ़ने से कौनसी चीज ने रोका? उसने अर्ज किया कि मैं नापाक हूँ और पानी मौजूद न था। आपने फरमाया, तुझे मिट्टी से तयम्मुम करना चाहिए था, वह तुझे काफी है। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चले तो लोगों ने आपसे प्यास की शिकायत की। आप उतरे और अली रज़ि. और एक दूसरे आदमी को बुलाया। और फरमाया तुम दोनों जाओ और पानी तलाश करो। इस पर वह दोनों रवाना हुये तो रास्ते में उन्हें एक औरत मिली जो अपने ऊँट पर पानी की दो मश्कों के दरमियान बैठी हुई थी। उन्होंने उससे कहा कि पानी कहाँ है? उसने जवाब दिया कि पानी मुझे कल इसी वक्त मिला था और हमारे मर्द पीछे हैं। इन दोनों ने उससे कहा कि हमारे साथ चल,

فَأَفْرِغْهُ عَلَيْكَ). وَهِيَ قَائِمَةٌ تَنْظُرُ إِلَى مَا يُفْعَلُ بِمَائِهَا، وَأَيْمُ ٱللهِ، لَقَدْ أُقْلِعَ عَنْهَا، وَإِنَّهُ لَيُخَيَّلُ إِلَيْنَا أَنَّهَا أَشَدُّ مِلأَةً مِنْهَا حِينَ ٱبْتَدَأَ فِيهَا، فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (ٱجْمَعُوا لَهَا). فَجَمَعُوا لَهَا مِن بَيْنِ عَجْوَةٍ وَدَقِيقَةٍ وَسَوِيقَةٍ، حَتَّى جَمَعُوا لَهَا طَعَامًا، فَجَعَلُوهُ فِي ثَوْبٍ، وَحَمَلُوهَا عَلَى بَعِيرِهَا، وَوَضَعُوا الثَّوْبَ بَيْنَ يَدَيْهَا، قَالَ لَهَا: (تَعْلَمِينَ، مَا رَزِئْنَا مِنْ مَائِكِ شَيْئًا، وَلٰكِنَّ ٱللهَ هُوَ ٱلَّذِي أَسْقَانَا). فَأَتَتْ أَهْلَهَا وَقَدِ ٱحْتَبَسَتْ عَنْهُمْ، قَالُوا: مَا حَبَسَكِ يَا فُلاَنَةُ؟ قَالَتْ: ٱلْعَجَبُ، لَقِيَنِي رَجُلاَنِ، فَذَهَبَا بِي إِلَى هٰذَا الرَّجُلِ الَّذِي يُقَالُ لَهُ: ٱلصَّابِئُ، فَفَعَلَ كَذَا وَكَذَا، فَوَٱللهِ، إِنَّهُ لأَسْحَرُ النَّاسِ مِنْ بَيْنِ هٰذِهِ وَهٰذِهِ - وَقَالَتْ بِإِصْبَعَيْهَا ٱلْوُسْطَى وَٱلسَّبَّابَةِ، فَرَفَعَتْهُمَا إِلَى ٱلسَّمَاءِ تَعْنِي: ٱلسَّمَاءَ وَٱلأَرْضَ - أَوْ إِنَّهُ لَرَسُولُ ٱللهِ حَقًّا. فَكَانَ ٱلْمُسْلِمُونَ بَعْدَ ذٰلِكَ، يُغِيرُونَ عَلَى مَنْ حَوْلَهَا مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ، وَلاَ يُصِيبُونَ ٱلصِّرْمَ ٱلَّذِي هِيَ مِنْهُ، فَقَالَتْ يَوْمًا لِقَوْمِهَا: مَا أُرَى أَنَّ هٰؤُلاَءِ ٱلْقَوْمَ يَدْعُونَكُمْ عَمْدًا، فَهَلْ لَكُمْ فِي ٱلإِسْلاَمِ؟ فَأَطَاعُوهَا فَدَخَلُوا

فِي ٱلإِسْلَامِ. [رواه البخاري: ٣٤٤]

उसने कहा, कहां जाना है? उन्होंने कहा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास। वह बोली वही जिसे बे दीन कहा जाता है। उन्होंने कहा, हां वही है, जिन्हें तू ऐसा कहती है। चल तो सही। आखिर वह दोनों उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले आये और आपसे सारा क़िस्सा बयान किया। हज़रत इमरान रज़ि. ने कहा कि लोगों ने उसे ऊँट से उतार लिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बर्तन मंगवाया। और दोनों मश्कों के मुंह उसमें खोल दिये। फिर ऊपर का मुंह बन्द करके नीचे का मुंह खोल दिया और लोगों को खबर कर दी गयी कि खुद भी पानी पीये और जानवरों को भी पिलायें। तो [illegible]स ने चाहा खुद पिया और जिसने चाहा, जानवरों को पिलाया। आखिरकार आपने यह किया कि जिस आदमी को नहाने की जरूरत थी, उसे भी पानी का एक बर्तन भर दिया और उससे कहा कि जाओ, इससे गुस्ल करो। वह औरत खड़ी यह मन्जर देखती रही कि उसके पानी के साथ क्या हो रहा है? अल्लाह की कसम! जब पानी लेना बन्द हो गया तो हमारे ख्याल के मुताबिक वह अब उस वक्त से भी ज्यादा भरी हुई थी, जब आपने उनसे पानी लेना शुरू किया था। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस औरत के लिए कुछ जमा करो। लोगों ने खजूर, आटा और सत्तू जमा करना शुरू कर दिया, यहां तक कि एक अच्छी मिकदार उसके पास जमा हो गयी। जमा किया हुआ सामान उन्होंने एक कपड़े में बांध दिया और उसे ऊंट पर सवार कर के वह कपड़ा उसके आगे रख दिया। फिर आपने उससे फरमाया, तुम जानती हो कि हमने तुम्हारे पानी में कुछ कमी नहीं की, बल्कि हमें तो अल्लाह ने पिलाया है। फिर वह औरत अपने घर

वालों के पास वापस आयी। चूंकि वह देर से पहुंची थी, इसलिए उन्होंने पूछा, ऐ फलां औरत! तुझे किसने रोक लिया था? उसने कहा, मेरे साथ तो एक अजीब क़िस्सा पेश आया। और वह यह कि (रास्ते में) मुझे दो आदमी मिले जो मुझे उस आदमी के पास ले गये, जिसको बे दीन कहा जाता है। उसने ऐसा ऐसा किया। अल्लाह की कसम! जितने लोग इस (आसमान) के और इस (जमीन) के बीच हैं और उसने अपनी बीच वाली और शहादत वाली उंगली उठाकर आसमान और जमीन की तरफ इशारा किया। उन सब में से वह बड़ा जादूगर है या वह अल्लाह का हकीकी रसूल है। फिर मुसलमानों ने यह करना शुरू कर दिया कि उस औरत के आस पास जो मुश्रिक आबाद थे, उन पर तो हमला करते और जिन लोगों में वह औरत रहती थी, उनको छोड़ देते। आख़िर उसने एक दिन अपनी कौम से कहा कि मेरे ख्याल में मुसलमान तुम्हें जानबूझ कर छोड़ देते हैं क्या तुम्हें इस्लाम से कुछ लगाव है? तब उन्होंने उसकी बात कुबूल की और मुसलमान हो गये।

किताबुस्सलात
नमाज़ का बयान

बाब 1 : मेराज की रात में नमाज़ किस तरह फर्ज की गई?

١ - باب: كَيْفَ فُرِضَتِ الصلاةُ في الإسْرَاءِ

228 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, अबू ज़र रज़ि. बयान करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब मैं मक्का में था तो एक रात मेरे घर की छत फटी। जिब्राईल अलैहि. उतरे। उन्होंने पहले मेरे सीने को फाड़ करके उसे जमजम के पानी से धोया, फिर ईमान और हिकमत से भरी हुई सोने की एक तश्त (प्लेट) लाये और उसे मेरे सीने में डाल दिया। बाद में सीना बन्द कर दिया, फिर उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे आसमान की तरफ ले चढ़े। जब मैं दुनियावी आसमान पर पहुंचा तो जिब्राईल

٢٢٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ أَبُو ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قال: (فُرِجَ عَنْ سَقْفِ بَيْتِي وَأَنَا بِمَكَّةَ، فَنَزَلَ جِبْرِيلُ، فَفَرَجَ صَدْرِي، ثُمَّ غَسَلَهُ بِمَاءِ زَمْزَم، ثُمَّ جَاءَ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ، مُمْتَلِىءٍ حِكْمَةً وَإِيمَانًا، فَأَفْرَغَهُ فِي صَدْرِي، ثُمَّ أَطْبَقَهُ، ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِي فَعَرَجَ بِي إِلَى ٱلسَّمَاءِ ٱلدُّنْيَا، فَلَمَّا جِئْتُ إِلَى ٱلسَّمَاءِ ٱلدُّنْيَا، قَالَ جِبْرِيلُ لِخَازِنِ ٱلسَّمَاءِ: ٱفْتَحْ، قَالَ: مَنْ هٰذَا؟ قَالَ: هٰذَا جِبْرِيلُ، قَالَ: هَلْ مَعَكَ أَحَدٌ؟ قَالَ: نَعَمْ، مَعِي مُحَمَّدٌ ﷺ، فَقَالَ: أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَلَمَّا فَتَحَ عَلَوْنَا ٱلسَّمَاءَ ٱلدُّنْيَا، فَإِذَا رَجُلٌ

قَاعِدٌ، عَلَى يَمِينِهِ أَسْوِدَةٌ، وَعَلَى يَسَارِهِ أَسْوِدَةٌ، إِذَا نَظَرَ قِبَلَ يَمِينِهِ ضَحِكَ، وَإِذَا نَظَرَ قِبَلَ شِمَالِهِ بَكَى، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ ٱلصَّالِحِ وَٱلِابْنِ ٱلصَّالِحِ، قُلْتُ لِجِبْرِيلَ: مَنْ هٰذَا؟ قَالَ: هٰذَا آدَمُ، وَهٰذِهِ ٱلأَسْوِدَةُ عَنْ يَمِينِهِ وَشِمَالِهِ نَسَمُ بَنِيهِ، فَأَهْلُ ٱلْيَمِينِ مِنْهُمْ أَهْلُ ٱلْجَنَّةِ، وَٱلأَسْوِدَةُ ٱلَّتِي عَنْ شِمَالِهِ أَهْلُ ٱلنَّارِ، فَإِذَا نَظَرَ عَنْ يَمِينِهِ ضَحِكَ، وَإِذَا نَظَرَ قِبَلَ شِمَالِهِ بَكَى، حَتَّى عَرَجَ بِي إِلَى ٱلسَّمَاءِ ٱلثَّانِيَةِ، فَقَالَ لِخَازِنِهَا: ٱفْتَحْ، فَقَالَ لَهُ خَازِنُهَا مِثْلَ مَا قَالَ ٱلأَوَّلُ، فَفَتَحَ. قَالَ أَنَسٌ: فَذَكَرَ: أَنَّهُ وَجَدَ فِي ٱلسَّمَاوَاتِ: آدَمَ، وَإِدْرِيسَ، وَمُوسَى، وَعِيسَى، وَإِبْرَاهِيمَ، صَلَوَاتُ ٱللهِ عَلَيْهِمْ، وَلَمْ يُثْبِتْ كَيْفَ مَنَازِلُهُمْ، غَيْرَ أَنَّهُ ذَكَرَ: أَنَّهُ وَجَدَ آدَمَ فِي ٱلسَّمَاءِ ٱلدُّنْيَا، وَإِبْرَاهِيمَ فِي ٱلسَّمَاءِ ٱلسَّادِسَةِ، قَالَ أَنَسٌ: فَلَمَّا مَرَّ جِبْرِيلُ بِالنَّبِيِّ ﷺ بِإِدْرِيسَ، قَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ ٱلصَّالِحِ وَٱلأَخِ ٱلصَّالِحِ. (فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟) قَالَ: هٰذَا إِدْرِيسُ، ثُمَّ مَرَرْتُ بِمُوسَى، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ ٱلصَّالِحِ وَٱلأَخِ ٱلصَّالِحِ، قُلْتُ: (مَنْ هٰذَا؟) قَالَ: هٰذَا مُوسَى، ثُمَّ

अलैहि. ने आसमान के दरोगा से कहा, दरवाजा खोलो, उसने कहा कौन हो? बोले मैं जिब्राईल अलैहि. हूँ। फिर उसने पूछा यह तुम्हारे साथ कौन है? जिब्राईल ने कहा, मेरे साथ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, उसने फिर पूछा कि उन्हें दावत दी गई है? जिब्राईल ने कहा, हां! उसने जब दरवाजा खोल दिया तो हम दुनियावी आसमान पर चढ़े, वहां हमने एक ऐसे आदमी को बैठे देखा जिसकी दायें तरफ बहुत भीड़ और बायें तरफ भी बहुत भीड़ थी। जब वोह अपनी दायें तरफ देखता तो हंसता और जब बायीं तरफ देखता तो रो देता। उसने (मुझे देखकर) फरमाया कि नेक पैगम्बर अच्छे बेटे तुम्हारा आना मुबारक हो! मैंने जिब्राईल अलैहि. से पूछा, यह कौन हैं? उन्होंने जवाब दिया कि यह आदम अलैहि. हैं और उनके दायें बायें बहुत भीड़ उनकी औलाद की रूहें हैं। दायें तरफ वाली जन्नती और बायें तरफ वाली दोजखी हैं।

مَرَرْتُ بِعِيسَى، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ ٱلصَّالِحِ وَٱلنَّبِيِّ ٱلصَّالِحِ، قُلْتُ: (مَن هٰذَا؟) قَالَ: هٰذَا عِيسَى، ثُمَّ مَرَرْتُ بِإِبْرَاهِيمَ، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِالنَّبِيِّ ٱلصَّالِحِ وَٱلابْنِ ٱلصَّالِحِ، قُلْتُ: (مَنْ هٰذَا؟) قَالَ: هٰذَا إِبْرَاهِيمُ ﷺ.

قَالَ: وَكَانَ ٱبْنُ عَبَّاسٍ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما - وَأَبُو حَبَّةَ ٱلأَنْصَارِيُّ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - يَقُولاَنِ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (ثُمَّ عُرِجَ بِي حَتَّى ظَهَرْتُ لِمُسْتَوَى أَسْمَعُ فِيهِ صَرِيفَ ٱلأَقْلاَمِ). قَالَ أَنَسُ بْنُ مالِكٍ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (فَفَرَضَ ٱللهُ عَلَى أُمَّتِي خَمْسِينَ صَلاَةً، فَرَجَعْتُ بِذٰلِكَ، حَتَّى مَرَرْتُ عَلَى مُوسَى، فَقَالَ: مَا فَرَضَ ٱللهُ لَكَ عَلَى أُمَّتِكَ؟ قُلْتُ: فَرَضَ خَمْسِينَ صَلاَةً، قَالَ: فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ، فَإِنَّ أُمَّتَكَ لاَ تُطِيقُ ذٰلِكَ، فَرَاجَعْتُ فَوَضَعَ شَطْرَهَا، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى، قُلْتُ: وَضَعَ شَطْرَهَا، فَقَالَ: رَاجِعْ رَبَّكَ، فَإِنَّ أُمَّتَكَ لاَ تُطِيقُ، فَرَاجَعْتُ فَوَضَعَ شَطْرَهَا، فَرَجَعْتُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: ٱرْجِعْ إِلَى رَبِّكَ، فَإِنَّ أُمَّتَكَ لاَ تُطِيقُ ذٰلِكَ، فَرَاجَعْتُهُ، فَقَالَ: هِيَ خَمْسٌ، وَهِيَ خَمْسُونَ، لاَ يُبَدَّلُ ٱلْقَوْلُ

इसलिए दायें तरफ नजर करके हंस देते हैं और बायें तरफ देखकर रो देते हैं। फिर जिब्राईल अलैहि. मुझे लेकर दूसरे आसमान की तरफ चढ़े और उसके दरोगा से कहा, दरवाजा खोलो, उसने भी वही गुफ्तगू की जो पहले ने की थी। चूनांचे उसने दरवाजा खोल दिया। हज़रत अनस रज़ि. ने फरमाया कि अबू जर रजि. के बयान के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आसमानो में आदम, इदरीस, मूसा, ईसा और इब्राहिम अलैहि. से मुलाकात की, लेकिन उनकी जगहों को बयान नहीं किया। सिर्फ इतना कहा कि पहले आसमान पर आदम अलैहि. और छटे आसमान पर इब्राहिम अलैहि. को पाया।

अनस रज़ि. ने फरमाया कि जब जिब्राईल अलैहि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर इदरीस अलैहि. के पास से गुज़रे तो उन्होंने फरमाया कि नेक पैगम्बर और अच्छे भाई खुशामदीद! मैंने

لَدَيَّ، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى، فَقَالَ: ارْجِعْ رَبَّكَ، فَقُلْتُ: ٱسْتَحْيَيْتُ مِنْ رَبِّي، ثُمَّ ٱنْطَلَقَ بِي، حَتَّى ٱنْتَهَى بِي إِلَى سِدْرَةِ ٱلْمُنْتَهَى، وَغَشِيَهَا، أَلْوَانٌ لاَ أَدْرِي مَا هِيَ، ثُمَّ أُدْخِلْتُ ٱلْجَنَّةَ، فَإِذَا فِيهَا حَبَايِلُ ٱللُّؤْلُؤِ، وَإِذَا تُرَابُهَا ٱلْمِسْكُ). [رواه البخاري: ٣٤٩]

पूछा, यह कौन है? जिब्राईल अलैहि. ने जवाब दिया, यह इदरीस अलैहि. हैं। फिर मैं मूसा अलैहि. के पास से गुज़रा तो उन्होंने भी कहा, नेक पैगम्बर और अच्छे भाई तुम्हारा आना मुबारक हो! मैंने पूछा यह कौन हैं? जिब्राईल अलैहि. ने जवाब दिया, मूसा अलैहि. हैं। फिर मैं ईसा अलैहि. के पास से गुज़रा तो उन्होंने भी कहा, नेक पैगम्बर और अच्छे भाई तुम्हारा आना मुबारक हो! मैंने जिब्राईल अलैहि. से पूछा, यह कौन हैं? तो उन्होंने जवाब दिया, यह ईसा अलैहि. हैं। फिर मैं इब्राहिम अलैहि. के पास से गुज़रा तो उन्होंने भी कहा, ऐ नेक नबी और अच्छे बेटे तुम्हारा आना मुबारक हो! मैंने जिब्राईल अलैहि. से पूछा कि यह कौन हैं? उन्होंने कहा, यह इब्राहिम अलैहि. हैं।

इब्ने अब्बास रज़ि. और अबू हब्बा अनसारी रज़ि. का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, फिर ऊपर ले जाया गया। यहां तक कि मैं एक ऐसी ऊंची हमवार (प्लेन) जगह पर पहुंचा जहां मैं (फरिश्तों के) कलमों की आवाजें सुनता था।

अनस रज़ि. का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, फिर अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत पर पचास नमाजें फ़र्ज़ की हैं। यह हुक्म लेकर वापिस आया। जब मूसा अलैहि. के पास से गुज़रा तो उन्होंने पूछा कि अल्लाह तआला ने आपकी उम्मत पर क्या फर्ज किया है? मैंने कहा (रात और दिन में) पचास नमाज़ें फर्ज की हैं। (इस पर) मूसा अलैहि. ने कहा, अपने रब की तरफ लौट जाओ, क्योंकि आपकी उम्मत इन नमाजों का बोझ नहीं

उठा सकेगी। चूनांचे मैं वापस गया तो अल्लाह तआला ने कुछ नमाजें माफ कर दी। मैं फिर मूसा अलैहि. के पास आया और कहा, अल्लाह तआला ने कुछ नमाजें माफ कर दी हैं। उन्होंने कहा कि अपने रब के पास दोबारा जाओ। आपकी उम्मत इनको भी नहीं अदा कर सकती। मैं लौटा तो अल्लाह ने कुछ और नमाजें माफ कर दीं। मैं फिर मूसा अलैहि. के पास आया तो उन्होंने कहा कि फिर अपने रब के पास वापस जाओ। क्योंकि आपकी उम्मत इन नमाजों का भी बोझ नहीं उठा सकेगी। मैं फिर लौटा (और ऐसा कई बार हुवा) आखिरकार अल्लाह तआला ने फरमाया कि वो नमाजें पांच हैं और दरहकीकत (सवाब के लिहाज से) पचास हैं। मेरे यहां फैसला बदलने का दस्तूर नहीं हैं। फिर मूसा अलैहि. के पास लौटकर आया तो उन्होंने कहा अपने रब के पास (और कम करने के लिए) लौट जाओ। मैंने कहा, अब मुझे अपने मालिक से शर्म आती है। फिर मुझे जिब्राईल अलैहि. लेकर रवाना हो गये। यहां तक कि सिदरतुल मुन्तहा तक पहुंचा दिया, जिसे कई तरह के रंगों ने ढाँप रखा था। जिनकी हकीकत का मुझे इल्म नहीं। फिर मैं जन्नत में दाखिल किया गया, वहां क्या देखता हूँ कि उसमें मोतियों की (जगमगाती) लड़ियां हैं और उसकी मिट्टी कस्तूरी है।

फायदे : उम्मत के बरगुजीदा लोगो का इस पर इत्तेफाक है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेराज जागने की हालत में बदन और रूह दोनों के साथ हुई और इस मौके पर नमाजें फर्ज हुयीं। नीज नौ बार अपने रब के पास आने जाने से पचास नमाजों में से पांच रह गयीं। चूनांचे कुरआनी कानून के मुताबिक एक नेकी का सवाब दस गुना है, इसलिए पांच नमाजें अदा करने से पचास ही का सवाब लिखा जाता है।

(औनुलबारी, 1/480)

229 : आइशा सिद्दीका रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अल्लाह तआला ने जब नमाज़ फर्ज की थी तो घर और सफर में (हर नमाज़ की) दो दो रकअतें फर्ज की थी। फिर सफर की नमाज अपनी असली हालत में कायम रखी गई और घर की नमाज़ को बढ़ाया गया।

٢٢٩ : عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ ٱلْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قَالَتْ: فَرَضَ ٱللهُ ٱلصَّلاَةَ حِينَ فَرَضَهَا، رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ، فِي ٱلْحَضَرِ وَٱلسَّفَرِ، فَأُقِرَّتْ صَلاَةُ ٱلسَّفَرِ، وَزِيدَ فِي صَلاَةِ ٱلْحَضَرِ. [رواه البخاري: ٣٥٠]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि सफर के बीच नमाज़ कम करना जरूरी है, इसे रुख्सत पर महमूल करना सही नहीं। (औनुलबारी,1/483)

बाब 2 : नमाज़ के लिए लिबास की फरजियत।

٢ - باب: وُجُوبُ ٱلصَّلاةِ فِي ٱلثِّيَابِ

230 : उमर बिन अबू सलमा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार एक ही कपड़े में नमाज़ पढ़ी, लेकिन उसके दोनों किनारों को उल्टकर (अपने कन्धों पर) डाल लिया था।

٢٣٠ : عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ صَلَّى فِي ثَوْبٍ واحِدٍ، قَدْ خَالَفَ بَيْنَ طَرَفَيْهِ. [رواه البخاري: ٣٥٤]

फायदे : इमाम बुखारी इस हदीस को अगले बाब में लाये हैं। नीज मुखालिफत, इलतेहाफ, तौशीह और इश्तेमाल इन तमाम का एक ही माना है कि कपड़े का वह किनारा जो दायें कन्धे पर है, उसे बायीं बगल से और जो बायें कन्धे पर है, उसे दायीं बगल से निकालकर दोनों किनारों को सीने पर बांध लिया जाये। इसका फायदा यह है कि रूकू और सज्दे के वक्त कपड़ा जिस्म से नहीं

गिरेगा। नीज रुकू के वक्त नमाज़ी की नजर शर्मगाह पर न पड़े। (औनुलबारी 1/485)

बाब 3 : एक ही कपड़े को लपेटकर उसमें नमाज़ पढ़ना।

٣ - باب: ٱلصَّلاَةُ فِي ٱلثَّوبِ ٱلوَاحِدِ مُلْتَحِفًا بِهِ

231 : उम्मे हानी बिन्ते अबू तालिब रज़ि. की वह हदीस जिसमें फतहे मक्का के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ का बयान है (नम्बर 199) गुजर चुकी है।

٢٣١ : عَنْ أُمِّ هَانِىءٍ بِنْتِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: حديث صلاة النبيِّ ﷺ يومَ الفتحِ تقدَّم. [رواه البخاري: ٣٥٣]

232 : उम्मे हानी की इस रिवायत में यह इज़ाफा है कि उन्होंने फरमाया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक ही कपड़ा अपने चारों तरफ लपेटकर आठ रकअत नमाज़ पढ़ी, जब आप (नमाज़ से) फारिग हुये तो मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे मादरजाद (मेरी माँ के बेटे अली मुरतजा रज़ि.) एक आदमी हुबैरा के फलां बेटे को कत्ल करने का इरादा रखते हैं। हालांकि मैंने उसे पनाह दी हुई है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ उम्मे हानी रज़ि.! जिसे तुमने पनाह दी, उसे हमने भी पनाह दी। उम्मे हानी रज़ि.फरमाती हैं कि यह चाश्त की नमाज़ का वक्त था।

٢٣٢ : وفي هذه الروايةِ قالتْ: فَصَلَّى ثَمَانِيَ رَكَعَاتٍ، مُلْتَحِفًا فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ، فَلَمَّا ٱنْصَرَفَ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، زَعَمَ ٱبْنُ أُمِّي، أَنَّهُ قَاتِلٌ رَجُلًا قَدْ أَجَرْتُهُ، فُلاَنَ بْنَ هُبَيْرَةَ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (قَدْ أَجَرْنَا مَنْ أَجَرْتِ يَا أُمَّ هَانِىءٍ). قَالَتْ أُمُّ هَانِىءٍ: وَذَاكَ ضُحًى. [رواه البخاري: ٣٥٧]

۲۳۳ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ سَائِلًا سَأَلَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، عَنِ ٱلصَّلاَةِ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَوَلِكُلِّكُمْ ثَوْبَانِ). [رواه البخاري: ۳٥٨]

233 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि एक साथी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक कपड़े में नमाज़ पढ़ने का हुक्म पूछा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, क्या तुम में से हर एक के पास दो कपड़े होते हैं।

٤ - باب: إِذَا صَلَّى فِي ٱلثَّوْبِ ٱلْوَاحِدِ فَلْيَجْعَل عَلَى عَاتِقَيْهِ

बाब 4 : जब कोई एक ही कपड़े में नमाज़ पढ़े तो अपने कन्धों पर कुछ (कपड़ा) डाल ले

۲۳٤ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (لاَ يُصَلِّي أَحَدُكُمْ فِي ٱلثَّوْبِ ٱلْوَاحِدِ لَيْسَ عَلَى عَاتِقَيْهِ شَيْءٌ). [رواه البخاري: ۳٥٩]

234 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुममें से कोई एक कपड़े में नमाज़ न पढ़े, जबकि उसके कन्धे पर कोई चीज न हो, यानी कंधे नंगे हो।

फायदे : यह उस सूरत में है, जब कपड़ा इस कद्र लम्बा चौड़ा हो कि सतर ढ़ांपने के बाद उससे कन्धे भी ढ़ांप लिये जायें, इसके खिलाफ अगर कपड़ा इतना तंग हो कि कन्धों को छुपाने के बाद सतर खुलने का डर हो तो ऐसी हालत में सतरपोशी के बाद कन्धों को खुला रखते हुये नमाज़ पढ़ लेना सबके नजदीक जायज है। (औनुलबारी 1/489)

235 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही दूसरी रिवायत है, उन्होंने फरमाया, मैं गवाही देता हूं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है, जो आदमी एक कपड़े में नमाज़ पढ़े, उसे चाहिए कि उसके दोनों किनारों को उलट ले।

٢٣٥ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَشْهَدُ أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ صَلَّى فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ، فَلْيُخَالِفْ بَيْنَ طَرَفَيْهِ). [رواه البخاري: ٣٦٠]

बाब 5 : जब कपड़ा तंग हो (तो उसमें कैसे नमाज़ पढ़े?)

٥ - باب: إِذَا كَانَ ٱلثَّوْبُ ضَيِّقًا

234 : जाबिर रज़ि.से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक सफर में था। रात को किसी जरूरी काम के लिए (आप के पास) आया तो देखा कि आप नमाज़ पढ़ रहे हैं। (उस वक्त) मेरे ऊपर एक ही कपड़ा था। मैंने उसे अपने बदन पर लपेटा और आपके पहलू में खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगा। जब आप फारिग हुए तो फरमाया, ऐ जाबिर! रात के वक्त कैसे आये? मैंने अपनी जरूरत बताई, जब मैं अपने काम से फारिग हुआ तो आपने फरमाया,' यह कपड़ा लपेटना कैसा था, जो मैंने देखा है? मैंने अर्ज किया मेरे पास एक ही

٢٣٦ : عَنْ جَابِرٍ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، فَجِئْتُ لَيْلَةً لِبَعْضِ أَمْرِي، فَوَجَدْتُهُ يُصَلِّي، وَعَلَيَّ ثَوْبٌ وَاحِدٌ، فَاشْتَمَلْتُ بِهِ، وَصَلَّيْتُ إِلَى جَانِبِهِ، فَلَمَّا ٱنْصَرَفَ قَالَ: (مَا ٱلسُّرَى يَا جَابِرُ؟). فَأَخْبَرْتُهُ بِحَاجَتِي، فَلَمَّا فَرَغْتُ قَالَ: (مَا هٰذَا ٱلاشْتِمَالُ ٱلَّذِي رَأَيْتُ). قُلْتُ: كَانَ ثَوْبٌ، قَالَ: (فَإِنْ كَانَ وَاسِعًا فَٱلْتَحِفْ بِهِ، وَإِنْ كَانَ ضَيِّقًا فَٱتَّزِرْ بِهِ). [رواه البخاري: ٣٦١]

कपड़ा था। आपने फरमाया, अगर लम्बा-चौड़ा हो तो उसे लपेट ले और अगर तंग हो तो सिर्फ तहबन्द बना ले।

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में है कि कपड़ा बहुत ज्यादा तंग था और हज़रत जाबिर उसे पहनकर इसलिए आगे को झुके हुए थे कि कहीं सतर न खुल जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उन्हें इस हालत में देखा तो फरमाया कि किनारों को उलटकर पहनना उस वक्त है जब कपड़ा लम्बा-चौड़ा हो तो, तंग होने की सूरत में उसे तहबन्द (लूंगी) के तौर पर पहनना काफी है। (औनुलबारी, 1/491)

٢٣٧ : عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رِجَالٌ يُصَلُّونَ مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، عَاقِدِي أُزْرِهِمْ عَلَى أَعْنَاقِهِمْ، كَهَيْئَةِ ٱلصِّبْيَانِ، وَيُقَالُ لِلنِّسَاءِ: (لاَ تَرْفَعْنَ رُؤُوسَكُنَّ حَتَّى يَسْتَوِيَ ٱلرِّجَالُ جُلُوسًا). [رواه البخاري: ٣٦٢]

237 : सहल बिन सअद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अपनी चादरें बच्चों की तरह गर्दनों पर बांधे नमाज़ पढ़ते थे और औरतों को हिदायत की जाती कि जब तक मर्द सीधे होकर बैठ न जायें जब तक अपने सर सज्दे से न उठायें

फायदे : यह अहतमाम इसलिए किया जाता है कि औरतों की नजर मर्दो के सतर पर न पड़े। (औनुलबारी, 1/492)

٦ - باب: ٱلصَّلاَةُ فِي ٱلْجُبَّةِ ٱلشَّأْمِيَّةِ

बाब 6 : शामी जुब्बे में नमाज़ पढ़ना।

٢٣٨ : عَنِ ٱلْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَقَالَ: (يَا مُغِيرَةُ، خُذِ ٱلإِدَاوَةَ). فَأَخَذْتُهَا، فَانْطَلَقَ

238 : मुगीरा बिन शोबा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किसी सफर में

رَسُولَ ٱللهِ ﷺ حَتَّى تَوَارَى عَنِّي، فَقَضَى حَاجَتَهُ، وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ شَأْمِيَّةٌ، فَذَهَبَ لِيُخْرِجَ يَدَه مِنْ كُمِّهَا فَضَاقَتْ، فَأَخْرَجَ يَدَهُ مِنْ أَسْفَلِهَا، فَصَبَبْتُ عَلَيْهِ، فَتَوَضَّأَ وُضُوءَهُ لِلصَّلاَةِ، وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ، ثُمَّ صَلَّى. [رواه البخاري: ٣٦٣]

था। आपने फरमाया, ऐ मुगीरा रज़ि.! पानी का बर्तन उठा लो, मैंने उठा लिया तो फिर आप चले गये, यहां तक कि मेरी नजरों से गायब हो गये। आपने अपनी हाजत को पूरा किया। उस वक्त आप शामी जुब्बा पहने हुये थे। आपने उसकी आस्तीन से हाथ निकालना चाहा चूंकि वह तंग था, इसलिए आपने अपना हाथ उसके नीचे से निकाला। फिर मैंने आपके अंगों पर पानी डाला। आपने नमाज़ के लिए वुजू फरमाया और अपने मोजों पर मसह किया, फिर नमाज़ पढ़ी।

फायदे : शाम में उन दिनों कुफ्फार की हुकूमत थी, मकसद यह है कि काफिरों के तैयार किये हुए कपड़ों में नमाज़ पढ़ना ठीक है। बशर्ते कि इस बात का यकीन हो कि वह गन्दगी लगे हुए नहीं हो। (औनुलबारी, 1/493)

---

٧ - باب: كَرَاهِيَة ٱلتَّعَرِّي فِي ٱلصَّلاةِ

बाब 7 : नमाज़ में नंगे होने की मुमानियत।

٢٣٩ : عَنْ جَابِر بْن عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا يُحَدِّثُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، كَانَ يَنْقُلُ مَعَهُمُ ٱلْحِجَارَةَ لِلْكَعْبَةِ، وَعَلَيْهِ إِزَارُهُ، فَقَالَ لَهُ ٱلْعَبَّاسُ عَمُّهُ: يَا ابْنَ أَخِي، لَوْ حَلَلْتَ إِزَارَكَ، فَجَعَلْتَهُ عَلَى مَنْكِبَيْكَ دُونَ ٱلْحِجَارَةِ، قَالَ: فَحَلَّهُ فَجَعَلَهُ عَلَى مَنْكِبَيْهِ، فَسَقَطَ مَغْشِيًّا عَلَيْهِ، فَما رُئِيَ بَعْدَ ذَلِكَ عُرْيَانًا ﷺ. [رواه البخاري: ٣٦٤]

239 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, वह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरैश के साथ काबा की तामीर के लिए पत्थर उठाते थे। आप सिर्फ तहबन्द बांधे हुए थे। आपके चचा अब्बास रज़ि. ने कहा, ऐ मेरे भतीजे! तुम अपना

तहबन्द उतार कर उसे अपने कन्धों पर पत्थर से बचावों के लिए रख लो (ताकि तुम्हें आसानी रहे।) जाबिर रज़ि. कहते हैं कि आपने अपना तहबन्द उतारकर अपने कन्धों पर रख लिया तो आप उसी वक्त बेहोश होकर गिर पड़े। उसके बाद आप कभी नंगे नहीं देखे गये।

फायदे : दूसरी रिवायत में है कि फिर एक फरिश्ता उतरा, उसने दोबारा आपके तहबन्द बांध दिया। इससे यह भी मालूम हुआ कि आप नबी होने से पहले भी बुरे कामों और बेशर्मी की बातों से महफूज थे। (औनुलबारी, **1/494**)।

नोट : जब आम हालत में नंगा होना दुरस्त नहीं है तो नमाज़ नंगे कैसे पढ़ी जा सकती है? (अलवी)

बाब **8** : जिस्म में छुपाने के लायक हिस्से।

٨ - [باب: مَا يُستر مِنَ العَورَة]

240 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होनें फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इश्तिमाले सम्मा से मना फरमाया और गोठ मारकर एक कपड़े में बैठने से भी रोका, जबकि उसकी शर्मगाह पर कुछ न हो।

٢٤٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنِ ٱشْتِمَالِ ٱلصَّمَّاءِ، وَأَنْ يَحْتَبِيَ ٱلرَّجُلُ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ، لَيْسَ عَلَى فَرْجِهِ مِنْهُ شَيْءٌ. [رواه البخاري: ٣٦٧]

फायदे : इश्तिमाले सम्मा यह है कि कपड़ा इस तरह लपेटा जाये कि हाथ वगैरह बन्द हो जायें और गोठ मारकर बैठना यह है कि दोनों सुरीन जमीन पर रखकर अपनी पिण्डलियां खड़ी करके बैठना यह इसलिए मना है कि उसमें सतर खुलने का डर है।

241 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है,

٢٤١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ

عَنْهُ قَالَ: نَهى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ بَيْعَتَيْنِ: عَنِ اللِّماسِ وَالنِّبَاذِ، وَأَنْ يَشْتَمِلَ الصَّمَّاءَ، وَأَنْ يَحْتَبِيَ الرَّجُلُ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ. [رواه البخاري: ٣٦٨]

उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो तरह के खरीदने और बेचने से मना फरमाया। एक छूने से और दूसरी जो महज फैंकने से पुख्ता हो जाये। नीज इस्तिमाले सम्मा और एक कपड़े में गोठ मारकर बैठने से भी मना फरमाया।

٢٤٢ : وعَنْه رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَني أَبُو بَكْرٍ فِي تِلْكَ الْحَجَّةِ، فِي مُؤَذِّنِينَ يَوْمَ النَّحْرِ، نُؤَذِّنُ بِمِنًى: أَلاَ لاَ يَحُجُّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ، وَلاَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ. ثُمَّ أَرْدَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلِيًّا، فَأَمَرَهُ أَنْ يُؤَذِّنَ بِـ«بَرَاءَةٌ». قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَأَذَّنَ مَعَنَا عَلِيٌّ فِي أَهْلِ مِنًى يَوْمَ النَّحْرِ: لاَ يَحُجُّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ، وَلاَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ. [رواه البخاري: ٣٦٩]

242 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि मुझे अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि. ने हज में कुरबानी के दिन ऐलान करने वालों के साथ भेजा ताकि हम मिना में यह ऐलान करें कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक हज न करे और कोई आदमी नंगे होकर काबे का चक्कर न लगाये। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अली रज़ि. को यह हुक्म देकर भेजा कि वह सूरा-ए-बराअत का ऐलान कर दें (जिसमें मुश्रिकों से ताल्लुक न रखने का ऐलान है) अबू हुरैरा रज़ि. का बयान है कि अली रज़ि. ने कुर्बानी के दिन हमारे साथ मिना के लोगों में यह ऐलान किया कि आज के बाद न तो कोई मुश्रिक हज करे और न ही कोई नंगे होकर बैतुल्लाह का तवाफ करे।

फायदे : जब तवाफ के दौरान शर्मगाह ढ़ांपना जरूरी है तो नमाज़ में और ज्यादा जरूरी होगा।

---

٩ - باب: مَا يُذْكَرُ فِي ٱلْفَخِذِ

बाब 9 : रान के बारे में जो रिवायत आई है, उसका बयान।

٢٤٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ غَزَا خَيْبَرَ، فَصَلَّيْنَا عِنْدَهَا صَلاَةَ ٱلْغَدَاةِ بِغَلَسٍ، فَرَكِبَ نَبِيُّ ٱللهِ ﷺ، وَرَكِبَ أَبُو طَلْحَةَ، وَأَنَا رَدِيفُ أَبِي طَلْحَةَ، فَأَجْرَى نَبِيُّ ٱللهِ ﷺ فِي زُقَاقِ خَيْبَرَ، وَإِنَّ رُكْبَتِي لَتَمَسُّ فَخِذَ نَبِيِّ ٱللهِ ﷺ، ثُمَّ حَسَرَ ٱلإِزَارَ عَنْ فَخِذِهِ، حَتَّى إِنِّي أَنْظُرُ إِلَى بَيَاضِ فَخِذِ نَبِيِّ ٱللهِ ﷺ، فَلَمَّا دَخَلَ ٱلْقَرْيَةَ قَالَ: (ٱللهُ أَكْبَرُ، خَرِبَتْ خَيْبَرُ، إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ، فَسَاءَ صَبَاحُ ٱلْمُنْذَرِينَ). قَالَهَا ثَلاَثًا، قَالَ: وَخَرَجَ ٱلْقَوْمُ إِلَى أَعْمَالِهِمْ، فَقَالُوا: مُحَمَّدٌ وَٱلْخَمِيسُ، - يَعْنِي ٱلْجَيْشَ - قَالَ: فَأَصَبْنَاهَا عَنْوَةً، فَجُمِعَ ٱلسَّبْيُ، فَجَاءَ دِحْيَةُ، فَقَالَ: يَا نَبِيَّ ٱللهِ، أَعْطِنِي جَارِيَةً مِنَ ٱلسَّبْيِ، قَالَ: (ٱذْهَبْ فَخُذْ جَارِيَةً). فَأَخَذَ صَفِيَّةَ بِنْتَ حُيَيٍّ، فَجَاءَ رَجُلٌ إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ ٱللهِ، أَعْطَيْتَ دِحْيَةَ صَفِيَّةَ بِنْتَ حُيَيٍّ، سَيِّدَةَ قُرَيْظَةَ وَٱلنَّضِيرِ، لاَ تَصْلُحُ إِلَّا لَكَ، قَالَ: (ٱدْعُوهُ بِهَا). فَجَاءَ بِهَا،

243 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैबर का रूख किया तो हमने फजर की नमाज़ खैबर के नजदीक अव्वल वक्त अदा की, फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू तलहा रज़ि. सवार हुये। मैं अबू तलहा रज़ि. के पीछे सवार था, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैबर की गलियों में अपनी सवारी को एड़ लगाई (दोड़ते वक्त) मेरा घुटना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रान मुबारक से छू जाता था। फिर आपने अपनी रान से चादर हटा दी, यहां तक कि मुझे रान मुबारक की सफेदी नजर आने लगी और जब आप बस्ती के अन्दर दाखिल हो गये तो आपने तीन बार यह कलेमात फरमाये। अल्लाहु अकबर खैबर वीरान हुआ।

फَلَمَّا نَظَرَ إِلَيْهَا ٱلنَّبِيُّ ﷺ قَالَ: (خُذْ جَارِيَةً مِنَ ٱلسَّبْيِ غَيْرَهَا). قَالَ: فَأَعْتَقَهَا ٱلنَّبِيُّ ﷺ وَتَزَوَّجَهَا. وَجَعَلَ صَدَاقَهَا عِتْقَهَا، حَتَّى إِذَا كَانَ بِالطَّرِيقِ، جَهَّزَتْهَا لَهُ أُمُّ سُلَيْمٍ، فَأَهْدَتْهَا لَهُ مِنَ ٱللَّيْلِ، فَأَصْبَحَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ عَرُوسًا، فَقَالَ: (مَنْ كَانَ عِنْدَهُ شَيْءٌ فَلْيَجِيءْ بِهِ). وَبَسَطَ نِطَعًا، فَجَعَلَ ٱلرَّجُلُ يَجِيءُ بِالتَّمْرِ، وَجَعَلَ ٱلرَّجُلُ يَجِيءُ بِالسَّمْنِ، قَالَ: وَأَحْسِبُهُ قَدْ ذَكَرَ ٱلسَّوِيقَ، قَالَ: فَحَاسُوا حَيْسًا، فَكَانَتْ وَلِيمَةَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٣٧١]

तो जब हम किसी कौम के आंगन में पड़ाव करते हैं तो उन लोगों की सुबह बड़ी भयानक होती है। जो इससे पहले खबरदार किये गये हों। अनस रज़ि. कहते हैं, बस्ती के लोग अपने काम-काज के लिए निकले तो कहने लगे, यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनका लश्कर आ पहुंचा। अनस रज़ि. कहते हैं कि हमने खैबर को तलवार के जोर से जीता। फिर कैदी जमा किये गये तो दहिया रज़ि. आये और अर्ज किया ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे इन कैदियों में से एक लौण्डी अता फरमाये। आपने फरमाया, जाओ कोई लौण्डी ले लो। उन्होंने सफिय्या बिन्ते हुयी रज़ि. को ले लिया। फिर एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर होकर, अर्ज करने लगा, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने बनू कुरैजा और बनू नजीर के कबीले की सरदार सफिय्या बिन्ते हुयी रज़ि. को दहिया रज़ि. को दे दी है। हालांकि आपके अलावा कोई उसके मुनासिब नहीं है। आपने फरमाया, अच्छा दहिया रज़ि. को बुलाओ। चूनांचे वह सफिय्या रज़ि. समेत आपकी खिदमत में हाजिर हुये। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब सफिय्या रजि. को देखा तो दहिया से फरमाया, तुम इसके अलावा कैदियों में से कोई और लौण्डी ले लो। अनस रज़ि. कहते हैं कि फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफिय्या रजि. को

आजाद कर दिया और उसकी आजादी को ही महर का हक करार देकर उससे निकाह कर लिया। जब रवाना हुये तो उम्मे सुलैम रज़ि. ने सफिय्या रज़ि. को आपके लिए आरास्ता कर के रात को आपके पास भेजा और सुबह को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुल्हे की हैसियत से फरमाया, जिसके पास जो कुछ है, वह यहां ले आये और आपने चमड़े का एक दस्तरखान बिछा दिया तो कोई खजूरें लाया और कोई घी लाया, हदीस के रावी कहते हैं कि मेरा ख्याल है कि अनस ने सत्तू का भी जिक्र किया। फिर उन्होंने मलीदा तैयार किया और यही रसूलुल्लाह के वलीमे की दावत थी।

फायदे : इमाम बुखारी का मानना है कि रान सतर नहीं है, जैसा कि हदीस से मालूम होता है। फिर भी एहतियात इसी में हैं कि उसे छिपाया जाये।

बाब 10 : औरत कितने कपड़ों में नमाज़ पढ़े?

١٠ - باب: فِي كَمْ تُصَلِّي ٱلمَرأَةُ مِنَ ٱلثِّيَابِ

244 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ पढ़ते तो आपके साथ कुछ मुसलमान औरतें अपनी चादरों में लिपटी हुई हाजिर होती थी। बाद में अपने घरों को ऐसे लौट जाती कि अन्धेरे की वजह से उन्हें कोई पहचान न सकता था।

٢٤٤ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَقَدْ كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُصَلِّي ٱلفَجْرَ، فَيَشْهَدُ مَعَهُ نِسَاءٌ مِنَ ٱلمُؤْمِنَاتِ، مُتَلَفِّعَاتٍ فِي مُرُوطِهِنَّ، ثُمَّ يَرْجِعْنَ إِلَى بُيُوتِهِنَّ، مَا يَعْرِفُهُنَّ أَحَدٌ. [رواه البخاري: ٣٧٢]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि अगर औरत एक ही कपड़े में तमाम बदन छिपा ले तो नमाज़ दुरूस्त है।

बाब 11 : जब कोई नक्श किये हुए कपड़े में नमाज़ पढ़े।

١١ - باب: إِذَا صَلَّى فِي ثَوْبٍ لَهُ أَعْلَامٌ

245 : आइशा रज़ि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार नक्श की हुई चादर में नमाज़ पढ़ी। आपकी नजर उसके नक्शों पर पड़ी तो आपने नमाज़ से फारिग होकर फरमाया, मेरी इस चादर को अबू जहम के पास वापस ले जाओ और उससे अम्बजानी (सादा चादर) ले आओ। क्योंकि इस (नक्श की हुई चादर) ने मुझे अपनी नमाज़ से गाफिल कर दिया था।

٢٤٥ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ صَلَّى فِي خَمِيصَةٍ لَهَا أَعْلَامٌ، فَنَظَرَ إِلَى أَعْلَامِهَا نَظْرَةً، فَلَمَّا ٱنْصَرَفَ قَالَ: (اذْهَبُوا بِخَمِيصَتِي هٰذِهِ إِلَى أَبِي جَهْمٍ، وَأْتُونِي بِأَنْبِجَانِيَّةِ أَبِي جَهْمٍ، فَإِنَّهَا أَلْهَتْنِي آنِفًا عَنْ صَلَاتِي). [رواه البخاري: ٣٧٣]

फायदे : मालूम हुआ कि जो चीजें भी खुशू में खलल अन्दाज हों, नमाज़ी को उनसे परहेज करना (बचना) चाहिए, नक्श की हुई जाये-नमाज़ का भी यही हुक्म है।

बाब 12: अगर सलीब (सूली) या तस्वीर छपे हुए कपड़े में नमाज़ पढ़े तो क्या फासिद (खराब) हो जायेगी?

١٢ - باب: إِنْ صَلَّى فِي ثَوْبٍ مُصَلَّبٍ أَوْ تَصَاوِيرَ هَلْ تَفْسُدُ صَلَاتُهُ؟

246 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि आइशा रज़ि. के पास एक पर्दा था, जिसे उन्होंने घर के एक कोने में डाल रखा था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (उसे देखकर)

٢٤٦ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: كَانَ قِرَامٌ لِعَائِشَةَ، سَتَرَتْ بِهِ جَانِبَ بَيْتِهَا، فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (أَمِيطِي عَنَّا قِرَامَكِ هٰذَا، فَإِنَّهُ لَا تَزَالُ تَصَاوِيرُهُ تَعْرِضُ لِي فِي صَلَاتِي). [رواه البخاري: ٣٧٤]

फरमाया, हमारे सामने से अपना यह पर्दा हटा दो, क्योंकि इसकी तस्वीरें बराबर मेरी नमाज़ में सामने आती रहती हैं

फायदे : अगरचे हदीस में सूली का जिक्र नहीं, मगर यह तस्वीर के हुक्म में दाखिल है। जब ऐसे कपड़े का लटकाना मना है। तो पहनना तो और ज्यादा मना होगा। शायद इमाम बुखारी ने उस हदीस की तरफ इशारा किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में कोई चीज न छोड़ते जिस पर सलीब बनी होती थी, उसे तोड़ डालते थे।

बाब 13 : रेशमी कोट में नमाज़ पढ़ना और फिर उसे उतार देना।

١٣ - باب: مَنْ صَلَّى فِي فَرُّوجِ حَرِيرٍ ثُمَّ نَزَعَهُ

247 : उक्बा बिन आमिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में एक रेशमी कोट तोहफे के तौर पर लाया गया, आपने उसे पहनकर नमाज़ पढ़ी, मगर जब नमाज़ से फारिग हुये तो उसे सख्ती से उतर फैंका। गोया आपको वह सख्त नागवार गुजरा। नीज आपने फरमाया कि अल्लाह से डरने वाले लोगों के लिए यह मुनासिब नहीं है।

٢٤٧ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أُهْدِيَ إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَرُّوجُ حَرِيرٍ، فَلَبِسَهُ فَصَلَّى فِيهِ، ثُمَّ ٱنْصَرَفَ، فَنَزَعَهُ نَزْعًا شَدِيدًا، كَالْكَارِهِ لَهُ، وَقَالَ: (لَا يَنْبَغِي هٰذَا لِلْمُتَّقِينَ). [رواه البخاري: ٣٧٥]

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में है कि मुझे हज़रत जिब्राईल अलैहि. ने यह रेशमी कोट पहनने से रोक दिया था। मुम्किन है कि आपने उसे रेशमी लिबास के हराम होने से पहले पहना हो।

बाब 14 : लाल कपड़े में नमाज़ पढ़ना।

١٤ - باب: ٱلصَّلَاةُ فِي ٱلثَّوْبِ ٱلأَحْمَرِ

248 : अबू जुहैफा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चमड़े के एक लाल खेमे में देखा और मैंने (यह भी खुद अपनी आखों से) देखा कि जब बिलाल रज़ि. आपके वुज़ू से बचा हुआ पानी लाते तो लोग उसे हाथों-हाथ लेने लगते। जिसको उसमें से कुछ मिल जाता वह उसे अपने चेहरे पर मल लेता और जिसे कुछ न मिलता वह अपने पास वाले के हाथ से तरी ले लेता। फिर मैंने बिलाल रज़ि. को देखा कि उन्होंने एक छोटा नेजा उठाकर गाड़ दिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक लाल जोड़ा पहने हुये, दामन उठाये आये और छोटे नेजे की तरफ रूक करके लोगों को दो रकअत नमाज़ पढ़ाई। मैंने देखा कि लोग और जानवर नेजे के आगे से गुजर रहे थे।

٢٤٨ : عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فِي قُبَّةٍ حَمْرَاءَ مِنْ أَدَمٍ، وَرَأَيْتُ بِلاَلاً أَخَذَ وَضُوءَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَرَأَيْتُ ٱلنَّاسَ يَبْتَدِرُونَ ذٰلِكَ ٱلْوَضُوءَ، فَمَنْ أَصَابَ مِنْهُ شَيْئًا تَمَسَّحَ مِنْهُ، وَمَنْ لَمْ يُصِبْ مِنْهُ شَيْئًا أَخَذَ مِنْ بَلَلِ يَدِ صَاحِبِهِ، ثُمَّ رَأَيْتُ بِلاَلاً أَخَذَ عَنَزَةً فَرَكَزَهَا، وَخَرَجَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ مُشَمِّرًا، صَلَّى إِلَى ٱلْعَنَزَةِ بِالنَّاسِ رَكْعَتَيْنِ، وَرَأَيْتُ ٱلنَّاسَ وَٱلدَّوَابَّ، يَمُرُّونَ بَيْنَ يَدَيِ ٱلْعَنَزَةِ. [رواه البخاري: ٣٧٦]

फायदे : इमाम इब्ने कय्यिम ने लिखा है कि आपका यह जोड़ा लाल न था, बल्कि उस में काली धारियां थी। इससे मर्दों को सुर्ख लिबास पहनने का सबूत मिलता है। अगर औरतों और काफिरों से मुशाबिहत और शोहरत की ख्वाहिश न हो।(औनुलबारी, 1/508)

बाब 15 : छत मिम्बर और लकड़ी पर नमाज़ पढ़ना।

١٥ - باب: ٱلصَّلاَةُ فِي ٱلسُّطُوحِ وَٱلْمِنبَرِ وَٱلْخَشَبِ

249 : सहल बिन सअद रज़ि. से

٢٤٩ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ

اَللهُ عَنْهُ: وقد سئل: مِنْ أَيِّ شَيْءٍ اَلْمِنْبَرُ؟ فَقَالَ: مَا بَقِيَ بِالنَّاسِ أَعْلَمُ مِنِّي، هُوَ مِنْ أَثْلِ اَلْغَابَةِ، عَمِلَهُ فُلَانٌ مَوْلَى فُلَانَةَ، لِرَسُولِ اَللهِ ﷺ، وَقَامَ عَلَيْهِ رَسُولُ اَللهِ ﷺ حِينَ عُمِلَ وَوُضِعَ، فَاسْتَقْبَلَ اَلْقِبْلَةَ، وكَبَّرَ وَقَامَ اَلنَّاسُ خَلْفَهُ، فَقَرَأَ وَرَكَعَ وَرَكَعَ اَلنَّاسُ خَلْفَهُ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ رَجَعَ اَلْقَهْقَرَى، فَسَجَدَ عَلَى الأَرْضِ، ثُمَّ عَادَ إِلَى اَلْمِنْبَرِ، ثمَّ قَرَأَ ثُمَّ رَكَعَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ، ثُمَّ رَجَعَ اَلْقَهْقَرَى حَتَّى سَجَدَ بِالأَرْضِ، فَهَذَا شَأْنُهُ. [رواه البخاري: ٣٧٧]

रिवायत है, उनसे पूछा गया कि मिम्बर किस चीज का था? वह बोले कि आप लोगों में उसके मुताअल्लिक जानने वाला मुझसे ज्यादा कोई नहीं है। वह मकामे गाबा के झांऊ से बना था, जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए फलां औरत के फलाँ गुलाम ने तैयार किया था। जब वह तैयार हो चुका और (मस्जिद में) रखा गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस पर खड़े हुये और किब्ला की तरफ खड़े होकर तकबीर कही। और लोग भी आपके पीछे खड़े हुए और आपने किरअत फरमाई और रूकू किया और लोगों ने भी आपके पीछे रूकू किया। फिर आपने अपना सर उठाया और पीछे हट कर जमीन पर सज्दा किया। (दोनों सज्दे अदा करने के बाद) फिर मिम्बर पर लौट आये, किरअत की और रूकू फरमाया, फिर आपने (रूकू) से सर उठाया और पीछे हटे, यहां तक कि जमीन पर सज्दा किया, नबी स.अ.व. के मिम्बर का यही किस्सा है।

फ़ायदे : मालूम हुआ कि इमाम मुकतदियों से ऊंची जगह पर खड़ा हो सकता है, जैसा कि इमाम बुखारी ने खुद इस हदीस के आखिर में बयान किया है। नवाब सद्दीक हसन खान ने इस मौजू पर एक मुस्तकिल रिसाला लिखा है। (औनुलबारी, 1/511)

बाब 16 : चटाई पर नमाज़ पढ़ने का बयान।

١٦ - باب: الصَّلاةُ عَلَى حَصِيرٍ

250 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि उनकी दादी मुलैका रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खाने के लिए दावत दी जो उन्होंने आपके लिए तैयार किया था। आपने उससे कुछ खाया, फिर फरमाने लगे कि खड़े हो जाओ। मैं तुम्हें नमाज़ पढ़ाऊंगा। अनस रज़ि. कहते हैं कि मैंने एक चटाई को उठाया जो ज्यादा इस्तेमाल की वजह से काली हो गई थी। मैंने उसे पानी से धोया, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस पर खड़े हो गये। मैंने और एक यतीम लड़के ने आपके पीछे सफ बना ली और बुढ़िया (दादी) हमारे पीछे खड़ी हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें दो रकअत नमाज़ पढ़ाई। नमाज पढ़ने के बा आप वापस तशरीफ ले गये।

٢٥٠ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ جَدَّتَهُ مُلَيْكَةَ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا - دَعَتْ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لِطَعَامٍ صَنَعَتْهُ لَهُ، فَأَكَلَ مِنْهُ، ثُمَّ قَالَ: (قُومُوا فَلِأُصَلِّي لَكُمْ). قَالَ أَنَسٌ: فَقُمْتُ إِلَى حَصِيرٍ لَنَا، قَدِ ٱسْوَدَّ مِنْ طُولِ مَا لُبِسَ، فَنَضَحْتُهُ بِمَاءٍ، فَقَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، وَصَفَفْتُ أَنَا وَٱلْيَتِيمُ وَرَاءَهُ، وَٱلْعَجُوزُ مِنْ وَرَائِنَا، فَصَلَّى لَنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ ٱنْصَرَفَ. [رواه البخاري: ٣٨٠]

फायदे : मालूम हुआ कि जमाअत के दौरान औरत अकेली खड़ी हो सकती है, जबकि मर्दो के लिए ऐसा करना किसी सूरत में जाइज नहीं। (औनुलबारी, 1/514)

बाब 17 : बिस्तर पर नमाज़ पढ़ना।

١٧ - باب: الصَّلاةُ عَلَى ٱلفِرَاشِ

251 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया, मैं नबी

٢٥١ : عَنْ عَائِشَةَ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا - زَوْجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ:

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने लेटी हुयी थी और मेरे दोनों पांव आपकी तरफ होते। जब आप सज्दा करते तो मुझे दबा देते थे और मैं अपना पांव समेट लेती और जब आप खड़े हो जाते तो फिर उन्हें फैला देती थी। हज़रत आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि उन दिनों घरों में चिराग नहीं होते थे।

كُنْتُ أَنَامُ بَيْنَ يَدَيْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَرِجْلاَيَ فِي قِبْلَتِهِ، فَإِذَا سَجَدَ غَمَزَنِي فَقَبَضْتُ رِجْلَيَّ، فَإِذَا قَامَ بَسَطْتُهُمَا، قَالَتْ: وَٱلْبُيُوتُ يَوْمَئِذٍ لَيْسَ فِيهَا مَصَابِيحُ. [رواه البخاري: ٣٨٢]

फायदे : इमाम बुखारी ने उन लोगों का रद किया है जो मिट्टी के सिवा दीगर चीजों पर सज्दा जाइज नहीं समझते। नीज यह भी मालूम हुआ कि औरतों को हाथ लगाने से वुजू नहीं टूटता।
(औनुलबारी, 1/515)

252 : आइशा रज़ि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर के बिस्तर पर नमाज़ पढ़ते और वह खुद आपके और किब्ले के बीच जनाजे की तरह लेटी होती थी।

٢٥٢ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي، وَهِيَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ ٱلْقِبْلَةِ، عَلَى فِرَاشِ أَهْلِهِ، ٱعْتِرَاضَ ٱلْجَنَازَةِ. [رواه البخاري: ٣٨٣]

फायदे : इस हदीस से वजाहत हो गई कि आपने बिस्तर पर नमाज़ पढ़ी थी। क्योंकि पहली हदीस में उसकी सराहत न थी। अगरचे आइशा रजि. के आगे लेटने में इशारा मौजूद है कि आप सोने वाले बिस्तर पर नमाज़ पढ़ रहे थे। नीज यह भी मालूम हुआ कि सोये हुए आदमी की तरफ नमाज़ पढ़ना बुरा नहीं है।

बाब 18 : सख़्त गर्मी में कपड़े पर सज्दा करना।

١٨ - باب: ٱلسُّجُودُ عَلَى ٱلثَّوْبِ فِي شِدَّةِ ٱلحَرِّ

253: अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे तो हममें से कोई सख़्त गर्मी की वजह से सज्दा की जगह अपने कपड़े का किनारा बिछा देता था।

٢٥٣ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَيَضَعُ أَحَدُنَا طَرَفَ ٱلثَّوْبِ، مِنْ شِدَّةِ ٱلْحَرِّ، فِي مَكَانِ ٱلسُّجُودِ. [رواه البخاري: ٣٨٥]

फायदे : मालूम हुआ कि नमाज़ के दौरान कम अमल से नमाज़ खराब नहीं होती।

बाब 19 : जूतों समेत नमाज़ पढ़ना।

١٩ - باب: ٱلصَّلاةُ فِي ٱلنِّعَالِ

254 : अनस रज़ि. से ही रिवायत है, उनसे पूछा गया क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जूतों समेत नमाज़ पढ़ लेते? उन्होंने जवाब दिया हां!

٢٥٤ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّه سُئِلَ: أَكَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي فِي نَعْلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. [رواه البخاري: ٣٨٦]

फायदे : मालूम हुआ कि जूतों समेत नमाज़ पढ़ने में कोई हर्ज नहीं है। बशर्ते कि वह गंदे न हो। याद रहे कि इस किस्म के जूते जमीन पर रगड़ने से पाक हो जाते हैं, चाहे गंदगी किसी किस्म की हो।

बाब 20 : मोजे पहनकर नमाज़ पढ़ना।

٢٠ - باب: ٱلصَّلاةُ فِي ٱلخِفَافِ

255 : जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने एक बार पेशाब किया, फिर वुज़ू किया तो अपने मोजों पर मसह किया। उसके बाद खड़े होकर (मोजों

٢٥٥ : عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أنه بَالَ ثُمَّ تَوَضَّأَ، وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ، ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى، فَسُئِلَ فَقَالَ: رَأَيْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ صَنَعَ مِثْلَ هٰذَا. فَكَانَ يُعْجِبُهُمْ، لأَنَّ جَرِيرًا كَانَ مِنْ آخِرِ مَنْ أَسْلَمَ. [رواه البخاري: ٣٨٧]

समेत) नमाज़ अदा की। उनसे इसकी बाबत पूछा गया तो उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसा करते देखा है। लोगों को यह हदीस बहुत पसन्द थी, क्योंकि जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. आखिर में इस्लाम लाये थे।

फायदे : हज़रत जरीर रज़ि. के अमल से वजाहत हो गई की सूरा-ए-माइदा में वुजू के वक्त पांव धोने का जो जिक्र है, उससे मोजों पर मसह करने का अमल खत्म नहीं हुआ, बल्कि यह हुक्म आखिर वक्त तक बाकी रहा। (औनुलबारी, 1/519)

٢١ - باب: يُبْدِي ضَبْعَيْهِ وَيُجَافِي فِي السُّجُود

बाब 21 : सज्दा के बीच दोनों हाथों को फैलाना और बगलों से दूर रखना।

٢٥٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ: كَانَ إِذَا صَلَّى فَرَّجَ بَيْنَ يَدَيْهِ، حَتَّى يَبْدُوَ بَيَاضُ إِبْطَيْهِ. [رواه البخاري: ٣٩٠]

256 : अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुहैना रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ पढ़ते तो अपनी दोनों बगलों के बीच फासला रखते। यहां तक कि आपकी बगलों की सफेदी दिखाई देने लगती।

फायदे : औरतों के लिए भी इसी अन्दाज से सज्दा करने का हुक्म है, जिन रिवायतों में औरतों के लिए अपना जिस्म समेटने का जिक्र है, वह सही नहीं है।

٢٢ - باب: فَضْلُ ٱسْتِقْبَالِ ٱلْقِبْلَةِ

बाब 22 : (नमाज़ में) किब्ला रूख खड़े होने की फजीलत।

٢٥٧ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُول ٱللهِ ﷺ: (مَنْ صَلَّى صَلاَتَنَا، وَٱسْتَقْبَلَ قِبْلَتَنَا،

257 : अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

وأكل ذبيحتنا، فذلك المسلم، الذي له ذمة الله وذمة رسوله، فلا تخفروا الله في ذمته). [رواه البخاري: ٣٩١]

वसल्लम ने फरमाया जो हमारी नमाज़ की तरह नमाज़ पढ़े और हमारे किब्ले की तरफ मुंह करे और हमारा कुर्बान किया हुआ जानवर खाये तो वह ऐसा मुसलमान है, जिसे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पनाह हासिल है।

फायदे : नमाज़ के दौरान किब्ले की तरफ मुंह करना जरूरी है। अलबत्ता मजबूरी या डर की हालत में इसकी फरजियत खत्म हो जाती है। इसी तरह निफ्ली नमाज़ में भी इसके मुताअल्लिक कुछ छूट है, जबकि सवारी पर अदा की जा रही हो।

(औनुलबारी, 1/522)

٢٣ - باب: قول الله تعالى: ﴿وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى﴾

बाब 23 : अल्लाह का फरमान : "मकामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह बनाओ"

٢٥٨ : عن ابن عمر رضي الله عنهما: أنه سئل عن رجل طاف بالبيت للعمرة، ولم يطف بين الصفا والمروة، أيأتي امرأته؟ فقال: قدم النبي ﷺ، فطاف بالبيت سبعا، وصلى خلف المقام ركعتين، وطاف بين الصفا والمروة، وقد كان لكم في رسول الله أسوة حسنة. [رواه البخاري: ٣٩٥]

258 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि उनसे एक आदमी के बारे में सवाल किया गया, जिसने अल्लाह के घर का तवाफ (चक्कर) किया और सफा और मरवा के बीच दौड़ा नहीं तो क्या वह अपनी बीवी के पास आ सकता है? उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार (मदीना से) तशरीफ लाये तो सात बार बैतुल्लाह का तवाफ किया और मकामे इब्राहीम के पीछे दो

रकअत नमाज़ पढ़ी। फिर आपने सफा और मरवाह के बीच दौड़ लगाई। यकीनन रसूलुल्लाह (की जिन्दगी) में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है।

259 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कअबा में दाखिल हुए तो आपने उसके सब कोनों में दुआ फरमाई। बाहर निकलने तक कोई नमाज़ नहीं पढ़ी, जब आप कअबा से बाहर तशरीफ लाये तो उसके सामने दो रकअत पढ़कर फरमाया, यही किब्ला है।

٢٥٩ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: لَمَّا دَخَلَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ ٱلْبَيْتَ، دَعَا فِي نَوَاحِيهِ كُلِّهَا وَلَمْ يُصَلِّ حَتَّى خَرَجَ مِنْهُ، فَلَمَّا خَرَجَ رَكَعَ رَكْعَتَيْنِ فِي قِبَلِ ٱلْكَعْبَةِ، وَقَالَ: (هٰذِهِ ٱلْقِبْلَةُ). [رواه البخاري: ٣٩٨]

फायदे : सही बात यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैतुल्लाह के अन्दर नमाज़ अदा की थी, जैसा कि हज़रत बिलाल रज़ि. का बयान है। (औनुलबारी, 1/524)

बाब 24 : आदमी जहां कहीं हो (नमाज़ के लिए) किब्ला की तरफ रूख करे।

٢٤ - باب: ٱلتَّوَجُّه نَحْوَ ٱلْقِبْلَةِ حَيْثُ كَانَ

260 : बरा बिन आजिब रज़ि. से रिवायत है उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सोलह या सत्तरह महीने बैतुलमुकद्दस की तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ी (फिर बैतुल्लाह की तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ने का

٢٦٠ : عَنِ ٱلْبَرَاءِ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ صَلَّى نَحْوَ بَيْتِ ٱلمقْدِسِ، سِتَّةَ عَشَرَ شَهْرًا أَوْ سَبْعَةَ عَشَرَ شَهْرًا. تقدَّم وبينهما مخالَفَةٌ فِي اللَّفْظِ. [رواه البخاري: ٣٩٩]

हुक्म नाजिल हुआ) यह हदीस (नं. 38) पहले गुजर चुकी है। लेकिन दोनों के लफ्जों में फर्क है, इसलिए फिर लिखी गई है।

261 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी सवारी पर निफ्ल पढ़ते रहते, वह जिधर मुंह करती, आपको ले जाती। लेकिन जब फर्ज नमाज़ पढ़ने का इरादा फरमाते तो उतरकर किब्ले की तरफ मुंह करते और नमाज़ पढ़ते।

٢٦١ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، يُصَلِّي عَلَى رَاحِلَتِهِ حَيْثُ تَوَجَّهَتْ بِهِ، فَإِذَا أَرَادَ فَرِيضَةً، نَزَلَ فَاسْتَقْبَلَ ٱلْقِبْلَةَ. [رواه البخاري: ٤٠٠]

फायदे : एक रिवायत में है कि ऊँटनी पर निफ्ल नमाज़ शुरू करते वक्त आप किब्ले की तरफ मुंह करके नमाज़ शुरू किया करते थे।

262 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ी। इब्राहीम यह हदीस अल्कमा से और वह इब्ने मसऊद से बयान करते हैं कि मुझे मालूम नहीं कि आपने नमाज़ में कुछ इजाफा कर दिया था या कमी। जब आपने सलाम फेरा तो अर्ज किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या नमाज़ में कोई नया हुक्म आ गया है? आपने

٢٦٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّى ٱلنَّبِيُّ صَلَّى ٱللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ إِبْرَاهِيمُ الرَّاوِي عَنْ عَلْقَمَةَ الرَّاوِي عَنِ ٱبْنِ مَسْعُودٍ: لَا أَدْرِي: زَادَ أَوْ نَقَصَ - فَلَمَّا سَلَّمَ قِيلَ لَهُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَحَدَثَ فِي ٱلصَّلَاةِ شَيْءٌ؟ قَالَ: (وَمَا ذَاكَ). قَالُوا: صَلَّيْتَ كَذَا وَكَذَا، فَثَنَى رِجْلَيْهِ، وَٱسْتَقْبَلَ ٱلْقِبْلَةَ، وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ، ثُمَّ سَلَّمَ. فَلَمَّا أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ قَالَ: (إِنَّهُ لَوْ حَدَثَ فِي ٱلصَّلَاةِ شَيْءٌ لَنَبَّأْتُكُمْ بِهِ، وَلٰكِنْ، إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ، أَنْسَى كَمَا تَنْسَوْنَ، فَإِذَا نَسِيتُ فَذَكِّرُونِي،

وَإِذَا شَكَّ أَحَدُكُمْ فِي صَلاَتِهِ، فَلْيَتَحَرَّ الصَّوَابَ فَلْيُتِمَّ عَلَيْهِ، ثُمَّ يُسَلِّمْ، ثُمَّ يَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ). [رواه البخاري: ٤٠١]

फरमाया कि बताओ, असल बात क्या है? लोगों ने अर्ज किया कि आपने इतनी इतनी रकआतें पढ़ी हैं। यह सुनकर आपने अपने दोनों पांव समेटे और किब्ला रूख होकर दो सज्दे किये। फिर सलाम फेरा और हमारी तरफ मुंह करके फरमाया, अगर नमाज़ में कोई नया हुक्म आता तो मैं तुम्हें जरूर बताता, लेकिन मैं भी तुम्हारी तरह एक इन्सान हूं, जिस तरह तुम भूल जाते हो, मैं भी भूल जाता हूं। इसलिए जब कभी मैं भूल का शिकार हो जाऊँ तो मुझे याद दिला दिया करो और तुम में से जो कोई अपनी नमाज़ में शक करे तो उसे अपने पक्के यकीन पर अमल करना चाहिए और इस पर अपनी नमाज़ पूरी करके सलाम फेर दे। उसके बाद दो सज्दे करे।

फायदे : दूसरी रिवायत में है कि आपने जुहर की चार रकअतों की बजाये पांच रकअतें पढ़ ली थी। पक्के यकीन पर अमल करने का मतलब यह है कि तीन या चार के शक में तीन पर बुनियाद कायम करके नमाज़ पूरी करे, यह भी साबित हुआ कि नबियों से भूल चूक हो सकती है।

नोट : दूसरी हदीस का ताल्लुक इस तरह है कि आपने नमाज़ से फारिग होने के बाद मुंह किब्ले से फेर लिया था और बताने पर नये सिरे से किब्ले की तरफ मुंह करके नमाज़ पूरी की। (अलवी)

٢٥ - باب: مَا جَاءَ فِي الْقِبْلَةِ وَمَنْ لم ير الإِعَادَةَ عَلَى مَنْ سَهَا فَصَلَّى إِلى غَيْرِ الْقِبْلَةِ

बाब 25 : किब्ले के बारे में क्या आया है? और जिस आदमी ने किब्ले के अलावा भूलकर नमाज़ पढ़ ली, उसके लिए नमाज़ का लोटाना जरूरी नहीं।

٢٦٣ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: وَافَقْتُ رَبِّي فِي ثَلاَثٍ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لَوِ ٱتَّخَذْنَا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى، فَنَزَلَتْ: ﴿وَٱتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَٰهِـۧمَ مُصَلًّى﴾. وَآيَةُ ٱلْحِجَابِ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، لَوْ أَمَرْتَ نِسَاءَكَ أَنْ يَحْتَجِبْنَ، فَإِنَّهُ يُكَلِّمُهُنَّ ٱلْبَرُّ وَٱلْفَاجِرُ، فَنَزَلَتْ آيَةُ ٱلْحِجَابِ، وَٱجْتَمَعَ نِسَاءُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ فِي ٱلْغَيْرَةِ عَلَيْهِ، فَقُلْتُ لَهُنَّ: ﴿عَسَىٰ رَبُّهُۥٓ إِن طَلَّقَكُنَّ أَن يُبْدِلَهُۥٓ أَزْوَٰجًا خَيْرًا﴾ فَنَزَلَتْ هٰذِهِ ٱلآيَةُ. [رواه البخاري: ٤٠٢]

263 : उमर बिन खत्ताब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे अपने रब से तीन बातों में हमखयाली नसीब हुई है। एक बार मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! काश कि मकामे इब्राहीम हमारा मुसल्ला होता तो यह आयत नाजिल हुई '' मकामे इब्राहीम अलैहि. को नमाज़ की जगह बना लो।'' और पर्दे की आयत भी इसी तरह नाजिल हुई कि मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! काश आप अपनी औरतों को पर्दे का हुक्म दे दें, क्योंकि उनसे हर नेक और बुरा बात करता है। तो पर्दे की आयत नाजिल हुई और (एक बार ऐसा हुवा कि) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों ने आपसी मोहब्बत की वजह से आपके खिलाफ इत्तिफाक कर लिया तो मैंने उनसे कहा कि दूर नहीं अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हें तलाक दे दें तो उस पर अल्लाह तुमसे बेहतर बीवियां तुम्हारे बदले में अता फरमा दे। फिर यही आयत (जो सूरा तहरीम में है) नाजिल हुई।

फायदे : उनवान के दूसरे हिस्से को खत्म कर देना ठीक है, क्योंकि इस हदीस से इसका कोई ताल्लुक नहीं है।

बाब 26: थूक को मस्जिद से हाथ के जरीये साफ करना।

٢٦ - باب: حَكُّ البُزَاقِ بِاليَدِ مِنَ المَسْجِدِ

264 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार किब्ला की तरफ कुछ थूक देखा तो बहुत बुरा लगा, यहां तक कि उसका असर आपके चेहरे मुबारक पर देखा गया, आप खुद खड़े हुए और अपने हाथ मुबारक से साफ करके फरमाया कि तुम में से जब कोई अपनी नमाज़ में खड़ा होता है तो जैसे वह अपने रब से मुनाजात (दुआ) करता है और उसका रब उसके और किब्ले के बीच होता है, लिहाजा तुममें से कोई भी (नमाज़ की हालत में) अपने किब्ले की तरफ न थूके बल्कि बायीं तरफ या अपने कदम के नीचे (थूक सकता है) फिर आपने अपनी चादर के एक किनारे में थूका और इसे उल्ट पलट किया, फिर आपने फरमाया कि या इस तरह कर ले।

٢٦٤ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ رَأَى نُخَامَةً فِي ٱلْقِبْلَةِ، فَشَقَّ ذٰلِكَ عَلَيْهِ، حَتَّى رُئِيَ فِي وَجْهِهِ، فَقَامَ فَحَكَّهُ بِيَدِهِ، فَقَالَ: (إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا قَامَ فِي صَلاَتِهِ، فَإِنَّهُ يُنَاجِي رَبَّهُ، وَإِنَّ رَبَّهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ ٱلْقِبْلَةِ، فَلاَ يَبْزُقَنَّ أَحَدُكُمْ قِبَلَ قِبْلَتِهِ، وَلٰكِنْ عَنْ يَسَارِهِ أَوْ تَحْتَ قَدَمِهِ). ثُمَّ أَخَذَ طَرَفَ رِدَائِهِ، فَبَصَقَ فِيهِ، ثُمَّ رَدَّ بَعْضَهُ عَلَى بَعْضٍ، فَقَالَ: (أَوْ يَفْعَلُ هٰكَذَا). [رواه البخاري: ٤٠٥]

फायदे : मुसनद इमाम अहमद की रिवायत में सामने न थूकने की वजह यों बयान की गई है कि अल्लाह की रहमत उसके सामने होती है। इससे उन लोगों का रद्द होता है जो कहते हैं कि अल्लाह हर जगह हाजिर व नाजिर है। क्योंकि अगर ऐसा होता तो बायीं तरफ और पावं तक थूकना भी मना होता। तमाम अहले सुन्नत का इत्तेफाक है कि अल्लाह तआला अर्श-ए-मोअला पर मुस्तवी है

और हर जगह उसके साथ होने से मुराद उसकी ताकत और उसके इल्म का फैलाव है। (औनुलबारी, 1/532)

बाब 27 : नमाजी अपनी दायीं तरफ न थूके।

٢٧ - باب: لاَ يَبصُق عَن يَمينِهِ في الصَّلاةِ

265 : अबू हुरैरा और अबू सईद रज़ि. से भी गुजरी हुई हदीस की तरह मरवी है, मगर उसमें यह अल्फाज ज्यादा हैं कि (नमाज़ के दौरान) अपनी दायीं तरफ न थूके।

٢٦٥ : عَنْ أَبي هُرَيْرَةَ وَأَبي سَعيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: حديثُ النُّخامَةِ، وفيه زيادةٌ: (ولا علَى عَنْ يمينِهِ). [رواه البخاري: ٤١٠]

फायदे : एक रिवायत में दायीं तरफ न थूकने की वजह यह बताई गयी है कि इस तरफ नेकियां लिखने वाला फरिश्ता होता है। (औनुलबारी, 1/534)

बाब 28 : मस्जिद में थूकने की क्या सजा है

٢٨ - باب: كَفَّارَةُ ٱلبُزَاقِ في ٱلمسجِدِ

266: अनस रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मस्जिद में थूकना गुनाह है और उसकी सजा उसे दफन करना है।

٢٦٦ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قال ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (ٱلْبُزَاقُ في ٱلْمَسْجِدِ خَطِيئَةٌ، وَكَفَّارَتُهَا دَفْنُهَا). [رواه البخاري: ٤١٥]

फायदे : अगर मस्जिद के आंगन में मिट्टी वगैरह हो तो उसे दफन कर दिया जाये, अगर ऐसा ना हो तो उसे कपड़े या पत्थर से साफ करके बाहर फैंक दिया जाये। (औनुलबारी, 1/535)

बाब 29 : इमाम का लोगों को नसीहत

٢٩ - باب: عِظَةُ ٱلإمامِ ٱلنَّاسَ في

إتمام ٱلصَّلاة وَذِكرُ ٱلقِبلَةِ

करना कि नमाज़ को (अच्छी तरह) पूरा करें और किब्ले का जिक्र।

٢٦٧ : عَنْ أَبي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (هَلْ تَرَوْنَ قِبْلَتِي هٰهُنا؟، فَوَٱللهِ مَا يَخْفَى عَلَيَّ خُشُوعُكُمْ وَلاَ رُكُوعُكُمْ، إِنِّي لأَرَاكُمْ مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِي). [رواه البخاري: ٤١٨]

267: अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम मेरा मुंह इस तरह समझते हो, अल्लाह की कसम! मुझ पर न तुम्हारा खुशू (नमाज का डर) छिपा हुआ और न तुम्हारा रूकू और मैं तुम्हें अपनी पीठ के पीछे से भी देखता हूँ।

फायदे : यह आपका मोजज़ा (करिश्मा) था कि आपको पीछे से भी उसी तरह नजर आता था, जैसे कोई सामने से देखता है।

---

٣٠ - باب: هَلْ يُقَالُ مَسجِدُ بَني فُلاَنٍ؟

बाब **30** : मस्जिद बनी फलां कहा जा सकता है।

٢٦٨ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ سَابَقَ بَيْنَ ٱلْخَيْلِ ٱلَّتِي أُضْمِرَتْ مِنَ ٱلْحَفْيَاءِ، وَأَمَدُهَا ثَنِيَّةُ ٱلْوَدَاعِ، وَسَابَقَ بَيْنَ ٱلْخَيْلِ ٱلَّتِي لَمْ تُضْمَرْ مِنَ ٱلثَّنِيَّةِ إِلَى مَسْجِدِ بَنِي زُرَيْقٍ، وَإِنَّ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ فِيمَنْ سَابَقَ. [رواه البخاري: ٤٢٠]

268 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तैयार शुदा घोड़ों के (मुकाबले के लिए) फासला मकामे हफिया से सनिअतुल वदाअ तक और गैर तैयारशुदा घोड़ों की दौड़ सनिअतुल वदाअ से मस्जिद बनी जुरैक तक मुकर्रर की और अब्दुल्लाह बिन उमर भी उन लोगों में शामिल थे, जिन्होंने घूड़ दौड़ में हिस्सा लिया।

फायदे : मालूम हुआ कि मस्जिद फलां कहने में कोई हर्ज नहीं, क्योंकि ऐसा कहने से किसी की जाति जायदाद मुराद नहीं, बल्कि मस्जिद की पहचान मुराद होती है।

बाब 31: मस्जिद में माल तकसीम करना और खुजूर के गुच्छे लटकाना।

٣١ - باب: اَلْقِسمَةُ وَتَعلِيقُ ٱلْقِنوِ في ٱلْمَسجِدِ

269 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बहरीन से कुछ माल लाया गया तो आपने फरमाया कि उसे मस्जिद में ढ़ेर कर दो। यह माल काफी तादाद में था। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिए मस्जिद में तशरीफ लाये तो आपने उसकी तरफ ध्यान भी नहीं दिया। जब नमाज़ से फारिग हुए तो आकर उसके पास बैठ गये। फिर जिसको देखा, उसे देते चले गये, इतने में अब्बास रज़ि. आपके पास आये और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे भी दीजिए। क्योंकि मैंने (बदर की लड़ाई में) अपना और अकील का जुर्माना दिया था। आपने फरमाया, उठा लो। उन्होंने अपने

٢٦٩ : عَنْ أَنسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ بِمَالٍ مِنَ ٱلْبَحْرَيْنِ، فَقَالَ ﷺ: (ٱنْثُرُوهُ فِي ٱلْمَسْجِدِ). وَكَانَ أَكْثَرَ مَالٍ أُتِيَ بِهِ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، فَخَرَجَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِلى ٱلصَّلاَةِ وَلَمْ يَلْتَفِتْ إِلَيْهِ، فَلَمَّا قَضَى ٱلصَّلاَةَ جَاءَ فَجَلَسَ إِلَيْهِ، فَمَا كَانَ يَرَى أَحَدًا إِلَّا أَعْطَاهُ، إِذْ جَاءَهُ ٱلْعَبَّاسُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَعْطِنِي، فَإِنِّي فَادَيْتُ نَفْسِي وَفَادَيْتُ عَقِيلًا، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (خُذْ). فَحَثَا فِي ثَوْبِهِ، ثُمَّ ذَهَبَ يُقِلُّهُ فَلَمْ يَسْتَطِعْ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، مُرْ بَعْضَهُمْ يَرْفَعْهُ إِلَيَّ، قَالَ: (لَا). قَالَ: فَارْفَعْهُ أَنْتَ عَلَيَّ، قَالَ: (لَا). فَنَثَرَ مِنْهُ، ثُمَّ ٱحْتَمَلَهُ، فَأَلْقَاهُ عَلَى كَاهِلِهِ، ثُمَّ ٱنْطَلَقَ، فَمَا زَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُتْبِعُهُ بَصَرَهُ حَتَّى خَفِيَ عَلَيْنَا، عَجَبًا مِنْ حِرْصِهِ، فَمَا قَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَثَمَّ مِنْهَا دِرْهَمٌ.

[رواه البخاري: ٤٢١]

कपड़े में दोनों हाथ से इतना माल भर लिया कि उठा न सके, कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इनमें से किसी को कह दीजिए कि यह माल उठाने में मेरी मदद करे। आपने फरमाया, नहीं। उन्होंने कहा फिर आप ही इसे उठाकर मेरे ऊपर रख दें। आपने फरमाया, नहीं! इस पर हज़रत अब्बास रज़ि. ने उसमें से कुछ कम किया और फिर उठाने लगे, लेकिन अब भी न उठा सके तो अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उनमें से किसी को कह दें कि मुझे उठवा दे। आपने फरमाया, नहीं। उन्होंने कहा, फिर आप खुद उठा कर मेरे ऊपर रख दें। आपने फरमाया, नहीं। तब अब्बास रज़ि. ने उसमें से कुछ और कमी की। बाद में इसे उठाकर अपने कन्धों पर रख लिया और चल दिये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी हिर्स और लालच पर ताज्जुब करके उनको बराबर देखते रहें यहां तक कि वह मेरी आंखों से गायब हो गये। अलगर्ज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहां से उस वक्त उठे कि एक दिरहम (सिक्का) भी बाकी न रहा।

फायदे : मस्जिद में गुच्छे लटकाने का इस हदीस में जिक्र नहीं, दूसरी रिवायत में उसका बयान मौजूद है।

बाब 32: घरों में मस्जिदें बनाना।

270 : महमूद बिन रबीअ अन्सारी रज़ि. से रिवायत है कि इतबान बिन मालिक रज़ि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उन अन्सारी सहाबा में से हैं, जो बदर की लड़ाई में शरीक थे। वह

٣٢ - باب: ٱلْمَسَاجِدُ فِي ٱلْبُيُوتِ

٢٧٠ : عَنْ مَحْمُودِ بْنِ ٱلرَّبِيعِ ٱلأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ عِتْبَانَ ٱبْنَ مَالِكٍ، وَهُوَ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا مِنَ ٱلأَنْصَارِ: أَتَى رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ قَدْ أَنْكَرْتُ بَصَرِي، وَأَنَا أُصَلِّي لِقَوْمِي، فَإِذَا كَانَتِ

ٱلأَمْطَارُ، سَالَ ٱلْوَادِي ٱلَّذِي بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ، لَمْ أَسْتَطِعْ أَنْ آتِيَ مَسْجِدَهُمْ فَأُصَلِّي لهم، وَوَدِدْتُ يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَنَّكَ تَأْتِينِي فَتُصَلِّي فِي بَيْتِي، فَأَتَّخِذَهُ مُصَلًّى، قَالَ: فَقَالَ لَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (سَأَفْعَلُ إِنْ شَاءَ ٱللهُ). قَالَ عِتْبَانُ: فَغَدَا عَلَيَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ حِينَ ٱرْتَفَعَ ٱلنَّهَارُ، فَاسْتَأْذَنَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَأَذِنْتُ لَهُ، فَلَمْ يَجْلِسْ حَتَّى دَخَلَ ٱلْبَيْتَ، ثُمَّ قَالَ: (أَيْنَ تُحِبُّ أَنْ أُصَلِّيَ مِنْ بَيْتِكَ). قَالَ: فَأَشَرْتُ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ ٱلْبَيْتِ، فَقَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَكَبَّرَ، فَقُمْنَا فَصَفَفْنَا، فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، قَالَ: وَحَبَسْنَاهُ عَلَى خَزِيرَةٍ صَنَعْنَاهَا لَهُ، قَالَ: فَثَابَ فِي ٱلْبَيْتِ رِجَالٌ مِنْ أَهْلِ ٱلدَّارِ ذَوُو عَدَدٍ، فَاجْتَمَعُوا، فَقَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ: أَيْنَ مَالِكُ بْنُ ٱلدُّخَيْشِنِ أَوِ ٱبْنُ ٱلدُّخْشُنِ؟ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: ذٰلِكَ مُنَافِقٌ لاَ يُحِبُّ ٱللهَ وَرَسُولَهُ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ تَقُلْ ذٰلِكَ، أَلاَ تَرَاهُ قَدْ قَالَ لاَ إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ، يُرِيدُ بِذٰلِكَ وَجْهَ ٱللهِ). قَالَ: ٱللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: فَإِنَّا نَرَى وَجْهَهُ وَنَصِيحَتَهُ إِلَى ٱلْمُنَافِقِينَ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (فَإِنَّ ٱللهَ قَدْ حَرَّمَ عَلَى ٱلنَّارِ مَنْ قَالَ لاَ إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ، يَبْتَغِي بِذٰلِكَ وَجْهَ ٱللهِ). [رواه البخاري: ٤٢٥]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर हुये और अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी आंखों की रोशनी खराब हो गई है और मैं अपनी कौम को नमाज़ पढ़ाता हूँ, लेकिन बारिश की वजह से जब वह नाला बहने लगता है, जो मेरे और उनके बीच है तो मैं नमाज़ पढ़ाने के लिए मस्जिद में नहीं आ सकता। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप मेरे यहां तशरीफ लायें और मेरे घर में किसी जगह नमाज़ पढ़ें। ताकि मैं उस जगह को नमाज़ की जगह बना लूं। रावी कहता है कि उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं इन्शा अल्लाह जल्दी ही ऐसा करूंगा। इतबान रज़ि. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू बकर रज़ि. मेरे घर तशरीफ लाये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्दर आने की इजाजत मांगी तो मेरे इजाजत

देने पर आप घर में दाखिल हुये और बैठने से पहले फरमाया, तुम अपने घर में किस जगह नमाज़ पढ़ना चाहते हो। ताकि मैं वहां नमाज़ पढ़ूँ। इत्बान रज़ि. कहते हैं कि मैंने घर के एक कोने की जगह बतायी तो आपने वहां खड़े होकर तकबीरे तहरीमा कही (नमाज शुरू की)। हम भी सफ बनाकर आपके पीछे खड़े हो गये। तो आपने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और उसके बाद सलाम फैर दिया, फिर हमने आपके लिए कुछ हलीम तैयार करके आपको रोक लिया। उसके बाद मोहल्ले वालों में से कई आदमी घर में आकर जमा हो गये। उनमें से एक आदमी कहने लगा कि मालिक बिन दुखैशिन या दुखशुन कहां है? किसी ने कहा, वह तो मुनाफिक है। अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत नहीं रखता। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐसा मत कहो। क्या तुझे मालूम नहीं कि वह खालिस अल्लाह की रजामन्दी के लिए "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहता है। वह आदमी बोला अल्लाह और उसके रसूल ही खूब जानते हैं। जाहिर में तो हम उसका रूख और उसकी खैर ख्वाही मुनाफिकों के हक में देखते हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने उस आदमी पर आग को हराम कर दिया है जो "ला इलाहा इल्लल्लाह" कह दे। बशर्ते कि उससे अल्लाह की रजामन्दी ही मकसूद हो।

बाब 33 : जाहिलियत के जमाने में बनी हुई मुश्रिकों की कब्रों को उखाड़कर उनकी जगह मस्जिदें बनायी जा सकती हैं।

٣٣ - باب: هل تُنْبَشُ قُبُورُ مُشْرِكِي الجَاهِلِيَّةِ وَيُتَّخَذُ مَكَانُهَا مَسَاجِدَ

271 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि

٢٧١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ

उम्मे हबीबा रज़ि. और उम्मे सलमा रज़ि. ने हब्शा में एक गिरजाघर देखा था, जिसमें तसवीरें थी। जब उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उसका जिक्र किया तो आपने फरमाया, उन लोगों की आदत थी कि उनमें अगर कोई नैक मर्द मरता तो उसकी कब्र पर मस्जिद और तस्वीर बना देते। कयामत के दिन यह लोग अल्लाह के नजदीक बदतरीन (बहुत बुरी) मख्लूक हैं।

عَنْها: أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ وَأُمَّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما ذَكَرَتَا كَنِيسَةً رَأَيْنَها بِالْحَبَشَةِ، فِيها تَصَاوِيرُ، فَذَكَرَتَا ذَٰلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: (إِنَّ أُولَٰئِكَ، إِذَا كَانَ فِيهِمُ ٱلرَّجُلُ ٱلصَّالِحُ فَمَاتَ، بَنَوْا عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا، وَصَوَّرُوا فِيهِ تِلْكَ ٱلصُّوَرَ، فَأُولَٰئِكَ شِرَارُ ٱلْخَلْقِ عِنْدَ ٱللهِ يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٤٢٧]

फायदे : आजकल तो लोग कब्रो को सज्दा करते हैं और खुलकर उनका तवाफ करते है जो खुला शिर्क है। इस हदीस से मालूम हुआ कि बुजुर्गो की कब्रों पर मस्जिद बनाना यहूदियों और ईसाइयों की आदत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे हराम करार दिया है। नीज आपने तस्वीर बनाने को हराम फरमाकर बुतपरस्ती की जड़ काट दी है।

---

272 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब हिजरत करके मदीना तशरीफ लाये तो अम्र बिन औफ नामी कबीले में पड़ाव किया जो मदीना के ऊंचे मकाम पर आबाद था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

٢٧٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ ٱلْمَدِينَةَ فَنَزَلَ أَعْلَى ٱلْمَدِينَةِ فِي حَيٍّ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ، فَأَقَامَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فِيهِمْ أَرْبَعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً، ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَى بَنِي ٱلنَّجَّارِ، فَجَاؤُوا مُتَقَلِّدِينَ ٱلسُّيُوفَ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ عَلَى رَاحِلَتِهِ، وَأَبُو بَكْرٍ رِدْفُهُ، وَمَلأُ بَنِي ٱلنَّجَّارِ حَوْلَهُ، حَتَّى أَلْقَى رَحْلَهُ

بِفِنَاءِ أَبِي أَيُّوبَ، وَكَانَ يُحِبُّ أَنْ يُصَلِّيَ حَيْثُ أَدْرَكَتْهُ ٱلصَّلاَةُ، وَيُصَلِّي فِي مَرَابِضِ ٱلْغَنَمِ، وَأَنَّهُ أَمَرَ بِبِنَاءِ ٱلْمَسْجِدِ، فَأَرْسَلَ إِلَى مَلإٍ مِنْ بَنِي ٱلنَّجَّارِ، فَقَالَ: (يَا بَنِي ٱلنَّجَّارِ ثَامِنُونِي بِحَائِطِكُمْ هٰذَا). قَالُوا: لاَ وَٱللهِ، لاَ نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلَّا إِلَى ٱللهِ، فَقَالَ أَنَسٌ: فَكَانَ فِيهِ مَا أَقُولُ لَكُمْ، قُبُورُ ٱلْمُشْرِكِينَ، وَفِيهِ خِرَبٌ، وَفِيهِ نَخْلٌ، فَأَمَرَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ بِقُبُورِ ٱلْمُشْرِكِينَ فَنُبِشَتْ، ثُمَّ بِٱلْخِرَبِ فَسُوِّيَتْ، وَبِٱلنَّخْلِ فَقُطِعَ، فَصَفُّوا ٱلنَّخْلَ قِبْلَةَ ٱلْمَسْجِدِ، وَجَعَلُوا عِضَادَتَيْهِ ٱلْحِجَارَةَ، وَجَعَلُوا يَنْقُلُونَ ٱلصَّخْرَ وَهُمْ يَرْتَجِزُونَ، وَٱلنَّبِيُّ ﷺ مَعَهُمْ، وَهُوَ يَقُولُ:

ٱللَّهُمَّ لاَ خَيْرَ إِلَّا خَيْرُ ٱلآخِرَهْ
فَاغْفِرْ لِلأَنْصَارِ وَٱلْمُهَاجِرَهْ

[رواه البخاري: ٤٢٨]

ने उन लोगों में चौदह रात ठहरे, फिर बनू नज्जार को आपने बुलाया तो वह तलवारें लटकाये हुये आये। (अनस रज़ि. कहते हैं) गोया मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख रहा हूँ कि आप अपनी ऊँटनी पर सवार हैं। अबू बकर सिद्दीक रज़ि. आपके पीछे और बनू नज्जार के लोग आपके आस पास हैं। यहां तक कि आपने अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि. के घर के सामने अपना पालान डाल दिया। आप इस बात को पसन्द करते थे कि जिस जगह नमाज़ का वक्त हो जाये, वहीं पढ़ लें। यहां तक कि आप बकरियों के बाड़े में भी नमाज़ पढ़ लेते थे। फिर आपने मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और बनू नज्जार के लोगों को बुलाकर फरमाया, ऐ बनू नज्जार! तुम अपना यह बाग हमारे हाथ बेच डालो। उन्होंने अर्ज किया, ऐसा नहीं हो सकता। अल्लाह की कसम! हम तो इसकी कीमत अल्लाह से ही लेंगे। अनस रज़ि. फरमाते हैं कि मैं तुम्हें बताऊँ कि उस बाग में क्या था। वहां मुश्रिकों की कब्रें, पुराने खण्डरात और कुछ खजूर के पेड़ थे। आप के हुक्म से मुश्रिकों की कब्रें उखाड़ दी गई, खण्डरात बराबर कर दिये गये और खजूर के पेड़ काट कर उनकी लकड़ियों को मस्जिद के सामने गाड़ दिया

गया। (उस वक्त किब्ला बैतुल मुकद्दस (फिलिस्तीन) था) और उसकी बन्दिश पत्थरों से की गई। चूनांचे सहाबा-ए-किराम रज़ि. शेअर पढ़ते हुए पत्थर लाने लगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनके साथ यह फरमाते थे। "ऐ अल्लाह जिन्दगी तो बस आखिरत की जिन्दगी है, पस तू अन्सार और मुहाजरीन को माफ कर दे।

बाब 34 : ऊँटों की जगह पर नमाज़ पढ़ना।

٣٤ - باب. الصَّلاةُ فِي مَوَاضِعِ الإِبِلِ

273 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि वह खुद अपने ऊंट की तरफ (मुंह करके) नमाज़ पढ़ते और फरमाते कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसा करते देखा है।

٢٧٣ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُما: أَنَّهُ كَانَ يُصَلِّي عَلَى بَعِيرِهِ، وَقَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَفْعَلُهُ. [رواه البخاري: ٤٣٠]

फायदे : हक यह है कि ऊंटों की जगह पर नमाज़ पढ़ना हराम है और इस मनाही पर बहुत सी हदीसे मौजूद हैं। इस हदीस का मकसद यह है कि जब ऊंट सामने बैठा हो और उससे किसी किस्म का खतरा न हो और जहां मनाही आई है, वहां यह मकसूद है कि ऊंट खड़े हों और उनकी तरफ से लात मारने का खतरा हो, इसलिए कोई टकराव नहीं है।

बाब 35: अगर कोई नमाज़ पढ़े और उसके सामने तन्नूर या आग या कोई ऐसी चीज हो, जिसकी इबादत की जाती है, लेकिन नमाजी की नियत अल्लाह की

٣٥ - باب: مَنْ صَلَّى وَقُدَّامَهُ تَنُّورٌ أَو نَارٌ أَو شَيْءٌ مِمَّا يُعْبَدُ فَأَرَادَ بِهِ وجه الله تعالى

रजा जोई हो। (तो उसकी नमाज़ ठीक है)

274 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, दोजख को मेरे सामने पेश किया गया, जबकि मैं नमाज़ पढ़ रहा था।

٢٧٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (عُرِضَتْ عَلَيَّ ٱلنَّارُ وَأَنَا أُصَلِّي). [رواه البخاري: ٤٣١]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि मस्जिद में गैस हीटर, मोमबत्ती, चिराग लगाने में कोई हर्ज नहीं है। अगरचे वह किब्ले की तरफ ही क्यों न हो।

बाब 36 : कब्रिस्तान में नमाज़ पढ़ने की मनाही।

٣٦ - باب: كَرَاهِيَةُ ٱلصَّلاَةِ فِي ٱلمَقَابِرِ

275 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कुछ नमाज़ (निफ्ल) अपने घरों में अदा करो और उन्हें कब्रिस्तान मत बनाओ।

٢٧٥ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (ٱجْعَلُوا فِي بُيُوتِكُمْ مِنْ صَلاَتِكُمْ، وَلاَ تَتَّخِذُوهَا قُبُورًا). [رواه البخاري: ٤٣٢]

बाब 37 :

٣٧ - باب:

276 : आइशा रज़ि. और इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन दोनों ने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आखरी वक्त आया तो एक चादर

٢٧٦ : عَنْ عَائِشَةَ وَعَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُم قَالاَ: لَمَّا نَزَلَ بِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ، طَفِقَ يَطْرَحُ خَمِيصَةً لَهُ عَلَى وَجْهِهِ، فَإِذَا ٱغْتَمَّ بِهَا كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ، فَقَالَ وَهُوَ

كَذَلِكَ: (لَعْنَةُ ٱللهِ عَلَى ٱلْيَهُودِ وَٱلنَّصَارَى، ٱتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ). يُحَذِّرُ مَا صَنَعُوا. [رواه البخاري: ٤٣٥، ٤٣٦]

अपने ऊपर डालने लगे। फिर ज्यों ही घबराहट होती तो उसे चेहरे से हटा देते। इसी हालत में आपने फरमाया, यहूदियों और ईसाइयों पर अल्लाह की लानत हो। उन्होंने अपने अम्बियाओं (नबीयों) की कब्रों को इबादत की जगह बना लिया। जैसे आप उनके कामों से (उम्मत को) खबरदार करते थे।

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में है कि यहूदियों और इसाईयों ने अपने नबीयों और बुजुर्गों की कब्रों को सज्दागाह बना लिया, इस बातचीत के अन्दाज से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को आगाह किया है कि कहीं मेरी कब्र के साथ ऐसा सलूक न करें, लेकिन नाम के मुसलमानों पर अफसोस है कि वह उसकी खिलाफवर्जी करते हैं। अल्लाह तआला सऊदी अरब की हुकूमत को अच्छा बदला दे कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्र मुबारक पर लोगों को शरीअत के अलावा दूसरे कामों से बाज रखती है।

٣٨ - باب: نَوْمُ المَرْأَةِ فِي ٱلْمَسْجِدِ

बाब 38 : मस्जिद में औरत का सोना।

٢٧٧ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها: أَنَّ وَلِيدَةً كَانَتْ سَوْدَاءَ، لِحَيٍّ مِنَ ٱلْعَرَبِ، فَأَعْتَقُوهَا فَكَانَتْ مَعَهُمْ، قَالَتْ: فَخَرَجَتْ صَبِيَّةٌ لَهُمْ، عَلَيْهَا وِشَاحٌ أَحْمَرُ مِنْ سُيُورٍ، قَالَتْ: فَوَضَعَتْهُ، أَوْ وَقَعَ مِنْهَا، فَمَرَّتْ بِهِ حُدَيَّاةٌ وَهُوَ مُلْقًى، فَحَسِبَتْهُ لَحْمًا فَخَطِفَتْهُ، قَالَتْ: فَالْتَمَسُوهُ

277: आइशा रज़ि. से रिवायत है कि अरब के किसी कबीले के पास एक काली कलूटी बान्दी थी, जिसे उन्होंने आजाद कर दिया। मगर वह उनके साथ ही रहा करती थी। उसका बयान है कि एक बार इस कबीले की कोई लड़की

فلمْ يَجِدُوهُ، قَالَتْ: فَاتَّهَمُونِي بِهِ، قَالَتْ: فَطَفِقُوا يُفَتِّشُونَ، حَتَّى فَتَّشُوا قُبُلَهَا، قَالَتْ: وَٱللهِ إِنِّي لَقَائِمَةٌ مَعَهُمْ، إِذْ مَرَّتِ ٱلْحُدَيَّاةُ فَأَلْقَتْهُ، قَالَتْ: فَوَقَعَ بَيْنَهُمْ، قَالَتْ: فَقُلْتُ: هٰذَا ٱلَّذِي ٱتَّهَمْتُمُونِي بِهِ، زَعَمْتُمْ وَأَنَا مِنْهُ بَرِيئَةٌ، وَهُوَ ذَا هُوَ، قَالَتْ: فَجَاءَتْ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَأَسْلَمَتْ، قَالَتْ عَائِشَةُ: فَكَانَ لَهَا خِبَاءٌ فِي ٱلْمَسْجِدِ أَوْ حِفْشٌ، قَالَتْ: فَكَانَتْ تَأْتِينِي فَتَحَدَّثُ عِنْدِي، قَالَتْ: فَلاَ تَجْلِسُ عِنْدِي مَجْلِسًا، إِلَّا قَالَتْ:

وَيَوْمَ ٱلْوِشَاحِ مِنْ أَعَاجِيبِ رَبِّنَا
أَلاَ إِنَّهُ مِنْ بَلْدَةِ ٱلْكُفْرِ أَنْجَانِي

قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ لَهَا: مَا شَأْنُكِ، لاَ تَقْعُدِينَ مَعِي مَقْعَدًا إِلَّا قُلْتِ هٰذَا؟ قَالَتْ: فَحَدَّثَتْنِي بِهٰذَا ٱلْحَدِيثِ. [رواه البخاري: ٤٣٩]

बाहर निकली। उस पर लाल फीतों का एक कमरबन्द था, जिसे उसने उतारकर रख दिया या वह खुद-ब-खुद गिर गया। एक चील उधर से गुजरी तो उसने उसे गोश्त खयाल किया और झपट कर ले गई। वह कहती है कि पूरे कबीले ने कमरबन्द को तलाश किया, मगर कहीं से न मिला। उन्होंने मुझ पर चोरी का इल्जाम लगा दिया और मेरी तलाशी लेने लगे। यहां तक कि उन्होंने मेरी शर्मगाह को भी न छोड़ा। वह कहती है कि अल्लाह की कसम! मैं उनके पास खड़ी ही थी कि इतने में वही चील आयी, उसने वह कमरबन्द फैंक दिया तो वह उनके बीच आ गिरा। मैंने कहा कि तुम इसकी चोरी का इल्जाम मुझ पर लगाते थे, हालांकि मैं इससे बरी थी। अब अपना कमरबन्द संभाल लो, आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि फिर वह लौण्डी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में चली आई और मुसलमान हो गई। उसका खेमा या झोंपड़ा मस्जिद में था। आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि वह मेरे पास आकर बातें किया करती थी और जब भी मेरे पास बैठती तो यह शेअर जरूरी पढ़ती। ''कमरबन्द का दिन अल्लाह तआला की अजीब कुदरतों से है। उसने मुझे कुफ्र के

मुल्क से नीजात दी।''

आइशा रज़ि. फरमाती हैं, मैंने उससे कहा, क्या बात है? जब तुम मेरे पास बैठती हो तो यह शेअर जरूर कहती हो। तब उसने मुझे अपनी दास्तान बयान की।

फायदे : इसमें दारूलकुफ्र से हिजरत करने की फजीलत का बयान है। नीज मजलूम इन्सान की दुआ जरूर कुबूल होती है। चाहे वह काफिर ही क्यों न हो। (औनुलबारी, **1/558**)

बाब **39** : मस्जिद में मर्दों का सोना।

٣٩ - باب: نَوْمُ ٱلرِّجَالِ فِي ٱلمسجِدِ

278 : सहल बिन सअद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फातिमा रज़ि. के घर तशरीफ लाये तो अली रज़ि. को घर में न पाकर उनसे पूछा तुम्हारे चचाजाद कहां गये? उन्होंने अर्ज किया कि हमारे बीच कुछ झगड़ा हो गया था। वह मुझ पर नाराज होकर कहीं बाहर चले गये हैं, यहां नहीं सोये। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी से फरमाया, देखो वह कहां हैं? वह देखकर आया और कहने लगा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वह मस्जिद में सो रहे हैं। यह सुनकर आप मस्जिद में तशरीफ ले गये, जहां अली रज़ि. लेटे हुए थे। उनके एक पहलू से चादर

٢٧٨ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بَيْتَ فَاطِمَةَ، فَلَمْ يَجِدْ عَلِيًّا فِي ٱلْبَيْتِ، فَقَالَ: (أَيْنَ ٱبْنُ عَمِّكِ). قَالَتْ: كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ شَيْءٌ، فَغَاضَبَنِي فَخَرَجَ، فَلَمْ يَقِلْ عِنْدِي، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لِإِنْسَانٍ: (ٱنْظُرْ أَيْنَ هُوَ). فَجَاءَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، هُوَ فِي ٱلْمَسْجِدِ رَاقِدٌ، فَجَاءَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَهُوَ مُضْطَجِعٌ، قَدْ سَقَطَ رِدَاؤُهُ عَنْ شِقِّهِ، وَأَصَابَهُ تُرَابٌ، فَجَعَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَمْسَحُهُ عَنْهُ وَيَقُولُ: (قُمْ أَبَا تُرَابٍ، قُمْ أَبَا تُرَابٍ). [رواه البخاري: ٤٤١]

गिरने की वजह से वहां मिट्टी लग गई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके जिस्म से मिट्टी साफ करते हुये फरमाने लगे, अबू तुराब उठो! अबू तुराब उठो।

फायदे : हज़रत अली रज़ि. हज़रत फातिमा रजि. के चचाजाद नहीं थे, बल्कि अरब के मुहावरे के मुताबिक बाप के अजीज (दोस्त) को चचाजाद कहा गया है।

٤٠ - باب: إِذَا دَخَلَ ٱلْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ

बाब 40 : जब कोई मस्जिद में आये तो चाहिए कि दो रकअत नमाज़ पढ़े।

٢٧٩ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ ٱلسُّلَمِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ ٱلْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ). [رواه البخاري: ٤٤٤]

279 : अबू कतादा सुलमी रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुममें से कोई मस्जिद में दाखिल हो तो बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ जरूर पढ़े।

फायदे : अगर दो रकअत पढ़े बगैर बैठ जाये तो इससे तहिय्यतुल मस्जिद खत्म नहीं हो जायेगी बल्कि उठकर उन्हें अदा करना होगा। (औनुलबारी, 1/561)

٤١ - باب: بُنْيَانُ ٱلْمَسْجِدِ

बाब 41 : मस्जिद बनाना।

٢٨٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما، قَالَ: إِنَّ ٱلْمَسْجِدَ كَانَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ مَبْنِيًّا بِاللَّبِنِ، وَسَقْفُهُ بِٱلْجَرِيدِ، وَعُمُدُهُ خَشَبُ ٱلنَّخْلِ، فَلَمْ يَزِدْ فِيهِ أَبُو بَكْرٍ

280 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में मस्जिद नबवी कच्ची इंटों से बनी हुई

شَيْئًا، وَزَادَ فِيهِ عُمَرُ، وَبَنَاهُ عَلَى بُنْيَانِهِ فِي عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، بِاللَّبِنِ وَٱلْجَرِيدِ، وَأَعَادَ عُمُدَهُ خَشَبًا، ثُمَّ غَيَّرَهُ عُثْمَانُ، فَزَادَ فِيهِ زِيَادَةً كَثِيرَةً، وَبَنَى جِدَارَهُ بِالْحِجَارَةِ ٱلْمَنْقُوشَةِ وَٱلْقَصَّةِ، وَجَعَلَ عُمُدَهُ مِنْ حِجَارَةٍ مَنْقُوشَةٍ، وَسَقَفَهُ بِالسَّاجِ.
[رواه البخاري: ٤٤٦]

थी। छत पर खुजूर की डालियां थीं और खम्भे भी खुजूर की लकड़ी के थे। अबू बकर सिद्दीक रज़ि. ने उसमें कोई इजाफा न किया। उमर रज़ि. ने उसमें इजाफा जरूर किया लेकिन इमारत उसी तरह की रखी, जैसी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में थी। यानी कच्ची ईटें, डालियां और खम्भे, उसी खुजूर की लकड़ी के बनाये गये। फिर उसमान रज़ि. ने इसमें तब्दीली करके बहुत इजाफा किया। यानी इसकी दीवारें तराशे हुए पत्थरों और चूने से बनवायीं। खम्भे भी तराशे हुए पत्थरों के बनाये और इसकी छत सागवान से तैयार की।

बाब 42 : मस्जिद बनाने में मदद करना।

٤٢ - باب: ٱلتَّعَاوُنُ فِي بِنَاءِ ٱلْمَسْجِدِ

٢٨١ : عن أبي سعيدٍ الخدريِّ رضي الله عنه أَنَّهُ كانَ يحدِّثُ يومًا حَتَّى أَتَى ذِكْرُ بِنَاءِ ٱلْمَسْجِدِ، فَقَالَ: كُنَّا نَحْمِلُ لَبِنَةً لَبِنَةً، وَعَمَّارٌ لَبِنَتَيْنِ لَبِنَتَيْنِ، فَرَآهُ ٱلنَّبِيُّ ﷺ، فَيَنْفُضُ ٱلتُّرَابَ عَنْهُ، وَيَقُولُ: (وَيْحَ عَمَّارٍ، تَقْتُلُهُ ٱلْفِئَةُ ٱلْبَاغِيَةُ، يَدْعُوهُمْ إِلَى ٱلْجَنَّةِ، وَيَدْعُونَهُ إِلَى ٱلنَّارِ). قَالَ: يَقُولُ عَمَّارٌ: أَعُوذُ بِٱللهِ مِنَ ٱلْفِتَنِ.
[رواه البخاري: ٤٤٧]

281 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है कि वह एक दिन हदीस बयान करते हुये मस्जिदे नबवी की तामीर का जिक्र करने लगे कि हम एक एक ईट उठाते जबकि अम्मार बिन यासिर रजि. दो दो ईटें उठाते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अम्मार रज़ि. को देखा तो उनके जिस्म से मिट्टी झाड़ते हुये फरमाने लगे, अम्मार रज़ि.

को एक बागी जमाअत शहीद करेगी। यह उनको जन्नत की तरफ बुलायेंगे और वह इसे दोजख की दावत देगी। अबू सईद खुदरी रज़ि. ने कहा कि अम्मार रज़ि. अकसर कहा करते थे, मैं फितनों से अल्लाह की पनाह मांगता हूँ।

बाब 43 : जो आदमी मस्जिद बनाये (उसकी बड़ाई का बयान)

٤٣ - باب: مَنْ بَنى مَسْجِداً

282 : उसमान बिन अफ्फान रज़ि. से रिवायत है कि जब उन्होंने तराशे हुए पत्थर और चूने से मस्जिद बनवायी तो लोग इसके बारे में बातें करने लगे। तब उन्होंने फरमाया कि मैंने तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि जो आदमी मस्जिद बनाये और उससे सिर्फ अल्लाह की रजामन्दी मकसूद हो तो अल्लाह उसके लिए उसी जैसा घर जन्नत में बना देगा।

٢٨٢ : عَنْ عُثْمانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عِنْدَ قَوْلِ ٱلنَّاسِ فِيهِ حِينَ بَنَى مَسْجِدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّكُمْ أَكْثَرْتُمْ، وَإِنِّي سَمِعْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ بَنَى مَسْجِدًا يَبْتَغِي بِهِ وَجْهَ ٱللهِ، بَنَى ٱللهُ لَهُ مِثْلَهُ فِي ٱلْجَنَّةِ). [رواه البخاري: ٤٥٠]

फायदे : अल्लामा इब्ने जौजी ने लिखा है कि जो आदमी मस्जिद बनवाकर उस पर अपना नाम लिखवा देता है वह मुखलिस नहीं बल्कि दिखावे का आदी है।

बाब 44 : मस्जिद से गुजरे तो तीर का पल (नोक) पकड़ ले।

٤٤ - باب: الأَخْذُ بِنُصُولِ ٱلنَّبْلِ إِذَا مَرَّ فِي ٱلْمَسْجِدِ

283 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है। उन्होंने फरमाया कि एक आदमी मस्जिदे नबवी से तीर

٢٨٣ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ فِي ٱلْمَسْجِدِ وَمَعَهُ سِهَامٌ، فَقَالَ لَهُ

लिये गुजर रहा था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे फरमाया कि उनके नोक थामें रखो।

رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَمْسِكْ بِنِصَالِهَا). [رواه البخاري: ٤٥١]

बाब 45 : मस्जिद से गुजरना।

٤٥ - باب: ٱلمُرُورُ فِي ٱلمَسْجِدِ

284 : अबू मूसा अशअरी रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी हमारी मस्जिदों या बाजारों से तीर लिये हुए गुजरे तो चाहिए कि वह उनके पल (नोकें) थामें रखे। ताकि अपने हाथ से किसी मुसलमान को जख्मी न कर दे।

٢٨٤ : عَنْ أَبِي مُوسى ٱلأَشْعَرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ مَرَّ فِي شَيْءٍ مِنْ مَسَاجِدِنَا، أَوْ أَسْوَاقِنَا، بِنَبْلٍ، فَلْيَأْخُذْ عَلَى نِصَالِهَا، لاَ يَعْقِرْ بِكَفِّهِ مُسْلِمًا). [رواه البخاري: ٤٥٢]

बाब 46 : मस्जिद में शेअर पढ़ना।

٤٦ - باب: ٱلشِّعْرُ فِي ٱلمَسْجِدِ

285 : हस्सान बिन साबित रज़ि. से रिवायत है कि वह हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. से गवाही मांग रहे थे कि तुम्हें अल्लाह की कसम! बताओ क्या तुमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते नहीं सुना कि ऐ अल्लाह तू हस्सान रज़ि. की जिब्राईल से मदद फरमा। अबू हुरैरा रज़ि. बोले कि ''हां'' यानी सुना है।

٢٨٥ : عَنْ حَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ ٱلأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ ٱسْتَشْهَدَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنْشُدُكَ ٱللهَ، هَلْ سَمِعْتَ ٱلنَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (يَا حَسَّانُ، أَجِبْ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، ٱللَّهُمَّ أَيِّدْهُ بِرُوحِ ٱلقُدُسِ؟). قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: نَعَمْ. [رواه البخاري: ٤٥٣]

फायदे : कुछ रिवायत से मालूम होता है कि मस्जिद में शेअर पढ़ना

मना है तो इससे मुराद गन्दे और बेहूदा किस्म के अशआर है। (औनुलबारी, 1/571)

बाब 47: बरछे वालों का मस्जिद में दाखिल होना।

٤٧ - باب: أَصْحَابُ الْحِرَابِ فِي الْمَسْجِدِ

286 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने कमरे के दरवाजे पर खड़े देखा और हब्शा के कुछ लोग मस्जिद में खेल रहे थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी चादर से मुझे छिपा रहे थे और में उनका खेल देख रही थी। एक और रिवायत में है कि वह अपने हथियारों से खेल रहे थे।

٢٨٦ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْها قَالَتْ: لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَوْمًا عَلَى بَابِ حُجْرَتِي وَالْحَبَشَةُ يَلْعَبُونَ فِي الْمَسْجِدِ، وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يَسْتُرُنِي بِرِدَائِهِ، أَنْظُرُ إِلَى لَعِبِهِمْ. في رواية: يَلْعَبُونَ بِحِرَابِهِمْ. [رواه البخاري: ٤٥٤]

फायदे : मालूम हुआ कि अगर नुकसान का डर न हो तो हथियार मस्जिद में ले जाना जाईज है।

बाब 48 : मस्जिद में कर्जदार से कर्ज मांगना और उसके पीछे पड़ना।

٤٨ - باب: التَّقَاضِي وَالْمُلازَمَةُ فِي الْمَسجِدِ

287: कअब बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने मस्जिद में अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद रज़ि. से अपना कर्ज मांगा। इस पर दोनों की आवाजें ऊंची हो गयी। यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी

٢٨٧ : عَنْ كَعْبِ بْنِ مالِكٍ - رَضِيَ اللهُ عَنْهُ -: أَنَّهُ تَقَاضَى ابْنَ أَبِي حَدْرَدٍ دَيْنًا كَانَ لَهُ عَلَيْهِ فِي الْمَسْجِدِ، فَارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا حَتَّى سَمِعَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ فِي بَيْتِهِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمَا، حَتَّى كَشَفَ سِجْفَ حُجْرَتِهِ، فَنَادَى: (يَا كَعْبُ). قَالَ:

لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (ضَعْ مِنْ دَيْنِكَ هٰذَا). وَأَوْمَأَ إِلَيْهِ: أَيِ ٱلشَّطْرَ قَالَ: لَقَدْ فَعَلْتُ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (قُمْ فَاقْضِهِ). [رواه البخاري: ٤٥٧]

सुन लिया। आप अपने घर से बाहर तशरीफ लाये और कमरे का पर्दा उठाकर आवाज दी। ऐ कअब रज़ि.! उन्होंने अर्ज किया हाजिर हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने फरमाया, तुम अपने कर्ज में कुछ कमी कर दो, और इशारा फरमाया आधा कर दो। कअब रज़ि. ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपका हुक्म सर आंखों पर, तब आपने इब्ने अबी हदरद रज़ि. से फरमाया, उठो इसका कर्ज अदा कर दो।

फायदे : मालूम हुआ कि जरूरत के मुताबिक मस्जिद में ऊंची आवाज से बात करना जाईज है। अलबत्ता बिलावजह मस्जिद में आवाज बुलन्द करने की मनाही है। (औमुलबारी, 1/574)

४٩ - باب: كَنْسِ ٱلْمَسْجِدِ وَٱلتِقَاطِ ٱلْخِرَقِ وَٱلْقَذَى وَٱلْعِيدَانِ

बाब 49: मस्जिद से चीथड़े, कूड़ा-करकट और लकड़ियां उठाना और उसकी सफाई करना।

٢٨٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا أَسْوَدَ، أَوِ ٱمْرَأَةً سَوْدَاءَ، كَانَ يَقُمُّ ٱلْمَسْجِدَ، فَمَاتَ، فَسَأَلَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ عَنْهُ، فَقَالُوا: مَاتَ، قَالَ: (أَفَلَا كُنْتُمْ آذَنْتُمُونِي بِهِ، دُلُّونِي عَلَى قَبْرِهِ، أَوْ قَالَ قَبْرِهَا). فَأَتَى قَبْرَهَا فَصَلَّى عَلَيْهَا. [رواه البخاري: ٤٥٨]

288 : अबू हुरैरा रज़ि.से रिवायत है कि एक काला मर्द या औरत मस्जिद में झाडू दिया करती थी तो वह मर गई तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों से उसके बारे में पूछा, उन्होंने कहा, ''वह तो मर गई'', आपने फरमाया, ''भला तुमने मुझे खबर क्यों न दी, अच्छा अब मुझे उसकी कब्र बताओ।'' फिर उसकी कब्र पर तशरीफ ले

गये और वहां जनाजे की नमाज़ अदा की।

फायदे : बैहकी की रिवायत में है कि यह उम्मे मेहजन नामी औरत थी जो मस्जिद से चीथड़े और तिनके वगैरह चुना करती थी। नीज मालूम हुआ कि कब्र पर नमाज़ जनाजा अदा की जा सकती है।

٥٠ - باب: تَحْرِيمُ تِجارَةِ الخَمْرِ فِي المَسْجِد

बाब 50 : मस्जिद में शराब की तिजारत (लेन-देन) को हराम कहना।

٢٨٩ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قالَتْ: لمَّا أُنْزِلَتِ ٱلآيَاتُ مِنْ سُورَةِ ٱلْبَقَرَةِ فِي ٱلرِّبَا، خَرَجَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ إِلَى ٱلْمَسْجِدِ فَقَرَأَهُنَّ عَلَى ٱلنَّاسِ، ثُمَّ حَرَّمَ تِجَارَةَ ٱلْخَمْرِ. [رواه البخاري: ٤٥٩]

289 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, जब ब्याज के बारे में सूरा बकरा की आयतें नाजिल हुई तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ लाये और लोगों को वह आयातें पढ़कर सुनाई। फिर फरमाया कि शराब को खरीदना और बेचना भी हराम है।

फायदे : इस बाब का मकसद यह है कि मनाही की गर्ज से बुरे कामों और बुरी बातों का जिक्र किया जा सकता है।

٥١ - باب: ٱلأَسِيرُ أَوِ ٱلغَرِيمُ يُرْبَطُ فِي ٱلمَسْجِدِ

बाब 51 : कैदी या कर्जदार को मस्जिद में बांधना।

٢٩٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ: قَالَ: (إِنَّ عِفْرِيتًا مِنَ ٱلْجِنِّ تَفَلَّتَ عَلَيَّ ٱلْبَارِحَةَ - أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا - لِيَقْطَعَ عَلَيَّ ٱلصَّلاَةَ، فَأَمْكَنَنِي ٱللهُ مِنْهُ، فَأَرَدْتُ

290 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि गुजरी हुई रात अचानक एक सरकश जिन्न मुझसे टकरा गया या ऐसी

ही कोई और बात कही, ताकि मेरी नमाज़ में खलल डाले। मगर अल्लाह ने मुझे उस पर काबू दे दिया। मैंने चाहा कि उसे मस्जिद में किसी खम्भे से बांध दूं ताकि सुबह के वक्त तुम भी उसको देख लो। फिर मुझे अपने भाई सुलेमान अलैहि. की यह दुआ याद आई, ''ऐ मेरे रब! मुझे माफ कर और मुझे ऐसी हुकूमत अता कर जो मेरे बाद किसी और के लायक न हो।''

أنْ أَرْبِطَهُ إِلَى سَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي ٱلْمَسْجِدِ، حَتَّى تُصْبِحُوا وَتَنْظُرُوا إِلَيْهِ كُلُّكُمْ، فَذَكَرْتُ قَوْلَ أَخِي سُلَيْمَانَ: ﴿رَبِّ ٱغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِنْ بَعْدِيٓ﴾. [رواه البخاري: ٤٦١]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस सरकश जिन्न को बाद में कैद करने का इरादा फरमाया। इमाम बुखारी ने कर्जदार को इसी पर कयास किया है। (औनुलबारी, 577/1)

बाब 52 : मस्जिद में बीमारों और दूसरों के लिए खैमा (झोपड़ी) लगाना।

٥٢ - باب: ٱلْخَيْمَةُ فِي ٱلْمَسْجِدِ لِلْمَرْضَى وَغَيْرِهِمْ

291 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि खन्दक की जंग के मौके पर साद बिन मआज रज़ि. को हफ्त अन्दाम की रग में (तीर का) जख्म लगा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए मस्जिद में एक खैमा लगा दिया ताकि नजदीक से उनकी देखभाल कर लिया करें और मस्जिद में बनू गिफार का खैमा भी था, अचानक उनकी तरफ से खून बहकर आने लगा तो

٢٩١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قَالَتْ: أُصِيبَ سَعْدٌ يَوْمَ ٱلْخَنْدَقِ فِي ٱلأَكْحَلِ، فَضَرَبَ ٱلنَّبِيُّ صَلَّى ٱللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْمَةً فِي ٱلْمَسْجِدِ، لِيَعُودَهُ مِنْ قَرِيبٍ، فَلَمْ يَرُعْهُمْ، وَفِي ٱلْمَسْجِدِ خَيْمَةٌ مِنْ بَنِي غِفَارٍ، إِلَّا ٱلدَّمُ يَسِيلُ إِلَيْهِمْ، فَقَالُوا: يَا أَهْلَ ٱلْخَيْمَةِ، مَا هٰذَا ٱلَّذِي يَأْتِينَا مِنْ قِبَلِكُمْ؟ فَإِذَا سَعْدٌ يَغْذُو جُرْحُهُ دَمًا، فَمَاتَ فِيهَا. [رواه البخاري: ٤٦٣]

लोग उससे डर गये, कहने लगे, ऐ खैमे वालों! यह क्या है जो तुम्हारी तरफ से हमारे पास आ रहा है, देखा तो हज़रत सअद रज़ि. के जख्म से खून बह रहा था। आखिर वह इसी जख्म से अल्लाह को प्यारे हो गये।

बाब 53 : जरूरत के वक्त ऊंट को मस्जिद में लाना।

٥٣ - باب: إدْخَالُ ٱلْبَعِيرِ فِي ٱلْمَسجِدِ لِلْعِلَّةِ

292 : उम्मे सलमा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपनी बीमारी की शिकायत की तो आपने फरमाया कि तू लोगों के पीछे पीछे सवारी पर बैठकर तवाफ कर ले। चूनांचे मैंने सवार होकर तवाफ किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कअबे के पहलू में खड़े नमाज़ में सूरा वत्तूर तिलावत फरमा रहे थे।

٢٩٢ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنها قَالَتْ: شَكَوْتُ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ أَنِّي أَشْتَكِي، قَالَ: (طُوفِي مِنْ وَرَاءِ ٱلنَّاسِ وَأَنْتِ رَاكِبَةٌ). فَطُفْتُ، وَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُصَلِّي إِلَى جَنْبِ ٱلْبَيْتِ، يَقْرَأُ بِالطُّورِ وَكِتَابٍ مَسْطُورٍ. [رواه البخاري: ٤٦٤]

फायदे : मालूम हुआ कि मस्जिद में हलाल जानवर लाया जा सकता है। बशर्ते कि मस्जिद के गन्दा होने का डर न हो।

(औनुलबारी, 1/579)

बाब 54 :

٥٤ - باب:

293 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो सहाबा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास से अन्धेरी रात में निकले। उन दोनों

٢٩٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلَيْنِ مِنْ أَصْحَابِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، خَرَجَا مِنْ عِنْدِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ فِي لَيْلَةٍ مُظْلِمَةٍ، وَمَعَهُمَا مِثْلُ ٱلْمِصْبَاحَيْنِ، يُضِيئَانِ بَيْنَ أَيْدِيهِمَا، فَلَمَّا افْتَرَقَا

के साथ दो चिराग जैसे रोशन थे, जो उनके सामने रोशनी दे रहे थे। जब वह दोनों अलग हो गये तो हर एक के साथ उनमें से एक एक हो गया। यहां तक कि वह अपने घर पहुंच गये।

صَارَ مَعَ كُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا وَاحِدٌ، حَتَّى أَتَى أَهْلَهُ. [رواه البخاري: ٤٦٥]

फायदे : इस हदीस से अन्धेरी रात में मस्जिद की तरफ आने की फजीलत साबित होती है। (औनुलबारी, 1/580)

बाब 55 : मस्जिद में खिड़की और जाने का रास्ता रखना।

٥٥ - باب: الخَوْخَةُ وَالْمَمَرُّ فِي المَسْجِدِ

294: अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दिन खुत्बा देते हुये फरमाया कि बेशक अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे को इख्तियार दिया है कि दुनिया में रहे या जो अल्लाह के पास है, उसे इख्तियार करे तो उसने उस चीज को इख्तियार किया जो अल्लाह के पास है। यह सुनकर अबू बकर सिद्दीक रज़ि. रोने लगे। मैंने अपने दिल में कहा, यह बूढ़ा किस लिए रोता है? बात तो सिर्फ यह है कि अल्लाह ने अपने बन्दे को दुनिया

٢٩٤ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: (إِنَّ اللهَ خَيَّرَ عَبْدًا بَيْنَ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ مَا عِنْدَ اللهِ). فَبَكَى أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، فَقُلْتُ فِي نَفْسِي: مَا يُبْكِي هٰذَا الشَّيْخَ؟ إِنْ يَكُنِ اللهُ خَيَّرَ عَبْدًا بَيْنَ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ مَا عِنْدَ اللهِ، فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ الْعَبْدُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ أَعْلَمَنَا، قَالَ: (يَا أَبَا بَكْرٍ لاَ تَبْكِ، إِنَّ أَمَنَّ النَّاسِ عَلَيَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَالِهِ أَبُو بَكْرٍ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلًا مِنْ أُمَّتِي لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ، وَلَكِنْ أُخُوَّةُ الإِسْلاَمِ وَمَوَدَّتُهُ، لاَ يَبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ بَابٌ إِلاَّ سُدَّ، إِلاَّ بَابَ أَبِي بَكْرٍ). [رواه البخاري: ٤٦٦]

या आखिरत दोनों में से जिसे चाहे, पसन्द करने का इख्तियार दिया है। पस उसने आखिरत को पसन्द किया है। (तो इसमें रोने की क्या बात है। मगर बाद में यह राज खुला कि) बन्दे से मुराद खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे। और अबू बकर सिद्दीक रज़ि. हम सब से ज्यादा समझने वाले थे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अबू बकर सिद्दीक रज़ि. तुम मत रोओ। मैं लोगों में से किसी के माल और दोस्ती का इतना बोझल नहीं, जितना अबू बकर सिद्दीक रज़ि. का हूं। अगर मैं अपनी उम्मत से किसी को दोस्त बनाता तो अबू बकर सिद्दीक को बनाता। लेकिन इस्लामी भाईचारगी जरूर है। देखो! मस्जिद में अबू बकर सिद्दीक रज़ि. के दरवाजे के सिवा सब के दरवाजे बन्द कर दिये जायें।

फायदे : इस हदीस में आपकी खिलाफत की तरफ इशारा था कि खिलाफत के जमाने में नमाज़ पढ़ाने के लिए आने जाने में आसानी रहेगी।

295 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी आखरी बीमारी में एक पट्टी से अपने सर को बांधे हुए बाहर तशरीफ लाये और मिम्बर पर बैठे। अल्लाह की हम्दो सना (बड़ाई) के बाद फरमाया, अपनी जान और माल को मुझ पर अबू बकर सिद्दीक रज़ि. से ज्यादा और कोई खर्च

٢٩٥ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما - قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي مَرَضِهِ ٱلَّذِي مَاتَ فِيهِ، عَاصِبًا رَأْسَهُ بِخِرْقَةٍ، فَقَعَدَ عَلَى ٱلْمِنْبَرِ، فَحَمِدَ ٱللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: (إِنَّهُ لَيْسَ مِنَ ٱلنَّاسِ أَحَدٌ أَمَنَّ عَلَيَّ فِي نَفْسِهِ وَمَالِهِ مِنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَبِي قُحَافَةَ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا مِنَ ٱلنَّاسِ خَلِيلًا لَاتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلًا، وَلَكِنْ خُلَّةُ ٱلإِسْلَامِ أَفْضَلُ، سُدُّوا عَنِّي كُلَّ خَوْخَةٍ فِي

هٰذَا الْمَسْجِدِ، غَيْرَ خَوْخَةِ أَبِي بَكْرٍ). [رواه البخاري: ٤٦٧]

करने वाला नहीं और मैं लोगों में से अगर किसी को दिली दोस्त बनाता तो यकीनन अबू बकर सिद्दीक रज़ि. को बनाता। लेकिन इस्लामी दोस्ती सब से बढ़कर है, देखो! मेरी तरफ से हर वह खिड़की जो इस मस्जिद में खुलती है, बन्द कर दो, सिर्फ अबू बकर सिद्दीक रज़ि. की खिड़की को रहने दो।

٥٦ - باب: الأَبْوَابُ وَالْغَلَقُ لِلْكَعْبَةِ وَالْمَسَاجِدِ

बाब 56: कअबा और उसके अलावा मस्जिदों के लिए दरवाजे, चिटखनी और ताला लगाना।

٢٩٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَدِمَ مَكَّةَ، فَدَعا عُثْمَانَ بْنَ طَلْحَةَ، فَفَتَحَ ٱلْبَابَ، فَدَخَلَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ، وَبِلاَلٌ، وَأُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، وَعُثْمانُ بْنُ طَلْحَةَ، ثُمَّ أُغْلِقَ ٱلْبَابُ، فَلَبِثَ فِيهِ سَاعَةً، ثُمَّ خَرَجُوا. قَالَ ٱبْنُ عُمَرَ: فَبَدَرْتُ فَسَأَلْتُ بِلاَلاً، فَقَالَ: صَلَّى فِيهِ، فَقُلْتُ: فِي أَيٍّ؟ قَالَ: بَيْنَ ٱلأُسْطُوَانَتَيْنِ. قَالَ ٱبْنُ عُمَرَ: فَذَهَبَ عَلَيَّ أَنْ أَسْأَلَهُ كَمْ صَلَّى. [رواه البخاري: ٤٦٨]

296 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का तशरीफ लाये तो आपने उसमान बिन तल्हा रज़ि. को बुलाया। उन्होंने बैतुल्लाह का दरवाजा खोल दिया फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, बिलाल, उसामा और उसमान बिन तल्हा रज़ि. अन्दर गये। उसके बाद दरवाजा बन्द कर दिया गया। आप वहां थोड़ी देर रहे, फिर सब बाहर निकले, खुद इब्ने उमर रज़ि. ने कहा, मैं जल्द उठा और बिलाल रज़ि. से जाकर पूछा तो उसने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लभ ने कअबा के अन्दर नमाज़ पढ़ी। मैंने पूछा किस मकाम पर तो

उन्होंने कहा, दोनों खम्भों के बीच में। इब्ने उमर रज़ि. कहते हैं कि मैं यह बात पूछने से रह गया कि आपने कितनी रकअतें पढ़ी थी?

बाब 57 : मस्जिद में हल्के (ग्रुप) बनाना और बैठना।

٥٧ - باب: ٱلحِلَقُ وَٱلجُلُوسُ فِي ٱلمَسجِدِ

297 : इब्ने उमर रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार मिम्बर पर तशरीफ फरमा थे कि एक आदमी ने आपसे पूछा: रात की नमाज़ के बारे में आपका क्या हुक्म है? आपने फरमाया, दो दो रकअतें अदा की जाये। अगर किसी को सुबह हो जाने का डर हो तो एक रकअत और पढ़े। वह पिछली सारी नमाजों को वितर ताक कर देगी। इब्ने उमर रज़ि. फरमाया करते थे कि रात की नमाज़ के आखिर में वितर पढ़ा करो, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका हुक्म फरमाया है।

٢٩٧ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ ٱلنَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ عَلَى ٱلمِنْبَرِ: مَا تَرَى فِي صَلاَةِ ٱللَّيْلِ؟ قَالَ: (مَثْنَى مَثْنَى، فَإِذَا خَشِيَ ٱلصُّبْحَ صَلَّى وَاحِدَةً، فَأَوْتَرَتْ لَهُ مَا صَلَّى). وَإِنَّهُ كَانَ يَقُولُ: ٱجْعَلُوا آخِرَ صَلاَتِكُمْ بِاللَّيْلِ وِتْرًا، فَإِنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ بِهِ. [رواه البخاري: ٤٧٢]

फायदे : इस हदीस से वितर की एक रकअत पढ़ने का सबूत मिलता है।

बाब 58 : मस्जिद में चित (पीठ के बल) लेटना।

٥٨ - باب: ٱلاستِلْقَاءُ فِي ٱلمَسجِدِ

298 : अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अनसारी से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को

٢٩٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ زَيْدٍ ٱلأَنصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ رَأَى رَسُولَ ٱللهِ ﷺ مُسْتَلْقِيًا فِي

المَسْجِدِ، وَاضِعًا إِحْدَى رِجْلَيْهِ عَلَى الأُخْرَى. [رواه البخاري: ٤٧٥]

मस्जिद में चित लेटे और पांव पर पांव रखे हुये देखा है।

फायदे : अगर इस तरह लेटने से सतर खुलने का डर हो तो फिर इसकी मनाही है, जैसा कि दूसरी हदीसों में है। (औनुलबारी, 1/586)। अगर पांव को पांव पर रखा जाये तो सतर खुलने का डर नहीं। हां पांव को घुटने पर रखने से सतर खुलने का डर है। (अलवी)

٥٩ - باب: الصَّلاةُ فِي مَسْجِدِ السُّوقِ

बाब 59 : बाजार की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना।

٢٩٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (صَلاَةُ ٱلْجَمِيعِ تَزِيدُ عَلَى صَلاَتِهِ فِي بَيْتِهِ، وَصَلاَتِهِ فِي سُوقِهِ، خَمْسًا وَعِشْرِينَ دَرَجَةً، فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الوُضُوءَ، وَأَتَى ٱلْمَسْجِدَ، لاَ يُرِيدُ إِلَّا ٱلصَّلاَةَ، لَمْ يَخْطُ خُطْوَةً إِلاَّ رَفَعَهُ ٱللهُ بِهَا دَرَجَةً، وَحَطَّ عَنْهُ خَطِيئَةً، حَتَّى يَدْخُلَ ٱلْمَسْجِدَ، فَإِذَا دَخَلَ ٱلْمَسْجِدَ، كَانَ فِي صَلاَةٍ مَا كَانَتْ تَحْبِسُهُ، وَتُصَلِّي - يَعْنِي - عَلَيْهِ ٱلْمَلاَئِكَةُ، مَا دَامَ فِي مَجْلِسِهِ ٱلَّذِي يُصَلِّي فِيهِ: ٱللَّهُمَّ ٱغْفِرْ لَهُ، ٱللَّهُمَّ ٱرْحَمْهُ، مَا لَمْ يُحْدِثْ فِيهِ). [رواه البخاري: ٤٧٧]

299 : अबू हुरैरा रज़ि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जमाअत के साथ नमाज़ घर और बाजार की नमाज़ से पच्चीस दर्जे ज्यादा फजीलत रखती है। इसलिए कि जब कोई आदमी अच्छी तरह वुजू करे और मस्जिद में नमाज़ ही के इरादे से आये तो मस्जिद में पहुंचने तक जो कदम भी उठाता है, उस पर अल्लाह एक दर्जा बुलन्द करता है और उसका एक गुनाह मिटा देता है। और जब वह मस्जिद में पहुंच जाता है तो जब तक नमाज़ के लिए वहां रहे तो उसे नमाज़ का सवाब मिलता रहता है। और जब तक वह अपने उस मुकाम में रहे,

जहां नमाज़ पढ़ता है, फरिश्ते उसके लिए यूँ दुआ करते हैं, अल्लाह इसे माफ कर दे, अल्लाह इस पर रहम फरमा। यह उस वक्त तक जारी रहती है, जब तक वह बे-वुजू न हो।

बाब 60 : मस्जिद वगैरह में (हाथों की) उंगलियों को एक दूसरे में दाखिल करना।

٦٠ باب: تشبيك ٱلأصابع في ٱلمسجد وغيره

300 : अबू मूसा रज़ि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिए इमारत की तरह है कि उसके एक हिस्से से दूसरे हिस्से को ताकत मिलती है। और आपने अपनी उंगलियों को एक दूसरे में दाखिल फरमाया।

٣٠٠ : عنْ أبي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عنْهُ، عن ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إنَّ ٱلمُؤْمِنَ لِلْمُؤْمِنِ كالْبُنْيانِ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا). وَشَبَّكَ أَصَابِعَهُ. [رواه البخاري: ٤٨١]

फायदे : कुछ हदीसों में ऐसा करने की मनाही है। इमाम बुखारी के नजदीक उनके सही होने में इख्तिलाफ है या उन हदीसों में नमाज़ के बीच ऐसा करने पर महमूल है। आपने जरूरत के तहत मिसाल के लिए ऐसा किया।

---

301 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें जवाल के बाद की नमाजों में से कोई नमाज़ पढ़ाई और आपने दो रकअत पढ़ाकर सलाम फेर दिया। इसके बाद मस्जिद में गाड़ी हुई

٣٠١ : عَنْ أَبي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إحْدَى صَلاَتَي ٱلْعَشِيِّ فَصَلَّى بِنَا رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، فَقَامَ إِلَى خَشَبَةٍ مَعْرُوضَةٍ فِي ٱلْمَسْجِدِ، فَاتَّكَأَ عَلَيْهَا كَأَنَّهُ غَضْبَانُ، وَوَضَعَ يَدَهُ ٱلْيُمْنَى عَلَى ٱلْيُسْرَى، وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ،

وَوَضَعَ خَدَّهُ ٱلأَيْمَنَ عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ ٱلْيُسْرَى، وَخَرَجَتِ ٱلسَّرَعَانُ مِنْ أَبْوَابِ ٱلْمَسْجِدِ، فَقَالُوا: قَصُرَتِ ٱلصَّلَاةُ؟ وَفِي ٱلْقَوْمِ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، فَهَابَا أَنْ يُكَلِّمَاهُ، وَفِي ٱلْقَوْمِ رَجُلٌ فِي يَدَيْهِ طُولٌ، يُقَالُ لَهُ ذُو ٱلْيَدَيْنِ، قَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَنَسِيتَ أَمْ قَصُرَتِ ٱلصَّلَاةُ؟ قَالَ: (لَمْ أَنْسَ وَلَمْ تُقْصَرْ) فَقَالَ: (أَكَمَا يَقُولُ ذُو ٱلْيَدَيْنِ؟). فَقَالُوا: نَعَمْ، فَتَقَدَّمَ فَصَلَّى مَا تَرَكَ، ثُمَّ سَلَّمَ، ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، ثُمَّ سَلَّمَ. [رواه البخاري: ٤٨٢]

एक लकड़ी की तरफ गये। उस पर आपने टेक लगा लिया। गोया आप नाराज थे और अपना दायां हाथ बायें हाथ पर रख लिया और अपनी उंगलियों को एक दूसरे में दाखिल फरमाया और अपना दायां गाल बायीं हथेली की पीठ पर रख लिया। जल्दबाज तो मस्जिद के दरवाजों से निकल गये और मस्जिद में हाजिर लोगों ने कहना शुरू कर दिया, क्या नमाज़ कम कर दी गई? उस वक्त लोगों में हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि. और उमर फारूक रज़ि. भी मौजूद थे। मगर इन दोनों ने आपसे गुफ्तगू करने से डर महसूस किया। एक आदमी जिसके हाथ कुछ लम्बे थे और उसे जुलयदैन भी कहा जाता था, कहने लगा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या आप भूल गये हैं या नमाज़ कम कर दी गयी है। आपने फरमाया, न मैं भूला हूं और न ही नमाज़ कम की गई है। फिर आपने फरमाया, क्या जुलयदैन सही कहता है? लोगों ने अर्ज किया, ''जी हां'' यह सुनकर आप आगे बढ़े और जितनी नमाज़ रह गयी थी, उसे अदा किया। फिर सलाम फेरा। उसके बाद आपने तकबीर कही और सज्दा-ए-सहू (भूल का सज्दा) किया जो आम सज्दे की तरह या उससे कुछ लम्बा था। फिर आपने सर उठाया और अल्लाहु अकबर कह कर दूसरा सज्दा किया जो

अपने आम सज्दों की तरह या उससे कुछ लम्बा था। फिर सर उठाकर अल्लाहु अकबर कहा और सलाम फेर दिया।

बाब 61 : मदीना के रास्ते में मौजूद मस्जिदें और वह जगह जहां नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ी।

٦١ - باب: ٱلْمَسَاجِدُ ٱلَّتِي عَلَى طُرُقِ ٱلْمَدِينَةِ وَٱلْمَوَاضِعِ ٱلَّتِي صَلَّى فِيهَا ٱلنَّبِيُّ ﷺ

302 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. वह मक्का और मदीना के रास्ते में अलग-अलग जगहों पर नमाज़ पढ़ा करते थे और कहा करते थे कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन जगहों पर नमाज़ पढ़ते देखा है।

٣٠٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رضي ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ كَانَ يُصَلِّي فِي أَمَاكِنَ مِنَ ٱلطَّرِيقِ وَيَقُولُ: إِنَّهُ رَأَى ٱلنَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي فِي تِلْكَ ٱلأَمْكِنَةِ. [رواه البخاري: ٤٨٣]

303 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि.से ही रिवायत है, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब उमरे के लिए जाते, इसी तरह जब आप अपने आखरी हज में हज के लिए तशरीफ ले गये तो जुलहुलैफा में उस बबूल के पेड़ के नीचे पड़ाव करते जहां अब मस्जिद जुलहुलैफा है और जब आप जिहाद, हज या उमरे से (मदीना) वापस आते और उस रास्ते से गुजरते तो अकीक की

٣٠٣ : وَعَنْهُ رضي الله عنه: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، كَانَ يَنْزِلُ بِذِي ٱلْحُلَيْفَةِ حِينَ يَعْتَمِرُ، وَفِي حَجَّتِهِ حِينَ حَجَّ، تَحْتَ سَمُرَةٍ، فِي مَوْضِعِ ٱلْمَسْجِدِ ٱلَّذِي بِذِي ٱلْحُلَيْفَةِ، وَكَانَ إِذَا رَجَعَ مِنْ غَزْوٍ، كَانَ فِي تِلْكَ ٱلطَّرِيقِ، أَوْ حَجٍّ أَوْ عُمْرَةٍ، هَبَطَ مِنْ بَطْنِ وَادٍ، فَإِذَا ظَهَرَ مِنْ بَطْنِ وَادٍ، أَنَاخَ بِٱلْبَطْحَاءِ ٱلَّتِي عَلَى شَفِيرِ ٱلْوَادِي ٱلشَّرْقِيَّةِ، فَعَرَّسَ ثَمَّ حَتَّى يُصْبِحَ، لَيْسَ عِنْدَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلَّذِي بِحِجَارَةٍ، وَلاَ عَلَى ٱلأَكَمَةِ ٱلَّتِي عَلَيْهَا ٱلْمَسْجِدُ، كَانَ ثَمَّ خَلِيجٌ

يُصَلِّي عَبْدُ ٱللهِ عِنْدَهُ، فِي بَطْنِهِ كُثُبٌ، كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ ثَمَّ يُصَلِّي، فَدَحَا فِيهِ ٱلسَّيْلُ بِالْبَطْحَاءِ، حَتَّى دَفَنَ ذَلِكَ ٱلْمَكَانَ، ٱلَّذِي كَانَ عَبْدُ ٱللهِ يُصَلِّي فِيهِ. [رواه البخاري: ٤٨٤]

वादी के नीचले हिस्से में उतरते, जब वहां से ऊपर चढ़ते तो अपनी ऊंटनी को बत्हा के मकाम में बिठाते जो वादी के मश्रिकी (पूर्वी) किनारे पर है और आखिर रात में वहीं आराम फरमाते, यहां तक कि सुबह हो जाती, यह जगह उस मस्जिद के पास नहीं जो पत्थरों पर बनी है और न ही उस टीले पर है, जिस पर मस्जिद है, बल्कि इस जगह एक गहरा नाला था। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. इसके पास नमाज़ पढ़ा करते थे। उसके अन्दर कुछ (रेत के) टीले थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वही नमाज़ पढ़ते थे (रावी कहता है) लेकिन अब नाले की रो (पानी के बहाव) ने वहां कंकरियां बिछा दी हैं और उस मकाम को छिपा दिया है, जहां अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. नमाज़ पढ़ा करते थे।

फायदे : हज़रत इब्ने उमर रज़ि. इन जगहों पर बरकत और पैरवी के लिए नमाज़ पढ़ते थे, वैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हर बात, हर काम और हर नक्शे कदम हमारे लिए खैर और बरकत का सबब है। मगर नबियों की बरकतों के नाम से जो कमी और ज्यादती की जाती है, वह भी हद दर्जा बुराई के लायक है। जैसा कि बाज लोग आप के पेशाब और पाखाना को भी पाक कहते हैं। नीज इन हदीसों में जिन मस्जिदों का जिक्र है, उनमें से अकसर लापता हो चुकी हैं। उसके वह पेड़ और निशानात भी खत्म हो चुके हैं, सिर्फ मस्जिद जुलहुलैफा की पहचान हो सकती है। ''बाकी रहे नाम अल्लाह का!''

304 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से

٣٠٤ : وحدَّث عبدُ الله: أنَّ

ٱلنَّبِيَّ ﷺ صَلَّى حَيْثُ ٱلْمَسْجِدُ ٱلصَّغِيرُ، ٱلَّذِي دُونَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلَّذِي بِشَرَفِ ٱلرَّوْحَاءِ، وَكَانَ عَبْدُ ٱللهِ يَعْلَمُ ٱلْمَكَانَ ٱلَّذِي كَانَ صَلَّى فِيهِ ٱلنَّبِيُّ ﷺ، يَقُولُ: ثَمَّ عَنْ يَمِينِكَ، حِينَ تَقُومُ فِي ٱلْمَسْجِدِ تُصَلِّي، وَذَلِكَ ٱلْمَسْجِدُ عَلَى حَافَةِ ٱلطَّرِيقِ ٱلْيُمْنَى، وَأَنْتَ ذَاهِبٌ إِلَى مَكَّةَ، بَيْنَهُ وَبَيْنَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلأَكْبَرِ رَمْيَةٌ بِحَجَرٍ، أَوْ نَحْوُ ذَلِكَ. [رواه البخاري: ٤٨٥]

यह भी रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहां भी नमाज़ पढ़ी जहां अब छोटी सी मस्जिद है, उस मस्जिद के करीब जो रोहाअ की बुलन्दी पर मौजूद है, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. उस मुकाम की पहचान बतलाते थे, जहां नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ अदा की थी, और कहते थे कि जब तू मस्जिद में नमाज़ पढ़े तो वह जगह तेरे दायें हाथ की तरफ पड़ती है और यह छोटी मस्जिद मक्का को जाते हुये रास्ते के दायें किनारे पर मौजूद है। इसके और बड़ी मस्जिद के बीच मुश्किल से पत्थर फैंकने की ही दूरी है।

٣٠٥ : وَكَانَ عبدُ اللهِ يُصَلِّي إِلَى ٱلْعِرْقِ ٱلَّذِي عِنْدَ مُنْصَرَفِ ٱلرَّوْحَاءِ، وَذَلِكَ ٱلْعِرْقُ ٱنْتِهَاءُ طَرَفِهِ عَلَى حَافَةِ ٱلطَّرِيقِ، دُونَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلَّذِي بَيْنَهُ وَبَيْنَ ٱلْمُنْصَرَفِ، وَأَنْتَ ذَاهِبٌ إِلَى مَكَّةَ، وَقَدِ ٱبْتُنِيَ ثَمَّ مَسْجِدٌ، فَلَمْ يَكُنْ عَبْدُ ٱللهِ يُصَلِّي فِي ذَلِكَ ٱلْمَسْجِدِ، كَانَ يَتْرُكُهُ عَنْ يَسَارِهِ وَوَرَاءَهُ، وَيُصَلِّي أَمَامَهُ إِلَى ٱلْعِرْقِ نَفْسِهِ. وَكَانَ عَبْدُ ٱللهِ يَرُوحُ مِنَ ٱلرَّوْحَاءِ، فَلَا يُصَلِّي ٱلظُّهْرَ حَتَّى يَأْتِيَ ذَلِكَ ٱلْمَكَانَ، فَيُصَلِّي فِيهِ

305 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. उस छोटी सी पहाड़ी के पास भी नमाज़ पढ़ा करते थे जो रोहाअ के खात्मे पर है। इस पहाड़ी का सिलसिला रास्ते के आखरी किनारे पर जाकर खत्म हो जाता है। मक्का को जाते हुये उस मस्जिद के करीब जो उसके और रोहाअ के आखरी हिस्से के बीच है, वहां एक और मस्जिद बन गई है। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. उस मस्जिद में

नमाज़ नहीं पढ़ा करते थे, बल्कि उसे अपनी बायीं तरफ और पीछे छोड़ देते और उसके आगे खुद पहाड़ी के पास नमाज़ पढ़ते थे। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. सूरज ढ़लने के बाद रोहाअ से चलते, फिर जुहर की नमाज़ उस मकाम पर पहुंचकर अदा करते थे और जब मक्का से (मदीना) आते तो सुबह होने से कुछ वक्त पहले या सहरी के आखरी वक्त वहां पड़ाव करते और फजर की नमाज़ अदा करते।

ٱلظُّهر، وَإِذَا أَقْبَلَ مِنْ مَكَّةَ، فَإِنْ مَرَّ بِهِ قَبْلَ ٱلصُّبْحِ بِسَاعَةٍ أَوْ مِنْ آخِرِ ٱلسَّحَرِ، عَرَّسَ حَتَّى يُصَلِّيَ بِهَا ٱلصُّبْحَ. [رواه البخاري: ٤٨٦]

306 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से यह भी रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मकाम रूवैसा के करीब रास्ते की दायीं तरफ लम्बी-चौड़ी, नरम और एक सी जगह में एक घने पेड़ के नीचे उतरते, यहां तक कि उस टीले से भी आगे गुजर जाते जो रूवैसा के रास्ते से दो मील के करीब है। इस पेड़ का ऊपर का हिस्सा टूट गया है। अब बीच से खोखला होकर अपने तने पर खड़ा है। इसकी जड़ में बहुत रेत के टीले हैं।

٣٠٦ : وحدّث عبدُ الله: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ، كَانَ يَنْزِلُ تَحْتَ سَرْحَةٍ ضَخْمَةٍ، دُونَ ٱلرُّوَيْثَةِ، عَنْ يَمِينِ ٱلطَّرِيقِ وَوُجَاهِ ٱلطَّرِيقِ، فِي مَكَانٍ بَطْحٍ سَهْلٍ، حَتَّى يُفْضِيَ مِنْ أَكَمَةٍ دُوَيْنَ بَرِيدِ ٱلرُّوَيْثَةِ بِمِيلَيْنِ، وَقَدِ ٱنْكَسَرَ أَعْلاَهَا فَٱنْثَنَى فِي جَوْفِهَا، وَهِيَ قَائِمَةٌ عَلَى سَاقٍ، وَفِي سَاقِهَا كُثُبٌ كَثِيرَةٌ. [رواه البخاري: ٤٨٧]

307 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने यह भी बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

٣٠٧ : وَحدَّث عبدُ الله: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ، صَلَّى فِي طَرَفِ تَلْعَةٍ مِنْ وَرَاءِ ٱلْعَرْجِ، وَأَنْتَ ذَاهِبٌ إِلَى

هَضْبَةٍ، عِنْدَ ذَلِكَ ٱلْمَسْجِدِ قَبْرَانِ أَوْ ثَلاثَةٌ، عَلَى ٱلْقُبُورِ رَضْمٌ مِنْ حِجَارَةٍ عَنْ يَمِينِ ٱلطَّرِيقِ، عِنْدَ سَلِمَاتِ ٱلطَّرِيقِ، بَيْنَ أُولَئِكَ ٱلسَّلِمَاتِ، كَانَ عَبْدُ ٱللهِ يَرُوحُ مِنَ ٱلْعَرْجِ، بَعْدَ أَنْ تَمِيلَ ٱلشَّمْسُ بِالْهَاجِرَةِ، فَيُصَلِّي ٱلظُّهْرَ فِي ذَلِكَ ٱلْمَسْجِدِ. [رواه البخاري: ٤٨٨]

उस टीले के किनारे पर भी नमाज़ पढ़ी, जहां से पानी उतरता है। यह मकामे हज्बा को जाते हुये मकामे अर्ज के पीछे मौजूद है। इस मस्जिद के पास दो या तीन कब्रें हैं। इन पर ऊपर तले पत्थर रखे हुये हैं। यह रास्ते से दायीं तरफ उन बड़े पत्थरों के पास है जो रास्ते पर मौजूद हैं। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. दोपहर को सूरज ढलने के बाद मकामें अर्ज से उन बड़े पत्थरों के बीच चलते फिर जुहर की नमाज़ इस मस्जिद में अदा करते।

٣٠٨ : قال عبدُ الله: ونزل رسولُ الله ﷺ عِنْدَ سَرَحَاتٍ عَنْ يَسَارِ ٱلطَّرِيقِ، فِي مَسِيلٍ دُونَ هَرْشَى، ذَلِكَ ٱلمسِيلُ لاَصِقٌ بِكُرَاعِ هَرْشَى، بَيْنَهُ وَبَيْنَ ٱلطَّرِيقِ قَرِيبٌ مِنْ غَلْوَةٍ. وَكَانَ عَبْدُ ٱللهِ يُصَلِّي إِلَى سَرْحَةٍ، هِيَ أَقْرَبُ ٱلسَّرَحَاتِ إِلَى ٱلطَّرِيقِ، وَهِيَ أَطْوَلُهُنَّ. [رواه البخاري: ٤٨٩]

308 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने यह भी बयान फरमाया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन बड़े पेड़ों के पास उतरे जो रास्ते के बायीं तरफ हरशै पहाड़ी के पास एक वादी में हैं। यह वादी हरशै के किनारे से मिल गयी है। वादी और रास्ते के बीच एक तीर फैंकने का फासला है। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. उस बड़े पेड़ के पास नमाज़ पढ़ते जो वहां तमाम पेड़ों से बड़ा और रास्ते के ज्यादा करीब था।

٣٠٩ : وَيقولُ: إِنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ، كَانَ يَنْزِلُ فِي ٱلْمَسِيلِ ٱلَّذِي فِي أَدْنَى مَرِّ ٱلظَّهْرَانِ، قِبَلَ ٱلْمَدِينَةِ، حِينَ

309 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. यह भी फरमाया करते थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस

يَهْبِطُ مِنَ الصَّفْرَاوَاتِ، يَنْزِلُ فِي بَطْنِ ذَلِكَ الْمَسِيلِ عَنْ يَسَارِ الطَّرِيقِ، وَأَنْتَ ذَاهِبٌ إِلَى مَكَّةَ، يَهْبِطُ مِنَ الصَّفْرَاوَاتِ، يَنْزِلُ فِي بَطْنِ ذَلِكَ الْمَسِيلِ عَنْ يَسَارِ الطَّرِيقِ، وَأَنْتَ ذَاهِبٌ إِلَى مَكَّةَ، لَيْسَ بَيْنَ مَنْزِلِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبَيْنَ الطَّرِيقِ إِلَّا رَمْيَةٌ بِحَجَرٍ. [رواه البخاري: ٤٩٠]

वादी में पड़ाव करते जो मर-रज जहरान के निचले हिस्से में मकामे सफवात से उतरते वक्त मदीना की तरफ है। आप इस वादी के निचले हिस्से में पड़ाव करते जो मक्का जाते हुए रास्ते के बायीं तरफ मौजूद है। आप जहां उतरते, उसमें और आम रास्ते के बीच एक पत्थर फैंकने का फासला होता।

٣١٠ : قَالَ: وكانَ النَّبِيُّ ﷺ، كَانَ يَنْزِلُ بِذِي طُوًى، وَيَبِيتُ حَتَّى يُصْبِحَ، ثُمَّ يُصَلِّي الصُّبْحَ حِينَ يَقْدَمُ مَكَّةَ، وَمُصَلَّى رَسُولِ اللهِ ﷺ ذَلِكَ عَلَى أَكَمَةٍ غَلِيظَةٍ، لَيْسَ فِي الْمَسْجِدِ الَّذِي بُنِيَ ثَمَّ، وَلَكِنْ أَسْفَلَ مِنْ ذَلِكَ عَلَى أَكَمَةٍ غَلِيظَةٍ. [رواه البخاري: ٤٩١]

310 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने यह भी बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मकामे जी तुवा में उतरा करते और रात यहीं गुजारा करते थे। सुबह होती तो नमाज़ फजर यहीं पढ़ कर मक्का मुकर्रमा को रवाना होते, यहां आपके नमाज़ पढ़ने की जगह एक बड़े टीले पर थी। यह वह जगह नहीं, जहां आज मस्जिद बनी हुई है बल्कि उसके निचले हिस्से में वह बड़े टीले पर मौजूद थी।

٣١١ : وَأَنَّ عَبْدَ اللهِ يُحَدِّثُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اسْتَقْبَلَ فُرْضَتَيِ الْجَبَلِ، الَّذِي بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَبَلِ الطَّوِيلِ نَحْوَ الْكَعْبَةِ، فَجَعَلَ الْمَسْجِدَ الَّذِي بُنِيَ

311 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. यह भी बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस पहाड़ के दोनों दर्रों का रूख

ثُمَّ يَسَارَ ٱلْمَسْجِدِ بِطَرَفِ ٱلأَكَمَةِ، وَمُصَلَّى ٱلنَّبِيِّ ﷺ أَسْفَلَ مِنْهُ عَلَى ٱلأَكَمَةِ ٱلسَّوْدَاءِ، تَدَعُ مِنَ ٱلأَكَمَةِ عَشَرَةَ أَذْرُعٍ أَوْ نَحْوَهَا، ثُمَّ تُصَلِّي مُسْتَقْبِلَ ٱلْفُرْضَتَيْنِ مِنَ ٱلْجَبَلِ ٱلَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَ ٱلْكَعْبَةِ. [رواه البخاري: ٤٩٢]

किया जो उसके और तवील नामी पहाड़ के बीच काबा की तरफ है। आप उस मस्जिद को जो टीले के किनारे पर अब वहां तामीर हुई है, अपनी बायें तरफ कर लेते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नमाज़ पढ़ने की जगह उससे नीचे काले टीले पर थी (अगर तू टीले से कम और ज्यादा दस हाथ छोड़कर वहां नमाज़ पढ़े तो तेरा रूख सीधा पहाड़ की दोनों घाटियों की तरफ होगा, यानी वह पहाड़ी जो तेरे और बैतुल्लाह के बीच मौजूद है।

बाब 62 : इमाम का सुतरा मुकतदियों के लिए भी है।

٦٢ - باب: سُتْرَةُ ٱلإِمَامِ سُتْرَةٌ لِمَنْ خَلْفَهُ

٣١٢ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ إِذَا خَرَجَ يَوْمَ ٱلْعِيدِ، أَمَرَنَا بِحَرْبَةٍ فَتُوضَعُ بَيْنَ يَدَيْهِ، فَيُصَلِّي إِلَيْهَا وَٱلنَّاسُ وَرَاءَهُ، وَكَانَ يَفْعَلُ ذَٰلِكَ فِي ٱلسَّفَرِ، فَمِنْ ثَمَّ ٱتَّخَذَهَا ٱلأُمَرَاءُ. [رواه البخاري: ٤٩٤]

312 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब ईद के दिन (नमाज़ के लिए) निकलते तो बरछे के बारे में हमें हुक्म देते। तब वह आपके सामने गाड़ दिया जाता। आप उसकी तरफ (मुंह करके) नमाज़ पढ़ाते और लोग आपके पीछे खड़े होते, सफर के दौरान भी आप ऐसा ही करते, चूनांचे (मुसलमानों के खलीफा ने इस वजह से बरछी साथ रखने की आदत अपना ली है।)

फायदे : हज़रत इब्ने उमर रज़ि. अफसोस जाहिर करते हैं कि इन

सरदारों ने बरछी बरदार तो रख लिये हैं, लेकिन नमाज़ को नजर अन्दाज कर दिया, जो इस्लाम की बहुत बड़ी निशानी है। सुतरा वो चीज है जो इमाम नमाज मे वक्त अपने सामने रखता है। अगर इसके आगे से कोई आदमी गुजर जाये तो नमाज खत्म नहीं होती।

---

٣١٣ : عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِهِمْ بِالْبَطْحَاءِ وَبَيْنَ يَدَيْهِ عَنَزَةٌ، ٱلظُّهْرَ رَكْعَتَيْنِ، وَٱلْعَصْرَ رَكْعَتَيْنِ، يَمُرُّ بَيْنَ يَدَيْهِ ٱلْمَرْأَةُ وَٱلْحِمَارُ. [رواه البخاري: ٤٩٥]

313 : अबू हुजैफा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बत्हा की वादी में लोगों को नमाज़ पढ़ाई और आपके सामने नेजा गाड़ दिया गया। आपने (सफर की वजह से) जुहर की दो रकअतें अदा कीं। इसी तरह असर की भी दो रकअतें पढ़ीं। आपके सामने से औरतें और गधे गुजर रहे थे।

फायदे : आपके सामने गुजरने का मतलब यह है कि गाड़े गये सुतरे सुतरा के आगे औरतें वगैरह गुजरती थी, जैसा कि दूसरी रिवायतों में इसकी वजाहत है। (अस्सलात **499**)

---

٦٣ - باب: قَدْرُ كَمْ يَنْبَغِي أَنْ يَكُونَ بَيْنَ ٱلْمُصَلِّي وَٱلسُّتْرَةِ

बाब **63** : नमाजी और सुतरे में फासले की मिकदार।

٣١٤ : عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ بَيْنَ مُصَلَّى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَبَيْنَ ٱلْجِدَارِ مَمَرُّ ٱلشَّاةِ. [رواه البخاري: ٤٩٦]

314: सहल रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ की जगह और सामने की दीवार के बीच इस कद्र फासला था कि एक बकरी गुजर सकती थी।

फायदे : मालूम हुआ कि नमाजी को सुतरे के करीब खड़ा होना चाहिए। एक रिवायत में नमाजी और सुतरा के बीच फासला तीन हाथ बताया गया है।

बाब 64 : नेजे की तरफ नमाज़ पढ़ना।

٦٤ - باب: الصَّلاةُ إلى العَنَزةِ

315 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब पाखाना के लिए निकलते तो मैं और एक लड़का आपके साथ जाते। हमारे पास नोकदार लकड़ी या डण्डा या नेजा होता और पानी का लोटा भी साथ ले जाते। जब आप अपनी हाजत से फारिग होते तो हम लोटा आपको दे देते।

٣١٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ إِذَا خَرَجَ لِحَاجَتِهِ، تَبِعْتُهُ أَنَا وَغُلاَمٌ، وَمَعَنَا عُكَّازَةٌ، أَوْ عَصًا، أَوْ عَنَزَةٌ، وَمَعَنَا إِدَاوَةٌ، فَإِذَا فَرَغَ مِنْ حَاجَتِهِ نَاوَلْنَاهُ ٱلإِدَاوَةَ. [رواه البخاري: ٥٠٠]

बाब 65 : खम्भे की आड़ में नमाज़ पढ़ना।

٦٥ - باب: الصَّلاةُ إلى الأُسْطُوَانَةِ

316 : सलमा बिन अकवाअ रज़ि. से रिवायत है कि वह हमेशा उस खम्भे को सामने करके नमाज़ पढ़ते, जहां कुरआन शरीफ रखा रहता था। उनसे पूछा गया कि ऐ अबू मुस्लिम! तुम इस खम्भे के करीब ही नमाज़ पढ़ने की कोशिश क्यों करते हो? उन्होंने कहा मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा है। वह कोशिश से

٣١٦ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ ٱلأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ كَانَ يُصَلِّي عِنْدَ ٱلأُسْطُوَانَةِ ٱلَّتِي عِنْدَ ٱلْمُصْحَفِ، فَقِيلَ لَهُ: يَا أَبَا مُسْلِمٍ، أَرَاكَ تَتَحَرَّى ٱلصَّلاَةَ عِنْدَ هٰذِهِ ٱلأُسْطُوَانَةِ؟ قَالَ: فَإِنِّي رَأَيْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ يَتَحَرَّى ٱلصَّلاَةَ عِنْدَهَا. [رواه البخاري: ٥٠٢]

इस खम्भे को सामने करके नमाज़ पढ़ा करते थे।

फायदे : यह हज़रत उसमान रज़ि. के दौर की बात है। जबकि कुरआन मजीद सन्दूक में महफूज करके एक खम्भे के पास रखा जाता था और इस खम्भे को उस्तवान-ए-मस्हफ कहते थे उसको उस्वा-नतुल मुहाजरीन भी कहते थे क्योंकि मुहाजरीन यहां जमा होते थे। (औनुलबारी, 1/601)

बाब 66 : अकेले नमाजी का दो खम्भों के बीच नमाज़ पढ़ना।

٦٦ - باب: اَلصَّلاَةُ بَيْنَ السَّوَارِي فِي غَيْرِ جَمَاعَةٍ

317 : इब्ने उमर रज़ि. से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कअबा में दाखिल होने की रिवायत है कि जिस वक्त बिलाल रज़ि. बैतुल्लाह से बाहर आये तो मैंने उनसे पूछा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैतुल्लाह के अन्दर क्या किया है? उन्होंने बताया कि आपने एक खम्भे को तो अपनी दायीं तरफ और एक को बायीं तरफ और तीन खम्भों को अपने पीछे कर लिया। (फिर आपने नमाज़ पढ़ी)। उस वक्त कअबा की इमारत छः खम्भों पर थी। एक रिवायत है कि आपने दो खम्भों को अपनी दायीं तरफ किया था।

٣١٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: حديثُ دُخُولِ النَّبِيِّ ﷺ الكَعْبَةَ قال: فَسَأَلْتُ بِلاَلاً حِينَ خَرَجَ: مَا صَنَعَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ؟ قَالَ: جَعَلَ عَمُودًا عَنْ يَسَارِهِ، وَعَمُودًا عَنْ يَمِينِهِ، وَثَلاثَةَ أَعْمِدَةٍ وَرَاءَهُ، وَكَانَ الْبَيْتُ يَوْمَئِذٍ عَلَى سِتَّةِ أَعْمِدَةٍ. وَفِي رِوَايَةٍ. عَمُودَيْنِ عَنْ يَمِينِهِ. [رواه البخاري: ٥٠٥]

फायदे : कुछ रिवायतों में है कि खम्भों के बीच नमाज़ पढ़ना मना है। यह उस वक्त है, जब जमाअत हो रही हो, क्योंकि ऐसा करने से सफबन्दी में खलल आता है। (औनुलबारी, 1/602)

बाब 67 : सवारी ऊंट, पेड़ और पालान की तरफ नमाज़ पढ़ना।

٦٧ - باب: الصَّلاةُ إلى الرَّاحِلَةِ وَالبعيرِ وَالشَّجَرِ وَالرَّحْلِ

318 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी सवारी को चौड़ाई में बिठा देते। फिर उसकी तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ते थे। नाफे से पूछा गया कि जब सवारियां चरने के लिए चली जातीं तो उस वक्त क्या करते थे। तो उन्होंने कहा कि आप उस पालान को सामने कर लेते और उसके आखरी या पिछले हिस्से की तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ते और इब्ने उमर रज़ि. का भी यही अमल था।

٣١٨ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهُ كَانَ يُعَرِّضُ رَاحِلَتَهُ فَيُصَلِّي إِلَيْهَا، قُلْتُ: أَفَرَأَيْتَ إِذَا هَبَّتِ ٱلرِّكَابُ؟ قَالَ: كَانَ يَأْخُذُ هٰذَا ٱلرَّحْلَ فَيُعَدِّلُهُ، فَيُصَلِّي إِلَى آخِرَتِهِ، أَوْ قَالَ مُؤَخَّرِهِ، وَكَانَ ٱبْنُ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا يَفْعَلُهُ. [رواه البخاري: ٥٠٧]

बाब 68 : चारपाई की तरफ (मुंह करके) नमाज़ पढ़ना।

٦٨ - باب: الصَّلاةُ إلى السَّرِيرِ

319 : आइशा सिद्दीका रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि तुम लोगों ने तो हमें गधों के बराबर कर दिया। हालांकि मैंने अपने आपको देखा कि चारपाई पर लेटी होती नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाते और चारपाई को (अपने और किब्ला के) बीच कर लेते। फिर नमाज़ पढ़ लेते थे। मुझे आपके सामने होना बुरा मालूम होता। इसलिए पैरों की तरफ से खिसक कर लिहाफ से बाहर हो जाती।

٣١٩ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَعَدَلْتُمُونَا بِالْكَلْبِ وَٱلْحِمَارِ؟ لَقَدْ رَأَيْتُنِي مُضْطَجِعَةً عَلَى ٱلسَّرِيرِ، فَيَجِيءُ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فَيَتَوَسَّطُ ٱلسَّرِيرَ فَيُصَلِّي، فَأَكْرَهُ أَنْ أُسَنِّحَهُ، فَأَنْسَلُّ مِنْ قِبَلِ رِجْلَيِ ٱلسَّرِيرِ حَتَّى أَنْسَلَّ مِنْ لِحَافِي. [رواه البخاري: ٥٠٨]

फायदे : हज़रत आइशा रज़ि. लोगों की इस बात पर नाराज होतीं कि औरत नमाजी के आगे से गुजर जाये तो नमाज़ टूट जाती है। जैसा कि कुत्ते और गधे के गुजरने से टूट जाती है।

(औनुलबारी, 1/604)

---

٦٩ - باب: يَرُدُّ ٱلْمُصَلِّي مَنْ مَرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ

बाब 69 : नमाजी अपने सामने से गुजरने वाले को रोकेगा।

٣٢٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدرِيِّ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: أَنَّهُ كَانَ يُصَلِّي فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ إِلَى شَيْءٍ يَسْتُرُهُ مِنَ ٱلنَّاسِ، فَأَرَادَ شَابٌ مِنْ بَنِي أَبِي مُعَيْطٍ أَنْ يَجْتَازَ بَيْنَ يَدَيْهِ، فَدَفَعَ أَبُو سَعِيدٍ فِي صَدْرِهِ، فَنَظَرَ ٱلشَّابُّ فَلَمْ يَجِدْ مَسَاغًا إِلَّا بَيْنَ يَدَيْهِ، فَعَادَ لِيَجْتَازَ، فَدَفَعَهُ أَبُو سَعِيدٍ أَشَدَّ مِنَ ٱلأُولَى، فَنَالَ مِنْ أَبِي سَعِيدٍ، ثُمَّ دَخَلَ عَلَى مَرْوَانَ، فَشَكَى إِلَيْهِ مَا لَقِيَ مِنْ أَبِي سَعِيدٍ، وَدَخَلَ أَبُو سَعِيدٍ خَلْفَهُ عَلَى مَرْوَانَ، فَقَالَ: مَا لَكَ وَلِابْنِ أَخِيكَ يَا أَبَا سَعِيدٍ؟ قَالَ: سَمِعْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ إِلَى شَيْءٍ يَسْتُرُهُ مِنَ ٱلنَّاسِ، فَأَرَادَ أَحَدٌ أَنْ يَجْتَازَ بَيْنَ يَدَيْهِ، فَلْيَدْفَعْهُ، فَإِنْ أَبَى فَلْيُقَاتِلْهُ، فَإِنَّمَا هُوَ شَيْطَانٌ). [رواه البخاري ٥٠٩]

320 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है कि वह जुमे के दिन किसी चीज को लोगों से सुतरा बना कर नमाज़ पढ़ रहे थे कि अबू मुईत के बेटों में से एक नौजवान ने उनके आगे से गुजरने की कोशिश की, अबू सईद रज़ि. ने उसके सीने पर धक्का देकर उसे रोकना चाहा। नौजवान ने चारों तरफ नजर दौड़ाई, लेकिन आगे से गुजरने के अलावा उसे कोई रास्ता न मिला। वह फिर उस तरफ से निकलने के लिए लौटा तो अबू सईद खुदरी रज़ि. ने पहले से ज्यादा जोरदार धक्का दिया। उसने इस पर अबू सईद खुदरी रज़ि. को बुरा-भला कहा। उसके बाद वह मरवान रज़ि. के पास पहुंच गया और अबू सईद रज़ि. से जो वाक्या पेश आया था, उसकी शिकायत की। अबू

सईद रज़ि. भी उसके पीछे मरवान रज़ि. के पास पहुंच गये। मरवान रज़ि. ने कहा, जनाब अबू सईद खुदरी रज़ि.! तुम्हारा और तुम्हारे भतीजे का क्या मामला है? अबू सईद रज़ि.ने फरमाया मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है कि तुम में से कोई अगर किसी चीज को लोगों से सुतरा बनाकर नमाज़ पढ़े, फिर कोई उसके सामने से गुजरने की कोशिश करे तो उसे रोके। अगर वह न रूके तो उससे लड़े, क्योंकि वह शैतान है।

फायदे : लड़ने से मुराद हथियार से कत्ल करना नहीं, बल्कि गुजरने वाले को सख्ती से रोकना है। (औनुलबारी)

बाब 70 : नमाजी के आगे से गुजरने पर सजा।

٧٠ - باب: إثْمُ ٱلمارِّ بَيْنَ يَدَيِ ٱلمُصَلِّي

321 : अबू जुहैम रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर नमाजी के सामने गुजरने वाला यह जानता हो कि उस पर किस कद्र गुनाह है तो आगे से गुजरने के बजाये वहां चालिस.... तक खड़े रहने को पसन्द करता। हदीस के रावी कहते हैं, मुझे मालूम नहीं कि चालीस दिन कहे या महीनें या साल।

٣٢١ : عَنْ أَبي جُهَيْمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَوْ يَعْلَمُ ٱلمارُّ بَيْنَ يَدَيِ ٱلمُصَلِّي مَاذَا عَلَيْهِ مِنَ الإِثْمِ، لَكَانَ أَنْ يَقِفَ أَرْبَعِينَ خَيْرًا لَهُ مِنْ أَنْ يَمُرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ). قَالَ الراوي: لاَ أَدْرِي، أَقَالَ أَرْبَعِينَ يَوْمًا، أَوْ شَهْرًا، أَوْ سَنَةً. [رواه البخاري: ٥١٠]

फायदे : एक रिवायत में चालीस साल की सराहत है, बल्कि सही इब्ने हिब्बान में सौ साल आया है। मालूम हुआ कि नमाजी के आगे से गुजरना हराम और बहुत बड़ा गुनाह है। (औनुलबारी, 1/607)

बाब 71 : सोने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ना।

٧١ - باب: الصَّلاةُ خَلفَ النَّائِمِ

322 : आइशा रज़ि.से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ते रहते और मैं (आपके सामने) बिस्तर पर चौड़ाई के बल सोई रहती और जब आप वित्र पढ़ना चाहते तो मुझे जगा लेते। मैं भी वित्र पढ़ लेती।

٣٢٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي وَأَنَا رَاقِدَةٌ، مُعْتَرِضَةٌ عَلَى فِرَاشِهِ، فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يُوتِرَ أَيْقَظَنِي فَأَوْتَرْتُ. [رواه البخاري: ٥١٢]

बाब 72 : नमाज़ के दौरान छोटी बच्ची को गर्दन पर उठा लेना।

٧٢ - باب: إِذَا حَمَلَ جَارِيَةً صَغِيرَةً عَلَى عُنُقِهِ فِي ٱلصَّلاةِ

323 : अबू कतादा अन्सारी रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उमामा रज़ि.को उठाये हुये नमाज़ पढ़ लेते थे। जो आपकी लख्ते जिगर जैनब रज़ि. और अबुल आस बिन रबी बिन अब्दे शम्स की बेटी थी। जब सज्दा करते तो उसे उतार देते और जब खड़े होते तो उसे उठा लेते।

٣٢٣ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ ٱلأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي، وَهُوَ حَامِلٌ أُمَامَةَ بِنْتَ زَيْنَبَ، بِنْتِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَهِيَ لأَبِي ٱلْعَاصِ بْنِ ٱلرَّبِيعِ بْنِ عَبْدِ شَمْسٍ، فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَهَا، وَإِذَا قَامَ حَمَلَهَا. [رواه البخاري: ٥١٦]

फायदे : मालूम हुआ कि नमाज़ के दौरान बच्चे को उठाने से नमाज़ खत्म नहीं होती। नीज इस कद्र अमल कलील नमाज के मनाफी नहीं है। (औनुलबारी, 1/609)

बाब 73 : औरत का नमाजी के बदन से गन्दगी उतार फैंकना।

٧٣ - باب: ٱلْمَرْأَةُ تَطْرَحُ عَنِ ٱلْمُصَلِّي شَيْئًا مِنَ ٱلأَذَى

324 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से मरवी है। यह हदीस (178) गुजर चुकी है, जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुरैश के लिए बद दुआ का जिक्र है। जिस दिन उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नमाज़ की हालत में (ऊंटनी की) औझरी (बच्चादानी) डाल दी तो (फातिमा रज़ि. ने उसे आप से हटाया था)। इस रिवायत के आखिर में यह भी जिक्र है। फिर उनको घसीटकर बदर के कुऐं में डाला गया। उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कुऐं वालों पर लानत की गई है।

٣٢٤ : حديث ابن مَسْعُودٍ في دعاءِ النَّبِيِّ ﷺ على قُرَيشٍ يومَ وضعوا عليه السَّلى، تقدَّم، وقال هنا في آخرِهِ: سُحِبُوا إِلَى ٱلْقَلِيبِ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (وَأُتْبِعَ أَصْحَابُ ٱلْقَلِيبِ لَعْنَةً). [رواه البخاري: ٥٢٠]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि औरत नमाजी के बदन से गन्दगी वगैरह दूर कर सकती है और ऐसा करने से नमाज़ में कोई रूकावट नहीं आती।

❖❖❖

किताबो मवाकितिस्सलात
नमाज़ों के वक़्तों का बयान

इमाम बुखारी ने किताब और बाब का एक ही उनवान रखा है। इन दोनों में फर्क यह है कि किताब में फजीलत और करामत के बारे में आम तौर पर वक्त जिक्र होंगे। जबकि बाब में उन वक्तों का जिक्र होगा, जिनमें नमाज़ पढ़ना अफजल है।

बाब 1 : नमाज़ के वक्तों और उनकी फजीलत।

١ - [باب: مَوَاقِيتُ الصَّلاَةِ وَفَضلها]

325 : अबू मसऊद अन्सारी रजि. से रिवायत है कि वह मुगीरा बिन शुअबा रजि. के पास गये और उनसे एक दिन जब वह इराक में थे, नमाज़ में कुछ देर हो गई तो अबू मसऊद रजि. ने उनसे कहा, ऐ मुगीरा रजि.! तुमने यह क्या किया? क्या आपको मालूम नहीं कि एक दिन जिब्राईल अलैहि. आये और उन्होंने नमाज़ पढ़ी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी साथ पढ़ी। फिर दूसरी नमाज़ का वक्त हुआ तो जिब्राईल अलैहि. के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

٣٢٥ : عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ ٱلأَنْصارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى ٱلْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ وقد أَخَّرَ ٱلصَّلاَةَ يَوْمًا، وَهُوَ بِالْعِرَاقِ، فَقَالَ: مَا هٰذَا يَا مُغِيرَةُ، أَلَيْسَ قَدْ عَلِمْتَ: أَنَّ جِبْرِيلَ نَزَلَ فَصَلَّى، فَصَلَّى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، ثُمَّ صَلَّى، فَصَلَّى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، ثُمَّ صَلَّى، فَصَلَّى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، ثُمَّ صَلَّى، فَصَلَّى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، ثُمَّ صَلَّى، فَصَلَّى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، ثُمَّ قَالَ: (بِهٰذَا أُمِرْتُ). [رواه البخاري: ٥٢١]

ने नमाज़ पढ़ी। फिर तीसरी नमाज़ के वक्त जिब्राईल अलैहि. के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ अदा की। फिर (चौथी नमाज़ का वक्त हुआ) तो फिर भी दोनों ने इक्ट्ठे नमाज़ अदा की, फिर (पांचवी नमाज़ के वक्त) जिब्राईल अलैहि. ने नमाज़ पढ़ी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साथ ही नमाज़ अदा की। उसके बाद आपने फरमाया कि मुझे इसका हुक्म दिया गया था।

बाब 2 : नमाज़ गुनाहों के लिए कफ्फारा है।

٢ - باب: ٱلصَّلاَةُ كَفَّارَةٌ

326 : हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम उमर रजि. के पास बैठे हुए थे तो उन्होंने पूछा कि तुम में से किसको फितनों के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान याद है? मैंने कहा, मुझे ठीक उसी तरह याद है, जिस तरह आपने फरमाया था। उमर रजि. ने फरमाया, बेशक तुम ही इस किस्म की बात करने के बारे में हिम्मत कर सकते हो। मैंने कहा कि इन्सान का वह फितना जो उसके घरबार, माल व औलाद और उसके पड़ौसियों में होता है। उसे तो नमाज रोजा, सदका खैरात, अच्छी

٣٢٦ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: فَقَالَ: أَيُّكُمْ يَحْفَظُ قَوْلَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي ٱلْفِتْنَةِ؟ قُلْتُ: أَنَا، كَمَا قَالَهُ، قَالَ: إِنَّكَ عَلَيْهِ - أَوْ عَلَيْهَا لَجَرِيءٌ، قُلْتُ: فِتْنَةُ ٱلرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ وَمَالِهِ وَوَلَدِهِ وَجَارِهِ، تُكَفِّرُهَا ٱلصَّلاَةُ وَٱلصَّوْمُ وَٱلصَّدَقَةُ وَٱلأَمْرُ وَٱلنَّهْيُ، قَالَ: لَيْسَ هٰذَا أُرِيدُ، وَلٰكِنِ ٱلْفِتْنَةُ ٱلَّتِي تَمُوجُ كَمَا يَمُوجُ ٱلْبَحْرُ، قَالَ: لَيْسَ عَلَيْكَ مِنْهَا بَأْسٌ يا أَمِيرَ ٱلْمُؤْمِنِينَ، إِنَّ بَيْنَكَ وَبَيْنَهَا بَابًا مُغْلَقًا، قَالَ: أَيُكْسَرُ أَمْ يُفْتَحُ؟ قَالَ: يُكْسَرُ، قَالَ: إِذًا لاَ يُغْلَقُ أَبَدًا، قِيلَ لِحُذَيْفَةَ: أَكَانَ عُمَرُ يَعْلَمُ ٱلْبَابَ؟ قَالَ: نَعَمْ، كَمَا أَنَّ دُونَ ٱلْغَدِ ٱللَّيْلَةَ، إِنِّي حَدَّثْتُهُ بِحَدِيثٍ لَيْسَ بِالأَغَالِيطِ. فَسُئِلَ: مَنِ ٱلْبَابُ؟ فَقَالَ: عُمَرُ. [رواه البخاري: ٥٢٥]

बातों का हुक्म और बुरी बातों से रोकना ही मिटा देता है। उमर रजि. ने फरमाया कि मैं इसके बारे में नहीं पूछना चाहता, बल्कि वह फितना जो समन्दर के मौज मारने की तरह होगा, हुजैफा रजि. ने कहा, ऐ मोमिनों के अमीर! उस फितने से आपको कोई खतरा नहीं है? क्योंकि उसके और आपके बीच एक बन्द दरवाजा है, यह दरवाजा आड़ किये हुए है। उमर रजि. ने फरमाया, बताओ, वह दरवाजा खोला जायेगा या तोड़ा जायेगा। हुजैफा रजि. ने कहा, वह तोड़ा जायेगा। इस पर उमर रजि. कहने लगे तो फिर कभी बन्द ना होगा। जब हुजैफा रजि. से पूछा गया कि क्या उमर रजि. दरवाजे को जानते थे? उन्होंने कहा, "हां जैसे आने वाले दिन से पहले रात आती है।" मैंने उनसे ऐसी हदीस बयान की है जो मुअम्मा नहीं है। हुजैफा रजि. से दरवाजे के बारे में पूछा गया तो वह कहने लगे कि यह दरवाजा खुद उमर रजि. थे।

फायदे : हजरत हुजैफा रजि. का मतलब यह था कि हजरत उमर रजि. को शहीद कर दिया जायेगा। और आपकी शहादत से फितनों का बन्द दरवाजा ऐसा खुलेगा, जो कयामत तक बन्द नहीं होगा। बिलाशुबा ऐसा ही हुआ। आपके रुख्सत होते ही तरह तरह के फितने जाहिर होने लगे।

---

327 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है कि एक आदमी ने किसी औरत का बोसा ले लिया। फिर वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर हुआ और आपसे अपना जुर्म बयान किया

٣٢٧ : عَنِ ٱبْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا أَصَابَ مِنِ ٱمْرَأَةٍ قُبْلَةً، فَأَتَى ٱلنَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرَهُ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ: ﴿وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ طَرَفَيِ ٱلنَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ ٱلَّيْلِ إِنَّ ٱلْحَسَنَـٰتِ يُذْهِبْنَ ٱلسَّيِّـَٔاتِ﴾. فَقَالَ ٱلرَّجُلُ: يَا رَسُولَ

तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाजिल फरमायी, ''ऐ पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! दिन के दोनों किनारों और रात गये नमाज़ कायम करो। बेशक नेकियाँ बुराईयों को मिटा देती हैं।'' वह शख्स कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या यह मेरे ही लिए है? आपने फरमाया बल्कि मेरी तमाम उम्मत के लिए है।

اللهِ، أَلِي هٰذَا؟ قَالَ: (لِجَمِيعِ أُمَّتِي كُلِّهِمْ). [رواه البخاري: ٥٢٦]

फायदे : आयत में जिक्र की गई बुराईयों से मुराद छोटे गुनाह हैं। क्योंकि हदीस में है कि एक नमाज़ दूसरी नमाज़ तक गुनाहों को मिटा देती है। जब तक कि वह बड़े गुनाहों से बचा रहे।

(औनुलबारी, **1/616**)

328 : इब्ने मसऊद रजि. से ही एक दूसरी रिवायत में यह इजाफा है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यह हुक्म मेरी उम्मत के हर उस आदमी के लिए है, जिसने इस पर अमल किया।

٣٢٨ : وَعَنْهُ في رواية: (لِمَنْ عمِلَ بِهَا مِنْ أُمَّتِي). [رواه البخاري: ٤٦٨٧]

फायदे : यह इजाफा किताबुत्तफसीर हदीस नम्बर **4687** में है।

बाब 3 : नमाज़ वक्त पर पढ़ने की फजीलत।

٣ - باب: فَضْلُ الصَّلَاةِ لِوَقْتِهَا

329 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है। उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि

٣٢٩ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سأَلْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ: أَيُّ ٱلْعَمَلِ أَحَبُّ إِلَى ٱللهِ؟ قَالَ: (ٱلصَّلَاةُ عَلَى

وَقْتِهَا). قَالَ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: (بِرُّ الْوَالِدَيْنِ). قَالَ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: (الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللهِ). قَالَ: حَدَّثَنِي بِهِنَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ، وَلَوِ اسْتَزَدْتُهُ لَزَادَنِي. [رواه البخاري: ٥٢٧]

वसल्लम से पूछा, अल्लाह तआला को कौनसा अमल ज्यादा पसन्द है, आपने फरमाया नमाज़ को उसके वक्त पर अदा किया जाये। इब्ने मसऊद रजि. ने पूछा उसके बाद (कौनसा)? आपने फरमाया, मां-बाप की फरमां बरदारी। इब्ने मसऊद ने पूछा, उसके बाद? आपने फरमाया, अल्लाह की राह में जिहाद करना। इब्ने मसऊद रजि. फरमाते हैं कि आपने मुझ से इसी कद्र बयान फरमाया। अगर मैं और पूछता तो ज्यादा बयान फरमाते।

फायदे : कुछ हदीसों में दूसरे कामों को अफजल करार दिया गया है। इसकी यह वजह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर शख्स की हालत और उसकी ताकत और सलाहियत देखकर उसके लिए जो काम बेहतर होता, बयान फरमाते थे।

(औनुलबारी, 1/618)

बाब 4 : पांचों नमाजें गुनाहों को मिटाने वाली हैं।

٤ - باب: الصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ كَفَّارَةٌ

330 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। आप फरमाते थे, अगर तुममें से किसी के दरवाजे पर कोई नहर हो जिसमें वह हर रोज पांच बार नहाता हो तो क्या तुम कह सकते हो कि फिर भी कुछ मैल कुचैल बाकी

٣٣٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: (أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنَّ نَهَرًا بِبَابِ أَحَدِكُمْ، يَغْتَسِلُ فِيهِ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسًا، مَا تَقُولُ: ذٰلِكَ يُبْقِي مِنْ دَرَنِهِ؟). قَالُوا: لَا يُبْقِي مِنْ دَرَنِهِ شَيْئًا، قَالَ: (فَذٰلِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ، يَمْحُو اللهُ بِهَا الْخَطَايَا). [رواه البخاري: ٥٢٨]

रहेगी। सहाबा किराम रजि. ने अर्ज किया, ऐसा करना कुछ भी मैल कुचैल नहीं छोड़ेगा। आपने फरमाया कि पांचों नमाजों की यही मिसाल है। अल्लाह तआला इन की वजह से गुनाहों को मिटा देता है।

फायदे : सही मुस्लिम की रिवायत के मुताबिक गुनाहों से मुराद छोटे गुनाह हैं, नमाज़ की वक्त पर अदायगी से इस किस्म का कोई गुनाह बाकी नहीं रहता।

बाब 5 : नमाज़ी अपने रब से मुनाजात (बात) करता है।

٥ - باب: المُصَلِّي يُنَاجِي رَبَّهُ

331 : अनस रजि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, सज्दा अच्छी तरह तसल्ली से करो और तुममें से कोई भी अपने बाजुओं को कुत्ते की तरह न बिछाये और जब थूकना चाहे तो अपने आगे और अपनी दायीं तरफ न थूके, क्योंकि वह अपने रब से बात कर रहा होता है।

٣٣١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (اعْتَدِلُوا فِي ٱلسُّجُودِ، وَلاَ يَبْسُطْ [أَحَدُكُمْ] ذِرَاعَيْهِ كَالْكَلْبِ، وَإِذَا بَزَقَ فَلاَ يَبْزُقَنَّ بَيْنَ يَدَيْهِ، وَلاَ عَنْ يَمِينِهِ، فَإِنَّهُ يُنَاجِي رَبَّهُ) [رواه البخاري: ٥٣٢]

बाब 6 : सख्त गर्मी की बिना पर जुहर की नमाज़ ठण्डे वक्त अदा करना।

٦ - باب: الإِبْرَادُ بِالظُّهْرِ مِن شِدَّةِ ٱلحَرِّ

332 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जब गर्मी ज्यादा

٣٣٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِذَا ٱشْتَدَّ ٱلحَرُّ فَأَبْرِدُوا بِالصَّلاَةِ، فَإِنَّ شِدَّةَ ٱلحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ، وَٱشْتَكَتِ

النَّارُ إِلَى رَبِّهَا، فَقَالَتْ: رَبِّ أَكَلَ بَعْضِي بَعْضًا، فَأَذِنَ لَهَا بِنَفَسَيْنِ، نَفَسٍ فِي الشِّتَاءِ وَنَفَسٍ فِي الصَّيْفِ، أَشَدُّ مَا تَجِدُونَ مِنَ الْحَرِّ، وَأَشَدُّ مَا تَجِدُونَ مِنَ الزَّمْهَرِيرِ). [رواه البخاري: ٥٣٦، ٥٣٧]

हो तो नमाज़ (जुहर) ठण्डे वक्त पढ़ा करो। क्योंकि गर्मी की तेजी जहन्नम के जोश मारने से होती है। आग ने अपने रब से शिकायत की, "ऐ मेरे रब! मेरे एक हिस्से ने दूसरे को खा लिया तो अल्लाह ने उसे दो बार सांस लेने की इजाजत दी, एक सर्दी में, दूसरी गर्मी में। इस वजह से गर्मी के मौसम में तुम्हें सख्त गर्मी और सर्दी के मौसम में तुम्हें सख्त सर्दी महसूस होती है।"

फायदे : ठण्डा करने से मकसूद नमाज़ का जवाल के बाद अदा करना है। यह मतलब नहीं है कि साया के एक मिस्ल होने का इन्तजार किया जाये। क्योंकि उस वक्त तो असर की नमाज़ का वक्त शुरू हो जाता है। नीज जहन्नम की शिकायत को हकीकत में मानना चाहिए। इसकी तावील करना दुरूस्त नहीं, क्योंकि अल्लाह तआला अपनी मखलूक में से जिसे चाहे, बोलने की ताक़त से नवाज देता है।

---

٣٣٣ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ الْغِفَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَأَرَادَ الْمُؤَذِّنُ أَنْ يُؤَذِّنَ لِلظُّهْرِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَبْرِدْ). ثُمَّ أَرَادَ أَنْ يُؤَذِّنَ، فَقَالَ لَهُ: (أَبْرِدْ). حَتَّى رَأَيْنَا فَيْءَ التُّلُولِ. [رواه البخاري: ٥٣٩]

333 : अबू जर गिफारी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक सफर में थे। अजान देने वाले ने जुहर की अजान देना चाही तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, वक्त को जरा ठण्डा हो जाने दो। फिर उसने अजान देने का इरादा किया तो आपने फिर फरमाया, वक्त को जरा ठण्डा हो जाने दो। यहां तक कि हमने टीलों का साया देखा।

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस पर यूँ उनवान कायम किया है, ''सफर के दौरान जुहर को ठण्डे वक्त में अदा करना'' इससे मुराद आखिर वक्त अदा करना नहीं है।

बाब 7 : जुहर का वक्त सूरज ढलने पर है।

٧ - باب: وَقْتُ ٱلظُّهْرِ عِنْدَ ٱلزَّوَالِ

334 : अनस रजि. से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सूरज ढ़लने पर बाहर तशरीफ लाये, जुहर की नमाज़ पढ़ कर मिम्बर पर खड़े हुये तो कयामत का जिक्र करते हुए फरमाया, उसमें बड़े बड़े किस्से होंगे। फिर आपने फरमाया, जो शख्स कुछ पूछना चाहता है, पूछ ले। जब तक मैं इस मकाम में हूँ, मुझ से जो बात पूछोगे, बताऊंगा। लोग कसरत से रोने लगे। लेकिन आप बार बार यही फरमाते, मुझ से पूछो तो अब्दुल्लाह बिन हुजाफा सहमी रजि. खड़े हो गये, उन्होंने पूछा मेरा बाप कौन है? आपने फरमाया, तुम्हारा बाप हुजाफा है। फिर आपने फरमाया, मुझ से पूछो। आखिरकार उमर रजि. (अदब से) दो जानों बैठकर अर्ज करने लगे

٣٣٤ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ خَرَجَ حِينَ زَاغَتِ ٱلشَّمْسُ، فَصَلَّى ٱلظُّهْرَ، فَقَامَ عَلَى ٱلْمِنْبَرِ، فَذَكَرَ ٱلسَّاعَةَ، فَذَكَرَ أَنَّ فِيهَا أُمُورًا عِظَامًا، ثُمَّ قَالَ: (مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَسْأَلَ عَنْ شَيْءٍ فَلْيَسْأَلْ، فَلَا تَسْأَلُونِي عَنْ شَيْءٍ إِلَّا أَخْبَرْتُكُمْ بِهِ، مَا دُمْتُ فِي مَقَامِي هٰذَا). فَأَكْثَرَ ٱلنَّاسُ فِي ٱلْبُكَاءِ، وَأَكْثَرَ أَنْ يَقُولَ: (سَلُونِي). فَقَامَ عَبْدُ ٱللهِ بْنُ حُذَافَةَ ٱلسَّهْمِيُّ فَقَالَ: مَنْ أَبِي؟ قَالَ: (أَبُوكَ حُذَافَةُ). ثُمَّ أَكْثَرَ أَنْ يَقُولَ: (سَلُونِي). فَبَرَكَ عُمَرُ عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَقَالَ: رَضِينَا بِٱللهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا، فَسَكَتَ. ثُمَّ قَالَ: (عُرِضَتْ عَلَيَّ ٱلْجَنَّةُ وَٱلنَّارُ آنِفًا، فِي عُرْضِ هٰذَا ٱلْحَائِطِ، فَلَمْ أَرَ كَٱلْخَيْرِ وَٱلشَّرِّ). قَدْ تقدّم بعض هذا الحديث في كتاب العِلْمِ من رواية أبي موسى لكن في هذه الرواية زيادةٌ ومغايرة ألفاظٍ [رواه البخاري: ٥٤٠]

कि हम अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने पर राजी हैं। इस पर आप खामोश हो गये। फिर फरमाया, अभी दीवार के इस कोने में मेरे सामने जन्नत और दोजख को पेश किया गया तो मैंने जन्नत की तरह उमदा और दोजख की तरह बुरी कोई चीज नहीं देखी। इस हदीस का कुछ हिस्सा (रकम 81) किताबुल इल्म में अबू मूसा की रिवायत में बयान हो चुका है। लेकिन अलफाज की ज्यादती और कुछ तब्दीली की वजह से यहां दोबारा जिक्र किया गया है।

फायदे : हजरत अब्दुल्लाह बिन हुजाफा रजि. को लोग किसी और का बेटा कहते थे, लिहाजा उन्होंने सही हकीकत मालूम करना चाही। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवाब से वह बहुत खुश हुये।

---

٣٣٥ : عَنْ أَبِي بَرْزَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي ٱلصُّبْحَ وَأَحَدُنَا يَعْرِفُ جَلِيسَهُ، وَيَقْرَأُ فِيهَا مَا بَيْنَ ٱلسِّتِّينَ إِلَى ٱلمِائَةِ وَيُصَلِّي ٱلظُّهْرَ إِذَا زَالَتِ ٱلشَّمْسُ، وَٱلعَصْرَ وَأَحَدُنَا يَذْهَبُ إِلَى أَقْصَى ٱلمَدِينَةِ فَيَرْجِعُ وَٱلشَّمْسُ حَيَّةٌ، وَنَسِيَ الرَّاوِي مَا قَالَ فِي ٱلمَغْرِبِ، وَلَا يُبَالِي بِتَأْخِيرِ ٱلعِشَاءِ إِلَى ثُلُثِ ٱللَّيْلِ، ثُمَّ قَالَ: إِلَى شَطْرِ ٱللَّيْلِ. [رواه البخاري: ٥٤١]

335 : अबू बरजा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फजर की नमाज ऐसे वक्त पढ़ते कि आदमी अपने करीब वाले को पहचान लेता और आप जुहर उस वक्त पढ़ते जब सूरज ढ़ल जाता और असर ऐसे वक्त पढ़ते कि उसके बाद हम से कोई मदीना के आखरी किनारे पर वाकेअ अपने घर में वापिस जाता। लेकिन सूरज की धूप अभी तेज होती। अबू बरजा रजि. ने मगरिब के बारे में

जो फरमाया, वह रावी भूल गया और तिहाई रात तक इशा की नमाज पढ़ते और इशा की देरी में आपको कोई परवाह न होती। फिर अबू बरजा रजि. ने (दोबारा) कहा, आधी रात गुजरने पर पढ़ते थे।

बाब 8 : जुहर की नमाज को असर के वक्त तक लेट करना।

٨ - باب: تَأخِيرُ ٱلظُّهْرِ إِلَى ٱلعَصْرِ

336 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना मुनव्वरा में जुहर और असर की आठ रकअतें और मगरिब, इशा की सात रकअतें (एक साथ) पढ़ी।

٣٣٦ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِالمَدِينَةِ سَبْعًا وَثَمَانِيًا: ٱلظُّهْرَ وَٱلْعَصْرَ، وَٱلْمَغْرِبَ وَٱلْعِشَاءَ. [رواه البخاري: ٥٤٣]

फायदे : दीगर सही रिवायतों में सफर, डर और बारिश वगैरह के न होने का बयान मौजूद है। मुमकिन है कि किसी काम में लगे होने की वजह से नमाजों को जमा किया हो। मेरा अपना रूझान इस तरफ है कि तकरीर और इरशाद में लगे रहने की वजह से आपने ऐसा किया, जैसा कि मुस्लिम की रिवायत में इसका इशारा मिलता है। इमाम बुखारी और नवाब सिद्दीक हसन खान का रूझान जमा सूरी की तरफ है।

बाब 9 : असर का वक्त।

٩ - باب: وَقْتُ ٱلْعَصْرِ

337 : अबू हुरैरा रजि. की वही हदीस (335) जो नमाजों के बारे में पहले गुजर चुकी है, इस रिवायत में इशा के जिक्र के बाद यह

٣٣٧ : حديثُ أبي بَرْزَةَ رضي الله عنه في ذِكر الصَّلواتِ تقدَّم قريبًا وقال في هذهِ الرِّواية لما ذكرَ العِشاء: وَكانَ يَكْرَهُ ٱلنَّوْمَ قَبْلَهَا

وَٱلحَدِيثَ بَعْدَهَا. [رواه البخاري: ٥٤٧]

इजाफा है कि आप इशा से पहले सोने और उसके बाद बातें करने को नापसन्द ख्याल करते थे।

फायदे : इशा की नमाज के बाद दुनियावी बातों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नापसन्द फरमाया है। अलबत्ता दीनी बातें की जा सकती हैं।

٣٣٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي ٱلعَصْرَ، ثُمَّ يَخْرُجُ ٱلإِنْسَانُ إِلَى بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ، فَيَجِدُهُمْ يُصَلُّونَ ٱلعَصْرَ. [رواه البخاري: ٥٤٨]

338 : अनस रजि. से रिवायत है। उन्होंने फरमाया कि हम (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ) असर की नमाज़ पढ़ लेते, फिर कोई शख्स कबीला अम्र बिन औफ तक जाता तो उन्हें असर की नमाज पढ़ता हुआ पाता।

फायदे : इन रिवायतों से यही मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक जमाने में असर की नमाज अव्वल वक्त एक मिस्ल साया होने पर अदा की जाती थी। (औनुलबारी, 1/631)

٣٣٩ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُصَلِّي ٱلعَصْرَ وَٱلشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ حَيَّةٌ، فَيَذْهَبُ ٱلذَّاهِبُ إِلَى ٱلعَوَالِي، فَيَأْتِيهِمْ وَٱلشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ، وَبَعْضُ ٱلعَوَالِي مِنَ ٱلمَدِينَةِ عَلَى أَرْبَعَةِ أَمْيَالٍ، أَوْ نَحْوِهِ. [رواه البخاري: ٥٥٠]

339 : अनस रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम असर की नमाज उस वक्त पढ़ते थे, जब सूरज बुलन्द और तेज होता और अगर कोई अवाली तक जाता तो उनके पास ऐसे वक्त पहुंच जाता कि सूरज अभी बुलन्द होता

था और अवाली की कुछ जगहें मदीना से कम और ज्यादा चार मील पर आबाद थी।

बाब 10 : (उस शख्स का गुनाह) जिससे असर की नमाज जाती रहे।

١٠ - باب: مَنْ فَاتَتْهُ الْعَصْرُ

340 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिस शख्स से असर की नमाज छूट गयी, गोया उसका सब घर-बार माल और दौलत लूट गयी।

٣٤٠ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (ٱلَّذِي تَفُوتُهُ صَلاَةُ ٱلْعَصْرِ، كَأَنَّما وُتِرَ أَهْلَهُ وَمَالَهُ). [رواه البخاري:

फायदे : यह अजाब बगैर जानबूझ कर असर की नमाज़ छूट जाने के बारे में है। जबकि आने वाला बाब असर की नमाज छोड देने की वईद पर मुशतमिल है।

बाब 11 : जिसने असर की नमाज (जानबूझकर) छोड़ दी।

١١ - باب: مَنْ تَرَكَ الْعَصْرَ

341 : बुरैदा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने एक अबर वाले दिन में फरमाया कि असर की नमाज़ जल्दी पढ़ लो। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जिसने असर की नमाज़ छोड़ दी, तो यकीनन उसके नेक अमल बेकार हो गये।

٣٤١ : عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ فِي يَوْمٍ ذِي غَيْمٍ: بَكِّرُوا بِصَلاَةِ ٱلْعَصْرِ، فَإِنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (مَنْ تَرَكَ صَلاَةَ ٱلْعَصْرِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ). [رواه البخاري: ٥٥٣]

फायदे : आमाल के बेकार होने का मतलब यह है कि अमलों के सवाब से महरूम रहेगा, यह सख्त धमकी इसलिए है कि असर की नमाज का खासतौर पर ख्याल रखा जाये।

باب 12 : असर की नमाज की फजीलत।

١٢ - باب: فَضْلُ صَلاَةِ العَصْرِ

342 : जरीर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास थे कि आपने एक रात चांद की तरफ देखकर फरमाया, बेशक तुम अपने रब को इस तरह देखोगे, जैसे इस चांद को देख रहे हो। उसे देखने में तुम्हें कोई दिक्कत न होगी। लिहाजा अगर तुम (पाबन्दी) कर सकते हो कि सूरज निकलने और डूबने से पहले की नमाजों पर (पाबन्दी करो और शैतान से) कमजोर न हो जाओ तो बेहतर है। फिर आपने यह तिलावत फरमाई ''सूरज निकलने और उसके डूबने से पहले अपने रब की हम्द और बड़ाई के साथ उसकी तस्बीह करते रहो।''

٣٤٢ : عَنْ جَرِيرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَنَظَرَ إِلَى ٱلْقَمَرِ لَيْلَةً فَقَالَ: (إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ، كَمَا تَرَوْنَ هٰذَا ٱلْقَمَرَ، لاَ تُضَامُونَ فِي رُؤْيَتِهِ، فَإِنِ ٱسْتَطَعْتُمْ أَنْ لاَ تُغْلَبُوا عَلَى صَلاَةٍ قَبْلَ طُلُوعِ ٱلشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا فَافْعَلُوا). ثُمَّ قَرَأَ: ﴿وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ ٱلشَّمْسِ وَقَبْلَ ٱلْغُرُوبِ﴾ [رواه البخاري: ٥٥٤]

343 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कुछ फरिश्ते रात को और कुछ दिन को तुम्हारे पास लगातार आते हैं और यह तमाम फज्र और असर की नमाज़ में जमा हो जाते हैं। फिर जो फरिश्ते रात को तुम्हारे पास आते हैं, जब वह आसमान पर जाते हैं तो उनसे उनका रब पूछता है, हालांकि वह खुद अपने बन्दों को

٣٤٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ صَلَّى ٱللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: (يَتَعَاقَبُونَ فِيكُمْ: مَلاَئِكَةٌ بِاللَّيْلِ وَمَلاَئِكَةٌ بِالنَّهَارِ، وَيَجْتَمِعُونَ فِي صَلاَةِ ٱلْفَجْرِ وَصَلاَةِ ٱلْعَصْرِ، ثُمَّ يَعْرُجُ ٱلَّذِينَ بَاتُوا فِيكُمْ، فَيَسْأَلُهُمْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ: كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِي؟ فَيَقُولُونَ: تَرَكْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ، وَأَتَيْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ). [رواه البخاري: ٥٥٥]

खूब जानता है कि तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा है? वह जवाब देते हैं कि हमने उन्हें नमाज़ पढ़ते छोड़ा और जब हम उनके पास पहुंचे थे तो भी वह नमाज़ पढ़ रहे थे।

बाब 13 : जिस शख्स ने सूरज डूबने से पहले असर की एक रकअत पा ली।

١٣ - باب: مَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً مِن الْعَصرِ قَبلَ الْغُرُوب

344 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुममें से कोई सूरज डूबने से पहले असर की एक रकअत पा ले तो, उसे चाहिए कि अपनी नमाज़ पूरी कर ले और जो कोई सूरज निकलने से पहले फज्र की एक रकअत पा ले तो उसे भी चाहिए कि अपनी नमाज़ पूरी कर ले।

٣٤٤ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا أَدْرَكَ أَحَدُكُمْ سَجْدَةً مِنْ صَلاَةِ ٱلْعَصْرِ، قَبْلَ أَنْ تَغْرُبَ ٱلشَّمْسُ، فَلْيُتِمَّ صَلاَتَهُ، وَإِذَا أَدْرَكَ سَجْدَةً مِنْ صَلاَةِ ٱلصُّبْحِ، قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ ٱلشَّمْسُ، فَلْيُتِمَّ صَلاَتَهُ). [رواه البخاري: ٥٥٦]

फायदे : इस पर तमाम इमामों का इत्तिफाक है। लेकिन कुछ लोगों ने कहा है कि असर की नमाज़ तो सही है लेकिन फज्र की नमाज़ सही न होगी। उनकी यह बात सही हदीस के खिलाफ है।

345 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना कि तुम्हारा (दीन

٣٤٥ : عَنْ عبدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّمَا بَقَاؤُكُمْ فِيمَا سَلَفَ قَبْلَكُمْ مِنَ ٱلأُمَمِ، كَمَا بَيْنَ

صَلاَةِ ٱلْعَصْرِ إِلَى غُرُوبِ ٱلشَّمْسِ، أُوتِيَ أَهْلُ ٱلتَّوْرَاةِ ٱلتَّوْرَاةَ، فَعَمِلُوا حَتَّى إِذَا ٱنْتَصَفَ ٱلنَّهَارُ عَجَزُوا، فَأُعْطُوا قِيرَاطًا قِيرَاطًا، ثُمَّ أُوتِيَ أَهْلُ ٱلإِنْجِيلِ الإِنْجِيلَ، فَعَمِلُوا إِلَى صَلاَةِ ٱلْعَصْرِ ثُمَّ عَجَزُوا، فَأُعْطُوا قِيرَاطًا قِيرَاطًا، ثُمَّ أُوتِينَا ٱلْقُرْآنَ، فَعَمِلْنَا إِلَى غُرُوبِ ٱلشَّمْسِ، فَأُعْطِينَا قِيرَاطَيْنِ قِيرَاطَيْنِ، فَقَالَ أَهْلُ ٱلْكِتَابَيْنِ: أَيْ رَبَّنَا، أَعْطَيْتَ هٰؤُلاَءِ قِيرَاطَيْنِ قِيرَاطَيْنِ، وَأَعْطَيْتَنَا قِيرَاطًا قِيرَاطًا، وَنَحْنُ كُنَّا أَكْثَرَ عَمَلًا؟ قَالَ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ: هَلْ ظَلَمْتُكُمْ مِنْ أَجْرِكُمْ مِنْ شَيْءٍ؟ قَالُوا: لاَ، قَالَ: فَهُوَ فَضْلِي أُوتِيهِ مَنْ أَشَاءُ). [رواه البخاري: ٥٥٧]

और दुनिया में) रहना पहली उम्मतों के ऐतबार से ऐसा है, जैसे असर की नमाज से सूरज डूबने तक, तौरात वालों को तौरात दी गई। उन्होंने उस पर आधे दिन तक काम किया और थक गये तो उन्हें एक एक कीरात दिया गया। फिर इन्जील वालों को इन्जील दी गई जो असर की नमाज़ तक काम करके थक गये। तो उन्हें भी एक एक कीरात दिया गया। उसके बाद हमें कुरआन दिया गया तो हमने सूरज डूबने तक काम किया, इस पर हमें दो दो कीरात दिये गये। पस उन दोनों किताब वालों ने कहा, ऐ हमारे रब तूने मुसलमानों को दो-दो कीरात दिये और हमें एक एक कीरात दिया। हालांकि हमने इनसे ज्यादा काम किया है। अल्लाह तआला ने फरमाया, क्या मैंने मजदूरी देने में तुम पर कोई ज्यादती की है? उन्होंने अर्ज किया ''नहीं'' तो अल्लाह ने फरमाया, फिर यह मेरा फज्ल है, जिसे चाहता हूँ देता हूँ।

फायदे : कुछ वक्तों में किसी काम के एक हिस्से पर पूरी मजदूरी मिल जाती है। इसी तरह अगर कोई फज्र या असर की नमाज की एक रकअत पा ले, उसे अल्लाह बरवक्त पूरी नमाज़ अदा करने का सवाब देता है। (औनुलबारी, 1/644)

١٤ - باب: وَقْتُ الْمَغْرِبِ

बाब 14 : मगरीब की नमाज का वक्त।

٣٤٦ : عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي الْمَغْرِبَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَيَنْصَرِفُ أَحَدُنَا، وَإِنَّهُ لَيُبْصِرُ مَوَاقِعَ نَبْلِهِ. [رواه البخاري: ٥٥٩]

346. राफे बिन खदीज रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मगरीब की नमाज़ पढ़ते थे और जब हममें से कोई वापस जाता (और तीर फैकंता) तो वह तीर के गिरने की जगह को देख लेता।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि सूरज डूबने के बाद नमाज़ की अदायगी में देर नहीं करनी चाहिए। दूसरी हदीसों से यह भी साबित होता है कि सहाबा-ए-किराम रजि. मगरिब की अजान के बाद दो रकअत भी पढ़ते थे और फरागत के बाद तीर अन्दाजी करते। उस वक्त इतना उजाला रहता कि अपने तीर गिरने की जगह को देख लेते। (औनुलबारी, 1/645)

---

٣٤٧ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضيَ الله عنهما قال: كان النبيُّ ﷺ يُصَلِّي الظُّهْرَ بِالهَاجِرَةِ، وَالْعَصْرَ وَالشَّمْسُ نَقِيَّةٌ، وَالْمَغْرِبَ إِذَا وَجَبَتْ، وَالْعِشَاءَ أَحْيَانًا وَأَحْيَانًا، إِذَا رَآهُمُ اجْتَمَعُوا عَجَّلَ، وَإِذَا رَآهُمْ أَبْطَؤُوا أَخَّرَ، وَالصُّبْحَ - كَانُوا، أَوْ - كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّيهَا بِغَلَسٍ. [رواه البخاري: ٥٦٠]

347 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुहर की नमाज़ ठीक दोपहर को पढ़ते थे और असर की ऐसे वक्त जब सूरज साफ और तेज होता और मगरिब की जब सूरज डूब जाता और इशा की कभी किसी वक्त और कभी किसी वक्त। जब आप देखते कि लोग जमा हो गये, तो जल्द पढ़ लेते और अगर

लोग देर से जमा होते तो देर से पढ़ते और सुबह की नमाज़ आप या सहाबा-ए-किराम अन्धेरे में पढ़ते।

बाब 15: मगरिब को इशा कहने की कराहत (नफरत)

١٥ - باب: مَنْ كَرِهَ أَنْ يُقالَ لِلْمَغْرِبِ ٱلْعِشاءُ

348 : अब्दुल्ला रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐसा न हो कि मगरिब की नमाज के नाम के लिए देहाती लोगों का मुहावरा तुम्हारी ज़बानों पर चढ़ जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि देहाती मगरिब को इशा कहते थे।

٣٤٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ المُزَنِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (لاَ تَغْلِبَنَّكُمُ ٱلأَعْرَابُ عَلَى ٱسْمِ صَلاَتِكُمُ ٱلمَغْرِبِ). قَالَ: وَتَقُولُ ٱلأَعْرَابُ: هِيَ ٱلْعِشَاءُ. [رواه البخاري: ٥٦٣]

फायदे : देहाती लोग मगरिब की नमाज को इशा और इशा की नमाज को अत्मा (अंधेरे) से याद करते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिदायत फरमाई कि इन्हें मगरिब और इशा के नाम से ही पुकारा जाये। अगरचे बाज मौकों पर इशा की नमाज को अंधेरे की नमाज भी कहा गया है, इसलिए इसे जाइज होने का दर्जा तो दिया जा सकता है, मगर बेहतर यह है कि इसे इशा ही के लफ्ज से याद किया जाये। क्योंकि कुरआन मजीद में इसके लिए यही नाम इस्तेमाल हुआ है।

बाब 16 : इशा की नमाज की फजीलत।

١٦ - باب: فَضْلُ ٱلْعِشَاءِ

349 : आइशा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक

٣٤٩ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَعْتَمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لَيْلَةً بِالْعِشَاءِ، وَذٰلِكَ قَبْلَ أَنْ يَفْشُوَ

ٱلإِسْلاَمُ، فَلَمْ يَخْرُجْ حَتَّى قَالَ عُمَرُ: نَامَ ٱلنِّسَاءُ وَٱلصِّبْيَانُ، فَخَرَجَ فَقَالَ لأَهْلِ ٱلْمَسْجِدِ: (مَا يَنْتَظِرُهَا أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ ٱلأَرْضِ غَيْرُكُمْ).
[رواه البخاري: ٥٦٦]

रात इशा की नमाज में देर कर दी। यह वाक्या इस्लाम के फैलने से पहले का है। आप अभी घर से तशरीफ नहीं लाये थे कि उमर रजि. ने आकर अर्ज किया कि औरतें और बच्चे सो रहे हैं। तब आप बाहर तशरीफ लाये और फरमाया, जमीन वालों में तुम्हारे अलावा कोई भी इस नमाज़ का इन्तिजार करने वाला नहीं है।

फायदे : मालूम हुआ कि इशा की नमाज में देर करना एक पसन्दीदा अमल है। खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तिहाई रात गुजरने पर इशा पढ़ने की ख्वाहिश जाहिर की।

٣٥٠ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أَنَا وَأَصْحَابِي ٱلَّذِينَ قَدِمُوا مَعِي فِي ٱلسَّفِينَةِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ نُزُولًا فِي بَقِيعِ بُطْحَانَ، وَٱلنَّبِيُّ ﷺ بِالْمَدِينَةِ، فَكَانَ يَتَنَاوَبُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ عِنْدَ صَلاَةِ ٱلْعِشَاءِ كُلَّ لَيْلَةٍ نَفَرٌ مِنْهُمْ، فَوَافَقْنَا ٱلنَّبِيَّ عَلَيْهِ ٱلسَّلاَمُ أَنَا وَأَصْحَابِي، وَلَهُ بَعْضُ ٱلشُّغْلِ فِي بَعْضِ أَمْرِهِ، فَأَعْتَمَ بِالصَّلاَةِ حَتَّى ٱبْهَارَّ ٱللَّيْلُ، ثُمَّ خَرَجَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فَصَلَّى بِهِمْ، فَلَمَّا قَضَى صَلاَتَهُ قَالَ لِمَنْ حَضَرَهُ: (عَلَى رِسْلِكُمْ، أَبْشِرُوا، إِنَّ مِنْ نِعْمَةِ ٱللهِ عَلَيْكُمْ، أَنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ مِنَ ٱلنَّاسِ يُصَلِّي هٰذِهِ ٱلسَّاعَةَ غَيْرُكُمْ). أَوْ قَالَ: (مَا صَلَّى هٰذِهِ ٱلسَّاعَةَ أَحَدٌ غَيْرُكُمْ). لاَ يَدْرِي

350 : अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं और मेरे साथी जो कश्ती में मेरे साथ थे, बुत्हा की वादी में ठहरे हुये थे, जबकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा में ठहरे हुए थे। तो उनसे एक गिरोह बारी बारी हर रात इशा की नमाज़ के वक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर होता था। इत्तेफाक से एक बार हम सब यानी मैं और मेरे साथी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गये। चूंकि आप किसी

أيَّ الكَلِمَتَيْنِ قَالَ، قَالَ أَبُو مُوسَى: فرَجَعْنَا، فَرْحَى بِمَا سَمِعْنَا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٥٦٧]

काम में लगे हुए थे। इसलिए इशा की नमाज़ में आपने देर की। यहां तक कि आधी रात गुजर गयी। उसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ लाये और लोगों को नमाज़ पढ़ायी। नमाज से फारिग होने के बाद मौजूद लोगों से फरमाया कि इज्जत और सुकून के साथ बैठे रहो और खुश हो जाओ क्योंकि अल्लाह तआला का तुम पर एहसान है कि तुम्हारे सिवा कोई आदमी इस वक्त नमाज़ नहीं पढ़ता या इस तरह फरमाया कि तुम्हारे अलावा इस वक्त किसी ने नमाज़ नहीं पढ़ी। मालूम नहीं, इन दोनों जुम्लों में से कौनसा जुम्ला आपने इरशाद फरमाया। अबू मूसा रजि. फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह बात सुनकर हम खुशी खुशी वापिस लौट आये।

١٧ - باب: النَّوْمُ قَبْلَ العِشَاءِ لِمَن غُلِبَ

बाब 17 : अगर नींद का गल्बा हो तो इशा से पहले सो जाना।

٣٥١ : حديث: أعتم رسول الله ﷺ بالعشاء وناداهُ عمر تقدَّم، وفي هذا زيادةٌ، قالت: وَكَانُوا يُصَلُّونَ فِيمَا بَيْنَ أَنْ يَغِيبَ الشَّفَقُ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ الأَوَّلِ.

وفي روايةٍ عن ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُما قَالَ: فَخَرَجَ نَبِيُّ اللهِ ﷺ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ الآنَ، يَقْطُرُ رَأْسُهُ مَاءً، وَاضِعًا يَدَهُ عَلَى رَأْسِهِ، فَقَالَ: (لَوْلاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي لأَمَرْتُهُمْ أَنْ يُصَلُّوهَا هٰكَذَا) [رواه البخاري: ٥٧١]

351: आइशा रजि. से जो हदीस (नम्बर 349) पहले बयान हुई है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशा की नमाज में इस कदर देर कर दी कि उमर रजि. ने आकर आपसे अर्ज किया (औरतें और बच्चे सो रहे हैं) यहां इस रिवायत में इस कदर इजाफा है कि आइशा रजि. ने फरमाया,

सहाबा-ए-किराम रजि. सुर्खी गायब होने के बाद रात की पहली तिहाई तक (किसी वक्त भी) इस नमाज़ को पढ़ लेते थे। इब्ने अब्बास रजि. से एक रिवायत है कि फ़िर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निकले जैसे मैं उस वक्त आपकी तरफ देख रहा हूँ कि आपके सर से पानी टपक रहा है। जबकि आप अपना हाथ सर पर रखे हुए हैं। आपने फरमाया, अगर मैं अपनी उम्मत पर भारी न समझता तो हुक्म देता कि इशा की नमाज़ इस तरह (इस वक्त) पढ़ा करें।

फायदे : इस हदीस का उनवान से इस तरह ताल्लुक है कि सहाबा किराम देर की वजह से नमाज़ से पहले सो गये थे। ऐसे हालात में इशा की नमाज से पहले सोना जाईज हे। शर्त यह है कि इशा की नमाज जमाअत के साथ अदा की जा सके।

---

٣٥٢ : وَحكى ٱبْنُ عَبَّاسٍ: كَيْفَ وَضَعَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ عَلَى رَأْسِهِ يَدَهُ: فَبَدَّدَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ شَيْئًا مِنْ تَبْدِيدٍ، ثُمَّ وَضَعَ أَطْرَافَ أَصَابِعِهِ عَلَى قَرْنِ ٱلرَّأْسِ، ثُمَّ ضَمَّهَا يُمِرُّهَا كَذَلِكَ عَلَى ٱلرَّأْسِ، حَتَّى مَسَّتْ إِبْهَامُهُ طَرَفَ الأُذُنِ، مِمَّا يَلِي ٱلْوَجْهَ عَلَى ٱلصُّدْغِ وَنَاحِيَةَ ٱللِّحْيَةِ، لاَ يُقَصِّرُ وَلاَ يَبْطُشُ إِلَّا كَذَلِكَ. [رواه البخاري: ٥٧١]

352 : इब्ने अब्बास रजि. से (सर पर हाथ रखने की कैफियत भी) नकल की गई है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ सर पर रखा और अपनी उंगलियों को फैलाकर के उनके सिरों को सर के एक तरफ रखा। फिर उन्हें मिलाकर सर पर यूँ फैरने लगे कि आपका अंगूठा कान की इस लो से जो चेहरे के करीब है और दाढ़ी से जा लगा, न सुस्ती की और न जल्दी बल्कि इस तरह (जैसा कि मैंने बतलाया है)

١٨ - باب: وَقْتُ العِشَاءِ إلى نِصْفِ اللَّيْلِ

बाब 18 : इशा का वक्त आधी रात तक है।

٣٥٣ : وروى أَنَسٌ فقَالَ فِيهِ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى وَبِيصِ خَاتَمِهِ لَيْلَتَئِذٍ. [رواه البخاري: ٥٧٢]

353 : अनस रजि. से भी यह हदीस मरवी है। और इसमें उन्होंने इतना ज्यादा फरमाया कि आपकी अंगूठी की चमक (का मंजर मेरी आंखों में इस तरह है) जैसे मैं इस रात भी देख रहा हूँ।

फायदे : इस रिवायत में यह अलफाज भी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार इशा की नमाज को आधी रात तक टाल दिया। (मवाकीतुस्सलात 572)

---

١٩ - باب: فَضْلُ صَلاةِ الفَجْرِ

बाब 19 : फज्र की नमाज की फजीलत।

٣٥٤ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ صَلَّى ٱلْبَرْدَيْنِ دَخَلَ ٱلْجَنَّةَ). [رواه البخاري: ٥٧٤]

354 : अबू मूसा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो शख्स दो ठण्डी नमाजें वक्त पर पढ़ेगा वह जन्नत में दाखिल होगा।

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में खुलासा है कि फज्र और असर की नमाज़ मुराद है और यह दोनों ठण्डे वक्त में अदा की जाती हैं। (औनुलबारी, 1/655)

---

٢٠ - باب: وَقْتُ الْفَجْرِ

बाब 20 : फज्र की नमाज का वक्त।

٣٥٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ: أَنَّهُمْ تَسَحَّرُوا مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ

355 : अनस रजि. से रिवायत है कि उनसे जैद बिन साबित रजि. ने हदीस बयान की कि सहाबा

-ए-किराम रजि. ने एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सहरी खाई, फिर नमाज़ के लिए खड़े हो गये, मैंने उनसे पूछा कि (सहरी और नमाज़) इन दोनों कामों में कितना वक्त था, उसने जवाब दिया कि पचास या साठ आयतों की तिलावत के बराबर।

ثُمَّ قَامُوا إِلَى الصَّلاَةِ. قُلْتُ: كَمْ كَانَ بَيْنَهُمَا؟ قَالَ قَدْرُ خَمْسِينَ أَوْ سِتِّينَ، يَعْنِي آيَةً. [رواه البخاري: ٥٧٥]

फायदे : इस हदीस से यह भी साबित हुआ कि सहरी देर से खाना सुन्नत है। जो लोग रात ही में खाकर सो जाते हैं, वह सुन्नत के खिलाफ करते हैं।

356 : सहल बिन सअद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं अपने घर वालों के साथ बैठ कर सहरी खाता, फिर मुझे जल्दी पड़ जाती कि मैं फज्र की नमाज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अदा करूं।

٣٥٦ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أَتَسَحَّرُ فِي أَهْلِي، ثُمَّ يَكُونُ سُرْعَةٌ بِي، أَنْ أُدْرِكَ صَلاَةَ الْفَجْرِ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٥٧٧]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फज्र की नमाज सुबह सवेरे ही पढ़ लिया करते थे। जिन्दगी भर आपका यही अमल रहा। (औनुलबारी, 1/657)

बाब 21 : फज्र की नमाज के बाद सूरज के बुलन्द होने तक नमाज़ (का हुक्म)

٢١ - باب: الصَّلاَةُ بَعْدَ الفَجْرِ حَتَّى تَرْتَفِعَ الشَّمْسُ

357 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मेरे सामने चन्द अच्छे लोगों का बयान किया,

٣٥٧ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: شَهِدَ عِنْدِي رِجَالٌ مَرْضِيُّونَ، وَأَرْضَاهُمْ عِنْدِي عُمَرُ:

أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنِ ٱلصَّلاَةِ بَعْدَ ٱلصُّبْحِ حَتَّى تَشْرُقَ ٱلشَّمْسُ، وَبَعْدَ ٱلْعَصْرِ حَتَّى تَغْرُبَ. [رواه البخاري: ٥٨١]

जिसमें सबसे ज्यादा पसन्दीदा और ऐतबार के लायक उमर रजि. थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद सूरज की रोशनी से पहले और असर के बाद सूरज डूबने से पहले नमाज़ पढ़ने से मना फरमाया।

फायदे : साबित हुआ कि जिन वक्तों में नमाज़ पढ़ने से मना किया गया है, उनमें नमाज पढ़ना ठीक नहीं, अलबत्ता फरजों की कजा और सबवी नमाज़ पढ़ी जा सकती है। मसलन मस्जिद में दाखिल होने की दो रकआतें, चाँद और सूरज ग्रहण की नमाज़ और जनाजे की नमाज वगैरह। (औनुलबारी, **1/658**)

---

٣٥٨ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ تَحَرَّوْا بِصَلاتِكُمْ طُلُوعَ ٱلشَّمْسِ وَلاَ غُرُوبَهَا). [رواه البخاري: ٥٨٢]

358 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सूरज निकलने और सूरज डूबने के वक्त अपनी नमाजें अदा करने की कोशिश न किया करो।

٣٥٩ : قَالَ ٱبْنُ عُمَرَ: وَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا طَلَعَ حَاجِبُ ٱلشَّمْسِ فَأَخِّرُوا ٱلصَّلاَةَ حَتَّى تَرْتَفِعَ، وَإِذَا غَابَ حَاجِبُ ٱلشَّمْسِ فَأَخِّرُوا ٱلصَّلاَةَ حَتَّى تَغِيبَ). [رواه البخاري: ٥٨٣]

359 : इब्ने उमर रजि. से ही एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब सूरज का किनारा निकलने लगे तो नमाज़ छोड़ दो। यहां तक कि सूरज बुलन्द हो जाये और जब सूरज का किनारा डूबने लगे तो नमाज़ छोड़ दो यहां तक कि सूरज पूरा छिप जाये।

٣٦٠ : حديث أبي هُرَيْرَة رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَهى عَنْ بَيْعَتَيْنِ، وَعَنْ لِبْسَتَيْنِ، تقدَّم، وزاد في هٰذِهِ الرواية: وَعَنْ صَلاَتَيْنِ: نَهى عَنِ ٱلصَّلاَةِ بَعْدَ ٱلْفَجْرِ حَتَّى تَطْلُعَ ٱلشَّمْسُ، وَبَعْدَ ٱلْعَصْرِ حَتَّى تَغْرُبَ ٱلشَّمْسُ. [ر: ٢٣٣] [رواه البخاري: ٥٨٤]

360 : अबू हुरैरा रजि. की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो किस्म की खरीद और फरोख्त और दो तरह के लिबास से मना फरमाया। यह हदीस (नम्बर **240**) पहले गुजर चुकी है। मगर इस रिवायत में उन्होंने कुछ इजाफा किया है कि दो नमाजों से भी मना किया है। फज्र की नमाज के बाद हर किस्म की नमाज़ से यहां तक कि सूरज अच्छी तरह निकल आये और असर की नमाज के बाद भी। यहां तक कि सूरज डूब जाये।

फायदे : दिन और रात में कुछ वक्त ऐसे हैं जिनमें नमाज़ अदा करना सही नहीं है। फज्र की नमाज के बाद सूरज निकलने तक, असर की नमाज के बाद सूरज डूबने तक, सूरज निकलने और सूरज डूबते वक्त नीज दोपहर के वक्त जब सूरज आसमान के ठीक बीच में होता है, हां अगर फज्र नमाज़ कजा हो गई हो तो उसका पढ़ लेना जाइज है। इसी तरह फज्र की सुन्नतें अगर नमाज़ से पहले ना पढ़ी जा सकें तो उन्हें भी जमाअत के बाद पढ़ सकता है। जो लोग जमाअत होते हुये फजर की सुन्नतें पढ़ते रहते हैं, वह हदीस की खिलाफवर्जी करते हैं अलबत्ता मक्का मुकर्रमा इन तमाम मकरूहा वक्तों से अलग है।

---

٢٢ - باب: لاَ يَتَحَرَّى الصَّلاَةَ قَبْلَ غُرُوبِ الشَّمْسِ

बाब 22 : (असर की नमाज के) बाद और सूरज डूबने से पहले नमाज़ का कसद न करें

361 : मुआविया रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि तुम ऐसी नमाज़ पढ़ते हो, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे हैं, लेकिन हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह नमाज़ पढ़ते नहीं देखा, बल्कि आपने तो उसकी मनाही फरमाई है। यानी असर के बाद दो रकअतें।

٣٦١ : عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّكُمْ لَتُصَلُّونَ صَلاَةً، لَقَدْ صَحِبْنَا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، فَمَا رَأَيْنَاهُ يُصَلِّيهَا، وَلَقَدْ نَهَى عَنْهَا. يَعْنِي: ٱلرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ ٱلْعَصْرِ. [رواه البخاري: ٥٨٧]

बाब 23 : असर के बाद कजा नमाज़ और इस तरह की (सबबी) नमाज़ पढ़ना

٢٣ - باب: مَا يُصَلَّى بَعْدَ العَصْرِ مِنَ الفَوائِتِ وَنَحوِهَا

362 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि कसम है उस (अल्लाह) की जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनिया से ले गये। आपने असर के बाद दो रकअतें तर्क नहीं फरमायीं, यहां तक कि आप अल्लाह से जा मिले और आपको वफात से पहले (खड़े होकर) नमाज़ पढ़ने में मुश्किल आती तो फिर ज्यादातर नमाज़ बैठकर अदा फरमाते थे। चूनांचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम असर के बाद दो रकआतें हमेशा पढ़ा करते थे।

٣٦٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قَالَتْ: وَٱلَّذِي ذَهَبَ بِهِ، مَا تَرَكَهُمَا حَتَّى لَقِيَ ٱللهَ، وَمَا لَقِيَ ٱللهَ تَعَالَى حَتَّى ثَقُلَ عَنِ ٱلصَّلاَةِ. وَكَانَ يُصَلِّي كَثِيرًا مِنْ صَلاَتِهِ قَاعِدًا، تَعْنِي ٱلرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ ٱلْعَصْرِ، وَكَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّيهِمَا، وَلاَ يُصَلِّيهِمَا فِي ٱلْمَسْجِدِ، مَخَافَةَ أَنْ يُثْقِلَ عَلَى أُمَّتِهِ، وَكَانَ يُحِبُّ مَا يُخَفِّفُ عَنْهُمْ. [رواه البخاري: ٥٩٠]

लेकिन मस्जिद में नहीं पढ़ते थे। कहीं आपकी उम्मत पर गिरा न हों। क्योंकि आपको अपनी उम्मत के हक में आसानी पसन्द थी।

फायदे : इस से यह भी मालूम हुआ कि असर के बाद सुन्नतों की कजा और फिर उसकी हमेशगी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खासियतों में दाखिल है।

363 : आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो रकअतें फजर से पहले और दो रकअतें असर के बाद छिपी और जाहिर दोनों हालतों में कभी नहीं छोड़ी

٣٦٣ : وَعَنْهَا - رَضِيَ ٱللهُ عَنْها - قالَتْ: رَكْعَتَانِ، لَمْ يَكُنْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَدَعُهُمَا، سِرًّا وَلاَ عَلاَنِيَةً، رَكْعَتَانِ قَبْلَ صَلاَةِ ٱلصُّبْحِ، وَرَكْعَتَانِ بَعْدَ ٱلْعَصْرِ. [رواه البخاري: ٥٩٢]

फायदे : यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तन्हाई और सबके सामने इन सुन्नतों को अदा करते थे।

बाब 24: वक्त गुजर जाने के बाद (कजा नमाज़ के लिए) अजान देना।

٢٤ - باب: الأَذَانُ بَعْدَ ذَهَابِ الوَقْتِ

364 : अबू कतादा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम एक रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफर कर रहे थे। कुछ लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काश हम सब लोगों के साथ आखिर

٣٦٤ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سِرْنَا مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ لَيْلَةً، فَقَالَ بَعْضُ ٱلْقَوْمِ: لَوْ عَرَّسْتَ بِنَا يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (أَخَافُ أَنْ تَنَامُوا عَنِ ٱلصَّلاَةِ). قَالَ بِلاَلٌ: أَنَا أُوقِظُكُمْ، فَاضْطَجَعُوا، وَأَسْنَدَ بِلاَلٌ ظَهْرَهُ إِلَى رَاحِلَتِهِ، فَغَلَبَتْهُ عَيْنَاهُ فَنَامَ،

فَاسْتَيْقَظَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ وَقَدْ طَلَعَ حَاجِبُ ٱلشَّمْسِ، فَقَالَ: (يَا بِلَالُ، أَيْنَ مَا قُلْتَ؟). قَالَ: مَا أُلْقِيَتْ عَلَيَّ نَوْمَةٌ مِثْلُهَا قَطُّ، قَالَ: (إِنَّ ٱللهَ قَبَضَ أَرْوَاحَكُمْ حِينَ شَاءَ، وَرَدَّهَا عَلَيْكُمْ حِينَ شَاءَ، يَا بِلَالُ، قُمْ فَأَذِّنْ بِالنَّاسِ بِالصَّلَاةِ). فَتَوَضَّأَ، فَلَمَّا ٱرْتَفَعَتِ ٱلشَّمْسُ وَٱبْيَاضَّتْ، قَامَ فَصَلَّى. [رواه البخاري: ٥٩٥]

रात आराम फरमायें। आपने फरमाया, मुझे डर है कि नमाज़ के वक्त भी तुम सोये हुए न रह जाओ। बिलाल रजि. बोले, मैं सब को जगा दूंगा। चूनांचे सब लोग लेट गये और बिलाल रजि. अपनी पीठ अपनी ऊँटनी से लगाकर बैठ गये। मगर जब उनकी आंखों पर नींद का गल्बा हुआ तो सो गये। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे वक्त जागे कि सूरज का किनारा निकल चुका था। आपने फरमाया, ऐ बिलाल रजि. तुम्हारी बात कहां गयी? वह बोले, आज जैसी नींद मुझे कभी नहीं आयी। इस पर आपने फरमाया, अल्लाह तआला ने जब चाहा, तुम्हारी रूहों को कब्ज कर लिया और जब चाहा वापस कर दिया। ऐ बिलाल रजि.! उठो और लोगों में नमाज के लिए अजान दो। उस के बाद आपने वुजू किया, जब सूरज बुलन्द होकर रोशन हो गया तो आप खड़े हुए और नमाज़ पढ़ाई।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि जिस नमाज़ से आदमी सो जाये या भूल जाये, फिर जागने पर या याद आने पर उसे पढ़ ले तो नमाज़ कजा नहीं बल्कि अदा होगी। क्योंकि सही अहादीस में इसका वक्त वही बताया गया है, जब वह जागे या उसे याद आये।

---

٢٥ - باب: مَنْ صَلَّى بِالنَّاسِ جَمَاعَةً بَعْدَ ذِهَابِ الوَقْتِ

बाब 25 : वक्त गुजर जाने के बाद कजा नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना।

٣٦٥ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ

365 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से

रिवायत है कि उमर रजि. खन्दक के दिन आपकी कयामगाह में उस वक्त आये, जब सूरज डूब चुका था, और कुफ्फार कुरैश को बुरा भला कहने लगे। अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सूरज डूब गया और असर की नमाज मेरे लिए पढ़ना मुमकिन न रहा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, खुदा की कसम असर की नमाज़ मैं भी नहीं पढ़ सका। फिर हमने वादी बुत्हान का रुख किया। आपने नमाज के लिए वुजू फरमाया और हम सब ने भी वुजू किया। फिर आपने सूरज डूबने के बाद असर की नमाज अदा की, उसके बाद मगरिब की नमाज़ पढ़ाई।

رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ عُمَرَ بْنَ ٱلْخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ جَاءَ يَوْمَ ٱلْخَنْدَقِ بَعْدَ مَا غَرَبَتِ ٱلشَّمْسُ، فَجَعَلَ يَسُبُّ كُفَّارَ قُرَيْشٍ، قَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، مَا كِدْتُ أُصَلِّي ٱلْعَصْرَ، حَتَّى كَادَتِ ٱلشَّمْسُ تَغْرُبُ، قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (وَٱللهِ مَا صَلَّيْتُهَا). فَقُمْنَا إِلَى بُطْحَانَ، فَتَوَضَّأَ لِلصَّلَاةِ وَتَوَضَّأْنَا لَهَا، فَصَلَّى ٱلْعَصْرَ بَعْدَ مَا غَرَبَتِ ٱلشَّمْسُ، ثُمَّ صَلَّى بَعْدَهَا ٱلْمَغْرِبَ. [رواه البخاري: ٥٩٦]

फायदे : इसमें अगरचे जमाअत के साथ अदा करने का बयान नहीं फिर भी आपकी आदत यही थी कि लोगों के साथ जमाअत से नमाज़ पढ़ते, बल्कि कुछ रिवायतों में है कि आपने सहाबा-ए-किराम के साथ नमाज़ अदा की। नीज यह भी मालूम हुआ कि छुटी हुई नमाजों को तरतीब से अदा करना चाहिए।

बाब 26 : जो शख्स किसी नमाज़ को भूल जाये तो जिस वक्त याद आये, पढ़ ले।

٢٦ - باب: مَنْ نَسِيَ صَلَاةً فَلْيُصَلِّ إِذَا ذَكَرَهَا

366: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु

٣٦٦ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ

अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो शख्स नमाज़ भूल जाये तो याद आते ही उसे पढ़ ले। उसका यही उसका कफ्फारा है, अल्लाह का फरमान है। नमाज़ को याद आने पर कायम कीजिए।

نسِيَ صَلاَةً فَلْيُصَلِّ إِذَا ذَكَرَهَا، لاَ كَفَّارَةَ لَهَا إِلَّا ذٰلِكَ: ﴿وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكْرِىٓ﴾. [رواه البخاري: ٥٩٧]

फायदे : इस हदीस से उन लोगों का रद्द मकसूद है जो कहते हैं कि छुटी हुई नमाज़ दो बार पढ़ी जाये। एक जब याद आये, फिर दूसरे दिन, उसके वक्त पर भी अदा करें।

बाब 27 :

٢٧ - باب

367 : अनस बिन मालिक रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तक तुम नमाज़ के इन्तजार में हो, जैसे नमाज़ में ही हो।

٣٦٧ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَمْ تَزَالُوا فِي صَلاَةٍ مَا ٱنْتَظَرْتُمُ ٱلصَّلاَةَ). [رواه البخاري: ٦٠٠]

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस पर यूँ उनवान कायम किया है, ''इशा की नमाज के बाद इल्मी और भलाई की बातें की जा सकती है।'' क्योंकि इस हदीस में यह अलफाज भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशा की नमाज के बाद लोगों को खुतबा दिया और नसीहत फरमायी।

बाब 28 :

٢٨ باب

368 : अनस रजि. से ही मरवी एक और हदीस (96) जो इखत्ताम

٣٦٨ : حديثُهُ: عَلى رَأْسِ مائَة سنة، تقدم، وفي رواية هُنا عَنِ ابْنِ

عمر رضي الله عنهما قال النبي ﷺ: (لا يبقى ممن هو اليوم على ظهر الأرض أحد). يريد بذلك أنها تخرم ذلك القرن. (راجع: ٩٦)
[رواه البخاري: ٦٠١]

सदी से मुताल्लिक है, पहले गुजर चुकी है, इस बाब में हजरत इब्ने उमर रजि. से भी रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, आज जो लोग जमीन पर है, उनमें कोई बाकी नहीं रहेगा, इससे आपका मतलब था कि (सौ बरस तक) यह सदी खत्म हो जायेगी।

फायदे : चुनांचे ऐसा ही हुआ। आपके इस फरमान के बाद कोई सहाबी जिन्दा न रहा। आखरी सहाबी हजरत अबू तुफैल हैं जो **110** हिजरी को फौत हो गये। (औनुलबारी **1/671**)

---

٣٦٩ : عن عبد الرحمن بن أبي بكر رضي الله عنهما أن أصحاب الصفة كانوا ناسا فقراء، وأن النبي ﷺ قال: (من كان عنده طعام اثنين فليذهب بثالث، وإن أربع فخامس أو سادس). وإن أبا بكر جاء بثلاثة، فانطلق النبي ﷺ بعشرة، قال: فهو أنا وأبي وأمي، فلا أدري قال: وامرأتي وخادم، بيننا وبين بيت أبي بكر، وإن أبا بكر تعشى عند النبي ﷺ، ثم لبث حيث صليت العشاء، ثم رجع فلبث حتى تعشى النبي ﷺ، فجاء بعد ما مضى من الليل ما شاء الله، قالت له امرأته: وما حبسك عن

369 : अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि सुफ्फा वाले नादार लोग थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (इनके मुताल्लिक) फरमाया था कि जिसके पास दो आदमियों का खाना हो, वह (सुफ्फा वालों में से) तीसरा आदमी ले जाये और अगर चार का हो तो पांचवा या छठा (उनसे ले जाये)। चुनांचे अबू बकर सिद्दीक रजि. अपने साथ तीन आदमी ले गये और खुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथ दस आदमी

أَضْيَافِكَ، أَوْ قَالَتْ ضَيْفِكَ؟ قَالَ: أَوَ مَا عَشَّيْتِهِمْ؟ قَالَتْ: أَبَوْا حَتَّى تَجِيءَ، قَدْ عُرِضُوا فَأَبَوْا، قَالَ: فَذَهَبْتُ أَنَا فَاخْتَبَأْتُ، فَقَالَ: يَا غُنْثَرُ، فَجَدَّعَ وَسَبَّ، وَقَالَ: كُلُوا لاَ هَنِيئًا، فَقَالَ: وَٱللهِ لاَ أَطْعَمُهُ أَبَدًا، وَٱيْمُ ٱللهِ، مَا كُنَّا نَأْخُذُ مِنْ لُقْمَةٍ إِلَّا رَبَا مِنْ أَسْفَلِهَا أَكْثَرُ مِنْهَا، قَالَ: حَتَّى شَبِعُوا، وَصَارَتْ أَكْثَرَ مِمَّا كَانَتْ قَبْلَ ذَلِكَ، فَنَظَرَ إِلَيْهَا أَبُو بَكْرٍ فَإِذَا هِيَ كَمَا هِيَ أَوْ أَكْثَرُ مِنْهَا، فَقَالَ لاِمْرَأَتِهِ: يَا أُخْتَ بَنِي فِرَاسٍ، مَا هٰذَا؟ قَالَتْ: لاَ وَقُرَّةِ عَيْنِي، لَهِيَ ٱلآنَ أَكْثَرُ مِنْهَا قَبْلَ ذٰلِكَ بِثَلاَثِ مَرَّاتٍ، فَأَكَلَ مِنْهَا أَبُو بَكْرٍ وَقَالَ: إِنَّمَا كَانَ ذٰلِكَ مِنَ ٱلشَّيْطَانِ، يَعْنِي يَمِينَهُ، ثُمَّ أَكَلَ مِنْهَا لُقْمَةً، ثُمَّ حَمَلَهَا إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَأَصْبَحَتْ عِنْدَهُ، وَكَانَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمٍ عَقْدٌ، فَمَضَى ٱلأَجَلُ، فَفَرَّقَنَا ٱثْنَيْ عَشَرَ رَجُلاً، مَعَ كُلِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ أُنَاسٌ، ٱللهُ أَعْلَمُ كَمْ مَعَ كُلِّ رَجُلٍ، فَأَكَلُوا مِنْهَا أَجْمَعُونَ، أَوْ كَمَا قَالَ. [رواه البخاري: ٦٠٢]

ले गये। अब्दुर्रहमान रजि. ने कहा कि घर में उस वक्त मैं और मेरे मां बाप थे। रावी कहता है कि मुझे याद नहीं कि अब्दुर्रहमान ने यह कहा या नहीं, कि मैं, मेरी बीवी और एक नौकर भी था जो मेरे और मेरे बाप के घर साझे में काम करते थे। खैर अबू बकर रजि. ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर रात का खाना खा लिया और थोड़ी देर के लिए वहां ठहर गये। फिर इशा की नमाज़ पढ ली गई और लौटकर फिर थोड़ी देर ठहरे। यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शाम का खाना खाया, उसके बाद काफी रात के बाद अपने घर आये तो उनकी बीवी ने कहा, तुम अपने मेहमानों को छोड़कर कहां अटक गये थे? वह बोले क्या तुमने उन्हें खाना नहीं खिलाया? उन्होंने बताया कि आपके आने तक मेहमानों ने खाना खाने से इनकार कर दिया था। खाना पेश किया गया, लेकिन वह न माने। अब्दुर्रहमान रजि. कहते हैं कि मैं तो (मारे डर के) कहीं जाकर छुप गया। अबू बकर रजि. ने कहा, ऐ लईम! बहुत सख्त सुस्त कहा और खूब कोसा। फिर

मेहमानों से कहा, खाओ, तुम्हें खुशगवार न हो और कहा अल्लाह की कसम! मैं हरगिज न खाऊँगा। अब्दुर्रहमान रजि. कहते हैं कि अल्लाह की कसम! हम जब लुकमा लेते तो नीचे से ज्यादा बढ़ जाता यहां तक कि सब मेहमान सैर हो गये और जिस कदर खाना पहले था। उससे कहीं ज्यादा बच गया। अबू बकर रजि. ने खाना देखा वह वैसे ही बल्कि उससे ज्यादा था तो अबू बकर ने अपनी बीवी से कहा, ऐ कबीला बनू फिरास की बहन! यह क्या माजरा है? उन्होंने अर्ज किया, ऐ मेरी आंखों की ठण्डक! यह खाना इस वक्त पहले से तीन गुना है। बल्कि उससे भी ज्यादा। फिर उसमें से हजरत अबू बकर रजि. ने खाया और कहा, उनकी यह कसम शैतान ही की तरफ से थी। एक लुकमा उससे (ज्यादा) खाया और बाकी बचा खाना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उठाकर ले गये कि वह सुबह तक आपके पास पड़ा रहा। (अब्दुर्रहमान कहते हैं) हमारे और एक गिरोह के बीच कुछ अहद था, जिसकी मुद्दत गुजर चुकी थी तो हमने बारह आदमी अलग अलग कर दिये। उनमें से हर एक के साथ कुछ आदमी थे। यह तो अल्लाह ही जानता है कि हर शख्स के साथ कितने कितने आदमी थे। उन सब ने उसमें से खाया। (अब्दुर्रहमान रजि. ने कुछ ऐसा ही कहा)

फायदे : यह हजरत अबू बकर रजि. की करामत थी। वलियों की करामत बरहक हैं, मगर अहले बिदअत ने इस आड़ में जो फरेब खड़ा किया है, वह घड़ा हुआ और लायानी है। इमाम बुखारी का मकसूद यह है कि इशा के बाद अपने बीवी बच्चों से किसी मकसद के तहत गुफ्तगू की जा सकती है। (औनुलबारी, 1/675)

❖❖❖

किताबुल आज़ान

अज़ान का बयान

बाब 1 : अज़ान की शुरूआत।

١ - باب: بَدْء الأذانِ

370 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, वह फरमाते हैं कि जब मुसलमान मदीना मुनव्वरा आये तो नमाज़ के वक्त अन्दाजा करके उसके लिए जमा हुआ करते थे, क्योंकि बाकायदा अज़ान न दी जाती थी। एक दिन उन्होंने इसके बारे में मशवरा किया तो किसी ने कहा, ईसाइयों के तरह नाकूस (घंटा) बना लिया जाये और कुछ लोगों ने कहा कि यहूदियों के शंख (बिगुल) की तरह नरसंघा बनाओ। मगर उमर रज़ि. ने फरमाया कि तुम एक आदमी को क्यों नहीं मुकर्रर करते, जो नमाज़ के लिए अज़ान दे दिया करे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ बिलाल उठो और अज़ान दो।

٣٧٠ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رضي ٱللهُ عَنْهُمَا كَانَ يَقُولُ: كَانَ ٱلْمُسْلِمُونَ حِينَ قَدِمُوا ٱلْمَدِينَةَ، يَجْتَمِعُونَ فَيَتَحَيَّنُونَ ٱلصَّلاَةَ، لَيْسَ يُنَادَى لَهَا، فَتَكَلَّمُوا يَوْمًا فِي ذٰلِكَ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: ٱتَّخِذُوا نَاقُوسًا مِثْلَ نَاقُوسِ ٱلنَّصَارَى، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: بَلْ بُوقًا مِثْلَ قَرْنِ ٱلْيَهُودِ، فَقَالَ عُمَرُ: أَوَلاَ تَبْعَثُونَ رَجُلًا يُنَادِي بِالصَّلاَةِ؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يَا بِلاَلُ، قُمْ فَنَادِ بِالصَّلاَةِ). [رواه البخاري: ٦٠٤]

फायदे : इससे यह भी मालूम हुआ कि अज़ान खड़े होकर कहना चाहिए। नीज इब्ने माजा की रिवायत में हज़रत बिलाल के बारे में आपने फरमाया कि वह अच्छी और बुलन्द आवाज़ वाले हैं।

इसलिए मौअज्जिन (अज़ान देने वाले) को इन खुबियों वाला होना चाहिए।

बाब 2 : अज़ान में दोहरे (दो-दो) कलेमात कहना।

٢ - باب: الأذانُ مَثْنَى

371 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि बिलाल रज़ि. को यह हुक्म दिया गया था कि अज़ान में जोड़े-जोड़े कलमात कहे और तकबीर में "कद कामतिस्सलात" के अलावा दीगर कलमात ताक (वित्र) कहें।

٣٧١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أُمِرَ بِلاَلٌ أَنْ يَشْفَعَ ٱلأَذَانَ، وَأَنْ يُوتِرَ ٱلإِقَامَةَ، إِلَّا ٱلإِقَامَةَ.
[رواه البخاري: ٦٠٥]

फायदे : कद कामतिस्सलात को दोबारा इसलिए कहा जाता है कि इकामत का मकसद इन्हीं कलिमात से अदा होता है, वह यह कि नमाज़ खड़ी हो गई है।

बाब 3 : अज़ान कहने की फजीलत।

٣ - باب: فَضْلُ التَّأْذِينِ

372 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब नमाज़ के लिए अज़ान कही जाती है तो शैतान गूज मारता (हवा निकालता) हुआ पीठ फेरकर भागता है। ताकि अज़ान की आवाज़ न सुन सके। और जब अज़ान पूरी हो जाती है तो वापस आ जाता है। फिर जब

٣٧٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا نُودِيَ لِلصَّلاَةِ، أَدْبَرَ ٱلشَّيْطَانُ وَلَهُ ضُرَاطٌ، حَتَّى لاَ يَسْمَعَ ٱلتَّأْذِينَ، فَإِذَا قُضِيَ ٱلنِّدَاءُ أَقْبَلَ، حَتَّى إِذَا ثُوِّبَ بِالصَّلاَةِ أَدْبَرَ، حَتَّى إِذَا قُضِيَ ٱلتَّثْوِيبُ أَقْبَلَ، حَتَّى يَخْطِرَ بَيْنَ ٱلْمَرْءِ وَنَفْسِهِ، يَقُولُ: ٱذْكُرْ كَذَا، ٱذْكُرْ كَذَا، لِمَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ، حَتَّى يَظَلَّ ٱلرَّجُلُ لاَ يَدْرِي كَمْ صَلَّى).
[رواه البخاري: ٦٠٨]

नमाज़ के लिए तकबीर कही जाती है तो फिर पीठ फेर कर भाग जाता है। और जब तकबीर खत्म हो जाती है तो फिर सामने आता है ताकि नमाजी और उसके दिल में वसवसा डाले और कहता है, यह बात याद कर, वह बात याद कर। यानी वह बातें जो नमाजी भूल गया था, यहां तक कि नमाजी भूल जाता है कि उसने कितनी नमाज़ पढ़ी?

फायदे : आज बेशुमार शैताननुमा इन्सान ऐसे हैं जो अज़ान की आवाज़ सुनकर अपने दुनियावी कारोबार में लगे रहते हैं और नमाज़ के लिए मस्जिद में हाजिर नहीं होते। ऐसे लोगों का किरदार शैतान से कम नहीं है। (अल्लाह की पनाह)

बाब 4 : जोर से अज़ान कहना।

٤ - باب: رَفْعُ الصَّوْتِ بِالنِّدَاءِ

373 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। आप फरमा रहे थे कि अज़ान देने वाले की आवाज़ को जो जिन्न और इन्सान या और कोई सुनता है, वह उसके लिए कयामत के दिन गवाही देगा।

٣٧٣ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّهُ لاَ يَسْمَعُ مَدَى صَوْتِ الْمُؤَذِّنِ، جِنٌّ وَلاَ إِنْسٌ وَلاَ شَيْءٌ، إِلَّا شَهِدَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ).
[رواه البخاري: ٦٠٩]

फायदे : इस हदीस से जोर से अज़ान कहने की फजीलत साबित होती है। चाहे जंगल में ही क्यों न हो। यह ख्याल न किया जाये कि यहां कोई हाजिर होने वाला नहीं। लिहाजा आहिस्ता कह दी जाये। (औनुलबारी, 1/682)

बाब 5 : अज़ान सुनकर लड़ाई झगड़े से रूक जाना।

٥ - باب: مَا يُحْقَنُ بِالأَذَانِ مِنَ الدِّمَاءِ

374 : अनस रज़ि.से रिवायत है कि हम जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किसी से जिहाद करते तो हमला न करते यहां तक कि सुबह हो जाये। फिर अगर अज़ान सुन लेते तो हमले का इरादा छोड़ देते और अगर अज़ान न सुनते तो उन पर हमला करते।

٣٧٤ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا غَزَا بِنَا قَوْمًا، لَمْ يَكُنْ يَغْزُو بِنَا حَتَّى يُصْبِحَ وَيَنْظُرَ: فَإِنْ سَمِعَ أَذَانًا كَفَّ عَنْهُمْ، وَإِنْ لَمْ يَسْمَعْ أَذَانًا أَغَارَ عَلَيْهِمْ. [رواه البخاري: ٦١٠]

फायदे : अज़ान इस्लाम की एक बहुत बड़ी निशानी है। इसका छोड़ना किसी सूरत में जाइज नहीं। जिस बस्ती से अज़ान की आवाज़ बुलन्द हो, इस्लाम उस बस्ती के लोगो के जान और माल की गारन्टी देता है। अगर बस्ती वाले अज़ान कहना छोड़ दें तो उनके खिलाफ जिहाद करना ठीक है। (औनुलबारी, 1/685)

बाब 6 : अज़ान सुनकर क्या कहना चाहिए।

٦ - باب: مَا يَقُولُ إِذَا سَمِعَ المُنَادِي

375 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुम अज़ान सुनो तो वही कलमात कहो जो अजान देने वाला कह रहा है।

٣٧٥ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا سَمِعْتُمُ ٱلنِّدَاءَ، فَقُولُوا مِثْلَ مَا يَقُولُ ٱلْمُؤَذِّنُ). [رواه البخاري: ٦١١]

फायदे : मालूम हुआ कि अज़ान से पहले तस्बीह और तहलील या दरूद और सलाम पढ़ना जाइज नहीं। (औनुलबारी, 1/685)

376: मुआविया रज़ि. से रिवायत है कि

٣٧٦ : عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ

مِثْلَهُ، إِلَى قَوْلِهِ: (وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ ٱللهِ). وَلَمَّا قَالَ: (حَيَّ عَلَى ٱلصَّلاَةِ، قَالَ: لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلَّا بِٱللهِ) وَقَالَ: هٰكَذَا سَمِعْتُ نَبِيَّكُمْ ﷺ يَقُولُ. [رواه البخاري: ٦١٢]

उन्होंने अशहदु अन्ना मुहम्मद र्रसूलुल्लाह तक अजान देने वाले की तरह कहा, मगर जब अजान देने वाले ने "हय्या अल्लस्सलाह" कहा तो उन्होंने "ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह" कहा और बताया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसी तरह कहते सुना है।

७ - باب: الدُّعَاءُ عِنْدَ النِّدَاءِ

बाब 7 : अज़ान के वक्त दुआ पढ़ना।

٣٧٧ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ ٱلنِّدَاءَ: ٱللَّهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ ٱلدَّعْوَةِ ٱلتَّامَّةِ، وَٱلصَّلاَةِ ٱلْقَائِمَةِ، آتِ مُحَمَّدًا ٱلْوَسِيلَةَ وَٱلْفَضِيلَةَ، وَٱبْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا ٱلَّذِي وَعَدْتَهُ، حَلَّتْ لَهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٦١٤]

377 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो आदमी अज़ान सुनते वक्त यह दुआ पढ़े, ऐ अल्लाह! जो इस पूरी पुकार और कायम होने वाली नमाज़ का मालिक है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वसीला और बुजुर्गी अता करके उन्हें मकामे महमूद पर पहुंचा, जिसका तूने उनसे वादा किया है। तो उसे कयामत के दिन मेरी शिफाअत नसीब होगी।

फायदे : कुछ लोगों ने मसनून दुआओं में अपनी तरफ से कुछ अलफाज बढ़ा लिये हैं, ऐसा करना शरीअत में जाईज नहीं है।

बाब 8 : अज़ान कहने के लिए कुरा अन्दाजी करना (पांसे फैंकना)।

٨ - باب: الاسْتِهَامُ فِي الأَذَانِ

378 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर लोगों को मालूम हो जाये कि अज़ान और अव्वल सफ में क्या सवाब हैं फिर अपने लिए कुरा डालने के अलावा कोई चारा नहीं पायें तो जरूर कुरा अन्दाजी करें और अगर लोगों को इल्म हो कि जुहर की नमाज के लिए जल्दी आने में कितना सवाब है तो जरूर सबकत करें और अगर जान लें कि इशा और फज्र जमाअत के साथ अदा करने में क्या सवाब है तो जरूर दोनों (की जमाअत) में आयेंगे। अगरचे घूटनों के बल चलकर आना पड़े।

٣٧٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لَوْ يَعْلَمُ ٱلنَّاسُ مَا فِي ٱلنِّدَاءِ وَٱلصَّفِّ ٱلأَوَّلِ، ثُمَّ لَمْ يَجِدُوا إِلَّا أَنْ يَسْتَهِمُوا عَلَيْهِ لَاسْتَهَمُوا، وَلَوْ يَعْلَمُونَ ما فِي ٱلتَّهْجِيرِ لَاسْتَبَقُوا إِلَيْهِ، وَلَوْ يَعْلَمُون مَا فِي ٱلْعَتَمَةِ وَٱلصُّبْحِ، لأَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا) [رواه البخاري: ٦١٥]

बाब 9 : अन्धे को अगर कोई वक्त बताने वाला हो तो उसका अज़ान कहना।

٩ - باب: أَذَانُ الأَعْمَى إِذَا كَانَ لَهُ مَنْ يُخْبِرُهُ

379 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बिलाल रात को अजान देते हैं। इसलिए तुम (रोजा के लिए) खाते पीते रहो यहां तक कि इब्ने उम्मे मकतूम

٣٧٩ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ بِلَالًا يُؤَذِّنُ بِلَيْلٍ، فَكُلُوا وَٱشْرَبُوا حَتَّى يُنَادِيَ ٱبْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ). قَالَ: وَكَانَ رَجُلًا أَعْمَى، لَا يُنَادِي حَتَّى يُقَالَ لَهُ: أَصْبَحْتَ أَصْبَحْتَ. [رواه البخاري: ٦١٧]

रज़ि. अज़ान दें। रावी हदीस कहते हैं कि इब्ने उम्मे मकतूम रज़ि. एक नाबिना (अंधे) आदमी थे। उस वक्त तक अज़ान न देते, यहां तक कि उनसे कहा जाता सुबह हो गयी, सुबह हो गयी।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के जमाने से ही सहरी की अज़ान कहने का दस्तूर चला आ रहा है, जो लोग इस अज़ाने अव्वल की मुखालिफत करते हैं, उनकी राय सही नहीं है। अलबत्ता इसे अज़ान तहज्जुद नहीं खयाल करना चाहिए। क्योंकि इसका मकसद यूँ बयान हुआ कि तहज्जुद पढ़ने वाला घर वापस चला जाये और सोने वाला जागकर नमाज़ की तैयारी करे और न ही उसे फज्र की अजान से बहुत पहले कहना चाहिए।

١٠ - باب: الأذانُ بَعْدَ الفَجرِ

बाब 10 : सूरज निकलने के बाद अज़ान देना।

٣٨٠ : عَنْ حَفْصَة رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ إِذَا ٱعْتَكَفَ ٱلْمُؤَذِّنُ لِلصُّبْحِ، وَبَدَا ٱلصُّبْحُ، صَلَّى رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ تُقَامَ ٱلصَّلاَةُ. [رواه البخاري: ٦١٨]

380 : हफ्सा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत थी कि जब अजान देने वाला सुबह की अज़ान के लिए खड़ा हो जाता और सुबह नुमाया हो जाती तो आप फर्ज़ नमाज़ खड़ी होने से पहले हल्की सी दो रकअतें पढ़ लिया करते थे।

फायदे : यह फज्र की सुन्नतें थी, जिन्हें आप सफर और घर में जरूर अदा करते थे। (औनुलबारी, 1/691)

बाब 11 : सुबह सादिक से पहले अज़ान कहना।

١١ - باب: الأذانُ قَبْلَ الفَجْرِ

381 : अब्दुल्ला बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमाया तुममें से कोई बिलाल रज़ि. की अज़ान सुनकर सहरी खाना न छोड़े, क्योंकि वह रात को अज़ान कह देता है। ताकि तहज्जुद पढ़ने वाला (आराम के लिए) लौट जाये और जो अभी सोया हुआ है, उसे जगा दे। फज्र ऐसे नहीं है और आपने अपनी उंगलियों से इशारा करते हुए पहले उनको ऊपर उठाया, फिर आहिस्ता नीचे की तरफ झुकाया। फिर फरमाया कि फज्र इस तरह होती है। आपने अपनी दोनों गवाही की उंगलियां एक दूसरे के ऊपर रख कर उन्हें दायें-बायें फैला दिया (यानी दोनों गोशों में रोशनी फैल जाये तो सुबह होती है।)

٣٨١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لاَ يَمْنَعَنَّ أَحَدَكُمْ، أَوْ أَحَدًا مِنْكُمْ، أَذَانُ بِلاَلٍ مِنْ سَحُورِهِ، فَإِنَّهُ يُؤَذِّنُ - أَوْ يُنَادِي - بِلَيْلٍ، لِيَرْجِعَ قَائِمَكُمْ، وَلِيُنَبِّهَ نَائِمَكُمْ، وَلَيْسَ أَنْ يَقُولَ ٱلْفَجْرُ، أَوِ ٱلصُّبْحُ). وَقَالَ بِأَصَابِعِهِ، وَرَفَعَهَا إِلَى فَوْقُ، وَطَأْطَأَ إِلَى أَسْفَلَ: (حَتَّى يَقُولَ هٰكَذَا). بِسَبَّابَتَيْهِ، إِحْدَاهُمَا فَوْقَ ٱلأُخْرَى، ثُمَّ مَدَّهُمَا عَنْ يَمِينِهِ وَشِمَالِهِ. [رواه البخاري: ٦٢١]

बाब 12 : अज़ान और तकबीर के बीच अपनी मर्जी से (नफ्ल) नमाज़ पढ़ना।

١٢ - باب: بَيْنَ كُلِّ أَذَانَيْنِ صَلاَةٌ لِمَنْ شَاءَ

382 : अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल मुजनी रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार फरमाया, हर दो अज़ान के

٣٨٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ ٱلْمُزَنِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (بَيْنَ كُلِّ أَذَانَيْنِ صَلاَةٌ - ثَلاَثًا - لِمَنْ شَاءَ). وَفِي رِوَايَةٍ:

(بَيْنَ كُلِّ أَذَانَيْنِ صَلاَةٌ، بَيْنَ كُلِّ أَذَانَيْنِ صَلاَةٌ). ثُمَّ قَالَ فِي ٱلثَّالِثَةِ: (لِمَنْ شَاءَ). [رواه البخاري: ٦٢٧]

बीच नमाज़ है। अगर कोई पढ़ना चाहे, एक और रिवायत में है कि आपने फरमाया, हर दो अज़ान के बीच एक नमाज़ है। हर दो अज़ान के बीच नमाज़ है, फिर तीसरी दफा फरमाया, अगर कोई पढ़ना चाहे।

١٣ - باب: مَنْ قَالَ لِيُؤَذِّنْ فِي السَّفَرِ مُؤَذِّنٌ وَاحِدٌ

बाब 13 : सफर में चाहिए कि एक ही मोअज्जिन (अज़ान देने वाला) अज़ान दे।

٣٨٣ : عَنْ مالِكِ بْنِ ٱلْحُوَيْرِثِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَيْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ فِي نَفَرٍ مِنْ قَوْمِي، فَأَقَمْنَا عِنْدَهُ عِشْرِينَ لَيْلَةً، وَكَانَ رَحِيمًا رَفِيقًا، فَلَمَّا رَأَى شَوْقَنَا إِلَى أَهَالِينَا، قَالَ: (ٱرْجِعُوا فَكُونُوا فِيهِمْ، وَعَلِّمُوهُمْ، وَصَلُّوا، فَإِذَا حَضَرَتِ ٱلصَّلاَةُ فَلْيُؤَذِّنْ لَكُمْ أَحَدُكُمْ، وَلْيَؤُمَّكُمْ أَكْبَرُكُمْ). [رواه البخاري: ٦٢٨]

383 : मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं अपनी कौम के चन्द आदमियों के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और बीस रातें आपके पास ठहरे। आप इन्तहाई रहमदिल और बड़े मिलनसार थे। जब आपने देखा कि हमारा शौक घर वालों की तरफ है तो इरशाद फरमाया कि अपने घर लौट जाओ, अपने बीवी-बच्चों के साथ रहो, उन्हें दीन की तालिम दो और नमाज़ पढ़ा करो, अज़ान का वक्त आये तो तुम में कोई अज़ान कह दे और तुममें से जो बड़ा हो, वह इमामत कराये।

फायदे : इमाम बुखारी का मकसद यह है कि सफर में सुबह की दो अजानें न कही जायें, बल्कि एक अज़ान ही काफी है।

384 : मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. से ही रिवायत है कि दो आदमी (खुद मालिक और उनके एक दोस्त) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुये। वह सफर करना चाहते थे तो उनसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुम सफर के लिए निकलो और नमाज़ का वक्त आ जाये तो अज़ान देना और तकबीर कहना, फिर दोनों में वह इमामत कराये जो (उम्र में) बड़ा हो।

٣٨٤ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ فِي رِوَايَةٍ: أَتَى رَجُلاَنِ ٱلنَّبِيَّ ﷺ يُرِيدَانِ ٱلسَّفَرَ، فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (إِذَا أَنْتُمَا خَرَجْتُمَا، فَأَذِّنَا، ثُمَّ أَقِيمَا، ثُمَّ لِيَؤُمَّكُمَا أَكْبَرُكُمَا). [رواه البخاري: ٦٣٠]

बाब 14 : मुसाफिर अगर ज्यादा हों तो अज़ान और तकबीर कहनी चाहिए।

١٤ - باب: الأَذَانُ وَالإِقَامَةُ لِلْمُسَافِرِ إِذَا كَانُوا جَمَاعَةً

385 : इब्ने उमर रज़ि.से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफर की हालत में सर्दी या बारिश की रात अजान देने वाले को हुक्म फरमाते कि अज़ान और उसके बाद आवाज़ दे दो कि अपने अपने ठिकानों में नमाज़ पढ़ लो।

٣٨٥ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ يَأْمُرُ مُؤَذِّنًا يُؤَذِّنُ، ثُمَّ يَقُولُ عَلَى إِثْرِهِ: (أَلاَ صَلُّوا فِي ٱلرِّحَالِ). فِي ٱللَّيْلَةِ ٱلْبَارِدَةِ، أَوِ ٱلْمَطِيرَةِ فِي ٱلسَّفَرِ. [رواه البخاري: ٦٣٢]

फायदे : यह हुक्म सफर की हालत में, सर्दी या बरसात की रातों के लिए है, ऐसे हालात में जमाअत का अहत्तेमाम किया जा सकता है। (औनुलबारी, 1/698)

बाब 15 : आदमी का यह कह देना कि हमारी नमाज़ खत्म हो गई।

١٥ - باب: قَوْلُ الرَّجُلِ فَاتَتْنَا الصَّلاَةُ

386 : अबू कतादा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे, इतने में आपने कुछ लोगों का शौर सुना। जब आप नमाज़ से फारिग हुए तो फरमाया कि तुम्हारा क्या हाल है? उन्होंने अर्ज किया कि हमने नमाज़ में शामिल होने के लिए बहुत जल्दी की तो आपने फरमाया, आईन्दा ऐसा मत करना, बल्कि जब नमाज़ के लिए आओ तो वकार और सुकून का खयाल रखो और जिस कद्र नमाज़ मिले, पढ़ लो और जो रह जाये, उसे (बाद में) पूरा कर लो।

٣٨٦ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ نُصَلِّي مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، إِذْ سَمِعَ جَلَبَةَ الرِّجَالِ، فَلَمَّا صَلَّى قَالَ: (مَا شَأْنُكُمْ). قَالُوا: ٱسْتَعْجَلْنَا إِلَى ٱلصَّلاَةِ. قَالَ: (فَلاَ تَفعلُوا إِذَا أَتَيْتُمُ ٱلصَّلاَةَ فَعَلَيْكُمْ بِالسَّكِينَةِ، فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا، وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا). [رواه البخاري: ٦٣٥]

बाब 16 : तकबीर के वक्त लोग इमाम को देखकर कब खड़े हों?

١٦ - باب: مَتَى يَقُومُ النَّاسُ إِذَا رَأَوُا الإِمَامَ عِنْدَ الإِقَامَةِ

386 : अबू कतादा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब नमाज़ की तकबीर कही जाये तो तुम उस वक्त तक खड़े न हो, जब तक मुझे आता देख न लो।

٣٨٧ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا أُقِيمَتِ ٱلصَّلاَةُ فَلاَ تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي). [رواه البخاري: ٦٣٧]

फायदे : मालूम हुआ कि जब इमाम मस्जिद में न हो तो फिर इमाम के आने से पहले नमाजी खड़ें न हों, बल्कि उसे देखने के बाद नमाज़ के लिए उठें।

बाब 17 : तकबीर के बाद इमाम को अगर कोई जरूरत पेश आ जाये।

١٧ باب: الإمَام تَعْرِضُ لَهُ الحَاجَةُ بَعْدَ الإقَامَةِ

388 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि एक बार नमाज़ की तकबीर हो गई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद के एक कोने में किसी से धीरे धीरे बातें कर रहे थे और आप नमाज़ के लिए नहीं खड़े हुये, यहां तक कि कुछ लोगों को नींद आने लगी।

٣٨٨ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أُقِيمَتِ ٱلصَّلاَةُ، وَٱلنَّبِيُّ ﷺ يُنَاجِي رَجُلًا فِي جَانِبِ ٱلمَسْجِدِ، فَمَا قَامَ إِلَى ٱلصَّلاَةِ حَتَّى نَامَ ٱلْقَوْمُ. [رواه البخاري: ٦٤٢]

फायदे : सोने से मुराद ऊंघ है, जैसा कि इब्ने हिब्बान की रिवायत में है। हज़रत इमाम बुखारी का मकसद शरीअत की आसानी को बयान करना है। आज जबकि मसरूफियाते जिन्दगी (व्यस्त जिन्दगी) हद से बढ़ चुकी है, इसलिए इमाम को मुकतदियों का खयाल रखना जरूरी है। लेकिन नबी के तरीके को नजर अन्दाज न किया जाये।

बाब 18 : जमाअत के साथ नमाज का फर्ज होना।

١٨ - باب: وُجُوبِ صَلاَةِ الجَمَاعَةِ

389 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

٣٨٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ:

(وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ بِحَطَبٍ فَيُحْطَبَ، ثُمَّ آمُرَ بِالصَّلاَةِ فَيُؤَذَّنَ لَهَا، ثُمَّ آمُرَ رَجُلًا فَيَؤُمَّ النَّاسَ، ثُمَّ أُخَالِفَ إِلَى رِجَالٍ فَأُحَرِّقَ عَلَيْهِمْ بُيُوتَهُمْ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَوْ يَعْلَمُ أَحَدُهُمْ: أَنَّهُ يَجِدُ عَرْقًا سَمِينًا، أَوْ مِرْمَاتَيْنِ حَسَنَتَيْنِ، لَشَهِدَ الْعِشَاءَ). [رواه البخاري: ٦٤٤]

वसल्लम ने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है। मैंने इरादा कर लिया था कि लकड़ियां जमा करने का हुक्म दूँ। फिर नमाज़ के लिए अज़ान का हुक्म दूँ, फिर किसी आदमी को हुक्म दूँ कि वह लोगों का इमाम बने और खुद मैं उन लोगों के पास जाऊँ (जो जमाअत में हाजिर नहीं होते) फिर उन्हें उनके घरों समेत जला दूँ। कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है। अगर उनमें किसी को यह मालूम हो जाये कि वह (मस्जिद में) मोटी हड्डी या दो उम्दा गोश्त वाली हड्डियां पायेगा तो इशा की नमाज़ में जरूर हाजिर होगा।

١٩ - باب: فَضْلُ صَلاَةِ الجَمَاعَةِ

बाब 19 : जमाअत के साथ नमाज़ की फजीलत।

٣٩٠ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: (صَلاَةُ الْجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَلاَةَ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَعِشْرِينَ دَرَجَةً). [رواه البخاري: ٦٤٥]

390 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जमाअत के साथ नमाज अकेले आदमी की नमाज़ से सत्ताईस दर्जे ज्यादा फजीलत रखती है।

फायदे : जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वालों के इख्लास और तकवे में कमी और ज्यादती की वजह से सवाब में भी कमी और ज्यादती

होती है। यही वजह है कि अगली रिवायत में पच्चीस दर्जो का जिक्र है। (औनुलबारी, 1/706)

बाब 20 : फज्र की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने की फजीलत।

٢٠ باب: فَضْلُ صَلاَةِ الفَجْرِ في جَمَاعَةٍ

391 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना है कि जमाअत के साथ नमाज़ अकेले की नमाज से सवाब में पच्चीस दर्जे ज्यादा है और रात दिन के फरिश्ते फज्र की नमाज में जमा होते हैं। फिर अबू हुरैरा रज़ि. ने कहा, अगर चाहो तो यह आयत पढ़ लो। फज्र में कुरआन की तिलावत पर फरिश्ते हाजिर होते हैं। (बनी इस्राईल 78)

٣٩١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (تَفْضُلُ صَلاَةُ ٱلْجَمِيعِ صَلاَةَ أَحَدِكُمْ وَحْدَهُ، بِخَمْسٍ وَعِشْرِينَ جُزْءًا، وَتَجْتَمِعُ مَلاَئِكَةُ ٱللَّيْلِ وَمَلاَئِكَةُ ٱلنَّهَارِ فِي صَلاَةِ ٱلْفَجْرِ). ثُمَّ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَاقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ: ﴿إِنَّ قُرْءَانَ ٱلْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا﴾. [رواه البخاري: ٦٤٨]

392 : अबू मूसा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सबसे ज्यादा नमाज़ का सवाब उस आदमी को मिलता है जो (मस्जिद तक) दूर से चलकर आता है। फिर (दर्जा-बदर्जा) वह जो सब से ज्यादा दूरी तय करके आता

٣٩٢ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (أَعْظَمُ ٱلنَّاسِ أَجْرًا فِي ٱلصَّلاَةِ أَبْعَدُهُمْ فَأَبْعَدُهُمْ مَمْشًى، وَٱلَّذِي يَنْتَظِرُ ٱلصَّلاَةَ، حَتَّى يُصَلِّيَهَا مَعَ ٱلإِمَامِ، أَعْظَمُ أَجْرًا مِنَ ٱلَّذِي يُصَلِّي ثُمَّ يَنَامُ). [رواه البخاري: ٦٥١]

है। और जो आदमी इन्तिजार करे कि इमाम के साथ नमाज़ पढ़े, उसका सवाब उस आदमी से ज्यादा है जो जल्दी से (पहले ही) नमाज़ पढ़कर सो जाता है।

फायदे : इस हदीस का उनवान से ताल्लुक इस तरह है कि जैसे दूर से आने वाले को तकलीफ की वजह से ज्यादा सवाब मिलता है, सो ऐसे ही फज्र की नमाज आमतौर पर दुश्वार गुजरती है। जिसकी वजह से ज्यादा सवाब की हकदार है।

बाब 21 : जुहर की नमाज अव्वल वक्त पढ़ने की फजीलत।

٢١ - باب: فَضْلُ التَّهْجِيرِ إلى الظُّهْرِ

393 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, एक आदमी रास्ते में जा रहा था, कि उसने कांटों भरी टहनी देखी तो उसे हटा दिया। अल्लाह तआला को उसका यह काम पसन्द आया और उसे बख्श दिया। फिर आपने फरमाया कि शहीद पांच किस्म के लोग हैं। ताऊन की बीमारी में मरने वाले, पेट की तकलीफ से मरने वाले, डूबकर मरने वाले, दब कर मरने वाले और अल्लाह की राह में जिहाद करते हुए शहीद होने वाले। हदीस का बाकी हिस्सा (378) पहले गुजर गया है।

٣٩٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِي بِطَرِيقٍ، وَجَدَ غُصْنَ شَوْكٍ عَلَى ٱلطَّرِيقِ فَأَخَّرَهُ، فَشَكَرَ ٱللهُ لَهُ فَغَفَرَ لَهُ).
ثُمَّ قَالَ: (ٱلشُّهَدَاءُ خَمْسَةٌ: ٱلْمَطْعُونُ، وَٱلْمَبْطُونُ، وَٱلْغَرِيقُ، وَصَاحِبُ ٱلْهَدْمِ، وَٱلشَّهِيدُ فِي سَبِيلِ ٱللهِ). وباقي الحديث تقدّم [رواه البخاري: ٦٥٣٢]

फायदे : इसी हदीस के कुछ हिस्सों में है कि लोगों को अगर मालूम हो जाये कि जुहर की नमाज के लिए जल्दी आने का कितना सवाब

है तो जरूर पहल करें। (अलअजान, 654)

बाब 22 :(मस्जिद आते वक्त) हर कदम पर सवाब की नियत करना।

٢٢ - باب: اختِسَابُ الآثارِ

394 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि बनू सलमा ने मकान बदल करके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करीब रहने का इरादा किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे नापसन्द फरमाया कि मदीना को वीरान कर दें। चूनांचे आपने (तरगीब देते हुए) फरमाया कि तुम अपने कदमों के बदले सवाब के तलबगार क्यों नहीं हो?

٣٩٤ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ بَنِي سَلِمَةَ أَرَادُوا أَنْ يَتَحَوَّلُوا عَنْ مَنَازِلِهِمْ، فَيَنْزِلُوا قَرِيبًا مِنَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: فَكَرِهَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَنْ يُعْرُوا الْمَدِينَةَ، فَقَالَ: (أَلاَ تَحْتَسِبُونَ آثَارَكُمْ). [رواه البخاري: ٦٥٦]

बाब 23 : इशा की नमाज जमाअत के साथ अदा करने की फजीलत।

٢٣ - باب: فَضْلِ صَلاَةِ العِشَاءِ فِي الجَمَاعَةِ

395 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, फज्र और इशा की नमाज़ से ज्यादा और कोई नमाज़ मुनाफिकों पर भारी नहीं है। अगर वह जान लें कि इन दोनों में क्या सवाब है? तो इनके लिए आयें, अगरचे घूटनों के बल चलकर आना पड़े।''

٣٩٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنهُ قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (لَيْسَ صَلاَةٌ أَثْقَلَ عَلَى ٱلْمُنَافِقِينَ مِنَ ٱلْفَجْرِ وَٱلْعِشَاءِ، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِيهِمَا لأَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا) [رواه البخاري: ٦٥٧].

फायदे : मालूम हुआ कि इशा और फज्र की जमाअत दीगर नमाजों की जमाअत से ज्यादा फजीलत रखती है। (औनुलबारी, 1/712)

बाब 24 : मस्जिदें और उनमें नमाज़ के इन्तजार में बैठने की फजीलत।

٢٤ - باب: مَنْ جَلَسَ فِي المَسْجِدِ يَنْتَظِرُ الصَّلاَةَ وَفَضْلُ المَسَاجِدِ

396 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सात किस्म के लोगों को अल्लाह तआला अपने साये में जगह देगा, जिस रोज उसके साये के अलावा और कोई साया न होगा। इन्साफ करने वाला बादशाह, वह नौजवान जो अपने रब की इबादत में परवान चढ़े, वह आदमी जिसका दिल मस्जिदों में लटका रहता हो, वह दो आदमी जो अल्लाह के लिए दोस्ती करें, इक्टठें हो तो अल्लाह के लिए और अलग हों तो अल्लाह के लिए, वह आदमी जिसे कोई खुबसूरत और मर्तबे वाली औरत बुराई की दावत दे और वह आदमी जो इस कद्र छुपे तौर पर सदका दे कि उसके बायें हाथ को भी पता न हो कि दायां हाथ क्या खर्च करता है। सातवां वह आदमी जो तन्हाई में अल्लाह को याद करे तो अपने आप आंखों से आंसू निकल पड़े।

٣٩٦ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ ٱللهُ فِي ظِلِّهِ، يَوْمَ لاَ ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ: ٱلإِمَامُ ٱلْعَادِلُ، وَشَابٌّ نَشَأَ فِي عِبَادَةِ رَبِّهِ، وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُعَلَّقٌ فِي ٱلْمَسَاجِدِ، وَرَجُلاَنِ تَحَابَّا فِي ٱللهِ ٱجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ، وَرَجُلٌ طَلَبَتْهُ ٱمْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ، فَقَالَ إِنِّي أَخَافُ ٱللهَ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ، أَخْفَى حَتَّى لاَ تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِينُهُ، وَرَجُلٌ ذَكَرَ ٱللهَ خَالِيًا، فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ). [رواه البخاري: ٦٦٠]

फायदे : याद रहे कि यह फजीलत सिर्फ सात किस्म के लोगों के लिए खास नहीं, बल्कि अल्लाह की रहमत का यह आलम है कि दूसरी

हदीसों में इस किस्म के लोगों की तादाद तकरीबन सत्तर तक पहुंचती है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुख्तलिफ हालतों और जगहों के पेशे नजर बयान की है।

(औनुलबारी, 1/716)

बाब 25 : सुबह या शाम मस्जिद में जाने वाले की फजीलत।

٢٥ - باب: فَضْلُ مَنْ غَدَا أَوْ رَاحَ إِلَى الْمَسْجِدِ

397 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो आदमी सुबह और शाम मस्जिद में बार बार जाये तो अल्लाह तआला जन्नत से उसकी इतनी बार मेहमानी करेगा, जितनी बार वह मस्जिद में गया होगा।

٣٩٧ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ غَدَا إِلَى ٱلْمَسْجِدِ وَرَاحَ، أَعَدَّ ٱللهُ لَهُ نُزُلَهُ مِنَ ٱلْجَنَّةِ، كُلَّمَا غَدَا أَوْ رَاحَ). [رواه البخاري: ٦٦٢]

बाब 26 : नमाज़ की तकबीर के बाद फर्ज नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं पढ़ना चाहिए।

٢٦ - باب: إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ صَلاَةَ إِلَّا الْمَكْتُوبَةَ

398 : अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुहैना रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को दो रकअत नमाज़ पढ़ते देखा, जबकि नमाज़ की तकबीर हो चुकी थी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

٣٩٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ، رَجُلٍ مِنَ ٱلأَزْدِ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ رَأَى رَجُلًا وَقَدْ أُقِيمَتِ ٱلصَّلاَةُ، يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ، فَلَمَّا ٱنْصَرَفَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لاَثَ بِهِ ٱلنَّاسُ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (آلصُّبْحَ أَرْبَعًا، آلصُّبْحَ أَرْبَعًا؟). [رواه البخاري: ٦٦٣]

वसल्लम नमाज़ से फारिग हुए तो लोगों ने उस आदमी को घेर लिया तो तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस आदमी से फरमाया, क्या सुबह की चार रकअतें हैं? क्या सुबह की चार रकअतें हैं?

फायदे : यह उनवान बजाये खुद एक हदीस है, जिसे इमाम मुस्लिम ने बयान किया है। कुछ रिवायतों में है कि जब नमाज़ खड़ी जो जाये तो फज्र की सुन्नतें भी न पढ़ें। हमारे यहां कुछ हजरात इस हदीस की खुले तौर पर खिलाफवर्जी करते हैं और नमाज़ खड़ी होने के बाद भी सुन्नतें पढ़ते रहते हैं। (औनुलबारी, 1/720)

बाब 27 : मरीज को किस हद तक जमाअत में आना चाहिए।

٢٧ - باب: حَدُّ المَرِيضِ أَنْ يَشْهَدَ الجَمَاعَةَ

399 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी वफात के मर्ज में मुब्तला हुये और नमाज़ के वक्त अज़ान हुई तो आपने फरमाया, अबू बकर रज़ि. से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ायें। उस वक्त आपसे कहा गया कि अबू बकर रज़ि. बड़े नरम दिल इन्सान हैं, जब वह आपकी जगह खड़े होंगे तो (गम की शिद्दत से) लोगों को नमाज़ न पढ़ा सकेंगे। आपने दोबारा वही हुक्म दिया तो फिर

٣٩٩ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا مَرِضَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مَرَضَهُ ٱلَّذِي مَاتَ فِيهِ، فَحَضَرَتِ ٱلصَّلاَةُ، فَأُذِّنَ، فَقَالَ: (مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ). فَقِيلَ لَهُ: إِنَّ أَبَا بَكْرٍ رَجُلٌ أَسِيفٌ، إِذَا قَامَ مَقَامَكَ لَمْ يَسْتَطِعْ أَنْ يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ، وَأَعَادَ فَأَعَادُوا لَهُ، فَأَعَادَ ٱلثَّالِثَةَ فَقَالَ: (إِنَّكُنَّ صَوَاحِبُ يُوسُفَ، مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ). فَخَرَجَ أَبُو بَكْرٍ فَصَلَّى، فَوَجَدَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ مِنْ نَفْسِهِ خِفَّةً، فَخَرَجَ يُهَادَى بَيْنَ رَجُلَيْنِ، كَأَنِّي أَنْظُرُ رِجْلَيْهِ يَخُطَّانِ مِنَ ٱلْوَجَعِ، فَأَرَادَ أَبُو بَكْرٍ أَنْ يَتَأَخَّرَ، فَأَوْمَأَ إِلَيْهِ

النَّبِيُّ ﷺ أَنْ مَكَانَكَ، ثُمَّ أُتِيَ بِهِ حَتَّى جَلَسَ إِلَى جَنْبِهِ. وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي، وَأَبُو بَكْرٍ يُصَلِّي بِصَلَاتِهِ، وَالنَّاسُ يُصَلُّونَ بِصَلَاةِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ. وفي رواية: جَلَسَ عَنْ يَسَارِ أَبِي بَكْرٍ، فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يُصَلِّي قَائِمًا. [رواه البخاري: ٦٦٤]

वही अर्ज किया, आपने तीसरी बार वही कहा और फरमाया, तुम तो यूसुफ अलैहि.की हमनशीन औरतें मालूम होती हो। अबू बकर रज़ि. से कहो, वह लोगों को नमाज़ पढ़ायें। चूनाँचे अबू बकर रज़ि. नमाज पढ़ाने चले गये, बाद में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मर्ज से कुछ कमी महसूस फरमायी तो आप दो आदमीयों के बीच सहारा लेकर निकले। गोया मैं अब भी आपके दोनों पैरों की तरफ देख रही हूँ कि बीमारी की कमजोरी की वजह से जमीन पर घसीटते जाते थे। अबू बकर रज़ि. ने आपको देखकर पीछे हटना चाहा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशारा फरमाया कि अपनी जगह पर रहो। फिर आपको लाया गया ताकि आप अबू बकर रज़ि. के पहलूं में बैठ गये। फिर आपने नमाज़ शुरू की तो अबू बकर ने आपकी पैरवी की। जबकि बाकी लोगों ने अबू बकर रज़ि. की पैरवी में नमाज़ पढ़ी, एक रिवायत है कि आप अबू बकर रजि. की बायी तरफ बैठ गये, जबकि अबू बकर रज़ि. ने खड़े होकर नमाज़ अदा की।

फायदे : मकसद यह है कि जब तक मरीज किसी न किसी तरह मस्जिद में पहुंच सकता है तो उसे मस्जिद में जमाअत के लिए आना चाहिए। चाहे दूसरे आदमी का सहारा ही क्यों न लेना पड़े। नीज हजरत अबू बकर की खिलाफत की सच्चाई पर इस से ज्यादा खुली दलील और क्या हो सकती है।

---

400 : आइशा रज़ि. से ही रिवायत है

٤٠٠ : وَعَنْهَا - رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

- في رواية قالت: لَمَّا ثَقُلَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ وَٱشْتَدَّ وَجَعُهُ ٱسْتَأْذَنَ أَزْوَاجَهُ أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِي فَأَذِنَّ لَهُ. وباقي الحديث تقدم آنفًا. [رواه البخاري: ٦٦٥]

कि उन्होंने फरमाया, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बीमार हुए और बीमारी शिद्दत इख्तेयार कर गयी तो आपने अपनी बीवियों से इजाजत चाही कि मेरे घर आपकी तीमारदारी की जाये तो सब ने इजाजत दे दी, बाकी हदीस (399) अभी अभी गुजरी है।

٢٨ - باب: هَلْ يُصَلِّي الإِمَامُ بِمَنْ حَضَرَ وَهَلْ يَخْطُبُ يَوْمَ الجُمُعَةِ فِي المَطَرِ

बाब 28 : क्या जितने लोग मौजूद हों इमाम उन्हें नमाज़ पढ़ा दे? क्या जुमे के दिन बारिश में खुतबा पढ़े।

٤٠١ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّه خَطَبَ النَّاسَ فِي يَوْمٍ ذِي رَدْغٍ، فَأَمَرَ ٱلْمُؤَذِّنَ لَمَّا بَلَغَ حَيَّ عَلَى ٱلصَّلاَةِ قَالَ: قُلِ ٱلصَّلاَةُ فِي ٱلرِّحَالِ، فَنَظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ، كَأَنَّهُمْ أَنْكَرُوا، فَقَالَ: كَأَنَّكُمْ أَنْكَرْتُمْ هٰذَا، إِنَّ هٰذَا فَعَلَهُ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي - يَعْنِي ٱلنَّبِيَّ ﷺ - إِنَّهَا عَزْمَةٌ، وَإِنِّي كَرِهْتُ أَنْ أُخْرِجَكُمْ. [رواه البخاري: ٦٦٨]

401 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने बारिश और कीचड़ के दिन लोगों के सामने खुतबा दिया और अज़ान देने वाले को हुक्म दिया कि जब वह हय्या अलस्सलाह पर पहुंचे तो यूँ कह दे, अपने अपने घरों पर नमाज़ पढ़ लें, लोग एक दूसरे की तरफ देखने लगे। गोया उन्होंने इसे बुरा समझा। इब्ने अब्बास रज़ि. ने फरमाया ऐसा मालूम होता है कि तुमने इसे बुरा ख्याल किया है, हालांकि यह काम उस आदमी ने किया जो मुझसे कहीं बेहतर है यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। चूंकि अज़ान से मस्जिद

में आना जरूरी हो जाता है। इसलिए मैंने अच्छा न समझा कि तुम्हें तकलीफ़ में डाल दूं।

402 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक अन्सारी आदमी ने (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से) अर्ज किया कि मैं आपके साथ नमाज़ नहीं पढ़ सकता, क्योंकि वह मोटा आदमी था। फिर उसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए खाना तैयार किया और आपको अपने घर आने की दावत दी और आपके लिए चटाई बिछाई, चटाई के एक किनारे को धोया, उस पर आपने दो रकअत अदा कीं तो जारूद की औलाद में से एक आदमी ने अनस रज़ि. से पूछा, क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चाश्त (अजजुहा) की नमाज़ पढ़ा करते थे? अनस रज़ि. ने जवाब दिया कि मैंने इस रोज के अलावा कभी आपको यह नमाज़ पढ़ते नहीं देखा है।

٤٠٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ مِنَ ٱلأَنْصَارِ: إِنِّي لاَ أَسْتَطِيعُ ٱلصَّلاَةَ مَعَكَ، وَكَانَ رَجُلًا ضَخْمًا، فَصَنَعَ لِلنَّبِيِّ ﷺ طَعَامًا، فَدَعَاهُ إِلَى مَنْزِلِهِ، فَبَسَطَ لَهُ حَصِيرًا، وَنَضَحَ طَرَفَ ٱلْحَصِيرِ، صَلَّى عَلَيْهِ رَكْعَتَيْنِ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ آلِ ٱلْجَارُودِ لِأَنَسٍ: أَكَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي ٱلضُّحَى؟ قَالَ: مَا رَأَيْتُهُ صَلاَّهَا إِلَّا يَوْمَئِذٍ. [رواه البخاري: ٦٧٠]

फायदे : मालूम हुआ कि माजूर अगर जुमे की नमाज में शामिल न हो सके तो उन्हें घर में नमाज़ पढ़ने की इजाजत है, यानी मुनासिब वजह की बिना पर जमाअत से पीछे रह जाना जाइज है।

बाब 29 : तकबीर के बीच अगर खाना आ जाये तो क्या करना चाहिए?

٢٩ - باب: إِذَا حَضَرَ الطَّعَامُ وَأُقِيمَتِ الصَّلاَةُ

403 : अनस रज़ि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

٤٠٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: «إِذَا قُدِّمَ

ٱلْعَشَاءُ فَابْدَؤُوا بِهِ قَبْلَ أَنْ تُصَلُّوا صَلاَةَ ٱلْمَغْرِبِ، وَلاَ تَعْجَلُوا عَنْ عَشَائِكُمْ). [رواه البخاري: ٦٧٢]

वसल्लम ने फरमाया कि जब खाना सामने रख दिया जाये तो मगरिब की नमाज़ से पहले खाना खाओ और अपना खाना छोड़ कर नमाज़ के लिए जल्दी न करो।

फायदे : मकसद यह है कि भूख के वक्त अगर खाना तैयार हो तो पहले उससे फारिग हो जाना चाहिए ताकि नमाज़ पूरे सुकून से अदा की जाये, इससे यह भी मालूम हुआ कि नमाज़ में तकवे की अहमियत अव्वल वक्त से ज्यादा है। (औनुलबारी, **1/728**)

٣٠ - باب: مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَهْلِهِ فَأُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَخَرَجَ

बाब 30 : जमाअत खड़ी हो जाये तो घरेलू काम छोड़ कर नमाज़ में शरीक होना चाहिए।

٤٠٤ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّهَا سئلت عن النَّبِيِّ ﷺ: مَا كَانَ يَصْنَعُ فِي بَيْتِهِ؟ قَالَتْ: كَانَ يَكُونُ فِي مِهْنَةِ أَهْلِهِ، تَعْنِي خِدْمَةَ أَهْلِهِ، فَإِذَا حَضَرَتِ ٱلصَّلاَةُ خَرَجَ إِلَى ٱلصَّلاَةِ. [رواه البخاري: ٦٧٦]

404 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि उनसे सवाल किया गया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में क्या करते थे, उन्होंने जवाब दिया कि अपने घर वालों की खिदमत में लगे रहते और जब नमाज़ का वक्त आ जाता तो आप नमाज़ के लिए तशरीफ ले जाते।

फायदे : इमाम बुखारी का मकसद यह है कि खाने के अलावा दीगर दुनियावी कामों की इतनी हैसियत नहीं है कि उनके पेशे नजर नमाज़ को टाल दिया जाये।

٣١ - باب: مَنْ صَلَّى بِالنَّاسِ وَيُرِيدُ

बाब 31 : मसनून तरीका सिखाने के

أنْ يُعَلِّمَهُمْ صَلاةَ النَّبِيِّ ﷺ وَسُنَّتَهُ

लिए लोगों के सामने नमाज़ पढ़ना।

٤٠٥ : عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنِّي لأُصَلِّي بِكُمْ وَمَا أُرِيدُ الصَّلاةَ، أُصَلِّي كَيْفَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي. [رواه البخاري: ٦٧٧]

405 : मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने एक बार फरमाया कि मैं तुम्हारे सामने नमाज़ पढ़ता हूँ हालांकि मेरी नियत नमाज़ पढ़ने की नहीं है। मेरा मकसद सिर्फ यह है कि वह तरीका सिखा दूं जिस तरीके से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ा करते थे।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि तालीम की नियत से नमाज़ पढ़ना जाइज है और ऐसा करना रियाकारी या इबादत में शिर्क नहीं है। (औनुलबारी, **1/730**)

٣٢ - باب: أَهْلُ الْعِلْمِ وَالْفَضْلِ أَحَقُّ بِالإِمَامَةِ

बाब **32** : इल्म और फज़्ल वाला इमामत का ज़्यादा हकदार है।

٤٠٦ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا حديث: مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ، تقدم، وفي هذه الرواية قالت: قُلْتُ: إِنَّ أَبَا بَكْرٍ إِذَا قَامَ فِي مَقَامِكَ، لَمْ يُسْمِعِ النَّاسَ مِنَ الْبُكَاءِ، فَمُرْ عُمَرَ فَلْيُصَلِّ لِلنَّاسِ. فَقَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ لِحَفْصَةَ: قُولِي لَهُ: إِنَّ أَبَا بَكْرٍ إِذَا قَامَ فِي مَقَامِكَ، لَمْ يُسْمِعِ النَّاسَ مِنَ الْبُكَاءِ، فَمُرْ عُمَرَ فَلْيُصَلِّ لِلنَّاسِ، فَفَعَلَتْ حَفْصَةُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (مَهْ،

406 : आइशा रज़ि. से रिवायत करदा हदीस (**399**) है कि अबू बकर रज़ि. को कह दो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ायें, पहले गुजर चुकी है। वह इस रिवायत में फरमाती हैं कि मैंने अर्ज किया, अबू बकर रज़ि. आपकी जगह खड़े होकर (गम की वजह से) रोने लगेंगे, इस वजह से लोगों को उनकी आवाज़ नहीं सुनाई देगी। लिहाजा

إِنَّكُنَّ لأَنْتُنَّ صَوَاحِبُ يُوسُفَ، مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ). فَقَالَتْ حَفْصَةُ لِعَائِشَةَ: مَا كُنْتُ لِأُصِيبَ مِنْكِ خَيْرًا. [رواه البخاري: ٦٧٩]

आप उमर रज़ि. को हुक्म दें कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाये। आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि मैंने हफ्सा रज़ि. से कहा, तुम भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहो कि अबू बकर रज़ि. आपकी जगह खड़े होंगे तो रोने के सबब लोगों को आवाज़ न सुना सकेंगे। इस लिए आप उमर रज़ि. को हुक्म दें कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ायें। चूनांचे हफ्सा रज़ि. ने अर्ज किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, खामोश रहो, यकीनन तुम यूसुफ अलैहि. की हमनशीन औरतों की तरह हो। अबू बकर रज़ि. को कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ायें। इस पर हफ्सा रज़ि. ने आइशा रज़ि. से कहा, मैंने कभी तुमसे कोई फायदा न पाया।

फायदे : इस बाब से इमाम बुखारी का मकसद यह है कि इमामत के लिए इल्म व फज्ल वाले को चुना जाये। दीन से नावाकिफ (अन्जान) इस ओहदे के लायक नहीं, चाहे कारी ही क्यों न हो।

---

٤٠٧ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ كَانَ يُصَلِّي لَهُمْ فِي وَجَعِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ ٱلَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمُ ٱلاثْنَيْنِ، وَهُمْ صُفُوفٌ فِي ٱلصَّلَاةِ، فَكَشَفَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ سِتْرَ ٱلْحُجْرَةِ، يَنْظُرُ إِلَيْنَا وَهُوَ قَائِمٌ، كَأَنَّ وَجْهَهُ وَرَقَةُ مُصْحَفٍ، ثُمَّ تَبَسَّمَ يَضْحَكُ، فَهَمَمْنَا أَنْ نَفْتَتِنَ مِنَ ٱلْفَرَحِ بِرُؤْيَةِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَنَكَصَ أَبُو بَكْرٍ عَلَى عَقِبَيْهِ

407 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि अबू बकर सिद्दीक रज़ि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौत के मर्ज में लोगों को नमाज़ पढ़ाते थे। पीर के दिन जब लोगों ने नमाज़ के लिए सफ बन्दी की तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुजरे का पर्दा उठाया और खड़े होकर हम लोगों की

لِيَصِلَ ٱلصَّفَّ، وَظَنَّ أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ خَارِجٌ إِلَى ٱلصَّلَاةِ، فَأَشَارَ إِلَيْنَا ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (أَنْ أَتِمُّوا صَلَاتَكُمْ). وَأَرْخَى ٱلسِّتْرَ، فَتُوُفِّيَ مِنْ يَوْمِهِ. [رواه البخاري: ٦٨٠]

तरफ देखने लगे। उस वक्त आप का चेहरा (हुस्न व जमाल और सफाई में) गोया कुरआन का वरक था। फिर खुशी के साथ मुस्कुराये तो हम लोगों को ऐसी खुशी हुई कि खतरा हो गया, कहीं हम आपको देखने में मशगूल हो जायें (नमाज़ से तवज्जो हट जाये।)। उसके बाद अबू बकर रज़ि. अपने उल्टे पांव पीछे लौटने लगे ताकि सफ में शामिल हो जायें। वह समझे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिए तशरीफ ला रहे हैं। लेकिन आपने हमारी तरफ इशारा फरमाया कि अपनी नमाज़ पूरी कर लो। यह फरमाकर आपने पर्दा डाल दिया और उसी दिन आपने वफात पायी।

फायदे : इस हदीस से वाजेह तौर पर साबित होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात तक हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि. नमाज़ पढ़ाने के लिए आपके खलीफा रहे। शिआ हजरात का यह गलत परोपगण्डा है कि आपने खुद आकर अबू बकर सिद्दीक रजि. को इमामत से हटा दिया था।

(औनुलबारी, 1/732)

---

٣٣ - باب: مَنْ دَخَلَ لِيَؤُمَّ النَّاسَ فَجَاءَ الإِمَامُ الأَوَّلُ

बाब 33 : एक आदमी ने इमामत शुरू कर दी, इतने में पहला इमाम आ जाये (तो क्या करना चाहिए)

٤٠٨ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ

408 : सहल बिन सअद रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

ٱلسَّاعِدِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ ذَهَبَ إِلَى بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ لِيُصْلِحَ بَيْنَهُمْ، فَحَانَتِ ٱلصَّلَاةُ، فَجَاءَ ٱلْمُؤَذِّنُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ، فَقَالَ: أَتُصَلِّي لِلنَّاسِ فَأُقِيمَ؟ قَالَ: نَعَمْ: فَصَلَّى أَبُو بَكْرٍ، فَجَاءَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَٱلنَّاسُ فِي ٱلصَّلَاةِ، فَتَخَلَّصَ حَتَّى وَقَفَ فِي ٱلصَّفِّ، فَصَفَّقَ ٱلنَّاسُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ لَا يَلْتَفِتُ فِي صَلَاتِهِ، فَلَمَّا أَكْثَرَ ٱلنَّاسُ ٱلتَّصْفِيقَ ٱلْتَفَتَ، فَرَأَى رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، فَأَشَارَ إِلَيْهِ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَنِ ٱمْكُثْ مَكَانَكَ). فَرَفَعَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ يَدَيْهِ، فَحَمِدَ ٱللهَ عَلَى مَا أَمَرَ بِهِ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مِنْ ذٰلِكَ، ثُمَّ ٱسْتَأْخَرَ أَبُو بَكْرٍ حَتَّى ٱسْتَوَى فِي ٱلصَّفِّ، وَتَقَدَّمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَصَلَّى، فَلَمَّا ٱنْصَرَفَ قَالَ: (يَا أَبَا بَكْرٍ، مَا مَنَعَكَ أَنْ تَثْبُتَ إِذْ أَمَرْتُكَ). فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَا كَانَ لِابْنِ أَبِي قُحَافَةَ أَنْ يُصَلِّيَ بَيْنَ يَدَيْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَا لِي رَأَيْتُكُمْ أَكْثَرْتُمُ ٱلتَّصْفِيقَ، مَنْ رَابَهُ شَيْءٌ فِي صَلَاتِهِ فَلْيُسَبِّحْ، فَإِنَّهُ إِذَا سَبَّحَ ٱلْتُفِتَ إِلَيْهِ، وَإِنَّمَا ٱلتَّصْفِيقُ لِلنِّسَاءِ). [رواه البخاري: ٦٨٤]

वसल्लम अम्र बिन औफ के कबीले में सुलह कराने के लिए तशरीफ ले गये। जब नमाज़ का वक्त आ गया तो अज़ान देने वाले ने अबू बकर रज़ि. के पास आकर कहा, अगर तुम नमाज़ पढ़ाओ तो मैं तकबीर कह दूं। उन्होंने फरमाया, ''हां''। पस अबू बकर रज़ि. नमाज़ पढ़ाने लगे। इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये और लोग नमाज़ में थे, आप सफों में से गुजर कर पहली सफ में पहुंचे। इस पर लोग तालियां बजाने लगे, लेकिन अबू बकर रज़ि. अपनी नमाज़ में इधर-उधर न देखते थे। जब लोगों ने लगातार तालियाँ बजायीं तो अबू बकर रज़ि. मुतवज्जो हुये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दे था। आपने उन्हें इशारा किया कि तुम अपनी जगह पर ठहरे रहो। इस पर अबू बकर रज़ि. ने अपने दोनों हाथ उठाकर अल्लाह का शुक्र अदा किया कि रसूलुल्लाह ने उन्हें इमामत की इज्जत बख्शी। फिर वह पीछे हट

गये और सफ में शामिल हो गये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आगे बढ़ गये और नमाज़ पढ़ाई। फिर आपने फारिग होकर फरमाया, ऐ अबू बकर रज़ि. जब मैंने तुम्हें हुक्म दिया था तो तुम क्यों खड़े न रहे, तो अबू बकर रज़ि. ने अर्ज किया कि अबू कहाफा के बेटे की क्या मजाल कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगे नमाज़ पढ़ाये? फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, क्या वजह है, मैंने तुम्हें बहुत ज्यादा तालियाँ बजाते देखा? देखो जब नमाज़ में किसी को कोई बात पेश आये तो उसे सुबहानल्लाह कहना चाहिए, क्योंकि जब वह सुबहानल्लाह कहेगा तो उसकी तरफ तवज्जो दी जायेगी और यह ताली बजाना तो सिर्फ औरतों के लिए है।

फायदे : मालूम हुआ कि अगर किसी मजबूरी के पेशे नजर मुकर्ररा इमाम के अलावा किसी दूसरे को इमाम बना लिया जाये, फिर नमाज़ के शुरू में मुकर्ररा इमाम आ पहुंचे तो उसे इख्तियार है, खुद इमाम बन जाये या मुकतदी रहकर नमाज़ मुकम्मल कर ले। दोनों सूरतों में नमाज़ दुरस्त है। (औनुलबारी, **1/734**)

बाब **34** : इमाम इसलिए बनाया जाता है कि उसकी पैरवी की जाये।

٣٤ - باب: إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ

409 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बीमार हुए तो आपने पूछा, क्या लोग नमाज़ पढ़ चुके हैं? हमने अर्ज किया नहीं ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वह

٤٠٩ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا ثَقُلَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ قَالَ: (أَصَلَّى ٱلنَّاسُ؟). قُلْنَا: لاَ يَا رَسُولَ اللهِ، هُمْ يَنْتَظِرُونَكَ، قَالَ: (ضَعُوا لِي مَاءً فِي ٱلْمِخْضَبِ). قَالَتْ: فَفَعَلْنَا، فَاغْتَسَلَ، فَذَهَبَ لِيَنُوءَ فَأُغْمِيَ عَلَيْهِ، ثُمَّ أَفَاقَ، فَقَالَ ﷺ: (أَصَلَّى ٱلنَّاسُ؟). قُلْنَا: لاَ،

هُمْ يَنْتَظِرُونَكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (ضَعُوا لِي مَاءً فِي ٱلْمِخْضَبِ). قَالَتْ: فَقَعَدَ فَاغْتَسَلَ، ثُمَّ ذَهَبَ لِيَنُوءَ فَأُغْمِيَ عَلَيْهِ، ثُمَّ أَفَاقَ فَقَالَ: (أَصَلَّى ٱلنَّاسُ؟). قُلْنَا: لاَ، هُمْ يَنْتَظِرُونَكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَقَالَ: (ضَعُوا لِي مَاءً فِي ٱلْمِخْضَبِ). فَقَعَدَ فَاغْتَسَلَ، ثُمَّ ذَهَبَ لِيَنُوءَ فَأُغْمِيَ عَلَيْهِ، ثُمَّ أَفَاقَ فَقَالَ: (أَصَلَّى ٱلنَّاسُ؟). فَقُلْنَا: لاَ، هُمْ يَنْتَظِرُونَكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَٱلنَّاسُ عُكُوفٌ فِي ٱلْمَسْجِدِ، يَنْتَظِرُونَ ٱلنَّبِيَّ ﷺ لِصَلاَةِ ٱلْعِشَاءِ ٱلآخِرَةِ، فَأَرْسَلَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ إِلَى أَبِي بَكْرٍ: بِأَنْ يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ، فَأَتَاهُ ٱلرَّسُولُ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَأْمُرُكَ أَنْ تُصَلِّيَ بِالنَّاسِ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ، وَكَانَ رَجُلاً رَقِيقًا: يَا عُمَرُ صَلِّ بِالنَّاسِ، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: أَنْتَ أَحَقُّ بِذٰلِكَ، فَصَلَّى أَبُو بَكْرٍ تِلْكَ ٱلأَيَّامَ، وباقي الحديث تقدّم. [رواه البخاري: ٦٨٧]

आपके इन्तिजार में हैं। फिर आपने फरमाया कि मेरे लिए एक लगन में पानी रख दो। आइशा रज़ि. फरमाती हैं, हमने ऐसा ही किया तो आपने गुस्ल फरमाया। फिर उठने लगे तो बेहोश हो गये। उसके बाद जब होश आया तो आपने फरमाया, क्या लोग नमाज़ पढ़ चुके हैं? हमने अर्ज किया नहीं ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वह तो आपके इन्तिजार में हैं। आपने फरमाया कि मेरे लिए लगन में पानी रख दो। आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि आप बैठ गये और गुस्ल फरमाया। फिर खड़ा होना चाहा मगर बेहोश हो गये। उसके बाद होश आया तो फरमाया कि क्या लोग नमाज़ पढ़ चुके हैं? हमने कहा नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह आपके इन्तिजार में हैं! और लोग मस्जिद में इशा की नमाज़ के लिए बैठे हुए जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन्तजार कर रहे थे तो आखिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू बकर रज़ि. के पास एक आदमी भेजा और हुक्म दिया कि वह नमाज़ पढ़ाये। चूनांचे कासिद ने उनके पास जाकर कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको हुक्म

दिया है कि आप लोगों को नमाज़ पढ़ायें। अबू बकर बड़े नरम दिल इन्सान थे। उन्होंने हज़रत उमर रज़ि. से कहा कि तुम नमाज पढ़ाओ। उमर रज़ि. ने जवाब दिया कि आप ही इस ओहदे के ज्यादा हकदार हैं। उसके बाद अबू बकर रज़ि. बीमारी के दिनों में नमाज़ पढ़ाते रहे। बाकी हदीस (नम्बर 399) पहले गुजर चुकी है।

फायदे : उस हदीस में है कि हजरत अबू बकर रज़ि. जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इक्तदा कर रहे थे और लोग हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि. के मुकतदी थे।

---

٤١٠ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا حديث صلاةِ النبي ﷺ في بيتِهِ وَهُوَ شَاكٍ، تقدّم وفي هذه الرواية قال: (وَإِذَا صَلَّى جَالِسًا فَصَلُّوا جُلُوسًا). [رواه البخاري: ٦٨٨]

410 : आइशा रज़ि. से ही रिवायत करदा हदीस (399) जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बीमारी की वजह से घर में नमाज़ पढ़ाने का जिक्र है, पहले गुजर चुकी है। इस रिवायत में सिर्फ इतना इजाफा है कि आपने फरमाया, जब इमाम बैठ कर नमाज़ पढ़े तो तुम सब भी बैठकर नमाज़ पढ़ो।

फायदे : यह वाक्या जिलहिज्जा के महीने सन् 5 हिजरी मदीना मुनव्वरा में पेश आया था। जब आप घोड़े से गिरकर जख्मी हुये थे। जिन्दगी के आखरी दिनों में जब आप बीमार थे तो आपने बैठकर इमामत कराई और लोग आपके पीछे खड़े थे। इसलिए मुकतदियों का ऐसे हालात में बैठकर नमाज़ अदा करना जरूरी नहीं।

(औनुलबारी, 1/740)

---

٣٥ - باب: مَتَى يَسْجُدُ خَلْفَ الإِمَامِ

बाब 35 : (इमाम के पीछे) मुकतदी कब सजदा करेगा?

411 : बरा बिन आजिब रज़ि. से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समे अल्लाहुलिमन हमिदा कहते तो हम में से कोई आदमी अपनी कमर उस वक्त तक न झुकाता, जब तक नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे में न चले जाते। फिर हम लोग उसके बाद सज्दे में जाते।

٤١١ : عَنِ ٱلْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا قَالَ: (سَمِعَ ٱللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ). لَمْ يَحْنِ أَحَدٌ مِنَّا ظَهْرَهُ، حَتَّى يَقَعَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ سَاجِدًا، ثُمَّ نَقَعُ سُجُودًا بَعْدَهُ. [رواه البخاري: ٦٩٠]

फायदे : मालूम हुआ कि नमाज के बीच इमाम को देखना जाइज है ताकि नमाज़ के कामों में उसकी पैरवी की जा सके।
(औनुलबारी, 1/741)

बाब 36 : इमाम से पहले सर उठाने वाले का गुनाह।

٣٦ - باب: إِثْمُ مَنْ رَفَعَ رَأْسَهُ قَبْلَ الإِمَامِ

412 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, क्या तुममें से जो आदमी अपना सर इमाम से पहले उठाता है, उसको इस बात का डर नहीं कि अल्लाह तआला उसके सर को गधे के सर जैसा बना दे। या! अल्लाह तआला उसकी सूरत गधे जैसी बना दे।

٤١٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (أَمَا يَخْشَى أَحَدُكُمْ، أَوْ: أَلَا يَخْشَى أَحَدُكُمْ، إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ قَبْلَ ٱلإِمَامِ، أَنْ يَجْعَلَ ٱللهُ رَأْسَهُ رَأْسَ حِمَارٍ، أَوْ يَجْعَلَ ٱللهُ صُورَتَهُ صُورَةَ حِمَارٍ). [رواه البخاري: ٦٩١]

फायदे : इब्ने हिब्बान की रिवायत में है कि उसके सर को कुत्ते के सर जैसा बना दिया जाये। लिहाजा इमाम से पहल नहीं करना चाहिए। (औनुलबारी, 1/742)

बाब 37: गुलाम, आजाद करदा और नाबालिग बच्चे की इमामत।

٣٧ - باب: إمَامَةِ العَبْدِ والمَوْلَى والغُلاَمِ الَّذِي لَمْ يَحْتَلِمْ

413 : अनस बिन मालिक रज़ि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया (अपने हाकिम की) सुनो और इताअत करो, अगरचे कोई (काला कलूटा) हब्शी ही तुम पर हाकिम बना दिया जाये, जिसका सर मुनक्के जैसा हो।

٤١٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (ٱسْمَعُوا وَأَطِيعُوا، وَإِنِ ٱسْتُعْمِلَ عليكُمْ حَبَشِيٌّ، كَأَنَّ رَأْسَهُ زَبِيبَةٌ). [رواه البخاري: ٦٩٣]

बाब 38 : जब इमाम अपनी नमाज़ को पूरा न करे और मुकतदी पूरा करें।

٣٨ - باب: إذَا لَمْ يُتِمَّ الإمَامُ وَأَتَمَّ مَنْ خَلْفَهُ

414 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो लोग तुम्हें नमाज़ पढ़ाते हैं, अगर ठीक पढ़ायेंगे तो तुम्हें और उन्हें सवाब मिलेगा और अगर गलती करेंगे तो तुम्हारे लिए सवाब है, मगर उनके लिए गुनाह है।

٤١٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (يُصَلُّونَ لَكُمْ، فَإِنْ أَصَابُوا فَلَكُمْ وَلَهُمْ، وَإِنْ أَخْطَؤُوا فَلَكُمْ وَعَلَيْهِمْ). [رواه البخاري: ٦٩٤]

फायदे : ऐसे हालात में मुक्तदियों की नमाज़ में कोई खलल नहीं होगा, जबकि उन्होंने तमाम शर्तो और रूक्नों को पूरा किया हो।

बाब 39 : जब सिर्फ दो ही नमाजी हों, तो मुकतदी इमाम के दायीं तरफ उसके बराबर खड़ा हो।

٣٩ - باب: يَقُومُ عَنْ يَمِينِ الإِمَامِ بِحِذَائِهِ سَوَاءً إِذَا كَانَا اثْنَيْنِ

415 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत करदा हदीस 97, 142) पहले गुजर चुकी है, जिसमें उन्होंने अपनी खाला मैमूना रज़ि. के घर रात रहने का जिक्र किया है। इस रिवायत में इतना इजाफा है कि फिर आप सो गये, यहां तक कि सांस की आवाज़ आने लगी और जब आप सोते तो सांस की आवाज़ जरूर आती थी। उसके बाद अज़ान देने वाला आपके पास आया तो आप बाहर तशरीफ ले गये और नमाज़ पढ़ी और नया वुजू नहीं फरमाया।

٤١٥ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا حديث مبيته في بيت خَالَتِهِ تقدَّم، وفي هذه الرواية قال: ثُمَّ نَامَ حَتَّى نَفَخَ، وَكَانَ إِذَا نَامَ نَفَخَ، ثُمَّ أَتَاهُ ٱلْمُؤَذِّنُ، فَخَرَجَ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. [رواه البخاري: ٦٩٨]

फायदे : इस हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि.फरमाते हैं कि मैं आपकी बायीं तरफ खड़ा हुआ तो मुझे आपने दायीं तरफ कर लिया।

बाब 40 : जब इमाम (नमाज़ को) लम्बा कर दे और कोई जरूरतमन्द (नमाज़ तोड़कर) अकेला नमाज़ पढ़ ले (तो जाइज है)

٤٠ - باب: إِذَا طَوَّلَ الإِمَامُ وَكَانَ لِلرَّجُلِ حَاجَةٌ فَخَرَجَ فَصَلَّى

416 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि मुआज़ बिन जबल नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ इशा की नमाज़ पढ़ते। उसके बाद वापस लौट कर अपनी

٤١٦ : عَنْ جَابِرِ بن عبد الله رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما أَنَّ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ يُصَلِّي مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ يَرْجِعُ فَيَؤُمُّ قَوْمَهُ، فَصَلَّى ٱلْعِشَاءَ، فَقَرَأَ بِٱلْبَقَرَةِ، فَٱنْصَرَفَ رَجُلٌ، فَكَأَنَّ مُعَاذًا تَنَاوَلَ

مِنْهُ، فَبَلَغَ ٱلنَّبِيَّ ﷺ، فَقَالَ: (فَتَّانٌ، فَتَّانٌ، فَتَّانٌ). ثَلاَثَ مِرَارٍ، أَوْ قَالَ: (فَاتِنًا، فَاتِنًا، فَاتِنًا). وَأَمَرَهُ بِسُورَتَيْنِ مِنْ أَوْسَطِ ٱلْمُفَصَّلِ. [رواه البخاري: ٧٠١]

कौम की इमामत कराते, एक दिन उन्होंने नभाज़ में सूरा बकरा पढ़ी तो एक आदमी नमाज़ तोड़कर चल दिया तो मुआज रज़ि. को उससे रंज पैदा हुआ। जब यह खबर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आपने मुआज रज़ि. से तीन दफा फरमाया, फत्तान, फत्तान, फत्तान (फितना फैलाने वाले) या यह फरमाया, फातिन, फातिन, फातिन (फितना करने वाले)। फिर आपने उन्हें हुक्म दिया कि औसते मुफस्सल की दो सूरतें पढ़ा करो।

फायदे : सूरा हुजुरात से आखिर कुरआन तक तमाम सूरतें मुफस्सल कहलाती हैं। फिर ''अम्मा यतसाअलून'' तक तिवाल ''वज्जुहा'' तक औसत और ''वन्नास'' तक किसार के नाम से पहचानी जाती है। आमतौर पर ''सूरा बूरूज'' तक तिवाल ''सुरे बय्यिना'' तक औसतें और ''वन्नास'' तक किसार का नाम दिया जाता है। इससे यह भी मालूम हुआ कि नफ्ल पढ़ने वाले इमाम के पीछे फर्ज अदा किये जा सकते हैं। (औनुलबारी, 1/749)

---

٤١ - باب: تَخْفِيفُ الإِمَامِ فِي القِيَامِ وَإِتْمَامِ الرُّكُوعِ وَالسُّجُودِ

बाब 41 : इमाम को कयाम में कमी और रूकू और सज्दे सुकून से करना चाहिए।

٤١٧ : عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا قَالَ: وَٱللهِ يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنِّي لأَتَأَخَّرُ عَنْ صَلاَةِ ٱلْغَدَاةِ مِنْ أَجْلِ فُلاَنٍ، مِمَّا يُطِيلُ بِنَا، فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فِي مَوْعِظَةٍ

417 : अबू मसऊद रज़ि. कहते हैं कि एक आदमी ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह की कसम! मैं सुबह की नमाज़ में

أَشَدَّ غَضَبًا مِنْهُ يَوْمَئِذٍ، ثُمَّ قَالَ: (إِنَّ مِنْكُمْ مُنَفِّرِينَ، فَأَيُّكُمْ مَا صَلَّى بِالنَّاسِ فَلْيَتَجَوَّزْ، فَإِنَّ فِيهِمُ الضَّعِيفَ وَالْكَبِيرَ وَذَا الْحَاجَةِ). [رواه البخاري: ٧٠٢]

सिर्फ फलाँ आदमी की वजह से पीछे रह जाता हूं, क्योंकि वह नमाज़ को बहुत लम्बा करता है। पस मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कभी नसीहत में इस दिन से ज्यादा गजबनाक नहीं देखा। उसके बाद आपने फरमाया, तुममें से कुछ लोग नफरत दिलाने वाले हैं। तुममें से जो आदमी लोगों को नमाज़ पढ़ाये तो उसे चाहिए कि हल्की पढ़ाया करे, क्योंकि मुकतदियों में कमजोर बूढ़े और जरूरतमन्द भी होते हैं। (यह हदीस 79 पहले भी गुजर चुकी है।)

٤١٨ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا حديث مُعَاذٍ، وَأَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهُ: (فَلَوْلاَ صَلَّيْتَ بِسَبِّحِ ٱسْمَ رَبِّكَ، وَٱلشَّمْسِ وَضُحَاهَا، وَٱللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى). [رواه البخاري: ٧٠٥]

418 : जाबिर रज़ि. से रिवायत है कि वह हदीस (416) गुजर चुकी है। उसमें जिक्र है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया, तूने ''सब्बेहिसमा रब्बेकल आला, वश्शमसे वजुहाहा, और वल्लैलि इजा यगशा वगैरह नमाज़ में क्यों न पढ़ी?

٤٢ - باب: الإيجَازُ فِي الصَّلاةِ وإكمالها

बाब 42 : हल्की नमाज के साथ नमाज़ को पूरा करना।

٤١٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يُوجِزُ ٱلصَّلاَةَ وَيُكمِلُهَا. [رواه البخاري: ٧٠٦]

419 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हल्की नमाज़ पढ़ते और उसको पूरा पूरा अदा करते थे।

फायदे : यानी आपकी नमाज़ किरअत के ऐतबार से हल्की होती, लेकिन रूकू और सज्दे पूरे तौर से अदा करते। मस्जिद के इमामों को भी ऐसी बातों का खयाल रखना चाहिए।

बाब **43** : जो आदमी बच्चे के रोने की वजह से नमाज़ को हल्का कर दे।

٤٣ - باب: مَنْ أَخَفَّ الصَّلاَةَ عِنْدَ بُكَاءِ الصَّبِيِّ

420 : अबू कतादा रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मैं नमाज़ देर तक पढ़ने के इरादे से खड़ा होता हूँ लेकिन किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर मैं अपनी नमाज़ को हल्का कर देता हूँ। क्योंकि उसकी मां को तकलीफ में डालना बुरा समझाता हूँ।

٤٢٠ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنِّي لأَقُومُ فِي ٱلصَّلاَةِ أُرِيدُ أَنْ أُطَوِّلَ فِيهَا، فَأَسْمَعُ بُكَاءَ ٱلصَّبِيِّ، فَأَتَجَوَّزُ فِي صَلاَتِي، كَرَاهِيَةَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمِّهِ). [رواه البخاري: ٧٠٧]

फायदे : इस हदीस से बच्चों को मस्जिद में लाने का जवाज साबित नहीं होता, क्योंकि मुमकिन है कि मस्जिद के करीब घर से बच्चे के रोने की आवाज़ सुनते हों। (औनुलबारी, 1/753)

बाब **44** : तकबीर के वक्त सफों को बराबर करना।

٤٤ - باب: تَسْوِيَةُ الصُّفُوفِ عِنْدَ الإِقَامَةِ

421 : नोमान बिन बशीर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम अपनी सफों को बराबर रखो, नहीं तो अल्लाह तुम्हारे मुंह उलट देगा।

٤٢١ : عَنِ ٱلنُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (لَتُسَوُّنَّ صُفُوفَكُمْ، أَوْ لَيُخَالِفَنَّ ٱللهُ بَيْنَ وُجُوهِكُمْ) [رواه البخاري: ٧١٧].

फायदे : सफों को बराबर रखने से मुराद यह है कि नमाजी आगे पीछे न हों और बीच में खाली जगह न हो। सफों का दुरस्त करना जरूरी है। क्योंकि यह नमाज़ का हिस्सा है।

बाब 45 : सफें बराबर करते वक्त इमाम का लोगों की तरफ ध्यान देना।

٤٥ - باب: إقْبَالُ الإمَامِ عَلَى النَّاسِ عِنْدَ تَسْوِيَةِ الصُّفُوفِ

422 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सफों को दुरस्त करो और मिलकर खड़े हो जाओ। मैं तुम्हें अपनी पीठ के पीछे से भी देखता रहता हूँ।

٤٢٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (أَقِيمُوا صُفُوفَكُمْ، وَتَرَاصُّوا، فَإِنِّي أَرَاكُمْ مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِي). [رواه البخاري: ٧١٩]

फायदे : इस हदीस की शुरूआत यूँ है कि जब तकबीर कही गई तो आपने अपना चेहरा मुबारक हमारी तरफ करके फरमाया.... हमारे यहां सफ बन्दी का एहतिमाम नहीं होता, हालांकि खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और खुलफाये राशेदीन का यह मामूल था कि जब तक सफें ठीक न हो जायें, नमाज़ शुरू न करते। दौरे फारूकी में इस बेहतर काम के लिए लोग चुने हुये थे। मगर आजकल सबसे ज्यादा छूटी हुई यही चीज है। हालांकि यह कोई इख्तिलाफी मसला नहीं।

बाब 46 : जब इमाम और मुकतदियों के बीच कोई पर्दा या दीवार हायल हो (तो कोई हर्ज नहीं)

٤٦ - باب: إذَا كَانَ بَيْنَ الإمَامِ وَبَيْنَ القَوْمِ حَائِطٌ أَوْ سُتْرَ

423 : आइशा सिद्दीका रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह

٤٢٣ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُصَلِّي

مِنَ ٱللَّيْلِ فِي حُجْرَتِهِ، وَجِدَارُ ٱلْحُجْرَةِ قَصِيرٌ، فَرَأَى ٱلنَّاسُ شَخْصَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَامَ أُنَاسٌ يُصَلُّونَ بِصَلاَتِهِ، فَأَصْبَحُوا فَتَحَدَّثُوا بِذٰلِكَ، فَقَامَ لَيْلَةَ ٱلثَّانِيَةِ، فَقَامَ مَعَهُ أُنَاسٌ يُصَلُّونَ بِصَلاَتِهِ، صَنَعُوا ذٰلِكَ لَيْلَتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا، حَتَّى إِذَا كَانَ بَعْدَ ذٰلِكَ، جَلَسَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَلَمْ يَخْرُجْ، فَلَمَّا أَصْبَحَ ذَكَرَ ذٰلِكَ ٱلنَّاسُ فَقَالَ: (إِنِّي خَشِيتُ أَنْ تُكْتَبَ عَلَيْكُمْ صَلاَةُ ٱللَّيْلِ). [رواه البخاري: ٧٢٩]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तहज्जुद (तरावीह) की नमाज अपने हुजरे में पढ़ा करते थे। चूँकि कमरे की दीवारें छोटी थी। इसलिए लोगों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शख्सियत को देख लिया और कुछ लोग नमाज़ की इक्तदा करने के लिए आपके साथ खड़े हो गये। फिर सुबह को उन्होंने दूसरों से इसका जिक्र किया। फिर दूसरी रात नमाज़ के लिए खड़े हुये तो कुछ लोग आपकी इक्तदा में इस रात भी खड़े हो गये। यह सूरते हाल दो या तीन रातों तक रही। उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर बैठ गये और नमाज़ के लिए तशरीफ न लाये। उसके बाद सुबह के वक्त लोगों ने इसका जिक्र किया तो आपने फरमाया, मुझे इस बात का डर हुआ कि कहीं (इसके एहतिमाम से) रात की नमाज़ तुम पर फर्ज न कर दी जाये।

फायदे : इमाम और मुक्तदी के बीच कोई रास्ता या दीवार हायल हो तो इक्तदा जाइज है। बशर्ते कि इमाम की तकबीर खुद सुने या कोई दूसरा सुना दे। (औनुलबारी, 1/756)

बाब 47 : रात की नमाज़ (तहज्जुद की नमाज़)

٤٧ - باب: صلاة اللَّيْلِ

424 : जैद बिन साबित रज़ि. से भी यह हदीस मरवी है, अलबत्ता यह

٤٢٤ : وفي هذا الحديث من رواية زيد بن ثابت رضي الله عنه

زيادة أنه قال: (قَدْ عَرَفْتُ ٱلَّذِي رَأَيْتُ مِنْ صَنِيعِكُمْ، فَصَلُّوا أَيُّهَا ٱلنَّاسُ فِي بُيُوتِكُمْ، فَإِنَّ أَفْضَلَ ٱلصَّلَاةِ صَلَاةُ ٱلْمَرْءِ فِي بَيْتِهِ إِلَّا ٱلْمَكْتُوبَةَ). [رواه البخاري: ٧٣١]

इजाफा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुमने जो किया है, मैंने देखा और समझ लिया (कि तुम्हें इबादत का शौक है) ऐ लोगो! तुम अपने घरों में नमाज़ पढ़ो, क्योंकि आदमी की बेहतर नमाज़ वही है जो उसके घर में अदा हो। मगर फर्ज नमाज़ (जिसे मस्जिद में पढ़ना जरूरी है)।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नफ्ली इबादत घर में अदा करने को बेहतर करार दिया है। क्योंकि आदमी रियाकारी और दिखावे से महफूज रहता है। नीज ऐसा करने से घर भी बरकत वाला हो जाता है। अल्लाह की रहमत नाजिल होती है और घर से शैतान भी भाग जाता है। (औनुलबारी, 1/757)

٤٨ - باب: رَفْعُ الْيَدَيْنِ فِي التَّكْبِيرَةِ الأُولَى مَعَ الافْتِتَاحِ سَوَاءً

बाब 48 : तकबीरे तहरीमा में नमाज़ के शुरू होने के साथ ही दोनों हाथों को बुलन्द करना।

٤٢٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ، إِذَا ٱفْتَتَحَ ٱلصَّلَاةَ، وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ ٱلرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا، وَقَالَ: (سَمِعَ ٱللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، رَبَّنَا وَلَكَ ٱلْحَمْدُ). وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي ٱلسُّجُودِ. [رواه البخاري: ٧٣٥]

425 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रकूअ के लिए अल्लाहु अकबर कहते तो अपने दोनों हाथ कन्धों के बराबर उठाते। और जब रुकू से सर उठाते तब भी इसी तरह दोनों हाथ उठाते और समिअल्लाहु लिमन

हमिदा रब्बना वलकलहम्द कहते। मगर सज्दों में यह अमल न करते थे।

फायदे : तकबीरे तहरीमा के वक्त रूकू में जाते और सर उठाते वक्त और तीसरी रकअत के लिए उठते वक्त दोनों हाथों को कन्धों या कानों तक उठाना, रफा यदैन कहा जाता है और इसका मकसद इमाम शाफई के कौल के मुताबिक अल्लाह की बड़ाई को जाहिर करना और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत की पैरवी करना है, तकबीरे तहरीमा के वक्त रफा यदैन पर तमाम उम्मत का इजमा है और बाकी तीनों जगहों में रफा यदैन करने पर भी अहले कूफा के अलावा तमाम उम्मत के उलमा का इत्तिफाक है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्र भर इस सुन्नत पर अमल किया और यह ऐसी लगातार की जाने वाली सुन्नत है जिसे अशरा मुबश्शरा (वो दस सहाबा जिनको आप स.अ.व. ने दुनिया में जन्नती खुशखबरी सुनाई) के अलावा दीगर सहाबा किराम भी बयान करते हैं। और इस पर अमल पैरा दिखाई देते हैं। लिहाजा इस हदीस की बिना पर तमाम मुसलमानों के लिए जरूरी है कि वह रूकू जाते और उससे सर उठाते वक्त अल्लाह की अजमत का इजहार करते हुए रफा यदैन करें। (औनुलबारी, 1/760)। इमाम बुखारी ने इस सुन्नत को साबित करने के लिए एक मुस्तकिल रिसाला भी लिखा है।

बाब 49 : नमाज़ में दायां हाथ बायें पर रखना।

٤٩ - باب: وَضْعُ الْيَدِ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى

426 : सहल बिन सअद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि लोगों को यह हुक्म दिया जाता था कि नमाज़

٤٢٦ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّاسُ يُؤْمَرُونَ أَنْ يَضَعَ ٱلرَّجُلُ ٱلْيَدَ ٱلْيُمْنَى عَلَى

में आदमी अपना दायां हाथ, बायें हाथ की कलाई पर रखे।

ذِرَاعِهِ ٱلْيُسْرَى فِي ٱلصَّلَاةِ. [رواه البخاري: ٧٤٠]

फायदे : सही इब्ने खुजैमा की रिवायत के मुताबिक दोनों हाथ सीने पर बांधे जायें। दायें हाथ को बायें हाथ की कलाई पर रखा जाये या दायें हाथ को बायें हाथ की हथेली पर रखा जाये। कलाई पर कलाई रखकर कुहनी को पकड़ना साबित नहीं है। नाफ के नीचे हाथ बांधने की एक भी हदीस सही नहीं है। सीने पर हाथ बांधना आजजी की निशानी, नमाज़ में बुरे कामों से रूकावट, दिल की हिफाजत और डर के ज्यादा मुनासिब है। (औनुलबारी, 1/764)

बाब 50 : नमाजी तकबीरे तहरीमा के बाद क्या पढ़े?

٥٠ - بَابٌ: مَا يَقُولُ بَعْدَ التَّكْبِيرِ

427 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबू बकर सिद्दीक रज़ि. और उमर रज़ि. नमाज़ में किराअत ''अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन'' से शुरू फरमाते थे।

٤٢٧ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، كَانُوا يَفْتَتِحُونَ ٱلصَّلَاةَ: بِـ: ٱلْحَمْدُ للهِ رَبِّ ٱلْعَالَمِينَ. [رواه البخاري: ٧٤٣]

फायदे : इसका मतलब यह नहीं है कि ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' को बिलकुल छोड़ दिया जाये, बल्कि इसे पढ़ना चाहिए, क्योंकि ''बिस्मिल्लाह'' तो सूरा फातिहा का हिस्सा है। रिवायत का मतलब यह है कि ''बिस्मिल्लाह'' को जोर से नहीं पढ़ा करते थे। जैसा कि दूसरी रिवायतों में इसका बयान है। अलबत्ता इसके जोर से पढ़ने में इख्तिलाफ है। दोनों की दलीलों से मालूम होता है कि इसमें गुंजाईश है और दोनों तरह पढ़ा जा सकता है। (औनुलबारी, 1/767)

428 :अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तकबीरे तहरीमा और किरअत के बीच कुछ खामोशी फरमाते थे तो मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों, आप तकबीर और किरअत के बीच खामोशी में क्या पढा करते हैं? आपने फरमाया, मैं कहता हूँ, या अल्लाह मुझ से मेरे गुनाह इतने दूर कर दे, जितना तूने पूर्व और पश्चिम के बीच फर्क रखा है। और ऐ अल्लाह मुझे गुनाहों से ऐसा पाक कर दें जैसे सफेद कपड़ा मैल-कुचैल से पाक हो जाता है, या अल्लाह! मेरे गुनाह पानी बर्फ और ओलों से धो दे।

٤٢٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَسْكُتُ بَيْنَ ٱلتَّكْبِيرِ وَبَيْنَ ٱلْقِرَاءَةِ إِسْكَاتَةً، فَقُلْتُ: بِأَبِي وَأُمِّي يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِسْكَاتُكَ بَيْنَ ٱلتَّكْبِيرِ وَٱلْقِرَاءَةِ، مَا تَقُولُ؟ قَالَ: (أَقُولُ: ٱللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ، كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ ٱلْمَشْرِقِ وَٱلْمَغْرِبِ، ٱللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنَ ٱلْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى ٱلثَّوْبُ ٱلأَبْيَضُ مِنَ ٱلدَّنَسِ، ٱللَّهُمَّ ٱغْسِلْ خَطَايَايَ بِٱلْمَاءِ وَٱلثَّلْجِ وَٱلْبَرَدِ). [رواه البخاري: ٧٤٤]

फायदे : इसको दुआये इस्तिफताह कहते हैं और इसके अलफाज कई तरह से आये हैं। मगर मजकूरा दुआ सही तरीन है। अगरचे दीगर मासूरा दुआयें भी पढ़ी जा सकती है। वाजेह रहे कि इस दुआ को आहिस्ता पढ़ना चाहिए। नीज मालूम हुआ कि खामोशी और आहिस्ता किरअत में मुनाफात नहीं है। (औनुलबारी, 1/769)

बाब 51 :

٥١ - باب

429 : असमा बिन्ते अबू बकर रज़ि. से हदीस कुसूफ (86) पहले गुजर चुकी है।

٤٢٩ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: حديث الكسوف، وقد تقدم (برقم: ٧٦)

430 : असमा रज़ि. से मरवी इस तरीक में उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जन्नत मेरे इतने (करीब) हो चुकी थी कि अगर मैं हिम्मत करता तो उसके गुच्छों में से कोई गुच्छा तुम्हारे पास ले आता और दोजख भी मेरे इतने करीब हो गई कि मैं कहने लगा ऐ मालिक! क्या मैं भी उन लोगों के साथ रखा जाऊँगा? इतने में एक औरत देखी। रावी का गुमान है कि आपने फरमाया, उस औरत को एक बिल्ली पंजा मार रही थी। मैंने पूछा, इस औरत का क्या हाल है? फरिश्तों ने कहा, इसने बिल्ली को बांध रखा था, यहां तक कि वह भूख से मर गई, क्योंकि न तो वह खुद खिलाती थी और न खुला छोड़ती थी कि वह खुद जमीन के कीड़ों से अपना पेट भर ले।

٤٣٠ : وفي هذه الرواية قالت: (قال: قَدْ دَنَتْ مِنِّي ٱلْجَنَّةُ، حَتَّى لَوِ ٱجْتَرَأْتُ عَلَيْهَا، لَجِئْتُكُمْ بِقِطَافٍ مِنْ قِطَافِهَا، وَدَنَتْ مِنِّي ٱلنَّارُ حَتَّى قُلْتُ: أَيْ رَبِّ، أَوَ أَنَا مَعَهُمْ؟ فَإِذَا ٱمْرَأَةٌ - حَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ - تَخْدِشُهَا هِرَّةٌ، قُلْتُ: مَا شَأْنُ هٰذِهِ؟ قَالُوا: حَبَسَتْهَا حَتَّى مَاتَتْ جُوعًا، لاَ أَطْعَمَتْهَا، وَلاَ أَرْسَلَتْهَا تَأْكُلُ - حَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ - مِنْ خَشِيشِ أَوْ خَشَاشِ الأَرْضِ). [رواه البخاري: ٧٤٥]

फायदे : मालूम हुआ कि हैवानों को तकलीफ देना भी नाजाइज है और कयामत के दिन ऐसा करने पर पकड़ होगी।

(औनुलबारी, 1/770)

बाब 52: नमाज़ में इमाम की तरफ देखना।

٥٢ - باب: رَفْعُ البَصَرِ إِلَى الإِمَامِ فِي الصَّلاَةِ

431 : खब्बाब रज़ि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुहर

٤٣١ : عَنْ خَبَّابٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قيل له: أَكَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَقْرَأُ فِي ٱلظُّهْرِ وَٱلْعَصْرِ؟ قَالَ: نَعَمْ،

और असर में कुछ पढ़ते थे? तो उन्होंने कहा, हां! फिर पूछा गया कि तुम्हें कैसे पता चलता था? खब्बाब रज़ि. ने कहा, कि आप की दाढ़ी के हिलने से मालूम होता था।

قيل له: بِمَ كُنْتُمْ تَعْرِفُونَ ذَاكَ؟ قَالَ: بِاضْطِرَابِ لِحْيَتِهِ. [رواه البخاري: ٧٤٦]

फायदे : इमाम को चाहिए कि वह अपनी नजर को सज्दागाह पर रखे। मुकतदी के लिए भी यही हुक्म है। अलबत्ता किसी जरूरत के पेशे नजर इमाम की तरफ नजर उठा सकता है। मगर अकेला नमाज़ पढ़ता है तो उसका हुक्म भी इमाम जैसा है। अलबत्ता इधर उधर देखना किसी सूरत में जाइज नहीं है।

(औनुलबारी, 1/771)

बाब 53 : नमाज़ में आसमान की तरफ देखना।

٥٣ - باب: رَفْعُ البَصَرِ إلى السَّمَاءِ في الصَّلاَةِ

432 : अनस रज़ि. से रिवायत है। उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लोगों को क्या हुआ, वह नमाज़ में अपनी नजरें आसमान की तरफ उठाते हैं। फिर आपने उसके बारे में बड़ी सख्ती से इरशाद फरमाया कि लोगों को इससे बाज आना चाहिए या फिर उनकी आंखों की रोशनी को छीन लिया जाएगा।

٤٣٢ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (مَا بَالُ أَقْوَامٍ، يَرْفَعُونَ أَبْصَارَهُمْ إِلَى ٱلسَّمَاءِ فِي صَلاَتِهِمْ). فَاشْتَدَّ قَوْلُهُ فِي ذٰلِكَ، حَتَّى قَالَ: (لَيَنْتَهُنَّ عَنْ ذٰلِكَ، أَوْ لَتُخْطَفَنَّ أَبْصَارُهُمْ). [رواه البخاري: ٧٥٠]

बाब 54 : नमाज़ में इधर उधर देखना कैसा है?

٥٤ - باب: الالتِفَات في الصَّلاَةِ

433 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, नमाज़ में इधर उधर देखना कैसा है? तो आपने फरमाया, यह ऐसी तवज्जुह है जो शैतान बन्दे की नमाज़ में करता है।

٥٤ - باب: الالتِفَات فِي الصَّلاَةِ

٤٣٣ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَأَلْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَنِ ٱلالْتِفَاتِ فِي ٱلصَّلاَةِ؟ فَقَالَ: (هُوَ ٱخْتِلاَسٌ، يَخْتَلِسُهُ ٱلشَّيْطَانُ مِنْ صَلاَةِ ٱلْعَبْدِ). [رواه البخاري: ٧٥١]

फायदे : इल्तिफात तीन तरह का होता है। 1. जरूरत के बगैर दायें-बायें मुंह करना लेकिन सीना किब्ला रूख रहे, यह काम मकरूह या हराम है। 2. गोशा आंख के किनारे से देखना, यह खिलाफे औला है बवक्त जरूरत ऐसा करना जाइज है। 3. दायें-बायें इस तरह देखना कि सीना भी किब्ला रूख से हट जाये, ऐसा करने से नमाज़ बातिल हो जाती है।

बाब 55 : इमाम और मुकतदी के लिए तमाम नमाजों में कुरआन पढ़ना वाजिब है।

٥٥ - باب: وُجُوبُ القِرَاءَةِ لِلإمَامِ وَالمَأمُومِ فِي الصَّلَوَاتِ كُلِّهَا

434 : जाबिर बिन समुरह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि कूफा वालों ने उमर रज़ि. से सअद बिन अबी वक्कास रज़ि. की शिकायत की। उमर रज़ि. ने सअद को हटा कर अम्मार बिन यासिर रज़ि.को उनका हाकिम बनाया, अलगर्ज उन लोगों ने साद रज़ि. की बहुत शिकायतें कीं, यह भी

٤٣٤ : عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: شَكَا أَهْلُ ٱلْكُوفَةِ سَعْدًا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ إِلَى عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، فَعَزَلَهُ وَٱسْتَعْمَلَ عَلَيْهِمْ عَمَّارًا، فَشَكَوْا حَتَّى ذَكَرُوا أَنَّهُ لاَ يُحْسِنُ يُصَلِّي، فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَقَالَ: يَا أَبَا إِسْحٰقَ، إِنَّ هٰؤُلاَءِ يَزْعُمُونَ أَنَّكَ لاَ تُحْسِنُ تُصَلِّي؟ قَالَ: أَمَّا أَنَا، وَٱللهِ فَإِنِّي كُنْتُ أُصَلِّي بِهِمْ صَلاَةَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ مَا أَخْرِمُ عَنْهَا،

أُصَلِّي صَلاَةَ ٱلْعِشَاءِ، فَأَرْكُدُ فِي ٱلأُولَيَيْنِ، وَأَخِفُّ فِي ٱلأُخْرَيَيْنِ. قَالَ: ذَاكَ ٱلظَّنُّ بِكَ يَا أَبَا إِسْحٰقَ. فَأَرْسَلَ مَعَهُ رَجُلًا، أَوْ رِجَالًا، إِلَى ٱلْكُوفَةِ، فَسَأَلَ عَنْهُ أَهْلَ ٱلْكُوفَةِ، وَلَمْ يَدَعْ مَسْجِدًا إِلَّا سَأَلَ عَنْهُ، وَيُثْنُونَ عليهِ مَعْرُوفًا، حَتَّى دَخَلَ مَسْجِدًا لِبَنِي عَبْسٍ، فَقَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ، يُقَالُ لَهُ أُسَامَةُ بْنُ قَتَادَةَ، يُكْنَى أَبَا سَعْدَةَ، قَالَ: أَمَّا إِذْ نَشَدْتَنَا، فَإِنَّ سَعْدًا كَانَ لاَ يَسِيرُ بِالسَّرِيَّةِ، وَلاَ يَقْسِمُ بِالسَّوِيَّةِ، وَلاَ يَعْدِلُ فِي ٱلْقَضِيَّةِ. قَالَ سَعْدٌ: أَمَا وَٱللهِ لأَدْعُوَنَّ بِثَلاَثٍ: ٱللَّهُمَّ إِنْ كَانَ عَبْدُكَ هٰذَا كَاذِبًا، قَامَ رِيَاءً وَسُمْعَةً، فَأَطِلْ عُمْرَهُ، وَأَطِلْ فَقْرَهُ، وَعَرِّضْهُ بِالْفِتَنِ. وَكَانَ بَعْدُ إِذَا سُئِلَ يَقُولُ: شَيْخٌ كَبِيرٌ مَفْتُونٌ، أَصَابَتْنِي دَعْوَةُ سَعْدٍ. قَالَ الراوي عن جابرٍ: فَأَنَا رَأَيْتُهُ بَعْدُ، قَدْ سَقَطَ حَاجِبَاهُ عَلَى عَيْنَيْهِ مِنَ ٱلْكِبَرِ، وَإِنَّهُ لَيَتَعَرَّضُ لِلْجَوَارِي فِي ٱلطَّرِيقِ يَغْمِزُهُنَّ. [رواه البخاري: ٧٥٥]

कह दिया कि वह अच्छी तरह नमाज़ नहीं पढ़ते। इस पर उमर ने उन्हें बुलवाया और कहा, ऐ अबू इसहाक! यह लोग कहते हैं कि तुम नमाज़ अच्छी तरह नहीं पढ़ते हो? उन्होंने कहा, सुनिये अल्लाह की कसम! मैं इन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली नमाज़ पढ़ाता था। इसमें जर्रा भर कोताही नहीं करता। इशा की नमाज़ पढ़ाता तो पहली दो रकअतों में ज्यादा देर लगाता और आखरी दो रकअतें हल्की करता था। उमर रज़ि. ने फरमाया, ऐ अबू इसहाक! तुम्हारे बारे में हमारा यही गुमान है। फिर उमर रज़ि. ने एक आदमी या कुछ आदमियों को सअद रज़ि. के साथ कूफा रवाना किया (ताकि वह कूफा वालों से सअद रज़ि. के बारे में तहकीक करें)। उन्होंने वहाँ कोई मस्जिद न छोड़ी जहां सअद रज़ि. का हाल न पूछा हो। जब लोगों ने उनकी तारीफ की, फिर वह अबस कबीले की मस्जिद में गये तो वहां एक आदमी खड़ा हुआ, जिसकी कुन्नियत अबू सादा और उसे उसामा बिन कतादा कहा जाता था, वह बोला जब तुमने हमें कसम दिलाई तो सुनो! सअद

जिहाद में लश्कर के साथ खुद न जाते थे और न ही माले गनीमत बराबर तकसीम करते थे और मुकदमात में इन्साफ से काम न लेते थे। सअद रज़ि. ने यह सुनकर कहा, अल्लाह की कसम! मैं तुझे **तीन बद-दुआयें** देता हूँ। ऐ अल्लाह अगर तेरा यह बन्दा झूटा है तो **सिर्फ लोगों** को दिखाने या सुनाने के लिए खड़ा हुआ है तो इसकी उम्र लम्बी कर दे, फकीरी बढ़ा दे और आफतों में फंसा दे। (चूनांचे ऐसा ही हुआ)। उसके बाद जब उससे उसका हाल पूछा जाता तो कहता कि मैं एक मुसीबत में घिरा हुआ, लम्बी उम्र वाला बूढ़ा हूँ। मुझे सअद की बद-दुआ लग गई है। जाबिर रज़ि. से बयान करने वाला रावी कहता है कि मैंने भी उसे देखा था, बुढ़ापे की हालत में उसके दोनों अबरू आंखों पर गिनने के बावजूद वह रास्ते में चलती छोकरियों को छेड़ता और उनसे छेड़ छाड़ करता फिरता था।

फायदे : हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ि. फारूकी खिलाफत में कूफा के गर्वनर थे और इमामत भी करते थे। कूफा वालों की तरफ से शिकायत पहुंचने पर उन्होंने हज़रत उमर रज़ि. के पास वजाहत फरमायी कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही की तरह इन्हें नमाज़ पढ़ाता हूँ, यानी पहली दो रकअतों में किरअत लम्बी करता हूँ और दूसरी दो रकअतें हल्की करता हूँ। यहीं से इमाम के लिए चार रकअतों में किरअत करने का सबूत मिलता है।

435 : उबादा बिन सामित रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिस आदमी ने सूरा

٤٣٥ : عَنْ عُبَادَةَ بْنِ ٱلصَّامِتِ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللَّهِ ﷺ قَالَ: (لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ ٱلْكِتَابِ) [رواه البخاري: ٧٥٦]

फातिहा नहीं पढ़ी, उसकी नमाज़ ही नहीं हुई।

फायदे : इस हदीस के पेशे नजर जम्हूर उल्मा का यह मानना है कि मुकतदी के लिए सूरा फातिहा पढ़ना जरूरी है। कुछ इल्म वालों का ख्याल है कि मुकतदी के लिए इमाम की किरअत ही काफी है। उसे फातिहा पढ़ना जरूरी नहीं। हालांकि मुकतदी को इमाम की वह किरअत काफी होती है जो फातिहा के अलावा होती है, क्योंकि इस हदीस के पेशे नजर फातिहा के बगैर नमाज़ नहीं होती। कुछ रिवायतों में खुलासा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद सहाबा किराम से पूछा कि शायद तुम इमाम के पीछे कुछ पढ़ते हो। उन्होंने कहा, जी हां! तो आपने फरमाया कि सूरा फातेहा के अलावा कुछ और न पढ़ा करो। (औनुलबारी, 1/782)

436 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ लाये, इतने में एक आदमी आया और उसने नमाज़ पढ़ी फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया। आपने सलाम का जवाब देने के बाद फरमाया, जाओ नमाज़ पढ़ो, तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी। फिर इस तरह तीन बार हुआ। आखिरकार उसने कहा, कसम है उस अल्लाह की जिसने ...पको हक के साथ भेजा है, मैं

٤٣٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ دَخَلَ ٱلمَسْجِدَ، فَدَخَلَ رَجُلٌ فَصَلَّى، فَسَلَّمَ عَلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَرَدَّ، وَقَالَ: (ٱرْجِعْ فَصَلِّ، فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ). فَرَجَعَ يُصَلِّي كَمَا صَلَّى، ثُمَّ جاءَ، فَسَلَّمَ عَلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: (ٱرْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ). فَرَجَعَ يُصَلِّي كَمَا صَلَّى، ثُمَّ جَاءَ، فَسَلَّمَ عَلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: (ٱرْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ). ثَلاَثًا، فَقَالَ، وَٱلَّذِي بَعَثَكَ بِالحَقِّ، مَا أُحْسِنُ غَيْرَهُ، فَعَلِّمْنِي؟ فَقَالَ: (إِذَا قُمْتَ إِلَى ٱلصَّلاَةِ فَكَبِّرْ، ثُمَّ ٱقْرَأْ مَا تَيَسَّرَ

مَعَكَ مِنَ ٱلْقُرْآنِ، ثُمَّ ٱرْكَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا، ثُمَّ ٱرْفَعْ حَتَّى تَعْتَدِلَ قَائِمًا، ثُمَّ ٱسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ٱرْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا، وَٱفْعَلْ ذٰلِكَ فِي صَلاَتِكَ كُلِّهَا). [رواه البخاري: ٧٥٧]

इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता, लिहाजा आप मुझे बता दीजिए। आपने फरमाया अच्छा जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो तकबीर कहो, फिर कुरआन से जो तुम्हें याद हो, पढ़ो! उसके बाद सुकून से रुकू करो, फिर सर उठावो। और सीधे खड़े हो जाओ, फिर सज्दा करो और सज्दे में सुकून से रहो, फिर सर उठाकर सुकून से बैठ जाओ और अपनी पूरी नमाज़ इसी तरह पूरी किया करो।

फायदे : अबू दाउद की रिवायत में है कि "तकबीरे तहरीमा कहने के बाद सूरा फातिहा पढ़" इस हदीस पर इमाम इब्ने हिब्बान रह.ने इस तरह उनवान कायम किया है कि नमाजी के लिए हर रकअत में फातिहा पढ़ना जरूरी है। इस हदीस से दो सज्दों के बीच बैठना और रुकू और सज्दे सुकून से अदा करना भी साबित होता है। नीज यह भी मालूम हुआ कि दूसरे सज्दे के बाद थोड़ी देर बैठकर के उठना जरूरी है, जिसको जलस-ए-इस्तिराहत कहते हैं। (औनुलबारी, 1/788)

٥٦ - باب: القِرَاءَةُ فِي الظُّهرِ

बाब 56 : जुहर की नमाज में किरअत।

٤٣٧ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ فِي ٱلرَّكْعَتَيْنِ ٱلأُولَيَيْنِ مِنْ صَلاَةِ ٱلظُّهرِ، بِفَاتِحَةِ ٱلْكِتَابِ وَسُورَتَيْنِ، يُطَوِّلُ فِي ٱلأُولَى، وَيُقَصِّرُ فِي ٱلثَّانِيَةِ، وَيُسْمِعُ ٱلآيَةَ أَحْيَانًا، وَكَانَ يَقْرَأُ فِي ٱلعَصْرِ

437 : अबू कतादा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़े जुहर की पहली दो रकअतों में सूरा फातिहा और दो सूरतें पढ़ते थे। पहली रकअत को लम्बा करते

بِفَاتِحَةِ ٱلْكِتَابِ وَسُورَتَيْنِ، وَكَانَ يُطَوِّلُ فِي ٱلأُولَى وَيُقَصِّرُ فِي الثَّانِيَةِ، وَكَانَ يُطَوِّلُ فِي ٱلرَّكْعَةِ ٱلأُولَى مِنْ صَلاَةِ ٱلصُّبْحِ، وَيُقَصِّرُ فِي ٱلثَّانِيَةِ. [رواه البخاري: ٧٥٩]

थे और दूसरी रकअत को छोटा करते और कभी कभी कोई आयत सुना भी देते थे, असर की नमाज में भी सूरा फातिहा और दूसरी दो सूरतें तिलावत फरमाते और पहली रकअत को दूसरी रकअत से कुछ लम्बा करते। इस तरह सुबह की नमाज़ में भी पहली रकअत लम्बी होती और दूसरी हल्की करते थे।

फायदे : इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि आहिस्ता पढ़ी जाने वाली (जुहर,असर की) नमाज़ों में अगर इमाम कभी किसी आयत को ऊँची आवाज़ से पढ़ दे तो जाइज है। (औनुलबारी, 1/494)

٥٧ - بَابُ: القِرَاءَةُ فِي المَغْرِبِ

बाब 57 : मगरिब की नमाज में किरअत।

٤٣٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَبَّاسٍ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا -: أَنَّ أُمَّ ٱلْفَضْلِ سَمِعَتْهُ، وَهُوَ يَقْرَأُ: ﴿وَٱلْمُرْسَلَٰتِ عُرْفًا﴾. فَقَالَتْ: يَا بُنَيَّ، وَٱللهِ لَقَدْ ذَكَّرْتَنِي بِقِرَاءَتِكَ هٰذِهِ ٱلسُّورَةَ، إِنَّهَا لَآخِرُ مَا سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ يَقْرَأُ بِهَا فِي ٱلْمَغْرِبِ. [رواه البخاري: ٧٦٣]

438 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि (उनकी मां) उम्मे फजल रज़ि. ने उन्हें सूरा "वल मुरसलाते उरफा" पढ़ते सुना तो कहने लगी मेरे बेटे! तूने यह सूरत पढ़कर मुझे याद दिलाया कि यही वह आखरी सूरत है जो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनी थी। आप यह सूरत मगरिब की नमाज में पढ़ रहे थे।

٤٣٩ : عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقْرَأُ فِي ٱلْمَغْرِبِ بِطُولَى ٱلطُّولَيَيْنِ.

439 : जैद बिन साबित रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को मगरिब की नमाज में दो बड़ी सूरतों में से ज्यादा बड़ी सूरत पढ़ते हुये सुना है।

[رواه البخاري: ٧٦٤]

फायदे : मगरिब की नमाज़ का वक्त चूंकि थोड़ा होता है, इसलिए आम तौर पर छोटी छोटी सूरतें पढ़ी जाती है। इस हदीस से मालूम होता है कि कभी-कभार कोई बड़ी सूरत भी पढ़ देनी चाहिए। यह भी सुन्नत है। (औनुलबारी, 1/801)

बाब 58 : मगरिब की नमाज में जोर से किरअत करना।

٥٨ - باب: الجهرُ في المغرِبِ

440 : जुबैर बिन मुतइम रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मगरिब की नमाज में (सूरा) तूर पढ़ते सुना है।

٤٤٠ - عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقْرَأُ فِي ٱلْمَغْرِبِ بِالطُّورِ. [رواه البخاري: ٧٦٥]

बाब 59 : इशा की नमाज में सज्दे वाली सूरत पढ़ना।

٥٩ - باب: القِراءةُ في العِشاءِ بِالسَّجْدَةِ

441 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक बार अबुल कासिम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे इशा की नमाज अदा की तो आपने सूरा (इजस्समाउन शक्कत) पढ़ी और सज्दा किया। लिहाजा मैं हमेशा इस सूरत में सज्दा करता रहूंगा, यहां तक कि आपसे मिल जाऊँ।

٤٤١ - عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّيْتُ خَلْفَ أَبِي ٱلْقَاسِمِ ﷺ ٱلْعَتَمَةَ، فَقَرَأَ: ﴿إِذَا ٱلسَّمَآءُ ٱنشَقَّتْ﴾ فَسَجَدَ، فَلَا أَزَالُ أَسْجُدُ بِهَا حَتَّى أَلْقَاهُ. [رواه البخاري: ٧٦٨]

बाब 60 : इशा की नमाज में किरअत।

٦٠ - باب: القِرَاءَةُ فِي العِشَاءِ

442 : बरा बिन आजिब रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार सफर में थे तो आपने इशा की नमाज की एक रकअत में सूरा ''वत्तीने वज्जैतून'' तिलावत फरमाई, एक रिवायत में है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज्यादा अच्छी आवाज में पढ़ने वाला किसी को नहीं देखा।

٤٤٢ : عَنِ ٱلْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي سَفَرٍ، فَقَرَأَ فِي ٱلْعِشَاءِ فِي إِحْدَى ٱلرَّكْعَتَيْنِ، بِـ ﴿وَٱلتِّينِ وَٱلزَّيْتُونِ﴾ [رواه البخاري:٧٦٧]

وفي رواية أخرى قَالَ: وَمَا سَمِعْتُ أَحَدًا أَحْسَنَ صَوْتًا مِنْهُ، أَوْ قِرَاءَةً. [رواه البخاري: ٧٦٩]

बाब 61 : सुबह की नमाज़ में किरअत।

٦١ - باب: القِرَاءَةُ فِي الفَجْرِ

443 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हर नमाज़ में किरअत करना चाहिए, फिर जिन नमाजों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें जोर से सुनाया, उनमें तुम्हें जोर से सुनाते हैं और जिनमें आपने पढ़कर नहीं सुनाया, उनमें हम भी तुम्हें नहीं सुनाते है और अगर तू सूरा फातिहा से ज्यादा किरअत न करे तो भी काफी है और अगर ज्यादा पढ़ ले तो अच्छा है।

٤٤٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: فِي كُلِّ صَلاَةٍ يُقْرَأُ، فَمَا أَسْمَعَنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَسْمَعْنَاكُمْ، وَمَا أَخْفَى عَنَّا أَخْفَيْنَا عَنْكُمْ، وَإِنْ لَمْ تَزِدْ عَلَى أُمِّ ٱلْقُرْآنِ أَجْزَأَتْ، وَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ. [رواه البخاري: ٧٧٢]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि नमाज़ में फातिहा का पढ़ना जरूरी है, क्योंकि इसके बगैर नमाज़ नहीं होती। यह भी मालूम हुआ कि फातिहा के साथ दूसरी सूरत मिलाना बेतहर है, जरूरी नहीं।

बाब 62 : सुबह की नमाज़ में जोर से किरअत करना।

٦٢ - باب: الجَهْرُ بِقِرَاءَةِ صَلاَةِ الصُّبْحِ

444 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कुछ सहाबा के साथ उकाज के बाजार का इरादा करके चले। इन दिनों शैतान को आसमानी खबरें लेने से रोक दिया गया था और उन पर शोले बरसाये जा रहे थे तो शैतान अपनी कौम की तरफ लौट आये। कौम ने पूछा, क्या हाल है? शैतानों ने कहा, हमारे और आसमानी खबरों के बीच रूकावट खड़ी कर दी गई है और अब हम पर शोले बरसाये जा रहे हैं। कौम ने कहा, तुम्हारे और आसमानी खबरों के बीच किसी ऐसी चीज ने पर्दा कर दिया है जो अभी जाहिर हुई है। इसलिए जमीन में पूर्व और पश्चिम तक चल फिर कर देखो कि वह क्या है? जिसने तुम्हारे और आसमानी खबरों के बीच पर्दा डाल दिया है। तो वह उसकी तलाश में निकले, उनमें वह जिन्नात जो

٤٤٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ٱنْطَلَقَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فِي طَائِفَةٍ مِنْ أَصْحَابِهِ، عَامِدِينَ إِلَى سُوقِ عُكَاظَ، وَقَدْ حِيلَ بَيْنَ ٱلشَّيَاطِينِ وَبَيْنَ خَبَرِ ٱلسَّمَاءِ، وَأُرْسِلَتْ عَلَيْهِمُ ٱلشُّهُبُ، فَرَجَعَتِ ٱلشَّيَاطِينُ إِلَى قَوْمِهِمْ، فَقَالُوا: مَا لَكُمْ؟ فَقَالُوا: حِيلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ خَبَرِ ٱلسَّمَاءِ، وَأُرْسِلَتْ عَلَيْنَا ٱلشُّهُبُ. قَالُوا: مَا حَالَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ خَبَرِ ٱلسَّمَاءِ إِلَّا شَيْءٌ حَدَثَ، فَاضْرِبُوا مَشَارِقَ ٱلْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا، فَانْظُرُوا مَا هٰذَا ٱلَّذِي حَالَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ خَبَرِ ٱلسَّمَاءِ. فَانْصَرَفَ أُولٰئِكَ ٱلَّذِينَ تَوَجَّهُوا نَحْوَ تِهَامَةَ، إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ بِنَخْلَةَ، عَامِدِينَ إِلَى سُوقِ عُكَاظَ، وَهُوَ يُصَلِّي بِأَصْحَابِهِ صَلاَةَ ٱلْفَجْرِ، فَلَمَّا سَمِعُوا ٱلْقُرْآنَ ٱسْتَمَعُوا لَهُ، فَقَالُوا: هٰذَا وَٱللهِ ٱلَّذِي حَالَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ خَبَرِ ٱلسَّمَاءِ، فَهُنَالِكَ حِينَ رَجَعُوا إِلَى قَوْمِهِمْ، فَقَالُوا: يَا قَوْمَنَا: ﴿إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ○ يَهْدِي إِلَى ٱلرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِۦ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ أَحَدًا﴾. فَأَنْزَلَ ٱللهُ عَلَى نَبِيِّهِ ﷺ: ﴿قُلْ أُوحِىَ إِلَيَّ﴾، وَإِنَّمَا أُوحِيَ إِلَيْهِ قَوْلُ ٱلْجِنِّ. [رواه البخاري: ٧٧٣]

तिहामा की तरफ निकले थे, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आ पहुंचे। आप नख्ला के मकाम में थे और उकाज की मण्डी की तरफ जाने की नियत रखते थे। उस वक्त आप अपने सहाबा किराम को फज्र की नमाज पढ़ा रहे थे। जब उन जिन्नों ने कान लगाकर कुरआन सुना तो कहने लगे, अल्लाह की कसम! यही वह कुरआन है, जिसने तुम्हारे और आसमानी खबरों के बीच पर्दा डाल दिया है, इसी मकाम से वह अपनी कौम की तरफ लौट गये और कहने लगे, "भाईयो! हमने अजीब कुरआन सुना है जो हिदायत का रास्ता बताता है, चूनाँचे हम उस पर ईमान ले आये हैं। अब हम हरगिज अपने अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं बनायेंगे।" तब अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह सूरत नाजिल फरमायी, "कुल ऊहिया इलय्या" और आपको जिन्नों की बातें वह्यी के जरीया बताई गई।

٤٤٥ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: قَرَأَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فِيمَا أُمِرَ، وَسَكَتَ فِيمَا أُمِرَ. ﴿وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا﴾. ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ ٱللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾. [رواه البخاري: ٧٧٤]

445 : इब्ने अब्बास रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जिस नमाज़ में जोर से पढ़ने का हुक्म हुआ, आपने जोर से पढ़ा और जिसमें हल्के पढ़ने का हुक्म हुआ, हल्के पढ़ा और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं और बेशक तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी करना ही अच्छा है।

फायदे : कुरआन मजीद में नमाज़ के बीच कुरआन आहिस्ता या जोर से पढ़ने का खुलासा नहीं है। इससे मालूम हुआ कि कुरआन के अलावा भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्यी

आती थी। लिहाजा उन हजरात को गौर करना चाहिए जो दीनी अहकाम में सिर्फ कुरआन पर भरोसा करते हैं और हदीस उनके यकीन के लायक नहीं है।

---

٦٣ - باب: الجَمْعُ بَيْنَ السُّورَتَيْنِ فِي رَكْعَةٍ وَالقِرَاءَةُ بِالخَوَاتِيمِ وبِسُورَةٍ قَبْلَ سُورَةٍ وَبِأَوَّلِ سُورَةٍ

बाब 63 : दो सूरतें एक रकअत में पढ़ना, सूरत की आखरी आयतें पढ़ना, तरतीब के खिलाफ पढ़ना, और सूरत की शुरू की आयतें तिलावत करना।

٤٤٦ : عَنِ ٱبْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ جاءَهُ رَجُلٌ فَقالَ: قَرَأْتُ ٱلمُفَصَّلَ ٱللَّيْلَةَ فِي رَكْعَةٍ، فَقَالَ: هَذًّا كَهَذِّ ٱلشِّعْرِ، لَقَدْ عَرَفْتُ ٱلنَّظَائِرَ ٱلَّتِي كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يَقْرِنُ بَيْنَهُنَّ، فَذَكَرَ عِشْرِينَ سُورَةً مِنَ ٱلمُفَصَّلِ، سُورَتَيْنِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ. [رواه البخاري: ٧٧٥]

446 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि उनके पास एक आदमी आकर कहने लगा, मैंने रात को मुफस्सल की तमाम सूरतें एक रकअत में पढ़ डालीं। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. ने कहा, तूने इस कद्र तेजी से पढ़ी, जैसे नज्में पढ़ी जाती हैं, बेशक मैं उन जोड़ा-जोड़ा सूरतों को जानता हूँ, जिन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिलाकर पढ़ा करते थे। फिर आपने मुफस्सल की बीस सूरतें बयान कीं। यानी हर रकअत में पढ़ी जाने वाली दो दो सूरतें।

फायदे : उलमा ने कुरआनी सूरतों को चार हिस्सों में तकसीम किया है।

1. तिवाल : जो सूरतें सौ से ज्यादा आयतों पर शामिल है।
2. मिऐन : जो सूरतें सौ या उससे कम आयतों पर शामिल हैं।
3. मसानी : जो सौ से बहुत कम आयतों पर शामिल है।
4. मुफस्सल : सूरे हुजुरात से आखिर कुरआन तक। याद रहे

कि हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद ने जिन जोड़ा-जोड़ा सूरतों की निशानदही की है, उनमें से कुछ मौजूदा तरतीब कुरआन से मुख्तलिफ हैं।

बाब 64: आखरी दो रकअतों में सिर्फ सूरा फातिहा पढ़ना।

٦٤ - باب: يَقْرَأُ فِي الأُخْرَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

447 : अबू कतादा रज़ि. रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुहर की पहली दो रकअतों में सूरा फातिहा और दो सूरतें पढ़ते थे और पिछली दो रकअतों में सिर्फ सूरा फातिहा पढ़ते थे और कभी कभी कोई आयत हमें सुना भी देते थे और आप पहली रकअत को दूसरी रकअत से लम्बा करते, इस तरह असर और सुबह की नमाज़ में भी यही अमल था।

٤٤٧ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي ٱلظُّهْرِ، فِي ٱلأُولَيَيْنِ بِأُمِّ ٱلْكِتَابِ وَسُورَتَيْنِ، وَفِي ٱلرَّكْعَتَيْنِ ٱلأُخْرَيَيْنِ بِأُمِّ ٱلْكِتَابِ، وَيُسْمِعُنَا ٱلآيَةَ، وَيُطَوِّلُ فِي ٱلرَّكْعَةِ ٱلأُولَى مَا لاَ يُطَوِّلُ فِي ٱلرَّكْعَةِ ٱلثَّانِيَةِ، وَهٰكَذَا فِي ٱلْعَصْرِ، وَهٰكَذَا فِي ٱلصُّبْحِ. [رواه البخاري: ٧٧٦]

बाब 65 : इमाम का जोर से आमीन कहना।

٦٥ - باب: جَهْرُ الإِمَامِ بِالتَّأْمِينِ

448 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो, क्योंकि जिसकी आमीन फरिश्तों की आमीन से मिल

٤٤٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (إِذَا أَمَّنَ ٱلإِمَامُ فَأَمِّنُوا، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ ٱلْمَلاَئِكَةِ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ). [رواه البخاري: ٧٨٠]

जायेगी, उसके पिछले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे।

बाब 66 : आमीन कहने की फजीलत।

٦٦ - باب: فَضْلُ التَّأْمِينِ

449 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुममें से कोई आमीन कहता है तो आसमान पर फरिश्ते भी आमीन कहते हैं। अगर इन दोनों की आमीन एक दूसरे से मिल जाये तो इस (नमाजी) के पिछले सारे गुनाह माफ हो जाते हैं।

٤٤٩ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا قَالَ أَحَدُكُمْ: آمِينَ، وَقَالَتِ ٱلْمَلاَئِكَةُ فِي ٱلسَّمَاءِ: آمِينَ، فَوَافَقَتْ إِحْدَاهُمَا ٱلأُخْرَى، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ). [رواه البخاري: ٧٨١]

फायदे : मुकतदी इमाम की आमीन सुनकर आमीन कहेंगे। इससे मुकतदियों के लिए जोर से आमीन कहना साबित हुआ। एक रिवायत में है कि आमीन कहने पर हसद करना यहूद का तरीका है।

बाब 67 : सफ में शामिल होने से पहले रूकू करना।

٦٧ - باب: إِذَا رَكَعَ دُونَ الصَّفِّ

450 : अबू बकरा रज़ि. से रिवायत है, वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उस वक्त पहुंचे जब आप रूकू में थे। सफ में शामिल होने से पहले उन्होंने रूकू कर लिया। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह बयान किया तो आपने फरमाया, अल्लाह तआला तुम्हारा शौक और ज्यादा

٤٥٠ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ ٱنْتَهَى إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ رَاكِعٌ، فَرَكَعَ قَبْلَ أَنْ يَصِلَ إِلَى ٱلصَّفِّ، فَذَكَرَ ذٰلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: (زَادَكَ ٱللهُ حِرْصًا وَلاَ تَعُدْ). [رواه البخاري: ٧٨٣]

करे लेकिन आईन्दा ऐसा मत करना।

बाब 68 : रूकू में पूरे तौर पर तकबीर कहना।

٦٨ - باب: إتْمَامُ التَّكْبِيرِ فِي الرُّكُوعِ

451 : इमरान बिन हुसैन रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने अली रज़ि. के साथ बसरा में नमाज़ अदा की, फरमाने लगे, उन्होंने हमें वह नमाज़ याद दिला दी जो हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पढ़ा करते थे। फिर उन्होंने कहा कि आप तकबीर कहते थे, जब सर उठाते और सर झुकाते।

٤٥١ : عَنْ عِمْرَانَ بنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ صَلَّى مَعَ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ بِالْبَصْرَةِ، فَقَالَ: ذَكَّرَنَا هٰذَا ٱلرَّجُلُ صَلاَةً، كُنَّا نُصَلِّيهَا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَذَكَرَ أَنَّهُ كَانَ يُكَبِّرُ كُلَّمَا رَفَعَ وَكُلَّمَا وَضَعَ. [رواه البخاري: ٧٨٤]

फायदे : कुछ लोग रूकू और सज्दे के वक्त "अल्लाहु अकबर" कहना जरूरी खयाल नहीं करते थे। इमाम बुखारी इस मसले की तरदीद के लिए यह हदीस लाये हैं।

बाब 69 : जब सज्दा करके खड़ा हो तो तकबीर कहना।

٦٩ - باب: التَّكْبِيرُ إِذَا قَامَ مِنَ السُّجُودِ

452 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो तकबीर कहते, जब रूकू करते तो भी तकबीर कहते। फिर जब रूकू से अपनी पीठ उठाते तो "समे अल्लाहु

٤٥٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا قَامَ إِلَى ٱلصَّلاَةِ، يُكَبِّرُ حِينَ يَقُومُ، ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَرْكَعُ، ثُمَّ يَقُولُ: (سَمِعَ ٱللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ). حِينَ يَرْفَعُ صُلْبَهُ مِنَ ٱلرُّكُوعِ، ثُمَّ يَقُولُ وَهُوَ قَائِمٌ: (رَبَّنَا وَلَكَ ٱلْحَمْدُ). [رواه البخاري: ٧٨٩]

लिमन हमिदा'' कहते। उसके बाद खड़े होकर ''रब्बना व-लकल हम्द'' कहते थे।

बाब 70 : रूकू की हालत में हाथ घुटनों पर रखना।

٧٠ - باب: وَضعُ الأكُفِّ على الرُّكَبِ في الرُّكُوعِ

453 : सअद बिन अबी वक्कास रज़ि. से रिवायत है कि एक बार उनके बेटे मुसअब ने उनके पहलू में नमाज़ अदा की। मुसअब रज़ि. कहते हैं कि मैंने अपनी दोनों हथेलियों को मिलाकर अपनी रानों के बीच रख लिया। मेरे बाप ने मुझे इस काम से मना किया और कहा कि पहले हम ऐसा करते थे, फिर हमें ऐसा करने से रोक दिया गया और हुक्म दिया गया कि (रूकू में) अपने हाथ घूटनों पर रखा करें।

٤٥٣ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ صَلَّى إِلى جَنْبِهِ ابنه مُصْعَبٌ قَالَ: فَطَبَّقْتُ بَيْنَ كَفَّيَّ، ثُمَّ وَضَعْتُهُمَا بَيْنَ فَخِذَيَّ، فَنَهَانِي أَبِي وَقَالَ: كُنَّا نَفْعَلُهُ فَنُهِينَا عَنْهُ، وَأُمِرْنَا أَنْ نَضَعَ أَيْدِيَنَا عَلَى ٱلرُّكَبِ. [رواه البخاري: ٧٩٠]

फायदे : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. रूकू में दोनों हाथों की उंगलियाँ मिलाकर उन्हें रानों के बीच रखते थे। इमाम बुखारी ने यह हदीस लाकर बयान फरमाया कि यह हुक्म मनसूख हो चुका है, मुमकिन है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद को यह हदीस न पहुंची हो। (औनुलबारी, 1/817)

बाब 71: रूकू में पीठ का बराबर रखना और उसमें सुकून इख्तियार करना।

٧١ - باب: استِوَاءُ الظَّهرِ في الرُّكُوعِ والاطمِئنَان فيه

454 : बरा बिन आजिब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रूकू, सज्दा, सज्दों के बीच बैठना

٤٥٤ : عَنِ ٱلْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رُكُوعُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ وَسُجُودُهُ، وَبَيْنَ ٱلسَّجْدَتَيْنِ، وَإِذَا رَفَعَ مِنَ ٱلرُّكُوعِ، مَا خَلاَ ٱلْقِيَامَ

وَٱلْقُعُودَ، قَرِيبًا مِنَ ٱلسَّوَاءِ. [رواه البخاري: ٧٩٢]

और रूकू के बाद खड़े होना, यह सब तकरीबन बराबर होते थे। अलबत्ता कयाम और तशहहुद कुछ लम्बे होते थे।

٧٢ - باب: الدُّعَاءُ فِي الرُّكُوعِ

बाब 72 : रूकू में दुआ करना।

٤٥٥ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ فِي رُكُوعِهِ وَسُجُودِهِ: (سُبْحَانَكَ ٱللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، ٱللَّهُمَّ ٱغْفِرْ لِي). [رواه البخاري: ٧٩٤]

455 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, वह फरमाती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रूकू और सज्दे में यह दुआ पढ़ते थे ''सुब्हानकल्ला हुम्मा रब्बना वबिहम्दिका अल्ला हुम्मगफिरली''।

फायदे : कुछ इमामों ने रूकू की हालत में दुआ करने को बुरा खयाल किया है। इमाम बुखारी यह बताना चाहते हैं कि रूकू की हालत में दुआ करना ठीक है।(औनुलबारी, 1/820)

٤٥٦ : وَعَنْهَا فِي رِوَايَةٍ أُخرى: يَتَأَوَّلُ ٱلْقُرْآنَ. [رواه البخاري: ٨١٧]

486 : आइशा रज़ि. से ही ऊपर गुजरी हुई हदीस एक दूसरे तरीक से इन अलफाज के साथ बयान हुई हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (यह दुआ पढ़ने में) कुरआन मजीद पर अमल करते थे।

٧٣ - باب: فَضْلِ اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الحَمْدُ

बाब 73 : ''अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द'' की फजीलत।

٤٥٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ

457 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है

कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब इमाम ''समे अल्लाहुलिमन हमिदा'' कहे तो तुम ''रब्बना लकल हम्द'' कहो, क्योंकि जिसका यह कहना फरिश्तों के कहने के साथ होगा, उसके पिछले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे।

نْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا قَالَ ٱلإِمَامُ: سَمِعَ ٱللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا: ٱللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ ٱلحَمْدُ، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ ٱلمَلاَئِكَةِ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ). [رواه البخاري: ٧٩٦]

फायदे : याद रहे कि इमाम और मुकतदी दोनों को रूकू से सर उठाकर ''समी अल्लाहु लिमन हम्दा'' कहना चाहिए। इमाम बुखारी ने इस पर मुस्तकिल एक उनवान कायम किया है।

बाब 74 :

٧٤ - باب

458 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि बिलाशुबा मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ की तरह नमाज़ पढ़ता हूँ और अबू हुरैरा रज़ि. जुहर, इशा और फज्र की आखरी रकअत में ''समे अल्लाहु लिमन हमिदा'' के बाद कुनूत पढ़ा करते थे यानी मुसलमानों के लिए दुआ करते और काफिरों पर लानत करते थे।

٤٥٨ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لأُقَرِّبَنَّ صَلاَةَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ. فَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ يَقْنُتُ فِي الرَّكْعَةِ ٱلأُخْرَى مِنْ صَلاَةِ ٱلظُّهْرِ، وَصَلاَةِ ٱلعِشَاءِ، وَصَلاَةِ ٱلصُّبْحِ، بَعْدَ مَا يَقُولُ: سَمِعَ ٱللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، فَيَدْعُو لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَلْعَنُ ٱلْكُفَّارَ. [رواه البخاري: ٧٩٧]

459 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि फज्र और मगरिब की नमाज़ में कुनूत पढ़ी जाती थी।

٤٥٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلْقُنُوتُ فِي ٱلمَغْرِبِ وَٱلْفَجْرِ. [رواه البخاري: ٧٩٨]

फायदे : हंगामी हालतों में हर नमाज़ की आखरी रकअत में रूकू के बाद दुआ-ए-कुनूत पढ़ना चाहिए।

---

460 : रिफाआ बिन राफे जुरकी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे, जब आपने रूकू से सर उठाकर फरमाया, ''समे अल्लाहु लिमन हमिदा'' तो एक आदमी ने पीछे से कहा, ''रब्बना व-लकल हम्द, हम्दन कसीरन तय्येबन मुबारकन फी''। जब आप नमाज़ से फारिग हुऐ तो फरमाया कि यह कलमे किसने कहे थे? वह आदमी बोला! मैंने। तब आपने फरमाया कि मैंने तीस से ज्यादा फरिश्तों को देखा कि वह इस बात पर आपस में आगे बढ़ते थे कि कौन इसको पहले लिख ले?

٤٦٠ : عَنْ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ الزُّرَقِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي يَوْمًا وَرَاءَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ ٱلرَّكْعَةِ، قَالَ: (سَمِعَ ٱللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ). فَقَالَ رَجُلٌ وَرَاءَهُ: رَبَّنَا وَلَكَ ٱلْحَمْدُ، حَمْدًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ. فَلَمَّا ٱنْصَرَفَ، قَالَ: (مَنِ ٱلْمُتَكَلِّمُ). قَالَ: أَنَا، قَالَ: (رَأَيْتُ بِضْعَةً وَثَلاَثِينَ مَلَكًا يَبْتَدِرُونَهَا، أَيُّهُمْ يَكْتُبُهَا أَوَّلُ). [رواه البخاري: ٧٩٩]

फायदे : मालूम हुआ कि ''रब्बना व लकल हम्द हम्दन कसीरन तय्येबन मुबारकन फी'' जोर से कहना जाइज है।

बाब 75 : रूकू से सर उठाने के बाद सुकून से सीधा खड़ा होना।

٧٥ - باب: الاطمئنانية حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ

461 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि वह हमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ का तरीका बता रहे थे, चूनाँचे वह नमाज़ में खड़े होते और जब रूकू से सर

٤٦١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أنه كَانَ يَنْعَتُ صَلاَةَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَكَانَ يُصَلِّي، فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ ٱلرُّكُوعِ قَامَ حَتَّى نَقُولَ قَدْ نَسِيَ. [رواه البخاري: ٨٠٠]

उठाते तो इतनी देर खड़े होते कि हम कहते, आप भूल गये हैं।

बाब 76 : सज्दे के लिए अल्लाहु अकबर कहता हुआ झुके।

٧٦ - باب: يَهوِي بِالتَّكبِيرِ حِينَ يَسْجُدُ

462 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब (रूकू से) सर उठाते तो ''समे अल्लाहु लिमन हमिदा, रब्बना व-लकल हम्द'' कहते और कुछ लोगों के लिए उनका नाम लेकर दुआ करते हुये फरमाते, ऐ अल्लाह! वलीद बिन वलीद, सलमा बिन हिशाम, अय्याश बिन रबीआ और कमजोर मुसलमानों को काफिरों के जुल्म से निजात दे। ऐ अल्लाह! मुजर (कबीले का नाम) पर अपनी पकड़ सख्त कर दे, और उन्हें भूखमरी में मुब्तिला कर दे, जैसा कि यूसुफ अलैहि. के जमानें में अकाल पड़ा था। उस जमाने में पूर्व वालों से मुजर के लोग आपके दुश्मन थे।

٤٦٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ يَقُولُ: (سَمِعَ ٱللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، رَبَّنَا وَلَكَ ٱلْحَمْدُ). يَدْعُو لِرِجَالٍ فَيُسَمِّيهِمْ بِأَسْمَائِهِمْ، فَيَقُولُ: (ٱللَّهُمَّ أَنْجِ ٱلْوَلِيدَ بْنَ ٱلْوَلِيدِ، وَسَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ، وَعَيَّاشَ بْنَ أَبِي رَبِيعَةَ، وَٱلْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ، ٱللَّهُمَّ ٱشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ، وَٱجْعَلْهَا عَلَيْهِمْ سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ). وَأَهْلُ ٱلمَشْرِقِ يَوْمَئِذٍ مِنْ مُضَرَ مُخَالِفُونَ لَهُ. [رواه البخاري: ٨٠٤]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि नमाज़ में किसी का नाम लेकर दुआ या बद-दुआ करने में कोई हर्ज नहीं।

बाब 77 : सज्दे की फजीलत।

٧٧ - باب: فَضْلُ السُّجُودِ

٤٦٣ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّاسَ قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ هَلْ نَرَى رَبَّنَا يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ؟ قَالَ: (هَلْ تُمَارُونَ فِي ٱلْقَمَرِ لَيْلَةَ ٱلْبَدْرِ، لَيْسَ دُونَهُ حِجَابٌ؟). قَالُوا: لاَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (فَهَلْ تُمَارُونَ فِي ٱلشَّمْسِ لَيْسَ دُونَهَا سَحَابٌ؟) قَالُوا: لاَ، قَالَ: (فَإِنَّكُمْ تَرَوْنَهُ كَذَلِكَ، يُحْشَرُ ٱلنَّاسُ يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ، فَيَقُولُ: مَنْ كَانَ يَعْبُدُ شَيْئًا فَلْيَتَّبِعْ، فَمِنْهُمْ مَنْ يَتَّبِعُ ٱلشَّمْسَ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَتَّبِعُ ٱلْقَمَرَ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَتَّبِعُ ٱلطَّوَاغِيتَ، وَتَبْقَى هٰذِهِ ٱلأُمَّةُ فِيهَا مُنَافِقُوهَا، فَيَأْتِيهِمُ ٱللهُ فَيَقُولُ: أَنَا رَبُّكُمْ، فَيَقُولُونَ: هٰذَا مَكَانُنَا حَتَّى يَأْتِيَنَا رَبُّنَا، فَإِذَا جَاءَ رَبُّنَا عَرَفْنَاهُ، فَيَأْتِيهِمُ ٱللهُ فَيَقُولُ: أَنَا رَبُّكُمْ، فَيَقُولُونَ: أَنْتَ رَبُّنَا، فَيَدْعُوهُمْ فَيُضْرَبُ ٱلصِّرَاطُ بَيْنَ ظَهْرَانَيْ جَهَنَّمَ، فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يَجُوزُ مِنَ ٱلرُّسُلِ بِأُمَّتِهِ، وَلاَ يَتَكَلَّمُ يَوْمَئِذٍ أَحَدٌ إِلاَّ ٱلرُّسُلُ، وَكَلاَمُ الرُّسُلِ يَوْمَئِذٍ: ٱللّٰهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ، وَفِي جَهَنَّمَ كَلاَلِيبُ، مِثْلُ شَوْكِ ٱلسَّعْدَانِ، هَلْ رَأَيْتُمْ شَوْكَ ٱلسَّعْدَانِ؟). قَالُوا: نَعَمْ، قَالَ: (فَإِنَّهَا مِثْلُ شَوْكِ ٱلسَّعْدَانِ، غَيْرَ أَنَّهُ لاَ يَعْلَمُ قَدْرَ عِظَمِهَا إِلاَّ ٱللهُ، تَخْطَفُ ٱلنَّاسَ

463 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है कि लोगों ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या हम कयामत के रोज अपने रब को देखेंगे? आपने फरमाया कि बदर की रात के चांद में जिस पर कोई अबर (बादल) न हो (उसे देखने में) तुम्हें कोई शक होता है? सहाबा-ए-किराम रज़ि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! नहीं, आपने फरमाया तो क्या तुम सूरज (को देखने में) शक करते हो, जबकि उस पर अबर न हो? सहाबा-ए-किराम रज़ि. ने कहा, ऐ रसूलुल्लाह! हरगिज नहीं। आपने फरमाया, इसी तरह तुम अपने रब को देखोगे, कयामत के दिन जब लोग उठायें जायेंगे। तो अल्लाह तआला फरमाएगा जो (दुनिया में) जिसकी पूजा करता था वह उसके पीछे जाये, चूनांचे कोई तो सूरज के साथ हो जायेगा और कोई चांद के पीछे हो लेगा और कोई बुतों और शैतानों के पीछे चलेगा।

बाकी इस उम्मत के (मुसलमान) लोग रह जायेंगे। जिनमें मुनाफिक भी होंगे। उनके पास अल्लाह तआला (एक नई सूरत में) तशरीफ लायेगा और फरमायेगा, मैं तुम्हारा रब हूँ। वह अर्ज करेंगे, (हम तुझे नहीं पहचानते) हम उसी जगह खड़े रहेंगे। जब हमारा रब हमारे पास आयेगा तो हम उसे पहचान लेंगे। फिर अल्लाह तआला उनके पास अपनी असली शक्ल और सूरत में आयेगा और फरमायेगा कि मैं तुम्हारा रब हूँ तो वह कहेंगे, हां तू हमारा रब है। फिर अल्लाह तआला उन्हें बुलायेगा। उस वक्त जहन्नम की पीठ पर पुल रख दिया जायेगा। सबसे पहले मैं अपनी उम्मत के साथ उस पुल से गुजरूंगा। उस रोज रसूलों के अलावा कोई बात नहीं करेगा। रसूल कहेंगे, अल्लाह! सलामती दे, अल्लाह सलामती दे। जहन्नम में सादान के कांटो की तरह आंकड़े होंगे। क्या तुमने सादान के कांटे देखे हैं? सहाबा ने अर्ज किया, जी हां! आपने

بِأَعْمَالِهِمْ، فَمِنْهُمْ مَنْ يُوبَقُ بِعَمَلِهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يُخَرْدَلُ ثُمَّ يَنْجُو، حَتَّى إِذَا أَرَادَ ٱللهُ رَحْمَةَ مَنْ أَرَادَ مِنْ أَهْلِ ٱلنَّارِ، أَمَرَ ٱلْمَلاَئِكَةَ: أَنْ يُخْرِجُوا مَنْ كَانَ يَعْبُدُ ٱللهَ، فَيُخْرِجُونَهُمْ وَيَعْرِفُونَهُمْ بِآثَارِ ٱلسُّجُودِ، وَحَرَّمَ ٱللهُ عَلَى ٱلنَّارِ أَنْ تَأْكُلَ أَثَرَ ٱلسُّجُودِ، فَيَخْرُجُونَ مِنَ ٱلنَّارِ، فَكُلُّ ٱبْنِ آدَمَ تَأْكُلُهُ ٱلنَّارُ إِلَّا أَثَرَ ٱلسُّجُودِ، فَيَخْرُجُونَ مِنَ ٱلنَّارِ وقَدِ ٱمْتُحِشُوا فَيُصَبُّ عَلَيْهِمْ مَاءُ ٱلْحَيَاةِ، فَيَنْبُتُونَ كَمَا تَنْبُتُ ٱلْحِبَّةُ فِي حَمِيلِ ٱلسَّيْلِ، ثُمَّ يَفْرُغُ ٱللهُ مِنَ ٱلْقَضَاءِ بَيْنَ ٱلْعِبَادِ، وَيَبْقَى رَجُلٌ بَيْنَ ٱلْجَنَّةِ وَٱلنَّارِ، وَهُوَ آخِرُ أَهْلِ ٱلنَّارِ دُخُولاً ٱلْجَنَّةَ، مُقْبِلاً بِوَجْهِهِ قِبَلَ ٱلنَّارِ، فَيَقُولُ: يَا رَبِّ ٱصْرِفْ وَجْهِي عَنِ ٱلنَّارِ، قَدْ قَشَبَنِي رِيحُهَا، وَأَحْرَقَنِي ذَكَاؤُهَا، فَيَقُولُ: هَلْ عَسَيْتَ إِنْ فُعِلَ ذٰلِكَ بِكَ أَنْ تَسْأَلَ غَيْرَ ذٰلِكَ؟ فَيَقُولُ: لاَ وَعِزَّتِكَ، فَيُعْطِي ٱللهَ مَا يَشَاءُ مِنْ عَهْدٍ وَمِيثَاقٍ، فَيَصْرِفُ ٱللهُ وَجْهَهُ عَنِ ٱلنَّارِ، فَإِذَا أَقْبَلَ بِهِ عَلَى ٱلْجَنَّةِ، رَأَى بَهْجَتَهَا سَكَتَ مَا شَاءَ ٱللهُ أَنْ يَسْكُتَ، ثُمَّ قَالَ: يَا رَبِّ قَدِّمْنِي عِنْدَ بَابِ ٱلْجَنَّةِ، فَيَقُولُ ٱللهُ: أَلَيْسَ قَدْ أَعْطَيْتَ ٱلْعُهُودَ وَٱلْمِيثَاقَ، أَنْ لاَ تَسْأَلَ غَيْرَ ٱلَّذِي كُنْتَ سَأَلْتَ؟

فَيَقُولُ: يَا رَبِّ لاَ أَكُونُ أَشْقَى خَلْقِكَ، فَيَقُولُ: فَمَا عَسَيْتَ إِنْ أُعْطِيتَ ذٰلِكَ أَنْ لاَ تَسْأَلَ غَيْرَهُ؟ فَيَقُولُ: لاَ وَعِزَّتِكَ، لاَ أَسْأَلُ غَيْرَ ذٰلِكَ، فَيُعْطِي رَبَّهُ مَا شَاءَ مِنْ عَهْدٍ وَمِيثَاقٍ، فَيُقَدِّمُهُ إِلَى بَابِ ٱلْجَنَّةِ، فَإِذَا بَلَغَ بَابَهَا، فَرَأَى زَهْرَتَهَا، وَمَا فِيهَا مِنَ ٱلنَّضْرَةِ وَٱلسُّرُورِ، فَيَسْكُتُ مَا شَاءَ ٱللهُ أَنْ يَسْكُتَ، فَيَقُولُ: يَا رَبِّ أَدْخِلْنِي ٱلْجَنَّةَ، فَيَقُولُ ٱللهُ: وَيْحَكَ يَا ٱبْنَ آدَمَ، مَا أَغْدَرَكَ، أَلَيْسَ قَدْ أَعْطَيْتَ ٱلعَهْدَ وَٱلمِيثَاقَ، أَنْ لاَ تَسْأَلَ غَيْرَ ٱلَّذِي أُعْطِيتَ؟ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ لاَ تَجْعَلْنِي أَشْقَى خَلْقِكَ، فَيَضْحَكُ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ مِنْهُ، ثُمَّ يَأْذَنُ لَهُ فِي دُخُولِ ٱلْجَنَّةِ، فَيَقُولُ: تَمَنَّ، فَيَتَمَنَّى حَتَّى إِذَا ٱنْقَطَعَتْ أُمْنِيَّتُهُ، قَالَ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ: زِدْ مِنْ كَذَا وَكَذَا، أَقْبَلَ يُذَكِّرُهُ رَبُّهُ، حَتَّى إِذَا ٱنْتَهَتْ بِهِ ٱلأَمَانِيُّ، قَالَ ٱللهُ تَعَالَى: لَكَ ذٰلِكَ وَمِثْلُهُ مَعَهُ).

قَالَ أَبُو سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيُّ لأَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (قَالَ ٱللهُ لَكَ ذٰلِكَ وَعَشَرَةُ أَمْثَالِهِ). قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: لَمْ أَحْفَظْ مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ إِلَّا قَوْلَهُ: (لَكَ ذٰلِكَ وَمِثْلُهُ مَعَهُ). قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: إِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ: (ذٰلِكَ لَكَ وَعَشَرَةُ أَمْثَالِهِ). [رواه البخاري: ٨٠٦]

फरमाया, बस वह सादान के कांटों की तरह होंगे। मगर उनकी लम्बाई अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता है। वह आंकड़े लोगों को उनके (बुरे) कामों के मुताबिक घसीटेंगे। कुछ आदमी तो अपने बुरे कामों की वजह से बर्बाद हो जाऐगें और कुछ जख्मों से चूर होकर बच जाऐंगे, यहां तक कि अल्लाह तआला जहन्नम वालों में से जिन पर मेहरबानी करना चाहेगा तो फरिश्तों को हुक्म देगा, जो लोग अल्लाह की इबादत करते थे, वह निकाल लिये जायें। चुनाँचे फरिश्ते उन्हें सज्दों के निशानों से पहचानकर निकाल लेंगे। क्योंकि अल्लाह तआला ने आग पर सज्दों के निशानों को हराम कर दिया है। उन लोगों को जहन्नम में इस हालत में निकाला जायेगा कि सज्दो के निशानों के अलावा उनकी हर चीज को आग खा चुकी होगी, यह लोग कोयले की तरह बुझी हालत में जहन्नम से निकलेंगे। फिर उन पर जिन्दगी का पानी छिड़का जायेगा तो वह ऐसे उगेंगे, जिस

तरह कुदरती बीज पानी के बहाव में उगता है। उसके बाद अल्लाह तआला अपने बन्दों का फैसला करने से फारिग हो जाएगा, लेकिन एक आदमी जन्नत और दोजख के बीच रह जायेगा। वह जन्नत में दाखिल होने के एतबार से आखरी होगा। उसका मुंह दोजख की तरफ होगा और वह अर्ज करेगा, ऐ अल्लाह! मेरा मुंह दोजख की तरफ से फेर दे, क्योंकि इसकी बदबू ने मुझे झुलसा दिया है और इसके शोलों ने मुझे जला दिया है। अल्लाह तआला फरमाएगा, क्या तू फिर कभी ऐसा तो नहीं करेगा कि अगर तेरे साथ अच्छा सलूक किया जाये तो फिर इसके अलावा कुछ और मांगे? वह अर्ज करेगा, हरगिज नहीं, तेरी बुजुर्गी की कसम! फिर वह अल्लाह तआला से उसकी चाहत के मुताबिक वादा देगा, उसके बाद अल्लाह तआला उसका मुंह दोजख की तरफ से फेर देगा। जब वह जन्नत की तरफ मुंह करेगा तो उसकी तरोताजगी और बहार देखकर जितनी देर तक अल्लाह तआला को मन्जूर होगा, खामोश रहेगा। उसके बाद कहेगा, अल्लाह मुझे जन्नत के दरवाजे तक पहुंचा दे। अल्लाह तआला फरमाएगा क्या तूने इस बात की कसम न खायी थी कि जो कुछ तू मांग चुका है, उसके अलावा किसी और चीज की मांग नहीं करेगा। इस पर वह कहेगा, ऐ रब! बेशक लेकिन तेरी मखलूक में से सिर्फ मैं ही बदनसीब न रहूं, इरशाद होगा, अगर तुझे यह भी अता कर दिया जाये तो इसके अलावा कुछ और सवाल तो नहीं करेगा? वह कहेगा, तेरी बुजुर्गी की कसम! मैं इसके अलावा कोई और सवाल नहीं करूंगा। फिर अल्लाह तआला उसकी चाहत के मुताबिक कसम देगा। आखिर अल्लाह तआला उसे जन्नत के दरवाजे पर पहुंचा देगा। और जब वह जन्नत के दरवाजे के पास पहुंच जायेगा, वहां की रौनक और

खुशी देखकर जितनी देर अल्लाह को मन्जूर होगा, खामोश रहेगा। फिर यूँ कहेगा, ऐ मेरे रब! मुझको जन्नत में दाखिल कर दे। अल्लाह तआला फरमायेगा, ऐ आदम के बेटे! तुझ पर अफसोस, तू कितना वादा खिलाफ और दगाबाज है। क्या तूने इस बात का वादा न किया था कि अब मैं कोई चाहत नहीं करूंगा तो वह अर्ज करेगा, ऐ मेरे रब, मुझे अपनी मख्लूक में से सबसे ज्यादा बदनसीब न कर। तब उसकी बातों पर अल्लाह तआला को हंसी आ जायेगी। और उसे जन्नत में जाने की इजाजत देकर फरमाएगा कि चाहत कर। चूनांचे वह चाहत करने लगा, यहां तक कि उसकी तमाम चाहतें खत्म हो जायेंगी। तो अल्लाह फरमाएगा यह चीजें और मांग। उसका रब उसे खुद याद दिलाएगा। यहां तक कि जब उसकी तमाम चाहतें पूरी हो जायेगी, फिर अल्लाह तआला फरमाएगा, तुझे यह भी बल्कि इस जैसा और भी दिया जाता है।

अबू सईद खुदरी रज़ि. ने अबू हुरैरा रज़ि. से कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस जगह पर फरमाया था कि अल्लाह तआला फरमाएगा, "तेरे लिए यह भी और इसके साथ दस गुना ज्यादा तेरे लिए है।" अबू हुरैरा रज़ि. कहने लगे कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यही याद है कि अल्लाह तआला फरमाएगा, "तेरे लिये यह और इतना और है।" अबू सईद रज़ि. ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना, "यह सब कुछ तुझे दिया और दस गुना ज्यादा भी दिया जाता है।"

फायदे : इस हदीस से सज्दे की फजीलत का पता चलता है कि अल्लाह तआला उस पेशानी को नहीं जलाएगा, जिस पर सज्दे के

निशान होंगे और उन्हीं निशानों की वजह से बेशुमार गुनाहगारों को ढूंढ़ ढूंढकर जहन्नम से निकाला जाएगा और इसमें बेशुमार अल्लाह की खूबियों का सुबूत है, जिनका किताबुत्तौहीद में बयान होगा।

٧٨ - باب: السُّجُودُ عَلَى سَبْعَةِ أَعْظُمٍ

बाब 78 : सात हड्डियों पर सज्दा करना।

٤٦٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما في روايةٍ قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (أُمِرْتُ أَنْ أَسْجُدَ عَلَى سَبْعَةِ أَعْظُمٍ عَلَى ٱلْجَبْهَةِ - وَأَشَارَ بِيَدِهِ عَلَى أَنْفِهِ - وَٱلْيَدَيْنِ، وَٱلرُّكْبَتَيْنِ، وَأَطْرَافِ ٱلْقَدَمَيْنِ، وَلاَ نَكْفِتَ ٱلثِّيَابَ وَٱلشَّعَرَ). [رواه البخاري: ٨١٢]

464 : इब्ने अब्बास रज़ि. से एक रिवायत में है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुझे सात हड्डियों पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया है। पेशानी पर और आपने अपने हाथ से अपनी नाक, दोनों हाथों और दोनों घूटनों और दोनों पावों की तरफ इशारा फरमाया और यह भी हुक्म दिया गया कि हम कपड़ों और बालों को न समेटे।

फायदे : हकीकत में पेशानी का जमीन पर रखना ही सज्दा है और नाक भी पेशानी में दाखिल है। लिहाजा नाक और पेशानी दोनों का जमीन पर रखना जरूरी है। नीज सज्दे के बीच अपने पावों, ऐड़ियों समेत मिलाकर रखे और उंगलियों का रूख किब्ले की तरफ होना चाहिए।

٧٩ - باب: المُكْثُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ

बाब 79 : दोनों सज्दों के बीच ठहरना।

٤٦٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنِّي لاَ آلُو أَنْ أُصَلِّيَ بِكُمْ كَمَا رَأَيْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ. وباقي الحديث تقدَّم. [رواه البخاري: ٨٢١]

465 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं कोताही नहीं करूंगा कि तुम्हें वैसी ही नमाज़ पढ़ाऊं, जिस तरह मैंने

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पढ़ते देखा है। बाकी हदीस **461** पहले गुजर चुकी है।

फायदे : उसमें यह अलफाज भी हैं कि दोनों सज्दों के बीच इतनी देर तक बैठते कि देखने वाला खयाल करता कि शायद आप दूसरा सज्दा करना भूल गये है। दूसरी हदीस से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोनों सज्दों के बीच ''रब्बिग फिरली, रब्बिग फिरली'' बार बार पढ़ते थे।

बाब 80 : सज्दों के दौरान अपने बाजू जमीन पर न बिछाये।

٨٠ - باب: لا يَفْتَرِشُ ذِرَاعَيْهِ فِي السُّجُودِ

466 : अनस रज़ि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सज्दा ठीक तौर पर अदा करो और तुम में से कोई अपने दोनों बाजू जमीन पर कुत्ते की तरह न बिछाए।

٤٦٦ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (ٱعْتَدِلُوا فِي ٱلسُّجُودِ، وَلاَ يَبْسُطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ ٱنْبِسَاطَ ٱلْكَلْبِ). [رواه البخاري: ٨٢٢]

बाब 81 : ताक रकअत के बाद थोड़ी देर बैठकर फिर खड़ा होना।

٨١ - باب: مَنِ ٱسْتَوَى قَاعِداً فِي وِتْرٍ مِنْ صَلاَتِهِ ثُمَّ نَهَضَ

467 : मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ते हुये देखा। आप जब नमाज़ की ताक रकअत में होते तो उस वक्त तक खड़े न होते जब तक सीधे बैठ न जाते।

٤٦٧ : عَنْ مَالِكِ بْنِ ٱلْحُوَيْرِثِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ رَأَى ٱلنَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي، فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلاَتِهِ، لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا. [رواه البخاري: ٨٢٣]

फायदे : पहली और तीसरी रकअत के दूसरे सज्दे से सर उठाकर थोड़ा बैठकर फिर उठना उसको इस्तिराहत का जलसा कहते हैं। जो सही सुन्नत से साबित है।

बाब 82 : दो रकअतों से उठते वक्त तकबीर कहना।

٨٢ - باب: يُكَبِّرُ وَهُوَ يَنْهَضُ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ

468 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने नमाज़ पढ़ाई तो जिस वक्त उन्होंने अपना सर (पहले) सज्दे से उठाया, फिर जब सज्दा किया और जब उन्होंने (दूसरे सज्दे से) सर उठाया और जब दो रकअतों से उठे तो तेज आवाज़ से तकबीर कही। फिर उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसा करते देखा है।

٤٦٨ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ صَلَّى، فَجَهَرَ بِالتَّكْبِيرِ حِينَ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ ٱلسُّجُودِ، وَحِينَ سَجَدَ وَحِينَ رَفَعَ، وَحِينَ قَامَ مِنَ ٱلرَّكْعَتَيْنِ، وَقَالَ: هٰكَذَا رَأَيْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ. [رواه البخاري: ٨٢٥]

बाब 83 : तशह्हुद में बैठने का तरीका।

٨٣ - باب: سُنَّةُ الجُلُوسِ فِي التَّشَهُّدِ

469 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि वह नमाज़ में चार जानों बैठते थे, लेकिन उन्होंने जब अपने बच्चे को ऐसा करते देखा तो उसे मना कर दिया और फरमाया कि नमाज़ में (बैठने का) सुन्नत तरीका यह है कि तुम अपना दायां पांव खड़ा करो और

٤٦٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما: أَنَّهُ كَانَ يَتَرَبَّعُ فِي ٱلصَّلَاةِ إِذَا جَلَسَ، وأَنَّه رأى وَلَدَهُ فعلَ ذلكَ فنهاهُ، وقَالَ: إِنَّمَا سُنَّةُ ٱلصَّلَاةِ أَنْ تَنْصِبَ رِجْلَكَ ٱلْيُمْنَى، وَتَثْنِيَ ٱلْيُسْرَى، فقال لهُ: إِنَّكَ تَفْعَلُ ذٰلِكَ؟ فَقَالَ: إِنَّ رِجْلَيَّ لَا تَحْمِلَانِي. [رواه البخاري: ٨٢٧]

बाया पाव फैला दो। आपके बेटे ने कहा, आप ऐसा क्यों करते हैं? उन्होंने फरमाया कि मेरे पावं मेरा बोझ नहीं उठा सकते।

470 : अबू हुमैद साइदी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ तुम सब से ज्यादा याद है। मैंने देखा कि आपने तकबीरे तहरीमा कही और अपने दोनों हाथ दोनों कन्धों के बराबर ले गये और जब आपने रूकू किया तो आपने दोनों हाथ घुटनों पर जमा लिये। फिर अपनी कमर को झुकाया और जब आपने सर उठाया तो ऐसे सीधे हुये कि हर हड्डी अपनी जगह पर आ गयी और जब आपने सज्दा किया तो न आप दोनों हाथों को बिछाये हुये थे और न ही समेटे हुये और पांव की उंगलियाँ किब्ले की तरफ थी और दो रकअतों में बैठते तो बायां पांव बिछाकर बैठते और दायां पांव खड़ा रखते। जब आखरी रकअत में बैठते तो बायां पांव आगे करते और दायां पावं खड़ा रखते। फिर अपने बायें कूल्हे के बल बैठ जाते।

٤٧٠ : عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ ٱلسَّاعِدِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَنَا كُنْتُ أَحْفَظَكُمْ لِصَلاَةِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، رَأَيْتُهُ إِذَا كَبَّرَ جَعَلَ يَدَيْهِ حِذَاءَ مَنْكِبَيْهِ، وَإِذَا رَكَعَ أَمْكَنَ يَدَيْهِ مِنْ رُكْبَتَيْهِ، ثُمَّ هَصَرَ ظَهْرَهُ، فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ ٱسْتَوَى، حَتَّى يَعُودَ كُلُّ فَقَارٍ مَكَانَهُ، فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَ يَدَيْهِ غَيْرَ مُفْتَرِشٍ وَلاَ قَابِضِهِمَا، وَٱسْتَقْبَلَ بِأَطْرَافِ أَصَابِعِ رِجْلَيْهِ ٱلْقِبْلَةَ، فَإِذَا جَلَسَ فِي ٱلرَّكْعَتَيْنِ جَلَسَ عَلَى رِجْلِهِ ٱلْيُسْرَى، وَنَصَبَ ٱلْيُمْنَى، وَإِذَا جَلَسَ فِي ٱلرَّكْعَةِ ٱلأَخِيرَةِ، قَدَّمَ رِجْلَهُ ٱلْيُسْرَى، وَنَصَبَ ٱلأُخْرَى، وَقَعَدَ عَلَى مَقْعَدَتِهِ. [رواه البخاري: ٨٢٨]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि आखरी रकअत में तवर्रुक करना चाहिए। (औनुलबारी, 1/845)

बाब 84 : जो पहले तशह्हुद को वाजिब नहीं कहता।

٨٤ - باب: مَنْ لَمْ يَرَ التَّشَهُّدَ الأَوَّلَ وَاجِباً

471 : अब्दुल्लाह बिन बुहैना रज़ि. (जो कबीला अज्देशनुआ से हैं और बनी अब्दे मनाफ के हलीफ और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा में से थे) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को एक दिन जुहर नमाज़ पढ़ाई और पहली दो रकअतों के बाद बैठने की बजाये खड़े हो गये। लोग भी आपके साथ खड़े हो गये। जब आप अपनी नमाज़ पूरी कर चुके तो लोग इन्तजार में थे कि अब सलाम फैरेंगे तो आपने बैठे बैठे ही अल्लाहु अकबर कहा, सलाम से पहले दो सज्दे किये फिर सलाम फेरा।

٤٧١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ ابْنِ بُحَيْنَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَهُوَ مِنْ أَزْدِ شَنُوءَةَ، وَهُوَ حَلِيفٌ لِبَنِي عَبْدِ مَنَافٍ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِهِمُ ٱلظُّهْرَ، فَقَامَ فِي ٱلرَّكْعَتَيْنِ ٱلأُولَيَيْنِ، لَمْ يَجْلِسْ، فَقَامَ ٱلنَّاسُ مَعَهُ، حَتَّى إِذَا قَضَى ٱلصَّلَاةَ، وَٱنْتَظَرَ ٱلنَّاسُ تَسْلِيمَهُ، كَبَّرَ وَهُوَ جَالِسٌ، فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ، ثُمَّ سَلَّمَ.
[رواه البخاري: ٨٢٩]

फायदे : इस हदीस से इमाम बुखारी ने यह साबित किया है कि पहला तशहहुद फर्ज नहीं अगर ऐसा होता तो आप इसको लौटाते, लेकिन दूसरी रिवायतों से पता चलता है कि यह जरूरी है, लेकिन अगर रह जाये तो सज्दा-ए-सहु से इसकी तलाफी हो जाती है। इमाम शौकानी रह. का भी यही रूझान है।

(औनुलबारी, 1/846)

बाब 85 : दूसरे कअदह में तशहहुद पढ़ने का बयान।

٨٥ - باب: التَّشَهُّدُ فِي الآخِرَةِ

472 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम जब नबी सल्लल्लाहु

٤٧٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كُنَّا إِذَا صَلَّيْنَا خَلْفَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قُلْنَا: ٱلسَّلَامُ عَلَى

اَللّٰهِ، اَلسَّلَامُ عَلَى جِبْرِيلَ وَمِيكَائِيلَ، اَلسَّلَامُ عَلَى فُلَانٍ وَفُلَانٍ، فَالْتَفَتَ إِلَيْنَا رَسُولُ اَللّٰهِ ﷺ فَقَالَ: (إِنَّ اَللّٰهَ هُوَ اَلسَّلَامُ، فَإِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ: اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ، وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا اَلنَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اَللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اَللّٰهِ اَلصَّالِحِينَ، فَإِنَّكُمْ إِذَا قُلْتُمُوهَا، أَصَابَتْ كُلَّ عَبْدٍ لِلّٰهِ صَالِحٍ فِي اَلسَّمَاءِ وَالْأَرْضِ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اَللّٰهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ). [رواه البخاري: ٨٣١]

अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ते थे तो कअदह में कहा करते थे, जिब्राईल पर सलाम, मीकाईल पर सलाम, फलां पर और फलां पर सलाम, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारी तरफ मुंह करके फरमाया, अल्लाह तो खुद ही सलाम है, जब तुममें से कोई नमाज़ पढ़े तो (कअदह में) यों कहे, '' सब बड़ाइयाँ, इबादतें और अच्छी बातें अल्लाह के लिए हैं, ऐ नबी तुम पर सलाम, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों, हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर सलाम हो। क्योंकि जब तुम यह कहोंगे तो यह दुआ अल्लाह के हर नेक बन्दे को पहुंच जायेगी, चाहे वह जमीन पर हो या आसमान में। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद कुछ सहाबा किराम ने तश्शहुद में खिताब का सेगा छोड़कर गायब का सेगा इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था। (औनुलबारी, 1/850)

बाब 86 : सलाम से पहले दुआ का बयान।

٨٦ - باب: الدُّعَاءُ قَبْلَ السَّلَامِ

473 : आइशा रज़ि. (जो नबी सल्लल्लाहु

٤٧٣ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اَللّٰهُ

ـنها زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّ رَسُولَ لله ﷺ كَانَ يَدْعُو فِي الصَّلاَةِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ لْقَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ لدَّجَّالِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا فِتْنَةِ الْمَمَاتِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ نَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ). فَقَالَ لَهُ ائِلٌ: مَا أَكْثَرَ مَا تَسْتَعِيذُ مِنَ لْمَغْرَمِ؟ فَقَالَ: (إِنَّ الرَّجُلَ إِذَا غَرِمَ، حَدَّثَ فَكَذَبَ، وَوَعَدَ أَخْلَفَ). [رواه البخاري: ٨٣٢]

अलैहि वसल्लम की बीवी है) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में यह दुआ किया करते थे। ऐ अल्लाह! मैं कब्र के अजाब से तेरी पनाह मांगता हूँ और फितना दज्जाल से तेरी पनाह चाहता हूं, जिन्दगी और मौत के फितना से तेरी पनाह में आता हूँ, ऐ अल्लाह मैं गुनाह और कर्ज से तेरी पनाह चाहता हूँ। आपसे एक आदमी ने कहा, आप कर्ज से बहुत पनाह मांगते हैं? आपने फरमाया, इन्सान जब कर्जदार होता है तो बात करते वक्त झूट बोलता है और जब वादा करता है तो उसकी खिलाफवर्जी करता है।

٤٧٤ : عَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ قَالَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ: عَلِّمْنِي دُعَاءً أَدْعُو بِهِ فِي صَلاَتِي. قَالَ: (قُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا، وَلاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ، فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ، وَارْحَمْنِي، إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ). [رواه البخاري: ٨٣٤]

474 : अबू बकर सिद्दीक रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया कि आप मुझे कोई ऐसी दुआ सिखा:। जिसे मैं नमाज़ में पढ़ा करूं। आपने फरमाया, यह पढ़ा करो: ऐ अल्लाह! मैंने अपने आप पर बहुत जुल्म किया और गुनाहों को तेरे अलावा कोई माफ करने वाला नहीं। पस तू मुझे अपनी तरफ से माफ कर दे और मुझ पर मेहरबानी फरमा, यकीनन तू बख्शने वाला मेहरबान है।

बाब 87 : तश्शहुद के बाद पसन्दीदा दुआ करना।

٨٧ - باب: مَا يُتَخَيَّرُ مِنَ الدُّعَاءِ بَعْدَ التَّشَهُّدِ

475 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत 472 जो पहले गुजर चुकी है, इस तरीक में "अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु वरसूलूहू' के बाद मजीद फरमाया, फिर जो दुआ उसको पसन्द आये, पढ़े।

٤٧٥ : حديث ابن مَسْعودٍ رضي الله عنه في التَّشَهُّد تقدم قريبًا، وقال في هذه الرواية بعد قوله: (وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ): (ثُمَّ يَتَخَيَّرُ مِنَ ٱلدُّعَاءِ أَعْجَبَهُ إِلَيْهِ فَيَدْعُو). [رواه البخاري: ٨٣٥]

फायदे : बेहतर है कि पसन्दीदा दुआ का चुनाव मासूरा दुआओं में से करें, क्योंकि बेशुमार मसनून दुआयें ऐसी मौजूद हैं जो हमारे मकसद पर शामिल हैं, इनका पढ़ना खैर और बरकत का सबब होगा, तमाम मकसदों पर शामिल यह दुआ ही काफी है, "रब्बना आतिना फिद्दुनिया, हसनतौं वफिलआखिरते हसनतवौं वकिना अजाबन्नार"

बाब 88 : सलाम फेरना।

٨٨ - باب: التَّسْلِيمُ

476 : उम्मे सलमा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सलाम फेरते थे तो औरतें आपके सलाम फेरते ही खड़ी होकर चल देती थीं और आप खड़े होने से पहले कुछ देर ठहर जाते।

٤٧٦ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ، قَامَ ٱلنِّسَاءُ حِينَ يَقْضِي تَسْلِيمَهُ، وَمَكَثَ يَسِيرًا قَبْلَ أَنْ يَقُومَ. [رواه البخاري: ٨٣٧]

फायदे : आखिर में सलाम फेरना नमाज़ का एक हिस्सा है, लेकिन कुछ हजरात इससे इत्तेफाक नहीं करते, उनका मसला है कि नमाजी अपने किसी भी काम के जरीये नमाज़ से निकल सकता है। इस मसले में इख्तिलाफ है, क्योंकि हदीस में है कि तकबीरे तहरीमा

नमाज़ में दाखिल होने और सलाम फेरना उससे खारिज होने का जरीया है। (औनुलबारी, 1/861)

बाब 89 : इमाम के सलाम के साथ ही मुकतदी भी सलाम फेर दे।

٨٩ - باب: يُسَلِّمُ حِينَ يُسَلِّمُ الإمَامُ

477 : इत्बान रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी तो जब आपने सलाम फेरा तो हमने भी सलाम फेर दिया।

٤٧٧ : عَنْ عِتْبَانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّيْنَا مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَسَلَّمْنَا حِينَ سَلَّمَ. [رواه البخاري: ٨٣٨]

फायदे : मकसद यह है कि मुकतदियों को सलाम फैरने में देर नहीं करनी चाहिए, बल्कि इमाम की पैरवी करते हुये साथ ही सलाम फेर दें।

बाब 90 : नमाज़ के बाद अल्लाह तआला का जिक्र करना।

٩٠ - باب: الذِّكْرُ بَعْدَ الصَّلاةِ

478 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि फर्ज नमाज़ से फारिग होने के बाद जोर से जिक्र करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में जारी था। इब्ने अब्बास रज़ि. फरमाते हैं कि मुझे तो लोगों का नमाज़ से फारिग होने का पता इस जिक्र की आवाज़ सुनकर मालूम होता था।

٤٧٨ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَفْعَ ٱلصَّوْتِ بِالذِّكْرِ، حِينَ يَنْصَرِفُ ٱلنَّاسُ مِنَ ٱلْمَكْتُوبَةِ، كَانَ عَلَى عَهْدِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ ٱبْنُ عَبَّاسٍ: كُنْتُ أَعْلَمُ إِذَا ٱنْصَرَفُوا بِذَلِكَ إِذَا سَمِعْتُهُ. [رواه البخاري: ٨٤١]

٤٧٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ ٱلْفُقَرَاءُ إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالُوا: ذَهَبَ أَهْلُ ٱلدُّثُورِ مِنَ ٱلأَمْوَالِ بِالدَّرَجَاتِ ٱلْعُلاَ وَٱلنَّعِيمِ ٱلْمُقِيمِ: يُصَلُّونَ كَمَا نُصَلِّي، وَيَصُومُونَ كَمَا نَصُومُ، وَلَهُمْ فَضْلُ أَمْوَالٍ، يَحُجُّونَ بِهَا وَيَعْتَمِرُونَ، وَيُجَاهِدُونَ وَيَتَصَدَّقُونَ. قَالَ: (أَلاَ أُحَدِّثُكُمْ بِأَمْرٍ إِنْ أَخَذْتُمْ بِهِ، أَدْرَكْتُمْ مَنْ سَبَقَكُمْ، وَلَمْ يُدْرِكْكُمْ أَحَدٌ بَعْدَكُمْ، وَكُنْتُمْ خَيْرَ مَنْ أَنْتُمْ بَيْنَ ظَهْرَانَيْهِمْ، إِلَّا مَنْ عَمِلَ مِثْلَهُ؟ تُسَبِّحُونَ وَتَحْمَدُونَ وَتُكَبِّرُونَ، خَلْفَ كُلِّ صَلاَةٍ، ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ).

قَالَ الراوي: فَاخْتَلَفْنَا بَيْنَنَا، فَقَالَ بَعْضُنَا: نُسَبِّحُ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَنَحْمَدُ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَنُكَبِّرُ أَرْبَعًا وَثَلاَثِينَ، فَرَجَعْتُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: (تَقُولُ: سُبْحَانَ ٱللهِ، وَٱلْحَمْدُ للهِ، وَٱللهُ أَكْبَرُ، حَتَّى يَكُونَ مِنْهُنَّ كُلِّهِنَّ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ). [رواه البخاري: ٨٤٣]

479 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि कुछ फकीर लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और कहने लगे कि ज्यादा मालदार लोग बड़े बड़े दर्जे और हमेशा के लिए ऐश ले गये, क्योंकि हमारी तरह वह नमाज़ पढ़ते हैं और हमारी तरह वह रोजे रखते हैं। लेकिन उनके पास माल बहुत ज्यादा है, जिससे वह हज और उमराह और जिहाद करते हैं और सदका भी देते हैं। इस पर आपने फरमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बताऊं कि उस पर अमल करके तुम उन लोगों को पा लोगे जो तुमसे सबकत ले गये हैं और तुम्हारे बाद तुम्हें कोई न पा सके और तुम जिन लोगों में हों, उनसे बेहतर हो जाओगे। सिवाये उस आदमी के, जो उसके बराबर अमल करे (वह तुम्हारे बराबर रहेगा) तुम हर नमाज़ के बाद 33 बार ''सुब्हान अल्लाह'', 33 बार ''अलहम्दु लिल्लाह'', 33 बार ''अल्लाहु अकबर'' पढ़ लिया करो।

रावी कहता है कि फिर हमारा आपस में इख्तिलाफ हो गया, हममें से कुछ ने कहा कि हम 33 बार ''सुब्हान अल्लाह'', 33 बार

"अलहम्दु लिल्लाह" और 34 बार "अल्लाहु अकबर" पढ़ेंगे तो मैंने फिर अपने उस्ताद से पूछा तो उसने कहा, "सुब्हान अल्लाह वलहम्दु लिल्लाह और अल्लाहु अकबर" पढ़ा करो, यहां तक कि उनमें से हर एक 33 बार हो जाये।

480 : मुगीरा बिन शुअबा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर फर्ज नमाज़ के बाद यह पढ़ा करते थे।

अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक नहीं है, वह एक है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर बात पर ताकत रखता है। ऐ अल्लाह! जो कुछ तू दे, उसे रोकने वाला कोई नहीं और जो चीज तू रोक ले, उसका देने वाला कोई नहीं, किसी बुजुर्ग की कोई बुजुर्गी तेरे सामने कुछ फायदा नहीं देती।

٤٨٠ : عَنِ ٱلْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ مَكْتُوبَةٍ: (لاَ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ ٱلْمُلْكُ، وَلَهُ ٱلْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. ٱللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلاَ يَنْفَعُ ذَا ٱلْجَدِّ مِنْكَ ٱلْجَدُّ).
[رواه البخاري: ٨٤٤]

बाब 91 : इमाम को चाहिए कि सलाम फेरने के बाद लोगों की तरफ मुह करके बैठे।

٩١ - باب: يَسْتَقْبِلُ الإِمَامُ النَّاسَ إِذَا سَلَّمَ

481 : समुरह बिन जुन्दुब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ लेते तो अपना मुंह हमारी तरफ कर लेते थे।

٤٨١ : عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ إِذَا صَلَّى صَلاَةً، أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ.
[رواه البخاري: ٨٤٥]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि नमाज़ के बाद जोर से इमाम का दुआ करना और मुकतदियों का आमीन कहना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा-ए-किराम रज़ि. का अमल न था, बल्कि इसे बहुत जमाने बाद निकाला गया है।

٤٨٢ : عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الجُهَنِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: صَلَّى لَنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ صَلاَةَ ٱلصُّبْحِ بِالحُدَيْبِيَةِ، عَلَى إِثْرِ سَمَاءٍ كَانَتْ مِنَ ٱللَّيْلِ، فَلَمَّا ٱنْصَرَفَ، أَقْبَلَ عَلَى ٱلنَّاسِ فَقَالَ: (هَلْ تَدْرُونَ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ عزَّ وجلَّ؟): قَالُوا: ٱللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: (أَصْبَحَ مِنْ عِبَادِي مُؤْمِنٌ بي وَكَافِرٌ، فَأَمَّا مَنْ قَالَ: مُطِرْنَا بِفَضْلِ ٱللهِ وَرَحْمَتِهِ، فَذَلِكَ مُؤْمِنٌ بِي وَكَافِرٌ بِالْكَوَاكِبِ، وَأَمَّا مَنْ قَالَ: مُطِرْنا بِنَوْءِ كَذَا وَكَذَا، فَذَلِكَ كَافِرٌ بِي وَمُؤْمِنٌ بِالْكَوَاكِبِ). [رواه البخاري: ٨٤٦]

482 : जैद बिन खालिद जुहनी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुदैबिया में बारिश के बाद, जो रात को हुई थी, फज की नमाज पढ़ाई। फारिग होने के बाद लोगों की तरफ मुंह करके फरमाया, तुम जानते हो कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया है? उन्होंने अर्ज किया कि अल्लाह और उसका रसूल ही ज्यादा जानता है। आपने कहा, अल्लाह का इरशाद है कि मेरे बन्दों में कुछ लोग मौमिन हुये और कुछ काफिर, जिसने यह कहा कि अल्लाह के फज्ल और उसकी रहमत से हम पर बारिश हुई, वह तो मेरा मौमिन बन्दा है और सितारों को न मानने वाला और जिसने कहा कि हम पर फलाँ सितारे की वजह से बारिश हुई है, वह मेरा न मानने वाला और सितारों पर ईमान लाने वाला है।

٩٢ - باب: مَنْ صَلَّى بِالنَّاسِ فَذَكَرَ حَاجَةً فَتَخَطَّاهُمْ

बाब 92 : जो आदमी नमाज़ पढ़ाकर अपनी कोई जरूरत याद करे और लोगों को फलांगता हुआ निकल जाये।

483 : उकबा बिन आमिर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे मदीना मुनव्वरा में असर की नमाज़ पढ़ी, आपने सलाम फेरा और जल्दी से खड़े हो गये। लोगों की गर्दनें फलांगते हुए अपनी एक बीवी के कमरे में तशरीफ ले गये। लोग आपकी इस जल्दबाजी से घबरा गये। फिर जब आप वापस तशरीफ लाये तो देखा कि लोग आपके जल्दी जाने की वजह से हैरान हैं। आपने फरमाया कि मुझे कुछ सोना याद आ गया था जो मेरे घर में रखा हुआ था। मुझे नागवार गुजरा कि वह मेरे लिए अल्लाह की याद में पर्दा बने। इसलिए मैंने उसे बांट देने का हुक्म दे दिया।

٤٨٣ : عَنْ عُقْبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّيْتُ وَرَاءَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ بِالْمَدِينَةِ ٱلْعَصْرَ، فَسَلَّمَ ثُمَّ قَامَ مُسْرِعًا، يَتَخَطَّى رِقَابَ ٱلنَّاسِ، إِلَى بَعْضِ حُجَرِ نِسَائِهِ، فَفَزِعَ ٱلنَّاسُ مِنْ سُرْعَتِهِ، فَخَرَجَ عَلَيْهِمْ، فَرَأَى أَنَّهُمْ عَجِبُوا مِنْ سُرْعَتِهِ، فَقَالَ: (ذَكَرْتُ شَيْئًا مِنْ تِبْرٍ عِنْدَنَا، فَكَرِهْتُ أَنْ يَ[illegible] ي، فَأَمَرْتُ بِقِسْمَتِهِ). [رواه البخ[illegible]: ٨٥١]

फायदे : इस हदीस से साबित हुआ कि फर्ज की अदायगी के बाद इमाम को वहां बैठे रहने की पाबन्दी नहीं। (औनुलबारी, 1/875) जरूरत की सूरत में वह फौरन भी उठ सकता है।

बाब 93 : नमाज़ पढ़कर दायीं और बायीं तरफ से फिरना।

٩٣ - باب: الانصِرَاف عَنِ اليَمِينِ والشِّمَالِ

484 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि तुममें से कोई आदमी अपनी नमाज़ में शैतान का हिस्सा न बनाये कि नमाज़ के बाद दायीं

٤٨٤ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لاَ يَجْعَلْ أَحَدُكُمْ لِلشَّيْطَانِ شَيْئًا مِنْ صَلاَتِهِ، يَرَى أَنَّ حَقًّا عَلَيْهِ أَنْ لاَ يَنْصَرِفَ إِلَّا عَنْ يَمِينِهِ، لَقَدْ رَأَيْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ

كَثِيرًا يَنْصَرِفُ عَنْ يَسَارِهِ. [رواه البخاري: ٨٥٢]

तरफ से फिरने को जरूरी ख्याल करे। यकीनन मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अकसर अपनी बायीं तरफ से फिरते देखा।

फायदे : मालूम हुआ कि किसी जाइज काम को लाजिम या वाजिब करार दे लेना शैतान का धोका है। (औनुलबारी, 1/877)

٩٤ - باب: مَا جَاءَ فِي الثُّومِ النِّيءِ وَالْبَصَلِ وَالْكُرَّاثِ

बाब 94 : कच्चे लहसुन, प्याज और गनरने के बारे में क्या आया है?

٤٨٥ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: قَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (مَنْ أَكَلَ مِنْ هٰذِهِ ٱلشَّجَرَةِ - يُرِيدُ ٱلثُّومَ - فَلاَ يَغْشَانَا فِي مَسَاجِدِنَا). قَالَ الراوي: قُلْتُ لِجَابِرٍ: مَا يَعْنِي بِهِ؟ قَالَ: مَا أُرَاهُ يَعْنِي إِلَّا نِيئَهُ. وقِيل: إِلَّا نَتْنَهُ. [رواه البخاري: ٨٥٤]

485 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी इस पौधे या लहसुन में से कुछ खाये, वह हमारे पास हमारी मस्जिद में न आये। रावी कहता है कि मैंने जाबिर रज़ि. से पूछा, इससे आपकी क्या मुराद है? उन्होंने फरमाया कि मेरे खयाल के मुताबिक कच्चा लहसुन मुराद है, यह भी कहा गया कि इससे मुराद उसकी बदबू है।

फायदे : मूली वगैरह का भी यही हुक्म है। अगर पकाकर उसकी बू को खत्म कर दिया जाये तो इस्तेमाल करने में कोई मनाही नहीं। (औनुलबारी, 1/879)। इमामों ने तम्बाकू नोशी और तम्बाकू खोरी की हुरमत के लिए इस हदीस को बुनियाद करार दिया है। मुल्के अरब के फुका ने इसके हराम होने का फत्वा दिया है।

486 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी लहसुन या प्याज खाये, वह हम से या हमारी मस्जिद से अलग रहे, अपने घर बैठा रहे और एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक हण्डिया लाई गयी, जिसमें सब्ज तरकारियां पकी हुई थी। आपने उसमें कुछ बू पायी तो उनके बारे में पूछा, चूनांचे जो तरकारियां उसमें थी, आपको बता दी गई। आपने फरमाया, इसे मेरे कुछ सहाबा के करीब करो, फिर जब उन्होंने देखा तो उसके खाने को नापसन्द किया। इस पर आपने फरमाया, तुम खावो, क्योंकि मैं तो उससे बात करता हूँ, जिससे तुम बात नहीं करते हो।

٤٨٦ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (مَنْ أَكَلَ ثُومًا أَوْ بَصَلًا فَلْيَعْتَزِلْنَا). أَوْ قَالَ: (فَلْيَعْتَزِلْ مَسْجِدَنَا، وَلْيَقْعُدْ فِي بَيْتِهِ). وَأَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ أُتِيَ بِقِدْرٍ فِيهِ خَضِرَاتٌ مِن بُقُولٍ، فَوَجَدَ لَهَا رِيحًا، فَسَأَلَ فَأُخْبِرَ بِمَا فِيهَا مِنَ ٱلْبُقُولِ، فَقَالَ: (قَرِّبُوهَا). إِلَى بَعْضِ أَصْحَابِهِ كَانَ مَعَهُ، فَلَمَّا رَآهُ كَرِهَ أَكْلَهَا، قَالَ: (كُلْ فَإِنِّي أُنَاجِي مَنْ لاَ تُنَاجِي). [رواه البخاري: ٨٥٥]

487 : एक रिवायत में है कि आपके पास हरी तरकारियों का थाल लाया गया था।

٤٨٧ : وفي رواية: أُتِيَ بِبَدْرٍ، يَعْنِي طَبَقًا، فِيهِ خَضِرَاتٌ. [رواه البخاري: ٧٣٥٩]

बाब 95 : कमसिन (छोटे) बच्चों का वुजू।

٩٥ - باب: وُضوءُ الصِّبيانِ

488 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक (लावारिस बच्चे की) कब्र पर से गुजरे जो सबसे अलग थी तो वहां आपने इमामत फरमायी और लोगों ने आपके पीछे सफ बन्दी की।

٤٨٨ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ مَرَّ عَلَى قَبْرٍ مَنْبُوذٍ، فَأَمَّهُمْ وَصَفُّوا عَلَيْهِ. [رواه البخاري: ٨٥٧]

फायदे : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. ने भी जनाजे की नमाज पढ़ी। इससे मालूम हुआ कि बच्चे जब शउर की उम्र को पहुंच जायें तो वह ईद और जनाजे में शिरकत कर सकते हैं और उन्हें वुजू भी करना होगा, अगरचे इन हुक्मों के बोझ उठाने के लायक नहीं है, फिर भी आदत डालने के लिए इन बातों पर बचपन में ही अमल कराना चाहिए। (औनुलबारी, **1/883**)

---

489 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जुमे के दिन हर नौजवान पर गुस्ल वाजिब है (नहाना जरूरी है)।

٤٨٩ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (ٱلْغُسْلُ يَوْمَ ٱلْجُمُعَةِ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ مُحْتَلِمٍ). [رواه البخاري: ٨٥٨]

फायदे : इमाम बुखारी इससे यह साबित करना चाहते हैं कि जुमा के दिन गुस्ल की पाबन्दी बालिग होने के बाद है।

(औनुलबारी, **1/883**)

---

490 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि उनसे एक आदमी ने पूछा कि क्या तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ईदगाह गये हो? उन्होंने कहा, हां। अगर मेरी रिश्तेदारी आपके साथ न होती तो कम उम्र होने के कारण शायद न जा सकता। आप पहले उस निशान के पास आये जो इब्ने सल्त के मकान से करीब है, वहां आपने खुतबा सुनाया, फिर औरतों

٤٩٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما وَقَدْ قَالَ لَهُ رَجُلٌ: شَهِدْتَ ٱلْخُرُوجَ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَلَوْلاَ مَكَانِي مِنْهُ مَا شَهِدْتُهُ، يَعْنِي مِنْ صِغَرِهِ، أَتَى ٱلْعَلَمَ ٱلَّذِي عِنْدَ دَارِ ابْنِ ٱلصَّلْتِ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى ٱلنِّسَاءَ فَوَعَظَهُنَّ، وَذَكَّرَهُنَّ، وَأَمَرَهُنَّ أَنْ يَتَصَدَّقْنَ، فَجَعَلَتِ ٱلْمَرْأَةُ تَهْوِي بِيَدِهَا إِلَى حَلْقِهَا، تُلْقِي فِي ثَوْبِ بِلاَلٍ، ثُمَّ أَتَى هُوَ وَبِلاَلٌ ٱلْبَيْتَ [رواه البخاري: ٨٦٣]

के पास तशरीफ लाये। उनको नसीहत की, उन्हें सदका और खैरात करने का हुक्म दिया। इस पर एक औरत तो अपनी अंगूठी की तरफ हाथ बढ़ाने लगी और बिलाल रज़ि. की चादर में डालने लगी। फिर आप बिलाल रज़ि. के समेत घर लौट आये।

फायदे : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. कमसिन होने के बावजूद ईद में शरीक हुये। नीज इससे औरतों का ईदगाह में जाना भी साबित हुआ। (औनुलबारी, **1/884**)

बाब 96 : रात और अन्धेरे में औरतों का मस्जिद की तरफ जाना।

٩٦ - باب: خُرُوجُ النِّسَاءِ إِلَى المَسَاجِدِ بِاللَّيْلِ وَالغَلَسِ

491 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अगर रात के वक्त तुम्हारी औरतें मस्जिद में जाने की इजाजत मांगे तो उन्हें इजाजत दे दो।

٤٩١ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِذَا ٱسْتَأْذَنَكُمْ نِسَاؤُكُمْ بِاللَّيْلِ إِلَى ٱلْمَسْجِدِ فَأْذَنُوا لَهُنَّ). [رواه البخاري: ٨٦٥]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि अगर फितने का डर न हो तो औरतें रात के वक्त मस्जिद में आ सकती है। लेकिन शर्त यह है कि उसका शौहर उसे इजाजत दे दे। (औनुलबारी, **1/887**)

❖❖❖

किताबुलजुमा
जुमे का बयान

बाब 1 : जुमे की फरज़ियत का बयान।

١ - باب: فَرْضُ الجُمُعَةِ

492 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना कि हम बाद में आये हैं। लेकिन कयामत के दिन सब से आगे होंगे। सिर्फ इतनी बात है कि अगलों को हमसे पहले किताब दी गयी है। फिर यही जुमे का दिन उनके लिए भी चुना गया था। मगर उन्होंने इख्तिलाफ किया और हमको अल्लाह तआला ने इसकी हिदायत कर दी। इस बिना पर सब लोग हमारे पीछे हो गये। यहूद कल (सनीचर) के दिन और नसारा परसों (इतवार के दिन) इबादत करेंगे।

٤٩٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (نَحْنُ الآخِرُونَ السَّابِقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، بَيْدَ أَنَّهُمْ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِنَا، ثُمَّ هٰذَا يَوْمُهُمُ الَّذِي فَرَضَ ٱللهُ عَلَيْهِمْ، فَٱخْتَلَفُوا فِيهِ، فَهَدَانَا ٱللهُ له فالنَّاسُ لَنَا فِيهِ تَبَعٌ: الْيَهُودُ غَدًا وَالنَّصَارَى بَعْدَ غَدٍ). [رواه البخاري: ٨٧٦]

फायदे : जुमे की फरज़ियत की ताकीद मुस्लिम की एक रिवायत से भी होती है, जिसके अलफाज हैं "हम पर जुमा फ़र्ज करार दिया गया।" (औनुलबारी, 2/6)

बाब 2 : जुमे के दिन खुशबू लगाना।

٢ - باب: الطِّيبُ لِلْجُمُعَةِ

493 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से

٤٩٣ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ

رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَشْهَدُ عَلَى رَسُولِ ٱللَّهِ ﷺ قَالَ: (الْغُسْلُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ مُحْتَلِمٍ، وَأَنْ يَسْتَنَّ، وَأَنْ يَمَسَّ طِيبًا إِنْ وَجَدَ). [رواه البخاري: ٨٨٠]

रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस फरमान पर गवाह हूँ कि जुमे के दिन हर बालिग आदमी पर गुस्ल करना (नहाना) फ़र्ज है और यह कि वह मिस्वाक (दातून) करे और अगर खुशबू मैसर (नसीब) हो तो उसे भी इस्तेमाल करे।

फायदे : जुमे के दिन गुस्ल करना जरूरी है। अगरचे इमाम बुखारी का रूझान इसकी सुन्नत होने की तरफ है। (अल्लाह बेहतर जानने वाला है।)

बाब 3 : जुमे की फज़ीलत का बयान।

٣ - باب: فَضْلُ الْجُمُعَةِ

٤٩٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللَّهِ ﷺ قَالَ: (مَنِ ٱغْتَسَلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ غُسْلَ الْجَنَابَةِ ثُمَّ رَاحَ، فَكَأَنَّمَا قَرَّبَ بَدَنَةً، وَمَنْ رَاحَ فِي السَّاعَةِ الثَّانِيَةِ، فَكَأَنَّمَا قَرَّبَ بَقَرَةً، وَمَنْ رَاحَ فِي السَّاعَةِ الثَّالِثَةِ، فَكَأَنَّمَا قَرَّبَ كَبْشًا أَقْرَنَ، وَمَنْ رَاحَ فِي السَّاعَةِ الرَّابِعَةِ، فَكَأَنَّمَا قَرَّبَ دَجَاجَةً، وَمَنْ رَاحَ فِي السَّاعَةِ الْخَامِسَةِ، فَكَأَنَّمَا قَرَّبَ بَيْضَةً، فَإِذَا خَرَجَ الْإِمَامُ حَضَرَتِ الْمَلَائِكَةُ يَسْتَمِعُونَ الذِّكْرَ). [رواه البخاري: ٨٨١]

494 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स जुमे के दिन नापाकी के गुस्ल की तरह एहतिमाम से गुस्ल करके फिर नमाज़ के लिए जाये तो ऐसा है, जैसा कि एक ऊँट सदका किया, जो दूसरी घड़ी में जाये तो उसने गोया गाय की कुरबानी दी, जो तीसरी घड़ी में जाये तो गोया उसने सींगदार मैंढ़ा सदका किया, जो चौथी घड़ी में चले तो उसने गोया एक मुर्गी सदका दी और जो पांचवी घड़ी में जाये तो उसने गोया एक अण्डा अल्लाह की राह में सदका किया। फिर जब

इमाम खुतबा पढ़ने के लिए आता है तो फरिश्ते खुतबा सुनने के लिए मस्जिद में हाजिर हो जाते हैं।

फायदे : जुमे के दिन जल्दी आने की फज़ीलत आम लोगों के लिए है। इमाम को चाहिए कि वह खुतबे के वक्त मस्जिद में आये, जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खलीफाओं का अमल था। (औनुलबारी, 2/15)

बाब 4 : जुमे के लिए बालों को तेल लगाने का बयान।

٤ - باب: الدُّهْنُ لِلْجُمُعَةِ

495 : सलमान फारसी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी जुमे के दिन गुस्ल करे और जिस कदर मुमकिन हो, सफाई करके तेल लगाये या अपने घर की खुशबू लगाकर जुमे की नमाज के लिए निकले और ऐसे आदमियों के बीच जुदाई न करे (जो मस्जिद में बैठे हों) फिर जितनी नमाज़ उसकी किस्मत में हो, अदा करे और जब इमाम खुतबा देने लगे तो चुप रहे तो उसके वह गुनाह जो इस जुमा से दूसरे जुमा के बीच हुये हों, सब माफ कर दिये जायेंगे।

٤٩٥ : عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ يَغْتَسِلُ رَجُلٌ يَوْمَ الْجُمُعَةِ، وَيَتَطَهَّرُ مَا اسْتَطَاعَ مِنْ طُهْرٍ، وَيَدَّهِنُ مِنْ دُهْنِهِ، أَوْ يَمَسُّ مِنْ طِيبِ بَيْتِهِ، ثُمَّ يَخْرُجُ فَلاَ يُفَرِّقُ بَيْنَ اثْنَيْنِ، ثُمَّ يُصَلِّي مَا كُتِبَ لَهُ، ثُمَّ يُنْصِتُ إِذَا تَكَلَّمَ الإِمَامُ، إِلَّا غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ الأُخْرَى). [رواه البخاري: ٨٨٣]

496 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि लोग कहते हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि

٤٩٦ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ قِيلَ لَهُ: ذَكَرُوا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (اغْتَسِلُوا يَوْمَ الْجُمُعَةِ

وَٱغْسِلُوا رُؤُوسَكُمْ وَإِنْ لَمْ تَكُونُوا جُنُبًا، وَأَصِيبُوا مِنَ الطِّيبِ). فقالَ: أَمَّا الْغُسْلُ فَنَعَمْ، وَأَمَّا الطِّيبُ فَلاَ أَدْرِي. [رواه البخاري: ٨٨٤]

वसल्लम ने फरमाया है कि जुमे के दिन गुस्ल करो और अपने सरों को धोओ। अगरचे तुम नापाक न हो। फिर खुशबू इस्तेमाल करो। इब्ने अब्बास रज़ि. ने जवाब दिया कि गुस्ल में तो शक नहीं, लेकिन खुशबू के बारे में मुझे मालूम नहीं।

फायदे : तेल और खुशबू के बारे में हजरत सलमान फारसी रजि.की हदीस ऊपर जिक्र हुई है। शायद हजरत इब्ने अब्बास रज़ि. को उसका इल्म न हो सका।

٥ - باب: يَلْبَسُ أَحْسَنَ مَا يَجِدُ

बाब 5 : जुमे के दिन हैसियत के मुताबिक बेहतरीन लिबास पहने।

٤٩٧ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه أَنَّه وَجَدَ حُلَّةً سِيَرَاءَ عِنْدَ بَابِ الْمَسْجِدِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، لَوِ ٱشْتَرَيْتَ هٰذِهِ، فَلَبِسْتَهَا يَوْمَ الْجُمُعَةِ، وَلِلْوَفْدِ إِذَا قَدِمُوا عَلَيْكَ. فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّمَا يَلْبَسُ هٰذِهِ مَنْ لاَ خَلاَقَ لَهُ فِي الآخِرَةِ). ثُمَّ جاءَتْ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ مِنْهَا حلَلٌ، فَأَعْطَى عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ مِنْهَا حُلَّةً، فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، كَسَوْتَنِيهَا وَقَدْ قُلْتَ فِي حُلَّةِ عُطَارِدٍ ما قُلْتَ؟ قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنِّي لَمْ أَكْسُكَهَا لِتَلْبَسَهَا). فَكَسَاهَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَخًا لَهُ بِمَكَّةَ مُشْرِكًا. [رواه البخاري: ٨٨٦]

498 : उमर रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने मस्जिद के दरवाजे के पास एक रेशमी जोड़ा बिकते देखा तो अर्ज किया : ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर आप इसे खरीद ले तो जुमे और कासिदों के आने के वक्त पहन लिया करें। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, इसे तो वह आदमी पहनेगा जिसका आखिरत में कोई हिस्सा न हो। बाद में कहीं से इस तरह के रेशमी जोड़े रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

पास आ गये, जिनमें एक जोड़ा आपने उमर रज़ि. को भी दिया, उन्होंने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने मुझे यह दिया, हालांकि आप खुद ही इस लिबास के बारे में कुछ फरमा चुके है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैंने तुम्हें यह इसलिए नहीं दिया है कि इसे खुद पहनों, चूनांचे उमर रज़ि. ने वह जोड़ा अपने मुश्रिक भाई को पहना दिया जो मक्का मुकर्रमा में रहता था।

फायदे : हदीस के उनवान (शुरूआत) से इस तरह मुताबेकत (बराबरी) है कि हज़रत उमर रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में जुमे के दिन अच्छे कपड़े पहनने की दरख्वास्त की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसलिए रेशमी जोड़े को नापसन्द किया कि उसका इस्तेमाल मर्दों के लिए जाईज न था।

٦ - باب: السِّوَاكُ يَوْمَ الجُمُعَةِ

٤٩٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَوْلاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي، أَوْ عَلَى النَّاسِ، لأَمَرْتُهُمْ بِالسِّوَاكِ مَعَ كُلِّ صَلاَةٍ). [رواه البخاري: ٨٨٧]

बाब 6 : जुमे के दिन मिस्वाक करना।

498 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर मैं अपनी उम्मत या लोगों पर भारी न समझता तो उन्हें हर नमाज़ के लिए मिस्वाक करने का हुक्म जरूर देता।

फायदे : जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर नमाज़ के लिए मिस्वाक की ताकीद फरमायी है तो जुमे की नमाज़ के लिए भी इसकी ताकीद साबित हुई।

499 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं तुमसे मिस्वाक के बारे में बहुत नसीहत कर चुका हूँ।

٤٩٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَكْثَرْتُ عَلَيْكُمْ فِي السِّوَاكِ). [رواه البخاري: ٨٨٨]

बाब 7 : जुमे के दिन फज्र की नमाज़ में इमाम क्या पढ़े?

٧ - باب: ما يَقْرَأُ فِي صَلاَةِ الفَجْرِ يَومَ الجُمُعَةِ

500 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमे के दिन फज्र की नमाज़ में ''अलिफ-लाम-मीम तनजिलु (सज्दा) और हल अता अलल इन्सान'' पढ़ा करते थे।

٥٠٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الجُمُعَةِ، فِي صَلاَةِ الفَجْرِ: ﴿الٓمٓ تَنزِيلُ﴾. السَّجْدَةَ، وَ: ﴿هَلْ أَتَىٰ عَلَى ٱلْإِنسَٰنِ﴾. [رواه البخاري: ٨٩١]

बाब 8 : गावों और शहरों में जुमा पढ़ना।

٨ - باب: الجُمُعَةُ فِي القُرَى وَالمُدُنِ

501 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फरमाते सुना, तुम सब लोग निगेहबान (देखभाल करने वाले) हो और तुम्हें अपनी रिआया के बारे में पूछा जायेगा, इमाम भी निगेहबान है, उससे अपनी रिआया की पूछ होगी, मर्द अपने घर का निगराँ है, उससे उसकी रिआया

٥٠١ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (كُلُّكُمْ رَاعٍ، وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، الإِمَامُ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي أَهْلِهِ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا وَمَسْؤُولَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالخَادِمُ رَاعٍ فِي مالِ سَيِّدِهِ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ). قَالَ: وَحَسِبْتُ أَنْ قَدْ قَالَ: (وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي مالِ أَبِيهِ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ). [رواه البخاري: ٨٩٣]

के बारे में सवाल होगा। औरत अपने शौहर के घर की निगराँ है, उससे उसकी रिआया के बारे में पूछा जायेगा। नौकर अपने मालिक के माल का जिम्मेदार है, उससे उसकी रइय्यत के बारे में पूछा जायेगा। अलगर्ज तुम सब निगेहबान हो और तुम्हें अपनी रइय्यत के बारे में पूछा जायेगा।

फायदे : इमाम बुखारी ने इस बाब में उन लोगों का रद्द किया है जो जुमा के लिए शहर और हाकिम वगैरह की शर्तें लगाते हैं। इस किस्म की शर्तें बिला दलील हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में मस्जिदे नबवी के बाद पहला जुमा अब्दुल कैस कबीला नामी मस्जिद में अदा किया गया जो जुवासी गांव में थी और वह गांव बहरीन के इलाके में आबाद था।

बाब 9 : जिसे जुमे के लिए आना जरूरी नहीं, क्या उस पर जुमे का गुस्ल वाजिब है?

٩ - باب: هَلْ يَجِبُ غُسْلُ الجُمُعَةِ عَلَى مَنْ لا تَجِبُ عَلَيهِ

502 : अबू हुरैरा रज़ि. की रिवायत, जिसमें यह जिक्र था कि हम जमाने के ऐतबार से बाद वाले हैं लेकिन कयामत के दिन सबसे आगे होंगे, पहले (492) गुजर चुकी है। इस रिवायत में इतना इजाफा है कि हर मुसलमान के लिए हफ्ते में एक दिन गुस्ल करना जरूरी है। उस रोज उसे अपना बदन और सर धोना चाहिए।

٥٠٢ : حديث أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: (نَحْنُ الآخِرُونَ السَّابِقُونَ) تقدم قريبًا، وزاد هنا في آخره. ثُمَّ قَالَ: (حَقٌّ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ، أَنْ يَغْتَسِلَ فِي كُلِّ سَبْعَةِ أَيَّامٍ يَوْمًا، يَغْسِلُ فِيهِ رَأْسَهُ وَجَسَدَهُ). [رواه البخاري: ٨٩٧]

फायदे : इससे भी मालूम हुआ कि जुमे के दिन नहाना जरूरी है। (औनुलबारी, 2/29)

बाब 10 : कितनी दूरी से जुमे के लिए आना चाहिए और किस पर जुमा वाजिब है?

١٠ - باب: مِنْ أَيْنَ تُؤْتَى الجُمُعَةُ، وَعَلَى مَنْ تَجِبُ؟

503 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, वह फरमाती हैं कि लोग अपने घरों और देहातों से जुमे की नमाज़ के लिए बारी बारी आते थे, चूंकि वह धूल मिट्टी में चलकर आते, इसलिए उनके बदन से धूल और पसीना की वजह से बदबू आने लगती, चूनांचे उनमें से एक आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया, चूंकि आप उस वक्त मेरे घर में थे, तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, काश कि तुम लोग इस मुबारक दिन में नहा-धो लिया करो।

٥٠٣ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قالَتْ: كانَ النَّاسُ يَنْتابُونَ يَوْمَ الجُمُعَةِ مِنْ مَنازِلِهِمْ وَالْعَوالِي، فَيأْتُونَ في الْغُبارِ يُصِيبُهُمُ الْغُبارُ وَالعَرَقُ، فَيَخْرُجُ مِنْهُمُ الْعَرَقُ، فَأَتَى رَسُولَ ٱللهِ ﷺ إِنْسانٌ مِنْهُمْ وَهُوَ عِنْدِي، فَقالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَوْ أَنَّكُمْ تَطَهَّرْتُمْ لِيَوْمِكُمْ هٰذَا). [رواه البخاري: ٩٠٢]

फायदे : अवाली मदीने के ऊंचे हिस्से में तीन चार मील पर आबाद देहाती आबादी को कहते हैं। मालूम हुआ कि इतनी दूरी पर रहने वालों को शहर की मस्जिदों में जुमे के लिए हाजिर होना जरूरी नहीं। अगर जरूरी होता तो बारी बारी आने के बजाये सब के सब हाजिर होते।

504: आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि लोग खुद अपने खिदमतगार थे और जब जुमे के लिए आते तो उसी हालत में चले आते, तब उनसे कहा गया कि काश तुम लोग गुस्ल किया करते।

٥٠٤ : وَعَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قالت: كَانَ النَّاسُ مَهَنَةَ أَنْفُسِهِمْ، وَكَانُوا إِذَا رَاحُوا إِلَى الجُمُعَةِ رَاحُوا في هَيْئَتِهِمْ، فَقِيلَ لَهُمْ: (لَوِ اغْتَسَلْتُمْ). [رواه البخاري: ٩٠٣]

फायदे : इस हदीस से इमाम बुखारी यह साबित करते हैं कि जुमा सूरज ढलने के बाद पढ़ना चाहिए। क्योंकि लफ्जे रवाह इस्तेमाल हुआ जो सूरज ढलने के बाद के वक्त पर बोला जाता था, आने वाली हदीस में इसका खुलासा मौजूद है। (औनुलबारी, 2/31)

---

٥٠٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كانَ يُصَلِّي الجُمُعَةَ حِينَ تَمِيلُ الشَّمْسُ. [رواه البخاري: ٩٠٤]

505 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सूरज ढलते ही जुमे की नमाज़ अदा कर लेते थे।

١١ - باب: إِذَا اشْتَدَّ الحَرُّ يَوْمَ الجُمُعَةِ

बाब 11 : जब जुमे के दिन गर्मी ज्यादा हो?

٥٠٦ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ إِذَا ٱشْتَدَّ ٱلْبَرْدُ بَكَّرَ بِالصَّلاَةِ، وَإِذَا ٱشْتَدَّ الحَرُّ أَبْرَدَ بِالصَّلاَةِ، يَعْنِي الجُمُعَةَ. [رواه البخاري: ٩٠٦]

506 : अनस रज़ि. से ही रिवायत है कि जब ज्यादा सर्दी होती तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमे की नमाज़ जल्दी पढ़ते और अगर गर्मी ज्यादा होती तो जुमे की नमाज़ कुछ ठण्डक होने पर पढ़ते थे।

١٢ - باب: المَشْيُ إِلَى الجُمُعَةِ

बाब 12 : जुमे के लिए रवानगी का बयान।

٥٠٧ : عَنْ أَبِي عَبْسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ، وَهُوَ ذَاهِبٌ إِلَى الجُمُعَةِ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَنِ ٱغْبَرَّتْ قَدَمَاهُ فِي سَبِيلِ ٱللهِ حَرَّمَهُ ٱللهُ عَلَى ٱلنَّارِ). [رواه البخاري: ٩٠٧]

507 : अबू अब्स रज़ि. से रिवायत है, वह जुमे की नमाज़ को जाते वक्त कहने लगे, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है कि जिस आदमी के दोनों पांव अल्लाह की राह में धूल मिट्टी

से सने, तो अल्लाह तआला ने उसे दोजख की आग पर हराम कर दिया है।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबी ने जुमे के लिए निकलने को जिहाद की तरह करार दिया और जिहाद में आराम और सुकून से शिरकत की जाती है, इसलिए जुमे का भी यही हुक्म है।

बाब 13 : अपने भाई को उठाकर खुद उसकी जगह बैठने की मनाही।

١٣ - باب: لاَ يُقِيمُ الرَّجُلُ أَخَاهُ وَيَقْعُدُ مَكَانَهُ

508 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फरमाया है कि कोई आदमी अपने भाई को उसकी जगह से उठाकर खुद वहां बैठ जाये। पूछा गया, क्या यह हुक्म जुमे के लिए खास है? आपने फरमाया कि नहीं, बल्कि जुमे और गैर-जुमे दोनों के लिए यही हुक्म है।

٥٠٨ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُقِيمَ الرَّجُلُ أَخَاهُ مِنْ مَقْعَدِهِ وَيَجْلِسَ فِيهِ. قِيلَ: الجُمُعَةَ؟ قَالَ: الجُمُعَةَ وَغَيْرَهَا. [رواه البخاري: ٩١١]

फायदे : जुमे के अदबों में से यह भी एक अदब है कि आदमी निहायत सुकून के साथ जहां जगह मिले, बैठ जाये, धक्का-मुक्की करते हुए गर्दनें फलांग कर आगे बढ़ना शरीयत के खिलाफ है।

बाब 14 : जुमे के दिन अज़ान।

١٤ - باب: الأَذَانُ يَوْمَ الجُمُعَةِ

509 : साइब बिन यजीद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबू बकर सिद्दीक और उमर रज़ि.

٥٠٩ : عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النِّدَاءُ يَوْمَ الجُمُعَةِ، أَوَّلُهُ إِذَا جَلَسَ الإِمَامُ عَلَى المِنْبَرِ، عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي

बَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما، فَلَمَّا كانَ عُثْمانُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَكَثُرَ النَّاسُ، زَادَ النِّدَاءَ الثَّالِثَ عَلَى الزَّوْرَاءِ. [رواه البخاري: ٩١٢]

के जमाने में जुमे के दिन पहली अज़ान उस वक्त होती जब इमाम मिम्बर पर बैठ जाता, लेकिन उसमान रज़ि. की खिलाफत के दौर में जब लोग ज्यादा हो गये तो उन्होंने जौरा नामी एक मकाम पर तीसरी अज़ान को ज्यादा किया।

फायदे : असल जुमे की अजा़न तो वही है जो इमाम के मिम्बर पर आने के वक्त दी जाती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबू बकर और उमर के जमाने में सिर्फ एक अज़ान थी। हज़रत उसमान रज़ि. ने एक खास जरूरत की बिना पर एक और अज़ान का एहतिमाम कर दिया। हज़रत उसमान की तरह जरूरत के वक्त मस्जिद के बाहर अगर मुनासिब जगह पर इसका एहतिमाम किया जाये तो जाइज है। मगर जहां जरूरत न हो, वहां सुन्नत के मुताबिक सिर्फ खुतबे ही के वक्त तेज आवाज से एक ही अज़ान देना चाहिए।

١٥ - باب: المُؤَذِّنُ الْوَاحِدُ يَوْمَ الجُمُعَةِ

बाब 15 : जुमे के दिन एक ही अज़ान देने वाला हो।

٥١٠ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، في رواية قَالَ: لَمْ يَكُنْ لِلنَّبِيِّ ﷺ مُؤَذِّنٌ غَيْرُ وَاحِدٍ، وَكَانَ التَّأْذِينُ يَوْمَ الجُمُعَةِ حِينَ يَجْلِسُ الإِمَامُ، يَعْني عَلَى المِنْبَرِ. [رواه البخاري: ٩١٣]

510 : साइब बिन यजीद रज़ि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक ही अजान देने वाला था और जुमा के दिन सिर्फ एक ही अज़ान दी जाती थी, वह भी उस वक्त, जब इमाम मिम्बर पर बैठ जाता था।

फायदे : नबी स.अ.स. के जमाने में कई एक अज़ान देने वाले थे जो अपनी अपनी बारी पर अज़ान दिया करते थे, लेकिन जुमा की अज़ान एक खास मोअज़्ज़िन हज़रत बिलाल रज़ि. ही दिया करते थे।

बाब 16: जुमे के दिन (इमाम भी) मिम्बर पर बैठा अज़ान का जवाब दे।

١٦ - باب: يجب الأذانُ على المنبر يوم الجُمُعَة

511 : मुआविया बिन अबू सुफियान रज़ि. से रिवायत है कि वह जुमे के दिन मिम्बर पर तशरीफ फरमा थे तो मोअज़्ज़िन ने अज़ान कही, जब मोअज़्ज़िन ने अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर कहा तो मुआविया रज़ि. ने भी अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर कहा। जब मोअज़्ज़िन ने अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह, कहा तो मुआविया रज़ि. ने कहा, मैं भी गवाही देता हूँ। फिर मोअज़्ज़िन ने ''अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह'', कहा तो मुआविया रज़ि. ने कहा, मैं भी गवाही देता हूँ। फिर जब अज़ान हो गयी तो मुआविया रज़ि. ने कहा, ऐ लोगो! मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसी मकाम पर सुना कि जब मोअज़्ज़िन ने अज़ान दी तो आप भी वही फरमाते थे जो तुमने मुझे कहते हुये सुना।

٥١١ : عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ، فَلَمَّا أَذَّنَ الْمُؤَذِّنُ، قَالَ: ٱللهُ أَكْبَرُ ٱللهُ أَكْبَرُ، قَالَ مُعَاوِيَةُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: ٱللهُ أَكْبَرُ ٱللهُ أَكْبَرُ، قَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ، فَقَالَ مُعَاوِيَةُ: وَأَنَا، فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ ٱللهِ، فَقَالَ مُعَاوِيَةُ: وَأَنَا، فَلَمَّا قَضَى التَّأْذِينَ، قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَلَى هٰذَا الْمَجْلِسِ، حِينَ أَذَّنَ الْمُؤَذِّنُ، يَقُولُ مَا سَمِعْتُمْ مِنِّي مِنْ مَقَالَتِي. [رواه البخاري: ٩١٤]

फायदे : इमाम बुखारी इस हदीस से उन लोगों की तरदीद करते हैं जो

खतीब के लिए खुतबे से पहले मिम्बर पर बैठने को मना करते हैं और यह भी मालूम हुआ कि खुतबा शुरू करने से पहले गुफ्तगू करना जाइज है। (औनुलबारी, 2/38

बाब 17 : खुतबा मिम्बर पर देना।

١٧ - باب: الخُطْبَةُ عَلَى المِنْبَرِ

512 : सहल बिन सअद रजि. की वह रिवायत (249) जो मिम्बर के बारे में थी, पहले गुजर चुकी है, जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मिम्बर पर नमाज़ पढ़ने, फिर उल्टे पांव नीचे उतरने का जिक्र है, उसमें इतना ज्यादा है कि आपने फारिग होने के बाद लोगों की तरफ मुंह करके फरमाया, ऐ लोगों! मैंने इसलिए ऐसा किया ताकि तुम मेरी इक्तदा करके मेरी नमाज़ का तरीका सीख लो।

٥١٢ : حديث سهلِ بن سعدٍ في أمْرِ المِنْبَرِ تقدَّم وذِكْرُ صلاتِهِ عليه ورجوعه القَهْقَرى وزاد في هذه الرِّوايةِ: فَلَمَّا فَرَغَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: (يا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّمَا صَنَعْتُ هٰذَا لِتَأْتَمُّوا وَلِتَعَلَّمُوا صَلاَتِي).

फायदे : मालूम हुआ कि मुक्तदियों को नमाज़ की अमलन तरबियत (ट्रेनिंग) देना चाहिए। नीज दीगर कोई आदत के खिलाफ काम करे तो उसकी वज़ाहत कर देनी चाहिए। (औनुलबारी, 2/39)। तबरानी की रिवायत में है कि आपने उस पर लोगों को खुतबा दिया, फिर वहीं नमाज़ अदा की। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि आदत के खिलाफ काम करने के बाद उसकी हिकमत बयान कर देना चाहिए। (फतहुलबारी, 2/400)

513 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक खुजूर का तना मस्जिद में था, जिस पर टेक लगाकर नबी

٥١٣ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كانَ جِذْعٌ يَقُومُ إِلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ، فَلَمَّا وُضِعَ لَهُ المِنْبَرُ، سَمِعْنَا لِلْجِذْعِ مِثْلَ أَصْوَاتِ

الْعِشَارِ، حَتَّى نَزَلَ النَّبِيُّ ﷺ فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَيْهِ. [رواه البخاري: ٩١٨]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े होते थे और जब आपके लिए मिम्बर रखा गया तो उस तने से हमने दस माह की हामिला ऊंटनियों के रोने जैसी आवाज सुनी। आखिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर से उतरे और उस तने पर अपना हाथ रखा।

फायदे : निसाई की रिवायत में है कि जुदाई की वजह से लरजने लगा और इस तरह रोने लगा, जिस तरह गुमशुदा बच्चे वाली ऊंटनी रोती है। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोज़जा (निशानी) है, जो ईसा अलैहि. के मुर्दों को जिन्दा करने के करिश्मों से बढ़कर है।

बाब 18 : खड़े होकर खुतबा देना।

١٨ - باب: الخُطْبَةُ قَائِماً

514 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े होकर खुतबा दिया करते थे और बीच में कुछ देर बैठ जाते थे, जैसा कि तुम अब करते हो।

٥١٤ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ قَائِمًا، ثُمَّ يَقْعُدُ، ثُمَّ يَقُومُ، كَمَا تَفْعَلُونَ الآنَ. [رواه البخاري: ٩٢٠]

फायदे : अगर बैठकर जुमे का खुतबा देना जाइज होता तो दोनों खुतबों के बीच बैठने की क्या हकीकत रह जाती है? ''व-त-रकू-क-काइमा'' के मफहूम का भी यही तकाजा है कि जुमे का खुतबा खड़े होकर दिया जाये। (औनुलबारी, 2/41)

बाब 19 : खुतबे में सना के बाद ''अम्माबाद'' कहना।

١٩ - باب: مَنْ قَالَ فِي الخُطْبَةِ بَعْدَ الثَّنَاءِ: أَمَّا بَعْدُ

515 : अम्र बिन तगलिब रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुछ माल या गुलाम लाये गये, जिनको आपने बांट दिया, लेकिन कुछ लोगों को दिया और कुछ को न दिया। फिर आप को खबर मिली कि जिनको आपने नहीं दिया, वह नाखुश हैं। आपने अल्लाह की तारीफ और सना के बाद फरमाया, अम्मा बाद। अल्लाह की कसम! मैं किसी को देता हूँ और किसी को नहीं देता, लेकिन जिसको छोड़ देता हूँ वह मेरे नजदीक उस आदमी से ज्यादा अजीज होता है, जिसको देता हूँ। नीज कुछ लोगों को इसलिए देता हूँ कि उनमें बे-सब्री और बौखलाहट देखता हूँ और कुछ को उनकी भलाई के सबब छोड़ देता हूँ, जो अल्लाह ने उनके दिलों में पैदा की है। उन्हीं लोगों में से अम्र बिन तगलिब रज़ि. भी थे, उनका बयान है कि अल्लाह की कसम! मैं यह नहीं चाहता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस बात के बदले मुझे लाल ऊंट मिलें।

٥١٥ : عَنْ عَمْرِو بْنِ تَغْلِبَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ أُتِيَ بِمَالٍ، أَوْ بِسَبْيٍ، فَقَسَمَهُ، فَأَعْطَى رِجالاً وَتَرَكَ رِجالاً، فَبَلَغَهُ أَنَّ الَّذِينَ تَرَكَ عَتَبُوا، فَحَمِدَ ٱللهَ ثُمَّ أَثْنَى عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: (أَمَّا بَعْدُ، فَوَٱللهِ إِنِّي لأُعْطِي الرَّجُلَ وَأَدَعُ الرَّجُلَ، وَالَّذِي أَدَعُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنَ الَّذِي أُعْطِي، وَلٰكِنْ أُعْطِي أَقْوَامًا لِمَا أَرَى فِي قُلُوبِهِمْ مِنَ الجَزَعِ وَالْهَلَعِ، وَأَكِلُ أَقْوامًا إِلَى ما جَعَلَ ٱللهُ فِي قُلُوبِهِمْ مِنَ الْغِنَى وَالْخَيْرِ، فِيهِمْ عَمْرُو بْنُ تَغْلِبَ). فَوَٱللهِ ما أُحِبُّ أَنَّ لِي بِكَلِمَةِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ حُمْرَ النَّعَمِ. [رواه البخاري: ٩٢٣]

फायदे : इमाम बुखारी रह. यह बताना चाहते हैं कि खुतबे में अम्मा बाद कहना सुन्नत है। हज़रत दाउद अलैहि. के बारे में कुरआन में है कि उन्हें फसले खिताब से नवाजा गया था। इसका भी तकाजा है कि अल्लाह तआला की तारीफ व बड़ाई को अपने असल खिताब से अम्मा बाद के जरीये अलग किया जाये। नीज इस

हदीस से आपके अच्छे अख्लाक का भी पता चलता है कि आपको न तो किसी की नाराजगी गवारा थी और न ही आप किसी का दिल तोड़ते थे और यह भी मालूम हुआ कि सहाबा ए-किराम रज़ि. को आपसे दिली मुहब्बत थी।

---

516 : अबू हुमैद साइदी रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रात नमाज़ के बाद खड़े हो गये, अल्लाह तआला की ऐसी तारीफ और पाकी बयान की जो उसके लायक है और फिर फरमाया, ''अम्मा बाद''

٥١٦ : عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَامَ عَشِيَّةً بَعْدَ الصَّلاَةِ، فَحمِدَ الله تعالى وَأَثْنَى عَلَى ٱللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ قَالَ: (أَمَّا بَعْدُ). [رواه البخاري: ٩٢٥]

फायदे : यह एक लम्बी हदीस का टुकड़ा है, जिसे इमाम बुखारी ने कई जगहों पर बयान किया है। हुआ यूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी रज़ि. को जकात की वसूली के लिए भेजा। जब वह वापस आया तो कुछ चीजों के बारे में कहने लगा कि यह मुझे तोहफे के रूप में मिली हैं। तो उस वक्त आपने इशा के बाद खुतबा इरशाद फरमाया कि सरकारी सफर में तुम्हें जाति तोहफे लेने का कोई हक नहीं, जो भी पाओ हो सब बैतुल माल (सरकारी खजाने) का है। (औनुलबारी, **2/43**)

---

517 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ लाये और वह आखरी मजलिस थी, जिसमें आप शरीक हुये। आप अपने कन्धों पर

٥١٧ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: صَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ الْمِنْبَرَ، وَكَانَ آخِرَ مَجْلِسٍ جَلَسَهُ، مُتَعَطِّفًا مِلْحَفَةً عَلَى مَنْكِبَيْهِ، قَدْ عَصَبَ رَأْسَهُ بِعِصَابَةٍ دَسِمَةٍ، فَحَمِدَ ٱللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: (أَيُّهَا النَّاسُ إِلَيَّ).

قَتَابُوا إِلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: (أَمَّا بَعْدُ، فَإِنَّ هٰذَا الحَيَّ مِنَ الأَنْصَارِ، يَقِلُّونَ وَيَكْثُرُ النَّاسُ، فَمَنْ وَلِيَ شَيْئًا مِنْ أُمَّةِ مُحَمَّدٍ ﷺ، فَاسْتَطَاعَ أَنْ يَضُرَّ فِيهِ أَحَدًا أَوْ يَنْفَعَ فِيهِ أَحَدًا، فَلْيَقْبَلْ مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَيَتَجَاوَزْ عَنْ مُسِيئِهِمْ). [رواه البخاري: ٩٢٧]

बड़ी चादर डाले हुए सर पर चिकनी पट्टी बांधे हुये थे। आपने अल्लाह की तारीफ व पाकी के बाद फरमाया, लोगों! मेरे करीब आ जाओ। चूनांचे लोग आपके करीब जमा हो गये तो फरमाया "अम्मा बाद"। सुनो दीगर लोग तो बढ़ते जायेंगे, मगर कबीला अन्सार कम होता जायेगा। लिहाजा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में से जो आदमी किसी भी शक्ल में हुकूमत करे, जिसकी वजह से दूसरे को नफा या नुकसान पहुंचाने का इख्तियार रखता हो, उसे चाहिए कि अन्सार के खूबकारों की नेकी कबूल करे और खताकारों की खताओं को माफ करे।

फायदे : इसमें कोई शक नहीं कि मदीना के अन्सार ने इस्लाम की तारीख में एक सुनहरा बाब रकम किया है, वह मुस्लिम उम्मत के ऊपर बड़ा एहसान करने वाले हैं, इसलिए उनकी इज्जत हर मुसलमान का मजहबी फ़र्ज है।

---

٢٠ - باب: إِذَا رَأَى الإِمَامُ رَجلاً جَاءَ وَهُوَ يَخْطُبُ، أَمَرَهُ أَنْ يُصَلِّيَ رَكْعَتَيْنِ

बाब 20 : जब इमाम खुतबे के दौरान किसी को आता देखे तो दो रकअत पढ़ने का हुक्म दे।

٥١٨ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ، وَالنَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ النَّاسَ يَوْمَ الجُمُعَةِ، فَقَالَ: (أَصَلَّيْتَ يَا فُلاَنُ). قَالَ: لاَ، قَالَ: (قُمْ فَارْكَعْ) [رواه البخاري: ٩٣٠]

518 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जुमे के दिन एक आदमी उस वक्त आया जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुतबा इरशाद

फरमा रहे थे। आपने पूछा, ऐ आदमी क्या तूने नमाज़ पढ़ ली? उसने अर्ज किया नहीं, आपने फरमाया तो फिर खड़ा हो और नमाज़ अदा कर।

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में है कि आपने उस आदमी को हल्की-फुल्की दो रकअतें पढ़ने का हुक्म दिया। मालूम हुआ कि खुतबे के बीच तहय्यतुल मस्जिद के नफ्ल पढ़ने चाहिए। नीज किसी जरूरत की वजह से इमाम खुतबे के बीच बातचीत कर सकता है। (औनुलबारी, 2/47)

२١ - باب: الاستسقاء في الخطبة يوم الجمعة

बाब 21 : जुमे के खुत्बे के बीच बारिश के लिए दुआ करना।

٥١٩ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - قَالَ: أَصابَتِ النَّاسَ سَنَةٌ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، فَبَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ، قامَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، هَلَكَ المَالُ وَجاعَ الْعِيَالُ، فَٱدْعُ ٱللهَ لَنَا. فَرَفَعَ يَدَيْهِ، وَما نَرَى فِي السَّماءِ قَزَعَةً، فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، ما وَضَعَهُما حَتَّى ثَارَ السَّحَابُ أَمْثَالَ ٱلْجِبَالِ، ثُمَّ لَمْ يَنْزِلْ عَنْ مِنْبَرِهِ حَتَّى رَأَيْتُ المَطَرَ يَتَحَادَرُ عَلَى لِحْيَتِهِ ﷺ، فَمُطِرْنَا يَوْمَنَا ذٰلِكَ، وَمِنَ الْغَدِ وَبَعْدَ الْغَدِ، وَالَّذِي يَلِيهِ، حَتَّى الْجُمُعَةِ الأُخْرَى. وَقَامَ ذٰلِكَ الأَعْرَابِيُّ، أَوْ قالَ غَيْرُهُ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، تَهَدَّمَ الْبِنَاءُ

519 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में एक बार लोग भूखमरी में मुब्तला हुये, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमे के दिन खुतबा इरशाद फरमा रहे थे, कि एक देहाती ने खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! माल बर्बाद हो गया और बच्चे भूखे मरने लगे। आप हमारे लिए दुआ फरमायें। तो आपने दुआ के लिए अपने दोनों हाथ उठाये और उस वक्त आसमान पर बादल का एक टुकड़ा भी न था। मगर उस जात

وَغَرِقَ المَالُ، فَادْعُ ٱللهَ لَنَا. فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ: (اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلاَ عَلَيْنَا). فَمَا يُشِيرُ بِيَدِهِ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ السَّحَابِ إِلَّا ٱنْفَرَجَتْ، وَصَارَتِ المَدِينَةُ مِثْلَ الجَوْبَةِ، وَسَالَ الْوَادِي قَنَاةُ شَهْرًا، وَلَمْ يَجِيءْ أَحَدٌ مِنْ نَاحِيَةٍ إِلَّا حَدَّثَ بِالْجَوْدِ. [رواه البخاري: ٩٣٣]

की कसम! जिसके हाथ में मेरी जान है। आप अपने हाथों को नीचे भी न कर पाये थे कि पहाड़ों जैसा बादल घिर आया और आप मिम्बर से भी न उतरे थे कि मैंने आप की दाढ़ी मुबारक पर बारिश को टपकते देखा। उस दिन खूब बारिश हुई और दूसरे, तीसरे दिन फिर चौथे दिन भी, यहां तक कि दूसरे जुमे तक यह सिलसिला जारी रहा। उसके बाद वही देहाती या कोई दूसरा आदमी खड़ा हुआ और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मकान गिर गये और माल डूब गया। इसलिए आप अल्लाह से हमारे लिए दुआ फरमायें तो आपने अपने दोनों हाथ उठाकर फरमाया, ऐ अल्लाह हमारे आसपास बारिश बरसा, मगर हम पर न बरसा। फिर आप उस वक्त बादल के जिस टुकड़े की तरफ इशारा फरमाते, वह हट जाता आखिरकार मदीना तालाब की तरह हो गया और कनात की वादी महीना भर खूब बहती रही और जिस तरफ से भी कोई आदमी आता वह ज्यादा बारीश का बयान करता था।

फायदे : मालूम हुआ कि खुतबे की हालत में इमाम से किसी अवामी जरूरत के लिए दुआ की दरख्वास्त की जा सकती है और इमाम खुत्बे के बीच ही ऐसी दरख्वास्त पर तवज्जो कर सकता है। (औनुलबारी, 2/413)

---

٢٢ - باب: الإِنْصَاتُ يَوْمَ الجُمُعَةِ وَالإِمَامُ يَخْطُبُ

बाब 22 : जुमे के दिन खुतबे के बीच खामोश रहना।

520: अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जुमे के दिन जब इमाम खुतबा दे रहा हो, अगर तूने अपने साथी से कहा कि खामोश हो जा तो बेशक तूने खुद एक गलत हरकत की है।

٥٢٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا قُلْتَ لِصَاحِبِكَ يَوْمَ الجُمُعَةِ: أَنْصِتْ، وَالإمَامُ يَخْطُبُ، فَقَدْ لَغَوْتَ). [رواه البخاري: ٩٣٤]

फायदे : किसी इन्सान को खुतबे के बीच मूजी (नुकसान पहुंचाने वाले) जानवर से खबरदार करना अंधे की रहनुमाई करना इस मनाही में शामिल नहीं फिर भी बेहतर है कि ऐसी हालत में भी मुमकिन हद तक इशारे से काम लेना चाहिए। (औनुलबारी, 2/51)

बाब 23 : जुमे की एक घड़ी (जिसमें दुआ कुबूल होती है)

٢٣ - باب: السَّاعَةُ الَّتِي فِي يَوْمِ الجُمُعَةِ

521: अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुमे के दिन खुतबे के बीच फरमाया कि इसमें एक घड़ी ऐसी है कि अगर ठीक उस घड़ी में मुसलमान बन्दा खड़े होकर नमाज़ पढ़े और अल्लाह तआला से कोई चीज मांगे तो अल्लाह तआला उसको वह चीज जरूर देता है और आपने अपने हाथ से इशारा करके बताया कि वह घड़ी थोड़ी देर के लिए आती है।

٥٢١ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ ذَكَرَ يَوْمَ الجُمُعَةِ، فَقَالَ: (فِيهِ سَاعَةٌ، لاَ يُوَافِقُهَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ، وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي، يَسْأَلُ ٱللهَ تَعَالَى شَيْئًا، إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ). وَأَشَارَ بِيَدِهِ يُقَلِّلُها. [رواه البخاري: ٩٣٥]

फायदे : कुछ रिवायतों में इस घड़ी के वक्त को बताया गया है कि वह इमाम के मिम्बर पर बैठने से लेकर नमाज़ से फारिग होने तक है। (औनुलबारी, 2/52)

बाब 24 : अगर जुमे की नमाज़ में कुछ लोग इमाम को छोड़कर चले जायें। (तो बाकी मुक्तदियों की नमाज़ सही है)

٢٤ - باب: إذَا نَفَرَ النَّاسُ عَنِ الإِمَامِ فِي صَلاَةِ الجُمُعَةِ

522 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ (के इन्तिजार में खुतबा सुनने में) मसरूफ थे कि कुछ ऊंट अनाज से लदे हुए आये। लोगों ने उनकी तरफ ऐसा ध्यान दिया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास सिर्फ बारह आदमी रह गये। इस पर यह आयत नाजिल हुई और जब लोग किसी सौदागरी या तमाशे को देखते हैं तो उधर दौड़ पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ जाते हैं।''

٥٢٢ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ نُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، إِذْ أَقْبَلَتْ عِيرٌ تَحْمِلُ طَعَامًا، فَالْتَفَتُوا إِلَيْهَا حَتَّى مَا بَقِيَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِلَّا ٱثْنَا عَشَرَ رَجُلًا، فَنَزَلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ: ﴿وَإِذَا رَأَوْا تِجَـٰرَةً أَوْ لَهْوًا ٱنفَضُّوٓا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَآئِمًا﴾. [رواه البخاري: ٩٣٦]

फायदे : इमाम बुखारी रह. ने इस हदीस से यह साबित किया है कि कुछ लोग जुमे के सही होने के लिए मौजूद लोगों की तादाद के बारे में जो शर्ते बयान करते हैं, वह सही नहीं है। सिर्फ उतनी तादाद का होना जरूरी है, जिसे जमात कहा जा सके, अगर इमाम अकेला रह जाये तो ऐसी सूरत में जुमा नहीं होगा। (औनुलबारी, 2/57)

बाब 25 : जुमे से पहले और बाद नमाज़ पढ़ना।

٢٥ - باب: الصَّلاَةُ بَعْدَ الجُمُعَةِ وَقَبْلَهَا

523 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुहर से पहले दो रकअतें और उसके बाद भी दो रकअतें पढ़ा करते थे और मगरिब के बाद अपने घर में दो रकअतें और इशा के बाद भी दो रकअतें पढ़ते थे, लेकिन जुमे के बाद कुछ न पढ़ते थे। अलबत्ता जब घर वापस आते तो फिर दो रकअतें अदा करते थे।

٥٢٣ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي: قَبْلَ الظُّهْرِ رَكْعَتَيْنِ، وَبَعْدَهَا رَكْعَتَيْنِ، وَبَعْدَ المَغْرِبِ رَكْعَتَيْنِ فِي بَيْتِهِ، وَبَعْدَ الْعِشَاءِ رَكْعَتَيْنِ، وَكَانَ لاَ يُصَلِّي بَعْدَ الجُمُعَةِ حَتَّى يَنْصَرِفَ، فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ. [رواه البخاري: ٩٣٧]

फायदे : जुमा से पहले नफ्लों के पढ़ने की हद बन्दी नहीं है। अलबत्ता जुमे के बाद अगर मस्जिद में अदा करें तो गुफ्तगू या जगह बदलकर चार रकअत पढ़ें और अगर घर में अदा करें तो दो करअतें पढ़ें। (अल्लाह बेहतर जानने वाला है)

किताबुल खौफ़

खौफ़ (डर) की नमाज़ का बयान

बाब 1 : डर की नमाज का बयान।

١ - باب: صَلاةُ الخَوْفِ

524 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नज्द की तरफ जिहाद के लिए गया, जब हम दुश्मन के सामने खड़े हुये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हुये। एक गिरोह आपके साथ खड़ा हुआ और दूसरा गिरोह दुश्मन के मुकाबले में डटा रहा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने हमराही गिरोह के साथ एक रूकू और दो सज्दे किये। उसके बाद यह लोग उस गिरोह की जगह चले गये, जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी थी। जब वह आये तो आपने उनके साथ भी एक रूकू और दो सज्दे अदा किये और सलाम फेर दिया। फिर उनमें से हर आदमी खड़ा हुआ और अपने अपने पूरे किये, एक एक रूकू और दो सज्दे।

٥٢٤ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ قِبَلَ نَجْدٍ، فَوَازَيْنَا الْعَدُوَّ، فَصَافَفْنَا لَهُمْ، فَقَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُصَلِّي لَنَا، فَقَامَتْ طَائِفَةٌ مَعَهُ وَأَقْبَلَتْ طَائِفَةٌ عَلَى الْعَدُوِّ، وَرَكَعَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِمَنْ مَعَهُ وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ، ثُمَّ ٱنْصَرَفُوا مَكَانَ الطَّائِفَةِ الَّتِي لَمْ تُصَلِّ، فَجَاؤُوا فَرَكَعَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِهِمْ رَكْعَةً وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ، ثُمَّ سَلَّمَ، فَقَامَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ فَرَكَعَ لِنَفْسِهِ رَكْعَةً وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ. [رواه البخاري: ٩٤٢]

फायदे : अलग अलग हदीसों से पता चलता है कि डर की नमाज़ को अदा करने के सत्रह तरीके हैं। लेकिन इमाम इब्ने क़य्यिम ने तमाम हदीसों का जाइज़ा लेने के बाद लिखा है कि बुनियादी तौर पर इसकी अदायगी के छः तरीके हैं। हालात और जरूरत के मुताबिक जो तरीका ठीक हो, उसे इख़्तियार कर लिया जाये, जम्हूर उलमा ने इसकी मशरूइयत पर इत्तिफाक़ किया है।

(औनुलबारी,2/61)

बाब 2 : पैदल और सवार होकर ख़ौफ़ की नमाज़ अदा करना।

٢ - باب: صَلاةُ الخَوْفِ رِجالاً وَرُكْبَاناً

525 : अब्दुल्ला बिन उमर रजि. ही की एक रिवायत में इस कदर इजाफा है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर दुश्मन इससे ज्यादा हों तो पैदल और सवार जिस तरह भी मुमकिन हों, नमाज़ पढ़ें।

٥٢٥ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - في رواية - قَالَ: عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: (وَإِنْ كانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ، فَلْيُصَلُّوا قِيَامًا وَرُكْبَانًا). [رواه البخاري: ٩٤٣]

फायदे : लड़ाई की तेजी के वक्त एक रकअत भी अदा की जा सकती है, बल्कि इशारों से अदा करना भी जाइज़ है।

(औनुलबारी, 2/25)

बाब 3 : पीछा करने वाले और पीछा किये गये का सवारी पर इशारे से नमाज़ पढ़ना।

٣ - باب: صَلاةُ الطَّالِبِ وَالمطلُوبِ راكِباً وإيماءً

526 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अहज़ाब की जंग से वापस हुये तो

٥٢٦ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ لَنَا لَمَّا رَجَعَ مِنَ الأَحْزَابِ: (لا يُصَلِّيَنَّ أَحَدٌ الْعَصْرَ إِلَّا فِي بَنِي قُرَيْظَةَ). فَأَدْرَكَ بَعْضَهُمُ

الْعَصْرُ فِي الطَّرِيقِ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لاَ نُصَلِّي حَتَّى نَأْتِيَهَا، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: بَلْ نُصَلِّي، لَمْ يُرَدْ مِنَّا ذَلِكَ، فَذَكَرُوا لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَلَمْ يُعَنِّفْ أَحَدًا مِنْهُمْ. [رواه البخاري: ٩٤٦]

हमसे फरमाया कि हर आदमी बनू कुरैजा के कबीले में पहुंचकर नमाज़ पढ़े। कुछ लोगों को असर का वक्त रास्ते में ही आ गया तो उन्होंने कहा, जब तक हम वहां न पहुंचेगे, नमाज़ न पढ़ेंगे। लेकिन कुछ कहने लगे, हम अभी नमाज़ पढ़ते हैं। क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह मकसद नहीं था। फिर उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बात का बयान किया तो आपने किसी पर नाराजगी जाहिर न की।

फायदे : कुछ सहाबा-ए-किराम रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान का यह मतलब लिया कि रास्ते में किसी जगह पर पड़ाव किये बगैर हम जल्दी पहुंचे, उन्होंने नमाज़ कजा न की और उसे सवारी पर ही अदा कर लिया, जबकि दूसरे सहाबा ने आपके फरमान को जाहिर पर माना कि अगर हुक्म के मानने में नमाज़ देर से भी अदा होती तो हम गुनहगार नहीं होंगे। चूनांचे दोनों गिरोहों की नियत ठीक थी। इसलिए कोई भी बुराई के लायक नहीं ठहरा। (औनुलबारी, 2/68)

❖❖❖

किताबुल ईदैन
ईदों का बयान

बाब 1 : ईद के दिन बरछों और ढालों से जिहादी मश्क़ करना।

١ - باب: الحِرَاب وَالدَّرَق يَوْمَ العِيدِ

527 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ लाये। उस वक्त मेरे यहां दो लड़कियां बैठी हुई बुआस की जंग के गीत गा रही थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुंह फेर कर लेट गये। इतने में अबू बकर रजि. आये तो उन्होंने मुझे डांटकर कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने यह शैतानी आवाजें? इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी तरफ मुंह करके फरमाया, उन्हें छोड़ दो, फिर जब अबू बकर सिद्दीक रजि. चले गये तो मैंने उन लड़कियों को इशारा किया तो वह चली गई।

٥٢٧ : عَنْ عَائِشَةَ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا - قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَعِنْدِي جَارِيَتَانِ، تُغَنِّيَانِ بِغِنَاءِ بُعَاثٍ، فَٱضْطَجَعَ عَلَى الْفِرَاشِ وَحَوَّلَ وَجْهَهُ، وَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ فَٱنْتَهَرَنِي، وَقَالَ: مِزْمَارَةُ الشَّيْطَانِ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ؟، فَأَقْبَلَ عَلَيْهِ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: (دَعْهُمَا). فَلَمَّا غَفَلَ غَمَزْتُهُمَا فَخَرَجَتَا. [رواه البخاري: ٩٤٩]

फायदे : इस रिवायत के आखिर में है कि यह वाक्या ईद के दिन हुआ। जबकि हब्शी मस्जिद में बरछियों और ढालों से जिहाद की मश्कों में लगे थे। यह हदीस गाने बजाने के लिए दलील नहीं है, क्योंकि

एक रिवायत में हजरत आइशा रजि. ने सराहत की है कि वह दोनों गाने वाली कलाकार न थी। सिर्फ आम लड़कियां थी, जो ईद के दिन खुशी जाहिर कर रही थी। (औनुलबारी, 2/72)

बाब 2 : ईदुलफित्र के दिन (नमाज़ के लिए) निकलने से पहले कुछ खाना।

٢ - باب: الأَكْلُ يَومَ الفِطْرِ قَبْلَ الخُرُوجِ

528 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईदुलफित्र के दिन जब तक कुछ खुजूरें न खा लेते, नमाज़ के लिए न जाते और उन्हीं से एक रिवायत है कि आप ताक खुजूरें खाते थे।

٥٢٨ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لاَ يَغْدُو يَوْمَ الفِطْرِ حَتَّى يَأْكُلَ تَمَراتٍ. وَفي رِوايَةٍ عَنْهُ قَالَ: وَيَأْكُلُهُنَّ وِتْرًا. [رواه البخاري: ٩٥٣]

फायदे : मालूम हुआ कि ईदुलफित्र के दिन नमाज़ से पहले मीठी चीजें खाना बेहतर है, शर्बत पीना भी सही है। अगर घर में न हो तो रास्ते में या ईदगाह पहुंचकर खा-पी ले इसका छोड़ना मकरूह है, बेहतर है कि ताक खुजूरों को इस्तेमाल किया जाये।

(औनुलबारी, 2/73)

बाब 3 : ईदुलअज़हा (बकराईद) के दिन खाने का बयान।

٣ - باب: الأَكْلُ يَومَ النَّحْرِ

529 : बराअ बिन आज़िब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुतबे में इशारा फरमाते सुना, आपने फरमाया कि आज के इस

٥٢٩ : عَنِ البَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ، فَقَالَ: (إِنَّ أَوَّلَ ما نَبْدَأُ بِهِ في يَوْمِنَا هٰذَا أَنْ نُصَلِّيَ، ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ، فَمَنْ فَعَلَ، فَقَدْ أَصَابَ سُنَّتَنَا). [رواه البخاري: ٩٥١]

दिन में पहला काम जो हम करेंगे, वह यह कि नमाज़ पढ़ेंगे, फिर वापस जाकर कुर्बानी करेंगे तो जिसने ऐसा किया, उसने हमारे तरीके को पा लिया।

फायदे : इमाम बुख़ारी ने इस हदीस पर इन लफ़्ज़ों के साथ उनवान कायम किया है। ''मुसलमानों के लिए ईद के दिन पहली सुन्नत का बयान'' मुसनद इमाम अहमद, तिरमजी और इब्ने माजा की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईदुलअज़हा के दिन वापस आकर अपनी कुर्बानी का गोश्त खाया करते थे। (औनुलबारी, 1/74)

---

530 : बराअ बिन आज़िब रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईदुलअज़हा में नमाज़ के बाद हमारे सामने खुत्बा इरशाद फरमाया तो कहा जो आदमी हमारी तरह नमाज़ पढ़े और हमारी तरह कुर्बानी करे तो उसका फर्ज पूरा हो गया और जिसने नमाज़ से पहले कुर्बानी की तो नमाज़ से पहले होने की बिना पर कुर्बानी नहीं है। इस पर बराअ रजि. के मामूं जनाब अबू बुरदा बिन नियार रजि.ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैंने तो अपनी बकरी नमाज़ से पहले ही कुर्बान

٥٣٠ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: خَطَبَنَا النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ الأَضْحى بَعْدَ الصَّلاَةِ، فَقَالَ: (مَنْ صَلَّى صَلاَتَنَا، وَنَسَكَ نُسُكَنَا، فَقَدْ أَصَابَ النُسُكَ، وَمَنْ نَسَكَ قَبْلَ الصَّلاَةِ، فَإِنَّهُ قَبْلَ الصَّلاَةِ وَلاَ نُسُكَ لَهُ). فَقَالَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ، خالُ الْبَرَاءِ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَإِنِّي نَسَكْتُ شَاتِي قَبْلَ الصَّلاةِ، وعَرَفْتُ أَنَّ الْيَوْمَ يَوْمُ أَكْلٍ وَشُرْبٍ، وَأَحْبَبْتُ أَنْ تَكُونَ شَاتِي أَوَّلَ شَاةٍ تُذْبَحُ في بَيْتِي، فَذَبَحْتُ شَاتِي وَتَغَدَّيْتُ قَبْلَ أَنْ آتِيَ الصَّلاَةَ، قَالَ: (شَاتُكَ شَاةُ لَحْمٍ). قَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَإِنَّ عِنْدَنَا عَنَاقًا لَنَا جَذَعَةً، أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْنِ، أَفَتَجْزِي عَنِّي؟ قَالَ: (نَعَمْ، وَلَنْ تَجْزِيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ). [رواه البخاري: ٩٥٥]

कर दी, क्योंकि मैंने समझा कि आज चूंकि खाने पीने का दिन है, इसलिए मेरी ख्वाहिश थी कि सबसे पहले मेरे ही घर में बकरी कुर्बान की जाये। इस बिना पर मैंने अपनी बकरी कुर्बान कर दी और नमाज़ के लिए आने से पहले कुछ नाश्ता भी कर लिया। आपने फरमाया कि तुम्हारी बकरी तो सिर्फ गोश्त की बकरी ठहरी (कुर्बानी नहीं हुई)। उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हमारे पास एक भेड़ का बच्चा है जो मुझे दो बकरियों से ज्यादा प्यारा है तो क्या वह मेरी तरफ से काफी हो जायेगा? आपने फरमाया, हां लेकिन तुम्हारे सिवा किसी और को काफी न होगा।

फायदे : कुर्बानी के जानवर के लिए दो दांत होना जरूरी है। इसके बगैर कुर्बानी नहीं होती। हदीस में गुजरी इजाजत सिर्फ अबू बुरदा रजि. के लिए थी। इससे यह भी मालूम हुआ कि दीन इन्सान के पाक जज्बात का नाम नहीं बल्कि उसके लिए अल्लाह की तरफ से नाज़िल किया गया होना जरूरी है।

बाब 4 : ईदगाह में मिम्बर के बगैर जाना।

٤ - باب: الخُرُوجُ إِلَى المُصَلَّى بغير منبر

531 : अबू सईद खुदरी रजि.से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईदुलफित्र और ईदुलअज़्हा के दिन ईदगाह तशरीफ ले जाते तो पहले जो काम करते, वह नमाज़ होती, उससे फारिग होने के बाद आप लोगों के सामने खड़े होते,

٥٣١ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَخْرُجُ يَوْمَ الفِطْرِ وَالأَضْحَى إِلَى المُصَلَّى، فَأَوَّلُ شَيْءٍ يَبْدَأُ بِهِ الصَّلاَةُ، ثُمَّ يَنْصَرِفُ، فَيَقُومُ مُقَابِلَ النَّاسِ، وَالنَّاسُ جُلُوسٌ عَلَى صُفُوفِهِمْ، فَيَعِظُهُمْ وَيُوصِيهِمْ وَيَأْمُرُهُمْ: فَإِنْ كَانَ يُرِيدُ أَنْ يَقْطَعَ

بَعْثًا قَطَعَهُ، أَوْ يَأْمُرَ بِشَيْءٍ أَمَرَ بِهِ، ثُمَّ يَنْصَرِفُ. قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: فَلَمْ يَزَلِ النَّاسُ عَلَى ذٰلِكَ حَتَّى خَرَجْتُ مَعَ مَرْوَانَ، وَهُوَ أَمِيرُ الْمَدِينَةِ، فِي أَضْحًى أَوْ فِطْرٍ، فَلَمَّا أَتَيْنَا الْمُصَلَّى، إِذَا مِنْبَرٌ بَنَاهُ كَثِيرُ بْنُ الصَّلْتِ، فَإِذَا مَرْوَانُ يُرِيدُ أَنْ يَرْتَقِيَهُ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّي، فَجَبَذْتُ بِثَوْبِهِ، فَجَبَذَنِي، فَارْتَفَعَ فَخَطَبَ قَبْلَ الصَّلاَةِ، فَقُلْتُ لَهُ: غَيَّرْتُمْ وَاللهِ، فَقَالَ: يَا أَبَا سَعِيدٍ، قَدْ ذَهَبَ مَا تَعْلَمُ، فَقُلْتُ: مَا أَعْلَمُ وَاللهِ خَيْرٌ مِمَّا لاَ أَعْلَمُ، فَقَالَ: إِنَّ النَّاسَ لَمْ يَكُونُوا يَجْلِسُونَ لَنَا بَعْدَ الصَّلاَةِ، فَجَعَلْتُهَا قَبْلَ الصَّلاَةِ. [رواه البخاري: ٩٥٦]

लोग अपनी सफों में बैठे रहते, तब आप उन्हें नसीहत और तलकीन फरमाते और अच्छी बातों का हुक्म देते। फिर अगर आप कोई लश्कर भेजना चाहते तो उसे तैयार करते या जिस काम का हुक्म करना चाहते, हुक्म दे देते। फिर वापस घर लौट आते। अबू सईद रजि. फरमाते हैं कि उसके बाद भी लोग ऐसा ही करते रहे। यहां तक कि मैं मरवान रजि. के साथ ईदुलअज़हा या ईदुलफित्र में गया। वह उस वक्त मदीना का हाकिम था, तो जब हम ईदगाह पहुंचे तो एक मिम्बर वहां रखा हुआ था जो कसीर बिन सल्त ने तैयार किया था। मरवान रजि. ने अचानक चाहा कि नमाज़ पढ़ने से पहले उस पर चढ़े तो मैंने उसका कपड़ा पकड़कर खींचा, लेकिन उसने मुझे झटक दिया और मिम्बर पर चढ़ गया। फिर उसने नमाज़ से पहले खुत्बा दिया तो मैंने उससे कहा कि अल्लाह की कसम! तुम लोगों ने नबी की सुन्नत को बदल दिया है। उसने कहा अबू सईद खुदरी रजि.! वह बात जाती रही जो तुम जानते हो, मैंने जवाब में कहा, अल्लाह की कसम! जो मैं जानता हूँ वह उससे कहीं बेहतर है, जिसे मैं नहीं जानता हूँ इस पर मरवान रजि. कहने लगे, बात दरअसल यह है कि लोग हमारे खुत्बे के लिए नमाज़ के बाद नहीं बैठते। लिहाजा मैंने खुत्बे को नमाज़ से पहले कर दिया।

फायदे : हज़रत मरवान रजि. ने यह तब्दीली अपने इजतिहाद से की थी जो नस के मुकाबले में होने की बिना पर अमल के काबिल न थी। चूनांचे हज़रत अबू सईद खुदरी रजि. ने इसका नोटिस लिया, इससे यह भी मालूम हुआ कि अगर बादशाह किसी बेहतर काम पर इत्तिफाक न करें तो खिलाफे औला काम को अमल में लाना जाईज है। (औनुलबारी, 2/80)

٥ - باب: الْمَشْيُ وَالرُّكُوبُ إِلَى الْعِيدِ، وَالصَّلاَةُ قَبْلَ الخُطْبَةِ

बाब 5 : ईद के लिए पैदल या सवार होकर जाना और खुत्बे से पहले नमाज़ अदा करना।

٥٣٢ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، وَجَابِرِ ابْنِ عَبْدِ اللهِ، رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ، قَالاَ: لَمْ يَكُنْ يُؤَذَّنُ يَوْمَ الْفِطْرِ وَلاَ يَوْمَ الأَضْحَى. [رواه البخاري: ٩٦٠]

532 : इब्ने अब्बास रजि. और जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि न ईदुलफित्र की अज़ान होती थी और न ही ईदुलअज़्हा की।

फायदे : गुजरी हुई रिवायत में न पैदल चलने का जिक्र है और न ही सवारी पर जाने की मनाही है। जिससे इमाम बुखारी ने साबित किया कि दोनों तरह ईदगाह जाना सही है। फिर भी पैदल जाने में ज्यादा सवाब है। खुत्बा से पहले नमाज़ का होना ऊपर के बाब से साबित हो चुका है। अगले बाब से भी साबित होता है।

٦ - باب: الخُطْبَةُ بَعْدَ العِيدِ

बाब 6 : ईद की नमाज़ के बाद खुत्बा देना।

٥٣٣ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: شَهِدْتُ الْعِيدَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ، فَكُلُّهُمْ، كَانُوا

533 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने ईद की नमाज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अबू बकर, उमर

يُصَلُّونَ قَبْلَ الخُطْبَةِ. [رواه البخاري: ٩٦٢]

और उसमान रजि.के साथ पढ़ी है। यह सब हजरात खुत्बे के पहले ईद की नमाज़ पढ़ते थे।

٧ - باب: فَضلُ العَمَلِ في أيَّامِ التَّشرِيق

बाब 7 : तशरीक के दिनों में इबादत करने की फज़ीलत।

٥٣٤ : وعَنه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (ما العَمَلُ في أيَّام أفضَلُ منها في هذا العَشرِ). قَالُوا: وَلاَ الجِهادُ؟ قَالَ: (وَلاَ الجِهادُ، إلَّا رَجُلٌ خَرَجَ يُخَاطِرُ بِنَفسِهِ ومالِهِ، فَلَمْ يَرْجِعْ بِشَيْءٍ). [رواه البخاري: ٩٦٩]

534 : इब्ने अब्बास रजि. से ही रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, किसी और दिन में इबादत इन दस दिनों में इबादत करने से बेहतर नहीं है। सहाबा-ए-किराम रजि. ने अर्ज किया कि जिहाद भी नहीं? आपने फरमाया कि जिहाद भी नहीं। हां वह आदमी जो (जिहाद में) अपनी जान और माल को खतरे में डालते हुये निकले और फिर कोई चीज लेकर वापस न लौटे (बल्कि अपनी जान और माल कुर्बान कर दे)।

फायदे : चूंकि यह दिन ज्यादातर लोग गफलत के साथ गुजारते हैं, लिहाजा इन दिनों की इबादत को बड़ी फज़ीलत वाला करार दिया गया है। नीज यह भी मालूम हुआ कि कम दर्जे का अमल अगर बेहतरीन वक्त मे अदा किया जाये तो उसकी फज़ीलत और ज्यादा हो जाती है। (औनुलबारी, 2/84)

---

٨ - باب: التَّكبِيرُ أيَّامَ مِنًى وإذَا غَدَا إلى عَرَفَة

बाब 8 : मिना के दिनों में और अरफात के मैदान को जाते हुए तकबीरें कहना।

٥٣٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ

535 : अनस रजि. से रिवायत है कि

أَنَّهُ سُئِلَ عَنِ التَّلْبِيَةِ: كَيْفَ كُنْتُمْ تَصْنَعُونَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: كَانَ يُلَبِّي الْمُلَبِّي لاَ يُنْكَرُ عَلَيْهِ، وَيُكَبِّرُ الْمُكَبِّرُ فَلاَ يُنْكَرُ عَلَيْهِ. [رواه البخاري: ٩٧٠]

उनसे लब्बेक पुकारने के बारे में पूछा गया कि तुम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किस तरह करते थे। उन्होंने जवाब दिया कि लब्बेक कहने वाला लब्बेक कहता, उसे मना न किया जाता और इसी तरह तकबीरें कहने वाला तकबीरें कहता तो उस पर भी कोई ऐतराज न करता।

फायदे : ईदैन की रूह यही है कि उनमें तेज आवाज में अल्लाह की बड़ाई और उसकी अज़मत का एलान किया जाये, इसका मतलब यह नहीं है कि हज के दिनों में लब्बैक छोड़ दिया जाये, बल्कि लब्बैक कहते हुये तकबीरें भी तेज आवाज़ में कही जायें। (औनुलबारी, 2/84)

٩ - باب: النَّحْرُ وَالذَّبْحُ بِالمُصَلَّى يَوْمَ النَّحرِ

बाब 9 : कुर्बानी के दिन ईदगाह में ऊंट या कोई जानवर कुर्बान करना।

٥٣٦ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَنْحَرُ، أَوْ يَذْبَحُ بِالْمُصَلَّى. [رواه البخاري: ٩٨٢]

536 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊंट या किसी और जानवर की कुर्बानी ईदगाह में किया करते थे।

फायदे : बेशक ईदगाह में कुर्बानी करना सुन्नत है। मगर हालात के मुताबिक यह सुन्नत अपने घरों और अपनी जगहों पर भी अदा की जा सकती है।

١٠ - باب: مَنْ خَالَفَ الطَّرِيقَ إِذَا رَجَعَ يَومَ العِيدِ

बाब 10 : ईदैन के दिन वापसी पर रास्ता बदलना।

٥٣٧ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

537 : जाबिर रजि. से रिवायत है कि

قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ، إِذَا كَانَ يَوْمُ عِيدٍ، خَالَفَ الطَّرِيقَ. [رواه البخاري: ٩٨٦]

उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब ईद का दिन होता तो रास्ता बदला करते, यानी एक रास्ते से जाते तो वापसी के वक्त दूसरा रास्ता इख्तियार फरमाते थे।

फायदे : रास्ता बदलने में शरई मसला यह है कि हर तरफ सलाम की शान का इजहार हो नीज जहां जहां कदम पड़ेंगे, कयामत के दिन वह निशान गवाही देंगे। (औनुलबारी, 2/87)

٥٣٨ : حديث عائشة رضي الله عنها في أمر الحبشة تقدَّم، وزاد في هذه الرواية: فَزَجَرَهُمْ عمرُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (دَعْهُمْ، أَمْنًا بَنِي أَرْفِدَةَ). [رواه البخاري: ٩٨٨]

538 : आइशा रजि. की हब्शियों के बारे में रिवायत (486) पहले गुजर चुकी है, यहां इस रिवायत में इतना ज्यादा है कि आइशा रजि. ने फरमाया, जब उमर रजि. ने उन्हें झिड़का तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इन्हें रहने दो ऐ बनी अरफिदा! आराम और सुकून से खेलो।

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस पर इन लफ्ज़ों के साथ उनवान कायम किया है, ''अगर किसी को जमाअत के साथ ईद न मिले तो दो रकअत पढ़ ले'' क्योंकि इस रिवायत के मुताबिक ईद के दिन का तकाजा यह है कि नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी जाये, अगर रह जाये तो अकेले अदा कर ली जाये।

(औनुलबारी, 2/89)

❖❖❖

किताबुल-वित्र
वित्र के बयान में

बाब 1 : वित्र के बारे में जो आया है।

١ - باب: ما جاء في الوِتْرِ

539: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रात की नमाज़ के बारे में पूछा तो आपने फरमाया कि रात की नमाज़ दो दो रकअतें हैं और अगर तुममें से किसी को सुबह होने का डर हो तो वह एक रकअत और पढ़ ले, वह उसकी नमाज़ को वित्र बना देगी।

٥٣٩ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنْ صَلَاةِ اللَّيْلِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (صَلَاةُ اللَّيْلِ مَثْنَى مَثْنَى، فَإِذَا خَشِيَ أَحَدُكُمُ الصُّبْحَ صَلَّى رَكْعَةً وَاحِدَةً، تُوتِرُ لَهُ مَا قَدْ صَلَّى). [رواه البخاري: ٩٩٠]

फायदे : वित्र की नमाज मुस्तकिल एक नमाज़ है जो इशा के बाद फजर तक रात के किसी हिस्से में पढ़ी जा सकती है, इसे तहज्जुद, कयाम-उल-लैल और तरावीह भी कहा जाता है। इसकी कम से कम एक रकअत और ज्यादा से ज्यादा तेरह रकअत हैं। ज्यादातर इमामों के नजदीक वित्र की नमाज़ सुन्नत है, जिस पर जोर दिया गया है। इस हदीस से दो बातें साबित होती हैं। एक यह कि रात की नमाज़ दो दो रकअत करके पढ़ना चाहिए, दूसरी यह कि वित्र की एक रकअत पढ़ना भी साबित है।

(औनुलबारी, 2/91)

540 : आइशा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तहज्जुद (तरावीह) की नमाज ग्यारह रकअतें पढ़ा करते थे, रात के वक़्त आप की यही नमाज़ थी। इस नमाज़ में सज्दा इस कदर लम्बा करते कि आपके सर उठाने से पहले तुम में से कोई पचास आयतें तिलावत कर लेता है और फज्र की नमाज से पहले दो रकअतें सुन्नत भी पढ़ा करते, फिर अपनी दायीं करवट लेट जाते, यहां तक कि अज़ान देने वाला आपके पास नमाज़ की खबर के लिए जाता तो उठ जाते।

٥٤٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً، كَانَتْ تِلْكَ صَلاَتَهُ - تَعْنِي بِٱللَّيْلِ - فَيَسْجُدُ السَّجْدَةَ مِنْ ذٰلِكَ قَدْرَ ما يَقْرَأُ أَحَدُكُمْ خَمْسِينَ آيَةً، قَبْلَ أَنْ يَرْفَعَ رَأْسَهُ، وَيَرْكَعُ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ صَلاَةِ الْفَجْرِ، يَضْطَجِعُ عَلَى شِقِّهِ الأَيْمَنِ، حَتَّى يَأْتِيَهُ الْمُؤَذِّنُ لِلصَّلاَةِ. [رواه البخاري: ٩٩٤]

फायदे : दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमजान या रमजान के अलावा कभी ग्यारह रकअत से ज्यादा नहीं पढ़ा करते थे, अलबत्ता बाज वक्तों में तेरह रकअतें पढ़ना भी साबित है। जैसा कि इब्ने अब्बास रजि. ने बयान फरमाया है, नीज सुबह की सुन्नतें अदा करके दायीं तरफ लेटना भी सुन्नत है। क्योंकि आप अच्छे कामों में दायीं तरफ को पसन्द फरमाते थे। (औनुलबारी, 2/96)

बाब 2 : वित्र की नमाज़ के वक्त (औकात)

٢ - باب: سَاعَاتُ الوِتْرِ

541 : आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रात के हर हिस्से में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

٥٤١ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُلَّ اللَّيْلِ أَوْتَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، وَٱنْتَهَىٰ وِتْرُهُ إِلَى السَّحَرِ.

अलैहि वसल्लम ने वित्र की नमाज़ अदा की है, मगर आखिर में आपकी वित्र की नमाज़ आखिर रात में होती थी।

[رواه البخاري: ٩٩٦]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अलग अलग हालतों के मुताबिक अलग अलग वक्तों में वित्र अदा किये हैं, शायद तकलीफ और मर्ज में पहली रात में सफर की हालत में, बीच रात में, और आम अमल आखिर रात में पढ़ने का था। अलबत्ता उम्मत की आसानी के लिए इशा के बाद जब भी मुमकिन हो, वित्र अदा करना जाइज है। (औनुलबारी, 2/97)

बाब 3 : चाहिए कि अपनी आखरी नमाज़ वित्र को बनायें।

٣ - باب: لِيَجْعَلْ آخِرَ صَلاَتِهِ وِتْرًا

542 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ लोगों! तुम रात की आखरी नमाज़ वित्र को बनाओ।

٥٤٢ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (ٱجْعَلُوا آخِرَ صَلاَتِكُمْ بِٱللَّيْلِ وِتْرًا). [رواه البخاري: ٩٩٨]

फायदे : इस रिवायत से पता चलता है कि वित्र की नमाज़ को सबसे आखिर में पढ़ना चाहिए इसके बरखिलाफ वित्र के बाद दो रकअत बैठकर अदा करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सही हदीसों से साबित नहीं। जैसा कि इस बात पर कुछ लोगों का अमल है। लिहाजा हमें चाहिए कि हम रात की सबसे आखिरी नमाज़ वित्र को बनायें।

बाब 4 : सवारी पर वित्र पढ़ना।

٤ - باب: الْوِتْرُ عَلَى الدَّابَّةِ

543 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से

٥٤٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا

قَالَ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ يُوتِرُ عَلَى الْبَعِيرِ. [رواه البخاري: ٩٩٩]

ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊंट पर सवार होकर वित्र पढ़ लिया करते थे।

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि वित्र की नमाज़ वाजिब नहीं है, अगर ऐसा होता तो इसे सवारी पर अदा न किया जाता। (औनुलबारी, 2/99)

---

٥ - باب: القُنُوتُ قَبْلَ الرُّكُوعِ وَبَعْدَهُ

बाब 5 : रूकू से पहले और रूकू के बाद कुनूत का बयान।

٥٤٤ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سُئِلَ: أَقَنَتَ النَّبِيُّ ﷺ فِي الصُّبْحِ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَقِيلَ: أَوَقَنَتَ قَبْلَ الرُّكُوعِ؟ قَالَ: قَنَتَ بَعْدَ الرُّكُوعِ يَسِيرًا. [رواه البخاري: ١٠٠١]

544 : अनस रजि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फज्र की नमाज़ में कुनूत पढ़ी है? उन्होंने जवाब दिया, हां। फिर पूछा क्या रूकू से पहले आपने कुनूत पढ़ी थी? उन्होंने कहा, रूकू के बाद थोड़े दिनों के लिए।

फायदे : इस हदीस में वित्र के कुनूत का जिक्र नहीं, बल्कि कुनूते नाजिला का जिक्र है। शायद इमाम बुखारी ने यह कयास किया हो कि जब फर्ज नमाज़ में कुनूत पढ़ना जाइज हो तो वित्र में और ज्यादा जाइज होगा। कुनूते कब पढ़ा जाये, इसके बारे में निसाई में वजाहत है कि वितरों में कुनूत रूकू से पहले है और मुस्लिम की रिवायत के मुताबिक कुनूते नाजिला रूकू के बाद है। अगर कुनूते वित्र में दीगर दुआयें भी शामिल कर ली जायें तो उसे भी रूकू के बाद पढ़ना चाहिए। वरना कुनूत वित्र रूकू से पहले है। (औनुलबारी, 2/105)

٥٤٥ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سُئِلَ عَنِ ٱلْقُنُوتِ، فَقَالَ: قَدْ كَانَ ٱلْقُنُوتُ، فَقِيلَ لَهُ: قَبْلَ الرُّكُوعِ أَوْ بَعْدَهُ؟ قَالَ: قَبْلَهُ. قِيل: فَإِنَّ فُلاَنًا أَخْبَرَ عَنْكَ أَنَّكَ قُلْتَ بَعْدَ الرُّكُوعِ؟ فَقَالَ: كَذَبَ، إِنَّمَا قَنَتَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بَعْدَ الرُّكُوعِ شَهْرًا، أُرَاهُ كانَ بَعَثَ قَوْمًا يُقَالُ لَهُمُ الْقُرَّاءُ، زُهَاءَ سَبْعِينَ رَجُلًا، إِلَى قَوْمٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ دُونَ أُولٰئِكَ، وَكانَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ عَهْدٌ، فَقَنَتَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ شَهْرًا يَدْعُو عَلَيْهِمْ. [رواه البخاري: ١٠٠٢]

وَفِي رِوايَة عَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَنَتَ النَّبِيُّ ﷺ شَهْرًا، يَدْعُو عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ. [رواه البخاري: ١٠٠٣]

545 : अनस रजि. से ही रिवायत है, उनसे कुनूत के बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने जवाब दिया कि बेशक कुनूत पढ़ी जाती थी। फिर पूछा गया कि रूकू से पहले या रूकू के बाद? उन्होंने कहा, रूकू से पहले, फिर जब उनसे कहा गया कि फलां आदमी तो आपसे नकल करता है कि आपने रूकू के बाद फरमाया है। अनस रजि. बोले वह गलत कहता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर्फ एक महीना रूकू के बाद कुनूत पढ़ी है और मेरा खयाल है कि आपने मुश्रिकों की तरफ तकरीबन सत्तर आदमी भेजे। जिन्हें कारी कहा जाता था, यह मुश्रिक उन मुश्रिकों के अलावा थे, जिनके और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीच सुलहनामें का वादा हुआ था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ-ए-कुनूत पढ़ी और एक माह तक उनके लिए बद-दुआ करते रहे। इन्हीं से एक रिवायत में यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक माह तक दुआ-ए-कुनूत पढ़ी और कबीला रेअल और ज़कवान के लिए बद-दुआ फरमाते रहे।

फायदे : जंगी हालतों के मुताबिक हर नमाज़ में दुआ-ए-कुनूत की जा सकती है। नीज मालूम हुआ कि ज़ुल्म करने वाले लोगों पर

नमाज़ में बद-दुआ करने से नमाज़ में कोई फर्क नहीं आता। (औनुलबारी, 2/102)

---

546 : अनस रजि. से ही यह रिवायत भी है, उन्होंने फरमाया कि कुनूत मगरिब और फज्र की नमाज़ में पढ़ी जाती थी।

٥٤٦ : وَعَنْهُ أَيْضًا قَالَ: القُنُوتُ فِي الْمَغْرِبِ وَالْفَجْرِ. [رواه البخاري: ١٠٠٤]

फायदे : मगरिब की नमाज़ चूंकि दिन के वित्र हैं और इसमें कुनूत करना साबित है तो रात के वितरों में कुनूत और ज्यादा की जा सकती है। इसके अलावा वित्रों में कुनूत करने का बयान हदीसों में भी मौजूद है। (औनुलबारी, 2/106)

कितابुल-इसतिसक़ा
बारिश माँगने का बयान

बाब 1 : बारिश मांगने की दुआ का बयान।

١ - باب: الاسْتِسْقَاءُ

547 : अब्दुल्लाह बिन जैद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बारिश की नमाज के लिए बाहर तशरीफ ले गये और वहां आपने अपनी चादर को पलट लिया। उन्हीं से एक रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि वहां आपने दो रकअत नमाज़ अदा की।

٥٤٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ يَسْتَسْقِي، وَحَوَّلَ رِدَاءَهُ. وَفِي رواية عَنْهُ: وَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ. [رواه البخاري: ١٠٠٥و١٠١٢]

फायदे : बारिश मांगने के तीन तरीके हैं 1. आम तरीक़े से बारिश की दुआ की जाये। 2. नफ्ल और फर्ज नमाज़ के बाद नीज खुत्बे में दुआ की जाये। 3. बाहर मैदान में दो रकअत अदा की जाये और खुत्बा दिया जाये, फिर दुआ की जाये। (औनुलबारी, 2/107)। चादर को यूँ पल्टा जाये कि नीचे का कोना पकड़कर उसे उल्टा किया जाये, फिर उसे दायीं तरफ से घूमाकर बायीं तरफ डाल लिया जाये, इसमें इशारा है कि अल्लाह अपने फज्ल से ऐसे ही भूखमरी की हालत को बदल देगा।

बाब 2 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बद-दुआ कि ऐसी भुखमरी डाल जैसी हजरत यूसुफ रजि. के जमाने में थी।

٢ - باب: دُعَاءُ النَّبِيِّ ﷺ: «اجْعَلْهَا سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ»

548 : अबू हुरैरा रजि. की वह हदीस (545) पहले गुजर चुकी है, जिसमें कमजोर मुसलमानों के लिए दुआ और कबीले मुजर पर बद-दुआ का जिक्र है। यहां आखिर में यह इजाफा है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कबीला गिफार को अल्लाह तआला मगफिरत से नवाजे और कबीले असलम को अल्लाह सलामत रखे।

٥٤٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: حَدِيثُ دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ لِلْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَعَلَى مُضَرَ تَقَدَّمَ، وَقَالَ فِي آخِرِ هٰذِهِ الرِّوَايَةِ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (غِفَارُ غَفَرَ ٱللهُ لَهَا، وَأَسْلَمُ سَالَمَهَا ٱللهُ) (راجع: ٤٦٢). [رواه البخاري: ١٠٠٦]

फायदे : यह हदीस इमाम बुखारी इसतिसका में इसलिए लायें हैं कि जैसे मुसलमानों के लिए बारिश की दुआ करना मसनून है, उसी तरह काफिरों पर कहत की बद-दुआ करना जाइज है। लेकिन ऐसे काफिरों के लिए जिनसे आपसी सुलह हो, बददुआ करना जाइज नहीं।

549 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब लोगों की इस्लाम से सरताबी देखी तो बद-दुआ की, ऐ अल्लाह! उनको सात बरस तक के लिए तंग हालत में शामिल कर

٥٤٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا رَأَى مِنَ النَّاسِ إِدْبَارًا، قَالَ: (اللَّهُمَّ سَبْعًا كَسَبْعِ يُوسُفَ). فَأَخَذَتْهُمْ سَنَةٌ حَصَّتْ كُلَّ شَيْءٍ، حَتَّى أَكَلُوا الْجُلُودَ وَالْمَيْتَةَ وَالْجِيفَ، وَيَنْظُرُ أَحَدُهُمْ إِلَى السَّمَاءِ

فَيَرَى ٱلدُّخَانَ مِنَ الجُوعِ. فَأَتَاهُ أَبُو سُفْيَانَ فَقَالَ: يَامُحَمَّدُ، إِنَّكَ تَأْمُرُ بِطَاعَةِ ٱللهِ وَبِصِلَةِ الرَّحِمِ، وَإِنَّ قَوْمَكَ قَدْ هَلَكُوا، فَٱدْعُ ٱللهَ لَهُمْ، قَالَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿فَٱرْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي ٱلسَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿عَآئِدُونَ ۝ يَوْمَ نَبْطِشُ ٱلْبَطْشَةَ ٱلْكُبْرَىٰٓ﴾. فَٱلْبَطْشَةُ يَوْمَ بَدْرٍ، وَقَدْ مَضَتِ ٱلدُّخَانُ، وَٱلْبَطْشَةُ وَٱللِّزَامُ وَآيَةُ الرُّومِ. [رواه البخاري: ١٠٠٧]

दे, जैसे यूसुफ अलैहि. के जमाने में सात बरस कहत (अकाल) पड़ा था। चूनांचे अकाल ने उनको ऐसा दबोचा कि हर चीज नापैद हो गई। यहां तक कि लोगों ने चमड़ा, मुरदार और सड़े-गले जानवर खाने शुरू कर दिये और उनमें से अगर कोई आसमान की तरफ देखता तो भूक की वजह से उसे धूंआ सा दिखाई देता। आखिर अबू सुफियान रजि. ने आपकी खिदमत में आकर अर्ज किया ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वल्लम आप अल्लाह की इताअत और सिला रहमी का दावा करते हैं, मगर यह, आपकी कौम मरी जाती है, आप उनके लिए अल्लाह से दुआ फरमायें। इस पर अल्लाह तआला ने फरमाया, ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उस दिन का इन्तजार करो जब आसमान से एक साफ धूंआ जाहिर होगा। इस फरमाने इलाही तक, जब हम उन्हें सख्त तरह से पकड़ेंगे। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. कहते हैं कि अलबतशा यानी सख्त पकड़ बदर के दिन हुई तो कुरआन शरीफ में जिस धूयें, पकड़ और कैद का जिक्र है, इस तरह आयत अल-रूम सब पूरी हो चुकी हैं।

फायदे : यह हिजरत से पहले का वाक्या है, अकाल की शिद्दत का यह आलम था कि अकालशुदा इलाके वीराने का नक्शा पेश करते थे। आखिरकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत अबू सुफियान रजि. की दरख्वास्त पर दुआ फरमायी और अकाल खत्म हुआ। (औनुलबारी, 2/111)

550 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे अकसर शायर (अबू तालिब) का कौल याद आ जाता जब मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरे अनवर को इसतिसका की दुआ करते हुये देखता हूँ। आप मिम्बर से न उतर पाते थे कि तमाम परनाले जोर से बहने लगते। वह शेअर अबू तालिब का यह है, "वह गोरे मुखड़े वाला जिसके रोये जैबा के वास्ते से अबरे रहमत की दुआयें मांगी जाती हैं, वह यतीमों का सहारा, बेवाओं और मिसकिनों का सरपरस्त (रखवाला) है।"

٥٥٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رُبَّمَا ذَكَرْتُ قَوْلَ ٱلشَّاعِرِ، وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَى وَجْهِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْتَسْقِي، فَمَا يَنْزِلُ حَتَّى يَجِيشَ كُلُّ مِيزَابٍ، وَهُوَ قَوْلُ أَبِي طَالِبٍ:

وَأَبْيَضَ يُسْتَسْقَى الْغَمَامُ بِوَجْهِهِ
ثِمَالُ الْيَتَامَى عِصْمَةٌ لِلأَرَامِلِ

[رواه البخاري: ١٠٠٩]

फायदे : रूये जैबा के वास्ते से मुराद आपका दुआ करना है। यह शेअर अबू तालिब के उस कसीदे से है जो एक सौ दस शेअरों पर शामिल है, जिसे अबू तालिब ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में पढ़ा था।(औनुलबारी, 2/112)

551 : उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है। उनकी यह आदत थी कि लोग भुखमरी में शामिल होते तो अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रजि. से इसतिसका की दुआ की अपील करते और कहते, ऐ अल्लाह! पहले हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसतिसका की दुआ की अपील करते थे तो तू बारिश बरसाता था। अब हम तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि

٥٥١ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّه كانَ إِذَا قَحَطُوا ٱسْتَسْقَى بِٱلعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ المُطَّلِبِ رضي الله عنه فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّا كُنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا فَتَسْقِينَا، وَإِنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّنَا فَٱسْقِنَا، قَالَ فَيُسْقَوْنَ. [رواه البخاري: ١٠١٠]

वसल्लम के चचा जान के जरीये बारिश की दुआ करते हैं तो अब भी रहम फरमाकर बारिश बरसा दे। रावी कहता है कि फिर बारिश बरसने लगती।

फायदे : मालूम हुआ कि जिन्दा बुजुर्ग से बारिश के लिए दुआ करना एक अच्छा काम है। यह भी मालूम हुआ कि हमारे बुजुर्ग, मुर्दों को वसीला बनाकर दुआयें नहीं करते थे, क्योंकि यह गैर शरई वसीला (कुरआन और हदीस के खिलाफ) है।

बाब 3 : जामा मस्जिद में बारिश के लिए दुआ करना।

٣ - باب: الاسْتِسْقَاءُ في المَسْجِدِ الجَامِعِ

552 : अनस रजि. की हदीस उस आदमी के बारे में जो मस्जिद में आता था, जबकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुत्बा इरशाद फरमा रहे थे और उसने आपसे बारिश के लिए दुआ की अपील की थी, कई बार गुजर चुकी है। इस रिवायत में इतना इजाफा है कि हमने छः दिन तक सूरज को न देखा, फिर अगले जुमे को एक आदमी उसी दरवाजे से मस्जिद में दाखिल हुआ, जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस वक्त खड़े होकर खुत्बा दे रहे थे। उसने आपके सामने आकर अर्ज किया कि ऐ

٥٥٢ : حَدِيثُ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِي الرَّجُلِ الَّذِي دَخَلَ المَسْجِدَ وَالنَّبِيُّ ﷺ قَائِمٌ يَخْطُبُ فَسَأَلَهُ الدُّعَاءَ بِالْغَيْثِ، تكرّر كثيرًا، وفي الرواية: فما رَأَيْنَا الشَّمْسَ سِتًّا. ثُمَّ دَخَلَ رَجُلٌ مِنْ ذَلِكَ الْبَابِ فِي الجُمُعَةِ المُقْبِلَةِ، وَرَسُولُ اللهِ ﷺ قَائِمٌ يَخْطُبُ، فَاسْتَقْبَلَهُ قَائِمًا، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، هَلَكَتِ الأَمْوَالُ، وَانْقَطَعَتِ السُّبُلُ، فَادْعُ اللهَ يُمْسِكْهَا. قَالَ: فَرَفَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: (اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلاَ عَلَيْنَا، اللَّهُمَّ عَلَى الآكَامِ وَالجِبَالِ، [وَالآجَامِ] وَالظِّرَابِ، وَبُطُونِ الأَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ). قَالَ: فَانْقَطَعَتْ، وَخَرَجْنَا نَمْشِي فِي الشَّمْسِ. [رواه البخاري: ١٠١٣]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! माल बर्बाद हो गया और रास्ते बन्द हो गये हैं। इसलिए आप अल्लाह से दुआ करें कि अब बारिश रोक ले। अनस रजि. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों हाथ उठाकर फरमाया, ऐ अल्लाह! हमारे इर्द-गिर्द बारिश बरसा, हम पर न बरसा। टीलों, पहाड़ियों, मैदानों, वादियों और पेड़ों के उगने की जगहों पर बारिश बरसा। रावी कहता है कि फौरन बारिश बन्द हो गई और हम धूप में चलने, फिरने लगे।

फायदे : इमाम साहब इस हदीस से यह साबित करना चाहते हैं कि इसतिसक़ा की दुआ के लिए बाहर मैदान में जाना जरूरी नहीं, बल्कि जुमे के दिन मस्जिद के अन्दर खुत्बे के बीच अपनी चादर पलटे बगैर भी दुआ की जा सकती है।

बाब 4 : जुमे के खुत्बे में गैर किब्ला रूख किये बारिश की दुआ करना।

٤ - باب: الاسْتِسْقَاءُ فِي خُطْبَةِ الجُمُعَةِ غَيرَ مُسْتَقْبِلِ القِبْلَةِ

553 : अनस रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (खुत्बे के बीच) अपने दोनों हाथों को उठाकर यूँ दुआ की, ऐ अल्लाह! हम पर बारिश बरसा, ऐ अल्लाह! हम पर बारिश बरसा, ऐ अल्लाह! हम पर बारिश बरसा।

٥٥٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: رَفَعَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَدَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: (اللَّهُمَّ أَغِثْنَا، اللَّهُمَّ أَغِثْنَا، اللَّهُمَّ أَغِثْنَا). [رواه البخاري: ١٠١٤]

फायदे : सही इब्ने खुजैमा में है कि आपने इस कदर हाथ उठाये कि बगलों की सफेदी नजर आने लगी। निसाई में है कि लोगों ने भी हाथ उठाये। (औनुलबारी, 2/120) लोगों के हाथ उठाने का जिक्र बुखारी में भी मौजूद है। (अलवी)

बाब 5 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (इसतिसक़ा में) लोगों की तरफ अपनी पीठ कैसे फेरी?

٥ - باب: كَيفَ حَوَّلَ النَّبيُّ ﷺ ظَهْرَهُ إلى النَّاسِ

554 : अब्दुल्लाह बिन जैद रजि. से मरवी रिवायत में इतना इजाफा है कि आपने लोगों की तरफ पीठ करके किब्ले की तरफ मुंह कर लिया और दुआ फरमाने लगे, फिर अपनी चादर को उल्ट लिया। उसके बाद तेज आवाज से किरअत करके हमें दो रकअतें पढ़ायीं।

٥٥٤ : حديث عبد الله بن زيد في الاستسقاء تقدَّم، وفي هذه الرواية قال: فَحَوَّلَ إلى النَّاسِ ظَهْرَهُ، وَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ يَدْعُو، ثُمَّ حَوَّلَ رِدَاءَهُ، ثُمَّ صَلَّى لَنَا رَكْعَتَيْنِ، جَهَرَ فِيهِمَا بِالْقِرَاءَةِ. [رواه البخاري: ١٠٢٤]

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि इसतिसक़ा की नमाज़ में खुत्बा नमाज़ से पहले ही है, क्योंकि चादर का पलटना खुत्बे में होता है, जो नमाज़ से पहले है। अबू दाउद की रिवायत में इस की सराहत भी है। लेकिन नमाज़ के बाद खुत्बा को बयान करने वाले रावियों की तादाद ज्यादा है। फिर ईद और कुसूफ पर कयास भी तकाजा करता है कि खुत्बा नमाज़ के बाद है।

(औनुलबारी 2/121)

बाब 6 : इमाम का बारिश के लिए हाथ उठाकर दुआ करना।

٦ - باب: رَفْعُ الإمَامِ يَدَهُ في الاسْتِسْقَاءِ

555 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बारिश मांगने की दुआ के अलावा किसी

٥٥٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كانَ النَّبيُّ ﷺ لاَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ في شَيْءٍ مِنْ دُعَائِهِ إلَّا في الاسْتِسْقَاءِ، وَإنَّهُ يَرْفَعُ حَتَّى يُرَى

بَيَاضُ إِبْطَيْهِ. [رواه البخاري: ١٠٣١]

और दुआ में अपने दोनों हाथ ऊंचे न उठाते थे। आप अपने हाथ इतने ऊंचे उठाते थे कि आपकी दोनों बगलों की सफैदी नजर आने लगती।

फायदे : इस हदीस में सिर्फ मुबालगे की हद तक हाथ उठाने की नफी है। क्योंकि बेशुमार जगहों पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुआ के वक़्त हाथ उठाना साबित है। जैसा कि इमाम बुखारी ने किताबुद-दावात में बयान किया है। नीज बारिश मांगने की दुआ में हाथ उठाने की सूरत भी आम दुआ से अलग है, इसमें हाथों की हथेलियां जमीन की तरफ हों और हथेलियों की पीठ आसमान की तरफ होनी चाहिए। (औनुलबारी, 1/122)

---

٧ باب: مَا يُقَالُ إِذَا مَطَرَتْ

बाब 7 : बारिश के वक्त क्या कहना चाहिए?

٥٥٦ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كانَ إِذَا رَأَى المَطَرَ قَالَ: (صَيِّبًا نَافِعًا). [رواه البخاري: ١٠٣٢]

556 : आइशा रजि.से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बारिश बरसती देखते तो फरमाते, ''ऐ अल्लाह फायदेमन्द पानी बरसा''।

٨ - باب: إِذَا هَبَّتِ الرِّيحُ

बाब 8 : जब आंधी चले तो क्या करना चाहिए?

٥٥٧ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتِ الرِّيَاحُ الشَّدِيدَةُ إِذَا هَبَّتْ، عُرِفَ ذٰلِكَ فِي وَجْهِ النَّبِيِّ ﷺ. [رواه البخاري: ١٠٣٤]

557: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब तेज आंधी चलती तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे पर डर के निशान दिखाई देते थे।

फायदे : आंधी के बाद अक्सर बारिश होती है। इस मुनासिबत से इमाम बुखारी ने इस हदीस को यहां बयान किया है, चूंकि कौमे आद पर आंधी का अजाब आया था, इसलिए आंधी के वक्त अल्लाह के अजाब का तसव्वुर फरमाकर घबरा जाते और घुटनों के बल गिर कर दुआ करते। (औनुलबारी, 2/125)

बाब 9 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान कि बादे सबा (पूर्वी हवा) से मेरी मदद की गई है।

٩ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ : «نُصِرتُ بِالصَّبا»

558 : अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सबा यानी पूर्वी हवा से मेरी मदद की गई है और कौमे आद को पश्चिमी हवा से बर्बाद किया गया है।

٥٥٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: عن النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (نُصِرْتُ بِالصَّبَا، وَأُهْلِكَتْ عادٌ بِالدَّبُورِ).
[رواه البخاري: ١٠٣٥]

फायदे : बादे सबा को कुबूल भी कहते हैं जो हक कुबूल करने के लिए मदद और ताईद का जरिया भी साबित होती है और खन्दक के वक्त इसका करिश्मा जाहिर हुआ, जबकि बारह हजार काफिरों ने मदीने को घेर लिया था। अल्लाह तआला ने ऐसी हवा भेजी जिससे काफिर परेशान होकर भाग निकले। (औनुलबारी, 2/126)

बाब 10 : जलजलों (भूकम्पों) और कयामत की निशानियों के बारे में जो आया है।

١٠ - باب: مَا قِيلَ فِي الزَّلاَزِلِ وَالآيَاتِ

559 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

٥٥٩ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا. عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (اللَّهُمَّ

बَارِكْ لَنَا فِي شَامِنَا وَفِي يَمَنِنَا). قَالُوا: وَفِي نَجْدِنَا؟ قَالَ: (اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَامِنَا وَفِي يَمَنِنَا قَالَ: قَالُوا: وَفِي نَجْدِنَا؟ قَالَ: (هُنَاكَ الزَّلَازِلُ وَالْفِتَنُ، وَبِهَا يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ). [رواه البخاري: ١٠٣٧]

वसल्लम ने फरमाया, ऐ अल्लाह हमारे शाम और यमन में बरकत दे, लोगों ने कहा हमारे नज्द के लिए भी बरकत की दुआ फरमायें तो आपने दोबारा कहा, ऐ अल्लाह! शाम और यमन को बरकत वाला बना दे, लोगों ने फिर कहा और हमारे नज्द में तो आपने फरमाया, वहां जलजले और फितने होंगे और शैतान का गिरोह भी वहीं होगा।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फितनों की जमीन की पहचान बतलाते वक़्त पूर्व की तरफ इशारा फरमाया, इससे मालूम होता है कि उससे मुराद इराकी नज्द है, जो फितनों की जगह है इस इलाके से मुसलमानों के अन्दर गिरोहबन्दी और इख्तिलाफात लगातार शुरू हुआ जो आज तक बाकी है। इससे मुराद नज्दे हिजाज़ नहीं, जैसा कि बिदअती कहते हैं। क्योंकि इस इलाके से एक ऐसी तहरीक उठी, जिसने खुलफा-ए-राशिदीन की याद को ताजा कर दिया, वहां से शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने सिर्फ इस्लाम की दावत की शुरूआत की, जिसके नतीजे में वहां नज्दी हुकूमत कायम हुई। इस सऊदिया की हुकूमत ने इस्लाम की बुलन्दी और मक्का मदीने के लिए ऐसे कारनामें अनजाम दिये हैं जो इस्लामी दुनिया में हमेशा याद किये जायेंगे।

---

١١ - باب: لا يَدْرِي مَتَى يَجِيءُ المَطَرُ إلَّا الله تعالىٰ

बाब 11 : अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता कि बारिश कब होगी।

٥٦٠ : وَعَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (مفاتحُ

560 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

الْغَيْبِ خَمْسٌ لاَ يَعْلَمُهَا إِلَّا آللهُ: لاَ يَعْلَمُ أَحَدٌ مَا يَكُونُ فِي غَدٍ، وَلاَ يَعْلَمُ أَحَدٌ ما يَكُونُ فِي الأَرْحَامِ، وَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ ماذَا تَكْسِبُ غَدًا، وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ، وَما يَدْرِي أَحَدٌ مَتَى يَجِيءُ المَطَرُ).

अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि गैब की चाबियां पांच हैं, जिन्हें अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता। एक यह कि कोई नहीं जानता कल क्या होगा? कोई नहीं जानता कि मां के पेट में क्या है? कोई नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा? कोई नहीं जानता कि कि वह कहां मरेगा? और (पांचवीं यह कि) कोई नहीं जानता कि बारिश कब बरसेगी?

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस से यह साबित किया है कि बारिश होने का सही इल्म सिर्फ अल्लाह तआला को है। उसके अलावा कोई नहीं जानता कि फलां दिन या फलां वक्त यकीनी तौर पर बारिश हो जायेगी। मौसम विभाग भी अपनी बनाई हुई चीजों से पहले ही अनुमान लगाता है जो गलत हो जाता है।

किताबुल कुसूफ
ग्रहण के बयान में

बाब 1 : सूरज ग्रहण के वक़्त नमाज़ का बयान।

١ - باب: الصَّلاةُ في كُسُوفِ الشَّمْسِ

561 : अबू बकरह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुये थे कि सूरज ग्रहण हुआ। आप अपनी चादर घसीटते हुए उठे और मस्जिद में दाखिल हुये। हम भी मस्जिद में आये तो आपने हमें दो रकअत नमाज़ पढ़ायी, यहां तक कि सूरज रोशन हो गया। फिर आपने फरमाया कि सूरज और चाँद किसी के मरने से ग्रहण नहीं होते। जब तुम ग्रहण देखो तो नमाज़ पढ़ो और दुआ करो, यहां तक कि अंधेरा जाता रहे, इन्हीं से एक और रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

٥٦١ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَانْكَسَفَتِ الشَّمْسُ. فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ يَجُرُّ رِدَاءَهُ حَتَّى دَخَلَ المَسْجِدَ، فَدَخَلْنَا، فَصَلَّى بِنَا رَكْعَتَيْنِ حَتَّى انْجَلَتِ الشَّمْسُ، فَقَالَ ﷺ: (إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لاَ يَنْكَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُما فَصَلُّوا وَادْعُوا، حَتَّى يُكْشَفَ ما بِكُمْ).

وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ قَالَ: (وَلٰكِنَّ ٱللهَ تَعَالَى يُخَوِّفُ بِهِمَا عِبَادَهُ).

وتكرر حديث الكسوف كثيرًا فمي رواية عَنِ المُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، يَوْمَ مَاتَ إِبْرَاهِيمُ، فَقَالَ النَّاسُ: كَسَفَتِ الشَّمْسُ لِمَوْتِ إِبْرَاهِيمَ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لاَ يَنْكَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلاَ

لِحَيَاتِهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ فَصَلُّوا وَادْعُوا اللهَ). [رواه البخاري: ١٠٤٠، ١٠٤٣، ١٠٤٨]

वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला (सूरज और चाँद) दोनों को ग्रहण करके अपने बन्दों को डराता है और डर दिलाता है। ग्रहण की हदीस कई बार रिवायत की गई है। चूनांचे मुगीरा बिना शोबा रजि. से एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी के जमाने में सूरज ग्रहण उस दिन हुआ, जिस रोज आपके चहीते लड़के इब्राहीम रजि. की वफात (मौत) हुई थी। लोगों ने खयाल किया कि इब्राहीम रजि. की वफात की वजह से सूरज ग्रहण हुआ है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि चाँद और सूरज किसी के मरने और पैदा होने से ग्रहण नहीं होते। जब तुम ग्रहण देखो तो नमाज़ पढ़ो और अल्लाह से दुआ करो।

फायदे : यह सूरज और चाँद इस जमीन से कई गुना बड़े हैं। ग्रहण के जरीये इतने बड़े आसमान में तसर्रुफ का मकसूद यह है कि गाफिल लोगों को कयामत का नजारा दिखाकर जगाया जाये। नीज अल्लाह की कुदरत भी जाहिर होती है कि अल्लाह तआला अगर बेगुनाह मखलूक को बे-नूर कर सकता है तो गुनाहों में डूबे हुए इन्सानो की पकड़ भी की जा सकती है।

(औनुलबारी, 2/132)

बाब 2 : ग्रहण के वक्त सदका करना।

٢ - بَاب: الصَّدَقَةُ فِي الكُسُوفِ

٥٦٢ : وفي رواية عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَسَفَتِ الشَّمْسُ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَصَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالنَّاسِ فَقَامَ

562 : आइशा रजि. से एक रिवायत में है, उन्होंने फरमाया कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में सूरज ग्रहण

فَأَطَالَ الْقِيَامَ، ثُمَّ رَكَعَ فَأَطَالَ الرُّكُوعَ، ثُمَّ قَامَ فَأَطَالَ الْقِيَامَ، وَهُوَ دُونَ الْقِيَامِ الأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ فَأَطَالَ الرُّكُوعَ، وَهُوَ دُونَ الرُّكُوعِ الأَوَّلِ، ثُمَّ سَجَدَ فَأَطَالَ السُّجُودَ، ثُمَّ فَعَلَ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ما فَعَلَ فِي الأُولَى، ثُمَّ انْصَرَفَ، وَقَدِ انْجَلَتِ الشَّمْسُ، فَخَطَبَ النَّاسَ، فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: (إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللهِ، لاَ يَنْخَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلاَ لِحَيَاتِهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ ذٰلِكَ فَادْعُوا اللهَ، وَكَبِّرُوا وَصَلُّوا وَتَصَدَّقُوا). ثُمَّ قَالَ: (يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ، وَاللهِ ما مِنْ أَحَدٍ أَغْيَرُ مِنَ اللهِ أَنْ يَزْنِيَ عَبْدُهُ أَوْ تَزْنِيَ أَمَتُهُ، يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ، وَاللهِ لَوْ تَعْلَمُونَ ما أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلًا وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا). [رواه البخاري: ١٠٤٤]

हुआ तो आपने लोगों को नमाज़ पढ़ाई और उस दिन बहुत लम्बा कयाम फरमाया, फिर रूकू किया तो वह भी बहुत लम्बा किया। रूकू के बाद कयाम फरमाया तो बहुत लम्बा कयाम किया। मगर पहले कयाम से कुछ कम था। फिर आपने लम्बा रूकू फरमाया जो पहले रूकू से कम था। फिर सज्दा भी बहुत लम्बा किया और दूसरी रकअत में भी ऐसा ही किया जैसा कि पहली रकअत में किया था। फिर जब नमाज़ से फारिग हुये तो सूरज साफ हो चुका था। उसके बाद आपने लोगों को खुत्बा सुनाया और अल्लाह की तारीफ के बाद फरमाया यह चाँद और सूरज अल्लाह की निशानियों में से दो निशानियां हैं। यह दोनों किसी के मरने-जीने से ग्रहण नहीं होते। जिस वक़्त तुम ऐसा देखो तो अल्लाह से दुआ करो, तकबीर कहो, नमाज़ पढ़ो और सदका खैरात करो। फिर आपने फरमाया, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत! अल्लाह से ज्यादा कोई गैरतमन्द नहीं है कि उसका गुलाम या उसकी लौण्डी बदकारी करे। ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत! अल्लाह की कसम अगर तुम उस बात को जान लो जो मैं जानता हूँ तो तुम्हें बहुत कम हंसी आये और बहुत ज्यादा रोओ।

फायदे : ग्रहण की नमाज़ की यह खासियत है कि इसकी हर दो रकअत में दो दो रूकू और दो दो कयाम हैं। अगचरे कुछ रिवायतों में तीन तीन रूकू और कुछ में चार चार और पांच पांच रूकू हर रकअत में आये हैं। मगर हर रकअत में दो,दो रूकू तमाम दूसरी रिवायतों से ज्यादा ही है। (औनुलबारी, 2/141)। तरजीह की जरूरत नहीं क्योंकि यह नमाज़ कई बार पढ़ी गई, हालात के मुताबिक जो तरीका मुनासिब हो, उसे अपनाया जा सकता है। (अलवी)। लेकिन इमाम शाफई, इमाम अहमद और इमाम बुखारी रह. का रूझान तरजीह की तरफ है। (फतहुलबारी, 532/2)

बाब 3 : ग्रहण में ''अस्सलातो जामिअतुन'' के जरीये ऐलान करना।

٣ - باب: النِّدَاءُ بِالصَّلاَةِ جَامِعَةٌ فِي الكُسُوفِ

563 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में जब सूरज ग्रहण हुआ तो यूं ऐलान किया गया, ''नमाज़ के लिए जमा हो जाओ।''

٥٦٣ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا كَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، نُودِيَ: أَنِ الصَّلاَةُ جَامِعَةٌ. [رواه البخاري: ١٠٤٥]

फायदे : ग्रहण की नमाज़ के लिए अगरचे अजान नहीं दी जाती फिर भी इसके बारे में आम तरीके से ऐलान कराने में कोई हर्ज नहीं है। ताकि यह नमाज़ खास एहतेमाम के साथ जमाअत के साथ अदा की जाये। (औनुलबारी, 2/143)

बाब 4 : ग्रहण के वक्त कब्र के अजाब से पनाह मांगना।

٤ - باب: التَّعَوُّذُ مِن عَذَابِ القَبْرِ فِي الكُسُوفِ

564 : आइशा रजि. से रिवायत है कि

٥٦٤ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ

عَنْهَا: أَنَّ يَهُودِيَّةً جاءَتْ تَسْأَلُهَا، فَقَالَتْ لَهَا: أَعاذَكِ ٱللهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. فَسَأَلَتْ عائِشَةُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ: أَيُعَذَّبُ النَّاسُ في قُبُورِهِمْ؟ فَقالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عائِذًا بِٱللهِ مِنْ ذٰلِكَ ثُمَّ ذكرت حديث الكسوف، ثم قالت في آخره: ثُمَّ أَمَرَهُمْ أَنْ يَتَعَوَّذُوا مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. [رواه البخاري: ١٠٤٩]

एक यहूदी औरत उनसे कुछ मांगने आयी। बातचीत के दौरान उसने आइशा रजि. से कहा कि अल्लाह तुम्हें कब्र के अजाब से बचाये। आइशा रजि.ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, क्या लोगों को कब्रों में अजाब होगा? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कब्र के अजाब से पनाह मांगते हुए फरमाया, हां! फिर आइशा रजि. ने ग्रहण की हदीस का जिक्र किया, जिसके आखिर में है कि फिर आपने लोगों को हुक्म दिया कि वह कब्र के अजाब से पनाह मांगे।

फायदे : ग्रहण के वक़्त कब्र के अजाब से इस मुनासिबत की बिना पर डराया जाता है कि जैसे ग्रहण के वक़्त दुनिया में अंधेरा हो जाता है, ऐसे ही गुनाहगार की कब्र में अजाब के वक़्त अंधेरा छा जाता है। यह भी मालूम हुआ कि कब्र का अजाब हक है और इस पर ईमान लाना जरूरी है। (औनुलबारी, 2/144)

---

٥ - باب: صَلاةُ الْكُسُوفِ جَماعَةً

बाब 5 : ग्रहण की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना।

٥٦٥ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا ذَكَرَ حديث الكسوف بطوله ثم قال: يَا رَسُولَ ٱللهِ، رَأَيْنَاكَ تَنَاوَلْتَ شَيْئًا في مَقَامِكَ، ثُمَّ رَأَيْنَاكَ كَعْكَعْتَ؟ قَالَ ﷺ: (إِنِّي رَأَيْتُ الْجَنَّةَ، فَتَنَاوَلْتُ عُنْقُودًا، وَلَوْ أَصَبْتُهُ

565 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि उन्होंने सूरज ग्रहण का लम्बा वाक्या बयान करने के बाद कहा कि लोगों ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हमने आपको देखा कि

لأَكَلْتُمْ مِنْهُ ما بَقِيَتِ ٱلدُّنْيَا، وَأُرِيتُ النَّارَ، فَلَمْ أَرَ مَنْظَرًا كَالْيَوْمِ قَطُّ أَفْظَعَ، وَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ). قَالُوا: بِمَ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (بِكُفْرِهِنَّ). قِيلَ: يَكْفُرْنَ بِٱللهِ؟. قَالَ: (يَكْفُرْنَ الْعَشِيرَ، وَيَكْفُرْنَ الإِحْسَانَ، لَوْ أَحْسَنْتَ إِلَى إِحْدَاهُنَّ الدَّهْرَ كُلَّهُ، ثُمَّ رَأَتْ مِنْكَ شَيْئًا، قَالَتْ: ما رَأَيْتُ مِنْكَ خَيْرًا قَطُّ). [رواه البخاري: ١٠٥٢]

आपने अपनी जगह खड़े खड़े कोई चीज हाथ में ली, फिर हमने आपको पीछे हटते हुये देखा। इस पर आपने फरमाया कि मैंने जन्नत देखी थी। और एक अंगूर के गुच्छे की तरफ हाथ बढ़ाया था। अगर मैं वह ले आता तो तुम रहती दुनिया तक उसे खाते रहते। उसके बाद मुझे जहन्नम दिखाई गई, मैंने आज तक उससे ज्यादा डरावना नजारा नहीं देखा। पूरे दोजख में ज्यादातर औरतों की तादाद देखी। लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसकी क्या वजह है? आपने फरमाया कि इसकी वजह उनकी नाशुक्री है। कहा गया, क्या अल्लाह की नाशुक्री करती हैं? फरमाया, नहीं बल्कि वह अपने शौहर की नाशुक्री करती हैं और एहसान नहीं मानती। अगर तुम किसी औरत के साथ उम्र भर एहसान करो और फिर इत्तिफाक से तुम्हारी तरफ से कोई बुरी बात देखे तो फौरन कह देगी कि मैंने तुझ से कभी कोई भलाई देखी ही नहीं।

फ़ायदे : मालूम हुआ कि ग्रहण के वक़्त नमाज़ का जमाअत के साथ एहतेमाम करना चाहिए और अगर मुकर्रर इमाम न हो तो कोई भी इल्म वाला इस काम को अंजाम दे सकता है।

(औनुलबारी, 2/148)

बाब 6 : जिसने ग्रहण के वक़्त गुलाम आजाद करना बेहतर अमल समझा।

٦ - بَاب: مَن أَحَبَّ العَتَاقَةَ فِي كُسُوفِ الشَّمْسِ

566 : असमा बिन्ते अबू बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरज ग्रहण के वक़्त गुलाम आजाद करने का हुक्म फरमाया था।

٥٦٦ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: لَقَدْ أَمَرَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ بِالْعَتَاقَةِ فِي كُسُوفِ ٱلشَّمْسِ. [رواه البخاري: ١٠٥٤]

फायदे : जिस इन्सान में गुलाम आजाद करने की हिम्मत न हो, उसे चाहिए कि इस आम हदीस पर अमल करे, जिसमें है कि आग से बचो। अगरचे खुजूर का एक टुकड़ा ही सदका करना पड़े, बहरहाल ऐसे वक़्त सदका और खैरात करना एक पसन्दीदा काम है। (औनुलबारी, 1/149)

बाब 7 : सूरज ग्रहण के वक़्त अल्लाह को याद करना।

٧ - باب: الذِّكْرُ فِي الْكُسُوفِ

567 : अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार सूरज ग्रहण हुआ तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम डर कर खड़े हो गये। आप घबराये कि कहीं कयामत न हो, फिर मस्जिद में तशरीफ लाये और इतने लम्बे कयाम, रूकू और सज्दों के साथ आपने नमाज़ पढ़ाई कि इतनी लम्बी नमाज़ पढ़ाते मैंने आपको कभी नहीं देखा था। फिर आपने फरमाया कि यह निशानियां हैं जो अल्लाह तआला अपने बन्दों को

٥٦٧ : عَنْ أَبِي مُوسَىٰ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَسَفَتِ ٱلشَّمْسُ، فَقَامَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فَزِعًا، يَخْشَى أَنْ تَكُونَ ٱلسَّاعَةُ، فَأَتَى ٱلْمَسْجِدَ، فَصَلَّى بِأَطْوَلِ قِيَامٍ وَرُكُوعٍ وَسُجُودٍ رَأَيْتُهُ قَطُّ يَفْعَلُهُ، وَقَالَ: (هٰذِهِ ٱلآيَاتُ ٱلَّتِي يُرْسِلُ ٱللهُ، لَا تَكُونُ لِمَوْتِ أَحَدٍ، وَلَا لِحَيَاتِهِ، وَلٰكِنْ يُخَوِّفُ ٱللهُ بِهَا عِبَادَهُ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ شَيْئًا مِنْ ذٰلِكَ، فَافْزَعُوا إِلَىٰ ذِكْرِهِ وَدُعَائِهِ وَٱسْتِغْفَارِهِ). [رواه البخاري: ١٠٥٩]

डराने के लिए भेजता है। नीज यह किसी के मरने जीने की वजह से नहीं होतीं। इसलिए जब तुम ऐसा देखो तो अल्लाह का जिक्र करो और दुआयें और भी खूब करो।

फायदे : कयामत आने की मिसाल रावी की तरफ से है। गोया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे डरते जैसे कोई कयामत के आ जाने से डरता है, वरना आप जानते थे कि मेरी मौजूदगी में कयामत नहीं आयेगी। फिर भी ऐसी हालत में माफी मांगनी चाहिए, क्योंकि मुसीबतों के टालने के लिए यह सबसे अच्छा नुस्खा है। (औनुलबारी, 2/151)

बाब 8 : ग्रहण की नमाज़ में जोर से किरअत करना।

٨ - باب: الجَهْرُ بِالقِرَاءةِ بِالكُسُوفِ

568 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुसूफ की नमाज में ऊंची आवाज में किरअत फरमायी और जब किरअत से फारिग हुये तो अल्लाहु अकबर कहकर रूकू फरमाया और जब रूकू से सर उठाया तो कहा, "समिअल्लाहु लिमन हमिदा रब्बना व-लकल हम्द"। फिर दोबारा किरअत शुरू की। आपने कुसूफ की नमाज में ही ऐसा किया। अलगर्ज इस नमाज़ की दो रकअतों में चार रूकू और चार सज्दे फरमाये।

٥٦٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَهَرَ النَّبِيُّ ﷺ فِي صَلاَةِ الخُسُوفِ بِقِرَاءَتِهِ، فَإِذَا فَرَغَ مِنْ قِرَاءَتِهِ كَبَّرَ فَرَكَعَ، وَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرَّكْعَةِ قَالَ: (سَمِعَ ٱللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ). ثُمَّ يُعَاوِدُ القِرَاءَةَ فِي صَلاَةِ الكُسُوفِ، أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ فِي رَكْعَتَيْنِ، وَأَرْبَعَ سَجَدَاتٍ. [رواه البخاري: ١٠٦٥]

फायदे : कुछ ने यह मसला इख्तियार किया कि तेज आवाज से किरअत

चाँद ग्रहण के वक़्त थी, हालांकि एक रिवायत में है कि तेज आवाज से किरअत का एहतेमाम सूरज ग्रहण के वक़्त हुआ था। फिर भी ग्रहण के वक़्त ऊंची आवाज में किरअत करनी चाहिए।
(औनुलबारी, 2/151)

किताबो सुजूदिलकुरआन

तिलावत का सज्दा और उसका तरीका

١ - باب: مَا جَاءَ فِي سُجُودِ القُرآن وسُنَّتِهَا

बाब 1 : कुरआन के सज्दों और उनके तरीकों के बारे में जो आया है।

٥٦٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَرَأَ النَّبِيُّ ﷺ النَّجْمَ بِمَكَّةَ، فَسَجَدَ فِيهَا وَسَجَدَ مَنْ مَعَهُ غَيْرَ شَيْخٍ، أَخَذَ كَفًّا مِنْ حَصًى، أَوْ تُرَابٍ، فَرَفَعَهُ إِلَى جَبْهَتِهِ، وَقَالَ: يَكْفِينِي هٰذَا، فَرَأَيْتُهُ بَعْدَ ذٰلِكَ قُتِلَ كَافِرًا. [رواه البخاري:

569 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा में सूरा नज्म तिलावत की तो सज्दा फरमाया, आपके साथ जो लोग थे, उन सबने सज्दा किया, एक बूढ़े आदमी के अलावा, कि उसने एक मुट्ठी भर कंकरियाँ या मिट्टी लेकर अपनी पेशानी तक उठायी और कहने लगा, मुझे यही काफी है। उसके बाद मैंने उसे देखा कि वह कुफ्र की हालत में मारा गया।

फायदे : तिलावत के सज्दे ज्यादातर इमामों के नजदीक सुन्नत है। कुरआन करीम में अलग अलग जगहों पर तिलावत के पन्द्रह सज्दे हैं और तिलावत के सज्दे में यह दुआ पढ़नी चाहिए ''सजदा वजहिया लिल्लजी खलकहू व शक्का समअहू व बसरहू बिहौलेही व कुव्वतेही'' रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब सूरा -ए-नज्म की तिलावत फरमायी तो मुश्रिक इस कद्र डरे

कि मुसलमानों के साथ वह भी सज्दे में गिर गये। (अल्लाह बेहतर जानने वाला है)

बाब 2 : सूरा ''सॉद'' का सज्दा।

٢ - باب: سَجْدَةُ «ص»

570 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि सूरा ''सॉद'' का सज्दा जरूरी नहीं है, अलबत्ता मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसमें सज्दा करते देखा है।

٥٧٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: «ص». لَيْسَت مِنْ عَزَائِمِ السُّجُودِ، وَقَدْ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَسْجُدُ فِيهَا. [رواه البخاري: ١٠٦٩]

फायदे : निसाई में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सॉद के सज्दे के बारे में फरमाया, हजरत दाउद अलैहि. का यह सज्दा तौबा के लिए था और उनकी पैरवी में हम शुक्र के तौर पर सज्दा करते हैं। (औनुलबारी, 2/157)

बाब 3 : मुसलमानों का मुश्रिकों के साथ सज्दा करना, हालांकि मुश्रिक नापाक और बेवुजू होता है।

٣ - باب: سُجُودُ المُسْلِمِينَ مَعَ المُشْرِكِينَ وَالمُشْرِكُ نَجَسٌ لَيسَ لَهُ وُضُوءٌ

571 : इब्ने अब्बास रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नज्म में सज्दा फरमाया जो अभी अभी अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. की रिवायत (569) गुजर चुकी है। इस रिवायत में इतना इजाफा है कि आपके साथ उस वक्त मुसलमान, मुश्रिकों, जिन्नों और इन्सानों ने सज्दा किया।

٥٧١ : وحديثه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ سَجَدَ بِالنَّجْمِ، تقدَّم قريبًا من رواية ابن مسعودٍ وزاد في هذه الرواية: وَسَجَدَ مَعَهُ المُسْلِمُونَ وَالمُشْرِكُونَ، وَالْجِنُّ وَالإِنْسُ. [رواه البخاري: ١٠٧١]

फायदे : इमाम बुखारी का मानना यह है कि किसी परेशानी की वजह

से सज्दा-ए-तिलावत वुजू के बगैर किया जा सकता है। (औनुलबारी, 2/554)। लेकिन इमाम साहब का यह इस्तिदलाल सही नहीं है। (अल्लाह बेहतर जानता है।)

बाब 4 : जिसने सज्दे की आयत पढ़ी मगर सज्दा न किया।

٤ - باب: مَنْ قَرأَ السَّجْدَةَ وَلَم يَسْجُدْ

572 : जैद बिन साबित रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने सूरा नज्म तिलावत की तो आप हजरात ने उसमें सज्दा नहीं फरमाया।

٥٧٢ : عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ قَرَأَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ: ﴿وَالنَّجْمِ﴾. فَلَمْ يَسْجُدْ فِيهَا. [رواه البخاري: ١٠٧٣]

फायदे : सज्दा न करने की कई वजहों का इमकान हैं, बेहतर बात यह है कि जाइज होने के लिए ऐसा किया गया है। यानी इसका छोड़ना भी जाइज है। (औनुलबारी, 2/559)

बाब 5 : "इज़स्समाउनशक्कत" का सज्दा।

٥ - باب: سَجْدَةُ ﴿إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ﴾

573 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने "इज़रस्समाउनशक्कत" पढ़ी तो उसमें सज्दा किया। उसके बारे में उनसे पूछा गया तो कहने लगे कि अगर मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (इसमें) सज्दा करते न देखता तो मैं भी सज्दा न करता।

٥٧٣ : عن أبي هريرة رضي الله عنه أنّه قَرَأَ: ﴿إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ﴾. فَسَجَدَ بِهَا. فقيل له في ذلك: قَالَ: لَوْ لَمْ أَرَ النَّبِيَّ ﷺ يَسْجُدُ لَمْ أَسْجُدْ. [رواه البخاري: ١٠٧٤]

फायदे : कुछ लोग नमाज़ में सज्दे की आयत की तिलावत बुरा मानते थे। हजरत अबू हुरैरा रजि. पर ऐतराज की यही वजह थी।

हजरत अबू हुरैरा रजि. के जवाब से इस ऐतराज की कलई खुल गई। (औनुलबारी 2/160)

बाब 6 : जो आदमी भीड़ की वजह से सज्दा तिलावत के लिए जगह न पाये।

٦ - باب: مَنْ لَمْ يَجِدْ مَوْضِعاً لِلسُّجُودِ مِنَ الزِّحَامِ

574 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे सामने सज्दे वाली सूरत तिलावत फरमाते तो आप सज्दा करते और हम भी सज्दा करते, यहां तक कि हममें से किसी को अपनी पेशानी रखने के लिए जगह न मिलती थी।

٥٧٤ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ عَلَيْنَا السُّورَةَ فِيهَا السَّجْدَةُ، فَيَسْجُدُ وَنَسْجُدُ، حَتَّى مَا يَجِدُ أَحَدُنَا مَكَانًا لِمَوْضِعِ جَبْهَتِهِ. [رواه البخاري: ١٠٧٩]

फायदे : इसका मतलब यह है कि सज्दा तिलावत की अदायगी फौरन जरूरी नहीं। इसे बाद में अदा किया जा सकता है। अगर हालात ऐसे हो कि सज्दे के लिए गुंजाईश न हो तो उसे बाद में भी अदा किया जा सकता है।

किताबो तकसीरिस्सलात
कसर की नमाज़ के बयान में

चार रकअत वाली नमाज को दो-दो रकअत करके पढ़ने को कसर कहते हैं।

बाब 1 : कसर की नमाज़ और मुसाफिर कितने वक़्त तक कसर कर सकता है।

١ - باب: مَا جَاء فِي التَّقصِيرِ وَكَم يُقِيمُ حَتَّى يَقصُرَ

575 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफर (फतह मक्का) में उन्नीस दिन ठहरे और इस अरसे में कसर करते रहे।

٥٧٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنهُمَا قَالَ: أَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ تِسْعَةَ عَشَرَ يَقْصُرُ. [رواه البخاري: ١٠٨٠]

फायदे : हिजरत के चौथे साल कसर की इजाजत नाजिल हुई, मगरिब और फज्र की फर्ज नमाज़ में कसर नहीं है और न ही उस सफर में कसर की इजाजत है जो गुनाह की नियत से किया जाये। सुन्नत की पैरवी का तकाजा यही है कि सफर के बीच कसर की नमाज़ पढ़ी जाये, अगरचे पूरी जाइज हैं फिर भी अफजल कसर है, हदीस में जिस सफर का जिक्र है, वह फतह मक्का का है, चूंकि यह हंगामी दिन थे और फुरस्त के लम्हे हासिल होने का इल्म न था। इसलिए इन दिनों में कसर करते रहें यकीनी

इकामत पर चार दिन तक के लिए कसर की इजाजत है। बशर्ते कि सफर की दूरी भी कम से कम नौ मील हो।

576: अनस रजि. से रिवायत है कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीना से मक्का तक गये। आप इस दौरान दो दो रकअत पढ़ते रहे, यहां तक कि हम लोग मदीना लौट आये। आप से पूछा गया कि आप मक्का में कितने दिन ठहरे, आपने फरमाया कि हम वहां दस दिन ठहरे थे।

٥٧٦ : عَنْ أَنسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ مِنَ الْمَدِينَةِ إِلَى مَكَّةَ، فَكَانَ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ، حَتَّى رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ. قُلْتُ: أَقَمْتُمْ بِمَكَّةَ شَيْئًا؟ قَالَ: أَقَمْنَا بِهَا عَشْرًا. [رواه البخاري: ١٠٨١]

फायदे : इस हदीस में जिस सफर का बयान है, वह आखरी हज का सफर है। आप आठ जुलहिज्जा तक मक्का में ठहरे और कसर करते रहे, फिर आठ जुलहिज्जा को मिना रवाना हुये। जुहर की नमाज़ आपने मिना में अदा की, मालूम हुआ कि ठहरने की मुद्दत में चार दिन तक नमाज़ को कसर किया जा सकता है। (औनुलबारी, 2/162)। आप मक्का में चार जुलहिज्जा को पहुंचे थे।

बाब 2 : मिना के मकाम में नमाज़ (कसर)

٢ - باب: الصَّلاَةُ بِمِنًى

577 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबू बकर सिद्दीक और उमर रजि. के साथ मिना में दो दो रकअत पढ़ी और उसमान के साथ भी शुरू

٥٧٧ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِمِنًى رَكْعَتَيْنِ، وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ، وَمَعَ عُثْمَانَ صَدْرًا مِنْ إِمَارَتِهِ، ثُمَّ أَتَمَّهَا. [رواه البخاري: ١٠٨٢]

खिलाफत में दो ही रकअत पढ़ी, उसके बाद उन्होंने पूरी नमाज़ पढ़ना शुरू कर दी।

फायदे : हज के दिनों में मिना, अरफात, मुजदलफा में नमाज़ कसर ही पढ़ी जाये, हज के सफर की बिना पर यह छूट हर हाजी के लिए है। हजरत उसमान रजि. ने एक खास मजबूरी की बिना पर नमाज़ पूरी पढ़ना शुरू कर दी थी। अगरचे हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. ने इस पर अपनी सख्त नाराजगी जाहिर की थी, जिसका जिक्र अगली रिवायत में है।

578 : हारिसा बिन वहब रजि. से रिवायत है, उन्होने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अमन की हालत में मिना में दो रकअत नमाज़ (कसर) पढ़ायी।

٥٧٨ : عَنْ حارِثَةَ بْنِ وَهْبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّى بِنَا النَّبِيُّ ﷺ، آمَنَ ما كانَ، بِمِنًى رَكْعَتَيْنِ. [رواه البخاري: ١٠٨٣]

फायदे : अगरचे कुरआन में सफर में कसर करने को हंगामी हालत के साथ बयान किया गया है, फिर भी इस हदीस से साबित होता है कि कि सफर के दौरान अमन की हालत में भी कसर की जा सकती है। (औनुलबारी, 2/167)

579 : इब्ने मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने बताया कि उसमान रजि. ने मिना में चार रकअत पढ़ायी हैं तो उन्होंने "इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन" पढ़ा और फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

٥٧٩ : عَنِ ٱبْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، لَمَّا قِيلَ له: صَلَّى بِنَا عُثْمانُ ابْنُ عَفَّانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ بِمِنًى أَرْبَعَ رَكَعاتٍ، ٱسْتَرْجَعَ، ثُمَّ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ بِمِنًى رَكْعَتَيْنِ، وَصَلَّيْتُ مَعَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ بِمِنًى رَكْعَتَيْنِ، وَصَلَّيْتُ مَعَ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ بِمِنًى

رَكْعَتَيْنِ، فَلَيْتَ حَظِّي مِنْ أَرْبَعِ رَكَعَاتٍ رَكْعَتَانِ مُتَقَبَّلَتَانِ. [رواه البخاري: ١٠٨٤]

वसल्लम के साथ मिना में दो रकअतें पढ़ीं और अबू बकर रजि. और उमर रजि. के साथ भी मिना में दो दो रकअतें पढ़ी, काश कि चार रकअतों के बजाये मेरे हिस्से में वही दो मकबूल रकअतें आयें।

फायदे : रिवायत से यह साबित नहीं होता कि हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. के नजदीक सफर के दौरान कसर करना वाजिब है, क्योंकि अगर ऐसा होता तो ''इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन'' पढ़ने को काफी नहीं समझते। दूसरी रिवायतों के पेशे नजर उनसे जब रिवायत किया गया कि आपने चार रकअत क्यों पढ़ी हैं? तो जवाब दिया कि ऐसे मौके पर इख्तिलाफ करना बुराई का सबब है, अगर सफर के दौरान पूरी नमाज़ पढना बिदअत होता तो बिदअत से इख्तिलाफ करना तो बरकत का सबब है।
(औनुलबारी, 2/168)

٣ - باب: فِي كَمْ يَقْصُرُ الصَّلاَةَ؟

बाब 3 : कितनी दूरी पर नमाज़ को कसर किया जाये।

٥٨٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ يَحِلُّ لاِمْرَأَةٍ، تُؤْمِنُ بِٱللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ، أَنْ تُسَافِرَ مَسِيرَةَ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ لَيْسَ مَعَهَا حُرْمَةٌ). [رواه البخاري: ١٠٨٨]

580 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो औरत अल्लाह पर ईमान और कयामत के दिन पर यकीन रखती है, उसे जाइज नहीं कि एक दिन रात की दूरी इस हाल में तय करे कि उसके साथ ऐसा आदमी न हो, जिससे उसका निकाह हराम हो।

फायदे : इससे इमाम बुखारी ने यह साबित किया कि कसर के लिए दूरी का कम से कम इतना होना जरूरी है जो एक दिन और रात में तय हो सके, इस मसले में लगभग बीस कौल हैं, बेहतर बात यह है कि हर सफर में कसर की जा सकती है, जिसे आम तौर पर सफर कहा जाता है, हदीस में इसकी हद तीन फरसंग से की गई है, जो नौ मील के बराबर है। (और अल्लाह बेहतर जानता है।)

बाब 4 : मगरिब की नमाज़ सफर में भी तीन रकअत पढ़ें।

٤ - باب: يُصَلِّي المَغرِبَ ثَلاَثاً فِي السَّفَرِ

581 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि जब आपको सफर की जल्दी होती तो मगरिब की नमाज देर करके तीन रकअत पढ़ते थे। फिर सलाम फेर कर कुछ देर ठहरते, उसके बाद इशा की नमाज़ के लिए उठते और उसकी दो रकअतें पढ़कर सलाम फेर देते थे और इशा के बाद निफ्ल नमाज़ न पढ़ते, फिर आधी रात को उठते और तहज्जुद की नमाज अदा फरमाते।

٥٨١ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ إِذَا أَعْجَلَهُ السَّيْرُ يُؤَخِّرُ المَغْرِبَ فَيُصَلِّيهَا ثَلاَثاً، ثُمَّ يُسَلِّمُ، ثُمَّ قَلَّمَا يَلْبَثُ حَتَّى يُقِيمَ العِشَاءَ، فَيُصَلِّيهَا رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ يُسَلِّمُ، وَلاَ يُسَبِّحُ بَعْدَ العِشَاءِ، حَتَّى يَقُومَ مِنْ جَوْفِ اللَّيْلِ. [رواه البخاري: ١٠٩٢]

फायदे : मतलब यह है कि मगरिब की नमाज़ को सफर में कसर की बजाये पूरा अदा किया जाये, इस पर उलमा का इत्तिफाक है। (औनुलबारी, 2/171)

582 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि

٥٨٢ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सवारी की हालत में बगैर किब्ला रूख हुये नफ़्ल नमाज़ पढ़ लेते थे।

كان يُصلي التطوّعَ وَهُوَ رَاكِبٌ في غَيْرِ القِبْلَةِ. [رواه البخاري: ١٠٩٤]

फायदे : इस हदीस पर इमाम बुखारी ने यूँ उनवान कायम किया है, नफ़्ल नमाज़ सवारी पर अदा करना'' अगरचे जानवर का रूख किब्ला की तरफ न हो, इमाम साहब की किताबुल मगाजी में खुलासे के मुताबिक यह वाक्या अनमार की जंग का है, मदीना से जाने के लिए किब्ला बायीं तरफ रहता है। (औनुलबारी, 2/172)

बाब 5 : गधे पर (सवार होकर) नफ़्ल नमाज़ पढ़ना।

٥ - باب: صَلاةُ التَّطوُّعِ عَلَى الحِمَارِ

583 : अनस रजि. से रिवायत है कि उन्होंने गधे पर सवारी की हालत में नमाज़ पढ़ी, जबकि उनके किब्ले का रूख बायीं तरफ था, जब उनसे पूछा गया क्या आप किब्ले के खिलाफ नमाज़ पढ़ते हैं तो उन्होंने कहा कि अगर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसा करते न देखता तो कभी ऐसा न करता।

٥٨٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ صَلَّى عَلَى حِمَارٍ وَوَجْهُهُ عَنْ يَسَارِ القِبْلَةِ، فَقِيلَ لَه: تُصَلِّي لِغَيْرِ القِبْلَةِ؟ فَقَالَ: لَوْلاَ أَنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَعَلَهُ لَمْ أَفْعَلْهُ. [رواه البخاري: ١١٠٠]

फायदे : नफ़्ल नमाज़ के लिए भी जरूरी है कि शुरू करते वक़्त मुंह किब्ला रूख हो, बाद में वह सवारी जिधर भी रूख करे नफ़्ल नमाज़ पढ़ना जाइज है।

बाब 6 : जो सफर में नमाज़ के बाद नफ़्ल नमाज़ नहीं पढ़ता।

٦ - باب: مَنْ لَم يَتَطوَّعْ في السَّفَرِ دُبُرَ الصَّلاةِ

584 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं सफर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहा। मैंने कभी आपको सफर में नफ्ल नमाज़ पढ़ते नहीं देखा और अल्लाह तआला का इरशाद है, ''यकीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेहतरीन नमूना हैं।

٥٨٤ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: صَحِبْتُ النَّبِيَّ ﷺ، فَلَمْ أَرَهُ يُسَبِّحُ فِي السَّفَرِ وَقَالَ ٱللهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ ٱللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾. [رواه البخاري: ١١٠١]

फायदे : मालूम हुआ कि सफर में पाचों वक्त की नमाज़ में दो रकअत ही काफी है, सुन्नत न पढ़ना भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीका है। (औनुलबारी, 2/173)

बाब 7 : जो सफर में नमाज़ से पहले या बाद की सुन्नतों के अलावा दूसरे नफ्ल पढ़ता है।

٧ - باب: مَنْ تَطَوَّعَ فِي السَّفَرِ فِي غَيْرِ دُبُرِ الصَّلاةِ وَقَبْلَها

585 : आमिर बिन रबिआ रजि. से रिवायत है, उन्होंने देखा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को अपनी सवारी पर नफ्ल नमाज़ पढ़ते थे। सवारी जिधर चाहती आपको ले जाती।

٥٨٥ : عَنْ عامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى السُّبْحَةَ بِاللَّيْلِ فِي السَّفَرِ، عَلَى ظَهْرِ رَاحِلَتِهِ حَيْثُ تَوَجَّهَتْ بِهِ. [رواه البخاري: ١١٠٤]

फायदे : इमाम बुखारी का मतलब यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्ज नमाज़ों से पहले और बाद की हमेशा पढ़ी जाने वाली सुन्नतें नहीं पढ़ी, हां दूसरी नफ्ल नमाजें जैसे इश्राक वगैरह पढ़ना साबित है, इसी तरह फज्र की नमाज़ की दो सुन्नतें और वित्र पढ़ना भी साबित है। (औनुलबारी, 22174)

बाब 8 : सफर में मगरिब और इशा को मिलाकर पढ़ना।

٨ - باب: الجَمْعُ فِي السَّفَرِ بَيْنَ المَغْرِبِ وَالعِشَاءِ

586 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफर में जुहर और असर की नमाज़ को और मगरिब और इशा की नमाज़ को मिलाकर पढ़ लेते थे।

٥٨٦ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَجْمَعُ بَيْنَ صَلاةِ الظُّهْرِ وَالعَصْرِ إِذَا كَانَ عَلَى ظَهْرِ سَيْرٍ، وَيَجْمَعُ بَيْنَ المَغْرِبِ وَالعِشَاءِ [رواه البخاري: ١١٠٧].

फायदे : जुहर के वक्त असर और मगरिब के वक्त इशा पढ़ लेने को जमा तकदीम और असर के वक्त जुहर, इशा के वक्त मगरिब पढ़ने को जमा ताखीर कहते हैं। सफर में जैसा भी मौका नसीब हो दो नमाजों को जमा किया जा सकता है।

बाब 9 : जो आदमी बैठकर नमाज़ पढ़ने की ताकत न रखता हो, वह पहलू के बल लेटकर नमाज़ पढ़े।

٩ - باب: إِذَا لَمْ يُطِقْ قَاعِدًا صَلَّى عَلَى جَنْبٍ

587 : इमरान बिन हुसैन रजि. से रिवायत है, उन्होंने बताया कि मुझे बवासीर थी तो मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऐसी हालत में नमाज़ पढ़ने के बारे में पूछा, आपने फरमाया कि खड़े होकर नमाज़ पढ़ो, अगर ऐसा न हो सके तो बैठकर अगर यह भी न हो सके तो पहलू के बल लेट कर नमाज़ अदा करो।

٥٨٧ : عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتْ بِي بَوَاسِيرُ، فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الصَّلاَةِ، فَقَالَ: (صَلِّ قَائِمًا، فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَقَاعِدًا، فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَعَلَى جَنْبٍ). [رواه البخاري: ١١١٧]

फायदे : बैठकर और लेटकर नमाज़ पढ़ने से सवाब में जरूर फर्क आ जाता है, क्योंकि हदीस के मुताबिक बैठकर नमाज़ पढ़ने वाले को

खड़े होकर नमाज़ पढ़ने वाले से आधा सवाब मिलता है। लेटकर नमाज़ पढ़ने वाले को बैठकर नमाज़ पढ़ने वाले से आधा सवाब मिलता है। नोटः यह उस वक़्त है जब इन्सान बिना किसी बीमारी के बैठकर नमाज़ पढ़े और फर्ज नमाज़ बगैर मजबूरी के बैठकर पढ़ना जाइज नहीं है। (अलवी)

बाब 10 : जब कोई बैठकर नमाज़ शुरू करे, फिर नमाज़ के बीच अच्छा हो जाये या उसे फायदा मालूम हो तो बाकी नमाज़ (खड़े होकर) पूरी करे।

١٠ - باب: إِذَا صَلَّى قَاعِدًا ثُمَّ صَحَّ أَوْ وَجَدَ خِفَّةً تَمَّمَ مَا بَقِيَ

588 : आइशा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तहज्जुद की नमाज कभी बैठकर पढ़ते नहीं देखा, लेकिन जब आप बूढ़े हो गये तो आप बैठकर किरअत फरमाते, फिर जब रूकू करना चाहते तो खड़े होकर तकरीबन तीस चालीस आयतें पढ़कर रूकू फरमाते।

٥٨٨ : عَنْ عَائِشَةَ، أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا لَمْ تَرَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يُصَلِّي صَلاَةَ اللَّيْلِ قَاعِدًا قَطُّ حَتَّى أَسَنَّ، فَكَانَ يَقْرَأُ قَاعِدًا، حَتَّى إِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ قَامَ، فَقَرَأَ نَحْوًا مِنْ ثَلاَثِينَ آيَةً أَوْ أَرْبَعِينَ آيَةً، ثُمَّ رَكَعَ. [رواه البخاري: ١١١٨]

फायदे : इससे और अगली हदीस से यह साबित हुआ कि बैठकर नमाज़ शुरू करने से यह लाजिम नहीं आता कि सारी नमाज़ बैठकर पढ़ें, क्योंकि जैसा बैठकर शुरू करने के बाद खड़ा होना सही है, इसी तरह खड़े होकर शुरू करने के बाद बैठ जाना भी जाइज है। दोनों में कोई फर्क नहीं है। (औनुलबारी, 2/179)

589 : आइशा रजि. से ही एक रिवायत में इजाफा भी आया है कि आप दूसरी रकअत में भी ऐसा ही करते और नमाज़ से फारिग हो जाते और मुझे जगा हुआ देखते तो मेरे साथ बातचीत करते और अगर मैं नींद में होती तो आप भी लेट जाते।

٥٨٩ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا في رواية: ثُمَّ يَفْعَلُ في الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ذٰلِكَ، فَإِذَا قَضَى صَلاَتَهُ نَظَرَ: فَإِنْ كُنْتُ يَقْظَى تَحَدَّثَ مَعِي، وَإِنْ كُنْتُ نَائِمَةً اضْطَجَعَ. [رواه البخاري: ١١١٩]

किताबुत्तहज्जुद
तहज्जुद के बयान में

बाब 1 : रात के वक़्त तहज्जुद की नमाज़ पढ़ना।

١ - باب: التَهَجُّدُ بِاللَّيلِ

590 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को तहज्जुद पढ़ने के लिए उठते तो यह दुआ पढ़ते थे, ऐ अल्लाह! तू ही तारीफ के लायक है, तू ही आसमान और जमीन और जो इनमें है, इन्हें संभालने वाला है, तेरे ही लिए तारीफ है, तेरे ही लिए जमीन और आसमान और जो कुछ इनमें है, उनकी बादशाहत है। तेरे ही लिए तारीफ है, तू ही आसमान और जमीन और जो चीजें इनमें हैं, उन सब का नूर है। तू ही हर तरह की तारीफ के लायक है, तू ही आसमान और जमीन और जो इनमें है सब का बादशाह है, तेरा

٥٩٠ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنهُمَا قَالَ: كانَ النَّبِيُّ ﷺ إذَا قامَ مِنَ اللَّيلِ يَتَهَجَّدُ قَالَ: (اللَّهُمَّ لَكَ الحَمْدُ، أَنتَ قَيِّمُ السَّماوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الحَمْدُ، لَكَ مُلْكُ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الحَمْدُ، أَنتَ نُورُ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الحَمْدُ أَنتَ مَلِكُ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ، وَلَكَ الحَمْدُ، أَنتَ الحَقُّ، وَوَعْدُكَ الحَقُّ، وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ، وَقَوْلُكَ حَقٌّ، وَالجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالنَّبِيُّونَ حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ، اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ، وَبِكَ خاصَمْتُ، وَإِلَيْكَ حاكَمْتُ، فَاغْفِرْ لِي ما قَدَّمْتُ وَما أَخَّرْتُ، وَما أَسْرَرْتُ وَما أَعْلَنْتُ، أَنتَ المُقَدِّمُ، وَأَنتَ المُؤَخِّرُ، لاَ إِلٰهَ إِلَّا أَنتَ..

أَوْ: لاَ إِلَهَ غَيْرُكَ. [رواه البخاري: ١١٢٠]

वादा भी सच्चा है, तेरी मुलाकात यकीनी और तेरी बात बरहक है, जन्नत और दोजख बरहक और तमाम नबी भी बरहक और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खासकर सच्चे हैं और कयामत बरहक है। ऐ अल्लाह मैं तेरा फरमां बरदार और तुझ पर ईमान लाया हूँ, तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ और तेरी ही तरफ लोटता हूँ, तेरी ही मदद से दुश्मनों से झगड़ता हूं और तुझ ही से फैसला चाहता हूँ, तू मेरे अगले पिछले, छिपे और खुले गुनाहों को माफ करदे, तू ही पहले था और तू ही आखिर में होगा। तेरे अलावा कोई भी इबादत के लायक नहीं।

फायदे : पांचों फर्ज नमाज़ के बाद तहज्जुद की नमाज़ की बड़ी अहमियत है, जो पिछली रात अदा की जाती है और इसकी आम तौर पर ग्यारह रकअतें हैं, जिनमें आठ रकअतें, दो दो सलाम से अदा की जाती हैं और आखिर में तीन वित्र पढ़े जाते हैं, यही नमाज़ रमज़ान के महीने में तरावीह के नाम से जानी जाती है, हदीस में गुजरी हुई दुआ को तहज्जुद के लिए उठते ही पढ़ लिया जाये। (अल्लाह बेहतर जानता है)

बाब 2 : रात की नमाज़ की फज़ीलत।

٢ - باب: فَضْلُ قِيَامِ اللَّيْلِ

591 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी में जब कोई ख्वाब देखता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करता था, मुझे भी तमन्ना हुई कि मैं कोई ख्वाब

٥٩١ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ الرَّجُلُ فِي حَيَاةِ النَّبِيِّ ﷺ إِذَا رَأَى رُؤْيَا قَصَّهَا عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَتَمَنَّيْتُ أَنْ أَرَى رُؤْيَا، فَأَقُصَّهَا عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَكُنْتُ غُلاَمًا شَابًّا، وَكُنْتُ أَنَامُ فِي الْمَسْجِدِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَرَأَيْتُ فِي النَّوْمِ كَأَنَّ مَلَكَيْنِ

أَخَذَانِي فَذَهَبَا بِي إِلَى النَّارِ، فَإِذَا هِيَ مَطْوِيَّةٌ كَطَيِّ الْبِئْرِ، وَإِذَا لَهَا قَرْنَانِ، وَإِذَا فِيهَا أُنَاسٌ قَدْ عَرَفْتُهُمْ، فَجَعَلْتُ أَقُولُ: أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ النَّارِ، قَالَ: فَلَقِيَنَا مَلَكٌ آخَرُ، فَقَالَ لِي: لَمْ تُرَعْ. فَقَصَصْتُها عَلَى حَفْصَةَ، فَقَصَّتْهَا حَفْصَةُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: (نِعْمَ الرَّجُلُ عَبْدُ اللهِ، لَوْ كَانَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ). فَكَانَ بَعْدُ لاَ يَنَامُ مِنَ اللَّيْلِ إِلاَّ قَلِيلًا. [رواه البخاري: ١١٢١، ١١٢٢]

देखूं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करूं। मैं अभी नौजवान था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में मस्जिद ही में सोया करता था। चूनांचे मैंने ख्वाब देखा कि जैसे दो फरिश्तों ने मुझे पकड़ा और दोजख की तरफ ले गये, क्या देखता हूँ कि वह कुऐं की तरफ पैचदार बनी हुई है, उस पर दो चरखियां हैं और उसमें कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन्हें मैं पहचानता हूँ। मैं दोजख से अल्लाह की पनाह मांगने लगा। हजरत इब्ने उमर रज़ि. कहते हैं कि फिर हमें एक फरिश्ता मिला, जिसने मुझ से कहा कि डरो नहीं, मैंने यह ख्वाब (अपनी बहन) हफ्सा रज़ि. से बयान किया, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसका बयान किया तो आपने फरमाया कि अब्दुल्लाह अच्छा आदमी है। काश वह तहज्जुद पढ़ा करता, उसके बाद वह (अब्दुल्लाह बिन उमर रजि) रात को बहुत कम सोया करते थे।

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि तहज्जुद की नमाज़ की बेहद फज़ीलत है और इस पर पाबन्दी करना दोजख से निजात का सबब है। (औनुलबारी, **2/186**)

बाब **3** : बीमार के लिए तहज्जुद छोड़ देने का बयान।

٣ - باب: تَرْكُ الْقِيَامِ لِلْمَرِيضِ

592 : जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से

٥٩٢ : عَنْ جُنْدَبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ

रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बीमार हो गये तो एक या दो रात आप तहज्जुद के लिए नहीं उठे।

قَالَ: اشْتَكَى النَّبِيُّ ﷺ، فَلَمْ يَقُمْ لَيْلَةً أَوْ لَيْلَتَيْنِ. [رواه البخاري: ١١٢٤]

फायदे : इस हदीस का मतलब यह है कि जब आपने बीमारी की वजह से कुछ दिनों तक तहज्जुद छोड़ दिया तो अबू लहब की बीवी उम्मे जमील कहने लगी कि अब तुझे तेरे शैतान ने छोड़ दिया है तो उस वक़्त सूरा "वज्जुहा" नाज़िल हुई। (औनुलबारी, 2/187)

बाब 4 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रात की नमाज़ और दूसरी नफ्ल नमाज़ों के लिए जरूरी न समझकर लोगों को उभारना।

٤ - باب: تَحْرِيضُ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى صَلاَةِ اللَّيْلِ وَالنَّوَافِلِ مِن غَيرِ إِيجَابٍ

593 : अली बिन अबू तालिब रज़ि. से रिवायत है कि एक रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके और अपनी बेटी फातिमा बिन्ते नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ लाये और फरमाया कि तुम दोनों नमाज़ (तहज्जुद) क्यों नहीं पढ़ते? मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारी तो जानें ही अल्लाह के हाथ में हैं, जब वह हमें उठायेगा तो उठ जायेंगे, जब मैंने यह कहा तो आप वापस हो गये और मुझे कोई जवाब न दिया, फिर मैंने आपको पीठ फेरकर रान पर हाथ मारते

٥٩٣ : عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ طَرَقَهُ وَفَاطِمَةَ بِنْتَ النَّبِيِّ ﷺ لَيْلَةً، فَقَالَ: (أَلاَ تُصَلِّيَانِ). فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَنْفُسُنَا بِيَدِ ٱللهِ، فَإِذَا شَاءَ أَنْ يَبْعَثَنَا بَعَثَنَا، فَٱنْصَرَفَ حِينَ قُلْنَا ذٰلِكَ وَلَمْ يَرْجِعْ إِلَيَّ شَيْئًا، ثُمَّ سَمِعْتُهُ وَهُوَ مُوَلٍّ، يَضْرِبُ فَخِذَهُ، وَهُوَ يَقُولُ: «وَكَانَ ٱلْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا». [رواه البخاري: ١١٢٧]

हुए देखा और यह फरमाते सुना कि "इन्सान सबसे ज्यादा झगड़ालू है।"

फायदे : हजरत अली रज़ि. की मजबूरी सुनकर आप खामोश हो गये। अगर यह नमाज़ फर्ज होती तो हजरत अली की मजबूरी कुबूल नहीं हो सकती थी। हाँ, जाते हुये अफसोस जरूर जाहिर कर दिया क्योंकि तकदीर के बहाने एक फज़ीलत के हासिल करने से फरार का रास्ता इख्तियार करना ठीक न था।

594 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक काम अगरचे वह आप को पसन्द ही होता, इस डर से छोड़ देते थे कि लोग उस पर अमल करेंगे तो वह उन पर फर्ज हो जायेगा। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चाश्त की नमाज़ कभी (लगातार) नहीं पढ़ी, लेकिन मैं पढ़ती हूँ।

٥٩٤ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ آللهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنْ كَانَ رَسُولُ آللهِ ﷺ لَيَدَعُ الْعَمَلَ، وَهُوَ يُحِبُّ أَنْ يَعْمَلَ بِهِ، خَشْيَةَ أَنْ يَعْمَلَ بِهِ النَّاسُ فَيُفْرَضَ عَلَيْهِمْ، وَمَا سَبَّحَ رَسُولُ آللهِ ﷺ سُبْحَةَ الضُّحى قَطُّ، وَإِنِّي لأُسَبِّحُهَا. [رواه البخاري: ١١٢٨]

फायदे : हजरत आइशा रजि. का बयान उनकी मालूमात के मुताबिक है, वरना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का के फतह के वक्त चाश्त की नमाज पढ़ी थी और हजरत अबू जर और हजरत अबू हुरैरा रज़ि. को उसके पढने की हिदायत भी की थी। (औनुलबारी, 2/190)

बाब 5 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़याम इस कदर होता कि आपके पांव सुज जाते।

٥ - باب: قِيَام النَّبِيِّ ﷺ حَتَّى تَرِمَ قَدَمَاهُ

595 : मुगीरा बिन शोअबा रज़ि. से

٥٩٥ : عَنِ الْمُغِيرَة بْنِ شُعْبَةَ

رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَيَقُومُ لِيُصَلِّيَ حَتَّى تَرِمَ قَدَمَاهُ، أَوْ سَاقَاهُ. فَيُقَالُ لَهُ، فَيَقُولُ: (أَفَلاَ أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا). [رواه البخاري: ١١٣٠]

रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में इतना खड़े होते कि आपके दोनों पांव या आपके दोनों पिण्डलियों पर वरम आ जाता और जब आपसे इसके बारे में कहा जाता तो फरमाते थे कि क्या मैं अल्लाह का शुक्र अदा करने बन्दा न बनूं?

फायदे : इस हदीस से शुक्रिया के तौर पर नमाज़ पढ़ने का सबूत मिलता है, नीज मालूम हुआ कि जुबान के शुक्र के अलावा अमल से भी अदा करना चाहिए, क्योंकि जुबान से इकरार करते हुये और उस पर अमल करने को शुक्र कहा जाता है।

(औनुलबारी,2/192)

٦ - باب: مَن نَامَ عِندَ السَّحَرِ

बाब 6 : जो आदमी सहरी के वक्त सोता रहा।

٥٩٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ لَهُ: (أَحَبُّ الصَّلاَةِ إِلَى ٱللهِ صَلاَةُ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ، وَأَحَبُّ الصِّيَامِ إِلَى ٱللهِ صِيَامُ دَاوُدَ، وَكَانَ يَنَامُ نِصْفَ اللَّيْلِ وَيَقُومُ ثُلُثَهُ، وَيَنَامُ سُدُسَهُ، وَيَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ يَوْمًا). [رواه البخاري: ١١٣١]

596 : अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया, अल्लाह को सब नमाज़ों से दाऊद अलैहि. की नमाज़ बहुत पसन्द है और तमाम रोजों से ज्यादा रोजा भी दाऊद अलैहि. का पसन्द है। वह आधी रात तक सोये रहते, फिर तिहाई रात में इबादत करते। उसके बाद रात के छटे हिस्से में सो जाते, नीज वह एक दिन रोजा रखते ओर एक दिन इफ़्तार करते।

फायदे : इसका मतलब यह है कि अगर रात के बारह घण्टे हों तो पहले छः घण्टे सो लेते फिर चार घण्टे इबादत करते, फिर दो घण्टे आराम फरमाते, गोया कि सहरी का वक़्त सोकर गुजार देते। यही उनवान का मकसद है।

597 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सब से ज्यादा वह अमल पसन्द होता जो हमेशा होता रहे, आपसे पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को कब उठते तो उन्होंने फरमाया कि जब मुर्गे की आवाज सुनते तो उठ जाते थे।

٥٩٧ : عن عائشة رضي الله عنها قالت: كان أحبُّ العمل إلى رسول الله ﷺ الدَّائِمَ، قيل لها: مَتَى كانَ يَقُومُ؟ قَالَتْ: كانَ يَقُومُ إِذَا سَمِعَ الصَّارِخَ. [رواه البخاري: ١١٣٢]

फायदे : मुर्गा आम तौर पर आधी रात को बांग देता है, यह उसकी आदत है, जिस पर अल्लाह ने उसे पैदा किया है।

(औनुलबारी, 2/194)

598 : आइशा रज़ि. से ही एक रिवायत में है कि जिस वक़्त मुर्गे की आवाज सुनते तो उठकर नमाज़ पढ़ते।

٥٩٨ : وَفِي رِوايَةٍ: إِذَا سَمِعَ الصَّارِخَ قامَ فَصَلَّى. [رواه البخاري: ١١٣٢]

फायदे : इमाम बुखारी ने पहली हदीस में हजरत दाऊद अलैहि. के रात के जागने को बयान फरमाया, इस हदीस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल को इसके मुताबिक साबित किया, अगली हदीस से साबित किया गया कि सहरी के वक़्त आप सोये होते, लिहाजा आपका और हजरत दाऊद अलैहि. का अमल एक जैसा साबित हुआ।

599 : आइशा रज़ि. से ही एक और रिवायत में है कि उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखरी रात में सोये हुए ही देखा है।

٥٩٩ : وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهَا قَالَتْ: ما أَلْفَاهُ السَّحَرُ عِنْدِي إِلَّا نَائِمًا. تَعْنِي النَّبِيَّ ﷺ. [رواه البخاري: ١١٣٣]

बाब 7 : तहज्जुद की नमाज़ में ज्यादा खड़े होना।

٧ - باب: طُولُ القِيَامِ فِي صَلَاةِ اللَّيلِ

600 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी तो आप काफी देर खड़े रहे, यहां तक कि मेरी नियत बिगड़ गयी। आपसे पूछा गया कि आपके दिल में क्या है? उन्होंने फरमाया कि मैंने यह इरादा किया था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़कर खुद बैठ जाऊं।

٦٠٠ : عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لَيْلَةً، فَلَمْ يَزَلْ قَائِمًا حَتَّى هَمَمْتُ بِأَمْرِ سَوْءٍ. قِيلَ: وَما هَمَمْتَ؟ قَالَ: هَمَمْتُ أَنْ أَقْعُدَ وَأَذَرَ النَّبِيَّ ﷺ. [رواه البخاري: ١١٣٥]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात की नमाज में बहुत लम्बी किरअत करते थे।

(औनुलबारी, 2/197)

बाब 8 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात की नमाज़ किस तरह और किस कदर पढ़ते थे?

٨ - باب: كَيْفَ كَانَتْ صَلَاةُ النَّبِيِّ ﷺ وَكَم كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي مِنَ اللَّيلِ

601 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तहज्जुद की नमाज़ तेरह रकअत पढ़ते थे।

٦٠١ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَتْ صَلَاةُ النَّبِيِّ ﷺ ثَلَاثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً، يَعْنِي بِاللَّيْلِ. [رواه البخاري: ١١٣٨]

फायदे : इन तेरह रकअतों को इस तरह अदा करते थे कि हर दो रकअतों के बाद सलाम फेर देते, जैसा कि दूसरी रिवायतों में इसका खुलासा है। (औनुलबारी, 2/197)

602 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को तेरह रकअत नमाज़ पढ़ते थे, उन्हीं में वित्र और फज्र की दो रकअतें (सुन्नत) भी शामिल होती थीं।

٦٠٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ ثَلاَثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً، مِنْهَا الْوِتْرُ وَرَكْعَتَا الْفَجْرِ. [رواه البخاري: ١١٤٠]

फायदे : नमाज़ फज्र की दो सुन्नतें मिलाकर तेरह रकअतें हैं, क्योंकि हजरत आइशा रज़ि. की दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान या रमज़ान के अलावा कभी ग्यारह रकअत से ज्यादा नहीं पढ़ते थे? चूंकि दिन के फराइज भी ग्यारह हैं, इसीलिए रात के वित्र भी ग्यारह थे। इसी तरह रात के नफ्ल और दिन के फर्ज एक बराबर होते थे।

(औनुलबारी, 2/198)

बाब 9 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रात की नमाज और सोना, नीज रात की नमाज किस कदर मनसूख हुई?

٩ - باب: قِيَامُ النَّبِيِّ ﷺ بِاللَّيْلِ وَنَوْمِهِ وَمَا نُسِخَ مِن قِيَامِ اللَّيْلِ

603 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी महीने में ऐसा इफ़्तार करते कि हम ख्याल करते थे कि इस महीनें

٦٠٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُفْطِرُ مِنَ الشَّهْرِ حَتَّى نَظُنَّ أَنْ لاَ يَصُومَ مِنْهُ وَيَصُومُ حَتَّى نَظُنَّ أَنْ لاَ يُفْطِرَ مِنْهُ شَيْئًا، وَكَانَ لاَ تَشَاءُ أَنْ تَرَاهُ مِنَ

में आप बिलकुल रोजा नहीं रखेंगे और जब रोजे रखते तो इतने लगातार कि हम सोचते अब इसमें बिलकुल इफ़्तार ही नहीं करेंगे और रात को नमाज़ तो आप ऐसे पढ़ते थे कि हम जब चाहते आपको नमाज़ पढ़ते देख लेते और जब चाहते, सोते देख लेते।

اللَّيلِ مُصَلِّيًا إِلَّا رَأَيْتُهُ، وَلَا نَائِمًا إِلَّا رَأَيْتُهُ. [رواه البخاري: ١١٤١]

फायदे : इसका मतलब यह है कि रात का वक़्त आपके नफ्लों और आराम का वक़्त होता था। वह ऐसा कि जो आदमी आपको जिस हालत में देखना चाहता देख लेता, यह हजरत अनस रजि. का अपना देखा हाल है, जो हजरत आइशा रज़ि. के बयान के खिलाफ नहीं कि मुर्गे की बांग सुनकर जाग जाते थे, क्योंकि उन्होंने अपनी आंखो देखा हाल बयान किया है।

(औनुलबारी, 2/199)

बाब 10 : शैतान का गुद्दी पर गिरह लगाना जबकि आदमी रात की नमाज़ न पढ़े।

١٠ - باب: عَقْدُ الشَّيطَانِ عَلَى قَافِيَةِ الرَّأسِ إِذَا لَم يُصَلِّ بِاللَّيلِ

604 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब आदमी (रात के वक्त) सो जाता है तो शैतान उसकी गुद्दी पर तीन गिरह लगा देता है, हर गिरह पर यह जादू फूंक देता है कि अभी तो बहुत रात है, सो जाओ। फिर अगर आदमी जाग गया और अल्लाह को याद किया तो एक

٦٠٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (يَعْقِدُ الشَّيْطَانُ عَلَى قَافِيَةِ رَأْسِ أَحَدِكُمْ إِذَا هُوَ نَامَ ثَلَاثَ عُقَدٍ، يَضْرِبُ كُلَّ عُقْدَةٍ: عَلَيْكَ لَيْلٌ طَوِيلٌ فَارْقُدْ، فَإِنِ ٱسْتَيْقَظَ فَذَكَرَ ٱللهَ ٱنْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَإِنْ تَوَضَّأَ ٱنْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَإِنْ صَلَّى ٱنْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَأَصْبَحَ نَشِيطًا طَيِّبَ النَّفْسِ، وَإِلَّا أَصْبَحَ خَبِيثَ النَّفْسِ كَسْلَانَ). [رواه البخاري: ١١٤٢]

गिरेह खुल जाती है। फिर अगर उसने वुजू कर लिया तो दूसरी गिरह खुल जाती है। उसके बाद अगर उसने नमाज़ पढ़ी तो तीसरी गिरेह भी खुल जाती हैं और सुबह को खुश मिजाज और दिलशाद उठता है। वरना सुबह को बद दिल और सुस्त उठता है।

फायदे : इन शैतानी गिरोहों को हकीकत में माना जाये और यह गिरह एक शैतानी धागे में होती हैं और वह धागा गुद्दी पर होता है। इमाम अहमद रह. ने अपनी मुसनद में साफ बयान किया है कि शैतान एक रस्सी में गिरेह लगाता है। (औनुलबारी, 2/201)

बाब 11 : जो आदमी सोता रहे और नमाज़ न पढ़े तो शैतान उसके कान में पेशाब कर देता है।

١١ - باب: إِذَا نَامَ وَلَم يُصَلِّ بَالَ الشَّيطَانُ فِي أُذُنِهِ

605 : अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक आदमी का जिक्र किया गया कि वह सुबह तक सोता रहा और नमाज़ के लिए भी नहीं उठा तो आपने फरमाया कि शैतान ने उसके कान में पेशाब कर दिया है।

٦٠٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ذُكِرَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ رَجُلٌ، فَقِيلَ: ما زَالَ نَائِمًا حَتَّى أَصْبَحَ، ما قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ، فَقَالَ: (بَالَ الشَّيطَانُ فِي أُذُنِهِ). [رواه البخاري: ١١٤٤]

फायदे : जब शैतान खाता पीता और निकाह भी करता है तो उसका गाफिल और बेनमाजी के कान में पेशाब कर देना अक्ल से दूर नहीं। (औनुलबारी, 2/203)

बाब 12 : पिछली रात दुआ और नमाज़ का बयान।

١٢ - باب: الدُّعاءُ والصَّلاَةُ مِن آخِرِ اللَّيلِ

606 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हमारा बुजुर्ग और बरतर रब हर रात पहले आसमान पर उतरता है और जब आखरी तिहाई रात बाकी रह जाती है तो आवाज देता है कि कोई है जो दुआ करे, मैं उसे कुबूल करूं, कोई है जो मुझ से मांगे, मैं उसे दूं, कोई है जो मुझसे माफी मांगे तो मैं उसे माफ करूं।

٦٠٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَة رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (يَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ ٱلدُّنْيَا حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الآخِرُ، يَقُولُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ، مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ، مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ). [رواه البخاري: ١١٤٥]

फायदे : अल्लाह तआला का अपने ऊपर वाले अर्श से दुनियावी आसमान पर बगैर तावील और बगैर कैफियत के उतरना बरहक है। जिस तरह उसकी जात का अर्शे अजीम पर बरकरार होना बरहक है, हमारे अस्लाफ का अकीदा है कि इस किस्म की खुबियों को जाहिरी मायने पर माना जाये, मगर यह भी अकीदा रखना चाहिए कि उसकी सिफतें मखलूक की सिफतों की तरह नहीं हैं। अल्लमा इब्ने कय्यिम रह. ने इस मौजू पर "नुजूलर्रब इला समाइद्दुनिया" नामी किताब भी लिखी है।

(औनुलबारी, 2/205)

बाब 13 : जो आदमी रात के शुरू में सो जाये और रात के आखिर में जागे।

١٣ - بابٌ: مَنْ نَامَ أَوَّلَ اللَّيْلِ وَأَحْيَا آخِرَهُ

607 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उनसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तहज्जुद की नमाज़

٦٠٧ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّهَا سُئِلَتْ عَنْ صَلاَةِ النَّبِيِّ ﷺ بِاللَّيْلِ؟ قَالَتْ: كَانَ يَنَامُ أَوَّلَهُ،

के बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने फरमाया कि आप रात के शुरू में सो जाते और पिछली रात उठ कर नमाज़ पढ़ते, फिर अपने बिस्तर पर लौट आते, फिर जब अजान देने वाला अजान देता तो उठ खड़े होते। अगर जरूरत होती तो गुस्ल करते, वरना वुज़ू करके बाहर तशरीफ ले जाते।

وَيَقُومُ آخِرَهُ، فَيُصَلِّي ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى فِرَاشِهِ، فَإِذَا أَذَّنَ المُؤَذِّنُ وَثَبَ، فَإِنْ كَانَ بِهِ حَاجَةٌ اغْتَسَلَ، وَإِلَّا تَوَضَّأَ وَخَرَجَ. [رواه البخاري: ١١٤٦]

फ़ायदे : इससे मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अगर बीवियों से मिलने की जरूरत होती तो उसे तहज्जुद अदा करने के बाद पूरा करते, क्योंकि इबादतों के सिलसिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यही शान के मुताबिक था। (औनुलबारी,2/209)

बाब 14 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रमज़ान और रमज़ान के अलावा रात का क़याम।

١٤ - باب: قِيَامُ النَّبِيِّ ﷺ بِاللَّيْلِ فِي رَمَضَانَ وَغَيْرِهِ

608 : आइशा रज़ि. से ही रिवायत है, उनसे पूछा गया कि रमज़ान में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तहज्जुद की नमाज़ कैसी होती थी तो उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान और रमज़ान के अलावा ग्यारह रकआत से ज्यादा नहीं पढ़ते थे, पहली चार रकअतें ऐसी लम्बी पढ़ते कि उनकी खूबी

٦٠٨ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّهَا سُئِلَتْ: عَنْ صَلاتِهِ ﷺ فِي رَمَضَانَ؟ فَقَالَتْ: مَا كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَزِيدُ فِي رَمَضَانَ وَلاَ غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً، يُصَلِّي أَرْبَعًا، فَلاَ تَسَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ، ثُمَّ يُصَلِّي أَرْبَعًا، فَلاَ تَسَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ، ثُمَّ يُصَلِّي ثَلاَثًا. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَتَنَامُ قَبْلَ أَنْ تُوتِرَ؟ فَقَالَ: (يَا عَائِشَةُ،

إِنَّ عَيْنَيَّ تَنَامَانِ وَلاَ يَنَامُ قَلْبِي)
[رواه البخاري: ١١٤٧]

के बारे में न पूछो और फिर आप चार रकअतें ऐसी ही पढ़तें कि उनकी खूबी और लम्बाई की हालत मत पूछो। फिर तीन रकअत वित्र पढ़ते थे। आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि मैंने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या आप वित्र पढ़ने से पहले सोते रहते हैं? तो आपने फरमाया,मेरी आंखों तो सो जाती हैं मगर मेरा दिल नहीं सोता।

फायदे : जिन रिवायतों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रात के वक़्त बीस रकअतें पढ़ना बयान हुआ है, वह सब जईफ और दलील पकड़ने के काबिल नहीं नमाज़ तरावीह की तादाद आठ रकअतें और तीन वित्र हैं, जैसा कि इस हदीस में बयान है।

---

١٥ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّشْدِيدِ فِي الْعِبَادَةِ

बाब 15 : इबादात में सख्ती उठाना एक बुरा काम है।

٦٠٩ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ، فَإِذَا حَبْلٌ مَمْدُودٌ بَيْنَ السَّارِيَتَيْنِ، فَقَالَ: (ما هٰذَا الْحَبْلُ). قَالُوا: هٰذَا حَبْلٌ لِزَيْنَبَ، فَإِذَا فَتَرَتْ تَعَلَّقَتْ بِهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لا، حُلُّوهُ، لِيُصَلِّ أَحَدُكُمْ نَشَاطَهُ، فَإِذَا فَتَرَ فَلْيَقْعُدْ).
[رواه البخاري: ١١٥٠]

609 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में दाखिल हुये तो देखा कि दो खम्भों के बीच एक रस्सी लटक रही है, आपने फरमाया यह रस्सी कैसी है? लोगों ने कहा कि यह रस्सी जैनब रज़ि. की लटकाई हुई है जब वह नमाज़ में खड़े खड़े थक जाती हैं तो इससे लटक जाती हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, नहीं (ऐसा हरगिज नहीं चाहिए) इसे खोल दो। तुममें हर आदमी चुस्ती की हालत तक नमाज़ पढ़े। अगर थक जाये तो बैठ जाये।

फायदे : मालूम हुआ कि इबादत करते वक़्त बीच की चाल इख्तियार करना चाहिए, और इसके बाद ज्यादा सख्ती की मनाही है, क्योंकि ऐसा करना इबादत की रूह के खिलाफ है। (औनुलबारी, 2/211) मकसद यह है कि इबादत में सख्ती ऐब है, क्योंकि ऐसा करने से दिल में नफरत पैदा हो जाती हैं, जो बुराई के काबिल हैं। (औनुलबारी, 2/212)

बाब 16 : तहज्जुद के एहतिमाम के बाद उसे छोड़ देना बुरा है।

١٦ - باب: مَا يُكرَهُ مِن تَرْكِ قِيَامِ اللَّيلِ لِمَن كَانَ يَقُومُهُ

610 : अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे फरमाया, अब्दुल्लाह रज़ि.! फलाँ आदमी की तरह न हो जाना कि वह रात को उठा करता था, फिर उसने रात में कयाम करना छोड़ दिया।

٦١٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يَا عَبْدَ ٱللهِ، لاَ تَكُنْ مِثْلَ فُلاَنٍ، كانَ يَقُومُ اللَّيْلَ فَتَرَكَ قِيَامَ اللَّيْلِ). [رواه البخاري: ١١٥٢]

फायदे : इस हदीस का मकसद यह है कि नेकी के काम में सहुलियत और आसानी को खयाल में रखते हुए उसे लगातार करना चाहिए। (अलवी)

बाब 17 : उस आदमी की फज़ीलत जो रात में उठे और नमाज़ पढ़े।

١٧ - باب: فَضلُ مَن تَعَارَّ بِاللَّيلِ فَصَلَّى

611 : उबादा बिन सामित रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया जो आदमी

٦١١ : عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ تَعَارَّ مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ: لاَ إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ

وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، الحَمْدُ للهِ، وَسُبْحَانَ اللهِ، وَلاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ، ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، أَوْ دَعَا، اسْتُجِيبَ لَهُ، فَإِنْ تَوَضَّأَ وَصَلَّى قُبِلَتْ صَلاَتُهُ). [رواه البخاري: ١١٥٤]

रात को उठे और कहे ''ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु वलहुल हम्दु वहुवा अला कुल्लि शैइन कदीर, अलहम्दु लिल्लाहि, वसुब्हान अल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला'' फिर यह दुआ पढ़े, ''अल्लाहुम्मगफिरली'' या और कोई दुआ करे तो उसकी दुआ कुबूल होती है और अगर वुज़ू करके नमाज़ पढ़े तो उसकी नमाज़ भी कुबूल होती है।

फायदे : जरूरी है कि जो आदमी इस हदीस को पढ़े उसे चाहिए कि अपने अन्दर साफ नियत पैदा करे और इस अमल को गनीमत समझे। (औनुलबारी, 2/213)

---

٦١٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللهُ عَنْهُ - أَنَّهُ قَالَ، وَهُوَ يَقُصُّ فِي قَصَصِهِ، وَهُوَ يَذْكُرُ رَسُولَ اللهِ ﷺ: (إِنَّ أَخًا لَكُمْ لاَ يَقُولُ الرَّفَثَ). يَعْنِي بِذٰلِكَ عَبْدَ اللهِ بْنَ رَوَاحَةَ:

وَفِينَا رَسُولُ اللهِ يَتْلُو كِتَابَهُ
إِذَا انْشَقَّ مَعْرُوفٌ مِنَ الفَجْرِ سَاطِعُ
أَرَانَا الهُدَى بَعْدَ العَمَى فَقُلُوبُنَا
بِهِ مُوقِنَاتٌ أَنَّ مَا قَالَ وَاقِعُ
يَبِيتُ يُجَافِي جَنْبَهُ عَنْ فِرَاشِهِ
إِذَا اسْتَثْقَلَتْ بِالمُشْرِكِينَ المَضَاجِعُ

[رواه البخاري: ١١٥٥]

612 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि वह तकरीर करते हुये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जिक्र करने लगे कि आपने एक बार फरमाया, तुम्हारा भाई अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि. कोई बेहूदा बात नहीं कहता। (देखो तो कैसी अच्छी बातें सुनाता है) हम में अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जो अल्लाह की किताब की तिलावत

करते हैं, जब सुबह होती है तो हम तो अन्धे थे, उसने हमें हिदायत पर लगाया और हमें दिली यकीन है कि वह जो कुछ कहते हैं, वह हकीकत में सच है। रात को उनका पहलू बिस्तर से अलग रहता है, जबकि नींद की वजह से मुश्रिकों पर बिस्तर भारी होते हैं।

फायदे : मालूम हुआ कि तकरीर की मजलिसों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जिक्र भलाई और बरकत का सबब है। लेकिन बनावटी ईद मीलाद की महफिलों का कोई सुबूत नहीं, यह खैरुल कुरून से बहुत बाद की पैदावार है।

613 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में एक ख्वाब देखा, जैसे मेरे हाथ में रेशम का एक टुकड़ा है। मैं जहां जाना चाहता हूँ वह मुझे उड़ा ले जाता है और मैंने यह भी देखा कि जैसे दो आदमी मेरे पास आये बाद में वह पूरी हदीस (591) बयान की जो पहले गुजर चुकी है।

٦١٣ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ كَأَنَّ بِيَدِي قِطْعَةَ إِسْتَبْرَقٍ، فَكَأَنِّي لاَ أُرِيدُ مَكَانًا مِنَ الجَنَّةِ إِلَّا طَارَتْ إِلَيْهِ، وَرَأَيْتُ كَأَنَّ اثْنَيْنِ أَتَيَانِي. وذكر باقي الحديث وقد تقدَّم. [رواه البخاري: ١١٥٦]

फायदे : इस हदीस में है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने उसके बाद लगातार तहज्जुद पढ़ना शुरू कर दिया।

(औनुलबारी, 2/217)

बाब 18 : निफ़्ल नमाज़ दो दो रकअत करके पढ़ने का बयान।

١٨ - باب: مَا جَاء في التَّطوُّعِ مَثْنَى مَثْنَى

614 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें तमाम कामों के लिए इस्तिखारे की तालीम देते, जैसे हमें कुरआन की कोई सूरत सिखलाया करते थे। इरशाद फरमाते कि जब कोई तुममें से किसी काम का इरादा करे तो वह फर्ज के अलावा दो रकअतें पढ़ ले, फिर यूँ कहे: ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरे इल्म की बदौलत भलाई चाहता हूँ और तेरी कुदरत की बदौलत ताकत चाहता हूँ और तुझ से तेरा बहुत बड़ा फजल चाहता हूँ। बेशक तू ही कुदरत रखता है और मैं कुदरत नहीं रखता हूँ और तू जानता है। मैं नहीं जानता तू ही छिपी हुई बातों का जानने वाला है।

ऐ अल्लाह अगर तू जानता है कि

٦١٤ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُعَلِّمُنَا الاسْتِخَارَةَ في الأُمُورِ كلِّها كما يُعَلِّمُنَا السُّورَةَ مِنَ القُرْآنِ، يَقُولُ: (إِذَا هَمَّ أَحَدُكُمْ بِالأمرِ، فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ مِنْ غَيْرِ الْفَرِيضَةِ، ثُمَّ لِيَقُلِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ، فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلاَ أَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلاَ أَعْلَمُ، وَأَنْتَ عَلاَّمُ الْغُيُوبِ. اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الأَمْرَ خَيْرٌ لِي، في دِينِي وَمَعَاشِي وَعاقِبَةِ أَمْرِي، أَوْ قَالَ: عاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ، فَاقْدُرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي، ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ، وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الأَمْرَ شَرٌّ لِي، في دِيني وَمَعَاشِي وَعاقِبَةِ أَمْرِي، أَوْ قَالَ: في عاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ، فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْنِي عَنْهُ، وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كانَ، ثُمَّ أَرْضِنِي بِهِ. قَالَ: وَيُسَمِّي حاجَتَهُ). [رواه البخاري: ١١٦٢]

यह काम मेरे दीन दुनिया में और मेरे काम के आगाज और अन्जाम में बेहतर है तो उसको मेरे लिए मुकद्दर फरमा दे और

उसको मेरे लिए आसान कर दे और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे लिए दीन दुनिया में और मेरे काम के आगाज में नुकसान देने वाला है तो इसको मुझ से अलग कर दे और मुझे उससे अलग कर दे और जहां कहीं भलाई हो वह मेरे लिए मुकद्दर कर दे और इसके जरीये मुझे खुश कर दे।

आपने फरमाया कि फिर अपनी जरूरत का नाम ले और अल्लाह के सामने पेश करे।

फायदे : दरअसल इस्तिखारे की इस दुआ के जरीये बन्दा पहले तो भरोसेमन्द वादा करता है, फिर साबित कदमी और अल्लाह की तकदीर पर राजी रहने की दुआ करता है, अगर साफ दिल से अल्लाह के सामने यह दोनों बातें पेश कर दी जायें तो अल्लाह के फज्ल और करम से बन्दे के मांगे गये काम में जरूर भलाई और बरकत होगी।

बाब 19 : फज्र की दो सुन्नतें हमेशा पढ़ना और जिसने इन्हें नफ़्ल का नाम दिया।

١٩ - باب: تَعَاهُدُ رَكْعَتَي الفَجْرِ وَمَنْ سَمَّاهُمَا تَطَوُّعاً

615 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी नफ़्ल नमाज़ का इस कद्र खयाल नहीं करते, जितना कि दो सुन्नतों का अहतिमाम करते थे।

٦١٥ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قَالَتْ: لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ، عَلَى شَيْءٍ مِنَ النَّوَافِلِ، أَشَدَّ مِنْهُ تَعَاهُدًا عَلَى رَكْعَتَي الْفَجْرِ. [رواه البخاري: ١١٦٩]

फायदे : चूंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फज्र की सुन्नतों पर हमेशगी फरमाई है, इसलिए सफर और हजर में इनका छोड़ना सही नहीं है।

बाब 20 : फज्र की सुन्नतों में क्या पढ़ा जाये?

٢٠ - باب: مَا يُقرأُ في رَكعتَي الفَجْرِ

612 : आइशा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फज्र की नमाज से पहले दो रकअतें बहुत हल्की पढ़ते थे, यहां तक कि मैं अपने दिल में कहती कि आपने सूरा फातिहा भी पढ़ी है या नहीं।

٦١٦ : وعَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كانَ النَّبِيُّ ﷺ يُخَفِّفُ الرَّكْعَتَيْنِ اللَّتَيْنِ قَبْلَ صَلاَةِ الصُّبْحِ، حَتَّى إِنِّي لأَقُولُ: هَلْ قَرَأَ بِأُمِّ الكتابِ. [رواه البخاري: ١١٧١]

फायदे : इस हदीस में हजरत आइशा रज़ि. ने फज्र की सुन्नतों में फातिहा पढ़ने के बारे में शक जाहिर नहीं फरमाया बल्कि मतलब यह है कि बहुत हल्की पढ़ते थे, मुस्लिम की रिवायत में है कि पहली रकअत में ''कुल या अय्युहल काफिरून'' और दूसरी में ''कुलहु वल्ललाहु अहद'' पढ़ते थे। (औनुलबारी, 2/122)

बाब 21 : घर में चाश्त की नमाज़ पढ़ने का बयान।

٢١ - باب: صَلاةُ الضُّحَى في الحَضَرِ

617 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मेरे दोस्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे तीन बातों की हिदायत फरमाई है और जीते जी मैं इन्हें हरगिज नहीं छोडुंगा एक तो हर महीने में तीन रोजे रखना, दूसरी चाश्त की नमाज़ पढ़ना, तीसरे वित्र पढ़कर सोना।

٦١٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَوْصَانِي خَلِيلِي بِثَلاَثٍ، لاَ أَدَعُهُنَّ حَتَّى أَمُوتَ: صَوْمِ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ، وَصَلاَةِ الضُّحى، وَنَوْمٍ عَلَى وِتْرٍ. [رواه البخاري: ١١٧٨]

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि जिस नमाज़ी को सहर के वक़्त उठने पर यकीन न हो वह नींद से पहले वित्र पढ़ ले और जिसे यकीन हो कि सुबह तहज्जुद के लिए उठेगा, वह फज्र निकलने से पहले वित्र अदा कर ले, जैसा कि मुस्लिम की रिवायत में इसकी वजाहत मौजूद है। (औनुलबारी, 2/223)

बाब 22 : जुहर से पहले दो सुन्नतें पढ़ना।

٢٢ - باب: الرَّكعَتَينِ قَبلَ الظُّهرِ

618 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुहर से पहले चार रकअत और फज्र से पहले दो रकअत सुन्नत को कभी नहीं छोड़ते थे।

٦١٨ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كانَ لاَ يَدَعُ أَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ وَرَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الْغَدَاةِ. [رواه البخاري: ١١٨٢]

फायदे : हजरत इब्ने उमर रज़ि. से मरवी हदीस से मालूम होता है कि आप जुहर से पहले दो रकअत पढ़ते थे और इस हदीस से पता चलता है कि आप चार पढ़ते थे। इनमें टकराव नहीं क्योंकि दोनों हजरात ने अपनी अपनी मालूमात से आगाह किया है, मुमकिन है कि घर में चार पढ़ते हों। जैसा कि हजरत आइशा रज़ि. का बयान है और मस्जिद में दो रकअतें ही अदा करते हों। जिनको इब्ने उमर रज़ि. ने देखा है। (औनुलबारी, 2/224)

बाब 23 : मगरिब की नमाज़ से पहले सुन्नत पढ़ने का बयान।

٢٣ - باب: الصَّلاة قَبلَ المَغرِبِ

619 : अब्दुल्लाह मुजनी रज़ि. रिवायत करते हैं, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान किया

٦١٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ المُزَنِيِّ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (صَلُّوا قَبْلَ صَلاَةِ المَغْرِبِ).

قَالَ فِي الثَّالِثَةِ: (لِمَنْ شَاءَ). كَرَاهِيَةَ أَنْ يَتَّخِذَهَا النَّاسُ سُنَّةً. [رواه البخاري: ١١٨٣]

कि आपने फरमाया, मगरिब की नमाज़ से पहले नफ़्ल पढ़ो। (दो बार फरमाया) तीसरी बार यह कहा, जो कोई चाहे, इस डर से कि कहीं लोग उसे जरूरी न समझ ले।

फायदे : मगरिब से पहले दो रकअत पढ़ना बेहतर है, अगरचे जरूरी नहीं फिर भी इनको पढ़ना सवाब है, लेकिन जमाअत खड़ी होने से पहले पढ़ना चाहिए, और फज्र की सुन्नतों की तरह इन्हें भी हल्का फुल्का अदा करना चाहिए।(औनुलबारी, 2/225)

किताबो सलाति फी मस्जिदे मक्का वल मदीना

मक्का और मदीना की मस्जिदों में नमाज़ पढ़ना

बाब 1 : मक्का और मदीना की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की फज़ीलत।

١ - باب: فَضْلُ الصَّلاَةِ في مَسْجِدِ مَكَّةَ وَالمَدِينَةِ

620 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया तीन मस्जिदों के अलावा किसी और मस्जिद की तरफ सफर न किया जाये, मस्जिदे हराम, मस्जिदे नबवी और मस्जिदे अकसा।

٦٢٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لاَ تُشَدُّ الرِّحَالُ إِلاَّ إِلَى ثَلاَثَةِ مَسَاجِدَ: المَسْجِدِ الحَرَامِ، وَمَسْجِدِ الرَّسُولِ ﷺ، وَمَسْجِدِ الأَقْصَى). [رواه البخاري: ١١٨٩]

फायदे : सफर के लिए सामान तैयार करना और जियारत के लिए घर से निकलना यह सिर्फ इन्हीं तीन जगहों के साथ खास है, नीज बुजुर्गों के मजारों पर इस नियत से जाना कि वह खुश होकर हमारी हाजत रवाई करेंगे या उसका वसीला बनेंगे और इस किस्म के दूसरे बातिल वहम इस हदीस के तहत सिरे से नाजाइज और हराम हैं। (औनुलबारी, 2/231)

---

621 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

٦٢١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (صَلاَةٌ في مَسْجِدِي

هٰذَا خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ صَلاَةٍ فِيما سِوَاهُ، إِلَّا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ). [رواه البخاري: ١١٩٠]

वसल्लम ने फरमाया मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ मस्जिद हराम के अलावा दूसरी मस्जिदों की हजार नमाज़ों से बेहतर है।

फायदे : मेरी मस्जिद से मुराद मस्जिदे नबवी है। हजरत इमाम बुखारी का मकसूद यह है कि मस्जिदे नबवी की जियारत के लिए सफर का सामान बांधना चाहिए और जो वहां जायेगा, जरूरी तौर पर उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हजरत अबू बकर और हजरत उमर रजि. पर दरूद और सलाम की सआदतें हासिल होगी।

---

٢ - باب: مَسجِدُ قُبَاءٍ

बाब 2 : कुबा की मस्ज़िद का बयान।

٦٢٢ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كانَ لاَ يُصَلِّي مِنَ الضُّحَى إِلَّا في يَوْمَيْنِ: يَوْمِ يَقْدَمُ بِمَكَّةَ فَإِنَّهُ كانَ يَقْدَمُهَا ضُحًى، فَيَطُوفُ، ثُمَّ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ خَلْفَ المَقَامِ، وَيَوْمِ يَأْتِي مَسْجِدَ قُبَاءٍ، فَإِنَّهُ كانَ يَأْتِيهِ كُلَّ سَبْتٍ، فَإِذَا دَخَلَ المَسْجِدَ كَرِهَ أَنْ يَخْرُجَ مِنْهُ حَتَّى يُصَلِّيَ فِيهِ. قَالَ: وَكانَ يُحَدِّثُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كانَ يَزُورُهُ رَاكِبًا وَمَاشِيًا. وَكانَ يَقُولُ له: إِنَّما أَصْنَعُ كما رَأَيْتُ أَصْحَابِي يَصْنَعُونَ، وَلاَ أَمْنَعُ أَحَدًا أَنْ صَلَّى في أَيِّ سَاعَةٍ شَاءَ مِنْ لَيْلٍ أَوْ نَهَارٍ، غَيْرَ أَنْ لاَ تَتَحَرَّوْا طُلُوعَ الشَّمْسِ وَلاَ غُرُوبَهَا. [رواه البخاري: ١١٩١، ١١٩٢]

622 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि वह चाश्त की नमाज़ इन दो दिनों के अलावा किसी और दिन में न पढ़ते, एक जब मक्का मुकर्रमा आते तो जरूर पढ़ते क्योंकि वह मक्का में चाश्त ही के वक्त आते थे। तवाफ करते फिर मकामे इब्राहिम के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़ते और दूसरे जिस दिन काबा जाते उस दिन भी चाश्त की नमाज़ पढ़ते थे, वह हर हफ्ते मस्जिदे कुबा जाते, जब मस्जिद में दाखिल होते तो नमाज़ पढ़े बगैर वहां से निकलने को बुरा खयाल करते।

उनका बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी पैदल जाया करते और यह भी कहा करते थे कि मैं इस तरह करता हूँ जैसा कि मैंने अपने दोस्तों को करते देखा है और मैं किसी को मना नहीं करता कि रात या दिन में जंब चाहे नमाज़ पढ़े, हां कभी सूरज निकलते या डूबते वक़्त नमाज़ न पढ़े।

फायदे : मालूम हुआ कि कुछ अच्छे कामों की अदायगी के लिए किसी दिन को खास करना और फिर उस पर हमेशगी करना जाइज है। (औनुलबारी, **2/238**)

बाब 3 : (मस्जिद नबवी में) कब्र और मिम्बर के बीच वाली जगह की फज़ीलत।

٣ - باب: فَضْلُ مَا بَيْنَ القَبْرِ وَالمِنْبَرِ

623 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मेरे घर और मिम्बर के बीच जगह जन्नत के बागों में से एक बाग है और मेरा मिम्बर (कयामत के दिन) मेरे हौज पर होगा।

٦٢٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الجَنَّةِ، وَمِنْبَرِي عَلَى حَوْضِي). [رواه البخاري: ١١٩٦]

फायदे : यह फज़ीलत किसी और जमीन के टुकड़े को हासिल नहीं, हकीकत में यह हिस्सा जन्नत ही का है और आखिरत की दुनिया में उसे जन्नत ही का हिस्सा बना दिया जायेगा, चूंकि आप अपने घर में ही दफन हैं, इसलिए इमाम बुखारी ने इस हदीस पर "कब्र और मिम्बर के बीच हिस्से की फज़ीलत" का उनवान कायम किया है। (औनुलबारी, **2/238**)

किताबुल-अमले फिस्सलात
नमाज़ में कोई काम करने का बयान

बाब 1 : नमाज़ में बात करना मना।

١ - باب: ما يُنْهَى مِنَ الكَلاَمِ في الصَّلاَةِ

624 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया करते थे, हालांकि आप नमाज़ में होते और आप हमें जवाब भी दिया करते थे, लेकिन नजाशी के पास से लौटकर आने के बाद हमने आपको नमाज़ में सलाम किया तो आपने जवाब न दिया और फारिग होने के बाद फरमाया कि नमाज़ में मस्रूफीयत हुआ करती है।

٦٢٤ : عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، وَهُوَ فِي الصَّلاَةِ، فَيَرُدُّ عَلَيْنَا، فَلَمَّا رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِ النَّجَاشِيِّ، سَلَّمْنَا عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْنَا، وَقَالَ: (إِنَّ فِي الصَّلاَةِ شُغْلاً). [رواه البخاري: ١١٩٩]

फायदे : नमाज़ में अल्लाह से दुआ का तकाजा है कि अल्लाह की याद में जिस्म और दिल के साथ डूब जाये, ऐसे आलम में लोगों से बात और उनके सलाम का जवाब कैसे दिया जा सकता है?

(औनुलबारी, 2/240)

---

625 : जैद बिन अरकम रजि. से एक रिवायत में है, उन्होंने फरमाया

٦٢٥ : وفي رواية عَنْ زَيْد بْن أَرْقَمَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كان

أَحَدُنَا يكلِّم صاحبه في الصَّلاة، حَتَّى نَزَلَتْ: ﴿حَٰفِظُوا عَلَى الصَّلَوَٰتِ﴾. الآيَةَ، فَأُمِرْنَا بِالسُّكُوتِ. [رواه البخاري: ١٢٠٠]

कि हम नमाज़ में एक दूसरे से बात किया करते थे, यहां तक कि यह आयत नाजिल हुई ''नमाज़ों की हिफाजत करो और (खासकर) बीच वाली नमाज़ की और अल्लाह के सामने अदब से खड़े रहो'' फिर हमें नमाज़ में चुप रहने का हुक्म दिया गया।

फायदे : मालूम हुआ कि नमाज़ के बीच हर तरह की दुनियावी बात करना मना है, चूनांचे सही मुस्लिम में है कि हमें इस आयत के जरीये बात करने से रोक दिया गया। (औनुलबारी, 2/241)

٢ - باب: مَسْحِ الحَصَى فِي الصَّلاةِ

बाब 2 : नमाज़ में कंकरियाँ हटाना।

٦٢٦ : عَنْ مُعَيْقِيبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ، فِي الرَّجُلِ يُسَوِّي التُّرَابَ حَيْثُ يَسْجُدُ، قَالَ: (إِنْ كُنْتَ فَاعِلًا فَوَاحِدَةً). [رواه البخاري: ١٢٠٧]

626 : मुऐकीब रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस शख्स से जो सज्दे की जगह मिट्टी बराबर कर रहा था, यह फरमाया कि अगर तुम यह करना ही चाहते हो तो एक बार से ज्यादा न करो।

फायदे : एक रिवायत में इसकी वजह यूँ बयान की गई है कि नमाज़ के वक़्त अल्लाह की रहमत नमाज़ी के सामने होती है, इसलिए ध्यान हटाकर कंकरियों को बार बार बराबर करना गोया अल्लाह की रहमत से मुंह फेरना है। (औनुलबारी, 2/243)

٣ - باب: إِذَا انْفَلَتَتِ الدَّابَّةُ فِي الصَّلاةِ

बाब 3 : अगर किसी का नमाज़ की हालत में जानवर भाग जाये (तो क्या करे)?

٦٢٧ : عَنْ أَبِي بَرْزَةَ الأَسْلَمِي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: صَلَّى يَوْمًا فِي غَزْوَةٍ وَلِجَامُ دَابَّتِهِ بِيَدِهِ فَجَعَلَتِ الدَّابَّةُ تُنَازِعُهُ وَجَعَلَ يَتْبَعُهَا، فَقِيلَ لَهُ فِي ذَلِكَ، فَقَالَ: إِنِّي غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ سِتَّ غَزَوَاتٍ، أَوْ سَبْعَ غَزَوَاتٍ، وَثَمَانَ، وَشَهِدْتُ تَيْسِيرَهُ، وَإِنِّي، إِنْ كُنْتُ أَنْ أُرَاجِعَ مَعَ دَابَّتِي، أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَدَعَهَا تَرْجِعُ إِلَى مَأْلَفِهَا، فَيَشُقُّ عَلَيَّ. [رواه البخاري: ١٢١١]

627 : अबू बरजाह असलमी रजि. से रिवायत है कि उन्होंने किसी जगह में सवारी की लगाम हाथ में लेकर नमाज़ पढ़ी, सवारी लड़ने लगी तो आप उस के पीछे हो लिये, जब उनसे उसके बारे में पूछा गया तो कहने लगे कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ छः, सात या आठ बार जिहाद में रहा हूँ और मैंने आपकी आसानी और सहूलियत पसन्दी देखी है। इसलिए मुझे यह बात कि मैं अपनी सवारी के साथ रहूं इस बात से ज्यादा पसन्द है कि मैं उसे छोड़ देता और वह अपने अस्तबल (घोड़े बांधने की जगह) में चली जाती फिर मुझे तकलीफ होती।

फायदे : मालूम हुआ कि किसी खास जरूरत की बिना पर इन्सान अपनी तारीफ खुद कर सकता है, लेकिन घमण्ड का मकसद न हो। (औनुलबारी, 2/225)

٦٢٨ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ذكرت حديث الخسوف وقال في هذه الرواية بعد قوله: ولقد رأيت النار يَحْطِمُ بَعْضُهَا بَعْضًا: (وَرَأَيْتُ فِيهَا عَمْرَو بْنَ لُحَيٍّ، وَهُوَ الَّذِي سَيَّبَ السَّوَائِبَ). [رواه البخاري: ١٢١٢]

628 : आइशा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने सूरज ग्रहण की हदीस बयान की जो पहले (526) गुजर चुकी है। उस रिवायत के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैंने दोजख को देखा, उसका एक

हिस्सा दूसरे को तोड़े जा रहा था। उसके बाद आपने फरमाया कि मैंने जहन्नम में अम्र बिन लुहई को देखा और यह वह आदमी है जिसने बुतों के नाम पर जानवरों को आजाद करने की रस्म डाली थी।

फायदे : इस हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़न्नत का गुच्छा लेने के लिए नमाज़ ही में आगे बढ़े और जहन्नम का भयानक नजारा देखकर कुछ पीछे हटे। इससे मालूम हुआ कि जरूरत के वक़्त नमाज़ में थोड़ा सा चलना और मामूली सा काम करना, इससे नमाज़ बातिल नहीं होती।

(औनुलबारी, 2/246)

बाब 4 : नमाज़ में सलाम का जवाब (जबान से) नहीं देना चाहिए।

٤ - باب: لاَ يَرُدُّ السَّلاَمَ في الصَّلاَةِ

629 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी काम के लिए भेजा, चूनांचे मैं गया और वह काम करके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ, मैंने आपको सलाम किया, मगर आपने जवाब न दिया, जिससे मेरा दिल इतना रंजीदा हुआ कि अल्लाह ही खूब जानता है, मैंने अपने दिल में कहा कि शायद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

٦٢٩ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ في حاجَةٍ، فَٱنْطَلَقْتُ، ثُمَّ رَجَعْتُ وَقَدْ قَضَيْتُهَا، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ، فَوَقَعَ في قَلْبِي ما ٱللهُ أَعْلَمُ بِهِ، فَقُلْتُ في نَفْسي: لَعَلَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ وَجَدَ عَلَيَّ أَنِّي أَبْطَأْتُ؟. ثُم سَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ، فَوَقَعَ في قَلْبِي أَشَدُّ مِنَ المَرَّةِ الأُولَى، ثُمَّ سَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَرَدَّ عَلَيَّ، فَقَالَ: (إِنَّمَا مَنَعَنِي أَنْ أَرُدَّ عَلَيْكَ أَنِّي كُنْتُ أُصَلِّي). وَكانَ عَلَى رَاحِلَتِهِ، مُتَوَجِّهًا إِلَى غَيْرِ الْقِبْلَةِ. [رواه البخاري: ١٢١٧]

वसल्लम मुझ से इसलिए नाराज हैं कि मैं देर से लौटा हूं। चूनांचे मैंने फिर सलाम किया तो आपने जवाब न दिया, अब तो मेरे दिल में पहले से भी ज्यादा गम हुआ। मैंने फिर सलाम किया तो आपने सलाम का जवाब दे कर फरमाया, चूंकि मैं नमाज़ पढ़ रहा था, इसलिए मैं तुझे सलाम का जवाब न दे सका। उस वक़्त आप सवारी पर थे, जिसका रूख किब्ले की तरफ न था। (इसलिए मैं तमीज न कर सका कि आप नमाज़ में हैं या नहीं)

फायदे : मुस्लिम में इतनी वजाहत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलाम का जवाब हाथ के इशारे से दिया था, जिसे हजरत जाबिर रजि. न समझ सके, इसलिए वह परेशान और फ्रिकमन्द हो गये।

बाब 5 : नमाज़ में कमर पर हाथ रखना मना है।

٥ - باب: الخَصْرُ في الصَّلاة

630 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कमर पर हाथ रखकर नमाज़ पढ़ने से मना फरमाया है।

٦٣٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نُهِيَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُصَلِّيَ الرَّجُلُ مُخْتَصِرًا. [رواه البخاري: ١٢٢٠]

फायदे : इस हुक्म की कुछ वजहें हैं, क्योंकि ऐसा करना घमण्ड करने वालों की निशानी है, यहूदी अकसर ऐसा करते थे, नीज इब्लीस को ऐसी हालत में आसमान से उतारा गया और जहन्नम वाले आराम के वक़्त ऐसा करेंगे। इसलिए नमाज़ में ऐसा करना मना है। (औनुलबारी, 2/248)

❖❖❖

किताबुस्सहु

सज्दा सहु (भूल) के बयान में

बाब 1 : जब (भूलकर) पांच रकअत पढ़ ले।

١ - باب: إذا صلَّى خمسًا

631 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार जुहर की पांच रकअतें पढ़ीं। कहा गया कि नमाज में कुछ बढ़ा दिया गया है? आपने फरमाया वह क्या? कहा गया कि आपने पांच रकअतें पढ़ी हैं तो आपने सलाम फेरने के बाद दो सज्दे सहू किये।

٦٣١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ صَلَّى الظُّهْرَ خَمْسًا، فَقِيلَ لَهُ: أَزِيدَ فِي الصَّلاةِ؟ فَقَالَ: (وما ذاكَ). قَالَ: صَلَّيْتَ خَمْسًا، فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ بَعْدَ ما سَلَّمَ [رواه البخاري: ١٢٢٦].

फायदे : इमाम बुखारी का मकसद यह है कि अगर नमाज़ में कमी हो जाये तो सलाम से पहले सज्दे सहू किये जायें और अगर कुछ बढ़त हो जाये तो सलाम के बाद सज्दे सहू किये जाये, लेकिन इस सिलसिले में इमाम अहमद का मसलक ज्यादा बेहतर मालूम होता है कि हर हदीस को उस की जगह में इस्तेमाल किया जाये और जिस भूल की सूरत में कोई हदीस नहीं आये, वहां सलाम से पहले सज्दा सहू किया जाये। (औनुलबारी, 2/250)

बाब 2 : जब नमाज़ी से कोई बात करे और वह सुनकर हाथ से इशारा कर दे।

٢ - باب: إذا كُلّمَ وَهُوَ يُصَلّي فَأشَارَ بِيَدِهِ وَاسْتَمَعَ

632 : उम्मे सलमा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि आप असर के बाद नमाज़ पढ़ने से मना करते थे, फिर मैंने आपको नमाज़ पढ़ते हुये देखा, उस वक्त मेरे पास अन्सारी औरतें बैठी थीं। मैंने एक लड़की को आपकी खिदमत में भेजा और उससे कहा, आपके पहलू में खड़े होकर कहना कि उम्मे सलमा रजि. मालूम करती हैं ऐ अल्लाह के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैंने आपको इन दो रकअतों से मना फरमाते सुना है, जबकि मैं अब आपको देखती हूँ कि आप दो रकअतें पढ़ रहे हैं। अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाथ से तेरी तरफ इशारा करें तो पीछे हट जाना। उस लड़की ने ऐसा ही किया। आपने अपने हाथ से जब इशारा फरमाया तो वह पीछे हट गयी। फिर आपने नमाज़ से फारिग होकर फरमाया, ऐ अबू उमय्या की बेटी! तूने असर के बाद दो रकअतें पढ़ने के बारे में पूछा तो बात दरअसल यह है कि कबीला अब्दुल कैस के कुछ

٦٣٢ : عن أُمّ سَلَمَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ينهى عن الرَّكعتين بعد العصرِ، ثم رأيته يصليهما، وكان عندي نسوة من الأنصارِ، فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ الجَارِيَةَ، فَقُلْتُ: قُومِي بِجَنْبِهِ، قُولِي لَهُ: تَقُولُ لَكَ أُمّ سَلَمَةَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ سَمِعْتُكَ تَنْهَى عَنْ هَاتَيْنِ، وَأَرَاكَ تُصَلِّيهِمَا؟ فَإِنْ أَشَارَ بِيَدِهِ فَاسْتَأْخِرِي عَنْهُ. فَفَعَلَتِ الجَارِيَةُ، فَأَشَارَ بِيَدِهِ، فَاسْتَأْخَرَتْ عَنْهُ، فَلَمَّا ٱنْصَرَفَ قَالَ: (يَا بِنْتَ أَبِي أُمَيَّةَ، سَأَلْتِ عَنِ الرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ العَصْرِ، وَإِنَّهُ أَتَانِي نَاسٌ مِنْ عَبْدِ القَيْسِ، فَشَغَلُونِي عَنِ الرَّكْعَتَيْنِ اللَّتَيْنِ بَعْدَ الظُّهْرِ فَهُمَا هَاتَانِ). [رواه البخاري: ١٢٣٣]

लोग मेरे पास आ गये थे, जिन्होंने जुहर के बाद दो रकअतों में मुझे देर करा दी तो यह वही दो रकअतें हैं। (यह नफ़्ल नहीं है।)

फायदे : इससे मालूम हुआ कि नमाज़ में किसी की बात सुनने और समझने से नमाज़ में कोई खराबी नहीं आती।

(औनुलबारी, 2/253)

किताबुल जनाइज़
जनाज़े के बयान में

बाब 1 : जिस आदमी की आखरी बात ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' हो।

١ - باب: مَنْ كَانَ آخِرُ كَلامِهِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ الله

633 : अबू जर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरे रब की तरफ से मेरे पास एक आने वाला आया, उसने मुझे खुशखबरी दी कि मेरी उम्मत में से जो आदमी इस हालत में मरे कि वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करता हो तो वह जन्नत में दाखिल होगा, मैंने कहा अगरचे उसने जिना और चोरी की हो। आपने फरमाया, हां अगरचे उसने जिना किया हो और चोरी भी की हो।

٦٣٣ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَتَانِي آتٍ مِنْ رَبِّي، فَأَخْبَرَنِي، أَوْ قَالَ: بَشَّرَنِي، أَنَّهُ مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِي لاَ يُشْرِكُ بِٱللهِ شَيْئًا دَخَلَ الجَنَّةَ. قُلْتُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ). [رواه البخاري: ١٢٣٧]

फायदे : मतलब यह है कि जो आदमी तौहीद पर मरे तो वह हमेशा के लिए जहन्नम में नहीं रहेगा, आखिरकार जन्नत में दाखिल होगा, चाहे अल्लाह के हक जैसे जिना और लोगों के हक जैसे चोरी ही क्यों न हो। ऐसी हालत में लोगों के हक की अदायगी के बारे में अल्लाह जरूर कोई सूरत पैदा करेगा। (औनुलबारी, 2/255)

634 : अब्दुल्लाह रज़ि. ने फरमाया कि जो आदमी शिर्क की हालत में मर जाये वो दोजख में जायेगा और मैं यह कहता हूं जो आदमी इस हाल में मर जाये कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करता हो, वो जन्नत में जायेगा।

٦٣٤ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ مَاتَ يُشْرِكُ بِٱللهِ شَيْئًا دَخَلَ النَّارَ). وَقُلْتُ أَنَا: مَنْ مَاتَ لاَ يُشْرِكُ بِٱللهِ شَيْئًا دَخَلَ الجَنَّةَ. [رواه البخاري: ١٢٣٨]

फायदे : इस हदीस से इमाम बुखारी एक फरमाने नबवी की वहाजत करना चाहते हैं, यानी जरूरी नहीं कि मरते वक़्त कलमा-ए-इख्लास पढ़ने से ही जन्नत में दाखिल होगा, बल्कि इससे मुराद तौहीद का अकीदा रखना और इसी अकीदे पर मरना है।

(औनुलबारी, 2/257)

बाब 2 : जनाज़े में शामिल होने का हुक्म।

٢ - باب: الأمْرُ بِاتِّبَاعِ الجَنَائِزِ

635 : बरा बिन आजिब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें सात बातों का हुक्म दिया है और सात चीजों से मना फरमाया है, जिन बातों का हुक्म दिया है, वह जनाज़े के साथ जाना, मरीज की खबरगीरी करना, दावत कुबूल करना, कमजोर की मदद करना, क़सम का पूरा करना, सलाम का जवाब देना है और छींकने वाले को दुआ देना और आपने चांदी के बर्तन, सोने की अंगूठी, रेशम, दीबाज, कसी और इस्तबरक सें मना फरमाया था।

٦٣٥ : عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ بِسَبْعٍ وَنَهَانَا عَنْ سَبْعٍ: أَمَرَنَا بِاتِّبَاعِ الجَنَائِزِ، وَعِيَادَةِ المَرِيضِ، وَإِجَابَةِ ٱلدَّاعِي، وَنَصْرِ المَظْلُومِ، وَإِبْرَارِ القَسَمِ. وَرَدِّ السَّلاَمِ، وَتَشْمِيتِ العَاطِسِ. وَنَهَانَا عَنْ آنِيَةِ الفِضَّةِ، وَخَاتَمِ ٱلذَّهَبِ، وَالحَرِيرِ، وَٱلدِّيبَاجِ، وَالقَسِّيِّ، وَالإِسْتَبْرَقِ. [رواه البخاري: ١٢٣٩]

फायदे : इस हदीस में जिन सात चीजों से मना किया गया है, उनमें सातवीं यह है कि रेशमी गद्दियों के इस्तेमाल से भी मना फरमाया है। जो सवारी की जीन (पीठ) पर रखी जाती है। इमाम बुखारी ने इसे (किताबुल लिबास, **5863**) में बयान फरमाया है।

बाब 3 : जब मुर्दा कफन में लपेट दिया जाये तो उसके पास जाना।

٣ - باب: الدُّخُولُ عَلَى المَيِّتِ بَعدَ المَوْتِ إذَا أُدرِجَ فِي أكْفَانِهِ

636 : उम्मे अलाअ रज़ि. एक अन्सारी औरत़ से रिवायत है, जो उन औरतों में शामिल हैं, जिन्होंने आपसे बैअत की थी, उन्होंने फरमाया कि जब मुहाजरीन कुरआ अन्दाजी के जरीये बांटे गये तो हमारे हिस्से में उसमान बिन मजऊन रज़ि. आये, जिनको हम अपने घर लाये और वह अचानक बीमार हो गये। जब उन्होंने इन्तेकाल किया तो हमने उन्हें नहलाया और उनके कपड़ों में दफनाया इसी बीच रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये। मैंने कहा, ऐ अबू साइब रज़ि.! तुम पर अल्लाह की रहमत हो, मेरी शहादत तुम्हारे लिए यह है कि अल्लाह तआला ने तुम्हें कामयाब कर दिया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें इज्जत दी है? मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम!

٦٣٦ : عَنْ أُمِّ العَلاَءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا - آمْرَأَة مِنَ الأَنْصَارِ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ -: أَنَّهُ اقْتُسِمَ المُهَاجِرُونَ قُرْعَةً، فَطَارَ لَنَا عُثْمانُ بْنُ مَظْعُونٍ، فَأنْزَلْنَاهُ فِي أَبْيَاتِنَا، فَوَجِعَ وَجَعَهُ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، فَلَمَّا تُوُفِّيَ وَغُسِّلَ وَكُفِّنَ فِي أثْوَابِهِ، دَخَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، فَقُلْتُ: رَحْمَةُ ٱللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ، فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ: لَقَدْ أَكْرَمَكَ ٱللهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وَما يُدْرِيكِ أَنَّ ٱللهَ أَكْرَمَهُ). فَقُلْتُ: بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَمَنْ يُكْرِمُهُ ٱللهُ؟ فَقَالَ: (أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ اليَقِينُ، وَٱللهِ إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الخَيْرَ، وَٱللهِ ما أَدْرِي، وَأَنَا رَسُولُ ٱللهِ، ما يُفْعَلُ بِي). قالَتْ: فَوَٱللهِ لاَ أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ أَبَدًا. [رواه البخاري: ١٢٤٣]

मेरे मां-बाप आप पर फिदां हो तो फिर अल्लाह किसे कामयाब करेगा? आपने फरमाया बेशक इन्हें (अच्छी हालत में) मौत आई है। अल्लाह की कसम! मैं भी इनके लिए भलाई की उम्मीद रखता हूँ लेकिन अल्लाह की कसम! मैं उसका रसूल होकर अपने बारे में भी नहीं जानता हूँ कि मेरे बारे में क्या मामला किया जायेगा? उम्मे अलाअ रज़ि. कहती हैं कि उसके बाद मैंने किसी के पाकबाज होने की गवाही नहीं दी।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि यकीनी तौर पर किसी को जन्नती नहीं कहना चाहिए, क्योंकि जन्नत के हासिल करने के लिए साफ नियत शर्त है, जिस पर अल्लाह के अलावा और कोई खबरदार नहीं हो सकता। अलबत्ता जिन हजरात के बारे में यकीनी दलील है जैसे "अशरा मुबश्शरा" वगैरह उन्हें जन्नती कहने में कोई हर्ज नहीं। (औनुलबारी, 2/246)

637 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मेरे बाप उहद की लड़ाई में शहीद हो गये तो मैं बार बार उनके चेहरे से पर्दा हटाता और रोता था। लोग मुझे इससे मना करते थे, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे मना नहीं फरमाते थे, फिर मेरी फुफी फातिमा रज़ि. भी रोने लगी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तू रो या न रो, फरिश्ते तो उन पर अपने परों का साया किये रहे, यहां तक कि तुमने उन्हें उठा लिया।

٦٣٧ : عَنْ جابِرِ بن عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا قُتِلَ أَبِي، جَعَلْتُ أَكْشِفُ الثَّوْبَ عَنْ وَجْهِهِ، أَبْكِي وَيَنْهَوْنَنِي عَنْهُ، وَالنَّبِيُّ ﷺ لاَ يَنْهَانِي، فَجَعَلَتْ عَمَّتِي فاطِمَةُ تَبْكِي، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (تَبْكِينَ أَوْ لاَ تَبْكِينَ، ما زَالَتِ المَلاَئِكَةُ تُظِلُّهُ بِأَجْنِحَتِهَا حَتَّى رَفَعْتُمُوهُ). [رواه البخاري: ١٢٤٤]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके बारे में जन्नती होने का फैसला फरमाया, इसकी बुनियाद वहय थी, वैसे अपने गुमान से किसी के बारे में जन्नती होने का फैसला नहीं करना चाहिए।

बाब 4 : जो आदमी मय्यत के रिश्तेदारों को उसके मरने की खबर खुद दे।

٤ - باب: الرَّجُلُ يَنْعَى إِلَى أَهْلِ الْمَيِّتِ بِنَفْسِهِ

638 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजाशी के मरने की खबर सुनाई, जिस दिन वह मरे थे, फिर आप ईदगाह तशरीफ ले गये, सफें ठीक करने के बाद चार तकबीरें कहकर जनाज़े की नमाज़ अदा की।

٦٣٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَعَى النَّجَاشِيَّ فِي الْيَوْمِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ، خَرَجَ إِلَى الْمُصَلَّى، فَصَفَّ بِهِمْ، وَكَبَّرَ أَرْبَعًا. [رواه البخاري: ١٢٤٥]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि गायबाना जनाज़े की नमाज पढ़ी जा सकती है, लेकिन मरने वाला समाज में असर और पहुंच वाला हो।

---

639 : अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मौता की लड़ाई में पहले जैद रज़ि. ने झण्डा उठाया और वह शहीद हो गये, फिर जाफर रज़ि. ने झण्डा उठाया, वह भी

٦٣٩ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَخَذَ الرَّايَةَ زَيْدٌ فَأُصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَهَا جَعْفَرٌ فَأُصِيبَ ثُمَّ أَخَذَهَا عَبْدُ ٱللهِ بْنُ رَوَاحَةَ فَأُصِيبَ - وَإِنَّ عَيْنَيْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ لَتَذْرِفَانِ - ثُمَّ أَخَذَهَا خَالِدُ ابْنُ الْوَلِيدِ مِنْ غَيْرِ إِمْرَةٍ فَفُتِحَ لَهُ).

[رواه البخاري: ١٢٤٦]

शहीद हो गये, फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि. ने झण्डा उठाया तो वह भी शहीद हो गये, उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखों से आंसू जारी थे, फिर खालिद बिन वलीद रज़ि. ने सालारी के बगैर ही झण्डा उठाया तो उनके हाथ पर जीत हुई।

फायदे : हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ि. को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फौज की कमान संभालने का हुक्म नहीं दिया, उसके बावजूद उन्होंने कमान संभाली और काफिरों को हार से दो-चार किया। मालूम हुआ कि संगीन हालत में ऐसा करना जाइज है। (औनुलबारी, 2/266)

बाब 5 : उस आदमी की फज़ीलत जिसका कोई बच्चा मर जाये तो वो सवाब की उम्मीद से सब्र करे।

٥ - باب: فَضْلُ مَن مَاتَ لَهُ وَلَدٌ فَاحتَسَبَ

640 : अनस रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिस मुसलमान के तीन नाबालिग बच्चे मर जायें तो अल्लाह तआला बच्चों पर अपनी मेहरबानी ज्यादा होने के सबब उसे जन्नत में दाखिल फरमाता है।

٦٤٠ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (ما مِنَ النَّاسِ مِنْ مُسْلِمٍ، يُتَوَفَّى لَهُ ثَلاثٌ لَمْ يَبْلُغُوا الْحِنْثَ، إِلَّا أَدْخَلَهُ ٱللهُ الجَنَّةَ، بِفَضْلِ رَحْمَتِهِ إِيَّاهُمْ). [رواه البخاري: ١٢٤٨]

फायदे : एक रिवायत में दो बच्चों बल्कि एक बच्चे के मरने का भी यही हुक्म है, इस शर्त के साथ कि सब्र किया जाये और कोई बे-अदबी की बात मुंह से न कही जाये। (औनुलबारी, 2/268)

बाब 6 : मय्यत को ताक मर्तबा गुस्ल देना पसन्दीदा है।

٦ - باب: ما يُسْتَحَبُّ أَنْ يُغسَلَ وِتْرًا

641 : उम्मे अतिय्या रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बेटी की वफात के वक़्त हमारे पास तशरीफ लाये और फरमाया कि इसे तीन बार या पांच बार या इससे ज्यादा अगर जरूरत हो तो पानी और बेरी के पत्तों से नहलाओ और आखरी बार काफूर डाल दो या थोड़ा सा काफूर शामिल कर दो और फारिग होकर मुझे खबर देना। चूनांचे हमने फारिग होकर आपको खबर दी तो आपने हमें अपना तहबन्द दिया और फरमाया, इसे उनके बदन पर लपेट दो, यानी इसकी इजार बना दी जाये।

٦٤١ : عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ الأَنْصَارِيَّةِ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا - قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، حِينَ تُوُفِّيَتِ ابْنَتُهُ، فَقَالَ: (اغْسِلْنَهَا ثَلاثًا، أَوْ خَمْسًا، أَوْ أَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ إِنْ رَأَيْتُنَّ ذٰلِكَ، بِمَاءٍ وَسِدْرٍ، وَاجْعَلْنَ فِي الآخِرَةِ كَافُورًا، أَوْ شَيْئًا مِنْ كَافُورٍ، فَإِذَا فَرَغْتُنَّ فَآذِنَّنِي). فَلَمَّا فَرَغْنَا آذَنَّاهُ، فَأَعْطَانَا حِقْوَهُ، فَقَالَ: (أَشْعِرْنَهَا إِيَّاهُ). تَعْنِي إِزَارَهُ. [رواه البخاري: ١٢٥٣]

फायदे : अपना तहबन्द बरकत के लिए दिया था, मय्यत को एक बार नहलाना फर्ज है और इससे ज्यादा जरूरत के मुताबिक मुस्तहब है। (औनुलबारी, 2/270)

बाब 7 : मय्यत को दायीं तरफ से नहलाना शुरू किया जाये।

٧ - باب: يُبدأ بِمَيَامِنِ المَيِّتِ

642 : उम्मे अतिय्या रज़ि. ही से एक दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

٦٤٢ : وَفِي رِوَايَةٍ أُخرى أَنَّهُ قَالَ: (ابْدَأْنَ بِمَيَامِنِهَا وَمَوَاضِعِ الْوُضُوءِ مِنْهَا). قَالَتْ: وَمَشَطْنَاهَا

ثَلاَثَةَ قُرُونٍ. [رواه البخاري: ١٢٥٤]

फरमाया कि दायीं तरफ और वुजू की जगहों से गुस्ल को शुरू करना। उम्मे अतिय्या रज़ि. कहती हैं कि हमने कंघी करके उनके बालों के तीन हिस्से कर दिये थे।

फायदे : मालूम हुआ कि मय्यत को कुल्ली कराना और उसके नाक में पानी डालना मुस्तहब है। नीज यह वुजू गुस्ल का हिस्सा है। (औनुलबारी, 2/272)

٨ - باب: الثِّيَابُ البِيضُ لِلكَفَنِ

बाब 8 : कफ़न के लिए सफेद कपड़ों का होना।

٦٤٣ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كُفِّنَ فِي ثَلاَثَةِ أَثْوَابٍ يَمَانِيَةٍ، بِيضٍ سَحُولِيَّةٍ مِنْ كُرْسُفٍ، لَيْسَ فِيهِنَّ قَمِيصٌ وَلاَ عِمَامَةٌ. [رواه البخاري: ١٢٦٤]

643 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तीन सफेद कपड़ों में कफ़न दिया गया जो यमनी सहूली रूई से बने हुए थे और उनमें न तो कुर्ता था न पगड़ी।

फायदे : एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तीन सफेद कपड़ों में कफ़न दिया गया, इमाम तिरमजी के कहने के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कफ़न के बारे में यही एक रिवायत सही है, पगड़ी बांधना बिदअत है, इससे बचा जाये। (औनुलबारी, 2/273)

٩ - باب: الكَفَنُ فِي ثَوْبَيْنِ

बाब 9 : दो कपड़ों में कफ़न देना।

٦٤٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَيْنَما رَجُلٌ وَاقِفٌ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ بِعَرَفَةَ، إِذْ وَقَعَ عَنْ

644 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

رَاحِلَتِهِ فَوَقَصَتْهُ، أَوْ قَالَ: فَأَوْقَصَتْهُ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (اغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ، وَكَفِّنُوهُ فِي ثَوْبَيْنِ، وَلاَ تُحَنِّطُوهُ، وَلاَ تُخَمِّرُوا رَأْسَهُ، فَإِنَّهُ يُبْعَثُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مُلَبِّيًا). [رواه البخاري: ١٢٦٥]

वसल्लम के साथ अरफा में ठहरा हुआ था कि अचानक अपनी सवारी से गिरा। जिससे उसकी गर्दन टूट गयी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, इसे पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल देकर दो कपड़ों में कफ़न दो। मगर हनूत (एक खुश्बू) न लगाना और न इसके सर को ढ़ांकना क्योंकि यह कयामत के दिन लब्बेक कहता हुआ उठाया जायेगा।

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस पर यूँ उनवान कायम किया है, ''मोहरिम को क्योंकर कफ़न दिया जाये'' इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि मोहरिम जब मर जाये तो उस पर अहराम के हुक्म बाकी रहेंगे। (औनुलबारी, 2/275)

बाब 10 : मय्यत के लिए कफ़न।

١٠ - باب: الكَفَنُ لِلْمَيِّتِ

645 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि जब अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफिक मर गया तो उसके बेटे ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाजिर होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उसके कफ़न के लिए अपना कुर्ता दे दीजिए, उसकी जनाज़े की नमाज पढ़ायें और उसके लिए बख्शिश की दुआयें कीजिए। तो

٦٤٥ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ أُبَيٍّ لَمَّا تُوُفِّيَ، جَاءَ ابْنُهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَعْطِنِي قَمِيصَكَ أُكَفِّنْهُ فِيهِ، وَصَلِّ عَلَيْهِ، وَٱسْتَغْفِرْ لَهُ. فَأَعْطَاهُ النَّبِيُّ ﷺ قَمِيصَهُ، فَقَالَ: (آذِنِّي أُصَلِّي عَلَيْهِ). فَآذَنَهُ، فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يُصَلِّيَ عَلَيْهِ جَذَبَهُ عُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، فَقَالَ: أَلَيْسَ ٱللهُ نَهَاكَ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَى الْمُنَافِقِينَ؟ فَقَالَ: (أَنَا بَيْنَ خِيَرَتَيْنِ، قَالَ: ﴿ٱسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ

لَهُمْ إِن تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَن يَغْفِرَ ٱللَّهُ لَهُمْ﴾). فَصَلَّى عَلَيْهِ، فَنَزَلَتْ: ﴿وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰٓ أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَدًا﴾. [رواه البخاري: ١٢٦٩]

आपने अपना कुर्ता दिया और कहा कि जब जनाज़ा तैयार हो जाये तो मुझे खबर कर देना, मैं उसकी जनाज़े की नमाज पढूंगा। चूनांचे उसने आपको खबर की, मगर जब आपने उसका जनाज़ा पढ़ने का इरादा फरमाया तो उमर रज़ि. ने आपको रोक लिया और कहा, क्या अल्लाह तआला ने मुनाफिकों की जनाज़े की नमाज पढ़ने से आपको मना नहीं फरमाया है? आपने फरमाया कि मुझे दोनों बातों का इख्तियार दिया गया है। अल्लाह तआला का इरशाद है, तुम उनके लिए मगफिरत करो या न करो (दोनों बराबर हैं) अगर सत्तर बार भी उनके गुनाहों की माफी चाहोगे तो तब भी अल्लाह उन्हें हरगिज माफ़ नहीं फरमाएगा।'' फिर आपने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, इस पर यह आयत नाजिल हुई। अगर कोई मुनाफिक मर जाये तो उसकी कभी जनाजे की नमाज न पढ़ो।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना कुर्ता इसलिए दिया था, कि उसके बेटे अब्दुल्लाह रज़ि. की इज्जत अफजाई होगी, उसका बाप मुनाफिक था, नीज बदर में जब अब्बास रज़ि. कैद होकर आये तो उनके बदन पर कुर्ता न था तो अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफिक ने अपना कुर्ता उन्हें पहनाया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका बदला दिया ताकि मुनाफिक का कोई अहसान बाकी न रहे। (औनुलबारी, 2/276)

646 : जाबिर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

٦٤٦ : عَنْ جابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ ﷺ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ أُبَيٍّ بَعْدَ ما دُفِنَ، فَأَخْرَجَهُ، فَنَفَثَ فِيهِ

अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफिक की मय्यत पर तशरीफ लाये, जब उसे कब्र में रख दिया गया तो आपने उसे निकलवाकर किसी कदर थूक उस पर डाला और उसे अपनी कमीज पहनाई।

مِنْ رِيقِهِ، وَأَلْبَسَهُ قَمِيصَهُ [رواه

फायदे : पहली रिवायत में कमीज देने से मुराद है कि आपने देने का वादा फरमाया हो, हुआ यूँ कि अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफिक के रिश्तेदारों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ देना ठीक न समझा। जब उसे कब्र में रख दिया गया तो आपने उसे अपना कुर्ता पहनाया। (औनुलबारी, 2/279)

बाब 11 : जब कफ़न सिर्फ इतना हो जो मय्यत के सर या पांव को छिपाये तो उससे सर को ढ़ांप दिया जाये।

١١ - باب: إذا لم يجد كفناً إلا ما يواري رأسه أو قدميه غطى به رأسه

647 : खब्बाब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम लोगों ने सिर्फ अल्लाह की खुशी हासिल करने के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हिजरत की तो हमारा सवाब अल्लाह के जिम्मे हो गया। हममें से कुछ लोगो ने तो मरने तक अपने बदले में से कुछ न खाया। उन्हीं लोगों में मुसअब बिन उमैर रज़ि. थे और हममें से कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनके लिए उनका फल पक

٦٤٧ : عَنْ خَبَّابٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: هَاجَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ نَلْتَمِسُ وَجْهَ ٱللهِ، فَوَقَعَ أَجْرُنَا عَلَى ٱللهِ، فَمِنَّا مَنْ مَاتَ لَمْ يَأْكُلْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا، مِنْهُمْ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ، وَمِنَّا مَنْ أَيْنَعَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ، فَهُوَ يَهْدِبُهَا، قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ، فَلَمْ نَجِدْ مَا نُكَفِّنُهُ بِهِ إِلَّا بُرْدَةً، إِذَا غَطَّيْنَا بِهَا رَأْسَهُ خَرَجَتْ رِجْلَاهُ، وَإِذَا غَطَّيْنَا رِجْلَيْهِ خَرَجَ رَأْسُهُ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ نُغَطِّيَ رَأْسَهُ، وَأَنْ نَجْعَلَ عَلَى رِجْلَيْهِ مِنَ الإِذْخِرِ. [رواه البخاري: ١٢٧٦]

गया और वह उसे उठा उठाकर खाते हैं। मुसअब बिन उमैर रज़ि. उहद की जंग में शहीद हुये उनके कफ़न के लिए कुछ न मिला। बस एक चादर थी, अगर उनका सर उससे छिपाते तो पांव खुल जाते, पांव छिपाते तो सर बाहर निकल आता। आखिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें हुक्म दिया कि उनका सर छिपा दो और पांव पर कुछ इजखिर घास डाल दो।

फायदे : मालूम हुआ कि कफ़न में सतरपोशी जरूरी है। नीज इस हदीस से हज़रत मुसअब बिन उमैर रजिं. की फज़ीलत भी मालूम होती है कि आखिरत में उनके सवाब में कोई कमी नहीं होगी। (औनुलबारी, 2/280)

बाब 12 : नबी सल्ल.के जमाने में किसी किस्म के ऐतराज व इनकार के बगैर जिसने अपना कफ़न तैयार किया।

١٢ - باب: مَنِ استَعَدَّ الكَفَنَ في زَمَنِ النَّبِيِّ - ﷺ - فَلَم يُنكَرْ عَلَيهِ

648 : सहल रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक औरत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए तैयार की हुई हाशियेदार चादर लायी। रावी ने कहा, क्या तुम जानते हो कि बुरदा क्या चीज है? लोगों ने कहा, बुरदा चादर को कहते हैं तो उसने कहा, हां। खैर औरत ने कहा, मैंने इसे अपने हाथ से तैयार किया है और आपको पहनाने के लिए लाई हूं। चूनांचे

٦٤٨ : عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَنَّ ٱمْرَأَةً جاءَتِ النَّبِيَّ ﷺ بِبُرْدَةٍ مَنْسُوجَةٍ، فِيهَا حاشِيَتُهَا، أَتَدْرُونَ ما الْبُرْدَةُ؟ قَالُوا: الشَّمْلَةُ، قَالَ: نَعَمْ. قَالَتْ: نَسَجْتُهَا بِيَدِي فَجِئْتُ لِأَكْسُوَكَهَا، فَأَخَذَهَا النَّبِيُّ ﷺ مُحْتَاجًا إِلَيْهَا، فَخَرَجَ إِلَيْنَا وَإِنَّهَا إِزارُهُ، فَحَسَّنَهَا فُلانٌ فَقَالَ: اكْسُنِيهَا، ما أَحْسَنَهَا، قَالَ الْقَوْمُ: ما أَحْسَنْتَ، لَبِسَهَا النَّبِيُّ ﷺ مُحْتَاجًا إِلَيْهَا، ثُمَّ سَأَلْتَهُ، وَعَلِمْتَ أَنَّهُ لا يَرُدُّ، قَالَ: إِنِّي وَٱللهِ، ما

سَأَلْتُهُ لأَلْبَسَهَا، إِنَّمَا سَأَلْتُهُ لِتَكُونَ كَفَنِي. قَالَ سَهْلٌ: فَكَانَتْ كَفَنَهُ. [رواه البخاري: ١٢٧٧]

उस वक़्त आपको उसकी जरूरत भी थी, इसलिए उसे कबूल फरमा लिया। फिर आप बाहर तशरीफ लाये तो वह चादर आपकी इजार थी। एक आदमी ने उसकी तारीफ की और कहने लगा क्या ही उम्दा चादर है। यह मुझे दे दीजिए। लोगों ने उससे कहा, तूने अच्छा नहीं किया। क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत सख़्त जरूरत के सबब इसे पहना था। मगर तूने मांग ली है हालांकि तू जानता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी का सवाल रद्द नहीं करते। उस आदमी ने कहा, अल्लाह की कसम! मैंने पहनने के लिए नहीं मांगी बल्कि इसलिए कि वह मेरा कफ़न हो। सहल रज़ि. फरमाते हैं कि फिर उसी चादर से उस आदमी का कफ़न तैयार हुआ।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि अपनी जिन्दगी में कफ़न तैयार करके रख लेना काबिले ऐतराज नहीं है। (औनुलबारी, 2/283)

बाब 13 : औरतों का जनाज़े के साथ जाना (मना है)

١٣ - باب: اتِّبَاعُ النِّسَاءِ الجَنَائِزَ

६४९ : عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: نُهِينَا عَنِ اتِّبَاعِ الجَنَائِزِ، وَلَمْ يُعْزَمْ عَلَيْنَا. [رواه البخاري: ١٢٧٨]

649 : उम्म अतिय्या रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमें जनाजों के साथ जाने से मना कर दिया गया, फिर भी कोई सख़्ती न थी।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि मनाही के हुक्म की कई किस्में हैं, कुछ तो ऐसी हैं, जिनका करना हराम है और कुछ ऐसी भी हैं, जिन पर अमल करना पसन्दीदा और बेहतर नहीं है। जैसा कि इस हदीस से जाहिर है। (औनुलबारी, 2/285)

बाब 14 : औरत का अपने शौहर के अलावा किसी दूसरे पर सोग (दुख) करना।

١٤ - باب: إحداد المرأة على غير زوجها

650 : उम्मे हबीबा रज़ि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना जो औरत अल्लाह पर ईमान और आखिरत के दिन पर यकीन रखती हो, उसके लिए यह जाइज नहीं कि वह किसी मय्यत पर तीन दिन से ज्यादा सोग करे, लेकिन उसे अपने शौहर पर चार महीने दस दिन तक सोग करना चाहिए।

٦٥٠ : عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (لاَ يَحِلُّ لامْرَأَةٍ تُؤْمِنُ بِٱللهِ وَٱلْيَوْمِ الآخِرِ، تُحِدُّ عَلَى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلاَثٍ، إِلَّا عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا) [رواه البخاري: ١٢٨١]

फायदे : जिस औरत के पेट में बच्चा हो, उस औरत के सोग की मुद्दत बच्चा पैदा होने तक है, चाहे चार महीने दस दिन से पहले पैदा हो या उसके बाद। (औनुलबारी, 2/284)

बाब 15 : कब्रों की जियारत करने का बयान।

١٥ - باب: زِيَارَةُ القُبُورِ

651 : अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुजर एक औरत के पास से हुआ जो कब्र के पास बैठी रो रही थी। आपने उसे

٦٥١ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ بِامْرَأَةٍ تَبْكِي عِنْدَ قَبْرٍ، فَقَالَ: (اتَّقِي ٱللهَ وَٱصْبِرِي). قَالَتْ: إِلَيْكَ عَنِّي، فَإِنَّكَ لَمْ تُصَبْ بِمُصِيبَتِي، وَلَمْ تَعْرِفْهُ، فَقِيلَ لَهَا: إِنَّهُ النَّبِيُّ ﷺ، فَأَتَتْ بَابَ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمْ تَجِدْ

फरमाया, अल्लाह से डर और सब्र कर। उस औरत ने आपको न पहचाना और कहने लगी, मुझसे अलग रहो, क्योंकि तुम्हें मुझ जैसी मुसीबत नहीं पड़ी। जब उसे बताया गया कि यह तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे, वह (माफी के लिए) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरवाजे पर हाजिर हुई। उसने आपके दरवाजे पर कोई चौकीदार न देखकर कहा कि मैंने आपको पहचाना न था (माफ फरमायें) आपने फरमाया, सब्र तो शुरू सदमे के वक़्त ही सही माना जाता है।

عِنْدَهُ بَوَّابِينَ، فَقَالَتْ: لَمْ أَعْرِفْكَ، فَقَالَ: (إِنَّمَا الصَّبْرُ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الأُولَى). [رواه البخاري: ١٢٨٣]

फायदे : औरतों के लिए कब्रों की जियारत करना जाइज है। शर्त यह है कि बार बार न जायें और एक साथ जमा होकर इसका एहतिमाम न करें। नीज वहां जाकर शरीअत के खिलाफ काम न करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस औरत को सदमें पर सब्र करने की हिदायत जरूर की है, लेकिन उसे कब्रों की जियारत से मना नहीं फरमाया। (औनुलबारी, **2/289**)

बाब 16 : नबी सल्ल. का इरशाद है कि मय्यत के घर वालों के रोने से मय्यत को अजाब होता है, यह उस वक़्त जब रोना-पीटना उसके खानदान का तरीका हो।

١٦ - باب: قَولُ النَّبِيِّ ﷺ: «يُعَذَّبُ المَيِّتُ بِبَعضِ بُكاءِ أَهلِهِ عَلَيهِ» إِذَا كَانَ النَّوحُ مِن سُنَّتِهِ

652 : उसामा बिन जैद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक बेटी ने आपके पास पैगाम

٦٥٢ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَرْسَلَتِ ابْنَةُ النَّبِيِّ ﷺ إِلَيْهِ: إِنَّ ابْنًا لِي قُبِضَ فَائْتِنَا، فَأَرْسَلَ يُقْرِئُ السَّلَامَ، وَيَقُولُ: إِنَّ

لله ما أخذ وله ما أعطى، وكُلُّ شيء عنده بأجلٍ مُسمّى، فلتصبر ولتحتسب. فأرسلت إليه تقسم عليه ليأتينها، فقام ومعه: سعد بن عبادة، ومعاذ بن جبل، وأبي بن كعب، وزيد بن ثابت، ورجال، فرُفع إلى رسول الله ﷺ الصبي ونفسه تتقعقع، قال: حسبته أنه قال: كأنها شنٌّ، ففاضت عيناه، فقال سعد: يا رسول الله، ما هذا؟ فقال: (هذه رحمة جعلها الله في قلوب عباده، وإنما يرحم الله من عباده الرحماء). [رواه البخاري: ١٢٨٤]

भेजा कि मेरा लड़का मरने की हालत में है। जल्दी तशरीफ लाये। आपने सलाम के बाद कहला भेजा कि जो कुछ अल्लाह ने लिया या दिया, सब उसी का है और हर चीज (की जिन्दगी) के लिए उसके यहां एक वक़्त मुकर्रर है। इसलिए तुम्हें सवाब की उम्मीद करना चाहिए। बेटी ने दोबारा पैगाम भेजा और कसम दिलाई कि आप जरूर तशरीफ लाये। चूनांचे आप खड़े हो गये। आपके साथ सअद बिन उबादा, मआज बिन जबल, उबई बिन काब, जैद बिन साबित रज़ि. और दूसरे कुछ लोग थे, वहां पहुंचने पर बच्चे को उठाकर आपकी खिदमत में लाया गया, उस वक़्त उसकी सांस उखड़ी हुई थी, रावी के खयाल के मुताबिक सांस का आना और जाना पुराने मशकीजे की तरह था। यह देखकर आपकी दोनों आंखों से आंसू बहने लगे। सअद रज़ि. ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह रोना कैसा है? आपने फरमाया यह रहमत है जो अल्लाह ने अपने बन्दों के दिलों में रखी है और अल्लाह सिर्फ उन्हीं बन्दों पर रहम करता है जो रहमदिल होते हैं।

फायदे : मकसद यह है कि किसी के मरने या मुसीबत आने पर रोना एक कुदरती बात है। इस पर पकड़ नहीं अलबत्ता गाल पीटना, चिल्लाना या जुबान से नाशुक्री की बातें करना मना है।

(औनुलबारी, **2/294**)

653 : अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी के जनाज़े में हाजिर थे। आप कब्र के पास बैठे हुये थे। मैंने देखा कि आपकी आंखों से आंसू निकल रहे थे। फिर आपने फरमाया कि क्या तुममें कोई ऐसा आदमी है, जो आज रात अपनी बीवी से न मिला हो? अबू तल्हा रज़ि. ने कहा, मैं हूँ। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम ही इसे कब्र में उतारो, चूनांचे वह उनकी कब्र में उतरे।

٦٥٣ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: شَهِدْنَا بِنْتًا لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ، قَالَ: وَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ جَالِسٌ عَلَى الْقَبْرِ، قَالَ: فَرَأَيْتُ عَيْنَيْهِ تَدْمَعَانِ، قَالَ: فَقَالَ: (هَلْ فِيكُمْ رَجُلٌ لَمْ يُقَارِفِ اللَّيْلَةَ). فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَنَا، قَالَ: (فَانْزِلْ). قَالَ: فَنَزَلَ فِي قَبْرِهَا. [رواه البخاري: ١٢٨٥]

फायदे : शिआ राफजी गलत परोपगण्डा करते हैं कि हज़रत उसमान रज़ि. ने मौत के बाद हज़रत उम्मे कुलसूम से मिले थे या उनसे मिलने की वजह से मौत हुई थी। हदीस में इसका इशारा तक भी नहीं है। (औनुलबारी, 2/294)

654 : उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मय्यत को उस पर उसके रिश्तेदारों के कुछ रोने की वजह से अजाब दिया जाता है। उमर रज़ि. के मरने के बाद यह खबर आइशा रज़ि. को मिली तो उन्होंने फरमाया, अल्लाह उमर रज़ि. पर

٦٥٤ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ الْمَيِّتَ يُعَذَّبُ بِبَعْضِ بُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ).

فبلغ ذلك عائشة رضي الله عنها بعد موت عمر رضي الله عنه، فَقَالَتْ: رَحِمَ ٱللهُ عُمَرَ، وَٱللهِ ما حَدَّثَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِنَّ ٱللهَ لَيُعَذِّبُ الْمُؤْمِنَ ببعض بكاء أَهْلِهِ عَلَيْهِ، وَلٰكِنْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ ٱللهَ

لَيَزِيدُ الْكَافِرَ عَذَابًا بِبُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ). وَقَالَتْ: حَسْبُكُمُ الْقُرْآنُ: ﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ﴾. [رواه البخاري: ١٢٨٨]

रहम करें। अल्लाह की कसम! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह नहीं फरमाया कि मोमिन को उसके रिश्तेदारों के रोने की वजह से अल्लाह तआला अजाब में मुब्तला करता है, बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया कि अल्लाह तआला काफिर पर उसके रिश्तेदारों के उस पर रोने के सबब अजाब ज्यादा करता है, तुम्हारे लिए कुरआन (की यह आयत) काफी है, ''कोई आदमी किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा।''

फायदे : उस आदमी को जरूर अजाब होता है जो अपने रिश्तेदारों को मरने के बाद रोने धोने, चिल्लाने की वसीयत करके गया हो, अगर मरने वाले ने वसीयत न की हो तो रिश्तेदारों के रोने से मय्यत को अजाब नहीं होगा। (औनुलबारी, 2/297)

---

٦٥٥ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَرَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَلَى يَهُودِيَّةٍ يَبْكِي عَلَيْهَا أَهْلُهَا، فَقَالَ: (إِنَّهُمْ لَيَبْكُونَ عَلَيْهَا، وَإِنَّهَا لَتُعَذَّبُ فِي قَبْرِهَا). [رواه البخاري: ١٢٨٩]

655 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक यहूदी औरत (की कब्र) पर से गुजरे जिस पर उसके घर वाले रो रहे थे। आपने फरमाया कि यह तो इस पर रोना-धोना कर रहे हैं और इसे अपनी कब्र में अजाब हो रहा है।

फायदे : इस हदीस से इमाम बुखारी यह बताना चाहते हैं कि रिश्तेदारों के रोने से उस मय्यत को अजाब होता है जो कुफ्र की हालत में

मरी हो, अलबत्ता हज़रत उमर रज़ि. उसे आम खयाल करते थे। नीज अबू दाऊद में है कि आप उस औरत की कब्र पर से गुजरे तो ऐसा फरमाया, लिहाजा जो फितनागर इस हदीस से बरजखी कब्र का वजूद कशीद करते हैं उनका मसला सही नहीं है।

बाब 17 : मय्यत पर रोना-पीटना बुरा है।

١٧ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنَ النِّيَاحَةِ عَلَى المَيِّتِ

656 : मुगीरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना कि मुझ पर झूट बांधना और लोगों पर झूट बांधने की तरह नहीं, बल्कि जो आदमी मुझ पर जानबूझ कर झूट बांधता है, उसे दोजख में अपना ठिकाना तलाश करना चाहिए और मैंने रसुलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह भी सुना कि आप फरमाते थे, जिस आदमी पर रोना-पीटना किया जाता है, उसे उस रोने-पीटने से अजाब दिया जाता है।

٦٥٦ : عَنِ المُغِيرَةِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ كَذِبًا عَلَيَّ لَيْسَ كَكَذِبٍ عَلَى أَحَدٍ، مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ).
وَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ نِيحَ عَلَيْهِ يُعَذَّبُ بِمَا نِيحَ عَلَيْهِ).
[رواه البخاري: ١٢٩١]

फायदे : इसका मतलब यह नहीं है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा किसी दूसरे पर झूट बांधना जाइज है, बल्कि इस किस्म के झूट का हराम होना दूसरी दलीलों से साबित है। (औनुलबारी, 2/299)

बाब 18 : जो आदमी (मुसीबत के वक़्त) अपने गालों को पीटे वह हम में से नहीं।

١٨ - باب: لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الخُدُودَ

657 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो आदमी अपने गालों को पीट कर गिरेबान फाड़कर और जाहिलियत के जमाने की तरह चीख-चिल्लाकर मातम करे, वह हममें से नहीं।

٦٥٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَطَمَ الخُدُودَ، وَشَقَّ الجُيُوبَ، وَدَعَا بِدَعْوَى الجَاهِلِيَّةِ). [رواه البخاري: ١٢٩٤]

फायदे : मालूम हुआ कि मुसीबत के वक्त गिरेबान फाड़ना और अपने गालों को पीटना हराम है। क्योंकि इससे अल्लाह की तकदीर से नाराजगी साबित होती है। अगर किसी को उसकी हुरमत का इल्म है, उसके बावजूद उसे हलाल समझकर ऐसा करता है तो वह इस्लाम के दायरे से बाहर है। (औनुलबारी, 2/300)

बाब 19 : सअद बिन खौला रज़ि. पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरस खाना।

١٩ - باب: رَثَى النَّبِيُّ ﷺ سَعْدَ بْنَ خَوْلَةَ

658 : साद बिन अबी वक्कास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखरी हज के साल जबकि मैं एक बड़ी बीमारी में पड़ा था, मेरी हालत देखने के लिए तशरीफ लाये। मैंने कहा कि मेरी बीमारी की हालत को तो आप देख ही रहे हैं। मालदार

٦٥٨ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَعُودُنِي عامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ، مِنْ وَجَعٍ اشْتَدَّ بِي، فَقُلْتُ: إِنِّي قَدْ بَلَغَ بِي مِنَ الْوَجَعِ ما ترى، وَأَنَا ذُو مَالٍ، وَلاَ يَرِثُنِي إِلَّا ابْنَةٌ، أَفَأَتَصَدَّقُ بِثُلُثَيْ مالِي؟ قَالَ: (لاَ). فَقُلْتُ: بِالشَّطْرِ؟ فَقَالَ: (لاَ). ثُمَّ قَالَ: (الثُّلُثُ وَالثُّلُثُ كَبِيرٌ، أَوْ كَثِيرٌ، إِنَّكَ أَنْ تَذَرَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ، خَيْرٌ مِنْ أَنْ

تَذَرَهُمْ عالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ، وَإِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً تَبْتَغِي بِهَا وَجْهَ ٱللهِ إِلَّا أُجِرْتَ بِهَا، حَتَّى ما تَجْعَلُ فِي فِي امْرَأَتِكَ). فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أُخَلَّفُ بَعْدَ أَصْحَابِي؟ قَالَ: (إِنَّكَ لَنْ تُخَلَّفَ فَتَعْمَلَ عَمَلًا صَالِحًا إِلَّا ٱزْدَدْتَ بِهِ دَرَجَةً وَرِفْعَةً، ثُمَّ لَعَلَّكَ أَنْ تُخَلَّفَ حَتَّى يَنْتَفِعَ بِكَ أَقْوَامٌ، وَيُضَرَّ بِكَ آخَرُونَ، اللَّهُمَّ أَمْضِ لِأَصْحَابِي هِجْرَتَهُمْ وَلاَ تَرُدَّهُمْ عَلَى أَعْقَابِهِمْ، لكِنِ الْبَائِسُ سَعْدُ بْنُ خَوْلَةَ). يَرْثِي لَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَنْ ماتَ بِمَكَّةَ. [رواه البخاري: ١٢٩٥]

आदमी हूँ, मगर बेटी के सिवा मेरा और कोई वारिस नहीं है, क्या मैं अपने माल से दो तिहाई खैरात कर सकता हूं। आपने फरमाया नहीं, मैंने कहा, क्या अपना आधा माल? आपने फरमायाः नहीं! फिर मैंने कहा, क्या एक तिहाई खैरात करूं? आपने फरमायाः एक तिहाई में कोई हर्ज नहीं, अगरचे एक तिहाई भी बहुत है। अपने वारिसों को मालदार छोड़ना, तुम्हारे लिए इससे बेहतर है कि तुम उन्हें फकीर छोड़ जाओ और वह लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें। तुम अल्लाह की खुशनूदी के लिए जो कुछ खर्च करोगे उसका सवाब तुम्हें जरूर मिलेगा। यहां तक कि जो लुकमा अपनी बीवी के मुंह में दोगे, उसका भी सवाब मिलेगा। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या मैं बीमारी की वजह से अपने साथियों से पीछे रह जाउंगा? आपने फरमाया, तुम हरगिज पीछे नही रहोगे, जो नेक काम करोगे, उनसे तुम्हारे दर्जे बढ़ते जाएगे और तुम्हारा मर्तबा बुलन्द होता रहेगा। और शायद तुम बाद तक जिन्दा रहोगे। यहां तक कि कुछ लोगों को तुमसे नफा पहुंचेगा। और कुछ लोगों को तुम्हारी वजह से नुकसान होगा। ऐ अल्लाह! मेरे असहाब की हिजरत कामिल कर दे और एड़ियों के बल मत लौटा (यानी उनको मक्का में मौत न आये)। लेकिन बेचारे सअद बिन खौला रज़ि. जिनके लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम दुख का इजहार और तरस करते थे वह मक्का में ही मर गये।

फायदे : हज़रत सअद रज़ि. के बारे में आपकी सच्ची पेशनगोई के मुताबिक हजरत सअद रजि. मुद्दत तक जिन्दा रहे। अल्लाह की तौफिक से इराक और ईरान इनके हाथ से फतह हुये। बेशुमार लोग इनके हाथों मुसलमान हो गये और कई इनके हाथों जहन्नम में दाखिल हुये। (औनुलबारी, 2/303)

बाब 20 : मुसीबत के वक़्त सर मुण्डवाना मना है।

٢٠ - باب: ما يُنْهى مِنَ الحَلْقِ عِنْدَ المُصيبَةِ

659 : अबू मूसा रजि. से रिवायत है कि एक बार वह सख्त बीमार हुए और उन पर गशी तारी हुई। उनका सर उनके घर की एक औरत की गोद में था, वह रोने लगी। अबू मूसा रज़ि. में इतनी ताकत न थी कि उसे मना करते, होश आया तो कहने लगे, मैं उस आदमी से अलग हूँ जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अलग हुए। और बेशक रसूलुल्लाह ने (मुसीबत के वक़्त) चिल्लाकर रोने वाली, सर मुण्डवाने वाली और गिरेबान फाड़ने वाली औरत से अलग होने का इजहार फरमाया है।

٦٥٩ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: وَجِعَ وَجَعًا، فَغُشِيَ عَلَيْهِ، وَرَأْسُهُ فِي حَجْرِ امْرَأَةٍ مِنْ أَهْلِهِ فبكت، فَلَمْ يَسْتَطِعْ أَنْ يَرُدَّ عَلَيْهَا شَيْئًا، فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ: أَنَا بَرِيءٌ مِمَّنْ بَرِىءَ مِنْهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ بَرِىءَ مِنَ الصَّالِقَةِ، وَالحَالِقَةِ، والشَّاقَّةِ. [رواه البخاري: ١٢٩٦]

फायदे : इससे मुराद इस्लाम के दायरे से निकलना नहीं, बल्कि उनके इन कामों से अलग होने का इजहार और नफरत मकसूद है। (औनुलबारी, 2/305)

बाब 21 : मुसीबत के वक़्त गम करना।

٢١ - باب: مَنْ جَلَسَ عِنْدَ الْمُصِيبَةِ يُعرَفُ فِيهِ الحُزْنُ

660 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जैद बिन हारिसा रज़ि., जाफर रज़ि. और इब्ने रवाहा रज़ि. के शहीद होने की खबर आई तो आप गमगीन होकर बैठ गये। मैं दरवाजे की आड़ से देख रही थी कि एक आदमी आपके पास आया, जिसने जाफर रज़ि. की औरतों के रोने धोने का जिक्र किया, आपने हुक्म दिया कि उन्हें रोने-धोने से मना करो, चूनांचें वह गया और उसने वापस आकर कहा कि वह नहीं मानती तो आपने फिर यही फरमाया कि उन्हें मना करो। चूनांचे वह दोबारा आया और बताया, वह नहीं मानती, आपने फरमाया, उन्हें मना करो, फिर वह तीसरी बार वापस आकर कहने लगा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह की कसम! वह हम पर गालिब आ गयी और नहीं मानती। आइशा रज़ि. ने कहा कि आखिरकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जा! उनके मुंह में खाक झोंक दे।

٦٦٠ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، قَالَتْ: لَمَّا جَاءَ النَّبِيَّ ﷺ قَتْلُ ابْنِ حارِثَةَ وَجَعْفَرٍ وَابْنِ رَوَاحَةَ، جَلَسَ يُعْرَفُ فِيهِ الحُزْنُ، وَأَنَا أَنْظُرُ مِنْ صَائِرِ البَابِ - شَقِّ البَابِ - فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: إنَّ نِسَاءَ جَعْفَرٍ، وذَكَرَ بُكَاءَهُنَّ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَنْهَاهُنَّ، فَذَهَبَ، ثُمَّ أَتَاهُ الثَّانِيَةَ: فَأخبره أَنَّهنَّ لَمْ يُطِعْنَهُ، فَقَالَ: (انْهَهُنَّ). فَأَتَاهُ الثَّالِثَةَ، قَالَ: وَٱللهِ غَلَبْنَنَا يَا رَسُولَ ٱللهِ. فَزَعَمَتْ أَنَّهُ قَالَ: (فَاحْثُ فِي أَفْوَاهِهِنَّ التُّرَابَ). [رواه البخاري: ١٢٩٩]

फायदे : मालूम हुआ कि औरत अन्जान लोगों की तरफ देख सकती है, इस शर्त के साथ कि बुरी नियत और फितने का डर न हो। (औनुलबारी,2/307)

बाब 22 : जो आदमी मुसीबत के वक़्त अपने दुख और गम को जाहिर न होने दे।

٢٢ - باب: مَن لَم يُظهِر حُزنَهُ عِندَ المُصيبَةِ

661 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अबू तल्हा रज़ि. का एक बेटा मर गया और अबू तल्हा रज़ि. उस वक़्त घर पर मौजूद न थे। उनकी बीवी ने बच्चे को गुस्ल और कफ़न देकर उसे घर के एक कोने में रख दिया। जब अबू तल्हा रज़ि. घर आये तो पूछा लड़के का क्या हाल है? उनकी बीवी ने जवाब दिया कि अब उसे आराम है और मुझे उम्मीद है कि उसे सुकून नसीब हुआ है। अबू तल्हा रज़ि. समझे कि वह सच कह रही है। रावी के कहने के मुताबिक अबू तल्हा रज़ि. रात भर अपनी बीवी के पास रहे और सुबह गुस्ल करके बाहर जाने लगे तो बीवी ने उन्हें बताया कि लड़का तो मर चुका है। फिर अबू तल्हा रज़ि. ने सुबह की नमाज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अदा की और रात के माजरे की आपको खबर दी। जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उम्मीद है कि अल्लाह तुम दोनों को तुम्हारी इस रात में बरकत देगा। एक अन्सारी आदमी का बयान है कि मैंने अबू तल्हा रज़ि. (की नस्ल) से नौ लड़के देखे जो कुरआन के हाफिज़ थे।

٦٦١ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: مَاتَ ٱبْنٌ لِأَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ وَأَبُو طَلْحَةَ خَارِجٌ، فَلَمَّا رَأَتِ ٱمْرَأَتُهُ أَنَّهُ قَدْ مَاتَ، هَيَّأَتْ شَيْئًا، وَنَحَّتْهُ فِي جَانِبِ ٱلْبَيْتِ، فَلَمَّا جَاءَ أَبُو طَلْحَةَ قَالَ: كَيْفَ ٱلْغُلَامُ؟ قَالَتْ: قَدْ هَدَأَتْ نَفْسُهُ، وَأَرْجُو أَنْ يَكُونَ قَدِ ٱسْتَرَاحَ. فَبَاتَ، فَلَمَّا أَصْبَحَ ٱغْتَسَلَ، فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ أَعْلَمَتْهُ أَنَّهُ قَدْ مَاتَ، فَصَلَّى مَعَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ أَخْبَرَهُ بِمَا كَانَ مِنْهُمَا، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَعَلَّ ٱللهَ أَنْ يُبَارِكَ لَكُمَا فِي لَيْلَتِكُمَا).

قَالَ رَجُلٌ مِنَ ٱلْأَنْصَارِ: فَرَأَيْتُ لَهُمَا تِسْعَةَ أَوْلَادٍ، كُلُّهُمْ قَدْ قَرَأَ ٱلْقُرْآنَ. [رواه البخاري: ١٣٠١]

फायदे : यह हज़रत उम्मे सुलैम के सब्र का नतीजा था कि उस वक़्त जो उनके यहां बच्चा पैदा हुआ, उसकी पीठ से नो बच्चे हाफिजे कुरआन पैदा हुये। इनके अलावा चार सब्र और शुक्र करने वाली बेटियां भी अल्लाह तआला ने अता कीं। (औनुलबारी, 2/310)

---

٢٣ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «إِنَّا بِكَ لَمَحْزُونُونَ»

बाब23: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद कि (ऐ इब्राहिम) हम तेरी जुदाई से दुखी हैं।

٦٦٢ : وعَنْه - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - قَالَ: دَخَلْنَا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ عَلَى أَبِي سَيْفٍ الْقَيْنِ، وَكانَ ظِئْرًا لإِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ، فَأَخَذَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِبْرَاهِيمَ فَقَبَّلَهُ وَشَمَّهُ، ثُمَّ دَخَلْنَا عَلَيْهِ بَعْدَ ذٰلِكَ، وَإِبْرَاهِيمُ يَجُودُ بِنَفْسِهِ، فَجَعَلَتْ عَيْنَا رَسُولِ ٱللهِ ﷺ تَذْرِفانِ، فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنُ عَوْفٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: وَأَنْتَ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ فَقَالَ: (يَا ابْنَ عَوْفٍ، إِنَّهَا رَحْمَةٌ). ثُمَّ أَتْبَعَهَا بِأُخْرَى، فَقَالَ ﷺ: (إِنَّ الْعَيْنَ تَدْمَعُ، وَالْقَلْبَ يَحْزَنُ، وَلاَ نَقُولُ إِلَّا ما يَرْضَى رَبُّنَا، وَإِنَّا بِفِرَاقِكَ يَا إِبْرَاهِيمُ لَمَحْزُونُونَ). [رواه البخاري: ١٣٠٣]

662 : अनस रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अबू सैफ लुहार के यहां गये, जो इब्राहिम रज़ि. का रजाई बाप था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इब्राहिम रज़ि. को लेकर चुम्मा दिया और उसके ऊपर अपना मुंह रखा। उसके बाद दोबारा हम अबू सैफ के यहां गये तो इब्राहिम रज़ि. दम तोड़ने की हालत में थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दोनों आंखों से आंसू बहने लगे। अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप भी रोते हैं। आपने फरमाया, ऐ इब्ने औफ रज़ि.! यह तो एक रहमत है, फिर आपने रोते हुये फरमाया, आंखों से आंसू जारी हैं

और दिल गमगीन है, लेकिन हम को जुबान से वही कहना है जिससे हमारा मालिक राजी हो। ऐ इब्राहिम हम तेरी जुदाई से यकीनन दुखी हैं।

फायदे : मतलब यह है कि मुसीबत के वक़्त आंखों से आंसू निकल आना और दिल का दुखी होना एक इन्सानी तक़ाज़ा है जो माफी के काबिल है। (औनुलबारी,2/312)

बाब 24 : मरीज के पास रोना।

٢٤ - باب: البُكَاءُ عِنْدَ المَرِيضِ

663 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि सअद बिन उबादा रज़ि. बीमार हुए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब्दुर्रमान बिन औफ, सअद बिन अबी वक्कास और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के साथ उनकी मअइयत (साथ) में उनकी देखभाल के लिए तशरीफ ले गये और जब आप वहां पहुंचे तो उसे अपने घर वालों के बीच घिरा हुआ पाया। आपने पूछा क्या इन्तिकाल हो गया? लोगों ने कहा, नहीं। फिर आप रो पड़े और आपको रोता देखकर दूसरे लोग भी रोने लगे। उसके बाद आपने फरमाया, खबरदार! अल्लाह तआला आंख से आंसू बहाने और दिल में दुखी होने पर अजाब नहीं देता, बल्कि आपने अपनी जुबान की तरफ

٦٦٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اشْتَكَى سَعْدُ ابْنُ عُبَادَةَ شَكْوَى لَهُ، فَأَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُهُ، مَعَ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ، وَسَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، وَعَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ، فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ، فَوَجَدَهُ فِي غَاشِيَةِ أَهْلِهِ، فَقَالَ: (قَدْ قَضى؟). قَالُوا: لاَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَبَكَى النَّبِيُّ ﷺ، فَلَمَّا رَأَى الْقَوْمُ بُكَاءَ النَّبِيِّ ﷺ بَكَوْا، فَقَالَ: (أَلاَ تَسْمَعُونَ، إِنَّ ٱللهَ لاَ يُعَذِّبُ بِدَمْعِ الْعَيْنِ، وَلاَ بِحُزْنِ الْقَلْبِ، وَلٰكِنْ يُعَذِّبُ بِهٰذَا - وَأَشَارَ إِلَى لِسَانِهِ - أَوْ يَرْحَمُ، وَإِنَّ الْمَيِّتَ يُعَذَّبُ بِبُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ).

[رواه البخاري: ١٣٠٤]

इशारा करके फरमाया, इसकी वजह से अजाब या रहम करता है और बेशक मय्यत पर उसके रिश्तेदारों के चिल्लाकर रोने से उसे अजाब किया जाता है।

फायदे : जब कोई ऐसी निशानी जाहिर हो, जिसकी वजह से मरीज को जिन्दा रहने की उम्मीद न हो तो ऐसी हालत में अफसोस जाहिर करना और आंसू बहाना जाइज है। वरना मरीज को तसल्ली देना चाहिए।

बाब 25 : नौहा और रोने की मनाही और इससे लोगों को डांटना।

٢٥ - باب: مَا يُنْهَىٰ عَنِ النَّوْحِ وَالْبُكَاءِ وَالزَّجْرِ عَنْ ذٰلِكَ

664 : उम्मे अतिय्या रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैअत लेते वक़्त हम लोगों से यह वादा लिया था कि नौहा न करेंगी। मगर इस वादे को सिर्फ पांच औरतों ने पूरा किया यानी उम्मे सुलैम, उम्मे अला, अबू सबरा की बेटी जो मुआज की बीवी थी और दूसरी दो औरतें या यूँ कहा कि अबू सबरा की बेटी, मुआज की बीवी और एक कोई दूसरी औरत है।

٦٦٤ : عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَخَذَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ عِنْدَ الْبَيْعَةِ أَنْ لاَ نَنُوحَ، فَمَا وَفَتْ مِنَّا امْرَأَةٌ غَيْرُ خَمْسِ نِسْوَةٍ: أُمُّ سُلَيْمٍ، وَأُمُّ الْعَلاَءِ، وَٱبْنَةُ أَبِي سَبْرَةَ ٱمْرَأَةُ مُعَاذٍ، وَٱمْرَأَتَانِ. أَوِ ٱبْنَةُ أَبِي سَبْرَةَ، وَٱمْرَأَةُ مُعَاذٍ، وَٱمْرَأَةٌ أُخْرَى.
[رواه البخاري: ١٣٠٦]

फायदे : हज़रत उमर रज़ि. जब किसी को वफात के मौके पर गैर शरई रोता देखते तो उसे पत्थर मारते और उसके मुंह में मिट्टी ठूंसते। (औनुलबारी, 2/315)

बाब 26 : जनाज़ा देखकर खड़े होना।

٢٦ - باب: القِيَامُ لِلْجَنَازَةِ

665 : आमिर बिन रबीआ रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जब तुममें से कोई जनाज़ा देखे तो चाहे उसके साथ न जाये, मगर खड़ा जरूर हो जाये, यहां तक कि वह जनाज़ा पीछे छोड़ दे या खुद उसके पीछे हो जाये। या पीछे छोड़ने से पहले उसे जमीन पर रख दिया जाये।

٦٦٥ : عَنْ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ جَنَازَةً، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ مَاشِيًا مَعَهَا فَلْيَقُمْ حَتَّى يُخَلِّفَهَا، أَوْ تُخَلِّفَهُ، أَوْ تُوضَعَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُخَلِّفَهُ). [رواه البخاري: ١٣٠٨]

फायदे : जनाज़ा देखकर खड़े होने का हुक्म पहले था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आखिर में इस पर अमल करना रोक दिया था। (औनुलबारी, 2/317)

बाब 27 : जनाज़े के लिए खड़ा हो तो कब बैठे?

٢٧ - باب: مَتَى يَقْعُدُ إِذَا قَامَ لِلجَنَازَةِ

666 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने मरवान रज़ि. का हाथ पकड़ा और वह दोनों एक जनाज़े के साथ थे, जनाज़ा रखे जाने के पहले बैठ गये। इतने में अबू सईद खुदरी आ गये। उन्होंने मरवान रज़ि. का हाथ पकड़कर कहा, उठ खड़ा हो, यकीनन अबू हुरैरा रज़ि. को मालूम है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें इससे मना फरमाया है। इस पर अबू हुरैरा रज़ि. ने फरमाया कि इसने सच कहा है।

٦٦٦ : عن أبي هريرة رضي الله عنه أنَّه أخذ بيد مروانَ وهما في جنازة، فَجَلَسَا قَبْلَ أَنْ تُوضَعَ، فَجَاءَ أَبُو سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، فَأَخَذَ بِيَدِ مَرْوَانَ، فَقَالَ: قُمْ، فَوَٱللهِ لَقَدْ عَلِمَ هٰذَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَانَا عَنْ ذٰلِكَ، فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: صَدَقَ. [رواه البخاري: ١٣٠٩]

फायदे : ज्यादातर इल्म वालों का यह मानना है कि जनाज़े के साथ जाने वाले उस वक़्त तक न बैठें जब तक उसे जमीन पर न रख दिया जाये। इमाम बुखारी ने इस हदीस पर इस तरह उनवान कायम किया है "जो आदमी जनाज़े के साथ हो, उसे चाहिए कि जमीन पर उसके रखे जाने से पहले न बैठे। अगर कोई बैठ जाये तो उसे खड़े होने के लिए कहा जाये।" निसाई में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. और हज़रत अबू सईद रज़ि. से उसकी ताइद में एक हदीस भी मरवी है। (औनुलबारी, **2/318**)

बाब 28 : यहूदी के जनाज़े के लिए खड़ा होना।

٢٨ - باب: مَنْ قَامَ لِجَنَازَةِ يَهُودِيٍّ

667 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है। उन्होंने फरमाया कि हमारे सामने से एक जनाज़ा गुजरा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हो गये और हम भी खड़े हो गये। हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह तो एक यहूदी का जनाज़ा था। आपने फरमाया कि जब तुम जनाज़ा देखो तो खड़े हो जाया करो।

٦٦٧ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: مَرَّ بِنَا جَنَازَةٌ، فَقَامَ لَهَا النَّبِيُّ ﷺ وَقُمْنَا لَهُ، فَقُلْنَا يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّهَا جَنَازَةُ يَهُودِيٍّ؟ قَالَ: (إِذَا رَأَيْتُمُ الْجَنَازَةَ فَقُومُوا). [رواه البخاري: ١٣١١]

फायदे : जनाज़ा चाहे मुसलमान का हो या काफिर का, उसे देखकर मौत को याद करना चाहिए कि हमें भी एक दिन मरना है। अलबत्ता जनाज़े को देखकर खड़ा होना जरुरी नहीं है। जैसा कि हज़रत अली रज़ि. के अमल और बयान से जाहिर होता है।

(औनुलबारी, **2/319**)

बाब 29 : औरतों के सिवा सिर्फ मर्दो को जनाज़ा उठाना चाहिए।

٢٩ - باب: حَمْلُ الرِّجالِ الجَنازَةَ دُونَ النِّساءِ

668 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब जनाज़ा (तैयार करके) रख दिया जाता है और लोग उसे अपने कन्धों पर उठा लेते हैं, फिर अगर वह नेक होता है तो कहता है, मुझ को जल्दी ले चलो और अगर नेक नहीं होता है तो कहता है, हाय अफसोस! मुझे कहां ले जाते हो? उसकी आवाज इन्सानों के अलावा हर चीज सुनती है, क्योंकि अगर इन्सान सुन ले तो बेहोश हो जाये।

٦٦٨ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا وُضِعَتِ الجَنَازَةُ، وَاحْتَمَلَهَا الرِّجَالُ عَلَى أَعْنَاقِهِمْ، فَإِنْ كَانَتْ صَالِحَةً قَالَتْ: قَدِّمُونِي، وَإِنْ كَانَتْ غَيْرَ صَالِحَةٍ قَالَتْ: يَا وَيْلَهَا، أَيْنَ يَذْهَبُونَ بِهَا، يَسْمَعُ صَوْتَهَا كُلُّ شَيْءٍ إِلَّا الإِنْسَانَ، وَلَوْ سَمِعَهُ صَعِقَ). [رواه البخاري: ١٣١٤]

फायदे : इस पर सब इमामों का इत्तिफाक है कि जनाज़ा मर्दो को ही उठाना चाहिए इसके बारे में मुस्नद अबू याला में एक रिवायत भी है जिसमें खुलासा है कि औरतों को जनाज़ा नहीं उठाना चाहिए क्योंकि वह कमजोर होती हैं। (औनुलबारी, 2/320)

बाब 30 : जनाज़े को जल्दी ले जाना।

٣٠ - باب: السُّرْعَةُ بِالجَنَازَةِ

669 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जनाज़े को जल्दी ले चलो क्योंकि अगर वह नेक है तो तुम उसे अच्छाई की तरफ ले

٦٦٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (أَسْرِعُوا بِالجَنَازَةِ، فَإِنْ تَكُ صَالِحَةً فَخَيْرٌ تُقَدِّمُونَهَا إِلَيْهِ، وَإِنْ يَكُ سِوَى ذٰلِكَ، فَشَرٌّ تَضَعُونَهُ عَنْ رِقَابِكُمْ). [رواه البخاري: ١٣١٥]

जा रहे हो और अगर वह बुरा है तो वह एक बुरी चीज है, जिसको तुम अपनी गर्दन से उतारकर बरी होओगे।

फायदे : जनाज़े को जल्दी ले जाने से मुराद दौड़ना नहीं बल्कि आदत से ज्यादा तेज चलना है। उलमा के नजदीक ऐसा करना मुस्तहब है। (औनुलबारी, 2/3220)

बाब 31 : जनाज़े के साथ जाने की फज़ीलत।

٣١ - باب: فَضْلُ اتِّبَاعِ الجَنَائِزِ

670 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि उनसे कहा गया, अबू हुरैर रज़ि. कहते हैं कि जो आदमी जनाज़े के साथ जाएगा, उसे एक कीरात सवाब मिलेगा, इस पर इब्ने उमर रज़ि. ने फरमाया! अबू हुरैरा रज़ि. हमें बहुत हदीस सुनाते हैं। फिर आइशा रज़ि. ने भी अबू हुरैरा रज़ि. की तसदीक फरमायी और कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसा ही फरमाते सुना है। इस पर इब्ने उमर रज़ि. फरमाने लगे फिर तो हमने बहुत से कीरात का नुकसान कर लिया है।

٦٧٠ : عن ابن عمر رضي الله عنهما أنّه قيل له: إنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ يَقُولُ: مَنْ تَبِعَ جَنَازَةً فَلَهُ قِيرَاطٌ. فَقَالَ: أَكْثَرَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَلَيْنَا. فَصَدَّقَتْ عائِشَةُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَبَا هُرَيْرَةَ، وَقَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُهُ. فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: لَقَدْ فَرَّطْنَا في قَرَارِيطَ كَثِيرَةٍ. [رواه البخاري: ١٣٢٣، ١٣٢٤]

फायदे : बुखारी की दूसरी रिवायत में है कि जो आदमी मय्यत के दफन तक साथ रहा है, उसे दो कीरात के बराबर सवाब मिलता है और यह दो कीरात दो बड़े पहाड़ों की तरह हैं। (अलजनाइज़ 1325)

बाब 32 : कब्रों पर मस्जिद बनाना हराम है।

٣٢ - باب: ما يُكرَهُ مِن اتِّخاذِ المَساجِدِ عَلَى القُبُورِ

671 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आपने अपनी वफात की बीमारी में यह फरमाया, अल्लाह तआला यहूद और नसारा पर लानत करे कि उन्होंने अपने पैगम्बरों की कब्रों को सज्दे की जगह बना लिया। आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि अगर यह डर न होता तो आपकी कब्र मुबारक को बिल्कुल जाहिर कर दिया जाता, मगर मुझे डर है कि उसको भी सज्दागाह न बना लिया जाये।

٦٧١ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ: (لَعَنَ ٱللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ). قَالَتْ: وَلَوْلاَ ذٰلِكَ لأَبْرَزُوا قَبْرَهُ، غَيْرَ أَنِّي أَخْشَى أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا. [رواه البخاري: ١٣٣٠]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है कि मेरी कब्र पर ईद की तरह मेला न लगाना, लेकिन अफसोस आज का नाम निहाद मुसलमान इस फरमाने नबवी की खुलकर मुखालफ्त कर रहा है। अल्लाह का शुक्र है कि हुकूमत सऊदिया ने अभी तक इस पर कन्ट्रोल किया हुआ है।

बाब 33 : ज़च्चगी में मरने वाली औरत की जनाज़े की नमाज़ पढ़ना।

٣٣ - باب: الصَّلاَةُ عَلَى النُّفَسَاءِ إِذَا مَاتَتْ فِي نِفَاسِهَا

672 : समुरह बिन जुनदब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे एक ऐसी औरत की जनाज़े की नमाज़ पढ़ी जो ज़च्चगी के दौरान मर गयी थी, आप उसके बीच में खड़े हुये थे।

٦٧٢ : عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّيْتُ وَرَاءَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى امْرَأَةٍ مَاتَتْ فِي نِفَاسِهَا، فَقَامَ عَلَيْهَا وَسَطَهَا. [رواه البخاري: ١٣٣١]

फायदे : अगर मर्द का जनाज़ा हो तो उसके सर के बराबर खड़ा होना चाहिए। (औनुलबारी, 2/330)

बाब 34 : जनाज़े की नमाज में सूरा फातिहा पढ़ना।

٣٤ - باب: قِرَاءَةُ فَاتِحَةِ الكِتَابِ عَلَى الجَنَازَةِ

673 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने एक बार जनाज़े की नमाज़ में सूरा फातिहा ऊंची आवाज में पढ़ी और कहा कि (मैंने इसलिए ऐसा किया है) ताकि तुम लोग जान लो कि इसका पढ़ना सुन्नत है।

٦٧٣ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ صَلَّى عَلَى جَنَازَةٍ، فَقَرَأَ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ قَالَ: لِيَعْلَمُوا أَنَّهَا سُنَّةٌ. [رواه البخاري: ١٣٣٥]

फायदे : चूनांचे जनाज़ा भी एक नमाज़ है, इसलिए इसमें सूरा फातिहा पढ़ना जरूरी है। इस हदीस में इसका खुलासा मौजूद है। निसाई की रिवायत में दूसरी कोई सूरत मिलाने का भी जिक्र है। यह भी सराहत है कि फातिहा पहली तकबीर के बाद पढ़ी जाये। (औनुलबारी, 2/331)

बाब 35 : मुर्दा जूतों की आवाज़ (भी) सुनता है।

٣٥ - باب: المَيِّتُ يَسمَعُ خَفْقَ النِّعَالِ

674 :अनस रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया जब मुर्दा कब्र में रख दिया जाता है और उस के साथी दफ़न से फारिग होने के बाद वापस होते हैं तो वह उनके जूतों की आवाज सुनता है। उस वक़्त

٦٧٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (الْعَبْدُ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتَوَلَّى وَذَهَبَ أَصْحَابُهُ، حَتَّى إِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ، أَتَاهُ مَلَكَانِ فَأَقْعَدَاهُ، فَيَقُولاَنِ لَهُ: ما كُنْتَ تَقُولُ فِي هٰذَا الرَّجُلِ مُحَمَّدٍ ﷺ؟ فَيَقُولُ: أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ ٱللهِ وَرَسُولُهُ، فَيُقَالُ: انظُرْ

إلى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ، أَبْدَلَكَ ٱللهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الجَنَّةِ). قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (فَيَرَاهُمَا جَمِيعًا، وَأَمَّا الكَافِرُ، أَوِ المُنَافِقُ: فَيَقُولُ: لاَ أَدْرِي، كُنْتُ أَقُولُ ما يَقُولُ النَّاسُ. فَيُقَالُ: لاَ دَرَيْتَ وَلاَ تَلَيْتَ، ثُمَّ يُضْرَبُ بِمِطْرَقَةٍ مِنْ حَدِيدٍ ضَرْبَةً بَيْنَ أُذُنَيْهِ، فَيَصِيحُ صَيْحَةً يَسْمَعُهَا مَنْ يَلِيهِ إِلَّا الثَّقَلَيْنِ). [رواه البخاري: ١٣٣٨]

उसके पास दो फरिश्तें आते हैं। यह उसे बिठा कर पूछते हैं कि तू इस आदमी यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में क्या अकीदा रखता था। अगर वह कहता है, मैं गवाही देता था कि वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं तो उसे कहा जाता है कि तू अपने दोजखी मकाम को देख। उसके बाद उस अल्लाह तआला ने तुझे जन्नत में ठिकाना दिया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वह दोनों जगहों को देखता है। लेकिन काफिर या मुनाफिक का यह जवाब होता है कि मैं कुछ नहीं जानता जो दूसरे लोग कहते थे वही मैं भी कह देता था। फिर उससे कहा जाता है कि न तूने अक्ल से काम लिया और न नबियों की पैरवी की। फिर उसके दोनों कानों के बीच लोहे के हथोड़े से एक चोट लगाई जाती है कि वह चीख उठता है। उसकी चीख पुकार को इन्सान के अलावा उसके आस पास की तमाम चीजें सुनती हैं।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि जिस कब्र में मय्यत को दफ़न किया जाता है, सवाल और जवाब भी वहीं होते हैं। फिर राहत और अजाब भी उसी कब्र में है।

---

٣٦ - باب: مَنْ أَحَبَّ الدَّفْنَ في الأَرْضِ المُقَدَّسَةِ أو نَحْوِهَا

बाब 36 : पाक जमीन या किसी बरकत वाली जगह में दफ़न होने की तमन्ना करना।

675 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब मौत के फरिश्ते को मूसा अलैहि. के पास भेजा गया तो वह उनके पास आये तो उन्होंने एक तमाचा मारा। (जिससे उसकी एक आंख फूट गयी)। फरिश्ते ने अपने रब के पास जाकर कहा कि तूने मुझे एक ऐसे बन्दे के पास भेजा है जो मरना नहीं चाहता। अल्लाह तआला ने उसकी आंख ठीक कर दी और फरमाया कि मूसा के पास दोबारा जाकर कहो कि वह अपना हाथ एक बैल की पीठ पर रखें तो जितने बाल उनके हाथ के नीचे आयेंगे। हर बाल के बदले उन्हें एक साल की जिन्दगी दी जायेगी। इस पर मूसा अलैहि. ने कहा ऐ रब! फिर क्या होगा? अल्लाह ने फरमाया फिर मौत आयेगी। मूसा अलैहि. ने कहा तो फिर अभी आ जाये। उन्होंने अल्लाह से दुआ की कि उन्हें एक पत्थर फैंकने की मिकदार के बराबर मुकद्दस जमीन से करीब कर दे। रावी कहता है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया, अगर मैं वहां होता तो मूसा अलैहि. की कब्र सुर्ख टीले के पास रास्ते के किनारे पर तुम्हें दिखा देता।

٦٧٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: (أُرْسِلَ مَلَكُ المَوْتِ إِلَى مُوسَى عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ، فَلَمَّا جَاءَهُ صَكَّهُ، فَرَجَعَ إِلَى رَبِّهِ، فَقَالَ: أَرْسَلْتَنِي إِلَى عَبْدٍ لاَ يُرِيدُ المَوْتَ، فَرَدَّ ٱللهُ عَلَيْهِ عَيْنَهُ، وَقَالَ: ٱرْجِعْ، فَقُلْ لَهُ يَضَعُ يَدَهُ عَلَى مَتْنِ ثَوْرٍ، فَلَهُ بِكُلِّ مَا غَطَّتْ بِهِ يَدُهُ بِكُلِّ شَعْرَةٍ سَنَةٌ. قَالَ: أَيْ رَبِّ، ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: ثُمَّ المَوْتُ. قَالَ: فَالآنَ، فَسَأَلَ ٱللهَ أَنْ يُدْنِيَهُ مِنَ الأَرْضِ المُقَدَّسَةِ رَمْيَةً بِحَجَرٍ). قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (فَلَوْ كُنْتُ ثَمَّ لأَرَيْتُكُمْ قَبْرَهُ، إِلَى جَانِبِ الطَّرِيقِ، عِنْدَ الْكَثِيبِ الأَحْمَرِ). [رواه البخاري: ١٣٣٩]

बाब 37 : शहीद की जनाजे की नमाज।

٣٧ - بَاب: الصَّلاَةُ عَلَى الشَّهِيدِ

676 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से

٦٧٦ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ

رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَجْمَعُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ مِنْ قَتْلَى أُحُدٍ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ، ثُمَّ يَقُولُ: (أَيُّهُمْ أَكْثَرُ أَخْذًا لِلْقُرْآنِ). فَإِذَا أُشِيرَ لَهُ إِلَى أَحَدِهِما قَدَّمَهُ فِي اللَّحْدِ، وَقَالَ: (أَنَا شَهِيدٌ عَلَى هٰؤُلاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ). وَأَمَرَ بِدَفْنِهِمْ فِي دِمائِهِمْ، وَلَمْ يُغَسَّلُوا، وَلَمْ يُصَلِّ عَلَيْهِمْ. [رواه البخاري: ١٣٤٣]

रिवायत है। उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उहद की लड़ाई के शहीदों में से दो दो शहीदों को एक एक कपड़े में रखकर फरमाते, इनमें से कुरआन का इल्म किसको ज्यादा था? तो जब उनमें से किसी की तरफ इशारा किया जाता तो कब्र में आप उसे पहले रखते और फरमाते कि कयामत के दिन मैं इनके बारे में गवाही दूंगा और आपने इन्हें इसी तरह खून लगे हुए नहलाये दफ़न करने का हुक्म दिया और इन पर जनाज़े की नमाज़ भी न पढ़ी।

फायदे : शहीद के जनाज़े की नमाज तो पढ़ी जा सकती है, जरूरी नहीं। लेकिन इसके लिए ऐलान और इश्तिहार नाजाइज हैं।

٣٨ - باب: إِذَا أَسْلَمَ الصَّبِيُّ فَمَاتَ، هَلْ يُصَلَّى عَلَيْهِ؟ وَهَلْ يُعْرَضُ عَلَى الصَّبِيِّ الإِسْلاَمُ؟

बाब 38 : जब कोई मुसलमान बच्चा मर जाये तो क्या उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ना चाहिए? नीज क्या बच्चे पर इस्लाम पेश किया जाये।

٦٧٧ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ يَوْمًا، فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أُحُدٍ صَلاَتَهُ عَلَى الْمَيِّتِ، ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: (إِنِّي فَرَطُكُمْ، وَأَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ، وَإِنِّي وَاللهِ لأَنْظُرُ إِلَى

677 : उकबा बिन आमिर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रोज (मदीना से) बाहर तशरीफ लाये और जंगे उहद के शहीदों पर इस तरह नमाज़ पढ़ी जैसे आप हर मय्यत

पर पढ़ते थे। फिर वापस आकर मिम्बर पर खड़े हुये और फरमाया, मैं तुम्हारा पेश खेमा हूँ और तुम्हारा गवाह हूँ। अल्लाह की कसम! मैं इस वक़्त अपने हौज को देख रहा हूँ और मुझे रूये जमीन के खजानों की कुंजीयां या जमीन की चाबियां दी गई हैं। अल्लाह की कसम! मुझे तुम्हारे बारे में यह डर नहीं कि तुम मुशरिक बन जाओगे, लेकिन मुझे यह डर है कि तुम दुनिया की तरफ रागिब हो जाओगे।

حَوْضِي الآنَ، وَإِنِّي أُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ خَزَائِنِ الأَرْضِ، أَوْ مَفَاتِيحَ الأَرْضِ، وَإِنِّي وَٱللهِ ما أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا بَعْدِي، وَلٰكِنْ أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنَافَسُوا فِيهَا).
[رواه البخاري: ١٣٤٤]

फायदे : इमाम नौवी रह. ने कहा कि नमाज़ से मुराद यहां दुआ है, यानी जैसी मय्यत के लिए दुआ आप किया करते थे, ऐसे ही दुआ फरमायी (औनुलबारी, 2/241)

678 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ दूसरे कुछ लोगों की मअइयत (साथ) में इब्ने सय्याद के पास गये, यहां तक कि उन्होंने इसे बनी मगाला की गढ़ियों के करीब कुछ लड़कों के साथ खेलता हुआ पाया। इब्ने सय्याद उस वक़्त बालिग होने के करीब था। उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने की जानकारी न मिली।

٦٧٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ انْطَلَقَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي رَهْطٍ قِبَلَ ابْنِ صَيَّادٍ، حَتَّى وَجَدُوهُ يَلْعَبُ مَعَ الصِّبْيَانِ، عِنْدَ أُطُمِ بَنِي مَغَالَةَ، وَقَدْ قَارَبَ ابْنُ صَيَّادٍ الحُلُمَ، فَلَمْ يَشْعُرْ حَتَّى ضَرَبَ النَّبِيُّ ﷺ بِيَدِهِ، ثُمَّ قَالَ لابْنِ صَيَّادٍ: (تَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ ٱللهِ). فَنَظَرَ إِلَيْهِ ابْنُ صَيَّادٍ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ الأُمِّيِّينَ. فَقَالَ ابْنُ صَيَّادٍ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ ٱللهِ؟ فَرَفَضَهُ وَقَالَ: (آمَنْتُ بِٱللهِ وَبِرُسُلِهِ). فَقَالَ لَهُ: (مَاذَا تَرَى؟). قَالَ ابْنُ صَيَّادٍ:

يَأْتِينِي صَادِقٌ وَكَاذِبٌ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (خُلِّطَ عَلَيْكَ الأَمْرُ). ثُمَّ قَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنِّي قَدْ خَبَأْتُ لَكَ خَبِيئًا). فَقَالَ ابْنُ صَيَّادٍ: هُوَ الدُّخُّ. فَقَالَ: (اخْسَأْ، فَلَنْ تَعْدُوَ قَدْرَكَ). فَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: دَعْنِي يَا رَسُولَ ٱللهِ أَضْرِبْ عُنُقَهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنْ يَكُنْهُ فَلَنْ تُسَلَّطَ عَلَيْهِ، وَإِنْ لَمْ يَكُنْهُ فَلاَ خَيْرَ لَكَ فِي قَتْلِهِ).

وَقَالَ عَبْدُ ٱللهِ بْنُ عُمَرَ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا -: انْطَلَقَ بَعْدَ ذٰلِكَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَأُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ، إِلَى النَّخْلِ الَّتِي فِيهَا ابْنُ صَيَّادٍ، وَهُوَ يَخْتِلُ أَنْ يَسْمَعَ مِنِ ابْنِ صَيَّادٍ شَيْئًا، قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ ابْنُ صَيَّادٍ، فَرَآهُ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ مُضْطَجِعٌ، يَعْنِي فِي قَطِيفَةٍ، لَهُ فِيهَا رَمْزَةٌ أَوْ زَمْرَةٌ، فَرَأَتْ أُمُّ ابْنِ صَيَّادٍ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، وَهُوَ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ، فَقَالَتْ لابْنِ صَيَّادٍ: يَا صَافِ، وَهُوَ اسْمُ ابْنِ صَيَّادٍ، هٰذَا مُحَمَّدٌ ﷺ، فَثَارَ ابْنُ صَيَّادٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَوْ تَرَكَتْهُ بَيَّنَ). [رواه البخاري: ١٣٥٤، ١٣٥٥]

यहां तक कि आपने अपने हाथ से उसे मारा। फिर इब्ने सय्याद से फरमाया, क्या तू इस बात की गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? उसने आपको देखा और कहने लगा, मैं गवाही देता हूँ कि आप अनपढ़ लोगों के रसूल हैं, फिर इब्ने सय्याद ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि आप इस बात की गवाही देते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? आप यह बात सुनकर उससे अलग हो गये और फरमाया कि मैं अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाता हूँ। फिर आपने उससे पूछा कि तू क्या देखता है? इब्ने सय्याद बोला कि मेरे पास सच्ची झूठी दोनों खबरें आती हैं। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुझ पर मामला मख्लूत (गडमण्ड) कर दिया गया है, फिर आपने फरमाया, मैंने तेरे लिए एक बात अपने दिल में सोची है, बताऊं वह क्या है? इब्ने सय्याद ने कहा, वह "दुख़" है। आपने फरमाया कि चला जा, तू अपनी ताकत से कभी आगे न बढ़ेगा। उमर रज़ि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे इजाजत

दीजिए मैं इसकी गर्दन उड़ा दूं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर यह वही दज्जाल है तो तुम उस पर काबू नहीं पा सकते और अगर वह नहीं तो फिर इसके कत्ल से कोई फायदा नहीं।

इब्ने उमर रज़ि. कहते हैं, उसके बाद फिर एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उबई बिन काअब रज़ि. उस बाग में गयें, जिसमें इब्ने सय्याद था। आप चाहते थे कि इब्ने सय्याद कुछ बातें सुनें। इससे पहले कि वह आपको देखे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे इस हालत में देखा कि वह एक चादर ओढ़े कुछ गुनगुना रहा था। बावजूद यह कि आप पेड़ों की आड़ में चल रहे थे, उसकी मां ने आपको देख लिया और इब्ने सय्याद को पुकारा, ऐ साफी! (यह इब्ने सय्याद का नाम है)। यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये, जिस पर इब्ने सय्याद उठ बैठा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर यह औरत उसको रहने देती तो वह अपना हाल बयान करता।

फायदे : इब्ने सय्याद मदीना में एक यहूदी नस्ल का लड़का था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसकी बाज निशानियों से शक हुआ कि शायद आने वाले जमानें में वह दज्जाल का रूप धारेगा। इमाम बुखारी का मतलब यह है कि जवानी के करीब बच्चे पर इस्लाम पेश किया जा सकता है। (औनुलबारी, 2/344)

---

679 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक यहूदी लड़का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत किया करता

٦٧٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ غُلاَمٌ يَهُودِيٌّ يَخْدُمُ النَّبِيَّ ﷺ فَمَرِضَ، فَأَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُهُ، فَقَعَدَ عِنْدَ رَأْسِهِ، فَقَالَ لَهُ: (أَسْلِمْ).

था। जब वह बीमार हो गया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसकी हालत को देखने के लिए तशरीफ ले गये और उसके सिरहाने बैठकर फरमाया, तू मुसलमान हो जा, तो उसने अपने बाप की तरफ देखा जो उसके पास बैठा था। उसके बाप ने कहा, अबू कासिम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत करो, चूनांचे वह मुसलमान हो गया, तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह फरमाते हुए बाहर तशरीफ ले आये, अल्लाह का शुक्र है कि उसने उस लड़के को आग से बचा लिया।

فَنَظَرَ إِلَى أَبِيهِ وَهُوَ عِنْدَهُ، فَقَالَ لَهُ: أَطِعْ أَبَا الْقَاسِمِ ﷺ، فَأَسْلَمَ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ يَقُولُ: (الحَمْدُ للهِ الَّذِي أَنْقَذَهُ مِنَ النَّارِ). [رواه البخاري: ١٣٥٦]

फायदे : मालूम हुआ कि मुश्रिक से खिदमत ली जा सकती है और उसकी देखभाल करना भी जाइज है। (औनुलबारी, 2/348)

---

680 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हर बच्चा इस्लाम की फितरत पर पैदा होता है, लेकिन मां-बाप उसे यहूदी या नसरानी या मजूसी बना देते हैं, जिस तरह जानवर सही और सालिम बच्चा जन्म देते हैं। क्या तुम कोई नाक कान कटा देखते हो? फिर अबू हुरैरा यह आयत तिलावत करते ''यह वह इस्लाम की फितरत है,

٦٨٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ما مِنْ مَوْلُودٍ يولَدُ إِلَّا يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ، فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ، أَوْ يُنَصِّرَانِهِ، أَوْ يُمَجِّسَانِهِ، كما تُنْتَجُ الْبَهِيمَةُ بَهِيمَةً جَمْعَاءَ، هَلْ تُحِسُّونَ فِيهَا مِنْ جَدْعَاءَ). ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: ﴿فِطْرَتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِي فَطَرَ ٱلنَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ ٱللَّهِ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلْقَيِّمُ﴾. [رواه البخاري: ١٣٥٩]

जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा फरमाया है और अल्लाह की फितरत में कोई तब्दीली नहीं हो सकती, यही कायम रहने वाला दीन है।''

फायदे : मतलब यह है कि अगर मां-बाप की तालीम और देखरेख सोसायटी का असर बच्चे की फितरत से छेड़-छाड़ न करे तो बच्चा दीन इस्लाम का मानने वाला और उसके अहकाम का कारबन्द होगा।

बाब 39 : अगर मुश्रिक मरते वक्त कलमा-ए-तौहीद कह दे तो (क्या उसकी बख्शिश हो सकती है?)

٣٩ - باب: إذَا قَالَ المُشرِكُ عِنْدَ المَوتِ: لاَ إلَهَ إلَّا الله

681 : मुसय्यब बिन हज़्न रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब अबू तालिब मरने लगा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके पास तशरीफ लाये, वहां उस वक्त अबू जहल बिन हिशाम और अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या बिन मुगीरा भी थे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू तालिब से कहा, ऐ चचा! कलमा तौहीद ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' कह दे तो मैं अल्लाह के यहां तुम्हारी गवाही दूंगा। अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या बोले, ऐ अबू तालिब! क्या

٦٨١ : عَنِ المسيَّب بن حَزْنٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا حَضَرَتْ أَبَا طَالِبٍ الْوَفَاةُ، جَاءَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، فَوَجَدَ عِنْدَهُ أَبَا جَهْلِ بْنَ هِشَامٍ، وَعَبْدَ ٱللهِ بْنَ أَبِي أُمَيَّةَ بْنِ الْمُغِيرَةِ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لِأَبِي طَالِبٍ: (يَا عَمِّ، قُلْ لاَ إِلَهَ إِلَّا ٱللهُ، كَلِمَةً أَشْهَدُ لَكَ بِهَا عِنْدَ ٱللهِ). فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ وَعَبْدُ ٱللهِ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ: يَا أَبَا طَالِبٍ، أَتَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَعْرِضُهَا عَلَيْهِ، وَيَعُودَانِ بِتِلْكَ الْمَقَالَةِ، حَتَّى قَالَ أَبُو طَالِبٍ آخِرَ مَا كَلَّمَهُمْ: هُوَ عَلَى مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ. وَأَبَى أَنْ يَقُولَ: لاَ إِلَهَ إِلَّا ٱللهُ. فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَمَا وَٱللهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ مَا لَمْ أُنْهَ

عَنْكَ). فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَعَالَى فِيهِ: ﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ﴾. الآيَةَ. [رواه البخاري: ١٣٦٠]

तुम अपने बाप अब्दुल मुत्तलिब के तरीके से फिरते हो? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो बार बार उसे कलमा -ए-तौहिद की तलकीन करते रहे और वह दोनों भी अपनी बात बराबर दोहराते रहे, यहां तक कि अबू तालिब ने आखिर में कहा कि वह अब्दुल मुत्तलिब के तरीके पर हैं और "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहने से इनकार कर दिया। जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अब मैं तुम्हारे लिए अल्लाह तआला से उस वक़्त तक मगफिरत की दुआ करता रहूंगा, जब तक मुझे उससे मना न कर दिया जाये, इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाजिल फरमायी कि "नबी के लिए यह जाइज नहीं कि वह मुश्रिक के लिए बख्शिश की दुआ करें, चाहे वह करीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो।"

फायदे : अगर मौत की निशानियाँ जाहिर न हो और न ही मौत का यकीन हो तो मौत के वक़्त ईमान लाना फायदा दे सकता है, मुमकिन है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू तालिब को मरने की हालत से पहले ईमान लाने की दावत दी हो। (औनुलबारी, 2/351)

---

٤٠ - باب: مَوعِظَةُ المُحَدِّثِ عِندَ القَبْرِ وَقُعُودِ أَصْحَابِهِ حَوْلَهُ

बाब 40 : आलिम का कब्र के पास (बैठकर) नसीहत करना जबकि उसके शागिर्द आस-पास बैठे हो।

٦٨٢ : عَنْ عَلِيٍّ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا فِي جَنَازَةٍ فِي بَقِيعِ الْغَرْقَدِ، فَأَتَانَا النَّبِيُّ ﷺ، فَقَعَدَ وَقَعَدْنَا حَوْلَهُ، وَمَعَهُ مِخْصَرَةٌ،

682 : अली रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम एक जनाज़े के साथ बकी-ए-गरकद (कब्रिस्तान) में थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

فَنَكَّسَ، فَجَعَلَ يَنْكُتُ بِمِخْصَرَتِهِ، ثُمَّ قَالَ: (ما مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ، ما مِنْ نَفْسٍ مَنْفُوسَةٍ، إِلَّا كُتِبَ مَكَانُهَا مِنَ الجَنَّةِ وَالنَّارِ، وَإِلَّا قَدْ كُتِبَ: شَقِيَّةً أَوْ سَعِيدَةً). فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَفَلَا نَتَّكِلُ عَلَى كِتَابِنَا وَنَدَعُ الْعَمَلَ، فَمَنْ كانَ مِنَّا مِنْ أَهْلِ السَّعَادَةِ فَسَيَصِيرُ إِلى عَمَلِ أَهْلِ السَّعَادَةِ، وأَمَّا مَنْ كَانَ مِنَّا مِنْ أَهْلِ الشَّقَاوَةِ فَسَيَصِيرُ إِلى عَمَلِ أَهْلِ الشَّقَاوَةِ؟ قَالَ: (أَمَّا أَهْلُ السَّعَادَةِ فَيُيَسَّرُونَ لِعَمَلِ أَهْلِ السَّعَادَةِ، وَأَمَّا أَهْلُ الشَّقَاوَةِ فَيُيَسَّرُونَ لِعَمَلِ أَهْلِ الشَّقَاوَةِ). ثُمَّ قَرَأَ: ﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ﴾ الآيَةَ. [رواه البخاري: ١٣٦٢]

वसल्लम हमारे करीब तशरीफ लाकर बैठ गये और हम लोग भी आपके आस-पास बैठ गये। आपके हाथ में एक छड़ी थी। आपने सर झुका लिया और लकड़ी से नीचे कुरेदने लगे, फिर फरमाया, तुममें से कोई ऐसा जानदार नहीं, जिसकी जगह जन्नत या दोजख में न लिखी हो और हर आदमी का नेक बख्त या बद नसीब होना भी लिखा हुआ है। इस पर एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! फिर हम इस किताब पर ऐतमाद करके अमल न छोड़ दें, क्योंकि हममें से जो आदमी खुश नसीब होगा, वह खुशनसीबों के अमल की तरफ लौटेगा और जो आदमी बदबख्त होगा वह बदबख्तों के अमल की तरफ लौटेगा। आपने फरमाया कि नेक बख्त को नेक कामों की तौफिक दी जाती है और बदबख्त के लिए बुरे काम आसान कर दिये जाते है। उसके बाद आपने यह आयत तिलावत फरमायी। फिर जो आदमी सदका देगा और परहेजगारी इख्तियार करेगा और अच्छी बात की तसदीक करेगा, हम उसे आसानी (अच्छे कामों) की तौफिक देंगे।

फायदे : यह हदीस तकदीर के सबूत के लिए एक अज़ीम दलील की हैसियत रखती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान का मतलब यह है कि हम चूंकि अल्लाह के बन्दे हैं,

लिहाजा बन्दगी और उसके हुक्मों को मानना हमारा काम होना चाहिए। अल्लाह की तकदीर का हमें इल्म नहीं कि उसके सहारे अमल छोड़ दिया जाये। (औनुलबारी, 2/354)। नोट : अमल छोड़े कैसे जा सकते हैं? अच्छे और बुरे अमल तो तयशुदा हैं और अंजाम का दारोमदार इन्हीं अमलों पर है। (अलवी)

बाब 41 : खुदकुशी करने वाले के बारे में क्या आया है?

٤١ - باب: ما جاء في قاتل النفس

683 : साबित बिन जहाक रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया जो आदमी इस्लाम के अलावा किसी मजहब की जानबूझ कर कसम उठाये तो वह ऐसा ही होगा, जैसा उसने कहा है और जो आदमी तेज हथियार से अपने आपको मार डाले, उसको उसी हथियार से जहन्नम में अजाब दिया जायेगा।

٦٨٣ : عن ثابت بن الضحاك رضي الله عنه، عن النبي ﷺ قال: (من حلف بملة غير الإسلام، كاذبا متعمدا، فهو كما قال. ومن قتل نفسه بحديدة، عذب بها في نار جهنم). [رواه البخاري: ١٣٦٣]

फायदे : इमाम बुखारी का मकसद यह है कि जब खुदकशी करने वाला जहन्नमी है तो जनाज़े की नमाज़ न पढ़ी जाये। लेकिन निसाई की रिवायत में है कि खुदकशी करने वाले की जनाज़े की नमाज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नहीं पढ़ी थी अलबत्ता अपने सहाबा को इससे नहीं रोका था। मालूम हुआ कि मर्तबा रखने वाले हजरात ऐसे इन्सान की जनाज़े की नमाज़ न पढ़ें ताकि दूसरों को नसीहत हो। (अल्लाह बेहतर जानने वाला है)

684 : जुनदब रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

٦٨٤ : عن جندب رضي الله عنه، عن النبي ﷺ قال: (كان

بِرَجُلٍ جِرَاحٌ فَقَتَلَ نَفْسَهُ، فَقَالَ اللهُ تعالى: بَدَرَنِي عَبْدِي بِنَفْسِهِ، حَرَّمْتُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ). [رواه البخاري: ١٣٦٤]

से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, एक आदमी को जख्म लग गया था, उसने अपने आपको मार डाला तो अल्लाह तआला ने फरमाया, चूंकि मेरे बन्दे ने मुझ से पहल चाही (पहले अपनी जान ले ली) लिहाजा मैंने उस पर जन्नत को हराम कर दिया है।

फायदे : यानी खुदकशी करने वाले ने सब्र और हिम्मत से काम न लिया, बल्कि अपनी मौत रब के हवाले करने के बजाये जल्दबाजी जाहिर की। हालांकि अल्लाह ने उसकी मौत के वक़्त पर उसे आगाह नहीं किया था। लिहाजा उस सजा का हकदार ठहरा जो हदीस में बयान हुई है। (औनुलबारी, 2/358)

٦٨٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (الَّذِي يَخْنُقُ نَفْسَهُ يَخْنُقُهَا فِي النَّارِ، وَالَّذِي يَطْعُنُهَا يَطْعُنُهَا فِي النَّارِ). [رواه البخاري: ١٣٦٥]

685 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो खुद अपना गला घोंट ले वह दोजख में अपना गला घोंटता ही रहेगा और जो आदमी नेज़ा मारकर खुदकुशी कर ले वह दोजख में भी खुद को नेज़ा मारता रहेगा।

फायदे : अगरचे खुदकुशी करने वाले की सजा यह है कि वह जहन्नम में रहे, लेकिन अल्लाह तआला अहले तौहीद पर रहम और करम फरमायेगा और उस तौहीद की बरकत से उन्हें आखिरकार जहन्नम में निकाल लेगा। (औनुलबारी, 2/359)

٤٢ - باب: ثَنَاءُ النَّاسِ عَلَى الْمَيِّتِ

बाब 42 : लोगों का मय्यत की तारीफ करना।

٦٨٦ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ:

686 : अनस रज़ि. से रिवायत है,

مَرُّوا بِجَنَازَةٍ فَأَثْنَوْا عَلَيْهَا خَيْرًا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وَجَبَتْ). ثُمَّ مَرُّوا بِأُخْرَى فَأَثْنَوْا عَلَيْهَا شَرًّا، فَقَالَ: (وَجَبَتْ). فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ما وَجَبَتْ؟ قَالَ: (هٰذا أَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِ خَيْرًا، فَوَجَبَتْ لَهُ الجَنَّةُ، وَهٰذَا أَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِ شَرًّا، فَوَجَبَتْ لَهُ النَّارُ، أَنْتُمْ شُهَدَاءُ اللهِ فِي الأَرْضِ). [رواه البخاري: ١٣٦٧]

उन्होंने फरमाया कि लोग एक जनाज़ा लेकर गुजरे तो सहाबा ने उसकी तारीफ की। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उसके लिए वाजिब हो गयी। उसके बाद दूसरा जनाज़ा लेकर गुजरे तो सहाबा ने उसकी बुराई की तो रसूलुल्लाह ने फरमाया, उसके लिए लाज़िम हो गयी, इस पर उमर रज़ि. ने कहा कि क्या वाजिब हो गई? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पहले आदमी की तुमने तारीफ की तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो गयी और दूसरे की तुमने बुराई की तो उसके लिए जहन्नम वाजिब (लाजिम) हो गयी, क्योंकि तुम लोग जमीन में अल्लाह की तरफ से गवाही देने वाले हो।

फायदे : मुस्तदरक हाकिम में है सहाबा किराम रज़ि. ने पहले आदमी के बारे में कहा कि वह अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता था और अल्लाह के हुक्मों को बजा लाने की कोशिश करता था और दूसरे आदमी के बारे में कहा कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कीना कपट रखता था और गुनाह में लगा रहता था। (औनुलबारी, 2/360)

---

٦٨٧ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَيُّمَا مُسْلِمٍ، شَهِدَ لَهُ أَرْبَعَةٌ بِخَيْرٍ،

687 : उमर बिन खत्ताब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

أَدْخَلَهُ ٱللهُ ٱلْجَنَّةَ). فَقُلْنَا: وَثَلاَثَةٌ، قَالَ: (وَثَلاَثَةٌ). فَقُلْنَا: وَٱثْنَانِ، قَالَ: (وَٱثْنَانِ). ثُمَّ لَمْ نَسْأَلْهُ عَنِ ٱلْوَاحِدِ. [رواه البخاري: ١٣٦٨]

फरमाया, जिस मुसलमान के नेक होने की चार आदमी गवाही दें तो अल्लाह उसे जन्नत में दाखिल करेगा, हम लोगों ने कहा और अगर तीन आदमी? तो आपने फरमाया कि तीन आदमी भी, फिर फरमाया कि दो भी। फिर हमने एक आदमी की गवाही की बारे में आपसे नहीं पूछा।

फायदे : एक आदमी की गवाही के बारे में इस लिए सवाल नहीं किया कि गवाही का निसाब कम से कम दो आदमी हैं, चूनांचे इमाम बुखारी ने "किताबुश शहादात : **2643**" में इस हदीस से गवाही का निसाब साबित किया है। (औनुलबारी, **2/343**)

٤٣ - باب: مَا جَاءَ فِي عَذَابِ ٱلْقَبْرِ

बाब 43 : कब्र के अजाब का बयान।

٦٨٨ : عَنِ ٱلْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِذَا أُقْعِدَ ٱلْمُؤْمِنُ فِي قَبْرِهِ أُتِيَ، ثُمَّ شَهِدَ أَنْ لاَ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ ٱللهِ، فَذٰلِكَ قَوْلُهُ: ﴿يُثَبِّتُ ٱللهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱلْقَوْلِ ٱلثَّابِتِ﴾). [رواه البخاري: ١٣٦٩]

688 : बराअ बिन आज़िब रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जब मुसलमान को कब्र में बिठाया जाता है तो उसके पास फरिश्ते आते हैं। फिर वह गवाही देता है कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद बरहक नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और यही मतलब है अल्लाह के इस कौल का कि "अल्लाह तआला उन लोगों को, जो ईमान लाये है, मजबूत बात पर कायम रखता है, दुनियावी जिन्दगी में भी और आखिरत में भी।"

फायदे : कुरआन और हदीस से कब्र के अजाब का सुबूत मिलता है। और अहले सुन्नत का इस पर इजमाअ है और अकल के ऐतबार से भी इसमें कोई शक नहीं है कि अल्लाह तआला जिस्म के तमाम बिखरे हुए हिस्सों में जिन्दगी पैदा करने पर कुदरत रखता है। अगरचे बदन को दरिन्दे खा गये हों, अल्लाह तआला एक लम्हे में उन्हें जमा करने पर कुदरत रखता है। कुछ लोगों ने कब्र के अजाब को इस तौर पर तसलीम किया है कि जमीनी घड़े में नहीं बल्कि बरजखी कब्र में अजाब होगा। यह अकल और नकल के खिलाफ हैं।

٦٨٩ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَطَّلَعَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أَهْلِ الْقَلِيبِ، فَقَالَ: (وَجَدْتُمْ ما وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا). فَقِيلَ لَهُ: أَتَدْعُو أَمْوَاتًا؟ فَقَالَ: (ما أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ مِنْهُمْ، وَلٰكِنْ لاَ يُجِيبُونَ). [رواه البخاري: ١٣٧٠]

689 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्ल. ने उस कुऐं में झांका जिसमें बदर में मरने वाले मुश्रिक मरे पड़े थे और फरमाया कि तुम्हारे मालिक ने जो तुम से सच्चा वादा किया था, वह तुम ने पा लिया। आपसे अर्ज किया गया, क्या आप मुर्दो को पुकारते हैं? आपने फरमाया कि तुम उनसे ज्यादा नहीं सुनते हो, अलबत्ता वह जवाब नहीं दे सकते।

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस से कब्र के अजाब का सबूत दिया है, वह इस तरह कि जब कलीबे बदर में पड़े हुए मुर्दो का सुनना साबित हो तो कब्र में उनकी जिन्दगी साबित हुई बसूरते दीगर कब्र का अजाब किस पर होगा। **(औनुलबारी, 2/366)**

٦٩٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّهُمْ

690 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि (बदर में मारे

गये लोगों के बारे में) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर्फ यह फरमाया था कि इस वक़्त वह जानते हैं कि जो मैं उनसे कहता था, वह ठीक था और बेशक इरशादबारी तआला है, ''बेशक आप मुर्दों को नहीं सुना सकते हो।''

لَيَعْلَمُونَ الآنَ أَنَّ ما كُنْتُ أَقُولُ حَقٌّ). وَقَدْ قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ﴾. [رواه البخاري: ١٣٧١]

फायदे : जम्हूर मुहद्दसीन ने हज़रत आइशा रज़ि. के मसले से इत्तेफाक नहीं किया, क्योंकि आयते करीमा में सुनने की नहीं बल्कि सुनाने की नफी है। हर वक़्त जब तुम चाहो, मुर्दों को नहीं सुना सकते, मगर जब अल्लाह चाहे, और हज़रत आइशा रज़ि. उनके लिए इल्म साबित करती हैं, जब इल्म साबित हो तो सुनने में क्या रुकावट है? (औनुलबारी, 2/367)

691 : असमा बिन्ते अबी बकर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुत्बा इरशाद फरमाने के लिए खड़े हुये तो आपने कब्र के फितने का जिक्र फरमाया, जिससे आदमी की आजमाईश की जायेगी तो उसको सुनकर मुसलमानों की चीखें निकल गयी।

٦٩١ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ خَطِيبًا، فَذَكَرَ فِتْنَةَ الْقَبْرِ الَّتِي يَفْتَتِنُ فِيهَا الْمَرْءُ، فَلَمَّا ذَكَرَ ذٰلِكَ ضَجَّ الْمُسْلِمُونَ ضَجَّةً. [رواه البخاري: ١٣٧٣]

फायदे : निसाई की रिवायत में है कि फितना दज्जाल की तरह तुम्हें कब्र में भी सख्त तरीन आजमाईश से दो-चार किया जायेगा।

(औनुलबारी, 2/368)

बाब 44 : कब्र के अजाब से पनाह मांगना।

٤٤ - بَابُ: التَّعَوُّذُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

٦٩٢ : عَنْ أَبِي أَيُّوبَ - رَضِيَ اللهُ عَنْهُ - قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ وَقَدْ وَجَبَتِ الشَّمْسُ، فَسَمِعَ صَوْتًا، فَقَالَ: (يَهُودُ تُعَذَّبُ فِي قُبُورِهَا). [رواه البخاري: ١٣٧٥]

694 : अबू अय्यूब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक दिन सूरज छिपने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ लाये तो आपने एक भयानक आवाज़ सुनी, उस वक़्त आपने फरमाया कि यहूदियों को उनकी कब्रो में अज़ाब दिया जा रहा है।

फायदे : जब यहुदियों के लिए कब्र का अज़ाब साबित हो तो मुश्रिकों के लिए भी होगा, क्योंकि उनका कुफ्र यहुदियों के कुफ्र से कहीं ज्यादा है। (औनुलबारी, 2/371)

٦٩٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدْعُو: (اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ). [رواه البخاري: ١٣٧٧]

693 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर यह दुआ करते थे, ऐ अल्लाह! मैं कब्र के अजाब और जहन्नम के अजाब, जिन्दगी और मौत की खराबी और मसीहे दज्जाल के फितना से तेरी पनाह चाहता हूं।

٤٥ - باب: الميت يُعْرَضُ عَلَيهِ مقعده بِالغَدَاةِ وَالعَشِيِّ

बाब 45 : मुर्दे को सुबह और शाम उसका ठिकाना दिखाया जाता है।

٦٩٤ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا مَاتَ، عُرِضَ عَلَيْهِ مَقْعَدُهُ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ، إِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَمِنْ أَهْلِ

694 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुममें से जब कोई मर जाता है तो हर सुबह व शाम उसे

उसका ठिकाना दिखाया जाता है। अगर वह जन्नती है तो जन्नत में और अगर दोजखी है तो जहन्नम में और उससे कहा जाता है कि यही तेरा मकाम है, जब कयामत के दिन अल्लाह तुझे उठायेगा।

الجنَّة، وَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَمِنْ أَهْلِ النَّارِ، فَيُقَالُ: هٰذَا مَقْعَدُكَ حَتَّى يَبْعَثَكَ ٱللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ١٣٧٩]

फायदे : इस हदीस से कब्र के अजाब का सुबूत मिला। नीज यह भी मालूम हुआ कि जिस्म के खत्म होने से रूह खत्म नहीं होती। (औनुलबारी, 2/371)

बाब 46: मुसलमानों की नाबालिग औलाद के बारे में जो कहा गया है?

٤٦ - باب: مَا قِيلَ فِي أَوْلَادِ المُسلِمِينَ

695 : बराअ बिन आजिब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिगर के टुकड़े इब्राहीम रज़ि. की वफात हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जन्नत में उनके लिए एक दूध पिलाने वाली मुकर्रर कर दी गई है।

٦٩٥ : عَنِ البَرَاء رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا تُوُفِّيَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ لَهُ مُرْضِعًا فِي الجَنَّةِ). [رواه البخاري: ١٣٨٢]

फायदे : हज़रत इब्राहीम रज़ि. दूध पीती उम्र में मरे तो अल्लाह तआला अपने पैगम्बर की अजमत के पेशे नजर जन्नत में उसे दूध पिलाने वाली का बन्दोबस्त कर दिया है। इस हदीस से मालूम हुआ कि मुसलमानों की औलाद जन्नत में होगी। (औनुलबारी, 2/373)

बाब 47 : मुश्रिकों के बच्चों के बारे में क्या कहा गया है?

٤٧ - باب: مَا قِيلَ فِي أَوْلَادِ المُشْرِكِينَ

696 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुश्रिकों की औलाद के बारे में पूछा गया तो आपने फरमाया, अल्लाह तआला ने जब उन्हें पैदा किया था तो खुब जानता था कि वह कैसे अमल करेंगे?

٦٩٦ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنْ أَوْلَادِ الْمُشْرِكِينَ، فَقَالَ: (ٱللهُ، إِذْ خَلَقَهُمْ، أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ). [رواه البخاري: ١٣٨٣]

फायदे : काफिरों की औलाद जो नाबालिग उम्र में मर जाये, उसके अन्जाम के बारे में बहुत इख्तिलाफ है। इमाम बुखारी का रूझान यह मालूम होता है कि वह जन्नती हैं, क्योंकि वह गुनाह के बगैर मासूम मरे हैं। सही बात यह है कि उनके बारे में चुप रहा जाये, गुजरी हुई हदीस से भी इसकी ताईद होती है।

बाब : **48**

[باب]

697 : समरा बिन जुनदब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ (फजर) से फारिग होते तो हमारी तरफ मुंह करके फरमाते, तुममें से किसी ने आज रात कोई ख्वाब देखा है तो बयान करे। अगर किसी ने कोई ख्वाब देखा होता तो वह बयान कर देता। फिर जो कुछ अल्लाह चाहता उसकी ताबीर बयान करते। चूनांचे इसी तरह एक दिन आपने हमसे

٦٩٧ : عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا صَلَّى صَلَاةَ الصُّبْحِ، أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ، فَقَالَ: (مَنْ رَأَى مِنْكُمُ اللَّيْلَةَ رُؤْيَا). قَالَ: فَإِنْ رَأَى أَحَدٌ قَصَّهَا، فَيَقُولُ: (مَا شَاءَ ٱللهُ). فَسَأَلَنَا يَوْمًا فَقَالَ: (هَلْ رَأَى أَحَدٌ مِنْكُمْ رُؤْيَا). قُلْنَا: لَا، قَالَ: (لٰكِنِّي رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ رَجُلَيْنِ أَتَيَانِي فَأَخَذَا بِيَدِي، فَأَخْرَجَانِي إِلَى الْأَرْضِ الْمُقَدَّسَةِ، فَإِذَا رَجُلٌ جَالِسٌ، وَرَجُلٌ قَائِمٌ بِيَدِهِ كَلُّوبٌ مِنْ

पूछा, क्या तुममें से किसी ने कोई ख्वाब देखा है? हमने अर्ज किया नहीं। आपने फरमाया, मगर मैंने आज रात दो आदमियों को ख्वाब में देखा कि वह मेरे पास आये और मेरा हाथ पकड़कर मुझे एक पाक जमीन पर ले गये, जहां मैं क्या देखता हूँ कि एक आदमी बैठा और दूसरा खड़ा हैं जिसके हाथ में लोहे का आंकड़ा है, जिसे वह बैठे हुए आदमी के मुंह में दाखिल करता है। जो इस तरफ को चीरता हुआ, उसकी गुद्दी तक पहुंच जाता है। फिर उसके दूसरे जबड़े में भी ऐसा ही करता है। उस वक्त में पहला जबड़ा ठीक हो जाता है और फिर यह दोबारा ऐसे ही करता है। मैंने पूछा, यह क्या बात है? तो उन दोनों ने मुझ से कहा, आगे चलो। हम चले तो एक ऐसे आदमी के पास पहुंचे जो बिलकुल चित लेटा हुआ है और एक आदमी उसके सरहाने एक पत्थर लिये खड़ा है। वह उस पत्थर से उसका सर फोड़ रहा है। जब पत्थर मारता है तो

حَدِيدٍ، قَالَ: إِنَّهُ يُدْخِلُ ذٰلِكَ الْكَلُّوبَ فِي شِدْقِهِ حَتَّى يَبْلُغَ قَفَاهُ، ثُمَّ يَفْعَلُ بِشِدْقِهِ الآخَرِ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَيَلْتَئِمُ شِدْقُهُ هٰذَا، فَيَعُودُ فَيَصْنَعُ مِثْلَهُ. قُلْتُ: ما هٰذَا؟ قالا: ٱنْطَلِقْ، فَانْطَلَقْنَا، حَتَّى أَتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ مُضْطَجِعٍ عَلَى قَفَاهُ، وَرَجُلٌ قائِمٌ عَلَى رَأْسِهِ بِفِهْرٍ، أَوْ صَخْرَةٍ، فَيَشْدَخُ بِهِ رَأْسَهُ، فَإِذَا ضَرَبَهُ تَدَهْدَهَ الحَجَرُ، فَانْطَلَقَ إِلَيْهِ لِيَأْخُذَهُ، فَلاَ يَرْجِعُ إِلَى هٰذَا، حَتَّى يَلْتَئِمَ رَأْسُهُ، وَعادَ رَأْسُهُ كما هُوَ، فَعَادَ إِلَيْهِ فَضَرَبَهُ، قُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ قَالاَ: ٱنْطَلِقْ، فَانْطَلَقْنَا إِلَى ثَقْبٍ مِثْلِ التَّنُّورِ، أَعْلاَهُ ضَيِّقٌ وَأَسْفَلُهُ وَاسِعٌ، يَتَوَقَّدُ تَحْتَهُ نَارًا، فَإِذَا ٱقْتَرَبَ ٱرْتَفَعُوا، حَتَّى كادَ أَنْ يَخْرُجُوا، فَإِذَا خَمَدَتْ رَجَعُوا فِيهَا، وَفِيهَا رِجَالٌ وَنِسَاءٌ عُرَاةٌ، فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ قَالاَ: ٱنْطَلِقْ، فَانْطَلَقْنَا، حَتَّى أَتَيْنَا عَلَى نَهَرٍ مِنْ دَمٍ فِيهِ رَجُلٌ قَائِمٌ، وَعَلَى وَسَطِ النَّهَرِ - قَالَ يَزِيدُ وَوَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ حازِمٍ - وَعَلَى شَطِّ النَّهَرِ رَجُلٌ بَيْنَ يَدَيْهِ حِجَارَةٌ، فَأَقْبَلَ الرَّجُلُ الَّذِي فِي النَّهَرِ، فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ رَمَى الرَّجُلُ بِحَجَرٍ فِي فِيهِ، فَرَدَّهُ حَيْثُ

वह लुड़क कर दूर चला जाता है। और वह उसे जाकर उठा लाता है और जब तक इस लेटे हुए आदमी के पास लौटकर आता है तो उस वक़्त तक उसका सर जुड़कर अच्छा हो जाता है और जैसे पहले था, उसी तरह हो जाता है। और फिर उसे दोबारा मारता है। मैंने पूछा यह क्या है? उन दोनों ने कहा, आगे चलिये। चूनांचे हम एक गड्डे की तरफ चले जो तनूर की तरह था। उसका मुंह तंग और पैंदा चौड़ा था। उसमें आग जल रही थी और उसमें नंगे मर्द और औरतें हैं। जब आग भड़कती तो शौलों के साथ उछल पड़ते और निकलने के करीब हो जाता। फिर जब आग धीमी हो जाती तो वह भी धड़ाम से नीचे गिर पड़ते। मैंने कहा यह कौन हैं? उन दोनों ने कहा, आगे चलिये। चूनांचे हम चले और एक खूनी नहर पर पहुंचे। उसमें एक आदमी खड़ा था और उसके किनारे पर दूसरा आदमी था, जिसके सामने बहुत से पत्थर पड़े थे। नहर के

كانَ، فَجَعَلَ كُلَّمَا جاءَ لِيَخْرُجَ رَمَى فِي فِيهِ بِحَجَرٍ، فَيَرْجِعُ كما كانَ، فَقُلْتُ: ما هٰذَا؟ قَالاَ: انْطَلِقْ، فَانْطَلَقْنَا، حَتَّى انْتَهَيْنَا إِلَى رَوْضَةٍ خَضْرَاءَ، فِيهَا شَجَرَةٌ عَظِيمَةٌ، وَفِي أَصْلِهَا شَيْخٌ وَصِبْيَانٌ، وَإِذَا رَجُلٌ قَرِيبٌ مِنَ الشَّجَرَةِ، بَيْنَ يَدَيْهِ نَارٌ يُوقِدُهَا، فَصَعِدَا بِي فِي الشَّجَرَةِ، وَأَدْخَلاَنِي دَارًا، لَمْ أَرَ قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهَا، فِيهَا رِجَالٌ شُيُوخٌ، وَشَبَابٌ وَنِسَاءٌ وَصِبْيَانٌ، ثُمَّ أَخْرَجَانِي مِنْهَا، فَصَعِدَا بِي الشَّجَرَةَ، فَأَدْخَلاَنِي دَارًا، هِيَ أَحْسَنُ وَأَفْضَلُ منها، فِيهَا رجالٌ شُيُوخٌ وَشَبَابٌ، قُلْتُ: طَوَّفْتُمَانِي اللَّيْلَةَ، فَأَخْبِرَانِي عَمَّا رَأَيْتُ. قَالاَ: نَعَمْ، أَمَّا الَّذِي رَأَيْتَهُ يُشَقُّ شِدْقُهُ فَكَذَّابٌ، يُحَدِّثُ بِالْكَذْبَةِ، فَتُحْمَلُ عَنْهُ حَتَّى تَبْلُغَ الآفَاقَ، فَيُصْنَعُ بِهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَالَّذِي رَأَيْتَهُ يُشْدَخُ رَأْسُهُ، فَرَجُلٌ عَلَّمَهُ اللهُ الْقُرْآنَ، فَنَامَ عَنْهُ بِاللَّيْلِ، وَلَمْ يَعْمَلْ فِيهِ بِالنَّهَارِ، يُفْعَلُ بِهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَالَّذِي رَأَيْتَهُ فِي الثَّقْبِ فَهُمُ الزُّنَاةُ، وَالَّذِي رَأَيْتَهُ فِي النَّهْرِ آكِلُو الرِّبا، وَالشَّيْخُ فِي أَصْلِ الشَّجَرَةِ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ، وَالصِّبْيَانُ حَوْلَهُ فَأَوْلاَدُ النَّاسِ،

وَالَّذِي يُوقِدُ النَّارَ مالِكٌ خازِنُ النَّارِ، وَالدَّارُ الأُولى الَّتِي دَخَلْتَ دَارُ عامَّةِ المُؤمِنِينَ، وأَمَّا هٰذِهِ الدَّارُ فَدَارُ الشُّهَدَاءِ، وَأَنَا جِبْرِيلُ، وَهٰذَا مِيكَائِيلُ، فَارْفَعْ رَأْسَكَ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي، فَإِذَا فَوْقِي مِثْلُ السَّحَابِ، قَالاَ: ذَاكَ مَنْزِلُكَ، قُلْتُ: دَعَانِي أَدْخُلْ مَنْزِلِي، قَالاَ: إِنَّهُ بَقِيَ لَكَ عُمُرٌ لَمْ تَسْتَكْمِلْهُ، فَلَوِ اسْتَكْمَلْتَ أَتَيْتَ مَنْزِلَكَ). [رواه البخاري: ١٣٨٦]

अन्दर वाला आदमी जब बाहर आना चाहता तो किनारे वाला आदमी उसके मुंह पर इस जोर से पत्थर मारता कि वह फिर अपनी जगह पर लौट जाता। फिर ऐसा ही करता रहा। जब भी वह निकलना चाहता तो दूसरा इस जोर से पत्थर मारता कि उसे अपनी जगह पर लौटा देता। मैंने यह पूछा यह क्या बात है? उन दोनों ने आगे चलने के लिए कहा। हम चल दिये। चलते चलते हम एक हरे भरे बाग में पहुंचे। जिसमें एक बड़ा सा पेड़ था। उसकी जड़ के करीब एक बूढ़ा आदमी और कुछ बच्चे बैठे थे। अब अचानक क्या देखता हूँ कि उस पेड़ के पास एक और आदमी है, जिसके सामने आग है और वह उसे सुलगा रहा है। फिर वोह दोनों मुझे उस पेड़ पर चढ़ा ले गये और वहां उन्होंने मुझे एक ऐसे मकान में दाखिल किया जिससे बेहतर मकान मैंने कभी नहीं देखा। उसमें कुछ बूढ़े, कुछ जवान, कुछ औरतें और कुछ बच्चे थे। फिर वह दोनों मुझ को वहां से निकाल लाये और पेड़ की एक दूसरी शाख पर चढ़ाया। वहां भी एक मकान था, जिसमें मुझे दाखिल किया। यह मकान पहले से भी ज्यादा अच्छा और शानदार था। उसमें भी कुछ बूढे और जवान आदमी मौजूद थे। तब मैंने उन दोनों से कहा, तुमने मुझे रात भर फिराया। अब मैंने जो कुछ देखा है, उसकी हकीकत बताओ? उन्होंने जवाब दिया अच्छा, वह आदमी जिसे आपने देखा कि उसका जबड़ा चीरा जा रहा था वह झूटा आदमी था

और झूठी बातें बयान करता था। जो उससे नकल होकर सारी दुनिया में पहुंच जाती थी। इसलिए कयामत तक उसके साथ ऐसा ही मामला होता रहेगा। और वह आदमी जिसे आपने देखा कि उसका सर कुचला जा रहा है, यह वह आदमी है जिसे अल्लाह तआला ने कुरआन का इल्म दिया था, मगर वह कुरआन को छोड़कर रात भर सोता रहता और दिन में भी उस पर अमल नहीं करता था। कयामत के दिन तक उसके सर पर यही अमल होता रहेगा और वह लोग जिन्हें आपने गढ़े में देखा, वह जिना करने वाले हैं और जिसे आपने नहर में देखा वह रिश्वतखोर हैं। वह बूढ़ा इन्सान जो पेड़ की जड़ के करीब बैठा हुआ था वह इब्राहिम थे और छोटे बच्चे जो उनके आप-पास बैठे हुए थे, वह लोगों के बच्चे जो बालिग होने से पहले मर गये और जो आदमी आग तेज कर रहा था, वह मालिक, जहन्नम का दारोगा थे। और वह पहला मकान जिसमें आप तशरीफ ले गये थे, आम मुसलमानों का घर है और यह दूसरा शहीदों के लिए है और मैं जिब्राईल और यह मिकाइल हैं। अब आप अपना सर उठायें, मैंने सर उठाया तो अचानक देखता हूँ कि मेरे ऊपर बादल की तरह कोई चीज है, उन्होंने बताया कि यह आपकी आराम करने की जगह है, मैंने कहा, मुझे अपने मकान में जाने दो, उन्होंने कहा, अभी आपकी कुछ उम्र बाकी है। अगर आप इसे पूरा कर चुके होते तो अपनी रिहाईशगाह में जा सकते थे।

फायदे : इस हदीस को इमाम बुखारी अपने मसले की ताईद में लाये हैं कि कुफ्फार और मुश्रिकों की औलाद जन्नती हैं।

(औनुलबारी, 2/380)

बाब 49 : अचानक मौत

٤٨ - باب: مَوْتُ الفَجْأةِ

698 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया कि मेरी वालदा का अचानक इन्तिकाल हो गया है। मुझे यकीन है कि अगर वह बोल सकें तो जरूर सदका व खैरात करें। क्या मैं उनकी तरफ से सदका दूं तो उन्हें कुछ सवाब मिलेगा? आपने फरमाया, हां मिलेगा।

٦٩٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ أُمِّي ٱفْتُلِتَتْ نَفْسُهَا، وَأَظُنُّهَا لَوْ تَكَلَّمَتْ تَصَدَّقَتْ، فَهَلْ لَهَا أَجْرٌ إِنْ تَصَدَّقْتُ عَنْهَا؟ قَالَ: (نَعَمْ). [رواه البخاري: ١٣٨٨]

फायदे : इस हदीस से इमाम बुखारी ने यह साबित किया है कि मौमिन के लिए अचानक मौत नुकसान देह नहीं होती, क्योंकि जब आपके सामने अचानक मौत का जिक्र हुआ तो आपने किसी किस्म की नागवारी का इजहार नहीं किया, अलबत्ता आपने इससे पनाह जरूर मांगी है, क्योंकि इसमें वसीयत करने की मुहलत नहीं मिलती। (औनुलबारी, 2/382)

बाब 50 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रज़ि. की कब्रों का बयान।

٤٩ - باب: مَا جَاءَ فِي قَبْرِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْر وَعُمَرَ رَضِي الله عَنْهُمَا

699 : आइशा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी वफात के मर्ज में बार बार यह खयाल जाहिर फरमाते कि मैं आज कहाँ होऊँगा और कल कहाँ होऊँगा? और मेरी बारी को बहुत

٦٩٩ : وعَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنْ كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لَيَتَعَذَّرُ فِي مَرَضِهِ: (أَيْنَ أَنَا ٱلْيَوْمَ، أَيْنَ أَنَا غَدًا). اسْتِبْطَاءً لِيَوْمِ عَائِشَةَ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمِي، قَبَضَهُ ٱللهُ بَيْنَ سَحْرِي وَنَحْرِي، وَدُفِنَ فِي بَيْتِي. [رواه البخاري: ١٣٨٩]

दूर खयाल करते थे। आखिरकार जब मेरा दिन आया तो अल्लाह ने आपको मेरे फैफड़े और सीने के बीच कब्ज फरमाया और आप मेरे ही घर में दफन हुये।

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि घर में भी किसी को दफन किया जा सकता है। बाज लोग कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दरमियान में हैं और दायें बायें हज़रत अबू बकर, उमर रज़ि. हैं। हालांकि ऐसा नहीं है। बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहलू में हज़रत अबू बकर रज़ि और उसके बाद हज़रत उमर रज़ि. दफन हैं।

700 : उमर बिन खत्ताब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वफात पायी तो आप इन छः लोगों से राजी थे, उमर ने उस्मान रज़ि., अली, तल्हा, जुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ और सअद बिन अबी वक्कास रज़ि. के नाम लिये।

٧٠٠ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّه قال: تُوُفِّي رسول الله ﷺ وهو راضٍ عن هؤلاءِ النَّفَرِ السِّتَّةِ، فسمَّى السِّتَّةَ، فَسَمَّى: عُثْمانَ، وَعَلِيًّا، وَطَلْحَةَ وَالزُّبَيْرَ، وَعَبْدَ الرَّحْمٰنِ بْنَ عَوْفٍ، وَسَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ. [رواه البخاري: ١٣٩٢]

फायदे : अशरा मुबश्शरा (दस जन्नती सहाबा) में से यही हजरात उस वक्त जिन्दा थे। इस रिवायत में सईद बिन जैद रज़ि. का जिक्र नहीं है। हालांकि वह भी जिन्दा थे, चूंकि वह आपके रिश्तेदार थे। इसलिए खिलाफत के सिलसिले में उनका नाम नहीं है।

(औनुलबारी, 2/385)

बाब 51 : मुर्दों को बुरा-भला कहने की मनाही का बयान

٥٠ - باب: مَا يُنْهَى عَنْ سَبِّ الأَمْوَاتِ

701 : आइशा रज़ि. से रिवायत है। उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुर्दो को बुरा-भला न कहो, क्योंकि वह जो कुछ कर चुके हैं, उससे वह मिल चुके हैं।

٧٠١ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ تَسُبُّوا الأَمْوَاتَ، فَإِنَّهُمْ قَدْ أَفْضَوْا إِلَى ما قَدَّمُوا). [رواه البخاري: ١٣٩٣]

फायदे : मरने के बाद किसी को बुरा-भला कहने का क्या फायदा है। बल्कि उनके घर वालों और रिश्तेदारों को तकलीफ देना है। अलबत्ता हदीस के रावियों पर जिरह उनके मरने के बाद भी जाइज है, क्योंकि इससे दीन की हिफाज़त मक़सूद है। (औनुलबारी,2/387)

किताबुज़्ज़कात

ज़कात के बयान में

बाब 1 : ज़कात की फरजीयत का बयान।

١ - باب: وجُوبُ الزَّكَاةِ

ज़कात हिजरत के दूसरे साल फर्ज हुई और यह इस्लाम का एक रूक्न है। इसका न मानने वाला इस्लाम के दायरे से खारिज है। हाकिम वक़्त (बादशाह) को ऐसे आदमी के खिलाफ जिहाद करना चाहिए। कुरआन करीम में नमाज़ के साथ ज़कात का बयान बंयासी जगहों पर आया है।

702 : इब्ने अब्बास रजि. रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब मआज़ बिन ज-बल रजि. को (गवर्नर बनाकर) यमन भेजा तो उन्हें इस बात का आदेश दिया, पहले तुम उन्हें ला इला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्ररूलुल्लाह की दावत देना। अगर वह इसे मान ले तो उनसे कहना कि अल्लाह ने दिन रात में

٧٠٢ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ مُعَاذًا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ إِلَى الْيَمَنِ، فَقَالَ: (ٱدْعُهُمْ إِلَى: شَهَادَةِ أَنْ لاَ إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ وَأَنِّي رَسُولُ ٱللهِ، فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوا لِذٰلِكَ، فَأَعْلِمْهُمْ أَنَّ ٱللهَ قَدِ ٱفْتَرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسَ صَلَوَاتٍ فِي كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ، فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوا لِذٰلِكَ، فَأَعْلِمْهُمْ أَنَّ ٱللهَ ٱفْتَرَضَ عَلَيْهِمْ صَدَقَةً فِي أَمْوَالِهِمْ، تُؤْخَذُ مِنْ أَغْنِيَائِهِمْ وَتُرَدُّ عَلَى فُقَرَائِهِمْ).

[رواه البخاري: ١٣٩٥]

पांच नमाजें फर्ज की है। अगर वह इसे भी मान ले तो उन्हें यह दावत देना कि अल्लाह ने उनके माल पर ज़कात फर्ज किया है, जो उनके धनवानों से वसूल किया जायेगा और उनके गरीबों को दिया जायेगा।

फायदे : मालूम हुवा कि अगर अपने शहर में जरूरतमन्द लोग मौजूद हो तो दूसरे शहरों को ज़कात भेजना शरीअत के खिलाफ है। (औनुलबारी, 2/390)

---

703 : अबू अय्यूब अन्सारी रजि. रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दरख्वास्त की कि आप मुझे ऐसा अमल बता दें जो मुझे जन्नत में दाखिल कर दे। लोगों ने उससे कहा, उसे क्या हो गया है (क्यों इस तरह का सवाल कर रहा है) रसूलुल्लाह ने फरमाया, कुछ नहीं हुआ। वो जरूरतमन्द है उसे कहने दो। अच्छा सुनो अल्लाह की इबादत करो। उसके साथ किसी को शरीक न बनाओ, नमाज़ पढ़ो, ज़कात को अदा करो और रिश्ता नाता न तोड़ो।

٧٠٣ : عَنْ أَبِي أَيُّوبَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ يُدْخِلُنِي الجَنَّةَ. قَالَ: مالَهُ مالَهُ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَرَبٌ مالَهُ، تَعْبُدُ ٱللهَ وَلاَ تُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا، وَتُقِيمُ الصَّلاَةَ، وَتُؤْتِي الزَّكَاةَ، وَتَصِلُ الرَّحِمَ). [رواه البخاري: ١٣٩٠]

फायदे : इस हदीस से ज़कात की फरजीयत इस तौर पर साबित होती है कि जन्नत में जाना ज़कात की अदायगी पर मुन्हसीर है। इसका मतलब यह है कि जो ज़कात नहीं देगा, वह जहन्नम में जाएगा और जहन्नम में जाना एक ऐसी चीज के छोड़ने से होता है जो वाजिब (जरूरी) है। (औनुलबारी, 2/392)

704 : अबू हुरैरा रजि. रिवायत करते हैं कि एक देहाती नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर होकर कहने लगा, आप मुझे कोई ऐसा काम बता दें कि अगर वो काम करूँ तो जन्नत में दाखिल हो जाऊँ। आपने फरमाया, तू अल्लाह की इबादत कर, उसके साथ किसी को शरीक न कर, फर्ज नमाज़ों को पाबन्दी से अदा कर, फर्ज ज़कात को दिया कर और रमज़ान के रोज़े रख। उस देहाती ने कहा, उस अल्लाह की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं इससे ज्यादा न करूंगा। जब वो चला गया तो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो आदमी किसी जन्नती को देखना चाहे वो उस आदमी को देख ले।

٧٠٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَعْرَابِيًّا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: دُلَّنِي عَلَى عَمَلٍ، إِذَا عَمِلْتُهُ دَخَلْتُ الجَنَّةَ. قَالَ: (تَعْبُدُ ٱللهَ ولاَ تُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا، وَتُقِيمُ الصَّلاَةَ المَكْتُوبَةَ، وَتُؤَدِّي الزَّكَاةَ المَفْرُوضَةَ، وَتَصُومُ رَمَضَانَ). قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لا أَزِيدُ عَلَى هٰذَا. فَلَمَّا وَلَّى، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ، فَلْيَنْظُرْ إِلَى هٰذَا). [رواه البخاري: ١٣٩٧]

फ़ायदे : इस हदीस में हज का जिक्र नहीं, शायद रावी भूल गया या उसने इख्तिसार से काम लिया होगा। (औनुलबारी 2/393)

705 : अबू हुरैरा रजि. रिवायत करते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हुई और अबू बकर रजि. खलीफा बने तो कुछ अरब के देहाती ईमान से फिर कर जकात के मुनकीर हो

٧٠٥ : وعنه - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - قَالَ: لَمَّا تُوُفِّيَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَكَفَرَ مَنْ كَفَرَ مِنَ الْعَرَبِ، فَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: كَيْفَ تُقَاتِلُ النَّاسَ؟ وَقَدْ قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لاَ إِلٰهَ إِلَّا

اللهُ، فَمَنْ قَالَهَا فَقَدْ عَصَمَ مِنِّي مالَهُ وَنَفْسَهُ إِلَّا بِحَقِّهِ، وَحِسَابُهُ عَلَى اللهِ). فَقَالَ: وَاللهِ لأُقَاتِلَنَّ مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ الصَّلاَةِ وَالزَّكَاةِ، فَإِنَّ الزَّكَاةَ حَقُّ المَالِ، وَاللهِ لَوْ مَنَعُونِي عَنَاقًا كَانُوا يُؤَدُّونَهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ لَقَاتَلْتُهُمْ عَلَى مَنْعِهَا. قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: فَوَاللهِ ما هُوَ إِلَّا أَنْ قَدْ شَرَحَ اللهُ صَدْرَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لِلْقِتَالِ، فَعَرَفْتُ أَنَّهُ الحَقُّ. [رواه البخاري: ١٣٩٩، ١٤٠٠]

गये तो उमर ने कहा, आप उन लोगों से कैसे लड़ेंगे? जबकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुझे लोगों से जंग करने का हुक्म दिया है। यहां तक कि वह ला इला-ह इल्लल्लाह न कह दे। फिर अगर इस कलिमे का इकरार कर लिया तो उन्होंने अपने जान-माल को बचा लिया, मगर यह कि किसी का किसी पर कोई हक़ नहीं बनता हो तो यह मामला अब अल्लाह के हवाले है। अबू बकर ने (यह सुनकर) कहाः अल्लाह की क़सम! मैं तो उससे जरूर लड़ाई लडूंगा जो नमाज़ और ज़कात में कुछ भी फर्क करता है, क्योंकि (जिस प्रकार नमाज़ बदन का हक़ है उसी प्रकार) जकात माल का हक है। अल्लाह की कसम! अगर इन लोगों ने चार महीने के बकरी के बच्चे को भी देने से इनकार किया, जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (ज़कात में) दिया करते थे तो मैं उनसे भी जिहाद करूंगा। उमर रजि. ने कहाः अल्लाह की कसम! अल्लाह ने अबू बकर का सीना खोल दिया था और (फिर मुझे भी इत्मिनान हो गया कि वह हक़ पर है।

फायदे : अब भी कुछ जाहिलों का खयाल है कि सिर्फ "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहने से आदमी मोमिन बन जाता है। चाहे वह इस्लाम के दूसरे कामों से दूर ही क्यों न हो। इसमें शक नहीं कि कलमा-ए-इख्लास ईमान की निशानी है, मगर यह शर्त है कि

इस्लाम के दूसरे अरकान का इनकार न करे। अगर एक का भी न मानने वाला है तो वह काफिर इस्लाम के दायरे से बाहर है। उसके साथ मुसलमानों जैसा बर्ताव नहीं करना चाहिए।

बाब 2 : ज़कात न देने वाले का गुनाह।

٢ - باب: إِثْمُ مَانِعِ الزَّكَاةِ

706 : अबू हुरैरा रजि. रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (कयामत के दिन) वह ऊँट जिनकी दुनिया में ज़कात नहीं निकाली गई होगी, पहले से भी ज्यादा मोटे-ताजे होकर अपने मालिक के पास आयेंगे और पैरो से अपने मालिक को कुचलेंगे। इसी प्रकार बकरियाँ पहले से अधिक मोटी-ताज़ी होकर आयेगी और अगर उनकी ज़कात नहीं निकाली होगी तो वह भी अपने मालिक को कुचलेंगी और सींग मारेगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "बकरियों का एक हक़ यह भी है कि पानी के घाट पर उन का दूध दूहा जाये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कहीं ऐसा न हो कि तुममें से कोई क़यामत के दिन अपनी बकरी को गर्दन पर लादे हुए हाज़िर हो और वह मेमिया रही हो और वह शख्स मुझ से कहे , ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! (मुझे बचा लीजिए) तो मैं कहूंगा मेरे बस में

٧٠٦ : وعنه - رَضِيَ ٱللهُ عَنهُ - قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : (تَأْتِي الإِبِلُ عَلَى صَاحِبِهَا، عَلَى خَيْرِ مَا كَانَتْ، إِذَا هُوَ لَمْ يُعْطِ فِيهَا حَقَّهَا، تَطَؤُهُ بِأَخْفَافِهَا، وَتَأْتِي الْغَنَمُ عَلَى صَاحِبِهَا عَلَى خَيْرِ مَا كَانَتْ، إِذَا لَمْ يُعْطِ فِيهَا حَقَّهَا، تَطَؤُهُ بِأَظْلاَفِهَا، وَتَنْطَحُهُ بِقُرُونِهَا)، قَالَ: (وَمِنْ حَقِّهَا أَنْ تُحْلَبَ عَلَى المَاءِ).

قَالَ: (وَلاَ يَأْتِي أَحَدُكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِشَاةٍ يَحْمِلُهَا عَلَى رَقَبَتِهِ لَهَا يُعَارٌ، فَيَقُولُ: يَا مُحَمَّدُ، فَأَقُولُ: لاَ أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللهِ شَيْئًا، قَدْ بَلَّغْتُ، وَلاَ يَأْتِي بِبَعِيرٍ يَحْمِلُهُ عَلَى رَقَبَتِهِ لَهُ رُغَاءٌ، فَيَقُولُ: يَا مُحَمَّدُ، فَأَقُولُ: لاَ أَمْلِكُ لَكَ مِنَ ٱللهِ شَيْئًا، قَدْ بَلَّغْتُ). [رواه البخاري: ١٤٠٢]

कुछ भी नहीं है, मैंने तो अल्लाह का हुक्म तुमको पहुंचा दिया था और कहीं ऐसा न हो कि कोई आदमी ऊँट को अपनी गर्दन पर लादे हुए हाजिर हो और वह बिलबिला रहा हो, इस हालत में कि वह मुझे पुकारे, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! (मेरी मदद कीजिए) तो मैं कहूंगा कि मैं आज कुछ नहीं कर सकता, मैंने तो अल्लाह का हुक्म तुम तक पहुंचा दिया था।

फायदे : मुस्लिम की रिवायत है कि ऊंट उसे पांव से रोंदेगे और मुंह से चबायेंगे। क़यामत के दिन उसके साथ लगातार यह सलूक किया जाएगा, जिसकी तादाद पचास हजार साल के बराबर है। (औनुलबारी, 2/399)

---

٧٠٧ : وعنه - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ آتَاهُ ٱللهُ مالًا، فَلَمْ يُؤَدِّ زَكَاتَهُ، مُثِّلَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شُجَاعًا أَقْرَعَ، لَهُ زَبِيبَتَانِ، يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، ثُمَّ يَأْخُذُ بِلِهْزِمَتَيْهِ، يَعْنِي شِدْقَيْهِ، ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا مَالُكَ، أَنَا كَنْزُكَ، ثُمَّ تَلَا: ﴿وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ﴾. الآيَةَ). [رواه البخاري: ١٤٠٣]

707 : अबू हुरैरा रजि. से ही एक दूसरी रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला जिसे माल और दौलत से नवाज़े और वह उसकी ज़कात न अदा करे तो उसका यह माल क़यामत के दिन एक गंजे सांप की शक्ल में लाया जाएगा। जिसके दोनों जबड़ों से जहरीली झाग निकल रही होगी और वह तौक की तरह उस आदमी की गर्दन में पड़ा होगा और उसकी दोनों बाछें पकड़कर कहेगा, मैं तेरा माल हूं, मै तेरा खजाना हूँ। उसके बाद आपने यह आयत पढ़ी "जिन लोगों को अल्लाह ने अपने फज़ल से नवाजा और फिर वह कंजूसी से काम लेते हैं, वह इस खयाल में न रहें कि यह कंजूसी उनके हक में अच्छी है, नहीं यह उनके हक में निहायत बुरी है

जो कुछ वह अपनी कंजूरी से जमा कर रहे हैं, वही क़यामत के रोज उनके गले का फंदा बन जाएगा।''

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस आयत का तिलावत करना इस बात की खुली दलील है कि यह आयत मुनकरीन ज़कात के मुताल्लिक नाजिल हुई हैं

(औनुलबारी, 2/402)

बाब 3 : जिस माल की ज़कात अदा कर दी जाये, वह कन्ज (खजाना) नहीं है।

٣ - باب: مَا أُدِّيَ زَكَاتُهُ فَلَيْسَ بِكَنْزٍ

708 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, पांच उक्या से कम चांदी में ज़कात नहीं है और पांच ऊंट से कम में ज़कात नहीं और न पांच वसक से कम (गल्ले) में ज़कात है।

٧٠٨ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ ٱلْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَيْسَ فِيما دُونَ خَمْسِ أَوَاقٍ صَدَقَةٌ، وَلَيْسَ فِيما دُونَ خَمْسِ ذَوْدٍ صَدَقَةٌ، وَلَيْسَ فِيما دُونَ خَمْسَةِ أَوْسُقٍ صَدَقَةٌ). [رواه البخاري: ١٤٠٥]

फायदे : एक उक्या चालीस दिरहम के बराबर है, पांच उक्या में दो सौ दिरहम होते हैं जो साढ़े बावन तोले के बराबर हैं। उससे कम मिकदार में ज़कात नहीं। इसी तरह एक वस्क साठ साअ का है और एक साअ दो किलो सौ ग्राम के बराबर है। पांच वसक छः सौ तीस किलो ग्राम के बराबर है।

बाब 4 : सदक़ा हलाल कमाई से होना चाहिए।

٤ - باب: الصَّدَقَةُ مِن كَسْبٍ طَيِّبٍ

709 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी हलाल की कमाई से खुजूर के बराबर भी सदका देता है। अल्लाह तआला पाक व हलाल चीजों को कुबूल फरमाता है तो अल्लाह तआला उसे अपने दायें हाथ में लेता है फिर उसे देने वाले की खातिर बढ़ाता है, जिस तरह तुममें से कोई अपने घोड़े के बच्चे को पाल कर बढ़ाता है, यहां तक कि वह खुजूर पहाड़ के बराबर हो जाती है।

٧٠٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ تَصَدَّقَ بِعَدْلِ تَمْرَةٍ مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ، وَلاَ يَقْبَلُ ٱللهُ إِلَّا الطَّيِّبَ، فَإِنَّ ٱللهَ يَتَقَبَّلُهَا بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يُرَبِّيهَا لِصَاحِبِهَا، كَمَا يُرَبِّي أَحَدُكُمْ فَلُوَّهُ، حَتَّى تَكُونَ مِثْلَ الْجَبَلِ). [رواه البخاري: ١٤١٠]

फायदे : हदीस में है कि अल्लाह तआला के दोनों हाथ बाबरकत हैं, उनमें से कोई बायां नहीं अहले सुन्नत इस किस्म की आयात और हदीसों को जाहिरी मायने पर महमूल करते हैं, उनकी ताविल या तहरीफ नहीं करते और न किसी से तश्बीह देते हैं।

(औनुलबारी, 2/405)

बाब 5 : सदका देना चाहिए, उस जमाने के पहले कि जब कोई सदका न लेगा।

٥ - باب: الصَّدَقَةُ قَبْلَ الرَّدِّ

710 : हारिसा बिन वहब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, ऐ लोगों! सदका करो, क्योंकि तुम पर एक वक्त आएगा कि आदमी अपना

٧١٠ : عَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (تَصَدَّقُوا، فَإِنَّهُ يَأْتِي عَلَيْكُمْ زَمَانٌ، يَمْشِي الرَّجُلُ بِصَدَقَتِهِ فَلاَ يَجِدُ مَنْ يَقْبَلُهَا، يَقُولُ الرَّجُلُ: لَوْ جِئْتَ بِهَا بِالأَمْسِ لَقَبِلْتُهَا، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَلاَ حَاجَةَ لِي بِهَا). [رواه البخاري: ١٤١١]

सदक़ा लिये हुए फिरेगा, मगर कोई आदमी ऐसा नहीं मिलेगा जो उसको कबूल करे, जिसको देने लगेगा, वह जवाब देगा, अगर तू कल लाता तो मैं ले लेता, लेकिन आज तो मुझे इसकी कोई जरूरत नहीं है।

फायदे : मालूम हुआ कि क़यामत के करीब के वक़्त ऐसे इन्कलाबात आयेंगे कि आज मुहताज आदमी कल बड़ा अमीर बन जाएगा, इसलिए वक़्त को गनीमत समझते हुये मुहताज लोगों की मौजूदगी में सदक़ा व खैरात करना चाहिए। (औनुलबारी, **2/407**)

711 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, क़यामत उस वक़्त तक बरपा नहीं होगी, जब तक तुम्हारे पास माल की इतनी फरावानी न हो जाये कि वह बहने लगे और माल वाले को यह चीज परेशान करेगी कि उसको कौन कबूल करे? नौबत यहां तक पहुंच जायेगी कि एक आदमी किसी को माल पेश करेगा तो वह जवाब देगा मुझे तो इसकी जरूरत नहीं है।

٧١١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَكْثُرَ فِيكُمُ المَالُ، فَيَفِيضَ، حَتَّى يُهِمَّ رَبَّ المَالِ مَنْ يَقْبَلُ صَدَقَتَهُ، وَحَتَّى يَعْرِضَهُ، فَيَقُولَ الَّذِي يَعْرِضُهُ عَلَيْهِ: لاَ أَرَبَ لِي).
[رواه البخاري: ١٤١٢]

फायदे : क़यामत के करीब जमीन की तमाम दौलत बाहर निकल आएगी और लोग बहुत कम तादाद में होंगे। ऐसे हालत में किसी को माल की जरूरत नहीं होगी।

712 : अदी बिन हातिम रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मौजूद था कि

٧١٢ : عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَجَاءَهُ رَجُلاَنِ، أَحَدُهُمَا يَشْكُو الْعَيْلَةَ، وَالآخَرُ يَشْكُو قَطْعَ السَّبِيلِ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ

ﷺ: (أَمَّا قَطْعُ السَّبِيلِ: فَإِنَّهُ لاَ يَأْتِي عَلَيْكَ إِلاَّ قَلِيلٌ، حَتَّى تَخْرُجَ الْعِيرُ إِلَى مَكَّةَ بِغَيْرِ خَفِيرٍ، وَأَمَّا الْعَيْلَةُ: فَإِنَّ السَّاعَةَ لاَ تَقُومُ، حَتَّى يَطُوفَ أَحَدُكُمْ بِصَدَقَتِهِ، لاَ يَجِدُ مَنْ يَقْبَلُهَا مِنْهُ، ثُمَّ لَيَقِفَنَّ أَحَدُكُمْ بَيْنَ يَدَيِ اللهِ، لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ حِجَابٌ، وَلاَ تَرْجُمَانٌ يُتَرْجِمُ لَهُ، ثُمَّ لَيَقُولَنَّ لَهُ: أَلَمْ أُوتِكَ مالًا؟ فَلَيَقُولَنَّ: بَلَى، ثُمَّ لَيَقُولَنَّ: أَلَمْ أُرْسِلْ إِلَيْكَ رَسُولًا؟ فَلَيَقُولَنَّ: بَلَى، فَيَنْظُرُ عَنْ يَمِينِهِ فَلاَ يَرَى إِلَّا النَّارَ، ثُمَّ يَنْظُرُ عَنْ شِمَالِهِ فَلاَ يَرَى إِلَّا النَّارَ، فَلْيَتَّقِيَنَّ أَحَدُكُمُ النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ، فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَبِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ). [رواه البخاري: ١٤١٣]

दो आदमी आये। एक ने तो गुरबत (गरीबी) व तंगदस्ती की शिकायत की और दूसरे ने चोरी और डाकाजनी की शिकायत की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि रास्ते की बदअमनी तो थोड़ी मुद्दत गुजरेगी कि मक्का तक एक काफिला बगैर किसी मुहाफिज (हिफाजत करने वाले) के जाएगा, रही तंगदस्ती तो क़यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी, यहां तक कि तुममें से कोई अपना सदक़ा लेकर फिरेगा, मगर उसे कोई कुबूल करने वाला नहीं मिलेगा। फिर (क़यामत के दिन) तुममें से हर आदमी अल्लाह के सामने खड़ा होगा, जबकि उसके और अल्लाह के बीच कोई पर्दा हायल न होगा, और न ही कोई तर्जुमान जो उसकी बातचीत को नकल करे, फिर अल्लाह उससे फरमायेगा, क्या मैंने तुझे माल न दिया था? वह अर्ज करेगा क्यों नहीं? फिर अल्लाह तआला फरमायेगा, क्या मैंने तेरे पास पैगम्बर न भेजा था? वह अर्ज करेगा, क्यों नहीं! फिर वह अपनी दायीं तरफ देखेगा तो आग के अलावा उसे कोई चीज नजर न आयेगी और अपनी बायीं तरफ नजर डालेगा तो उधर भी सिवा आग के कुछ नहीं होगा, लिहाजा तुममें से हर आदमी को आग से बचना चाहिए, अगरचे खुजूर का टुकड़ा ही दे। अगर यह भी मुमकिन न हो तो अच्छी बात ही कह दे। (क्योंकि यह भी सदक़ा है।)

फायदे : इस हदीस से उन लोगों की तरदीद होती है, जो कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में आवाज और हरूफ नहीं है अगर ऐसा है तो बन्दा क्या सुनेगा और क्या समझेगा।

---

६ - باب: اتَّقُوا النَّارَ وَلَو بِشِقِّ تَمْرَةٍ وَالْقَلِيلِ مِنَ الصَّدَقَةِ

बाब 6 : आग से बचो अगरचे खुजूर का टुकड़ा और थोड़ा सा सदका ही क्यों न हो।

٧١٣ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَيَأْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمانٌ، يَطُوفُ الرَّجُلُ فِيهِ بِالصَّدَقَةِ مِنَ الذَّهَبِ، ثُمَّ لاَ يَجِدُ أَحَدًا يَأْخُذُهَا مِنْهُ، وَيُرَى الرَّجُلُ الْوَاحِدُ يَتْبَعُهُ أَرْبَعُونَ ٱمْرَأَةً يَلُذْنَ بِهِ، مِنْ قِلَّةِ الرِّجَالِ وَكَثْرَةِ النِّسَاءِ). [رواه البخاري: ١٤١٤]

713 : अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, लोगों पर एक वक्त आयेगा जिसमें आदमी खैरात का सोना लिये गश्त लगायेगा, मगर कोई लेने वाला नहीं मिलेगा। और देखने में आयेगा कि एक मर्द के पीछे चालीस चालीस औरतें फिरेगी कि वह उन्हें अपनी पनाह में ले ले। दरअसल यह इस बिना पर होगा कि मर्द कम हो जायेंगे और औरतें ज्यादा होगी।

फायदे : कयामत के करीब औरतों की शरह पैदाईश में इजाफा हो जाएगा और मर्द कम पैदा होंगे या लड़ाईयां इतनी ज्यादा होगी कि मर्द मारे जायेंगे और औरतों की तादाद ज्यादा होगी। (औनुलबारी, 2/411)

---

٧١٤ : عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا أَمَرَنَا بِالصَّدَقَةِ،

714 : अबू मसऊद अनसारी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

انْطَلَقَ أَحَدُنَا إِلَى السُّوقِ، فَيُحَامِلُ، فَيُصِيبُ المُدَّ، وَإِنَّ لِبَعْضِهِمْ الْيَوْمَ لَمِائَةَ أَلْفٍ. [رواه البخاري: ١٤١٦]

वसल्लम ने फरमाया हमें सदका का हुक्म देते तो हममें से कोई बाजार जाता और बोझ ढोता, मजदूरी में जो एक मुद, गल्ला (अनाज) मिलता तो उसको सदका कर देता। मगर आज यह हालत है कि बाज लोगों के पास एक लाख दिरहम मौजूद हैं।

फायदे : सहाबा किराम रजि. का मेहनत व मजदूरी करके एक मुद अल्लाह की राह में खर्च करना हमारे हजारों और लाखों रूपयों से ज्यादा सवाब रखता था।

---

٧١٥ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَتِ امْرَأَةٌ مَعَهَا ابْنَتَانِ لَهَا تَسْأَلُ، فَلَمْ تَجِدْ عِنْدِي شَيْئًا غَيْرَ تَمْرَةٍ، فَأَعْطَيْتُهَا إِيَّاهَا، فَقَسَمَتْهَا بَيْنَ ابْنَتَيْهَا، وَلَمْ تَأْكُلْ مِنْهَا، ثُمَّ قَامَتْ فَخَرَجَتْ، فَدَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَيْنَا فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَنِ ابْتُلِيَ مِنْ هٰذِهِ الْبَنَاتِ بِشَيْءٍ كُنَّ لَهُ سِتْرًا مِنَ النَّارِ). [رواه البخاري: ١٤١٨]

715 : आइशा रजि. से रिवायत है कि एक औरत सवाल करती हुई आयी, जिसके साथ उसकी दो बेटियां भी थी, उस वक्त मेरे पास एक खुजूर के सिवा कुछ न था। मैंने वही खुजूर उसे दे दी, उसने उसे अपनी दोनों बेटियों के बीच तकसीम कर दिया और खुद उसमें से कुछ न खाया। जब वह चली गई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये तो मैंने आपसे उसका जिक्र किया, जिस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो आदमी इन लड़कियों की वजह से किसी तकलीफ में पड़ेगा, उसके लिए यह लड़कियां आग से पर्दा बन जाएगी।

फायदे : उनवान में दो मजमून थे पहला यह कि खुजूर का टुकड़ा देकर दोजख से बचाव हासिल करना, यह हज़रत अदी बिन हातिम

रजि. की हदीस से साबित हुवा और दूसरा मजमून यह था कि थोड़ा-सा सदका और खैरात करना, यह हज़रत आइशा रजि. की उस हदीस से साबित हुआ कि उन्होंने एक खुजूर बतौर सदका दी।

बाब 7 : कौनसा सदका बेहतर है?

٧ - باب: أيُّ الصَّدَقةِ أفضَلُ؟

716 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक आदमी आया और कहने लगा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, कौनसा सदका अजो-सवाब में सबसे बेहतर है? आपने फरमाया वह सदका जो तन्दुरूस्ती की हालत में हो, जबकि तुझ पर माल की हिरस गालिब हो, तुझे नादारी का डर भी हो और मालदारी की ख्वाहिश भी हो, उस वक्त का इन्तिजार न कर जब सांस गले में आ जाये तो उस वक्त कहे कि फलाँ को इतना दे दो और फलां को इतना। हालांकि अब तो वह खुद ही फलां और फलां का हो चुका होगा।

٧١٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: جاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَيُّ الصَّدَقَةِ أَعْظَمُ أَجْرًا؟ قَالَ: (أَنْ تَصَدَّقَ وَأَنْتَ صَحِيحٌ شَحِيحٌ، تَخْشَى الفَقْرَ وَتَأْمُلُ الغِنَى، وَلاَ تُمْهِلُ حَتَّى إِذَا بَلَغَتِ الحُلْقُومَ، قُلْتَ: لِفُلاَنٍ كَذَا، وَلِفُلاَنٍ كَذَا، وَقَدْ كَانَ لِفُلاَنٍ). [رواه البخاري: ١٤١٩]

फायदे : मालूम हुआ कि सदका और खैरात करने मे देर नही करना चाहिए, ऐसा न हो कि बीमारी या मौत आ जाये, ऐसे हालत में खर्च करने में बिल्कुल फायदा नहीं है।

बाब 8 :

٨ - باب

717 : आइशा रजि. से रिवायत है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

٧١٧ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ بَعْضَ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ

की कुछ बीवियों ने आपसे अर्ज किया कि वफात के बाद सबसे पहले हममें से आपको कौन मिलेगा? आपने फरमाया, जिसका हाथ तुम सबमें लम्बा होगा, चूनांचे उन्होंने छड़ी लेकर अपने हाथ नापने शुरू कर दिये। हज़रत सवदा रजि. का हाथ सबसे बड़ा निकला। (मगर सबसे पहले हज़रत जैनब बिन्ते जहश रजि. की वफात हुई) तब हम लोगों ने समझ लिया कि हाथ की लम्बाई से मुराद खैरात करना था, वह हमसे पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जा मिली, उन्हें सदक़ा देने का बहुत जौको-शौक था।

قُلْنَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَيُّنَا أَسْرَعُ بِكَ لُحُوقًا؟ قَالَ: (أَطْوَلُكُنَّ يَدًا). فَأَخَذُوا قَصَبَةً يَذْرَعُونَهَا، فَكَانَتْ سَوْدَةُ أَطْوَلَهُنَّ يَدًا، فَعَلِمْنَا بَعْدُ: أَنَّمَا كَانَتْ طُولَ يَدِهَا الصَّدَقَةُ، وَكَانَتْ أَسْرَعَنَا لُحُوقًا بِهِ، وَكَانَتْ تُحِبُّ الصَّدَقَةَ. [رواه البخاري: ١٤٢٠]

फायदे : हज़रत जैनब रजि. अपने हाथ से मेहनत मजदूरी करती और जो कुछ कमाती उसे अल्लाह की राह में खैरात कर देती थी। (औनुलबारी, 2/416)

बाब 9 : अगर अन्जाने में किसी मालदार को सदक़ा दे दिया जाये?

٩ - باب: إِذَا تَصَدَّقَ عَلَى غَنِيٍّ وَهُوَ لاَ يَعْلَمُ

718 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक आदमी ने तय किया कि मैं आज सदक़ा दूंगा। जब वह सदक़ा लेकर निकला तो उसने (ला इल्मी में) एक चोर के हाथ पर रख दिया। सुबह के वक़्त लोगों में बातें होने

٧١٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (قَالَ رَجُلٌ: لأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ، فَوَضَعَهَا فِي يَدِ سَارِقٍ، فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُونَ: تُصُدِّقَ عَلَى سَارِقٍ، فَقَالَ: اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، لأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ فَوَضَعَهَا فِي يَدَيْ زَانِيَةٍ، فَأَصْبَحُوا

لगी कि एक चोर को सदक़ा दिया गया है। उस आदमी ने कहा, ऐ मेरे मअबूद! तारीफ सिर्फ तेरे लिए है। अच्छा मैं आज फिर सदक़ा दूंगा। चूनांचे वह अपना सदक़ा लेकर निकला तो अब अन्जाने मे एक बदकार औरत को दे दिया। सुबह के वक़्त लोग फिर बातें बनाने लगे कि गुजरी हुई रात एक बदकार को खैरात दे दी गई, जिस पर उस आदमी ने कहा, ऐ मेरे माबूद! सब तारीफ

يَتَحَدَّثُونَ: تُصُدِّقَ اللَّيْلَةَ عَلَى زَانِيَةٍ، فَقَالَ: اللَّهُمَّ لَكَ الحَمْدُ، عَلَى زَانِيَةٍ؟ لأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ، فَوَضَعَهَا فِي يَدِ غَنِيٍّ، فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُونَ: تُصُدِّقَ عَلَى غَنِيٍّ، فَقَالَ: اللَّهُمَّ لَكَ الحَمْدُ، عَلَى سَارِقٍ، وَعَلَى زَانِيَةٍ، وَعَلَى غَنِيٍّ، فَأُتِيَ فَقِيلَ لَهُ: أَمَّا صَدَقَتُكَ عَلَى سَارِقٍ: فَلَعَلَّهُ أَنْ يَسْتَعِفَّ عَنْ سَرِقَتِهِ، وَأَمَّا الزَّانِيَةُ: فَلَعَلَّهَا أَنْ تَسْتَعِفَّ عَنْ زِنَاهَا، وَأَمَّا الغَنِيُّ: فَلَعَلَّهُ يَعْتَبِرُ، فَيُنْفِقُ مِمَّا أَعْطَاهُ اللهُ).

[رواه البخاري: ١٤٢١]

तेरे ही लिए है। मेरा सदक़ा तो बदकार के हाथ लग गया। अच्छा मैं कुछ और सदक़ा दूंगा। चूनांचे वह फिर सदक़ा लेकर निकला तो इस बार (अंजाने में) एक मालदार के हाथ पर रख दिया। सुबह के वक़्त लोगों में फिर चर्चा हुआ कि एक अमीर आदमी को सदक़ा दिया गया है, उस आदमी ने कहा, ऐ मेरे माबूद! तारीफ सिर्फ तेरे लिए है, मेरा सदक़ा एक बार चोर को मिला, फिर एक बदकार औरत को और फिर एक मालदार आदमी को। आखिर यह बात क्या है? चूंनाचे उसे (ख्वाब में) कोई आदमी मिला, उसने बताया (कि तुम्हारा सदक़ा कुबूल हो गया है) जो सदक़ा चोर को मिला तो मुमकिन है कि वह चोरी से बाज आ जाये, इसी तरह बदकार औरत को जो सदक़ा मिला तो शायद वह जिना से रूक जाये और मालदार को, मुमकिन है, इबरत (नसीहत) हासिल हो और जो अल्लाह ने उसे दिया, उसमें से खर्च करे।

फायदे : नफली सदका अगर अन्जाने में गैर हकदार को दे दिया जाये तो कोई हर्ज नहीं, अलबत्ता ज़कात वगैरह का मामला इससे अलग है। अगर ज़कात अन्जाने में मालदार को दे दी जाये जो उसका हकदार न हो तो मालूम होने पर दोबारा अदा करनी होगी। (औनुलबारी, 2/418)

बाब 10 : अपने बेटे को अन्जाने में सदका देना।

١٠ - باب: إذَا تَصَدَّقَ عَلَى ابْنِهِ وَهُوَ لاَ يَشْعُرُ

719 : मअन बिन यजीद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने और मेरे बाप दादा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बैअत की और फिर आपने ही मेरी मंगनी की और निकाह भी कराया, एक दिन मैं आपके पास यह मुकदमा लेकर गया कि मेरे बाप यजीद रजि. ने खैरात की कुछ अशरफियां निकाल कर मस्जिद में एक आदमी के पास रख दीं। (ताकि वह उन्हें तकसीम कर दे)। चूनांचे मैं गया और वह अशरफियां उससे लेकर अपने घर चला आया। मेरे बाप को पता चला तो उसने कहा, अल्लाह की कसम! मैंने तुझे देने का इरादा नहीं किया था। आखिरकार मैं मुकदमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लाया तो आपने फरमाया: ऐ यजीद! तुम्हारी नियत पूरी हो गई और ऐ मअन! जो तुमने लिया वह तुम्हारा है।

٧١٩ : عَنْ مَعْنِ بْنِ يَزِيدَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَايَعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ أَنَا وَأَبِي وَجَدِّي، وَخَطَبَ عَلَيَّ فَأَنْكَحَنِي، وَخَاصَمْتُ إِلَيْهِ: كَانَ أَبِي يَزِيدُ أَخْرَجَ دَنَانِيرَ يَتَصَدَّقُ بِهَا، فَوَضَعَهَا عِنْدَ رَجُلٍ فِي المَسْجِدِ، فَجِئْتُ فَأَخَذْتُهَا، فَأَتَيْتُه بِهَا، فَقَالَ: وَٱللهِ مَا إِيَّاكَ أَرَدْتُ، فَخَاصَمْتُهُ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقَالَ: (لَكَ مَا نَوَيْتَ يَا يَزِيدُ، وَلَكَ مَا أَخَذْتَ يَا مَعْنُ). [رواه البخاري: ١٤٢٢]

फायदे : मालूम हुवा कि बाप अगर अपनी औलाद में से किसी हकदार

को सदका और खैरात देता है तो उसे रूजू का हक नहीं, अलबत्ता हिबा (दान) वगैरह में बाप को वापिस लेने का हक ब-दस्तूर कायम रहेगा। (औनुलबारी 2/420)

बाब 11 : जो आदमी खुद अपने हाथ से सदका देने की बजाये अपने किसी नौकर को उसका हुक्म दे।

١١ - باب: مَنْ أَمَرَ خَادِمَهُ بِالصَّدَقَةِ وَلَمْ يُنَاوِلْ بِنَفْسِهِ

720 : आइशा रजि.से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो औरत अपने घर के खाने से कुछ खैरात करे, बशर्ते कि उसकी नियत घर बिगाड़ने की न हो तो जो कुछ खैरात करेगी, उसका सवाब जरूर मिलेगा, उसके शौहर को भी कमाने की वजह से सवाब मिलेगा, ऐसे ही खजांची को सवाब मिलेगा, नीज किसी का सवाब दूसरे के सवाब को कम नहीं करेगा।

٧٢٠ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا أَنْفَقَتِ المَرْأَةُ مِنْ طَعَامِ بَيْتِهَا، غَيْرَ مُفْسِدَةٍ، كانَ لَهَا أَجْرُهَا بِمَا أَنْفَقَتْ، وَلِزَوْجِهَا أَجْرُهُ بِمَا كَسَبَ، وَلِلْخَازِنِ مِثْلُ ذٰلِكَ، لاَ يَنْقُصُ بَعْضُهُمْ أَجْرَ بَعْضٍ شَيْئاً). [رواه البخاري: ١٤٢٥]

फायदे : इससे मुराद इस किस्म का खाना खैरात करना है जो देर तक रखने से खराब हो सकता हो या ऐसी खैरात जो शौहर को नापसन्द न हो और न ही उसे ज्यादा नुकसान पहुंचने का डर हो। (औनुलबारी, 2/422)

बाब 12 : सदका वही है जिसके बाद भी आदमी मालदार रहे।

١٢ - باب: لاَ صَدَقَةَ إِلَّا عَنْ ظَهْرِ غِنًى

721 : हकीम बिन हिजाम रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते

٧٢١ : عَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (اليَدُ العُلْيَا خَيْرٌ مِنَ اليَدِ السُّفْلَى،

हैं कि आपने फरमाया, ऊपर वाला हाथ, नीचे वाले हाथ से बेहतर है और सदक़ा की इब्तदा अपने अयाल (घर वालों) से करो। बेहतर सदक़ा वह है, जिसके देने के बाद भी देने वाला मालदार रहे और जो आदमी सवाल करने से बचेगा, अल्लाह तआला उसे बचने की तौफिक देगा और जो आदमी बे-नयाजी इख्तियार करता है, अल्लाह तआला उसे बे-परवाह कर देता है।

وَٱبْدَأْ بِمَنْ تَعُولُ، وَخَيْرُ الصَّدَقَةِ عَنْ ظَهْرِ غِنًى، وَمَنْ يَسْتَعِفَّ يُعِفَّهُ ٱللهُ وَمَنْ يَسْتَغْنِ يُغْنِهِ ٱللهُ). [رواه البخاري: ١٤٢٧]

फायदे : मकसद यह है कि पहले अपने बच्चों और करीबी रिश्तेदारों को खिलाना और उनकी देखभाल करना चाहिए, इससे फाजिल हुवा, उसे खैरात करना चाहिए, पहले अपने, बाद में दूसरे।

(औनुलबारी, 2/442)

---

722 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिम्बर पर खुत्बे के वक्त सदक़ा देने, सवाल करने और न करने का जिक्र करते हुये फरमाया, ऊपर वाला हाथ, नीचे वाले हाथ से कहीं बेहतर है, क्योंकि ऊपर वाला हाथ खर्च करने वाला और नीचे वाला हाथ सवाली है।

٧٢٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ، وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ، وَذَكَرَ الصَّدَقَةَ وَالتَّعَفُّفَ وَالْمَسْأَلَةَ: (الْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى، فَالْيَدُ الْعُلْيَا هِيَ الْمُنْفِقَةُ، وَالْيَدُ السُّفْلَى هِيَ السَّائِلَةُ). [رواه البخاري: ١٤٢٩]

फायदे : जब इन्सान मोहताज होकर खैरात करेगा तो उसे अपनी जरूरियात को पूरा करने के लिए दूसरों के सामने हाथ फैलाने की जरूरत पड़ेगी और यही नीचा हाथ है, जिसे शरीअत ने नापसन्दगी की नजर से देखा है।

बाब 13 : सदका के लिए तरगीब देना और उसकी बाबत सिफारिश करने का बयान।

١٣ - باب: التَّحْرِيضُ عَلَى الصَّدَقَةِ وَالشَّفَاعَةِ فِيهَا

٧٢٣ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا جَاءَهُ السَّائِلُ، أَوْ طُلِبَتْ إِلَيْهِ حاجَةٌ، قَالَ: (ٱشْفَعُوا تُؤْجَرُوا، وَيَقْضِي ٱللهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ ما شَاءَ). [رواه البخاري: ١٤٣٢]

723 : अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कोई सवाल करने वाला आता या आपसे किसी जरूरत का सवाल किया जाता तो आप फरमाते कि उसकी दाररसी के लिए सिफारिश करो। तुम्हें सवाब मिलेगा और अल्लाह तआला अपने रसूल की जबान पर जो चाहता है, जारी फरमा देता है।

फायदे : मालूम हुवा कि जरूरतमन्द लोगों की जरूरियात का खयाल रखना और उसके लिए भाग-दौड़ या सिफारिश करना बहुत बड़ा सवाब है, क्योंकि इससे अल्लाह की मखलूक को आराम पहुंचता है और इससे बढ़कर और कोई नेकी नहीं। (औनुलबारी, 2/427)

---

٧٢٤ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ تُوكِي فَيُوكَى عَلَيْكِ). وَفِي رِوايَةٍ: (لاَ تُحْصِي فَيُحْصِيَ ٱللهُ عَلَيْكِ). [رواه البخاري: ١٤٣٣]

724 : असमा बिन्ते अबू बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मुझे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तुम अपने माल पर गिरह न दो, वरना तुम पर भी बन्दीश कर दी जायेगी, एक रिवायत में है कि देने में शुमार न रखो वरना अल्लाह भी तुम्हें उसी हिसाब से देगा।

फायदे : जो आदमी बे हिसाब खैरात करता है, अल्लाह उसे रिज्क भी बेशुमार देते हैं, यह निफ्ली सदका के बारे में है।

बाब 14 : अपनी ताकत के मुताबिक सदका देना।

١٤ - باب: الصَّدَقَةُ فِيمَا اسْتَطَاعَ

725 : असमा रजि. से एक और रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अपने माल को गिन-गिन कर मत रखो, वरना अल्लाह अपनी रहमत तुम से रोक लेगा और जिस कद्र मुमकिन हो, खर्च करती रहो।

٧٢٥ : وَفي روايةٍ: (لاَ تُوعِي فَيُوعِيَ ٱللهُ عَلَيْكِ، ٱرْضَخِي ما ٱسْتَطَعْتِ). [رواه البخاري: ١٤٣٤]

फायदे : अल्लाह तआला का अपनी रहमत को रोक लेने से मुराद खैर और बरकत का उठा लेना है।

बाब 15 : जो आदमी शिर्क की हालत में सदका करे, फिर मुसलमान हो जाये।

١٥ - باب: مَنْ تَصَدَّقَ فِي الشِّرْكِ ثُمَّ أَسْلَمَ

726 : हकीम बिन हिजाम रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जाहिलियत के जमाने में इबादत की नियत से जो सदका देता था या गुलाम आजाद करता और सिलाह रहमी करता था, आप बतायें कि उनका कोई सवाब होगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि गुजिश्ता नैकियों पर पाबन्द रहने की बिना पर ही तो मुसलमान हुये हो, तुम्हें उनका सवाब मिलेगा।

٧٢٦ : عَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَرَأَيْتَ أَشْيَاءَ، كُنْتُ أَتَحَنَّثُ بِهَا فِي الجَاهِلِيَّةِ، مِنْ صَدَقَةٍ، أَوْ عَتَاقَةٍ، وَصِلَةِ رَحِمٍ، فَهَلْ فِيهَا مِنْ أَجْرٍ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَسْلَمْتَ عَلَى مَا سَلَفَ مِنْ خَيْرٍ). [رواه البخاري: ١٤٣٦]

फायदे : मालूम हुवा कि अगर कोई मुसलमान हो जाये तो उसे कुफ्र के

जमाने की नेकियों का भी सवाब मिलेगा। यह अल्लाह तआला की इनायत है। (औनुलबारी, 2/430)

बाब 16: खिदमतगार का सवाब जबकि वह आका के हुक्म से दे, बशर्ते कि उसकी नियत बिगाड़ की न हो।

١٦ - باب: أَجْرُ الخَادِمِ إِذَا تَصَدَّقَ بِأَمْرِ صَاحِبِهِ غَيْرَ مُفْسِدٍ

727 : अबू मूसा रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, वह मुसलमान खजांची जो अमानत दार हो और अपने आका का हुक्म जारी कर दे और कभी आप यूँ फरमाते कि उसका आका जो हुक्म दे, उसे बिला कम और ज्यादा खुशी से दूसरे के हवाले कर दे तो वह भी खैरात करने वालों में से एक होगा।

٧٢٧ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (الخَازِنُ المُسْلِمُ الأَمِينُ، الَّذِي يُنْفِذُ - وَرُبَّما قَالَ: يُعْطِي - ما أُمِرَ بِهِ، كامِلًا مُوَفَّرًا، طَيِّبًا بِهِ نَفْسُهُ، فَيَدْفَعُهُ إِلَى الَّذِي أُمِرَ لَهُ بِهِ، أَحَدُ المُتَصَدِّقَيْنِ). [رواه البخاري: ١٤٣٨]

फायदे : साहिबे माल और उसके हुक्म की बजाआवरी करने वाला दोनों सवाब में शरीक होंगे, फर्क यह होगा कि नौकर को इजाफी सवाब नहीं मिलेगा। जबकि मालिक को दस गुनाह इजाफी सवाब भी दिया जाएगा। (औनुलबारी, 2/431)

बाब 17: इरशादबारी तआला "जो आदमी सदक़ा दे और डर जाये" और यह दुआ कहे "ऐ अल्लाह खर्च करने वाले को अच्छा बदला अता कर"

١٧ - باب: قَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَٱتَّقَىٰ﴾ اللَّهُمَّ أَعْطِ مُنْفِقَ مَالٍ خَلَفًا

728 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है

٧٢٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (ما مِنْ يَوْمٍ يُصْبِحُ الْعِبَادُ فِيهِ، إِلَّا مَلَكَانِ

يَنْزِلاَنِ، فَيَقُولُ أَحَدُهُما: اللَّهُمَّ أَعْطِ مُنْفِقًا خَلَفًا، وَيَقُولُ الآخَرُ: اللَّهُمَّ أَعْطِ مُمْسِكًا تَلَفًا). [رواه البخاري: ١٤٤٢]

कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब लोग सुबह निकलते हैं तो दो फरिश्ते उतरते हैं, एक कहता है, ऐ अल्लाह! खर्च करने वाले को अच्छा बदला अता कर और दूसरा कहता है, ऐ अल्लाह! कंजूस को तबाही और बर्बादी से दो-चार कर।

फायदे : दूसरी हदीस में है कि किसी बन्दे का माल अल्लाह की राह में देने से कम नहीं होता।

١٨ - باب: مَثَلُ البَخِيلِ والمُتَصَدِّقِ

बाब 18 : सदका देने वाले और कंजूस की मिसाल।

٧٢٩ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (مَثَلُ البَخِيلِ وَالمُنْفِقِ، كَمَثَلِ رَجُلَيْنِ، عَلَيْهِمَا جُبَّتَانِ مِنْ حَدِيدٍ، مِنْ ثُدِيِّهِمَا إِلَى تَرَاقِيهِمَا، فَأَمَّا المُنْفِقُ: فَلاَ يُنْفِقُ إِلَّا سَبَغَتْ، أَوْ وَفَرَتْ عَلَى جِلْدِهِ، حَتَّى تُخْفِيَ بَنَانَهُ، وَتَعْفُوَ أَثَرَهُ. وَأَمَّا البَخِيلُ: فَلاَ يُرِيدُ أَنْ يُنْفِقَ شَيْئًا إِلَّا لَزِقَتْ كُلُّ حَلْقَةٍ مَكَانَهَا، فَهُوَ يُوَسِّعُهَا فَلاَ تَتَّسِعُ). [رواه البخاري: ١٤٤٣]

729 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना कि कंजूस और सदका देने वाले की मिसाल उन दो इन्सानों की तरह है जो सीने से गर्दन तक लोहे का लिबास पहने हुए हैं, जब सखी खर्च करना चाहता है तो वह लिबास खुल जाता है या उसके जिस्म पर कुशादा हो जाता है और कंजूस जब खर्च करना चाहता है तो उसके लिबास की हर कड़ी अपनी जगह पर जम जाती है, वह हर तरह उसे खोलना चाहता है, मगर वह खुलता नहीं।

फायदे : मतलब यह है कि सखी आदमी का दिल खर्च करने से खुश होता है और उसकी तबीयत में कुशादगी पैदा होती है। जबकि

कंजूस आदमी का मामला उसके उल्टा है यानी उसका सीना तंग हो जाता है और दिल में घुटन पैदा हो जाती है।

(औनुलबारी, 2/434)

बाब 19: हर मुसलमान पर खैरात करना वाजिब है, अगर न पाये तो भली बात को अमल में लाना खैरात है।

١٩ - باب: عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ صَدَقَةٌ فَمَن لَم يَجِد فَلْيَعْمَل بِالمَعْرُوفِ

٧٣٠ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ صَدَقَةٌ). فَقَالُوا: يَا نَبِيَّ ٱللهِ، فَمَنْ لَمْ يَجِدْ؟ قَالَ: (يَعْمَلُ بِيَدِهِ، فَيَنْفَعُ نَفْسَهُ وَيَتَصَدَّقُ). قَالُوا: فَإِنْ لَمْ يَجِدْ؟ قَالَ: (يُعِينُ ذَا الحَاجَةِ المَلْهُوفَ). قَالُوا: فَإِنْ لَمْ يَجِدْ؟ قَالَ: (فَلْيَعْمَلْ بِالمَعْرُوفِ، وَلْيُمْسِكْ عَنِ الشَّرِّ، فَإِنَّهَا لَهُ صَدَقَةٌ). [رواه البخاري: ١٤٤٥]

730 : अबू मूसा रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया हर मुसलमान के लिए खैरात करना जरूरी है, लोगों ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर किसी को न मिले (तो क्या करें?) आपने फरमाया कि वह अपने हाथ से मेहनत करे, खुद भी फायदा उठाये और खैरात भी करे। लोगों ने फिर अर्ज किया अगर इसकी भी ताकत न हो तो क्या करे? आपने फरमाया वह किसी जरूरतमन्द और सितमजदा की फरयाद रसी करे। लोगों ने फिर अर्ज किया, अगर इसकी भी ताकत न हो तो क्या करे? आपने फरमाया कि अच्छी बात पर अमल करे और बुरी बात से दूर रहे तो उसके लिए यही सदका है।

फायदे : मालूम हुवा कि अल्लाह की मख्लूक पर नरमी और मेहरबानी करना चाहिए, चाहे माल खर्च करने से हो या भली बात कहने से। कम से कम किसी के मुताल्लिक बुरी बात करने से बाज रहना भी नरमी और मेहरबानी ही की एक किस्म है।

बाब 20 : ज़कात या सदक़ा (किसी जरूरतमन्द को) किस कद्र देना चाहिए।

٢٠ - باب: قَدْرُ كَمْ يُعطى مِنَ الزَّكَاةِ وَالصَّدَقَةِ

731 : उम्मे अतिय्या रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नुसैबा अनसारिया रजि. के पास एक सदक़ा की बकरी भेजी गयी, उन्होंने उसमें से कुछ गोश्त आइशा रजि. के पास भेज दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (घर तशरीफ लाकर) पूछा कि तुम्हारे पास कुछ है? आइशा रजि. ने कहा, उस बकरी का गोश्त जो नुसैबा रजि. ने भेजा है। बस उसके अलावा कुछ नहीं है। आपने फरमाया, उसको लाओ, क्योंकि वह अपने मकाम पर पहुंच चुका है।

٧٣١ : عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: بُعِثَ إِلَى نُسَيْبَةَ الأَنْصَارِيَّةِ بِشَاةٍ، فَأَرْسَلَتْ إِلَى عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا مِنْهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (عِنْدَكُمْ شَيْءٌ؟). فَقُلْتُ: لاَ، إِلَّا مَا أَرْسَلَتْ بِهِ نُسَيْبَةُ مِنْ تِلْكَ الشَّاةِ، فَقَالَ: (هَاتِ، فَقَدْ بَلَغَتْ مَحِلَّهَا). [رواه البخاري: ١٤٤٦]

फायदे : मुल्क के बदलने से हुक्म भी बदल जाता है, क्योंकि ज़कात का माल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हराम था, लेकिन मुहताज को जब ज़कात मिली और उसने बतौर तौफा कुछ दे दिया तो ऐसा करना जाइज है, अब इस पर ज़कात के अहकाम नहीं रहे। (औनुलबारी, 2/437)

बाब 21 : ज़कात में (नकदी की बजाये) दूसरी चीजों का लेना-देना।

٢١ - باب: العَرْضُ فِي الزَّكَاةِ

732 : अनस रजि. से रिवायत है कि अबू बकर रजि. ने उन्हें ज़कात के वह अहकाम लिखकर दिये जो अल्लाह ने अपने रसूलुल्लाह

٧٣٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: كَتَبَ لَهُ الَّتِي أَمَرَ ٱللهُ رَسُولَهُ ﷺ: (وَمَنْ بَلَغَتْ صَدَقَتُهُ بِنْتَ مَخَاضٍ

وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ، وَعِنْدَهُ بِنْتُ لَبُونٍ، فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ، وَيُعْطِيهِ الْمُصَدِّقُ عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ شَاتَيْنِ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ عِنْدَهُ بِنْتُ مَخَاضٍ عَلَى وَجْهِهَا، وَعِنْدَهُ ابْنُ لَبُونٍ، فَإِنَّهُ يُقْبَلُ مِنْهُ، وَلَيْسَ مَعَهُ شَيْءٌ). [رواه البخاري: ١٤٤٨]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाजिल फरमाये थे, उनमें से यह भी था कि जिस किसी पर सदके में एक बरस की ऊंटनी फर्ज हो और वह उसके पास न हो और उसके पास दो बरस की ऊंटनी हो तो उससे वही कबूल कर ली जाये और सदके वसूल करने वाला बीस दिरहम या दो बकरियां उसे वापस दे और अगर साल भर की ऊंटनी ज़कात में मतलूब हो और वह उसके पास न हो, बल्कि दो बरस का नर ऊंट हो तो वह भी कबूल कर लिया जाये। मगर इसके साथ, उसे कुछ न दिया जाये।

फायदे : इमाम बुखारी के नजदीक सोने-चांदी के बजाये दूसरी चीजों का बतौर ज़कात लेना देना जाइज है। जबकि जमहूर इसके खिलाफ हैं, इमाम बुखारी की दलील इस तरह है कि जब वाजिब से ज्यादा अच्छी ऊंटनी ज़कात में ली जा सकती है तो दूसरी चीजों का देना भी जाइज ठहरा, लेकिन इस दलील में इतना वजन नहीं है, क्योंकि अगर ज़कात में कीमत का लिहाज होता तो मुख्तलीफ जानवरों की उमर का फिक्स होना बे-सूद ठहरता है, जब शरिअत ने जानवरों की उम्र मुतईन कर दी हैं तो इसका साफ मतलब है कि उन्हीं का अदा करना जरूरी है।

(औनुलबारी, 2/438)

٢٢ - باب: لاَ يُجْمَعُ بَيْنَ مُتَفَرِّقٍ وَلاَ يُفَرَّقُ بَيْنَ مُجْتَمِعٍ

बाब 22 : (ज़कात से बचने के लिए) अलग अलग माल को इक्ट्ठा न किया जाये, और न ही इकट्ठे को अलग अलग किया जाये।

733 : अनस रजि. से रिवायत है कि अबू बकर रजि. से उन्हें ज़कात के बारे में वह अहकाम लिख कर दिये जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुकर्रर फरमाये थे। (उनमें यह भी था कि) सदका के खौफ से अलग अलग माल को इकट्ठा न किया जाये और न इकट्ठे माल को अलग अलग किया जाए।

٧٣٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: كَتَبَ لَهُ الَّتِي فَرَضَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (وَلاَ يُجْمَعُ بَيْنَ مُتَفَرِّقٍ، وَلاَ يُفَرَّقُ بَيْنَ مُجْتَمِعٍ، خَشْيَةَ الصَّدَقَةِ). [رواه البخاري: ١٤٥٠]

फायदे : इसकी सूरत यह है कि तीन आदमीयों की अलग अलग चालीस चालीस बकरियां हैं और हर एक पर एक एक बकरी ज़कात वाजिब है, जकात लेने वाला जब आये तो वह तीनो अपनी बकरियां इकट्ठी कर दें, इसी सूरत में एक ही बकरी देना होगी। इसी तरह दो आदमियों की बतौर शिराकत दो सौ बकरियां हैं, उन पर तीन बकरियां ज़कात वाजिब है, वह ज़कात के वक्त अपनी बकरियां अलग अलग कर लें ताकि वह बकरियां ज़कात दी जाये, ऐसा करना मना है। क्योंकि यह एक धोका और नाजाइज हिलागिरी है। (औनुलबारी, 2/439)

बाब 23: शिराकतदार (हिस्सेदार) (ज़कात का) हिस्सा बराबर बराबर अदा करे।

٢٣ - باب: مَا كَانَ مِن خَلِيطَين فَإِنَّهُمَا يَتَرَاجَعَانِ بَيْنَهُمَا بِالسَّوِيَّة

734 : अनस रजि. से ही एक दूसरी रिवायत में है कि अबू बकर रजि. ने उनके लिए ज़कात के अहकाम लिख कर दिये जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

٧٣٤ : وفي رواية: أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: كَتَبَ لَهُ الَّتِي فَرَضَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (وَمَا كَانَ مِنْ خَلِيطَيْنِ، فَإِنَّهُمَا يَتَرَاجَعَانِ بَيْنَهُمَا بِالسَّوِيَّةِ). [رواه البخاري: ١٤٥١]

मुकर्रर फरमाये थे। उनमें यह भी था कि जो माल दो शरीकों का इकट्ठा हो तो वह ज़कात की रकम बकद्र हिस्सा बराबर बराबर अदा करें।

फायदे : इसकी सूरत यह है कि दो शरिकों की चालीस बकरियां है तो एक बकरी बतौर ज़कात देना होगी, अब जिसके माल से यह बकरी ली गई है, उसे चाहिए कि वह दूसरे शरीक से इसकी आधी कीमत वसूल करे। (औनुलबारी, **2/440**)। अगर एक की दस और एक की तीस हो तो दस वाले को एक चौथाई और तीस वाले को तीन चौथाई देना होगा।

बाब 24 : ऊंटों की ज़कात।

٢٤ - باب: زَكَاةُ الإبِلِ

735 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि एक देहाती ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हिजरत के बारे में पूछा तो आपने फरमाया कि तेरे लिए खराबी हो, हिजरत का मामला बहुत सख्त है। क्या तेरे पास कुछ ऊंट हैं, जिनकी तू ज़कात अदा करता हो। उसने अर्ज किया जी हां। आपने फरमाया (फिर तुझे हिजरत की जरूरत नहीं), दरयाओं के इस पार अमल करता रह, अल्लाह तआला तेरे आमाल से किसी चीज को बर्बाद नहीं करेगा।

٧٣٥ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَعْرَابِيًّا سَأَلَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَنِ الْهِجْرَةِ، فَقَالَ: (وَيْحَكَ، إِنَّ شَأْنَهَا شَدِيدٌ، فَهَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ تُؤَدِّي صَدَقَتَهَا). قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: (فَٱعْمَلْ مِنْ وَرَاءِ الْبِحَارِ، فَإِنَّ ٱللهَ لَنْ يَتِرَكَ مِنْ عَمَلِكَ شَيْئًا). [رواه البخاري: ١٤٥٢]

फायदे : मतलब यह है कि अगर इन्सान फरायज की अदायगी में कौताही नहीं करता तो जहां चाहे रहे। अल्लाह तआला उससे पूछताछ नहीं करेगा। (औनुलबारी, **2/441**)

बाब 25 : जिसके माल में एक साला ऊंटनी सदक़ा पड़ती हो लेकिन उसके पास न हो (तो क्या करे?)

736 : अनस रजि. से रिवायत है कि अबू बकर रजि. ने उन्हें वह फरायजे जकात लिख कर दिये, जिनका अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया था। यानी अगर किसी के ऊंटों पर ज़कात ब-कद्र चार साला बच्चा के फर्ज हो और उसके पास चार साला बच्चा न हो, बल्कि तीन साला हो तो उससे तीन साला बच्चा ले लिया जाएगा और उसके साथ दो बकरियां भी ली जायेंगी। बशर्ते कि आसानी से मिल जाये। बसूरत दीगर बीस दिरहम वसूल कर लिये जायेंगे और जिसके जिम्में तीन साला हों और उसके पास तीन साला की बजाये चार साला हो तो उससे चार साला कबूल कर लिया जाएगा और सदक़ा वसूल करने वाला उसे बीस दिरहम या दो बकरियां वापिस करे और अगर

٢٥ - باب: مَنْ بَلَغَت عِنْدَهُ صَدَقَةُ بِنْتِ مَخَاضٍ وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ

٧٣٦ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ كَتَبَ لَهُ فَرِيضَةَ الصَّدَقَةِ، الَّتِي أَمَرَ ٱللهُ رَسُولَهُ ﷺ: (مَنْ بَلَغَتْ عِنْدَهُ مِنَ الإِبِلِ صَدَقَةُ الجَذَعَةِ، وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ جَذَعَةٌ، وَعِنْدَهُ حِقَّةٌ، فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ الحِقَّةُ، وَيَجْعَلُ مَعَهَا شَاتَيْنِ إِنِ ٱسْتَيْسَرَتَا لَهُ، أَوْ عِشْرِينَ دِرْهَمًا. وَمَنْ بَلَغَتْ عِنْدَهُ صَدَقَةُ الْحِقَّةِ، وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ الْحِقَّةُ، وَعِنْدَهُ الجَذَعَةُ، فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ الجَذَعَةُ، وَيُعْطِيهِ المُصَدِّقُ عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ شَاتَيْنِ. وَمَنْ بَلَغَتْ عِنْدَهُ صَدَقَةُ الْحِقَّةِ، وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ إِلَّا بِنْتُ لَبُونٍ، فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ بِنْتُ لَبُونٍ، وَيُعْطِي شَاتَيْنِ أَوْ عِشْرِينَ دِرْهَمًا، وَمَنْ بَلَغَتْ صَدَقَتُهُ بِنْتَ لَبُونٍ، وَعِنْدَهُ حِقَّةٌ، فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ ٱلْحِقَّةُ، وَيُعْطِيهِ المُصَدِّقُ عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ شَاتَيْنِ. وَمَنْ بَلَغَتْ صَدَقَتُهُ بِنْتَ لَبُونٍ، وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ، وَعِنْدَهُ بِنْتُ مَخَاضٍ، فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ بِنْتُ مَخَاضٍ، وَيُعْطِي مَعَهَا عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ شَاتَيْنِ).

[رواه البخاري: ١٤٥٣]

ज़कात में तीन साला बच्चा फर्ज हो और उसके पास तीन साला की बजाये दो साला मादा बच्चा हो तो वही कबूल कर लिया जाये और वह मजीद उसके साथ बीस दिरहम या दो बकरियां देगा और अगर ज़कात में दो साला मादा बच्चा वाजिब हो और उसके पास तीन साला बच्चा मौजूद हो तो वही लेकर बीस दिरहम या दो बकरियों वापिस कर दी जायें। अगर ज़कात में दो साला बच्चा वाजिब हो और उसके पास दो साला के बजाये एक साला मादा बच्चा हो तो वही कबूल कर लिया जाये, लेकिन वह उसके साथ बीस दिरहम या दो बकरियों ज्यादा देगा।

फायदे : इन सूरतों में कमी बैशी के तौर पर बीस दिरहम या दो बकरियों में एक का इन्तखाब करना देने वाले की जिम्मेदारी है, चाहे मालिक हो या वसूलकुन्निदा, लेने वाला अपनी मर्जी से किसी एक को लेने का हकदार नहीं है।

(औनुलबारी, 2/443)

बाब 26 : बकरियों की ज़कात का बयान।

٢٦ - باب: زكاةُ الغَنَم

737 : अनस रजि. से रिवायत है कि अबू बकर रजि. ने उनको (ज़कात वसूल करने के लिए) बहरीन की तरफ रवाना किया तो यह परवाना लिख दिया था। अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। यह अहकामे सदक़ा हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों पर मुकर्रर फरमाये हैं और जिनके बारे में

٧٣٧ : وعنه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، كَتَبَ لَهُ هٰذَا الْكِتَابَ، لَمَّا وَجَّهَهُ إِلَى الْبَحْرَيْنِ:

بِسْمِ ٱللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

هٰذِهِ فَرِيضَةُ الصَّدَقَةِ، الَّتِي فَرَضَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَلَى الْمُسْلِمِينَ، وَالَّتِي أَمَرَ ٱللهُ بِهَا رَسُولَهُ، فَمَنْ سُئِلَهَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ عَلَى وَجْهِهَا فَلْيُعْطِهَا، وَمَنْ سُئِلَ فَوْقَهَا فَلَا يُعْطِ:

(في أَرْبَعٍ وَعِشْرِينَ مِنَ الإِبِلِ فَمَا دُونَهَا، مِنَ الْغَنَمِ، مِنْ كُلِّ خَمْسٍ شَاةٌ، فَإِذَا بَلَغَتْ خَمْسًا وَعِشْرِينَ إِلَى خَمْسٍ وَثَلاثِينَ فَفِيهَا بِنْتُ مَخَاضٍ أُنْثَى، فَإِذَا بَلَغَتْ سِتًّا وَثَلاثِينَ إِلَى خَمْسٍ وَأَرْبَعِينَ فَفِيهَا بِنْتُ لَبُونٍ أُنْثَى، فَإِذَا بَلَغَتْ سِتًّا وَأَرْبَعِينَ إِلَى سِتِّينَ فَفِيهَا حِقَّةٌ طَرُوقَةُ الْجَمَلِ، فَإِذَا بَلَغَتْ وَاحِدَةً وَسِتِّينَ إِلَى خَمْسٍ وَسَبْعِينَ فَفِيهَا جَذَعَةٌ، فَإِذَا بَلَغَتْ - يَعْنِي - سِتًّا وَسَبْعِينَ إِلَى تِسْعِينَ فَفِيهَا بِنْتَا لَبُونٍ، فَإِذَا بَلَغَتْ إِحْدَى وَتِسْعِينَ إِلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ فَفِيهَا حِقَّتَانِ طَرُوقَتَا الْجَمَلِ، فَإِذَا زَادَتْ عَلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ فَفِي كُلِّ أَرْبَعِينَ بِنْتُ لَبُونٍ، وَفِي كُلِّ خَمْسِينَ حِقَّةٌ، وَمَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ إِلَّا أَرْبَعٌ مِنَ الإِبِلِ فَلَيْسَ فِيهَا صَدَقَةٌ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبُّهَا، فَإِذَا بَلَغَتْ خَمْسًا مِنَ الإِبِلِ فَفِيهَا شَاةٌ.

وَفِي صَدَقَةِ الْغَنَمِ: فِي سَائِمَتِهَا إِذَا كَانَتْ أَرْبَعِينَ إِلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ شَاةٌ، فَإِذَا زَادَتْ عَلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ إِلَى مِائَتَيْنِ شَاتَانِ، فَإِذَا زَادَتْ عَلَى مِائَتَيْنِ إِلَى ثَلاثِمِائَةٍ فَفِيهَا ثَلاثٌ، فَإِذَا زَادَتْ عَلَى ثَلاثِمِائَةٍ فَفِي كُلِّ مِائَةٍ شَاةٌ، فَإِذَا كَانَتْ سَائِمَةُ الرَّجُلِ نَاقِصَةً مِنْ أَرْبَعِينَ شَاةً وَاحِدَةً، فَلَيْسَ فِيهَا صَدَقَةٌ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبُّهَا.

وَفِي الرِّقَةِ رُبُعُ الْعُشْرِ، فَإِنْ لَمْ

अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया है लिहाजा जिस मुसलमान से इस तहरीर के मुताबिक ज़कात का मुतालबा किया जाये, वह उसे अदा करे और जिससे ज्यादा का मुतालबा किया जाये वह न दे। चौबीस ऊंट या इससे कम तादाद पर हर पांच में एक बकरी फर्ज है, पच्चीस से पैंतीस तक एक साला मादा बच्चा ऊंट, छत्तीस से पैतालिस तक दो साला मादा बच्चा ऊंट, छियांलिस से साठ तक तीन साला मादा ऊंट जो काबिले जुफ्ती हो, इकसठ से पिचहत्तर तक चार साला, छिहत्तर से नब्बे तक दो अदद दो साला मादा ऊंट, इकानवे से एक सौ बीस तक दो अदद तीन साला मादा ऊंट, जो काबिले जुफती हो। अगर उससे ज्यादा हों तो हर चालीस पर दो साला मादा ऊंट और हर पचास पर तीन साला मादा ऊंट और जिसके पास सिर्फ चार ऊंट हों तो उन पर ज़कात फर्ज नहीं, लेकिन

उनका मालिक अगर चाहे तो ज़कात दे सकता है। अगर पांच ऊंट ही तो उन पर एक बकरी वाजिब है। बकरियों की ज़कात के बारे में यह जाब्ता है कि जंगल में चरने वाली बकरियां जब चालीस हो जायें तो एक सौ बीस तक एक बकरी देना होगी। एक सौ इक्कीस से दो सौ तक दो बकरियां और दो सौ एक से तीन सौ तक तीन बकरियां देना जरूरी हैं। और अगर तीन सौ से ज्यादा हो तो हर सौ में एक बकरी देनी होगी और अगर बकरियां चालीस से कम हो तो ज़कात नहीं, हां मालिक देना चाहे तो उसकी मर्जी है। चांदी में ज़कात चालीसवां हिस्सा है, बशर्ते कि दो सौ दिरहम हो। अगर एक सौ नब्बे (190) दिरहम हैं तो उन पर कुछ ज़कात नहीं, हां अगर मालिक देना चाहे तो दे सकता है।

تَكُنْ إِلَّا تِسْعِينَ وَمِائَةً فَلَيْسَ فِيهَا شَيْءٌ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبُّهَا). [رواه البخاري: ١٤٥٤]

फायदे : हदीस के आखिर में एक एक सौ नब्बे की तादाद दहाईयों के ऐतबार से है, मतलब यह है कि एक सौ निन्यानवें तक कोई ज़कात नहीं, हां जब पूरे दो सौ होंगे तो ज़कात वाजिब होगी। (औनुलबारी, 2/446)

बाब 27: ज़कात में सिर्फ सही व तन्दुरुस्त जानवर लिया जाये।

٢٧ - بابٌ: لَا يُؤْخَذُ فِي الصَّدَقَةِ إِلَّا السَّلِيم

738 : अनस रजि. से ही रिवायत है कि अबू बकर रजि. ने उन्हें एक तहरीर लिख कर दी थी, जिसका हुक्म अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया था कि ज़कात में बूढ़ी बकरी

٧٣٨ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ كَتَبَ لَهُ، الَّتِي أَمَرَ ٱللهُ رَسُولَهُ ﷺ: (وَلَا يُخْرَجُ فِي الصَّدَقَةِ هَرِمَةٌ، وَلَا ذَاتُ عَوَارٍ، وَلَا تَيْسٌ، إِلَّا مَا شَاءَ الْمُصَدِّقُ). [رواه البخاري: ١٤٥٥]

और ऐबदार जानवर न निकाला जाये और न ही अमरबकरा दिया जाये, हां अगर सकदा वसूल करने वाला चाहे तो ले सकता है।

फायदे : ज़कात के जानवर अगर सब मादा हैं और नस्ल बढ़ाने के लिए नर की जरूरत हो तो नर लेने में कोई हर्ज नहीं। इसी तरह कोई अच्छी नस्ल का ऊंट, गाय या बकरी की जरूरत तो नस्ल बढ़ाने के लिए इसे लेना भी जाइज है, अगरचे ऐबदार ही क्यों न हो।

बाब 28 : ज़कात में लोगों का अच्छा माल न लिया जाये।

٢٨ - باب: لاَ تُؤخَذُ كَرَائِمُ أمْوَالِ النَّاسِ فِي الصَّدَقَةِ

739 : इब्ने अब्बास रजि. की वह रिवायत (702), जिसमें मुआज रजि. को यमन भेजने का जिक्र है, पहले गुजर चुकी है। इस रिवायत में इतना ज्यादा है कि मुआज रजि! तुम अहले किताब के पास जा रहे हो, फिर बाकी हदीस जिक्र की जिसके आखिर में है कि लोगों के अच्छा माल लेने से बचना।

٧٣٩ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: حديث بَعثِ مُعاذٍ إلى اليَمَنِ تَقَدَّمَ وفي هٰذِهِ الرِّوايَة قَالَ: (إِنَّكَ تَقْدَمُ عَلَى قَوْمٍ أَهْلِ كِتَابٍ..) وَذَكَرَ بَاقِي الحَديث، ثُمَّ قَالَ في آخِرِه: (.. وَتَوَقَّ كَرَائِمَ أَمْوَالِ النَّاسِ). [رواه البخاري: ١٤٥٨]

फायदे : यह इसलिए है कि ज़कात के जरीये गरीबों से हमदर्दी मकसूद है। लिहाजा मालदारों पर ज्यादती करके गरीब लोगों से हमदर्दी करना जाइज नहीं है, यही वजह है कि हदीस के आखिर में फरमाने नबवी है कि मजलूम की बद-दुआ से बचते रहना।

बाब 29 : अपने रिश्तेदारों को ज़कात देना।

٢٩ - باب: الزَّكَاةُ عَلَى الأَقَارِبِ

740 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अबू तल्हा

٧٤٠ : وعَنْه رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كانَ أَبُو طَلْحَةَ أَكْثَرَ الأَنْصارِ بِالمَدِينَةِ مالًا مِنْ نَخْلٍ، وَكانَ أَحَبُّ

أَمْوَالِهِ إِلَيْهِ بَيْرُحَاءَ، وَكَانَتْ مُسْتَقْبِلَةَ الْمَسْجِدِ، وَكَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَدْخُلُهَا، وَيَشْرَبُ مِنْ مَاءٍ فِيهَا طَيِّبٍ. قَالَ أَنَسٌ: فَلَمَّا أُنْزِلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ: ﴿لَن تَنَالُوا۟ ٱلْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا۟ مِمَّا تُحِبُّونَ﴾. قَامَ أَبُو طَلْحَةَ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ ٱللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى يَقُولُ: ﴿لَن تَنَالُوا۟ ٱلْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا۟ مِمَّا تُحِبُّونَ﴾. وَإِنَّ أَحَبَّ أَمْوَالِي إِلَيَّ بَيْرُحَاءَ، وَإِنَّهَا صَدَقَةٌ لِلهِ، أَرْجُو بِرَّهَا وَذُخْرَهَا عِنْدَ ٱللهِ، فَضَعْهَا، يَا رَسُولَ ٱللهِ، حَيْثُ أَرَاكَ ٱللهُ. قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (بَخٍ، ذٰلِكَ مَالٌ رَابِحٌ، ذٰلِكَ مَالٌ رَابِحٌ، وَقَدْ سَمِعْتُ مَا قُلْتَ، وَإِنِّي أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الأَقْرَبِينَ). فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَفْعَلُ يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَقَسَمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقَارِبِهِ وَبَنِي عَمِّهِ. [رواه البخاري: ١٤٦١]

रजि. मदीना में तमाम अन्सार से ज्यादा मालदार थे। उनके खुजूर के बागात थे, उन्हें सबसे ज्यादा पसन्द बैरूहा नामी बाग था जो मस्जिद नबवी के सामने वाकेआ था। वहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ ले जाते और उसका खुशगवार पानी पीते थे। अनस रज़ि. फरमाते हैं कि जब यह आयत नाजिल हुई ''तुम नेकी नहीं हासिल कर सकते, जब तक अपनी पसन्दीदा चीजों में से खर्च न करो।'' तो अबू तलहा रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़े होकर अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला फरमाता है, तुम नेकी को नहीं पहुंच सकते, जब तक अपनी पसन्दीदा चीजें (अल्लाह की राह में) खर्च न करो और मेरा सब से महबूब माल ''बैरूहा'' है। लिहाजा वह आज से अल्लाह की राह में सदका है और मैं अल्लाह के यहां उसको सवाब और आखिरत में उसके जखीरा होने का उम्मीदवार हूँ। ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप इसे अल्लाह के हुक्म के मुताबिक मसरफ में ले आयें। अनस रजि. का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बहुत खूब, यह तो बहुत फायदेमन्द माल है। यह तो वाकई नफा बख्श

माल है और जो कुछ तुमने कहा, मैंने सुन लिया। मेरी राय यह है कि तुम इसे अपने रिश्तेदारों में बांट दो, अबू तल्हा रज़ि. ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं आपके हुक्म की तामिल करूंगा। चूनांचे अबू तल्हा रजि. ने उसे अपने रिश्तेदारों और चचाजाद भाईयों में बांट दिया।

फायदे : रिश्तेदारों को खैरात देने से दो गुना सवाब मिलता है, सदक़ा खैरात और सिलह रहमी करने का। अगरचे यह नफ़्ली सदक़ा था, फिर भी इमाम बुखारी ने ज़कात को इस पर कयास किया और ऐसा करना मुतलकन जाइज है। बशर्ते रिश्तेदार मोहताज हो। (औनुलबारी, 2/450)

741 : अबू सईद खुदरी रजि. की हदीस (**531**) पहले गुजर चुकी है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईदगाह तशरीफ ले जाने के मुताल्लिक है। इस रिवायत में इस कद्र इजाफा है कि जब आप लौटकर अपने मकाम पर तशरीफ लाये तो इब्ने मसऊद रजि. की बीवी जैनब रजि. आयी और आपके पास आने की इजाजत मांगी, चूनांचे अर्ज किया गया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जैनब रजि. आयी है तो आपने पूछा कौनसी जैनब रजि.? अर्ज किया इब्ने मसऊद

٧٤١ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: حَدِيثُهُ فِي خُرُوجِ النَّبِيِّ ﷺ إِلى المُصَلَّى تَقَدَّم، وفي هٰذِهِ الرِّوايَةِ قالَ: فَلَمَّا صَارَ إِلَى مَنْزِلِهِ، جاءَتْ زَيْنَبُ، ٱمْرَأَةُ ابْنِ مَسْعُودٍ، تَسْتَأْذِنُ عَلَيْهِ، فَقِيلَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، هٰذِهِ زَيْنَبُ، فَقَالَ: (أَيُّ الزَّيَانِبِ؟). فَقِيلَ: ٱمْرَأَةُ ابْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: (نَعَمْ، ٱئْذَنُوا لَهَا). فَأُذِنَ لَهَا، قَالَتْ: يَا نَبِيَّ ٱللهِ، إِنَّكَ أَمَرْتَ الْيَوْمَ بِالصَّدَقَةِ، وَكانَ عِنْدِي حُلِيٌّ لِي، فَأَرَدْتُ أَنْ أَتَصَدَّقَ بِهِ، فَزَعَمَ ابْنُ مَسْعُودٍ: أَنَّهُ وَوَلَدَهُ أَحَقُّ مَنْ تَصَدَّقْتُ بِهِ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (صَدَقَ ابْنُ مَسْعُودٍ، زَوْجُكِ وَوَلَدُكِ أَحَقُّ مَنْ تَصَدَّقْتِ بِهِ عَلَيْهِمْ). [رواه البخاري: ١٤٦٢]

रजि. की बीवी, आपने फ़रमाया अच्छा उन्हें इजाजत दे दो। चूनांचे इजाजत दी गई। उन्होंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने आज सदक़ा देने का हुक्म दिया है और मेरे पास कुछ जेवर हैं। मैं चाहती हूं कि इसे खैरात कर दूं। मगर इब्ने मसऊद रजि. का खयाल है कि वह और उसके बच्चे ज्यादा हकदार हैं कि उन्ही को सदक़ा दूं। तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, इब्ने मसऊद रजि. ने सही कहा है, तुम्हारा शौहर और तुम्हारे बच्चे उसके ज्यादा हकदार हैं कि तुम उनको सदक़ा दो।

फ़ायदे: मालूम हुवा कि बीवी अपने गरीब शौहर पर और मां अपने गरीब बच्चे पर खैरात कर सकती है और उसे ज़कात भी दे सकती है। इमाम बुखारी ने ज़कात को नफ्ली सदक़ा पर कयास किया है। (औनुलबारी, 2/452)

बाब 30 : मुसलमान के लिए अपने घोड़े की ज़कात देना जरूरी नहीं।

٣٠ - باب: لَيْسَ عَلَى المُسْلِمِ فِي فَرَسِهِ صَدَقَةٌ

742: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुसलमान पर उसके खिदमतगार गुलाम और उसकी सवारी के घोड़े पर ज़कात फर्ज नहीं है।

٧٤٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَيْسَ عَلَى المُسْلِمِ فِي فَرَسِهِ وَغُلامِهِ صَدَقَةٌ). [رواه البخاري: ١٤٦٣]

फायदे : सही मौकिफ यही है कि गुलामों और घोड़ों पर ज़कात फर्ज नहीं है। अगरचे वह बगर्ज तिजारत ही क्यों न रखें हो, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनकी तिजारत के बारे में कोई हदीस मरवी नहीं है। (औनुलबारी, 2/453)

बाब 31 : यतीमों पर सदक़ा करना।

٣١ - باب: الصَّدَقَةُ عَلَى اليَتَامَىٰ

743 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर पर रौनक अफरोज हुये, जब हम लोग आपके पास बैठ गये तो आपने फरमाया, मैं अपने बाद तुम्हारे हक़ में दुनिया की शादाबी और उसकी जिबाईश से डरता हूँ। जिसका दरवाजा तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा। इस पर एक आदमी ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या अच्छी चीज भी बुराई पैदा करेगी? आप खामोश हो गये। उस आदमी से कहा गया कि क्या मामला है? तू बहस किये जा रहा है, जबकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुझ से गुफ्तगू नहीं करते। उसके बाद हमने देखा कि आप पर वहय आ रही है। रावी कहता है कि फिर आपने चेहरा मुबारक से पसीना साफ किया और फरमाया, सवाल करने वाला कहां है? गोया आपने उसकी तहसीन फरमायी, फिर फरमाया बात यह है कि अच्छी चीज बुराई तो पैदा नहीं करती लेकिन फसले रबी ऐसी

٧٤٣ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ جَلَسَ ذَاتَ يَوْمٍ عَلَى الْمِنْبَرِ، وَجَلَسْنَا حَوْلَهُ، فَقَالَ: (إِنِّي مِمَّا أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِي مَا يُفْتَحُ عَلَيْكُمْ مِنْ زَهْرَةِ ٱلدُّنْيَا وَزِينَتِهَا). فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَوَ يَأْتِي الخَيْرُ بِالشَّرِّ؟ فَسَكَتَ النَّبِيُّ ﷺ، فَقِيلَ لَهُ: ما شَأْنُكَ، تُكَلِّمُ النَّبِيَّ ﷺ وَلاَ يُكَلِّمُكَ؟ فَرَأَيْنَا أَنَّهُ يَنْزِلُ عَلَيْهِ الوحيُ، قَالَ فَمَسَحَ عَنْهُ الرُّحَضَاءَ، فَقَالَ: (أَيْنَ السَّائِلُ؟). وَكَأَنَّهُ حَمِدَهُ فَقَالَ: (إِنَّهُ لاَ يَأْتِي الخَيْرُ بِالشَّرِّ، وَإِنَّ مِمَّا يُنْبِتُ الرَّبِيعُ يَقْتُلُ أَوْ يُلِمُّ، إِلَّا آكِلَةَ الخَضِرَاءِ، أَكَلَتْ حَتَّى إِذَا ٱمْتَدَّتْ خاصِرَتَاهَا، ٱسْتَقْبَلَتْ عَيْنَ الشَّمْسِ، فَثَلَطَتْ، وَبَالَتْ، وَرَتَعَتْ، وَإِنَّ هٰذَا المَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ، فَنِعْمَ صَاحِبُ المُسْلِمِ ما أَعْطَى مِنْهُ المِسْكِينَ وَالْيَتِيمَ وَٱبْنَ السَّبِيلِ - أَوْ كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ - وَإِنَّهُ مَنْ يَأْخُذُهُ بِغَيْرِ حَقِّهِ، كالَّذِي يَأْكُلُ وَلاَ يَشْبَعُ، وَيَكُونُ شَهِيدًا عَلَيْهِ يَوْمَ الْقِيامَةِ). [رواه البخاري: ١٤٦٥]

घास भी पैदा करती है, जो जानवर को मार डालती है या बीमार कर देती है। मगर उस सब्जा खोर जानवर को जो यहां तक खाये कि उसकी दोनों कोख भर जायें फिर वह धूप में आकर लेट जाये और लीद और पेशाब करे और फिर चरने लगे, बिलाशुबा यह माल भी सर सब्ज वशीरी है और मुसलमान का बेहतरीन साथी है, मगर उस वक़्त जब उससे मिसकीन, यतीम और मुसाफिर को दिया जाये या इस किस्म की कोई और बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमायी और जो आदमी उस माल को नाहक लेगा, वह उस आदमी की तरह होगा जो ख़ाता जाये मगर सेर न हो। ऐसा माल क़यामत के दिन उसके खिलाफ गवाही देगा।

फायदे : यह मिसाल देकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें इस हकीकत से आगाह फरमाया है कि दौलत अगरचे अल्लाह की नैमत और अच्छी चीज है, मगर जब बे-मौका और गुनाहों में खर्च होगी तो यही दौलत अजाब का सबब बन जायेगी, जैसा कि मौसम-ए-बहार की हरी-भरी घास बड़ी उम्दा नैमत है, मगर जो जानवर हद से ज्यादा खा जाये तो उसके लिए यह जहरे कातिल बन जाती है।

बाब 32 : खाविन्द और जैरे किफालत यतीमों को ज़कात देना।

٣٢ - باب: الزَّكَاةُ عَلَى الزَّوجِ وَالأَيْتَامِ فِي الحَجْرِ

744: जैनब रजि. बीवी, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. की हदीस (741) पहले गुजर चुकी है और इस तरीक में इतना इजाफा है कि उन्होंने फरमाया, मैं नबी

٧٤٤ : عَنْ زَيْنَبَ، امْرَأَةِ عَبْدِ ٱللهِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا حَدِيثها المُتَقَدِّم قَرِيبًا، وَقَالَت فِي هٰذِهِ الرِّوَايَة: ٱنطَلَقْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَوَجَدْتُ ٱمْرَأَةً مِنَ الأَنْصَارِ عَلَى البَابِ، حَاجَتُهَا مِثْلُ حَاجَتِي، فَمَرَّ

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गयी तो मैंने दरवाजे पर एक अन्सारी खातून को पाया जो मेरी तरह की जरूरत के लिए आयी थी। बिलाल रजि. जब हमारे पास से गुजरे तो हमने कहा कि तुम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछो, क्या मेरे लिए यह काफी है कि मैं अपना माल अपने शौहर और जैरे किफालत यतीमों पर खर्च करूं। चूनांचे बिलाल रजि. के पूछने पर आपने फरमाया, हां ऐसा कर सकती है। उसे दोगुना सवाब मिलेगा। एक क़राबतदारी का और दूसरा खैरात देने का।

عَلَيْنَا بِلَالٌ، فَقُلْنَا: سَلِ النَّبِيَّ ﷺ: أَيَجْزِيءُ عَنِّي أَنْ أُنْفِقَ عَلَى زَوْجِي وَأَيْتَامٍ لِي فِي حَجْرِي؟ فَسَأَلَهُ، فَقَالَ: (نَعَمْ لَهَا أَجْرَانِ، أَجْرُ الْقَرَابَةِ وَأَجْرُ الصَّدَقَةِ). [رواه البخاري: ١٤٦٦]

फायदे : हदीस में सदक़ा का लफ़्ज जो फर्ज सदक़ा यानी ज़कात और निफ़्ल सदक़ा यानी खैरात दोनों को शामिल है, सही मुकिफ यह है कि माले ज़कात अपने खाविन्द और बेटों को देना जाइज है, बशर्ते कि वह जरूरतमन्द हो।

---

745 : उम्मे सलमा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर मैं अबू सलमा रजि. के बच्चों पर खर्च करूं तो क्या मुझे सवाब मिलेगा? जबकि वह मेरे ही बेटे हैं। आपने फरमाया तुम उन पर खर्च करो, जो कुछ तुम उन पर खर्च करोगी, उसका सवाब तुम्हें जरूर मिलेगा।

٧٤٥ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَلِي أَجْرٌ أَنْ أُنْفِقَ عَلَى بَنِي أَبِي سَلَمَةَ، إِنَّمَا هُمْ بَنِيَّ؟ فَقَالَ: (أَنْفِقِي عَلَيْهِمْ، فَلَكِ أَجْرُ مَا أَنْفَقْتِ عَلَيْهِمْ). [رواه البخاري: ١٤٦٧]

फायदे : अगरचे हदीस में सराहत नहीं की। हज़रत उम्मे सलमा रजि. उन यतीम बच्चों पर माले ज़कात से खर्च करती थीं, फिर भी इतना जरूर कद्रे मुश्तरक है कि उन पर खर्च जरूर करती थी।

बाब 33 : इरशादबारी तआला गुलामों को आजाद करने में, कर्जदारों को निजात दिलाने में, और अल्लाह की राह में (माल ज़कात खर्च किया जाये)

٣٣ - باب: قَوْلُ الله تعالى: ﴿وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَـٰرِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ﴾

746 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार सदका वसूल करने का हुक्म दिया। कहा गया कि इब्ने जमील, खालिद बिन वलीद और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तल्लिब रजि. ने सदका नहीं दिया, इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, इब्ने जमील तो इस वजह से इन्कार करता है कि वह तंगदस्त था। अल्लाह और उसके रसूल ने मालदार कर दिया, मगर खालिद रजि. पर तुम जुल्म करते हो, उन्होंने जिरहें और आलाते जंग अल्लाह की राह में वक्फ कर रखे हैं। रहे अब्बास बिन अब्दुल मुत्तल्लिब रजि. तो वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हैं, उनकी ज़कात उन पर सदका है और उसके बराबर और भी (मेरी तरफ से होगी)।

٧٤٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِالصَّدَقَةِ، فَقِيلَ: مَنَعَ ابْنُ جَمِيلٍ، وَخالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ، وَعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (ما يَنْقِمُ ابْنُ جَمِيلٍ إِلَّا أَنَّهُ كانَ فَقِيرًا فَأَغْنَاهُ ٱللهُ وَرَسُولُهُ، وَأَمَّا خالِدٌ: فَإِنَّكُمْ تَظْلِمُونَ خالِدًا، قَدِ ٱحْتَبَسَ أَدْرَاعَهُ وَأَعْتُدَهُ في سَبِيلِ ٱللهِ، وأَمَّا الْعَبَّاسُ ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ: فَعَمُّ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَهِيَ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ وَمِثْلُهَا مَعَهَا). [رواه البخاري: ١٤٦٨]

फायदे : सही मुस्लिम में है कि हज़रत अब्बास रजि. की ज़कात बल्कि उससे दो चन्द मैं अदा करूंगा, क्योंकि चचा, बाप ही की तरह होता है, इसलिए अपने चचा की तरफ से मैं खुद ज़कात अदा करूंगा। (औनुलबारी, **2/463**)

बाब 34 : सवाल करने से बचना।

٣٤ - باب: الاسْتِعْفَافُ عَنِ المَسأَلةِ

747 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि अन्सार में से कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (माल का) सवाल किया तो आपने दे दिया, उन्होंने दोबारा मांगा तो आपने फिर दे दिया, यहां तक कि आपके पास जो कुछ था सब खत्म हो गया, आखिरकार आपने फरमाया, मेरे पास जो माल होगा, उसे तुम लोगों से बचाकर नहीं रखूंगा। लेकिन याद रखो, जो आदमी सवाल करने से बचेगा, अल्लाह उसे फिक्रो-फाका से बचायेगा और जो आदमी (दुनिया के माल से) बेपरवाह रहेगा, अल्लाह उसे मालदार कर देगा और जो आदमी सब्र करेगा, अल्लाह उसे साबिर बना देगा और किसी आदमी को सब्र से बेहतर कोई वसीतर नैमत नहीं दी गई है।

٧٤٧ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ نَاسًا مِنَ الأَنْصَارِ، سَأَلُوا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَأَعْطَاهُمْ، ثُمَّ سَأَلُوهُ فَأَعْطَاهُمْ، ثُمَّ سَأَلُوهُ فَأَعْطَاهُمْ، حَتَّى نَفِدَ مَا عِنْدَهُ، فَقَالَ: (مَا يَكُونُ عِنْدِي مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ أَدَّخِرَهُ عَنْكُمْ، وَمَنْ يَسْتَعْفِفْ يُعِفَّهُ ٱللهُ، وَمَنْ يَسْتَغْنِ يُغْنِهِ ٱللهُ، وَمَنْ يَتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ ٱللهُ، وَمَا أُعْطِيَ أَحَدٌ عَطَاءً خَيْرًا وَأَوْسَعَ مِنَ الصَّبْرِ). [رواه البخاري: ١٤٦٩]

फायदे : इस हदीस में सवाल न करने के तीन दर्जे हैं, पहला यह कि इन्सान सवाल से बचे, लेकिन इस्तगना को जाहिर न करे, दूसरा यह कि मखलूक से तो बेनयाज रहे, अलबत्ता अगर उसे कुछ दे दिया जाये तो बतय्यब खातिर कबूल करे और तीसरा यह कि देने

के बावजूद उसे कुबूल न करे, यह आखरी दर्जा सब्र और सबात का है जो तमाम मकारिमे अख्लाक को अपने अन्दर समेटे हुये है। (औनुलबारी, 2/464)

---

748 : अबू सईद रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है, तुममें से अगर कोई रस्सी लेकर उसमें लकड़ियों का गट्ठा बांधे और उसे अपनी पीठ पर लादकर लाये तो दूसरे के पास जाकर सवाल करने से बेहतर है (मालूम नहीं) वह उसे दे या न दे।

٧٤٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لأَنْ يَأْخُذَ أَحَدُكُمْ حَبْلَهُ، فَيَحْتَطِبَ عَلَى ظَهْرِهِ، خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَأْتِيَ رَجُلاً فَيَسْأَلَهُ، أَعْطَاهُ أَوْ مَنَعَهُ). [رواه البخاري: ١٤٧٠]

फायदे : इस हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरों से सवाल करने की बड़ी बलीग अन्दाज में मजम्मत फरमायी है। (औनुलबारी, 2/465)

---

749 : जुबैर रजि. से एक और रिवायत में है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अगर कोई लकड़ियों का गट्ठा अपनी पीठ पर लादकर लाये और उसे बेचे, जिसकी वजह से अल्लाह तआला उसकी इज्जत और आबरू कायम रखे तो यह उसके लिए सवाल करने से बेहतर है कि लोग उसे दें या न दें।

٧٤٩ : وَفِي رِوَايَةٍ عَنِ ٱلزُّبَيْرِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: فَيَأْتِي بِحُزْمَةِ ٱلْحَطَبِ عَلَى ظَهْرِهِ فَيَبِيعَهَا، فَيَكُفَّ ٱللهُ بِهَا وَجْهَهُ، خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَسْأَلَ ٱلنَّاسَ، أَعْطَوْهُ أَوْ مَنَعُوهُ. [رواه البخاري: ١٤٧١]

फायदे : मालूम हुवा कि हाथ से मेहनत करके खाना बेहतरीन कमाई है। वाजेह रहे कि कमाने के तीन उसूल हैं, खेती, लेनदेन और नौकरी, इनमें पहला दर्जा खेती का है, क्योंकि इसमें हाथ से मेहनत और अल्लाह पर भरोसा किया जाता है।

(औनुलबारी, 2/466)

---

750 : हकीम बिन हिजाम रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुछ मांगा तो आपने मुझे दे दिया। मैंने फिर मांगा तो भी आपने दे दिया, मैंने फिर मांगा तो आपने मुझे फिर दे दिया, और इसके बाद फरमाया, ऐ हकीम रजि.! यह माल सब्जो-शीरी है जो आदमी इसको सखावते नफ़्स के साथ लेता है, उसको बरकत अता होती है और जो तमआ (लालच) के साथ लेता है, उसको उसमें बरकत नहीं दी जाती और ऐसा आदमी उस आदमी की तरह होता है जो खाता तो है, मगर सेर नहीं होता, नीज ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है। हकीम रजि. कहते हैं कि मैंने अर्ज किया ऐ

٧٥٠ : عَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ قَالَ: (يَا حَكِيمُ، إِنَّ هٰذَا المَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ، فَمَنْ أَخَذَهُ بِسَخَاوَةِ نَفْسٍ بُورِكَ لَهُ فِيهِ، وَمَنْ أَخَذَهُ بِإِشْرَافِ نَفْسٍ لَمْ يُبَارَكْ لَهُ فِيهِ، وَكَانَ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلاَ يَشْبَعُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى). قَالَ حَكِيمٌ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، لاَ أَرْزَأُ أَحَدًا بَعْدَكَ شَيْئًا، حَتَّى أُفَارِقَ ٱلدُّنْيَا. فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ يَدْعُو حَكِيمًا إِلَى الْعَطَاءِ فَيَأْبَى أَنْ يَقْبَلَهُ مِنْهُ، ثُمَّ إِنَّ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ دَعَاهُ لِيُعْطِيَهُ فَأَبَى أَنْ يَقْبَلَ مِنْهُ شَيْئًا، فَقَالَ عُمَرُ: إِنِّي أُشْهِدُكُمْ يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ عَلَى حَكِيمٍ، أَنِّي أَعْرِضُ عَلَيْهِ حَقَّهُ مِنْ هٰذَا الْفَيْءِ، فَيَأْبَى أَنْ يَأْخُذَهُ. فَلَمْ يَرْزَأْ حَكِيمٌ أَحَدًا مِنَ النَّاسِ بَعْدَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ حَتَّى تُوُفِّيَ. [رواه البخاري: ١٤٧٢]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कसम है उस जात की जिसने आपको हक देकर भेजा है। मैं आज के बाद किसी से कुछ नहीं मांगूगा। यहां तक कि दुनिया से चला जाऊँगा। चूनांचे जब अबू बकर रजि. खलीफा हुये तो वह हकीम रजि. को वजीफा देने के लिए बुलाते रहे, मगर उन्होंने कुबूल करने से इनकार कर दिया। फिर उमर रजि. ने भी अपने खिलाफत के दौर में उनको बुलाकर वजीफा देना चाहा, लेकिन उन्होंने इनकार किया। जिस पर उमर रजि. ने फरमाया, मुसलमानों! मैं तुम्हें गवाह करता हूं कि मैंने हकीम रजि. को उनका हक पेश किया, मगर वह माले गनीमत से अपना हक लेने से इनकार करते हैं। अलगर्ज हकीम रजि. फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद जब तक जिन्दा रहे, किसी से कुछ न लिया।

फायदे : जरूरत के बगैर किसी दूसरे से सवाल करना हराम है, मेहनत और मजदूरी पर कुदरत रखने वाले के लिए भी यही हुक्म है, अलबत्ता बाज हजरात ने तीन शराअत के साथ कुछ गुंजाईश पैदा की है, इसरार न करें, अपनी इज्जते नफ्स को मजरूह न होने दें और जिस आदमी से सवाल करे, उसे तकलीफ न दें, अगर यह शराइत न हो तो बिल इत्तेफाक हराम है।

(औनुलबारी, 2/469)

बाब 35 : जिस आदमी को अल्लाह बगैर सवाल और बगैर लालच के कुछ दे (तो उसे कबूल करना चाहिए)

٣٥ - باب: مَنْ أَعْطَاهُ الله شَيْئاً مِنْ غَيْرِ مَسأَلَةٍ وَلاَ إِشْرَافِ نَفْسٍ

751 : उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने

٧٥١ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ

फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे माल देते थे, तो मैं कहता था, यह उस आदमी को दें जो मुझ से ज्यादा जरूरतमन्द हो, तब आप फरमाते, अगर बिन मांगे बग़ैर इन्तेजार किये तुम्हारे पास माल आ जाये तो ले लिया करो और जो ऐसा न हो, उसके पीछे मत पड़ो।

رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُعْطِينِي الْعَطَاءَ، فَأَقُولُ: أَعْطِهِ مَنْ هُوَ أَفْقَرُ إِلَيْهِ مِنِّي. فَقَالَ: (خُذْهُ، إِذَا جَاءَكَ مِنْ هٰذَا الْمَالِ شَيْءٌ، وَأَنْتَ غَيْرُ مُشْرِفٍ وَلاَ سَائِلٍ، فَخُذْهُ، وَمَا لاَ، فَلاَ تُتْبِعْهُ نَفْسَكَ). [رواه البخاري: ١٤٧٣]

फायदे : सवाल किये बग़ैर जो मिले उसका लेना जाइज है, बशर्ते कि माल हराम न हो। अगर हराम का यकीन हो तो लेना जाइज नहीं। अगर मुशतबा है तो परहेजगारी का तकाजा है कि इस किस्म के माल से भी बचा जाए, फिर भी लेने में थोड़ी बहुत गुंजाईश जरूर है। (औनुलबारी, 2/471)

बाब 36 : जो अपनी दौलत बढ़ाने के लिए लोगों से सवाल करे।

٣٦ - باب: مَنْ سَأَلَ النَّاسَ تَكَثُّرًا

752 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो आदमी बराबर लोगों से सवाल करता रहता है, वह क़यामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उसके मुंह पर गोश्त की बोटी तक न होगी। नीज आपने फरमाया, क़यामत के दिन सूरज

٧٥٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَسْأَلُ النَّاسَ، حَتَّى يَأْتِيَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَيْسَ فِي وَجْهِهِ مُزْعَةُ لَحْمٍ). وَقَالَ: (إِنَّ الشَّمْسَ تَدْنُو يَوْمَ الْقِيَامَةِ، حَتَّى يَبْلُغَ الْعَرَقُ نِصْفَ الأُذُنِ، فَبَيْنَا هُمْ كَذٰلِكَ ٱسْتَغَاثُوا بِآدَمَ، ثُمَّ بِمُوسَى، ثُمَّ بِمُحَمَّدٍ ﷺ). [رواه البخاري: ١٤٧٤، ١٤٧٥]

इतना करीब आ जाएगा कि पसीना आधे कान तक पहुंच जाएगा, सब लोग इसी हाल में आदम अलैहि. से फरियाद करेंगे। फिर मूसा अलैहि. से और फिर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से।

फायदे : सवाल करने की सजा में उसके चेहरे की रौनक को खत्म कर दिया जाएगा। सिर्फ हड्डियां ही रह जायेगी। ऐसी भयानक शक्ल में क़यामत के दिन अल्लाह के सामने पेश होगा। (औनुलबारी, 2/472)

बाब 37 : किस कद्र माल से गिना (मालदारी) हासिल होती है?

٣٧ - بابٌ: حَدُّ الغِنَى

753 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मिसकिन वह नहीं जो लोगों से सवाल करता फिरे और वह उसे एक या दो लुकमे, एक खुजूर या दो खुजूरें दे दें। बल्कि मिसकिन वह है, जिसको बकद्र जरूरत चीज न मिले। न तो लोगों को उसकी हालत मालूम हो कि उसको खैरात दे सकें और न खुद किसी से सवाल करने पर आमादा हो।

٧٥٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لَيْسَ المِسْكِينُ الَّذِي يَطُوفُ عَلَى النَّاسِ، تَرُدُّهُ اللُّقْمَةُ وَاللُّقْمَتَانِ، وَالتَّمْرَةُ وَالتَّمْرَتَانِ، وَلٰكِنِ المِسْكِينُ الَّذِي لاَ يَجِدُ غِنًى يُغْنِيهِ، وَلاَ يُفْطَنُ بِهِ فَيُتَصَدَّقُ عَلَيْهِ، وَلاَ يَقُومُ فَيَسْأَلُ النَّاسَ). [رواه البخاري: ١٤٧٩]

फायदे : इमाम बुखारी का मकसद वह हद बतलाना है, जिसकी मौजूदगी में सवाल करना मना है। लेकिन इस हदीस में इसका खुलासा नहीं है। दूसरी रिवायत से पता चलता है कि जिसके पास सुबह और शाम का खाना मौजूद है, उसे दूसरे से सवाल करने की इजाजत नहीं।

बाब 38 : खजूर का (पेड़ों पर) अंदाजा लगाना।

٣٨ - باب: خَرْصُ التَّمْرِ

754 : अबू हुमैद साइदी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम तबूक की जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। जब आप वादी कुरा में तशरीफ लाये तो देखा कि एक औरत अपने बाग में है। आपने सहाबा किराम रजि. से फरमाया कि अन्दाजा करो। (उसमें कितनी खुजूरें होगी)। खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका दस वसक अन्दाजा लगाया फिर उस औरत से फरमाया कि जितनी खुजूरें पैदा हो, उनको वजन कर लेना फिर जब हम तबूक पहुंचे तो आपने फरमाया आज रात को सख्त आंधी आयेगी, इसलिए रात कोई खुद भी न उठे और जिसके पास ऊंट हो, उसे भी बांध दे। चूनांचे हम लोगों ने ऊंटों को बांध दिया। फिर सख्त आंधी आयी, इत्तिफाक से एक आदमी खड़ा हुवा तो उसे (तेज हवा ने) तय नामी पहाड़ पर फैंक

٧٥٤ : عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ غَزْوَةَ تَبُوكَ، فَلَمَّا جَاءَ وَادِيَ الْقُرَى، إِذَا ٱمْرَأَةٌ فِي حَدِيقَةٍ لَهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَصْحَابِهِ: (ٱخْرُصُوا). وَخَرَصَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَشْرَةَ أَوْسُقٍ، فَقَالَ لَهَا: (أَحْصِي مَا يَخْرُجُ مِنْهَا). فَلَمَّا أَتَيْنَا تَبُوكَ قَالَ: (أَمَا، إِنَّهَا سَتَهُبُّ اللَّيْلَةَ رِيحٌ شَدِيدَةٌ، فَلاَ يَقُومَنَّ أَحَدٌ، وَمَنْ كَانَ مَعَهُ بَعِيرٌ فَلْيَعْقِلْهُ). فَعَقَلْنَاهَا، وَهَبَّتْ رِيحٌ شَدِيدَةٌ، فَقَامَ رَجُلٌ، فَأَلْقَتْهُ بِجَبَلِ طَيِّئٍ. وَأَهْدَى مَلِكُ أَيْلَةَ لِلنَّبِيِّ ﷺ بَغْلَةً بَيْضَاءَ، وَكَسَاهُ بُرْدًا، وَكَتَبَ لَهُ بِبَحْرِهِمْ، فَلَمَّا أَتَى وَادِيَ الْقُرَى قَالَ لِلْمَرْأَةِ: (كَمْ جَاءَتْ حَدِيقَتُكِ؟). قَالَتْ: عَشْرَةَ أَوْسُقٍ، خَرْصَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنِّي مُتَعَجِّلٌ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَمَنْ أَرَادَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَعَجَّلَ مَعِي فَلْيَتَعَجَّلْ). فَلَمَّا - قَالَ الراوي كَلِمَةً مَعْنَاهَا - أَشْرَفَ عَلَى الْمَدِينَةِ قَالَ: (هٰذِهِ طَابَةُ). فَلَمَّا رَأَى أُحُدًا قَالَ: (هٰذَا جُبَيْلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ، أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ دُورِ الأَنْصَارِ؟). قَالُوا: بَلَى، قَالَ: (دُورُ بَنِي النَّجَّارِ، ثُمَّ دُورُ عَبْدِ الأَشْهَلِ، ثُمَّ دُورُ بَنِي سَاعِدَةَ، أَوْ

دُورُ بَنِي الحَارِثِ بْنِ الخَزْرَجِ، وَفِي كُلِّ دُورِ الأَنْصَارِ - يَعْنِي - خَيْرًا).
[رواه البخاري: ١٤٨١]

दिया। उसी जंग में इला के बादशाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए एक सफेद खच्चर और औढ़ने के लिए एक चादर भेजी। आपने उस इलाके की हुकूमत उसके नाम लिख दी। फिर जब आप वादी कुरा लौट कर वापस आये तो आपने उस औरत से पूछा, तुम्हारे बाग में खुजूरों की कितनी पैदावार रही? उसने अर्ज किया दस वसक। यही अन्दाजा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं जरा मदीना जल्दी जाना चाहता हूँ। लिहाजा तुममें से जो आदमी जल्दी जाना चाहे, वह जल्दी तैयार हो जाये, जब आप को मदीना नजर आने लगा तो फरमाया, यह ताबा है और जब आपने उहुद को देखा तो फरमाया, यह पहाड़ है, जो हम को दोस्त रखता है। और हम इसे दोस्त रखते हैं। क्या मैं तुम्हें बताऊं कि अन्सार में किसका घराना बेहतर है? लोगों ने अर्ज किया जी हां। आपने फरमाया कबीला नज्जार (का घराना)। उसके बाद बनी अब्दुल अशहल फिर बनी साइदा, फिर बनी हारिस बिन खजरज के घराने और यूँ तो अन्सार के तमाम घरानों में अच्छाई है।

फायदे : दरख्तों पर लगे हुये फलों का किसी तजुर्बेकार से अन्दाजा लगाना खरस कहलाता है। इस अन्दाजे का दसवां हिस्सा ज़कात के तौर पर वसूल किया जाता है। ध्यान रहे कि अन्दाजाकरदा मिकदार से उठने वाले अखराजात को मिनहा (बराबर) कर दिया जाये। (औनुलबारी, 2/479)

बाब 39 : उश्र उस खेती में है, जिसे बारीश के पानी या चश्मे से सींचा जाये।

٣٩ - باب: العُشْرُ فِيمَا يُسْقَى مِنْ مَاءِ السَّمَاءِ وَبِالمَاءِ الجَارِي

755 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जो खेती बारिश या चश्मे से सैराब हो या वह जमीन जो खुद ब खुद सैराब हो, उसमें दसवाँ हिस्सा लिया जाये और जो खेती कुवें के पानी से सींची जाये उससे बीसवां हिस्सा लिया जाये।

٧٥٥ : عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (فِيمَا سَقَتِ السَّمَاءُ وَالعُيُونُ، أَوْ كَانَ عَثَرِيًّا، العُشْرُ، وَمَا سُقِيَ بِالنَّضْحِ نِصْفُ الْعُشْرِ). [رواه البخاري: ١٤٨٣]

फायदे : दूसरी हदीसों से मालूम होता है कि पैदावार पांच वसक या उससे ज्यादा हो, उससे कम मिकदार में उश्र नहीं है। ध्यान रहे कि एक वसक में साठ साअ होते हैं और एक साअ सवा दो सैर या दो किलो और सौ ग्राम का होता है।

बाब 40 : जब खुजूर पेड़ों से तोड़ें, उस वक्त ज़कात ली जाये, नीज क्या बच्चे को यूँ ही छोड़ दिया जाये कि वह सदका की खुजूरों से कुछ ले ले?

٤٠ - باب: أَخذُ صَدَقَةِ التَّمرِ عِنْدَ صِرَامِ النَّخلِ وَهَل يُترَكُ الصَّبِيُّ فَيَمَسُّ تَمرَ الصَّدَقَةِ

756 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास खुजूरें फसल कटते ही आने लगती और ऐसा होता कि एक आदमी अपनी खुजूरें ले आता तो इधर दूसरा आदमी अपनी खुजूरें

٧٥٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُؤْتَى بِالتَّمْرِ عِنْدَ صِرَامِ النَّخْلِ، فَيَجِيءُ هٰذَا بِتَمْرِهِ وَهٰذَا مِنْ تَمْرِهِ، حَتَّى يَصِيرَ عِنْدَهُ كَوْمًا مِنْ تَمْرٍ، فَجَعَلَ الحَسَنُ وَالحُسَيْنُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا يَلْعَبَانِ بِذٰلِكَ التَّمْرِ، فَأَخَذَ أَحَدُهُمَا تَمْرَةً فَجَعَلَهَا فِي فِيهِ، فَنَظَرَ إِلَيْهِ

رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأَخْرَجَهَا مِنْ فِيهِ، فَقَالَ: (أَمَا عَلِمْتَ أَنَّ آلَ مُحَمَّدٍ ﷺ لاَ يَأْكُلُونَ الصَّدَقَةَ). [رواه البخاري: ١٤٨٥]

ले आता। इस तरह सदक़ा की खुजूरों के ढ़ेर लग जाते। एक रोज हसन और हुसैन रजि. इन खुजूरों से खेलने लगे और उनमें से किसी ने खुजूर उठाकर अपने मुंह में डाल ली, जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देख लिया तो आपने वह खुजूर उसके मुंह से निकालकर फरमाया, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर वाले सदक़ा नहीं खाते।

फायदे : मालूम हुवा कि छोटे बच्चों को भी हरामखोरी से बचाया जाये और उसे बताया जाये कि हरामखोरी बड़ा गुनाह है। ताकि वह बड़ा होकर अला वजहिल बसीरत अकले हराम से परहेज करे। (औनुलबारी, 2/482)

٤١ - باب: هَلْ يَشْتَرِي صَدَقَتَهُ، وَلاَ بَأْسَ أَن يَشْتَرِي صَدَقَةَ غَيْرِهِ

बाब 41 : क्या आदमी अपनी सदक़ा दी हुई चीज खुद खरीद सकता है? अलबत्ता दूसरे की सदक़ा दी हुई चीज खरीदने में कोई कबाहत नहीं।

٧٥٧ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللهِ، فَأَضَاعَهُ الَّذِي كَانَ عِنْدَهُ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَشْتَرِيَهُ، وَظَنَنْتُ أَنَّهُ يَبِيعُهُ بِرُخْصٍ، فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: (لا تَشْتَرِهِ، وَلاَ تَعُدْ فِي صَدَقَتِكَ، وَإِنْ أَعْطَاكَهُ بِدِرْهَمٍ، فَإِنَّ الْعَائِدَ فِي صَدَقَتِهِ كَالْعَائِدِ فِي قَيْئِهِ). [رواه

757 : उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक बार अल्लाह की राह में सवारी का घोड़ा दिया, जिस आदमी के पास वह घोड़ा गया, उसने उसे बिलकुल खराब और बेकार कर दिया। मैंने इरादा किया कि उसे खरीद लूं और मैंने

यह भी खयाल किया कि वह उस घोड़े को सस्ता बेच देगा, फिर मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उसके बारे में पूछा तो आपने फरमाया, उसे मत खरीद और अपना सदक़ा वापिस न ले। अगरचे एक ही दिरहम में तुझे दे डाले, क्योंकि खैरात देकर वापिस लेने वाला उल्टी करके चाटने वाले की तरह है।

البخاري: ١٤٩٠]

फायदे : इस हदीस से बजाहिर साबित होता है कि अपना दिया हुवा सदक़ा खरीदना हराम है, लेकिन किसी दूसरे का दिया हुवा सदक़ा फकीर से खरीदा जा सकता है। इसी तरह अपना सदक़ा अगर बतौर विरासते मिले तो उसे लेने में कोई हर्ज नहीं।

(औनुलबारी, 2/483)

बाब 42 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवीयों की लौण्डी, गुलामों को सदक़ा देना।

٤٢ - باب: الصَّدَقَةُ عَلَى مَوَالِي أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ

758 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मरी हुई बकरी देखी जो मेमूना रजि. की लौण्डी को बतौर सदक़ा दे दी गयी थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम उसकी खाल से फायदा क्यों नहीं उठाती? लोगों ने अर्ज किया कि वह तो मुरदार है। इस पर आपने फरमाया कि मुरदार का सिर्फ खाना हराम है।

٧٥٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: وَجَدَ النَّبِيُّ شَاةً مَيِّتَةً، أُعْطِيَتْهَا مَوْلَاةٌ لِمَيْمُونَةَ مِنَ الصَّدَقَةِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (هَلَّا ٱنْتَفَعْتُمْ بِجِلْدِهَا؟). قَالُوا: إِنَّهَا مَيِّتَةٌ؟ قَالَ: (إِنَّمَا حَرُمَ أَكْلُهَا). [رواه البخاري: ١٤٩٢]

फायदे : इससे मालूम हुवा कि नबी सल्ल. की बीवियों के गुलाम और

लौण्डियों को सदक़ा देना जाइज है, अलबत्ता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आजादकर्दा गुलाम, लौण्डी सदक़ा वगैरह नहीं ले सकती, इसकी हुरमत दूसरी हदीसों से साबित है।

बाब 43 : जब सदक़ा की हालत बदल जाये?

٤٣ - باب: إِذَا تَحَوَّلَتِ الصَّدَقَة

759 : अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने कुछ गोश्त लाया गया जो बरिरा रजि. को बतौरे सदक़ा दिया गया था तो आपने फरमाया कि बरिरा रजि. के लिए तो सदक़ा था, लेकिन हमारे लिए हदीया (तौहफा) है।

٧٥٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أُتِيَ بِلَحْمٍ، تُصُدِّقَ بِهِ عَلَى بَرِيرَةَ، فَقَالَ: (هُوَ عَلَيْهَا صَدَقَةٌ، وَلَنَا هَدِيَّةٌ). [رواه البخاري: ١٤٩٥]

फायदे : जब सदक़ा और खैरात किसी मोहताज के पास पहुंच गया, वह उसका मालिक बन गया तो अब खैरात के हुक्म से खारिज हो गया। उसका आगे सदक़ा देना जाइज है। (औनुलबारी, 2/486)

बाब 44 : सदक़ा मालदारों से वसूल करके फकीरों पर खर्च किया जाये, चाहे वह कहीं हो।

٤٤ - باب: أَخْذُ الصَّدَقَةِ مِنَ الأَغْنِيَاءِ وَتُرَدَّ فِي الفُقَرَاءِ حَيْثُ كَانُوا

760 : मुआज़ रजि. की हदीस (702, 739) और उनको यमन भेजने की बात पहले बयान हो चुकी है। इस रिवायत में इतना ज्यादा है कि मजलूम की बद-दुआ से डरना, क्योंकि उसके और अल्लाह के बीच कोई आड़ नहीं।

٧٦٠ : حَدِيثُ مُعَاذٍ، وبَعْثِهِ إِلَى الْيَمَنِ تَقَدَّمَ، وفِي هٰذِهِ الرِّوَايَةِ: (..وَاتَّقِ دَعْوَةَ المَظْلُومِ، فَإِنَّهُ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ ٱللهِ حِجَابٌ). [رواه البخاري: ١٤٩٦]

फायदे : इस हदीस में यह अलफाज हैं कि ज़कात मालदारों से वसूल करके फकीरों में बांट दी जाये। इमाम बुखारी इसे आम खयाल

करते हैं कि एक मुल्क की ज़कात दूसरे मुल्क भेजी जा सकती है। जबकि दूसरे मुहद्दसीन इससे इत्तेफाक नहीं करते, हां अगर मकामी तौर पर जरूरत से ज्यादा हो तो उसे दूसरे शहर में भेजा जा सकता है।

बाब 45 : सदका देने वाले के लिए इमाम का रहमत की ख्वास्तगारी और दुआ करना।

٤٥ - باب: صَلاةُ الإِمَامِ وَدُعَائِهِ لِصَاحِبِ الصَّدَقَةِ

761 : अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत थी कि जब कोई आपके पास सदका लाता तो आप यूँ दुआ फरमाते, ऐ अल्लाह! फलां की औलाद पर मेहरबानी फरमा, चूनांचे मेरे वालिद आपके पास सदका लेकर आये तो आपने दुआ फरमायी, ऐ अल्लाह अबी औफा की औलाद पर मेहरबानी फरमा।

٧٦١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَتَاهُ قَوْمٌ بِصَدَقَتِهِمْ قَالَ: (اللَّهُمَّ صَلِّ عَلى آلِ فُلانٍ). فَأَتَاهُ أَبِي بِصَدَقَتِهِ فَقَالَ: (اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى آلِ أَبِي أَوْفَى). [رواه البخاري: ١٤٩٧]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह आदत है कि आप दूसरों पर सलात भेजने के मजाज थे, हमारे लिए ऐसा करना मकरूह है कि हम किसी के लिए इनफिरादी तौर पर यह लफ्ज इस्तेमाल करें। मसलन अबू बकर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहें, क्योंकि यह अलफाज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए खास हैं। (औनुलबारी, 2/488)

बाब 46 : जो माल समन्दर से निकाला जाये (उसमें ज़कात है या नहीं?)

٤٦ - باب: مَا يُسْتَخْرَجُ مِنَ البَحْرِ

762 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है,

٧٦٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ

عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: (أَنَّ رَجُلًا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ سَأَلَ بَعْضَ بَنِي إِسْرَائِيلَ بِأَنْ يُسْلِفَهُ أَلْفَ دِينَارٍ، فَدَفَعَهَا إِلَيْهِ، فَخَرَجَ فِي الْبَحْرِ فَلَمْ يَجِدْ مَرْكَبًا، فَأَخَذَ خَشَبَةً فَنَقَرَهَا، فَأَدْخَلَ فِيهَا أَلْفَ دِينَارٍ، فَرَمَى بِهَا فِي الْبَحْرِ، فَخَرَجَ الرَّجُلُ الَّذِي كَانَ أَسْلَفَهُ، فَإِذَا بِالْخَشَبَةِ، فَأَخَذَهَا لِأَهْلِهِ حَطَبًا - فَذَكَرَ الْحَدِيثَ - فَلَمَّا نَشَرَهَا وَجَدَ الْمَالَ). [رواه البخاري: ١٤٩٨]

वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि बनी इसराईल में से किसी ने एक आदमी से हजार दीनार कर्ज मांगे थे तो उसने दे दी। इत्तिफाक से वह कर्जदार सफर में गया और कर्ज की अदायगी की मुद्दत आ गयी (बीच में एक दरिया हाइल था) तो वह दरिया की तरफ गया, मगर उसने ऐसी कोई सवारी न पायी (जिस पर सवार होकर कर्ज देने वाले के पास आता) मजबूरन उसने एक लकड़ी ली और उसमें सुराख किया और उसके अन्दर हजार दीनार रखकर उसे दरिया में बहा दिया, वह आदमी जिसने कर्ज दिया था, दरिया की तरफ आ निकला। उसे यह लकड़ी नजर आयी तो उसने उसे अपने घर के इंधन के लिए उठा लिया। फिर उन्होंने पूरी हदीस बयान की (जिसके आखिर में था) और जब उसने लकड़ी को चीरा तो उसमें अपना माल रखा हुवा पाया।

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस से उन लोगों का रद्द किया है जो दरियाई माल में पांचवाँ हिस्सा निकालना जरूरी करार देते हैं। इमाम बुखारी का मुकिफ यह है कि दरिया या समन्दर से जो चीज मिले, उसे अपनी मिलकियत में लेना जाइज है और उसमें किसी किस्म का मुकर्रर हिस्सा अदा करना जरूरी नहीं है।

٤٧ - باب: فِي الرِّكَازِ الْخُمُسُ

बाब 47 : दफन खजाने में पांचवां हिस्सा जरूरी है।

٧٦٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ

763 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है

رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (الْعَجْمَاءُ جُبَارٌ، وَالْبِئْرُ جُبَارٌ، وَالْمَعْدِنُ جُبَارٌ، وَفِي الرِّكَازِ الْخُمُسُ). [رواه البخاري: ١٤٩٩]

कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जानवर का जख्म माफ है, क्योंकि कुऐ में गिर कर मर जाने पर कोई मुआवजा नहीं और मादिन (कान) का भी यही हुक्म है, अलबत्ता दफीना मिलने पर पांचवा हिस्सा वाजिब है।

फायदे : इमाम बुखारी का ख्याल यह है कि मादिन (कान) पर मदफुन खजाने के अहकाम नहीं हैं, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कान के बाद मदफुन माल का हुक्म अलग बयान किया है। (औनुलबारी, 2/492)

٤٨ - باب: قَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿وَٱلْعَـٰمِلِينَ عَلَيْهَا﴾ وَمُحَاسَبَة الْمُصَدِّقِين مَعَ الإِمَام

बाब 48 : अल्लाह तआला का इरशादः तहसीलदारों को भी ज़कात से हिस्सा दिया जाये और हाकिम को उनका हिसाब-किताब रखना चाहिए।

٧٦٤ : عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱسْتَعْمَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ رَجُلًا مِنَ الأَسْدِ عَلَى صَدَقَاتِ بَنِي سُلَيْمٍ، يُدْعَى ٱبْنَ اللُّتْبِيَّةِ، فَلَمَّا جَاءَ حَاسَبَهُ. [رواه البخاري: ١٥٠٠]

764 : अबू हुमैद साइदी रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कबीला सुलैम की ज़कात वसूल करने के लिए कबीला असद के एक आदमी को मुकर्रर फरमाया, जिसे इब्ने लुतबय्या कहा जाता था, जब वह आया तो आपने उससे हिसाब लिया।

फायदे : इससे मालूम हुवा कि ज़कात की वसूली के लिए तहसीलदार मुकर्रर किये जा सकते हैं और उन्हें तयशुदा मुआवजा देने में भी कोई हर्ज नहीं है और उनका हिसाब लेने में भी कोई बुराई नहीं,

क्योंकि ऐसा करने से वह ख्यानत से बचे रहेंगे।

(औनुलबारी, 2/494)

बाब 49 : हाकिमे वक़्त का ज़कात के ऊंटों को खुद अपने हाथ से दाग देना।

٤٩ - باب: وَسْمِ الإمامِ إبِلَ الصَّدَقَةِ بِيَدِهِ

765 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं एक सुबह अबू तल्हा रजि. के बेटे अब्दुल्ला रजि. को लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गया ताकि आप कुछ चबाकर उसके मुंह में डाल दें तो मैंने आपको इस हाल में पाया कि आपके हाथ में एक दाग देने वाला आला था, आप उससे ज़कात के ऊंटों को दाग रहे थे।

٧٦٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: غَدَوْتُ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ بِعَبْدِ ٱللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ لِيُحَنِّكَهُ، فَوَافَيْتُهُ فِي يَدِهِ ٱلْمِيسَمُ، يَسِمُ إِبِلَ الصَّدَقَةِ. [رواه البخاري: ١٥٠٢]

फायदे : मालूम हुवा कि जानवर को किसी जरूरत के पेशे नजर दाग देना दुरूस्त है, यह एक इस्तशनाई सूरत है, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बिलावजह हैवान को तकलीफ देने से मना फरमाया है। (औनुलबारी, 2/485)

❖❖❖

किताबो सदक़तिल फ़ित्र
सदक़ा फ़ित्र के बयान में

सदकतुल फ़ित्र हिजरत के दूसरे साल रमजान मुबारक में ईदुलफ़ित्र से दो दिन पहले फर्ज हुआ। (औनुलबारी, 2/892)

बाब 1 : सदक-ए-फ़ित्र की फरजियत।

١ - باب: فَرْضُ صَدَقَةِ الفِطْرِ

766 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर मुसलमान मर्द औरत छोटे-बड़े, आजाद और गुलाम पर सदका फ़ित्र एक साअ खुजूर या जौं से फर्ज किया है और नमाज़ को जाने से पहले इसकी अदायगी का हुक्म दिया है।

٧٦٦ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: فَرَضَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ زَكَاةَ الفِطْرِ، صَاعًا مِنْ تَمْرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ، عَلَى الْعَبْدِ وَالحُرِّ، وَٱلذَّكَرِ وَالأُنْثَى، وَالصَّغِيرِ وَالْكَبِيرِ، مِنَ المُسْلِمِينَ، وَأَمَرَ بِهَا أَنْ تُؤَدَّى قَبْلَ خُرُوجِ النَّاسِ إِلَى الصَّلاةِ. [رواه البخاري: ١٥٠٣]

फायदे : सदका फ़ित्र एक साअ है जिसके वजन में अलग अलग अजनास के लिहाज से कमी बैशी हो सकती है। बेहतर है कि सदका फ़ित्र की अदायगी के लिए मद या साअ का इस्तेमाल किया जाये, वैसे रायेजुलवक्त वजन दो किलो सौ ग्राम है। नीज इसकी कीमत अदा करना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है।

बाब 2 : ईद से पहले सदका फ़ित्र की अदायगी का बयान।

٢ - باب: الصَّدَقَةُ قَبْلَ الْعِيدِ

767 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में ईदुलफ़ित्र के दिन अपने खाने में से एक साअ अदा किया करते थे, उन दिनों हमारी खुराक जौं, किशमिश, पनीर और खुजूरें थी।

٧٦٧ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُخْرِجُ فِي عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ يَوْمَ الفِطْرِ صَاعًا مِنْ طَعَامٍ. وَكَانَ طَعَامَنَا الشَّعِيرُ وَالزَّبِيبُ، وَالأَقِطُ وَالتَّمْرُ. [رواه البخاري: ١٥١٠]

फायदे : सदका फ़ित्र एक साअ ही अदा करना चाहिए, अलबत्ता गरीब के लिए आधा साअ अदा करने की गुंजाईश है, ऐसा करना सही अहादीस से साबित है। नीज ईदुलफ़ित्र की नमाज़ से पहले इसकी अदायगी जरूरी है, अगरचे तकसीम बाद में कर दिया जाये।

बाब 3 : सदका फ़ित्र हर आजाद या गुलाम पर वाजिब है।

٣ - باب: صَدَقَةُ الفِطْرِ عَلَى الحُرِّ وَالمَمْلُوكِ

768 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर छोटे बड़े, आजाद और गुलाम पर सदका फ़ित्र एक साअ खुजूर या एक साअ जौं फर्ज किया है।

٧٦٨ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: فَرَضَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ صَدَقَةَ الْفِطْرِ، صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ، عَلَى الصَّغِيرِ وَالْكَبِيرِ، وَالحُرِّ وَالمَمْلُوكِ. [رواه البخاري: ١٥١٢]

फायदे : सदका फ़ित्र उस जिन्स से अदा किया जाये जो साल के अकसर हिस्से में बतौर खुराक इस्तेमाल होती है, उस जिन्स से बेहतर भी बतौरे फ़ित्रा दी जा सकती है। अलबत्ता इससे कमतर को बतौर फ़ित्रा देना ठीक नही। (औनुलबारी, 2/503)